उर्दू-हिन्दी कोश

—:*:*:*:—

सम्पादक

केदार नाथ भट्ट, एम्० ए०, एल्-एल्० बी०

(संपादक—आधुनिक हिन्दी-हिन्दी कोश, अंगरेजी-हिन्दी कोश, रामायण-कोश इत्यादि)

प्राक्कथन लेखक

श्री कमलाकान्त वर्मा

भूतपूर्व चीफ़ जस्टिस

इलाहाबाद और राजस्थान हाईकोर्ट

प्रकाशक

रामनारायण लाल

प्रकाशक तथा पुस्तक-विक्रेता

इलाहाबाद

प्रथम संस्करण] १९५५ [मूल्य ८)

प्राक्कथन

इस "उर्दू-हिन्दी-कोश" के लिए प्राक्कथन लिखने को मुझसे कहा गया है और ऐसा करने में मुझे अत्यन्त प्रसन्नता है। इस कोश के विद्वान् संपादक योग्य पिता के योग्य पुत्र हैं। इनके पिता जी गोस्वामी तुलसीदास के रामचरितमानस के प्रारंभिक टीकाकारों में से थे जिनका नाम रामचरितमानस के अनेक प्रेमियों को अभी भी स्मरण है। मैं संपादक के इस विचार से सहमत हूँ कि इस प्रकार के कोश की आवश्यकता है और यह एक वास्तविक आवश्यकता की पूर्ति करेगा। उनका यह विचार भी ठीक है कि ऐसे अनेक हिन्दी प्रेमी हैं जिन्हें उर्दू साहित्य से अनुराग है। इस सम्बन्ध में हिन्दी प्रेमियों ने निःसंदेह विशाल-हृदयता का परिचय दिया है, जिसका अनुकरण मेरी राय में उर्दू प्रेमियों को करना चाहिए। इधर कुछ दिनों से हिन्दी विद्वानों ने देवनागरी लिपि में ग़ालिब, अकबर (एलाहाबादी), नज़ीर (अकबराबादी) आदि प्रसिद्ध उर्दू कवियों के अनेक छोटे-बड़े संकलन सहानुभूति पूर्ण आलोचनाओं सहित प्रकाशित किए हैं। यह बात उपर्युक्त मत की पुष्टि करती है। इस सिलसिले में श्री अयोध्या प्रसाद गोयलीय के "शेर-ओ-शायरी" और "शेर-ओ-सख़ुन" शीर्षक संग्रह विशेष उल्लेखनीय हैं। यह वास्तव में खेद का विषय है कि इसमें उर्दू प्रेमियों ने हिन्दी प्रेमियों का अनुकरण नहीं किया। जहाँ तक मुझे विदित है इस प्रकार की केवल एक ही महत्वपूर्ण कृति है—हिन्दुस्तानी एकेडेमी इलाहाबाद द्वारा प्रकाशित डा० आज़म करेवी की "हिन्दी शायरी"।

इस परिचय में हिन्दी उर्दू के विवाद की, जो लगभग ६० वर्ष पूर्व प्रारम्भ हुआ था, चर्चा करना मैं अनावश्यक समझता हूँ। इस सम्बन्ध में अकबर (एलाहाबादी) की कुछ पंक्तियाँ उद्धृत कर देना पर्याप्त होगा। उन्होंने अपनी निराली शैली में इस समस्या के एक पहलू पर—अर्थात् विवाद क्यों

और कैसे आरम्भ हुआ और कैसे बढ़ता गया—अत्यन्त सुन्दर ढंग से प्रकाश डाला है :—

हम उर्दू को अरबी क्यों न करें,
वह हिन्दी को भाषा क्यों न करें।
झगड़े के लिए अख़बारों में,
मज़मून तराशा क्यों न करें।
आपस में अदावत कुछ भी नहीं,
लेकिन एक अखाड़ा क़ायम है।
जब इससे फ़लक का दिल बहले,
हम लोग तमाशा क्यों न करें।

विद्वान् संपादक ने, जिन्हें हिन्दी और उर्दू भाषाओं पर समान अधिकार है, इस कोश को उपयोगी बनाने में अपनी ओर से कुछ उठा नहीं रक्खा है। मेरी कामना है कि इसका अधिक से अधिक उपयोग हो।

मैं आशा करता हूँ कि निकट भविष्य में इस कोश के सुयोग्य संपादक एक हिन्दी-उर्दू कोश भी प्रकाशित करके साहित्य भंडार को संपन्न करेंगे।

२८, एल्गिन रोड
प्रयाग।

कमलाकान्त वर्मा

निवेदन

मैंने इस कोश का संकलन यह मान कर किया है कि उर्दू भारतीय भाषा है और उसका जन्म, पालन-पोषण, विकास तथा परिमार्जन हमारे ही देश में हुआ है। कई कोशकारों ने केवल अरबी-फ़ारसी की लुग़तों के आधार पर उर्दू-हिंदी कोश बनाये हैं—यहाँ तक कि घ, छ, झ इत्यादि अक्षरों से आरंभ होनेवाले शब्दों का उनमें समावेश तक नहीं है। थोड़ा सा विचार करने पर भी इस वृत्ति की निस्सारता प्रकट हो जाती है। उर्दू साहित्य ऐसे शब्दों से भरा पड़ा है। जिन प्रदेशों में उर्दू बोलनेवाले हैं उनमें इस प्रकार के शब्द बराबर स्वाभाविकता से बोले जाते हैं। उनके योग से उर्दू के अपने कितने ही मुहावरे हैं। फिर किस कारण से कोशकारों ने उन्हें अलग रक्खा है यह बात समझ में नहीं आती। प्रायः हिंदीवालों में यह भावना फैली और फैलाई गई है कि उर्दू कोई विदेशी भाषा है और उसमें केवल फ़ारसी अरबी के शब्द हैं। उर्दू में जो शब्द हिंदी या देशज बोलियों से लिये गये हैं उनके द्वारा भी विशिष्ट अर्थ और मुहावरे विकसित हो गये हैं और जिन रूपों या अर्थों में उनका प्रयोग उर्दू में होता है उनका जानना भी ज़रूरी है।

इस कोश में जो शब्द संकलित हैं उनके अर्थ हिंदी ही में नहीं, हिन्दोस्तानी में भी दिये गये हैं क्योंकि प्रयत्न इस बात का किया गया है कि अर्थ समझे जायँ, हृदयंगत हो सकें। अर्थ देने में ऐसे दुरूह शब्दों का प्रयोग करना जो साधारण पाठक आसानी से न समझ सकें, मुझे न रुचिकर है और न किसी के लिए उपयोगी हो सकता है।

ऐसे अनेक कारण हो चुके हैं कि जिनसे उर्दू तथा हिंदी के बीच परस्पर द्वेष तथा घृणा का वातावरण पैदा होता रहा है, दोनों में प्रतिस्पर्द्धा रही है और हिंदी की उत्तरोत्तर वृद्धि उर्दूवालों की आँख का काँटा बनी है। ऐसा क्यों हुआ यह सब जानते हैं। यह मानना पड़ेगा कि हिंदीवालों की वृत्ति अधिक उदार रही है और उन्होंने उर्दू पढ़ने, उसके काव्य का रसास्वादन करने में कभी संकीर्णता से काम नहीं लिया। अभी कुछ वर्ष पहले तक मुसल्मान उर्दू को अपनी पैत्रिक संपत्ति समझते थे, उन्हें यह मानने में भी आपत्ति थी कि कोई हिंदू शुद्ध उर्दू लिख सकता है और हिंदू लेखकों और कवियों की कृतियों पर तरह तरह के आक्षेप किये जाते थे। उर्दू को बंगाली मुसल्मान "नोबी

और अवसर से लाभ उठाने के लिये बहुत परिश्रम करके उर्दू सीखी थी। ये हिंदू अपनी मेहनत की कमाई का पक्ष लेते थे जो मनुष्य-स्वभाव देखते हुए ठीक ही था। धीरे-धीरे हिंदी ने अपना योग्य स्थान बना लिया और उस पर प्रतिष्ठित हो गई। फिर भी कचहरियों में उर्दू का बोल-बाला रहा आया और इस कारण से हिंदी की उन्नति की प्रगति में बाधा पड़ती रही। स्वार्थ तथा आदत के कारण अदालतों में उसका तिरस्कार ही होता रहा।

समय ने एक पलटा और खाया। पाकिस्तान बना। उसके बनवाने के आंदोलन में मुख्य हाथ उन प्रदेशों के मुसल्मानों का रहा जहाँ उर्दू का प्रचार था। पाकिस्तान बनने पर इन प्रदेशों के बहुसंख्यक लोग वहाँ जा बसे। परिणाम में भारत में उर्दू का ज़ोर घटना और प्रभाव क्षीण होना ही था। भारत के संविधान में हिंदी को राज भाषा के पद पर प्रतिष्ठित कर दिया गया जिससे उर्दू का आसन डाँवा-डोल होने लगा। अब उर्दू के अहले-ज़बान मुसल्मान उर्दू-साहित्य-संसार में हिंदुओं की भी प्रतिष्ठा करने लगे और उर्दू की रक्षा में उन्हें आगे कर अपने प्रयत्न कर रहे हैं। जिन हिन्दुओं ने अपनी सम्पूर्ण आयु उर्दू पठन-पाठन में व्यतीत की थी और जो हिंदी से अपरचित हैं वे सब तथा कुछ और मुसल्मानों से कंधा मिला कर उर्दू की उन्नति के लिए प्रयत्नशील हैं जो स्वाभाविक है। भारत में उर्दू का भविष्य क्या होगा यह अभी निश्चित रूप से नहीं कहा जा सकता। पर भविष्य कुछ भी हो, उर्दू जीवित रहेगी और रहनी चाहिए। जिस भाषा में सैकड़ों वर्ष हमारे यहाँ के बड़े से बड़े दिमाग़ों ने सोचा और लिखा, जिसे सुधारने-सँवारने में इतना परिश्रम किया गया और जिसमें मीर और ग़ालिब जैसे शायरों ने अपने अमर काव्य की रचना की उसे जीवित रखना प्रत्येक देश-प्रेमी का कर्तव्य होना चाहिए। हिंदी पर उसका ऋण बहुत बड़ा है। चाहे वह प्राचीन हिंदी पर बनी हो और उससे ही उत्पन्न हुई हो पर आधुनिक हिंदी को वर्तमान रूप और मर्यादा देने का काम उसीने किया है। आज कल प्रायः यह कहा जाता है कि उर्दू कोई पृथक् भाषा नहीं है, वह हिंदी की एक शैली मात्र है। यदि यह बात ठीक है तो यह भी कम ठीक नहीं कि आधुनिक हिंदी भी उर्दू की एक शैली मात्र है। जिस भाषा का अपना अलग साहित्य विकसित हो चुका उसे केवल शैली कह कर उड़ा देना किसी प्रकार न्यायसंगत नहीं। हमें द्वेष तथा प्रतिहिंसा से काम नहीं लेना चाहिए। उर्दू को जीवित रखने के उचित प्रयत्नों में योग देना चाहिए क्योंकि सब कुछ होते हुए भी हिंदीवाले जितने कम प्रयास से उर्दू समझ सकते हैं उतने से अन्य कोई भारतीय भाषा नहीं समझ सकते।

हिंदी भाषी लोग उर्दू काव्य के प्रेमी हैं और उर्दू के अनेक कवियों के ग्रंथ देवनागरी में प्रकाशित हो चुके हैं। थोड़ी देर के लिए लिपि की ज़िद छोड़ कर यदि उर्दू के हिमायती देवनागरी अक्षरों में अपने बड़े-बड़े कवियों और लेखकों के ग्रंथ प्रकाशित कर दें तो

ओ३म्

उर्दू-हिन्दी कोष

अं

अंगबीं, अंगबीन—(फ़ा०) (सं० पु०) शहद, मधु।

अंगश-बंगश—(हि०) (वि०) ऊल-जलूल, अस्त-व्यस्त, बेठिकाने।

अंगुश्त—(फ़ा०) (सं० पु०) उँगली। **अंगुश्त बदंदा होना**—आश्चर्य-चकित होना, दाँतों तले उँगली दबाना। **अंगुश्त ब-लब होना**—होंठों पर उँगली रखना, चुप रहने का इशारा करना।

अंगुश्त-नुमा—(फ़ा०) (वि०) बदनाम, जिस पर उँगलियाँ उठें।

अंगुश्त-नुमाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बदनामी, किसी पर उँगलियाँ उठना।

अंगुश्तर, अंगुश्तरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अंगूठी।

अंगुश्ताना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) लोहे या पीतल का ख़ोल जिसे कपड़ा सीने के समय छिगुली के पास की उँगली में पहन लेते हैं ताकि सूई न चुभे; (२) हड्डी या सींग का वह छल्ला जिसे तीर चलाने वाले हाथ के अँगूठे में पहनते हैं।

अंगूर—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) एक प्रसिद्ध फल, द्राक्षा; (२) एक प्रकार की आतिशबाज़ी; (३) जब ज़ख्म भरने लगता है तब एक प्रकार का लाल तना-हुआ दानेदार गोश्त पैदा होता है, उसे भी अंगूर कहते हैं। **अंगूर फट जाना**—भरते हुए ज़ख्म का फट जाना। **अंगूर बंधना**—ज़ख्म का अच्छा होने पर आना, ज़ख्म का भरना शुरू होना।

अंगूरी—(फ़ा०) (वि०)—(१) अंगूर से बना हुआ; (२) अंगूर के रंग का।

अंगेज़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (औ०) बरदाश्त; उकसाने वाला (यौगिक में) **अंगेज़ करना**—बरदाश्त करना, सहना।

अंजुम—(अ०) (सं० पु०) तारे, ('नज्म' का बहुवचन)।

अंजर-पंजर—(सं० पु०) जोड़-जोड़, हड्डी-हड्डी।

अंजाम—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) समाप्ति, अन्त, ख़ात्मा, (२) परिणाम, नतीजा, फल; (३) पूरा होना, तकमील। **अंजाम को पहुँचाना**—पूरा करना, ख़तम करना। **अंजाम देना**—पूरा करना। **अंजाम पाना**—पूरा होना। **अंजाम ब-ख़ैर होना**—नतीजा अच्छा निकलना।

अंजाम-कार—(फ़ा०) (क्रि० वि०) आख़िरकार, अन्त में।

अंजीर—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रसिद्ध मेवा।

अंजुबार—(फ़ा०) (सं० पु०) एक पौदा जिसकी पत्तियाँ दवा में काम आती हैं।

अंजुम—(अ०) (सं० पु०) सितारे, तारे। 'नज्म' का बहुवचन।

अंजुमन—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मजलिस, महफ़िल, सभा, कमेटी।

अक़ताअ—(अ०) (सं० पु०) ज़मीन के टुकड़े। 'क़ता' बहुवचन।

अक़तार—(अ०) (सं० पु०) किनारे।

अक़्दस—(अ०) (वि०) पवित्र, बहुत पाक।

अक़ब—(अ०) (सं० पु०) पीछे, पीछा। अक़ब में—पीछे।

अकबर—(फ़ा०) (वि०) बहुत बड़ा, महान्; (सं० पु०) मुग़ल वंश का प्रसिद्ध बादशाह।

अकबरी—(फ़ा०) (वि०) अकबर बादशाह से सम्बन्ध रखने वाला।

अक़रक़रहा—(अ०) (सं० पु०) एक दवा का नाम, अकरकरा।

अकरब—(अ०) (सं० पु०) (१) बिच्छू; (२) वृश्चिक राशि; (३) झगड़ालू।

अक़रान—(अ०) (सं० पु०) पास के लोग।

अकल—(अ०) (सं० पु०) खाना, ग़िज़ा।

अकल-खुरा—(हि०) (वि०) जो दूसरे को देख न सके, यह चाहे कि मैं अकेला ही रहूँ और मेरा ही भला हो; रूखा, जिसे साझा-शिरकत गवारा न हो।

अक़्लन्—(अ०) (क्रि० वि०) अक़्ल से, समझ से, समझ में, बुद्धि में।

अक़्लीम—(अ०) (सं० स्त्री०) देश, प्रान्त।

अक़ल—(अ०) (वि०) (१) बहुत कम, बहुत छोटा, (२) हक़ीर, तुच्छ।

अक़वाम—(अ०) (सं० स्त्री०) जातियाँ, फ़िरक़े। 'क़ौम' का बहुवचन।

अकसर—(अ०) (क्रि० वि०) बहुत ज़्यादा, प्रायः, बारहा।

अक़सात—(अ०) (सं० स्त्री०) हिस्से, टुकड़े। 'क़िस्त' का बहुवचन।

अक़साम—(अ०) (सं० पु०) प्रकार। 'क़िस्म' का बहुवचन।

अकसीर—(अ०) (सं० स्त्री०) देखो 'अक्सीर'।

अक़ायद—(अ०) (सं० पु०) विश्वास, धार्मिक सिद्धान्त मानना। 'अक़ीदा' का बहुवचन।

अक़ारिब—(अ०) (सं० पु०) सम्बन्धी, रिश्तेदार लोग।

अक़ालीम—(अ०) (सं० स्त्री०) देश। 'अक़लीम' का बहुवचन।

अक़िरबा—(अ०) (सं० पु०) सम्बन्धी, रिश्तेदार।

अक़ीक़—(अ०) (सं० पु०) एक लाल रंग का मूल्यवान् पत्थर।

अक़ीक़-उल-बहर—(अ०) (सं० पु०) मूँगा।

अक़ीक़-जिगरी—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार का क़ीमती अक़ीक़।

अक़ीक़-शजरी—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार का मूँगा।

अक़ीक़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) जन्म से सातवें दिन बच्चे के बाल मुँडवाने की रस्म जो मुसलमानों में प्रचलित है।

अक़ीदत—सं० स्त्री० एतक़ाद, इरादत-मंदी; धार्मिक विश्वास, निष्ठा।

अक़ीदतमंद—वि० विश्वास करने वाला, निष्ठावान्।

अक़ीदा—सं० पु० भरोसा, ऐतबार; धार्मिक सिद्धान्त की मान्यता, मज़हबी उसूल मानना।

अक़ीमा—अ० स्त्री० बाँझ, बंध्या।

अक़ील—सं० पु० बुद्धिमान्, अक़्लमंद।

अक़ूबत—सं० स्त्री० सख़्ती, अज़ाब, मुसीबत; दंड।

अक़ूल—अ० वि० पेटू, बहुत खाने वाला।

अक़ूल-अशरा—फ़ा० पु० दस फ़रिश्ते।

अक़्द—सं० पु० विवाह, सम्बन्ध; जोड़ना; बेचना; वचन, इक़रार।

अक़्दनामा—सं० पु० इक़रारनामा; विवाह का लेख-पत्र।

अक़्द-बन्दी—सं० स्त्री० विवाह का क़रार करना; निश्चित करना।

अक़्दस—अ० वि० परम पवित्र।

अक़्ल—अ० सं० पु० खाना।

अक़्ल—सं० स्त्री० बुद्धि, समझ।

अक़्ल-आराई—स्त्री० अक़्ल दौड़ाना।

अक़्ल-मन्द—वि० समझदार, बुद्धिमान, होशयार, दाना।

अक़्ल-मन्दी—सं० स्त्री० समझदारी, बुद्धि-मत्ता।

अक़्ली—वि० बुद्धि से सम्बन्धित, युक्ति-युक्त; उचित।

अक्स—सं० पु० (१) छाया, परछाँही, प्रतिबिंब; (२) चित्र, फ़ोटो; (३) अदावत, ज़िद, हठ।

अक्सर—क्रि० वि० प्रायः, बहुधा, अनेक बार। (वि०)—अधिक, बहुत।

अक्सरियत—अ० सं० स्त्री० बहुमत, बहु-संख्यक सम्मति।

अक्सी—वि० छाया-सम्बन्धी, छाया-जनित।

अक्सीर—सं० स्त्री० (१) कीमिया, रसायन, जिससे ताँबा सोना, राँगा चाँदी बन जाय; (२) किसी रोग को शीघ्र नष्ट करने वाली दवा। (वि०) अत्यंत लाभकारी, राम-बाण।

अक्सीर-गर—सं० कीमिया बनानेवाला।

अख़—अ० पु० भाई।

अख़गर—सं० पु० चिनगारी, अँगारा।

अख़ज़—सं० पु० (१) पकड़ लेना, हासिल करना, ग्रहण करना; (२) उद्धृत करना। अख़ज़-बिल्-जब्र—ज़बरदस्ती लेना।

अख़ज़र—अ० वि० हरा, सब्ज़ रंग का।

अख़नी—सं० स्त्री० शोरबा; मांस का रसा।

अख़बार—सं० पु० (१) ख़बरें, हालात, समाचार; समाचार-पत्र, संवाद-पत्र।

अख़बार-नवीस—सं० पु० पत्र-कार, समाचार-पत्र निकालने वाला, सम्पादक।

अख़याफ़ी—अ० वह भाई बहन जिनके बाप अलग-अलग और मा एक हो।

अख़यार—अ० पु० भले लोग।

अख़लाक़—सं० पु० (१) आदत; (२) इन्सानियत, मिलनसारी, मुरव्वत, शील-स्वभाव; (३) नीति, आचार-विचार।

अख़लाक़ी—वि० (१) नैतिक, नीति से सम्बन्धित; (२) शील-सम्बन्धी।

अख़लात—अ० पु० शरीर के विकार।

अख़वान—अ० पु० भाई, भ्राता, बिरादर (ब० व०)।

अख़ीर—अ० वि० पिछला, अंतिम; तमाम, कुल। (सं०) हद, सीमा; अंत।

अख़्तर—सं० पु० तारा, नक्षत्र। अख़्तर चमकना—नसीब जागना, दिन फिरना।

अख़्ता—फ़ा० वि० बधिया, वह चौपाया जिसके अंड कोष निकाल लिये गये हों।

अख़ी—अ० पु० मेरे भाई, भाई।

अगर—अव्य० यदि, जो।

अगरचे—अव्य० यद्यपि, ऐसा होने पर भी।

अगर-मगर—सं० हिचक, हीला-हवाला, टालमटूल।

अग़राज़—सं० स्त्री० (१) मतलब, उद्देश्य, अभिप्राय; (२) आवश्यकताएँ। (ग़रज़ का ब० व०)।

अग़लब—क्रि० वि० सम्भव है कि; यक़ीनन, बहुत करके ।

अग़ल-बग़ल—अ० क्रि० वि० आस-पास, इधर-उधर ।

अग़ियार—अ० सं० (१) बेगाने लोग, जो मित्र न हों; (२) रक़ीब, दुश्मन ।

अचार—फ़ा० पु० सिरके, तेल या नीबू के अर्क़ में मसाले डाल कर आम या अन्य फल इत्यादि का बना खाद्य ।

अज़—प्रत्यय—से ।

अज़ तरफ़—तरफ़ से, ओर से ।

अज़अफ़—अ० वि० बहुत कमज़ोर ।

अज़कार—सं० पु० वर्णन । (ज़िक्र का ब० व०) ।

अज़किया—अ० पु० ज़हीन आदमी, प्रतिभाशाली लोग । (ज़की का ब० व०) ।

अज़-ख़ुद—क्रि० वि० अपने आप, स्वयं ।

अज़-ख़ुद-रफ़्ता—आपे से बाहर; बेहोश ।

अज़ग़ैबी—वि० गुप्त, रहस्य-पूर्ण ।

अजज़ा—सं० पु० टुकड़े; अंग; अंश, भाग, हिस्सा । (जुज़ का ब० व०) ।

अज़दहा—सं० पु० अजगर, बहुत बड़ा और मोटा साँप

अजदहाम—सं० पु० जमाव, हुजूम, भीड़ ।

अजदाद—सं० पु० दादा और उसके ऊपर की पुश्तें; पुरखे, बाप-दादा, बुज़ुर्ग ।

अजनबी—सं० पु० (१) परदेशी; (२) अपरिचित व्यक्ति, अज्ञात पुरुष; बेगाना, जिससे जान-पहचान न हो ।

अजनास—सं० पु० वस्तुएँ; असबाब; सामान, सामग्री, चीज़ें; क़िस्में । (जिन्स का ब० व०) ।

अज़फ़र—अ० पु० उग्रगंध वाली चीज़ ।

अजब—वि० (१) अद्भुत, अनोखा, नादिर; (२) नया; (३) दूर, बईद । सं० पु० आश्चर्य, ताज्जुब । अजब क्या, अजब क्या है—कुछ ताज्जुब नहीं । अजब नहीं—ताज्जुब नहीं । अजब चीज़—(१) अनोखी चीज़; (२) बे-अटकल, ना समझ, बेअक़्ल; (३) चालाक ।

अज़-बर—क्रि० वि० बर-ज़बान, ज़बानी, केवल स्मृति या याद से । अज़बर कर लेना—ज़बानी याद कर लेना ।

अज़-बराये-ख़ुदा—ख़ुदा के वास्ते, ईश्वर के लिये ।

अज़-बस—अव्य० अधिक, बहुत, ज़्यादा । अज़-बस कि—चूँकि ।

अजम—सं० पु० (१) अरब के अतिरिक्त कोई अन्य देश; (२) वह लोग जो अरब के रहनेवाले न हों ।

अज़मत—अ० स्त्री० बड़ाई, महत्ता, बरतरी ।

अजमी—सं० पु० अजम देश का रहने वाला, ग़ैर-अरबी ।

अजर—अ० सं० पु० इनाम, मज़दूरी; फल, सिला, बदला ।

अज़रक़—अ० सं० (१) नीला रंग; (२) कंजी आँखवाला आदमी ।

अज़रा—अ० स्त्री० मरियम का नाम ।

अजराम—सं० पु० शरीर, चोला, पिंड । (जिर्म का ब० व०) ।

अज़-रूए—क्रि० वि० अनुसार, किसी चीज़ के आधार पर; बग़रज़, बर-बिना ।

अजल—सं० स्त्री० मौत, मृत्यु । अजल-रसीदा या गिरफ़्ता—आसन्न मृत्यु ।

अज़ल—सं० स्त्री० (१) वह समय या काल जिसका आरंभ ज्ञात न हो; सृष्टि की उत्पत्ति का समय; (२) मूल; (३) किसी के जन्म का दिन या समय; (४) आराम ।

अज़ला (अ)—अ० सं० पु० ज़िला का ब० व० ।

अज़लाफ़—अ० पु० कमीने, नीच।

अज़लाल—अ० सं० ज़ल्ल का ब० व०; साये।

अज़ली—वि० सनातन, शाश्वत; सदा से रहनेवाला।

अज़लल—वि० बड़ा, महान्।

अज़ल्ल—वि० बहुत नीच।

अज़-सर-ता-पा—क्रि० वि० सिर से पैर तक, शुरू से अख़ीर तक।

अज़ सरे-नौ—क्रि० वि० (१) नये सर से, आरंभ से; (२) फिर से।

अज़साद—अ० पु० बहुत से जिस्म (जसद का ब० व०)।

अज़साम—सं० पु० जिस्म का ब० व०; शरीर।

अज़-हद—वि० बेहद, बहुत अधिक।

अज़हर—वि० खुला हुआ, प्रकट; बहुत रोशन।

अजहल—अ० वि० अत्यंत मूर्ख, बड़ा जाहिल, उजड्ड।

अज़ाँ—फ़ा० क्रि० वि० इससे, इसलिए।

अज़ा—अ० स्त्री० मातम, मातमपुर्सी, शोक।

अज़ा-ख़ाना—फ़ा० पु० (१) मातमख़ाना, शोक-गृह; (२) वह मकान जिसमें ताज़िया रखा जाता है या मर्सिए पढ़े जाते हैं (लखनऊ)।

अज़ाज़ील—सं० पु० शैतान।

अज़ादार—फ़ा० वि० मृत्यु का शोक करने वाला, मातमी।

अज़ादारी—स्त्री० मातम करना, शोक मनाना।

अज़ान—सं० स्त्री० बाँग, मसजिद में नमाज़ के लिए पुकारना।

अज़ाब—सं० पु० (१) रोग, कष्ट; (२) दिक्क़त, कठिनाई; (३) झगड़ा, बखेड़ा; (४) पाप, पाप का दंड। (वि०) कष्टदायक, तकलीफ़ देने वाला।

अज़ाब-सवाब—बुराई-भलाई, पाप-पुण्य। अज़ाब उठाना—कष्ट सहना। अज़ाब-जान (वि०) जान का वबाल, जी का जंजाल।

अजायब—सं० वि० आश्चर्य, आश्चर्य कारक वस्तुएँ। (अजीब का ब० व०)। अजायब-उल-मख़लूक़ात—वे चीज़ें, जिनकी पैदायश अद्भुत है। अजायब ओ ग़रायब—पु० अनोखी और अद्भुत चीज़ें।

अजायब-ख़ाना—सं० पु० अनोखी चीज़ें; अद्भुत पदार्थों का संग्रहालय।

अज़ायम—अ० पु० इरादे; खेद, अफ़सोस; मंत्र। अज़ायम-ख़्वाँ—मंत्र पढ़ने वाला।

अज़ीं—फ़ा० इससे। क़ब्ल अज़ीं—इससे पहले।

अज़ीज़—वि० (१) प्रिय, प्यारा, दिलपसंद; (२) माननीय; (३) मिस्र के बादशाह का नाम; (४) रिश्तेदार, सम्बंधी। सं० पु० रिश्तेदार, सम्बन्धी, मित्र। अज़ीज़-उल्-क़द्र—सम्माननीय। अज़ीज़-उल्-वजूद—दुष्प्राप्य, कमयाब।

अज़ीजदारी—सं० स्त्री० रिश्तेदारी, नाते दारी, यगानगत, सौहार्द्र।

अजीब—वि० अनोखा, अद्भुत। अजीब ओ ग़रीब—नादिर, बहुत विलक्षण, अद्भुत।

अज़ीम—सं० पु० ईश्वर, पूजनीय तथा वृद्ध। वि० बुज़ुर्ग, वृद्ध, महान्, बहुत बड़ा, आलीशान। अज़ीम-उश्शान वि० बुलंद, शानदार।

अज़ीमत—अ० स्त्री० (१) संकल्प, क़स्द; (२) मंत्र, रहस्य।

अज़ीयत—सं० स्त्री० दुःख, तकलीफ़, अत्याचार।

अजीर—अ० सं० मज़दूर, श्रमिक।

अजूक़ा—सं० पु० रोटी-कपड़ा, जीविका।

अजूज़—अ० स्त्री० बुढ़िया, वृद्धा।

अजूबत—अ० स्त्री० स्वाद, लज़्ज़त, मिठास।

अज़ो—सं० पु० हिस्सा, अंग।

अजूज़—सं० पु० दीवता, नाचारी, गिड़गिड़ाना।

अज़्म—सं० पु० संकल्प, निश्चय; इरादा, क़स्द।

अज़्म बिल जज़्म—फ़ा० पु० पक्का इरादा।

अज़्मत—सं०स्त्री० बुज़ुर्गी, महत्ता, बड़प्पन।

अज्र—सं० पु० (१) मज़दूरी, पारिश्रमिक, पुरस्कार; (२) फल, बदला; (३) व्यय, खर्च।

अज़्ल—अ० पु० मौक़ूफ़ी, अलग होना। अज़्ल ओ नस्ब—मौक़ूफ़ी-बहाली, उन्नति-अवनति, अदल-बदल।

अतका—तु० सं० पु० धाय का पति।

अतफ़ाल—सं० पु० बाल-बच्चे, लड़के-बाले, लड़के। अयाल ओ अतफ़ाल—स्त्री-पुत्र।

अतबा—अ० पु० पवित्र स्थान या समाधि; दरगाह।

अतराफ़—अ० स्त्री० (तरफ़ का ब० व०), दिशाएँ, ओर।

अतलस—सं० स्त्री० एक प्रकार का चमकदार रेशमी कपड़ा।

अतवार—सं० पु० रंग-ढंग, आचार-विचार; रविश, ढंग।

अतश—अ० स्त्री० प्यास, तृषा।

अतहर—अ० वि० परम पवित्र, बहुत पाक।

अता—सं० स्त्री० बख़्शिश, दान। अतानामा—दान-पत्र। अता करना—देना, प्रदान करना।

अताई—सं० पु० बिना नियमित शिक्षा के कोई काम करने वाला; स्वयं कोई काम सीख लेनेवाला।

अताब—सं० पु० (देखो इताब)।

अताबक—फ़ा० सं० पु० स्वामी, मालिक।

अतालीक़—सं० पु० (१) गुरु, शिक्षक, उस्ताद; (२) अदब या शिष्टाचार सिखानेवाला।

अतालीक़ी—तु० सं० स्त्री० शिक्षक का कार्य।

अतिब्बा—सं० पु० हकीम, तबीब का ब० व०।

अतिया—सं० पु० इनाम, पुरस्कार; दी हुई वस्तु।

अतीक़—अ० वि० (१) पुराना, प्राचीन, (२) आज़ाद, स्वाधीन, (३) चुना हुआ।

अतीम—अ० वि० पापी, अपराधी; मुजरिम, गुनहगार।

अतूफ़त—(अ०) (सं० स्त्री०) कृपा, दया, अनुग्रह, मेहरबानी।

अत्तार—(अ०) (सं० स्त्री०) औषधविक्रेता, दवा-फ़रोश।

अत्तारी—(अ०) (सं० स्त्री०) दवा बेचने का काम।

अत्तिक़ा—(अ०) (सं० पु०) धर्मविरुद्ध आचरण से बचना, डरना, परहेज़गार होना।

अत्तिम—(अ०) (वि०) बहुत पूर्ण, पहुँचा हुआ, बड़ा कामिल।

अत्फ़—(अ०) (सं० पु०) (१) इच्छा, ख़्वाहिश, (२) कृपा, मेहरबानी।

अदक़—(अ०) (वि०) बहुत कठिन, मुश्किल।

अदद—(अ०) (सं० पु०) (१) गिनती, संख्या, शुमार; (२) संख्या का चिह्न।

अदद-सहीह—(अ०) (सं० पु०) पूर्ण संख्या, भिन्न-रहित संख्या।

अद्दी—(अ०) (वि०) अदद से सम्बंध रखनेवाला।

अदन—(अ०) (सं० पु०) (१) सदा रहना; (२) स्वर्ग के उपवन।

अदना—(अ०) (वि०) तुच्छ, अत्यन्त साधारण, नीचे दरजे का।

अदना ओ आला—नीच ऊँच सब, छोटे से बड़े तक।

अदब—(अ०) (सं० पु०) (१) शिष्टाचार, आदर, सम्मान, बड़ों का लिहाज़, (२) भाषा-शास्त्र का एक अंग, व्याकरण।

अदब-आमोज़—(फ़ा०) (वि०) (१) शिष्टाचार सिखाने वाला, (२) वह जो अदब सीख रहा हो।

अदब-आमोज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शिक्षण; सिखाना, तालीम।

अदम—(अ०) (सं० पु०) (१) अभाव, नेस्ती, न होना; (२) परलोक। अदम की राह लेना—मर जाना।

अदम-आबाद, अदम-ख़ाना, अदम-गाह—(फ़ा०) (सं० पु०) वह स्थान जहाँ मरने के बाद आदमी जाता है।

अदम-पैरवी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मुकदमे की पैरवी न करना।

अदम-.फ़ुरसत—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) समय या अवकाश का अभाव।

अदम-मौजूदगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अनुपस्थिति, ग़ैर-हाज़िरी।

अदम-सबूत—(फ़ा०) (सं० पु०) सबूत न होना, प्रमाण न होना।

अदरक—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक ख़ुशबू-दार चरपरी जड़ जो दवा के काम में आती है, हरी सोंठ।

अद्ल—(अ०) (सं० पु०) (१) न्याय, इन्साफ़ ; (२) ईश्वर का नाम।

अद्ल-गुस्तर, अद्ल-परवर—(फ़ा०) (वि०) न्याय करने वाला, इन्साफ़ करने वाला।

अद्वात—(अ०) (सं० स्त्री०) यंत्र, औज़ार। 'अदात' का बहुवचन।

अद्विया, अद्वियात—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) औषधें। 'दवा' का बहुवचन।

अदा—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) हाव-भाव, नाज़-अन्दाज़, नख़रा; (२) ढंग, क़रीना, तर्ज़। (वि०) (१) बयान, वर्णन; (२) बेबाक़ ; चुकता ; (३) पूरा।

अदा करना—(१) चुकाना; (२) देना, पूरा करना; (३) अमल में लाना; (४) लिखना; (५) कहना; (६) भाव बताना; (७) नियम-पूर्वक गाना; (८) पढ़ना, (९) नाज़-नख़रा करना।

अदा-बन्द—(अ०) (सं० पु०) वह कवि जो प्रेमिका के हाव-भाव का सजीव चित्रण करे।

अदा-बन्दी—(अ०) (सं० स्त्री०) प्रेमिका के हाव-भाव का चित्रण इस प्रकार कविता में करना कि तसवीर खिंच जाय।

अदायगी—(अ०) (सं० स्त्री०) चुकाना, बेबाक़ करना, पूरा करना।

अदालत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) कचहरी, न्यायालय; (२) न्याय, इन्साफ़।

अदालती—(अ०) (वि०) अदालत-सम्बन्धी।

अदावत—(अ०) (सं० स्त्री०) वैर, दुश्मनी, शत्रुता।

अदावती—(अ०) (वि०) वैरी, दुश्मन।

अदा-शनास—(अ०) (वि०) इशारे से मतलब पहचाननेवाला।

अदीद—(अ०) (वि०) (१) मानिन्द, समान, (२) बहुत से, गिने हुए।

अदीब—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) साहित्यिक, विद्या-व्यसनी, साहित्यज्ञ; (२) अदब सिखाने वाला।

अदीम—(अ०) (वि०) नष्ट-प्राय, अप्राप्य, जो रहा न हो, जो बचा न हो।

अदीम-उल-फ़ुरसत—(अ०) (वि०) जिसे अवकाश न हो, जिसके पास ख़ाली समय न हो।

अदीम-उल-मिसाल—(अ०) (वि०) बे-जोड़, अनुपम, बे-मिस्ल।

अदीम-उल-वजूद—(अ०) (वि०) दुर्लभ, नायाब, अप्राप्य।

अदील—(अ०) (वि०) बराबर, नज़ीर।

अदू—(अ०) (सं० पु०) विरोधी, शत्रु, वैरी, दुश्मन।

अनक़बूत—(अ०) (सं० स्त्री०) मकड़ी।

अनक़रीब—(अ०) (वि०) (१) शीघ्र, जल्द; (२) आस-पास, लगभग।

अनजल—(अ०) (वि०) बहुत कंजूस।

अनफ़ार—(अ०) (सं० पु०) लोग, सिपाही, कमीने। 'नफ़र' का बहुवचन।

अनबार—(फ़ा०) (सं० पु०) ढेर, राशि।

अनबोह—(फ़ा०) (सं० पु०) भीड़, हजूम।

अनवर—(अ०) (वि०) बहुत चमकीला, चमकदार।

अनवाअ—(अ०) (सं० पु०,) प्रकार, किस्में, भेद।

अनवार—(अ०) (सं० पु०) रोशनी। 'नूर' का बहुवचन।

अना—(अ०) (सं० पु०) दुःख, कष्ट, मशक़्क़त, तकलीफ़।

अनादिल—(अ०) (सं० स्त्री०) बुलबुलें। अन्दलीब का बहुवचन।

अनाम—(अ०) (सं० पु०) प्राणी, सृष्टि।

अनायत—(अ०) (सं० स्त्री०) देखो-'इनायत'।

अनार—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रसिद्ध फल, दाड़िम।

अनार-दाना—(फ़ा०) (सं० पु०) अनार का सुखाया हुआ दाना।

अनासर—(अ०) (सं० पु०) मूल तत्व। ('अन्सर' का बहुवचन) अनासर-अरबा—चारों तत्व, जल, तेज, पृथ्वी, वायु।

अनीस—(अ०) (सं० पु०) प्रेमी, प्रेम रखने वाला, मित्र, दोस्त।

अन्दर—(फ़ा०) (अव्यय) भीतर, में।

अन्दरून—(फ़ा०) (सं० पु० अन्दर, भीतर।

अन्दरूनी—(फ़ा०) (वि०) भीतरी।

अन्दलीब—(अ०) (सं० स्त्री०) बुलबुल।

अन्दाख़्ता—(फ़ा०) (वि०) (१) फेंका हुआ; (२) छोड़ा हुआ।

अन्दाज़—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) ढंग, तौर, तर्ज़; (२) हाव-भाव, नाज़, अदा, आन; (३) अनुमान, अटकल, क़यास, तख़मीना; (४) हद, मिक़दार, परिमाण; (५) नमूना, नाप, पैमाना।

अन्दाज़न्—(फ़ा०) (क्रि० वि०) अन्दाज़ या अनुमान से, अटकल से।

अन्दाज़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) अटकल, अनुमान, क़यास, तख़मीना, (२) जांच, परीक्षा, (३) नाप, परिमाण, पैमाना।

अन्दाम—(अ०) (सं० पु०) शरीर, बदन, जिस्म।

अन्देश—(फ़ा०) (वि०) देखनेवाला, ध्यान रखने वाला। (यौगिक शब्दों के अन्त में)

अन्देशा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) चिन्ता, खटका, फ़िक्र, भय; (२) आशंका, सन्देह, शक।

अन्देशा-नाक—(फ़ा०) (वि०) भयानक, ख़ौफ़नाक।

अन्दोख़्ता—(फ़ा०) (सं० पु०) जमा-पूँजी, जमा किया हुआ धन।

अन्दोह—(फ़ा०) (सं० पु०) दुःख, शोक, रंज, ग़म।

अन्दोहगीं; अन्दोह-नाक—(फ़ा०) (वि०) दुःखी, शोकार्त, रंजीदा।

अन्ना—(तु०) (सं० स्त्री०) दाया, धाय।

अन्वान—(अ०) (सं० पु०) देखो 'उन्वान'।

अन्सब—(अ०) (वि०) बहुत उचित, ठीक।

अन्सर—(अ०) (सं० पु०) मूल तत्व, असल, बुनियाद।

अन्सरी—(अ०) (वि०) अन्सर से सम्बन्धित।

अन्सार—(अ०) (सं० पु०) मददगार, सहायक, साथी।

अन्सारी—(अ०) (वि०) अन्सार से सम्बन्धित।

अफ़आल—(अ०) (सं० पु०) (१) काम, ऐमाल, कर्म; (२) प्रभाव, तासीर।

अफ़ई—(अ०) (सं० पु०) काला नाग।

अफ़कार—(अ०) (सं० स्त्री०) चिन्ताएँ, तरद्दुद। 'फ़िक्र' का बहुवचन।

अफ़गन—(फ़ा०) (वि०) गिराने वाला।

अफ़गां—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शोर, फ़रियाद, पुकार, शिकायत।

अफ़ग़ान—फ़ा० (सं० पु०) अफ़ग़ानिस्तान का निवासी, काबुली।

अफ़गार—(फ़ा०) (वि०) जख़्मी, चाक-चाक, घायल।

अफ़ज़ल—(अ०) (वि०) श्रेष्ठ, सब से बढ़कर, सर्वोपरि।

अफ़ज़ा—(फ़ा०) (वि०) बढ़ानेवाला, प्रसन्न करनेवाला। (यौगिक शब्दों के अन्त में)

अफ़ज़ाइश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वृद्धि, तरक़्क़ी, बढ़ोतरी, अधिकता।

अफ़ज़ूं—(फ़ा०) (वि०) ज़्यादा, बढ़कर, बढ़ा हुआ।

अफ़ज़ूनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ज़्यादती, वृद्धि, बढ़ोतरी, बढ़ना।

अफ़सुरदा—(फ़ा०) (वि०) देखो 'अफ़सुर्दा'।

अफ़यून—(अ०) (सं० स्त्री०) अफ़ीम।

अफ़राज़—(फ़ा०) (वि०) रौनक बढ़ाने वाला, शोभित।

अफ़रा-तफ़री—(स्त्री०) (औ०) हलचल, घबराहट, खलबली।

अफ़राद—(अ०) (सं० पु०) 'फ़र्द' का बहुवचन।

अफ़रोख़्ता—(फ़ा०) (वि०) (१) रोशन, जलता हुआ; (२) भड़का हुआ, ग़ुस्से में भरा, आग-बगूला। अफ़रोख़्ता करना—भड़काना, ग़ुस्सा दिलाना।

अफ़लाक—(अ०) (सं० पु०) आसमान। 'फ़लक' का बहुवचन।

अफ़लातून—(अ०) (सं० पु०) (१) यूनान के प्रसिद्ध दार्शनिक प्लेटो का नाम; (२) अपने को बहुत बुद्धिमान् समझने वाला, बहुत अभिमान करनेवाला।

अफ़वाज—(अ०) (सं० स्त्री०) सेना, लश्कर। 'फ़ौज' का बहुवचन।

अफ़वाह—(अ०) (सं० स्त्री०) उड़ती हुई ख़बर, मशहूर बात, गप।

अफ़शां—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) गोटे की कतरन जिसे सजावट के लिए माथे पर चुनते और बालों पर छिड़कते हैं।

अफ़शानी (फ़ा०) (सं० स्त्री०) छिड़कना।

अफ़सर—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) ताज, मुकुट; (२) हाकिम, शासक; (३) सरदार, नेता।

अफ़सान—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सान, धार रखने का यंत्र।

अफ़साना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१)

कहानी, गल्प, दास्तान, क़िस्सा, (२) हाल, चर्चा, ज़िक्र ।

अफ़साना-ख्वाँ, अफ़साना-गो—(फ़ा०) (सं० पु०) कहानी कहने वाला ।

अफ़सुर्दगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) तबीयत का मुरझा जाना, उदासी, खिन्नता ।

अफ़सुर्दा—(फ़ा०) (वि०) उदास, खिन्न ।

अफ़सुर्दा-ख़ातिर, अफ़सुर्दा-दिल—(फ़ा०) (वि०) उदास, खिन्न-मन, रंजीदा ।

अफ़सूं—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) टोना, जादू, मंत्र; (२) तंत्र ।

अफ़सूं-सोज़—(फ़ा०) (वि०) जादूगर, तान्त्रिक ।

अफ़सोस—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) शोक, रंज, दुःख, (२) पश्चात्ताप, खेद ।

अफ़िन—(अ०) (वि०) बदबू-दार, बोसीदा, सड़ा हुआ ।

अफ़ीफ़—(अ०) (वि०) नेक चलन, सदाचारी, सच्चरित्र ।

अफ़ीफ़ा—(अ०) (सं० स्त्री०) नेक स्त्री, साध्वी ।

अफ़ू—(अ०) (सं० पु०) क्षमा, माफ़ी, दरगुज़र, बख़शिश ।

अफ़ूनत—(अ०) (सं० स्त्री०) सड़ांद, दुर्गंध, बदबू ।

अब—(अ०) (सं० पु०) बाप । ('जद' के साथ मिलाकर व्यवहृत होता है)

अबख़िरा—(अ०) (सं० पु०) बुख़ारात, भाप । ('बुख़ार' का बहुवचन) अबख़िरे दिमाग़ को चढ़ना—दिमाग़ में गरमी का असर होना, बावला हो जाना ।

अबजद—(अ०) (सं० स्त्री०) देखो—'अब्जद' ।

अबतर—(अ०) (वि०) (१) परेशान, तितर-बितर, अस्त-व्यस्त, (२) ख़राब, रद्दी, (३) आवारा, बद-चलन, बदमाश ।

अबतरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) बद-चलनी, बदमाशी, (२) कु-प्रबन्ध, अव्यवस्था, (३) ख़राबी, बरबादी ।

अबद—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) अनन्त काल, हमेशा, अनन्तता (२) क़यामत का दिन ।

अबदन्—(अ०) (क्रि० वि०) सदा, हमेशा ।

अबदी—(अ०) (वि०) अमर, स्थायी, दायमी, अविनाशी ।

अबदीयत—(अ०) (सं० स्त्री०) हमेशगी, सदा बना रहना ।

अबयात—(अ०) (सं० पु०) (१) घर, (२) शैर । 'बैत' का बहुवचन ।

अबर—(अ०) (सं० पु०) देखो-'अब्र' ।

अबरक़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अभ्रक, एक प्रकार का खनिज पदार्थ जिसमें अनेक परत होते हैं ।

अबरस—(अ०) (सं० पु०) कोढ़ी, जिसके शरीर पर सफ़ेद दाग़ हों ।

अबरा—(फ़ा०) (सं० पु०) दोहरे कपड़े की ऊपर वाली तह, रूईदार कपड़े की ऊपर वाली तह ।

अबराज़—(अ०) (सं० पु०) प्रकट करना, भेद खोलना, राज़ खोलना ।

अबरार—(अ०) (सं० पु०) परहेज़गार लोग, धर्म-भीरु, संयमी ।

अबरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार का रंग-बिरंगा काग़ज़ जिसे किताबों की जिल्द पर लगाते हैं ।

अबरेशम—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) कच्चा रेशम, (२) रेशम का कोया ।

अबलक़—(अ०) (वि०) दो रंगा, स्याह-सफ़ेद । (सं० पु०)—दो रंग का घोड़ा, स्याह-सफ़ेद घोड़ा ।

अबलह—(फ़ा०) (वि०) मूर्ख, भोला-भाला, बेवक़ूफ़ ।

अबलह-फ़रेब—(फ़ा०) (वि०) मक्कार, जाल-साज़ ।

अबलह-फ़रेबी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मक्कारी, दग़ा, कपट, छल ।

अबवाब—(अ०) (सं० पु०) (१) पुस्तक के भाग, अध्याय, (२) द्वार, दरवाजे, (३) वह रुपया जो मालगुज़ारी के साथ सड़क, मदरसे इत्यादि के चन्दे में वसूल किया जाता है ।

अबस—(अ०) (क्रि० वि०) व्यर्थ, बेकार फ़िज़ूल, नाहक़, निष्फल ।

अबसार—(अ०) (सं० पु०) दानाई, आँखें, दृष्टि, ज्ञान ।

अबहार—(अ०) (सं० पु०) समुद्र, नदी । 'बहर' का बहुवचन ।

अबा—(अ०) (सं० स्त्री०) एक अरबी पोशाक, लम्बा चोग़ा ।

अबाबील—(अ०) (सं० स्त्री०) काले रंग की एक छोटी चिड़िया, जिसके सीने के पर सफेद होते हैं ।

अबियात—(अ०) (सं० स्त्री०) 'बैत' का बहुवचन, (१) घर (२) शेर ।

अबीर—(अ०) (सं० पु०) एक प्रकार का ख़ुशबूदार मसाला जो कपड़ों पर छिड़का जाता है ।

अबू—(अ०) (सं० पु०) पिता, बाप ।

अब्जद—(अ०) (सं० पु०) (१) वर्ण-माला, अरबी की वर्ण-माला, (२) वर्ण-माला के अक्षरों द्वारा संख्या सूचित करने की प्रणाली ।

अब्द—(अ०) (सं० पु०) दास, ग़ुलाम, सेवक ।

अब्दाल—(अ०) (सं० पु०) (१) औलिया लोगों का एक गिरोह, (२) साधु, फ़क़ीर ।

अब्बा—(फ़ा०) (सं० पु०) बाप, पिता ।

अब्बास—(अ०) (सं० पु०) (१) शेर, सिंह, (२) मोहम्मद साहब के चचा का नाम ।

अब्बासी—(अ०) (वि०) नीलाहट लिए हुए लाल रंग का । (सं० पु०)—(१) एक पौदे का नाम, (२) एक प्रकार का संग-मरमर ।

अब्र—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) बादल; (२) तलवार या छुरी का जौहर ।

अब्र-तर—(फ़ा०) (वि०) बरसनेवाला बादल ।

अब्र-बारां—(फ़ा०) (वि०) बरसनेवाला बादल, बरसता हुआ बादल ।

अब्रू—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) भौंह । अब्रू पर मैल न आना—ज़रा भी सदमे का असर न होना । अब्रू तानना—ग़ुस्से में भौंह ऊपर चढ़ना । अब्रू में बल आना, अब्रू में बल पड़ना—ग़ुस्सा आना, त्यौरी चढ़ना ।

अब्रुए-पैवस्ता—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वह भौंहें जो एक दूसरे से मिली हों ।

अब्लक़ा—(अ०) (सं० स्त्री०) एक चिड़िया ।

अम—(अ०) (सं० पु०) चचा, पिता का भाई ।

अमजद—(अ०) (वि०) परम पूज्य, बहुत बुज़ुर्ग ।

अमज़ाद—(अ०) (वि०) चचेरा ।

अमज़ादा—(अ०) (वि०) चचेरा भाई ।

अमदन—(अ०) (वि०) जान-बूझ कर, इरादे से, क़स्दन ।

अमन—(अ०) (सं० पु०) (१) चैन, शान्ति, (२) पनाह, बचाव, रक्षा । अमन-अमान—चैन, शान्ति, रक्षा ।

अमनियत—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शान्ति, आराम, चैन ।

अमर—(अ०) (सं० पु०) देखो 'अम्र' ।

अमराज़—(अ०) (सं० पु०) रोग, बीमारियाँ । 'मर्ज़' का ब० व० ।

अमरूद—(फ़ा०) (सं० पु०) एक फल का नाम ।

अमल—(अ०) (सं० पु०) (१) काम, व्यवहार, आचरण, (२) तामील, कारखाई, कार्य, (३) आदत, अभ्यास, लत, मश्क़, (४) नियम, क़ायदा, क़ायदे का बर्ताव, (५) प्रभाव, असर, तासीर, (६) शासन, हुकूमत, अधिकार, (७) नशा, नशे का असर, मादक-द्रव्य का प्रभाव, (८) समय, वक्त, (९) मंत्र, जादू, टोना। अमल-दख़ल—अधिकार, क़ब्ज़ा।

अमल-दरामद—(अ०) (सं० पु०) कारवाई, तामील, कार्यान्वित करना। अमल-दरामद करना—तामील करना, अमल में लाना। अमल-दरामद होना —अमल में आना, कार-रवाई होना।

अमल होना—(१) दख़ल होना, क़ब्ज़ा होना, (२) असर होना, (३) वक्त होना, समय होना।

अमल-दार—(अ०) (सं० पु०) आमिल, तहसीलदार, कारकुन।

अमल-दारी—(अ०) (सं० स्त्री०) हुकूमत, राज्य, रियासत, सल्तनत।

अमला—(अ०) (सं० पु०) (१) कारकुन लोग, अहलकार, कर्मचारी, (२) मकान का मलबा, ज़मीन छोड़ कर बाक़ी सब चीज़ें।

अमली—(अ०) (वि०) (१) अमल से सम्बन्धित, (२) कार्य-रूप में, कार्य-सम्बन्धी। (औ०) (३) मामूली। (सं० पु०) —नशेबाज़।

अमवाज—(अ०) (सं० स्त्री०) लहरें, 'मौज' का बहुवचन।

अमवात—(अ०) (सं० स्त्री०) मौतें। 'मैयत' का बहुवचन।

अमसाल—(अ०) (सं० स्त्री०) कहावतें। 'मिसल' का बहुवचन।

अमाइद—(अ०) (सं० पु०) क़ौम के सरदार, नेता, प्रतिष्ठित पुरुष।

अमान—(अ०) (सं० पु०) (१) रक्षा, पनाह, शरण, बचाव, (२) शान्ति, चैन। अमान पाना—पनाह मिलना, रक्षा पाना।

अमानत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) धरोहर, थाती, (२) अमीन का काम, पैमायश का काम। अमानत में ख़यानत किसी की धरोहर को बेईमानी से अपने काम में लाना।

अमानत-दार—(अ०) (वि०) (१) जिसके पास धरोहर रक्खी गई हो, जिसे कोई चीज़ सौंपी गई हो, (२) भेद जानने वाला।

अमानत-नामा—(अ०) (सं० पु०) वह काग़ज़ जिस पर धरोहर के बारे में लिखा-पढ़ी दर्ज हो।

अमानी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) वह काम जिसका ठेका न दिया जाय; (२) वह काम या ज़मीन जिसका कुल प्रबंध अपने ही हाथ में हो।

अमामा—(अ०) (सं० पु०) पगड़ी, साफा।

अमारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) हाथी का हौदा जो बैठने के लिए उसकी पीठ पर रखा जाता है।

अमीक़—(अ०) (वि०) (१) गहरा, गंभीर, (२) कामिल।

अमीन—(अ०) (सं० पु०) (१) अमानत-दार, (२) जो ज़मीन के बंदोबस्त में पैमायश करे, (३) वह कर्मचारी जो अदालत में बटवारा, कुर्क़ी आदि का काम करे।

अमीनी—(अ०) (सं० स्त्री०) अमीन का काम।

अमीम—(अ०) (वि०) आम।

अमीर—(अ०) (सं० पु०) (१) अफ़सर, सरदार, कार्याधिकारी; (२) रईस, धनी, दौलत-मन्द, (३) उदार।

अमीर-उल्-उमरा—(अ०) (सं० पु०) अमीरों का सरदार, अग्रणी।

अमीर-उल्-बहर—(अ०) (सं० पु०) नौ-सेनापति।

अमीर-ज़ादा—(अ०) (सं० पु०) शाह-ज़ादा, राजकुमार, अमीर का लड़का।

अमीराना—(अ०) (वि०) अमीरों की तरह का, धनवानों का सा।

अमीरी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) रियासत, राज्य, शासन, (२) धनाढ्यता दौलत-मन्दी, (३) उदारता।

अमूद—(अ०) (सं० पु०) (१) सितून, खंभा, (२) सीधी खड़ी लकीर।

अमूम—(अ०) (वि०) साधारण, आम।

अमूमन—(अ०) (क्रि० वि०) साधारणतः, मामूली तौर पर।

अमूर—(अ०) (सं० पु०) काम। 'अम्र' का बहुवचन।

अमूरात—(अ०) (सं० पु०) काम। 'अम्र' का बहुवचन।

अम्द—(अ०) (सं० पु०) इरादा, विचार।

अम्दन्—(अ०) (क्रि० वि०) जान-बूझ कर, इरादा करके, क़स्दन।

अम्बर—(अ०) (सं० पु०) एक बहुमूल्य सुगंधित द्रव्य।

अम्बार—(फ़ा०) (सं० पु०) ढेर, राशि।

अम्बार-ख़ाना—(फ़ा०) (सं० पु०) भांडार, कोष, गोदाम।

अम्बारी—(सं० स्त्री०) देखो 'अमारी'।

अम्बिया—(अ०) (सं० पु०) पैग़म्बर लोग। 'नबी' का बहुवचन।

अम्बोह—(फ़ा०) (सं० पु०) भीड़, समाज।

अम्म—(अ०) (सं० पु०) चचा।

अम्म-ज़ादा—(अ०) (सं० पु०) चचा का लड़का।

अम्मह—(अ०) (सं० स्त्री०) बाप की बहन, बुआ।

अम्मामा—(अ०) (सं० पु०) एक प्रकार की पगड़ी। अम्मामा उतारना—बेइज़्ज़त करना।

अम्मारा—(अ०) (वि०) सरकश, ज़ालिम, अत्याचारी।

अम्मारी—(अ०) (सं० स्त्री०) हाथी का हौदा। देखो-'अमारी'।

अम्मी—(अ०) (सं० स्त्री०) मा, माता।

अम्मू—(अ०) (सं० पु०) चचा, बाप का भाई।

अम्र—(अ०) (सं० पु०) (१) आज्ञा, हुक्म, (२) बात, (३) काम, कार्य, फ़ेल, (४) विषय, मामला, (५) समस्या, मसला। अम्र ओ निह्‌ी—विधि-निषेध।

अम्रे मारूफ़—अच्छे काम का हुक्म देना।

अयाँ—(अ०) (वि०) स्पष्ट, प्रकाशमान्, ज़ाहिर, प्रकट।

अयाग़—(तु०) (सं० पु०) प्याला, शराब पीने का प्याला।

अयादत—(अ०) (सं० स्त्री०) बीमार का हाल पूछना, बीमार-पुरसी।

अयार—(अ०) (सं० पु०) (१) खरा-खोटा-पन, (२) सोना तोलने का काँटा।

अयाल—(अ०) (सं० पु०) (१) बाल-बच्चे, कुटुम्ब, परिवार, (२) घोड़े वा शेर की गर्दन पर के बाल। अयाल ओ इतफ़ाल—बाल-बच्चे।

अयालदार—(अ०) (सं० पु०) बाल-बच्चे वाला मनुष्य।

अयालदारी—(अ०) (सं० स्त्री०) घर-गृहस्थी।

अयूब—(अ०) (सं० पु०) दोष। 'ऐब' का बहुवचन।

अय्याम—(अ०) (सं० पु०) (१) दिन, (२) समय, काल, (३) स्त्रियों के मासिक धर्म का समय।

अय्याम-गुज़ारी—(अ०) (सं० स्त्री०)

(१) दिन काटना, (२) टालना, देर लगाना।

अय्यार—(अ०) (वि०) (१) चालाक, होशयार, (२) मक्कार, धूर्त, फ़रेबी।

अय्यारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) चालाकी, छल, फ़रेब।

अय्याश—(अ०) (वि०) व्यभिचारी, तमाश-बीन, वेश्या-गामी।

अय्याशी—(अ०) (सं० स्त्री०) तमाश-बीनी, व्यभिचार, औबाशी।

अय्यूब—(अ०) (सं० पु०) एक प्रसिद्ध पैग़म्बर जो बहुत बड़े सहनशील थे, इनका सब्र मशहूर है।

अरक़—(अ०) (सं० पु०) देखो 'अर्क़'।

अरक़-गीर—(अ०) (सं० पु०) (१) एक प्रकार की टोपी, (२) चारजामा, घोड़े की ज़ीन के नीचे का कपड़ा।

अरक़-रेज़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) बहुत परिश्रम, इतनी मेहनत करना कि पसीना निकल आवे।

अरकान—(अ०) (सं० पु०) (१) सितून, खंभ, स्तंभ, (२) तत्व।

अरकाने-दौलत, अरकाने-सल्तनत—(अ०) (सं० पु०) राज्य के स्तंभ, बड़े बड़े अहलकार, वज़ीर, मंत्री।

अरगजा—(फ़ा०) (सं० पु०) सुगंधित द्रव्य जो चंदन, केसर, कपूर से बनता है।

अरगनून—(फ़ा०) (सं० पु०) एक बाजे का नाम।

अरग़वान—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) एक पेड़ जिसमें वसन्त ऋतु में लाल पुष्प लगते हैं; (२) लाल रंग के फूल, (३) लाल रंग।

अरग़वानी—(फ़ा०) (वि०) सुर्ख़, लाल।

अरग़ून—(फ़ा०) (सं० पु०) एक बाजे का नाम।

अरज़—(अ०) (सं० स्त्री०) ज़मीन।

अरज़-मन्द—(अ०) (वि०) माननीय, प्रतिष्ठा-प्राप्त।

अरज़ल—(अ०) (सं० पु०) वह घोड़ा जिसका एक पांव सफ़ेद और बाकी तीन दूसरे रंग के हों; इसको मनहूस समझा जाता है।

अरज़ल—(अ०) (वि०) (१) घटिया क़िस्म का, (२) निहायत कमीना आदमी।

अरज़ान—(फ़ा०) (वि०) सस्ता, कम-क़ीमत।

अरज़ानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सस्ता-पन।

अरज़ाल—(अ०) (सं० पु०) कमीने आदमी, नीच। 'रज़ील' का बहुवचन।

अरज़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) देखो 'अर्ज़ी'।

अरफ़ा—(अ०) (वि०) बहुत बुलंद, अत्यन्त उच्च।

अरब—(अ०) (सं० पु०) (१) एशिया का प्रसिद्ध देश, (२) अरब का निवासी।

अरबा—(अ०) (वि०) चार।

अरबाब—(अ०) (सं० पु०) स्वामी, मालिक, कर्ता।

अरबाबे-निशात—(अ०) (सं० पु०) गाने बजाने वाले, नाचने गाने वाले।

अरबाबे-सुख़न—(अ०) (सं० पु०) शायर, कवि।

अरबिस्तान—(अ०) (सं० पु०) अरब देश।

अरबी—(अ०) (वि०) अरब देश का। (सं० स्त्री०)—अरब देश की भाषा। अरबी बाजा—ताशा।

अरबी-ख़्वानी—(अ०) (सं० स्त्री०) अरबी भाषा पढ़ना।

अरबी-दानी—(अ०) (सं० स्त्री०) अरबी भाषा जानना।

अरम—(अ०) (सं० पु०) स्वर्ग, जो शद्दाद ने इस लोक में बनाया था।

अरमग़ान—(फ़ा०) (सं० पु०) तुहफ़ा, सौग़ात, अनोखी चीज़।

अरमान—(तु०) (सं० पु०) लालसा, इच्छा, चाह, आरज़ू, हौसला।

अरवाह—(अ०) (सं० स्त्री०) १) आत्माएं, (२) फ़रिश्ते, (३) (औ०) नीयत। 'रूह' का बहुवचन।

अरसलान—(तु०) (सं० पु०) (१) सेवक, नौकर, ग़ुलाम, (२) शेर।

अरसा—(अ०) (सं० पु०) (१) समय, वक्त, (२) देर, विलम्ब।

अरस्तू—(यू०) (सं० पु०) यूनान का परम प्रसिद्ध दार्शनिक, आरिस्टोटल।

अराकीन—(अ०) (सं० पु०) वज़ीर, सरदार, अमीर-उमरा।

अराज़िल—(अ०) (सं० पु०) नीच, कमीने।

अराज़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) पृथ्वी, धरती, भूमि, (२) खेत।

अराज़ी उफ़्तादा—ग़ैर-आबाद ज़मीन, जो जोती-बोयी न जाती हो।

अराबची—(फ़ा०) (सं० पु०) गाड़ी-वान, गाड़ी हाँकने वाला।

अराबा—(फ़ा०) (सं० पु०) गाड़ी, छकड़ा।

अरायज़—(अ०) (सं० स्त्री०) अर्ज़ियाँ।

अरीज़—(अ०) (वि०) चौड़ा, बड़े अरज़ का, चकला।

अरीज़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) वह पत्र जो छोटे की तरफ़ से बड़े को लिखा जाय, (२) अरज़ी।

अरीज़ा-निगार—(फ़ा०) (वि०) पत्र लिखने वाला।

अरीज़ा-नियाज़ (फ़ा०) (वि०) अर्ज़ी देने वाला।

अरूस—(फ़ा०) (सं० पु०) देखो 'उरूस'।

अरूसी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शादी, विवाह, निकाह।

अर्क़—(अ०) (सं० पु०) (१) भभके से खींचा हुआ पानी, भाप से बना हुआ पानी, (२) रस, किसी चीज़ का निचोड़ा हुआ पानी, (३) पसीना, स्वेद। अर्क़ अर्क़ होना—पसीने पसीने होना (मेहनत या शर्मिंदगी से)।

अर्क़ आजाना, अर्क़ आना—(१) पसीना आ जाना, (२) शर्म से पानी पानी हो जाना।

अर्क़-आलूद—(फ़ा०) (वि०) पसीने से तर।

अर्क़-गीर—(अ०) (सं० पु०) (१) भबका, (२) चार जामा।

अर्क़-रेज़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) इतना अधिक परिश्रम कि पसीना टपकने लगे, घोर परिश्रम।

अर्क़-शीर—(अ०) (सं० पु०) दूध का फाड़ा हुआ अर्क़।

अर्क़े-गुल—(अ०) (सं० पु०) गुलाब का अर्क़, गुलाब जल।

अर्क़े-नंग—(अ०) (सं० पु०) शर्मिन्दगी का पसीना, लज्जा-जनित स्वेद।

अर्क़े-नाना—(अ०) (सं० पु०) भबके में खिंचा हुआ सिरका जो पोदीने की लाग से खिंचता है।

अर्ज—(फ़ा०) (सं० पु०) सम्मान, प्रतिष्ठा, पद, ओहदा।

अर्ज़—(अ०) (सं० पु०) (१) चौड़ाई, (२) ज़मीन, भूमि। (सं० स्त्री०) निवेदन, प्रार्थना, दरख़्वास्त।

अर्ज़क़—(अ०) (वि०) नीला।

अर्ज़-बेगी—(तु०) (सं० पु०) वह कर्म-चारी जो लोगों की दरख़्वास्तें बादशाह के सामने पेश करे।

अर्ज़-मन्द—(फ़ा०) (वि०) उच्च-पद पर प्रतिष्ठित।

अर्ज़-मारूज़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दरख़्वास्त, प्रार्थना, विनती।

अज़ल—(अ०) (सं० पु०) देखो—'अरज़ल'।
अर्ज़ाँ—(फ़ा०) (वि०) सस्ता, कम क़ीमत।
अर्ज़ानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सस्तापन।
अर्ज़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) प्रार्थना-पत्र, दरख़्वास्त।
अर्ज़ी-दावा—(अ०) (सं० पु०) वह प्रार्थना-पत्र जिसमें पूरा हाल लिखकर मुद्दई अदालत में नालिश करता है।
अर्ज़ी-नवीस—(अ०) (सं० पु०) वह आदमी जिसका पेशा अर्जियाँ लिखने का हो।
अर्ज़े-हाल—(अ०) (सं० पु०) अर्ज़ी, हालत बयान करना।
अर्दब—(फ़ा०) (सं० पु०) शतरंज के खेल में वह मोहरा जो बादशाह को किश्त से बचाने के लिए बीच में डाला जाय।
अर्श—(अ०) (सं० पु०) (१) ख़ुदा के रहने का सब से ऊँचा स्वर्ग, (२) तख़्त, छत। अर्श से फ़र्श तक—आस्मान से ज़मीन तक। अर्श के तारे तोड़ना—अजीब काम करना, असंभव काम करना। अर्श पर चढ़ जाना—बहुत घमंडी होना। अर्श पर चढ़ाना—बड़ी क़द्र करना, ख़ुशामद करके घमंडी बना देना। अर्श पर दिमाग़ पहुँचाना—बहुत घमंडी कर देना। (कहा०) अर्श से छूटे, खजूर में अटके—एक विपत्ति से छूट कर दूसरी में फँसना।
अर्श-आशियाँ—(अ०) (वि०) वह मनुष्य जिसका घर अर्श पर हो, मृत, स्वर्गीय।
अर्श-पाया, अर्श-विक़ार—(फ़ा०) (वि०) उच्च-पदस्थ, आली-मर्तबा।
अर्शे-अकबर—(फ़ा०) (सं० पु०) आदमी का दिल, हृदय।
अर्शे-आज़म—(फ़ा०) (सं० पु०) ख़ुदा-ताला का अर्श।
अर्शे-मुअल्ला—(फ़ा०) (सं० पु०) सब से ऊँचा स्वर्ग।
अर्सा—(अ०) (सं० पु०) (१) देर, विलम्ब; (२) समय, ज़माना; (३) मैदान, (४) फ़ासला, दूरी।
अर्सा-गाह—(फ़ा०) (सं० पु०) मैदान की जगह।
अल-ग़रज़—(अ०) (क्रि० वि०) ख़ुलासा यह कि, मतलब यह कि।
अलग़ोज़ा—(अ०) (सं० पु०) एक प्रकार की बाँसरी (बाजा)।
अलताफ़—(अ०) (सं० पु०) कृपाएँ, मेहरबानियाँ। 'लुत्फ़' का बहुवचन।
अलबत्ता—(अ०) (अव्यय) (१) अवश्य, निस्सन्देह, बेशक, (२) परन्तु, लेकिन।
अलफ़—(अ०) (सं० पु०) घास, चारा।
अलफ़-ज़ार—(अ०) (सं० पु०) चरा-गाह।
अलफ़ाज़—(अ०) (सं० पु०) शब्द। 'लफ़्ज़' का बहुवचन।
अलफ़ा—(फ़ा०) (वि०) लुच्चा, शोहदा, मुफ़्त-ख़ोर।
अलम—(अ०) (सं० पु०) (१) झंडा, निशान, (२) पहाड़, पर्वत, (३) रंज, ग़म, दुःख।
अलम-दार, अलम-बरदार—(फ़ा०) (सं० पु०) वह मनुष्य जो फ़ौजी झंडा लेकर चले।
अलमास—(फ़ा०) (सं० पु०) हीरा।
अलल-ख़सूस—(अ०) (क्रि० वि०) ख़ास करके, विशेषतया।
अलल-हिसाब—(अ०) (क्रि० वि०) हिसाब में, बिना हिसाब साफ़ किये।
अल-विदा—(अ०) (सं० स्त्री०) रमज़ान का अन्तिम शुक्रवार।
अलवी—(अ०) (सं० पु०) हज़रत अली की सन्तान।

अलस्सबाह—(अ०) (क्रि० वि०) सबेरे, तड़के।

अलहदगी—(अ०) (सं० स्त्री०) जुदाई, एकान्त।

अलहदा—(अ०) (वि०) (१) अलग, जुदा, पृथक्, (२) एकान्त में।

अलाक़ा—(अ०) (सं० पु०) देखो 'इलाक़ा'।

अलानिया—(अ०) (क्रि० वि०) ज़ाहिरा, खुल्लम-खुल्ला।

अलामत—(अ०) (सं० स्त्री०) निशान, चिह्न, आसार, पहचान।

अलायक़—(अ०) (सं० पु०) (१) ताल्लुक़ात, (२) बखेड़े। 'इलाक़ा' का बहुवचन।

अलालत—(अ०) (सं० स्त्री०) बीमारी, रोग।

अलावा—(अ०) (वि०) अतिरिक्त, ज़्यादा, और भी।

अलावा - अज़ीं, अलावा - बरीं—इसके सिवा।

अलिया—(अ०) उसके ऊपर।

अली—(अ०) (सं० पु०) (१) .खुदा का नाम; (२) चौथे खलीफ़ा का नाम।

अली-धत—(वि०) बहुत ऊँचा, क़द्-आवर।

अली-बन्द—(अ०) (सं० पु०) (१) एक ज़ेवर जो औरतें कलाई पर बाँधती हैं और हाथ की उंगलियों में भी पहनती हैं; (२) कुश्ती के एक पेच का नाम; (३) एक प्रकार का तावीज़ जो जादू का असर मिटाता है।

अलीम—(अ०) (वि०) (१) जाननेवाला, ज्ञानी, दाना; (२) ईश्वर।

अलील—(अ०) (वि०) (१) बीमार, रोगी; (२) कमज़ोर, दुर्बल; (३) दर्दनाक।

अलेक-सलेक—(अ०) (सं० स्त्री०) मामूली मुलाक़ात, साधारण परिचय।

अल्-अब्द—(अ०) (सं० पु०) (प्रार्थना-पत्र पर हस्ताक्षर करने से पहले यह शब्द लिखते हैं)—प्रार्थी के दस्तख़त हैं।

अल-अमान—(अ०) ईश्वर हमारी रक्षा करे।

अल्क़त—(अ०) (वि०) (१) छोड़ना, निकाल देना; (२) जवाब देना, ख़तम कर देना।

अलकन—(अ०) (वि०) हकला, जो स्पष्ट न बोल सके।

अल्क़ाब—(अ०) (सं० पु०) उपाधियाँ, ख़िताब। (लक़ब का बहुवचन)।

आदाब अलक़ाब—पत्र का सिरनामा।

अल्क़िस्सा—(अ०) (क्रि० वि०) तात्पर्य यह कि, संक्षेप में यह कि।

अलतमश—(तु०) (सं० पु०) सेना-पति, फ़ौज का अफ़सर।

अलताफ़—(अ०) (सं० पु०) कृपा, मेहरबानी। 'लुत्फ़' का बहुवचन।

अलमस्त—(फ़ा०) (वि०) मत्त, नशे में चूर, बदमस्त।

अलमस्ती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मस्ती, मत्तता।

अल्लामा—(अ०) (सं० पु०) बहुत बड़ा विद्वान् और बुद्धिमान।

अल्लाह—(अ०) (सं० पु०) ईश्वर, परमात्मा।

अल्लाह-बेली—(अ०) ईश्वर सहायक है।

अल्लाहो अकबर—(अ०) ईश्वर महान् है। (स्तुति या आश्चर्य-प्रदर्शन के समय कहते हैं)

अलविदा—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) विदा, रुख़सत; (२) रमज़ान महीने का अन्तिम शुक्रवार।

अल्-हक़—(अ०) (क्रि० वि०) बेशक, यक़ीनन, निस्सन्देह।

अल्-हम्द—(अ०) (सं० स्त्री०) .क़ुरान शरीफ़ का प्रथम अध्याय।

अल्-हम्दो-लिल्लाह—(अ०) परमात्मा धन्य है।

अल्-हासिल—(अ०) (क्रि० वि०) आख़िरकार, संक्षेप में यह।

अवाक़िब—(अ०) (सं० पु०) काम के परिणाम। ('आक़बत' का बहुवचन)।

अवाख़िर—(अ०) (सं० पु०) पिछले हिस्से, अन्त के।

अवातिफ़—(अ०) (सं० स्त्री०) मेहरबानियाँ। 'आतिफ़त' का बहुवचन।

अवाम—(अ०) (सं० पु०) सर्वसाधारण, आम लोग।

अवाम-उन्नास—(अ०) (सं० पु०) (१) सर्व-साधारण, सब लोग, आम लोग; (२) बाज़ारी आदमी, जाहिल।

अवामिल—(अ०) (सं० पु०) अमल करने वाले, कारकुन। 'आमिल' का बहुवचन।

अवायल—(अ०) (वि०) प्राथमिक, आरम्भिक—('अव्वल' का बहुवचन); (२) (हि० पु०) वह डोरा जिसको चरख़े पर तान देते हैं और उसी से चरख़ा चक्कर खाता है।

अवारजा—(फ़ा०) (सं० पु०) रोज़नामचा, रोकड़-बही।

अवारिज़—(अ०) (सं० पु०) (१) बीमारियाँ, रोग; (२) घटना, पेश आनेवाली चीज़ें। 'आरज़ा' का बहुवचन।

अव्वल—(अ०) (वि०) (१) प्रथम, पहला; (२) मुख्य, प्रधान; (३) सर्वोत्तम, सब से बढ़िया, सब से श्रेष्ठ।

अव्वलन—(अ०) (क्रि० वि०) पहले, आरंभ में।

अव्वलीन—(अ०) (वि०) पहले के लोग, प्राचीन।

अश-अश—(फ़ा०) (सं० पु०) हर्ष सूचित करना, प्रसन्नता प्रकट करना।

अशआर—(अ०) (सं० पु०) (१) कविता, (२) पद्य। 'शेर' का बहुवचन।

अशकाल—(अ०) (सं० स्त्री०) सूरत। 'शक्ल' का बहुवचन।

अशख़ास—(अ०) (सं० पु०) लोग। 'शख़्स' का बहुवचन।

अशग़ाल—(अ०) (सं० पु०) काम, मशग़ले। 'शुग़ल' का बहुवचन।

अशजार—(अ०) (सं० पु०) पेड़, दरख़्त। 'शजर' का बहुवचन।

अशद—(अ०) (वि०) बहुत कठिन, बहुत सख़्त, अत्यन्त, घोर।

अशफ़ाक़—(अ०) (सं० पु०) अनुग्रह, मेहरबानियाँ, इनायतें, बड़ों की कृपा।

अशर—(अ०) (सं० पु०) दस, दसवाँ भाग। (वि०) बड़ा शरीर।

अशरफ़—(फ़ा०) (सं० पु०) बहुत सज्जन, ज़्यादा बुज़ुर्ग, माननीय।

अशरफ़ी—(फ़ा०) (सं० पु०) मौहर, सोने का सिक्का।

अशरा—(अ०) (वि०) दस। (सं० पु०) (१) महीने का दसवाँ दिन, (२) महीने के दस दिन, (३) मोहर्रम की दसवीं तारीख़। अशरा-अव्वल—महीने के पहले दस दिन; शुरू के दस वर्ष। अशरा-सानी—महीने के दूसरे दस दिन; ग्यारवीं साल से बीसवीं साल तक का समय।

अशरात—(अ०) (सं० पु०) दहाइयाँ (जैसे, दस, बीस, तीस इत्यादि)।

अशराफ़—(अ०) (सं० पु०) भले मानस, सज्जन पुरुष। 'शरीफ़' का बहुवचन।

अशराफ़त—(अ०) (सं० स्त्री०) सज्जनता, सौजन्य, भलमनसाहत।

अशरार—(अ०) (सं० पु०) 'शरीर' का बहुवचन।

अशहब—(अ०) (वि०) (१) स्याह रंग जिसमें सफ़ेदी की झलक हो; (२) सब्ज़ा घोड़ा; (३) घोड़ा।

अशिया—(अ०) (सं० स्त्री०) चीज़ें, वस्तुएँ। 'शै' का बहुवचन।

अशीर—(अ०) (सं० पु०) सौवाँ हिस्सा, ज़रा-सा।

अश्क—(फ़ा०) (सं० पु०) आँसू, अश्रु।

अश्क-बार—(फ़ा०) (वि०) आँसू बहाने वाला।

अश्के-बुलबुल—(लख०) अफ़ीम की ज़रा सी मात्रा।

अश्ग़ाल—(अ०) (सं० पु०) काम। 'शग़ल' का बहुवचन।

असग़र—(अ०) (वि०) छोटा, बहुत छोटा।

असद—(अ०) (सं० पु०) (१) सिंह, शेर; (२) सिंह राशि।

असना—(अ०) (वि०) बीच, दरमियान।

असनाद—(अ०) (सं० स्त्री०) प्रमाण-पत्र, राजाज्ञा। 'सनद' का बहुवचन।

असफ़ल—(अ०) (वि०) सब से नीचा, कमीना।

असब—(अ०) (सं० पु०) शरीर का पट्ठा।

असबाब—(अ०) (सं० पु०) (१) कारण, सबब; (२) सामान, सामग्री, ज़रूरत का सामान, असासा। 'सबब' का बहुवचन।

असम—(अ०) (सं० पु०) पाप, अपराध, गुनाह।

असमार—(अ०) (सं० पु०) फल। 'समर' का बहुवचन।

असर—(अ०) (सं० पु०) (१) निशान, चिह्न; (२) फल, लाभ, फ़ायदा; (३) प्रभाव, तासीर; (४) विशेषता, गुण-विशेष, ख़ासियत; (५) दबाव, क़ाबू, अधिकार; (६) काल, समय।

असर-दार—(अ०) (वि०) प्रभावशाली, जो असर रखता हो।

असर-पज़ीर—(फ़ा०) (वि०) असर क़बूल करने वाला, प्रभावित हो जाने वाला।

असरार—(अ०) (सं० पु०) रहस्य, भेद, गुप्त बात।

असल—(अ०) (सं० पु०) (१) जड़, बुनियाद, मूल; (२) बिसात, मूल-धन; (३) शहद; (४) सारांश, ख़ुलासा; (५) ख़ालिस, बेमेल, शुद्ध; (६) प्राचीन, ठीक, तथ्य।

असलह—(अ०) (सं० पु०) हथियार, शस्त्र।

असलह-ख़ाना—(अ०) (सं० पु०) शस्त्रागार।

असलन—(अ०) (क्रि० वि०) (१) बिलकुल, नाम को, मुतलक़, कुछ भी, (२) हरगिज़, किसी तरह, कदापि।

असलाब—(अ०) (सं० स्त्री०) पुश्तें, पीढ़ियाँ।

असलियत—(अ०) (सं० स्त्री०) हक़ीक़त, तथ्य, वास्तविकता।

असली—(अ०) (वि०) (१) मूल, मुख्य, प्रधान; (२) सच्चा, खरा; (३) विशुद्ध, ख़ालिस, बे-मेल।

असवार—(फ़ा०) (सं० पु०) सवार, अश्वारोही।

असा—(अ०) (सं० पु०) लाठी, छड़ी।

असाए-पीर, असाए-पीरी—(अ०) (सं० पु०) बुढ़ापे का सहारा।

असा-बरदार—(अ०) (सं० पु०) चोबदार, जो सवारी के साथ साथ चलते हैं।

असामी—(अ०) (सं० पु०) (१) किसान, काश्तकार, रैयत; (२) ग्राहक, ख़रीदार; (३) ओहदा, नौकरी; (४) वह आदमी जो जुआ खेलना न जानता हो और सदा हारता हो; (५) व्यक्ति, प्राणी; (६) अपराधी, मुलज़िम; (७) क़र्ज़दार, देनदार; (८) जिसे ठगना हो,

जिससे छल-कपट द्वारा कुछ काम निकालना हो।

असालत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) जन्म का प्रभाव, ज़ात और ख़ान-दान का असर; (२) शराफ़त, सौजन्य।

असालतन्—(अ०) (क्रि० वि०) स्वयं, अपने आप।

असालीब—(अ०) (सं० पु०) तर्ज़, ढंग, तरीक़ा।

असास—(अ०) (सं० पु०) जड़, बुनियाद।

असास-उल-बैत—(अ०) (सं० पु०) गृहस्थी का सामान, असबाब ख़ाना-दारी।

असासा—(अ०) (सं० पु०) कपड़ा-लत्ता, ज़ेवर, असबाब, पूँजी।

असीर—(फ़ा०) (सं० पु०) क़ैदी, बन्दी।

असीरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) क़ैद, बन्धन, बन्दी होने की दशा।

असील—(अ०) (वि०) (१) अच्छी नस्ल का, उम्दा क़ौम का (घोड़ा); (२) अच्छे कुल का, उच्च वंश का, सुशील। (सं० स्त्री०) खाना पकानेवाली, मामा, नौकरानी।

असीस—(अ०) (सं० पु०) कोतवाल।

अस्कर—(अ०) (सं० पु०) (१) सेना, फौज, लश्कर; (२) अंधेरा, रात का अंधकार।

अस्करी—(अ०) (सं० पु०) सिपाही, सैनिक। (वि०) अस्कर से सम्बन्ध रखने वाला।

अस्तग़्फ़िर-उल्लाह—(अ०) ईश्वर क्षमा करे।

अस्तबल—(अ०) (सं० पु०) तबेला, अश्व-शाला।

अस्तर—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) दुहरे या रुई-दार कपड़े के नीचे की तह; (२) तह, (३) आधार, ज़मीन।

अस्तर-कारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) तह चढ़ाना, दीवार पर पलस्तर करना।

अस्नाय—(अ०) (सं० पु०) बीच का वक्त, वक़्फ़ा, समय।

अस्प—(फ़ा०) (सं० पु०) घोड़ा

अस्प-ग़ोल—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार का लुआब-दार बीज जो दवा के काम आता है।

अस्फंज—(अ०) (सं० पु०) स्पंज।

अस्मत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) पाति-व्रत, सच्चरित्रता; (२) पापों से अपने आप को बचाना, साधुता।

अस्माऽ—(अ०) (सं० पु०) नाम। 'इस्म' का बहुवचन।

अस्र—(अ०) (सं० पु०) (१) ज़माना, काल, समय; (२) रोज़गार, काम; (३) दिन का अख़ीर हिस्सा, दिन का चौथा पहर; (४) संध्या की नमाज़। हम-अस्र—समकालीन।

अस्ल—(अ०) (सं० पु०) देखो—'असल'।

अस्लम—(अ) (वि०) (१) बाक़ी, बचा हुआ; (२) पूरा, पूर्ण; (३) सुरक्षित।

अस्लाफ़—(अ०) (वि०) प्राचीन काल के लोग, अगले वक्त के लोग।

अहक़र—(अ०) (वि०) बहुत तुच्छ, दीना-तिदीन।

अहकाम—(अ०) (सं० पु०) आज्ञाएँ। 'हुक्म' का बहुवचन।

अहक़्—(अ०) (वि०) बहुत हक़्-दार, अधिकारी।

अहद—(अ०) (सं० पु०) (१) काल, समय, ज़माना; (२) राज्य-काल, शासन-काल; (३) प्रतिज्ञा, शपथ, क़सम, क़ौल-क़रार; (४) वादा। अहद ओ पैमाँ—प्रतिज्ञा, क़ौल-क़रार, क़स्मा-क़स्मी।

अहद-नामा—(अ०) (सं० पु०) प्रतिज्ञा-पत्र।

अहद-शिकन—(अ०) (वि०) प्रतिज्ञा भंग करने वाला, प्रण-तोड़ने वाला, वादा-ख़िलाफ़ ।

अहद-शिकनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) प्रतिज्ञा-भंग, क़ौल पर क़ायम न रहना ।

अहदियत—(अ०) (सं० स्त्री०) एकता, एक होना ।

अहदी—(अ०) (सं० पु०) बहुत बड़ा आलसी ।

अहफ़ार—(अ०) (सं० पु०) पोते, नवासे ।

अहबाब—(अ०) (सं० पु०) मित्र, दोस्त, प्रेमी, आशना । 'हबीब' का बहुवचन ।

अहम—(अ०) (वि०) बहुत कठिन, बहुत मुश्किल ।

अहमक़—(अ०) (सं० पु०) मूर्ख, बेवक़ूफ़, नादान ।

अहमद—(अ०) (वि०) (१) अत्यन्त प्रशंसित, बहुत तारीफ़ किया गया; (२) मोहम्मद साहब का नाम ।

अहमदी—(अ०) (सं० पु०) मुसलमान, मोहम्मद-साहब का अनुयायी ।

अहमर—(अ०) (वि०) लाल, सुर्ख़, बहुत सुर्ख़ ।

अहरन—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) निहाई, लोहे का टुकड़ा जिस पर कोई चीज़ रखकर सुनार या लुहार हथोड़े से चोट लगा कर पीटते हैं ।

अहरार—(अ०) (सं० पु०) ('हुर' का बहुवचन,—आज़ाद और शरीफ़ लोग, उदार ।

अहल—(अ०) (सं० पु०) (१) स्वामी, साहब, रखने वाला; (२) आदमी । (वि०) योग्य, सभ्य, लायक़ । अहल ओ अयाल—बाल-बच्चे ।

अहल-अल्लाह—(अ०) (सं० पु०) ईश्वर-भक्त, ईश्वर-निष्ठ, धर्मात्मा, वली ।

अहल-कार—(अ०) (सं० पु०) कर्मचारी, कारकुन, कारिन्दा ।

अहल-मद—(अ०) (सं० पु०) अदालत का कर्मचारी, जिसके पास किसी विभाग की मिसलें रहती हैं ।

अहलियत—(अ०) (सं० स्त्री०) योग्यता, आदमियत ।

अहलिया—(अ०) (सं० स्त्री०) पत्नी, स्त्री, जोरू ।

अहले-औराक़—(अ०) (सं० पु०) ईश्वर-निष्ठ, ख़ुदा-रसीदा ।

अहले-क़लम—(अ०) (सं० पु०) पढ़े-लिखे आदमी, शिक्षित-समुदाय ।

अहले-कलाम—(अ०) (सं० पु०) साहित्यिक, पढ़ने लिखने वाले ।

अहले-किताब—(अ०) (सं० पु०) (१) वह पैग़म्बर जिस पर ईश्वरीय ज्ञान की पुस्तक उतरी हो; (२) ऐसी पुस्तक में प्रतिपादित धर्म को मानने वाला ।

अहले-ख़ाना—(अ०) (सं० पु०) घर के आदमी, बाल बच्चे । (सं० स्त्री०)—गृह-लक्ष्मी, घर की मालिक ।

अहले-ग़रज़—(अ०) (सं० पु०) जिनका कुछ मतलब हो, ग़रज़ वाले ।

अहले-ज़बान—(अ०) (सं० पु०) मातृ-भाषा के प्रमाण; भाषा-विज्ञ, भाषा के आचार्य, जिनकी भाषा प्रामाणिक मानी जाय ।

अहले-ज़ा—(अ०) (सं० पु०) मातम करने वाले, सोग करने वाले ।

अहले-दिल—(अ०) (सं० पु०) संतोषी, सहृदय ।

अहले-दुनिया—(अ०) (सं० पु०) सांसारिक जीव, इन्सान, दुनिया-दार ।

अहले-नज़र—(अ०) (सं० पु०) (१) प्रेम की नज़र रखने वाले; (२) पारखी, परख वाले ।

अहले-बैत—(अ०) (सं० पु०) घर के लोग, मोहम्मद साहब के घर के लोग ।

अहले-मुहल्ला—(अ०) (सं० पु०) मुहल्ले वाले, पास-पड़ोस में रहनेवाले।

अहले-राय—(अ०) (सं० पु०) समझदार, दानिश-मंद।

अहले-रोज़गार—(अ०) (सं० पु०) (१) नौकरी पेशा लोग; २) व्यवसायी।

अहले-सख़न—(अ०) (सं० पु०) कवि, शायर।

अहले-सिनअत—(अ०) (सं० पु०) कारीगर, दस्तकार।

अहले-सुन्नत—(अ०) (सं० पु०) सुन्नी, मुसल्मानों का एक फ़िरक़ा।

अहले-हरफ़ा—(अ०) (सं० पु०) पेशेवर।

अहले-हुनर—(अ०) (सं० पु०) हुनरमन्द, कला-कुशल।

आ

आँ—(फ़ा०) वह।

आँब—(फ़ा०) (सं० पु०) आम का पेड़, या फल।

आइन्दा—(फ़ा०) (वि०) आने वाला, आगामी। (सं० पु०)—भविष्य। (क्रि० वि०)—आगे, आगे कभी, भविष्य में, फिर।

आईन—(अ०) (सं० पु०) (१) नियम, क़ायदा, क़ानून; (२) दस्तूर, रस्म, रीति; (३) आदत, रिवाज; (४) ढंग, तर्ज़, रविश।

आईन-बन्दी—(अ०) (सं० स्त्री०) किसी के स्वागत करने के लिए सजावट करना।

आईना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) दर्पण, शीशा; (२) शीशे के झाड़, शीशे-आलात; (३) गवाह, साफ साफ बताने वाला; (४) हैरान। (वि०)—बहुत साफ़ शफ़्फ़ाफ़।

आईना-ख़ाना—(फ़ा०) (सं० पु०) वह मकान जिसमें चारों ओर आईने लगे हों, शीश महल।

आईना-साज़—(फ़ा०) (सं० पु०) आईना बनानेवाला।

आईना-साज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शीशा बनाना, आईना बनाने का काम।

आईमा—(अ०) (सं० पु०) दान में मिली हुई ज़मीन जिसका लगान न देना पड़े, माफ़ी।

आक़—(अ०) (वि०) सरकश, विद्रोही, माता पिता की आज्ञा न माननेवाला।

आक़ करना—फ़रज़न्दी से अलग करना, पुत्र के अधिकार से वंचित करना।

आक़-नामा—(अ०) (सं० पु०) फ़रज़ंदी से अलग करने का काग़ज़।

आक़बत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) समाप्ति, ख़ातमा, नतीजा, परिणाम; (२) परलोक; (३) आख़रत; (४) भविष्य, क़यामत का दिन।

आक़बत-अन्देश—(अ०) (सं० पु०) दूर-दर्शी, दूर-अन्देश, जो परिणाम का ध्यान रक्खे।

आक़बत-अन्देशी—(अ०) (सं० स्त्री०) दूर-दर्शिता, दूर-अंदेशी।

अक़बते-कार—(अ०) (वि०) अन्त में, बिल आख़िर।

आक़रक़रहा—(अ०) (सं० पु०) एक दवा का नाम, अकरकरा।

आका—(तु०) (सं० पु०) भाई, बड़ाभाई।

आक़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) मालिक, स्वामी; (२) ईश्वर।

आक़िफ़—(अ०) (वि०) एकान्त-वासी, एकान्त वास करने वाला।

आक़िब—(अ०) वि० (१) पीछे आने वाला, अनुवर्ती, (२) सहायक, मददगार।

आक़िल—(अ०) (वि०) बुद्धिमान्, अक़्ल-मंद, दाना। (स्त्री०)—आक़िला।

आक़िलाना—(फ़ा०) (वि०) बुद्धिमानी का, बुद्धिमानोचित।

आख़िज़—(अ०) (वि०) ग्रहण करनेवाला, पकड़नेवाला।

आख़िर—(अ०) (वि०) (१) पिछला, अन्तिम; (२) समाप्त, ख़तम, तमाम। (क्रि० वि०)—अन्त में। (सं० पु०)—(१) अन्त, हद, सीमा, चरम सीमा; (२) परिणाम, फल।

आख़िर-उल-अम्र—(अ०) (क्रि० वि०) अन्त में, आख़िर को।

आख़िरकार—(अ०) (क्रि० वि०) अन्त में।

आख़िरत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) मृत्यु, अन्त का दिन; (२) क़यामत का दिन, प्रलय; (३) परलोक।

आख़िर-बीं—(फ़ा०) (वि०) परिणामदर्शी, आक़बत-अन्देश।

आख़िरश—(फ़ा०) (क्रि० वि०) अन्त में, आख़िर को।

आख़िरी—(फ़ा०) (वि०) (१) पिछला; (२) अन्तिम, अख़ीर का। आख़िरी पोशाक—कफ़न।

आख़िरुल-अम्र—(अ०) (अव्यय) अन्त को, अन्त में। (वि०)—अन्तिम।

आखून—(फ़ा०) (सं० पु०) शिक्षक, उस्ताद।

आख़ोर—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) पानी पीने की जगह; (२) चौपाये के दाना घास खाने की जगह; (३) वह घास जो घोड़ों के खाने से बच रहती है, कूड़ा-करकट। (वि०)—निकम्मा, बेकार, ख़राब। आख़ोर की भरती—(१) बेकार, रद्दी, चीज़ों का जमा करना; (२) निकम्मे और अयोग्य मनुष्यों का समूह; (३) रद्दी और व्यर्थ के विषयों का समावेश।

आख़्ता—(फ़ा०) (वि०) जिसके अंड कोश निकाल डाले गये हों, बधिया।

आग़श्ता—(फ़ा०) (सं० पु०) तर करना, भिगोना।

आग़ा—(तु०) (सं० पु०) (१) बड़ा भाई; (२) महाशय; (३) स्वामी, मालिक; (४) मुग़लों और काबुलियों की उपाधि।

आग़ाज़—(फ़ा०) (सं० पु०) आरंभ, आदि, शुरू। आग़ाज़-अंजाम जानना—परिणाम मालूम कर लेना।

आगाह—(फ़ा०) (वि०) (१) जानकार, सावधान, होशियार; (२) जिसे पहले से सूचना मिल गई हो।

आगाही—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) होशियारी, सावधानी; ज्ञान, (२) ख़बर पाना, सूचना मिल जाना।

आग़ोश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बग़ल, गोद। आग़ोश का परवरदा—गोद का पाला।

आग़ोशी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) गले लगाना, आलिंगन।

आचा—(तु०) (सं० स्त्री०) (१) (देह०) बूढ़ी सम्मानित नौकरनी; (२) (लख०) वह बूढ़ा हिजड़ा जो दूसरों को अदब-क़ायदा सिखाने को नौकर हो।

आचार—(फ़ा०) (सं० पु०) देखो—'अचार'।

आज—(अ०) (सं० पु०) हाथी दांत।

आज़म—(अ०) (वि०) महान्, प्रमुख, बहुत बड़ा।

आज़माइश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) अनुभव, परीक्षा, इम्तहान; (२) जाँच, प्रयोग।

आज़माना—(फ़ा०) (क्रि०) परीक्षा करना, जाँचना, परखना।

आज़मूदा—(फ़ा०) (वि०) परीक्षित, आज़माया हुआ, मुजर्रिब। कहा०—आज़मूदा रा आज़मूदन ख़तास्त—जिसको एक बार आज़मा चुके उसे बारबार आज़माना मूर्खता है।

आज़मूदा-कार—(फ़ा०) (वि०) अनुभवी, तजुर्बेकार, होशियार, चतुर।

आज़र—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सौर वर्ष के नवें महीने का नाम; (२) आग, अग्नि।

आज़ा—(अ०) (सं० पु०) शरीर के अंग।

आज़ाए-तनासुल—(अ०) (सं० पु०) लिंग, पुरुष की इन्द्रिय।

आज़ाए-रईसा—(अ०) (सं० पु०) शरीर के मुख्य मुख्य अंग, दिल, दिमाग़, जिगर।

आज़ाद—(फ़ा०) (वि०) (१) स्वाधीन, मुक्त, बरी, बे-क़ैद; (२) निश्चिन्त, बे-परवा, संसार के बखेड़ों से अलग, निर्लिप्त; (३) निडर, निर्भय, बे-खौफ़; (४) गुस्ताख़, बे-अदब, बे धड़क; (५) फ़क़ीरों का एक फ़िरक़ा जो किसी मज़हब का पाबंद नहीं होता; (६) स्वतंत्र विचार वाला; (७) सीधा (क़द)। आज़ाद का अलिफ़; आज़ाद का क़श्क़ा—आज़ाद फ़क़ीरों के माथे पर की सीधी लकीर। आज़ाद का सोंटा—वह डंडा जो आज़ाद फ़क़ीर लिये फिरते हैं। (वि०) मुँहफट, अक्खड़ जो किसी से न दबे।

आज़ादगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मुक्ति, छुटकारा, रिहाई।

आज़ादाना—(फ़ा०) (वि०) आज़ाद का-सा, निष्पक्ष।

आज़ादी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) स्वतंत्रता, स्वाधीनता; (२) मुक्ति, रिहाई, छुटकारा; (३) बे-परवाई, निश्चिन्तता, (४) सीधा (क़द)।

आज़ार—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) दुःख, कष्ट, रंज, चोट; (२) रोग, बीमारी। दिल-आज़ार—हृदय को पीड़ा पहुँचाने वाला, दिल सताने वाला।

आज़ारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) रोग, बीमारी; (२) सताना, दुःख देना (किसी संज्ञा के अन्त में)

आजिज़—(अ०) (वि०) (१) दीन, ग़रीब, (२) निर्बल, कमज़ोर; (३) तंग, बेबस मजबूर, परेशान। आजिज़ आना—तंग आना, निराश हो जाना। आजिज़ करना—तंग करना, विवश करना।

आजिज़-नवाज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बेकस की सहायता।

आजिज़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) प्रार्थना, विनती; (२) दीनता। आजिज़ी करना—मिन्नत करना, विनती करना।

आज़िम—(अ०) (वि०)— इरादा करने वाला, विचार करने वाला।

आज़िर—(अ०) (वि०) (१) उज्र करने वाला; (२) क्षमा माँगने वाला।

आजिल—(अ०) (वि०) जल्द-बाज़।

आज़ुर—(फ़ा०) (सं० पु०) फ़ारसी वर्ष का नवाँ महीना।

आज़ुर्दगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) अप्रसन्नता, रंज, ख़फ़गी, मलाल; (२) दुःख, मानसिक क्लेश, उदासी।

आज़ुर्दा—(फ़ा०) (वि०) (१) अप्रसन्न, रंजीदा, नाखुश; (२) दुःखी, उदास।

आज़ुर्दा-ख़ातिर, आज़ुर्दा-हाल—(फ़ा०) (वि०) उदास, खिन्न, ना.खुश, ख़फ़ा।

आतश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) देखो—'आतिश'।

आतशक—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) गरमी, उपदंश, एक बीमारी। आतशक का झुलसा, आतशक का मारा—गरमी का बीमार, जिसे उपदंश हो रहा हो या हुआ हो।

आतिफ़—(अ०) (वि०) कृपालु, दयालु।

आतिफ़त—(अ०) (सं० स्त्री०) कृपा, दया, मेहरबानी।

आतिर—(अ०) (वि०) पवित्र, शुद्ध, सुगंधित, उत्तम।

आतिश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) अग्नि, आग; (२) क्रोध, ग़ुस्सा। आतिश का परकाला—(१) आग का टुकड़ा, अंगारा; (२) तेज़, चालाक, होशियार; ३) शरीर, चाल-बाज़।

आतिश-अंगेज़, आतिश-अफ़रोज़—(फ़ा०) (वि०) आग भड़काने वाला, झगड़ा करने वाला।

आतिश-क़दम—(फ़ा०) (वि०) तेज़ चलने वाला।

आतिश-कदा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) अग्नि-मन्दिर, जहाँ अग्नि की पूजा होती हो; (२) बहुत गरम मकान।

आतिश-ख़ाना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) अग्नि-मन्दिर; (२) चिमनी।

आतिश-ख़ू—(फ़ा०) (वि०) क्रोधी, ग़ुस्सेवर, उग्र-स्वभाव; (२) गरम, उष्ण।

आतिश-ख़्वार—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) एक जानवर का नाम जो आग खाया करता है, (१) रिशवत-ख़ोर।

आतिश-गीर—(फ़ा०) (सं० पु०) चिमटा।

आतिश-ज़दगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) आग लगाना।

आतिश-ज़न—(फ़ा०) (सं० पु०) एक पक्षी का नाम।

आतिश-ज़बान—(फ़ा०) (वि०) जिसके बोलने में बड़ा प्रभाव और जोश हो।

आतिश-दान—(फ़ा०) (सं० पु०) अंगीठी।

आतिश-नफ़्स—(फ़ा०) (वि०) (१) दिल-जला, जले-तन, कुढ़ेला, (२) बहुत गरम।

आतिश-नाक—(फ़ा०) (वि०) (१) आग से भरा हुआ; (२) ग़ुस्सेवर।

आतिश-परस्त—(फ़ा०) (सं० पु०) अग्नि-पूजक, पारसी।

आतिश-परस्ती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अग्नि-पूजा।

आतिश-फ़िशां—(फ़ा०) (वि०) चिनगारियाँ देने वाला, जिसमें से शोले निकलते हों।

आतिश-बयान—(फ़ा०) (वि०) प्रभाव-शाली वक्ता; तेज़-बयान।

आतिश-बाज़—(फ़ा०) (सं० पु०) आतिश-बाज़ी बनानेवाला।

आतिश-बाज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बारूद की बनी हुई चीजें जिनके जलाने से रंग-बिरंगे फूल निकलते हैं या धड़ाके की आवाज़ होती है।

आतिश-बार—(फ़ा०) (वि०) आग बरसाने वाला।

आतिश-मिज़ाज—(फ़ा०) (वि०) क्रोधी, ग़ुस्सेवर, तेज-मिज़ाज।

आतिशी—(फ़ा०) (वि०) आग से सम्बंध रखनेवाला।

आतिशी-ख़लक़त—(फ़ा०) (सं० पु०) भूत-प्रेत।

आतिशी-शीशा—(फ़ा०) (सं० पु०) वह शीशा जिस पर सूर्य की किरणें पड़ने से अग्नि उत्पन्न होती है।

आतिशे-ख़ामोश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बुझी हुई आग।

आतिशे-जां-सोज़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) प्रेमाग्नि, इश्क़ की आग।

आतिशे-तर—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शराब।

आतिशे-दरूँ—(फ़ा०) (वि०) दिली जलन, अंदरूनी आग।

आतिशे-पिनहाँ—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) छिपी हुई आग, (२) द्वेष, बैर।

आतू, आतून—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) उस्तानी, शिक्षिका।

आद—(अ०) (सं० स्त्री०) एक प्राचीन क़ौम।

आदत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) प्रकृति, बान, स्वभाव, ख़सलत; (२) अभ्यास, क़ायदा, रीति; (३) (उ०) तलब।

आदतन्—(अ०) (क्रि० वि०) आदत से, स्वभाव से।

आदम—(अ०) (सं० पु०) (१) पहला मनुष्य जिससे सृष्टि का क्रम आरंभ हुआ; (२) इनसान, आदमी, मनुष्य; (३) आदमी के गुण रखने वाला; (४) किसी बात का पहले-पहल निकालनेवाला; (५) नौकर, हरकारा।

आदम-ख़ोर—(अ०) (सं० पु०) मनुष्य-भक्षक, मनुष्यों को खानेवाला।

आदम-गरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मनुष्यता, आदमियत, इन्सानियत।

आदम-ज़ाद—(अ०) (सं० पु०) मनुष्य, मनुष्य की सन्तान।

आदम-शनास—(अ०) (वि०) अच्छे बुरे आदमी का पहचानने वाला।

आदमी—(अ०) (सं०पु०) (१) मनुष्य, इनसान; (२) समझदार मनुष्य; (३) नौकर, सेवक; (४) जोरू; पति, प्रेमी। कहा०—आदमी आदमी अंतर, कोई हीरा कोई कंकर—मनुष्यों में अच्छे बुरे सब होते हैं।

आदमी-गरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मनुष्यता, इन्सानियत, आदमियत।

आदमीयत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) मनुष्यता, इन्सानियत; (२) मिलनसारी, सलीक़ा; (३) बुद्धि-विवेक, अक़्ल ओ शऊर।

आदात—(अ०) (सं० स्त्री०) 'आदत' का बहुवचन।

आदाब—(अ०) (सं० पु०) ('अदब' का बहुवचन (१) शिष्टाचार, सभ्यता; (२) नियम, कायदे, अच्छे दस्तूर; (३) आदर, सत्कार; (४) अभिवादन, सादर नमस्कार, बन्दगी; (५) धन्यवाद देने में या विदा के समय या व्यंग्य में भी इस शब्द का व्यवहार होता है। आदाब ओ अलक़ाब—पत्र का सिरनामा, जिसको पत्र लिखा जाय उसकी मर्यादा के अनुकूल शब्द। आदाब ओ तस्लीमात—कोरनिश, मुजरा, अत्यन्त आदर-पूर्वक प्रणाम। आदाब बजा लाना — दीनता-पूर्वक अभिवादन करना।

आदाबे-शाही—(अ०) (सं० पु०) राज-दरबार के नियम, बादशाहों से मिलने और बात करने के तरीक़े।

आदिल—(अ०) (वि०) न्याय-शील, मुंसिफ़।

आदी—(फ़ा०) (वि०) जिसे किसी बात की आदत हो, अभ्यस्त, ख़ूगर।

आन—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) समय, वक़्त, (२) थोड़ी देर, दम भर, पल, क्षण; (३) ढंग; (४) अकड़, ठसक। (फ़ा०) (सं० स्त्री०)—अदा, हाव-भाव, नाज-अंदाज़, शान। (हि०) (सं० स्त्री०)—(१) शपथ, क़सम; (२) रोक-टोक, मनाही; (३) हठ, ज़िद, आदत; (४) मान, प्रतिष्ठा, आबरू, पास; (५) अभिलाषा, अभिप्राय, मुराद। आन-बान—शान, शान-शौकत, सज-धज, ठसक, घमंड।

आनत—(अ०) (सं० पु०) नाभि से नीचे का स्थान जहाँ बाल होते हैं।

आनन-फ़ानन—(अ०) (क्रि० वि०) (१) तुरन्त, तत्काल, फ़ौरन; (२) पल पल में, दम-बदम।

आपा—(तु०) (सं० स्त्री०) (१) बहन; (२) छोटी उम्र की माँ जिसके चेहरे से यह न मालूम हो कि सन्तान-वाली है; (३) होश-हवास, संज्ञा; (४) अहंकार, ख़ुदी, अपनपा।

आपा-धापी—(हि० सं० स्त्री०) स्वार्थ-परता, ख़ुद-ग़र्ज़ी, अपनी ही अपनी फ़िक्र; दूसरों से बढ़ जाने की फ़िक्र।

आफ़त—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) विपत्ति, आपत्ति, बला; (२) संकट, कष्ट, दुःख;

(३) अंधेर, ज़ुल्म, अत्याचार; (४) मक्कार, शरीर, बद-ज़ात; (५) वबाल, दिक़्क़त; (६) वैरी, दुश्मन, (७) जल्दी, घबराहट। आफ़त का परकाला—अय्यार, बड़ी चालाकी और तेज़ी से काम करने वाला। आफ़त-का—बेहद, अत्यन्त।

आफ़त-ख़ेज़—(फ़ा०) (वि०) वह स्थान जहाँ से आफ़त उठे।

आफ़त-ज़दा—(फ़ा०) (वि०) विपत्ति में ग्रस्त, मुसीबत का मारा।

आफ़ताब—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सूर्य, (२) धूप; (३) शराब।

आफ़ताबी—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार का लोटा जिसके पीछे पकड़ने को दस्ती लगी रहती है।

आफ़ताबी—(फ़ा०) (वि०) (१) धूप खाया हुआ, धूप में बना हुआ (२) धूप का मारा हुआ; (३) गोल। (सं० स्त्री०) (१) एक प्रकार का छत्र; (२) एक क़िस्म की छोटी पंखिया जिससे चेहरे की धूप बचाते हैं और कभी पंखे की तरह झलते हैं; सूरज-मुखी; (३) एक प्रकार की ढाल; (४) एक प्रकार की आतिशबाज़ी।

आफ़ते-जान—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) जान का दुश्मन, (२) माशूक़।

आफ़ते-दहर—(फ़ा०) (वि०) बेहद चालाक, कपटी।

आफ़रीं-दगार—(फ़ा०) (सं० पु०) पैदा करने वाला।

आफ़रीदा—(फ़ा०) (वि०) पैदा किया गया।

आफ़रीन—(फ़ा०) (अव्यय) (स्त्री०) शाबाश, वाह वाह, साधु साधु।

आफ़रीनश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पैदाइश।

आफ़ाक़—(अ०) (सं० पु०) (१) संसार, दुनिया, जहान; (२) आस्मान के किनारे। 'उफ़क़' का बहुवचन।

आफ़ाक़-गीर—(फ़ा०) (वि०) दुनिया को लेने वाला, बादशाह।

आफ़ात—(अ०) (सं० स्त्री०) विपत्तियाँ, मुसीबतें। 'आफ़त' का बहुवचन।

आफ़ियत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) कुशल, ख़ैरियत, सलामती, (२) आराम, चैन। ख़ैर-आफ़ियत—कुशल-मंगल।

आब—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) पानी, जल; (२) पसीना; (३) आँसू; (४) अर्क़; (५) शराब। (सं० स्त्री०) (१) चमक, दमक, सफ़ाई, आभा, कान्ति; (२) रौनक़, शोभा, रोशनी; (३) तलवार की धार, काट, बाढ़, तेज़ी; (४) प्रतिष्ठा, इज़्ज़त। कहा०—आब आब कर मर गये सिरहाने धरा रहा पानी—अपने घर की बोली न बोल कर ऐसी भाषा बोलना जिसे कोई समझे नहीं।

आब-अनार, आब-अर्ग़वानी, आब-आतश-रंग—(फ़ा०) (सं० पु०) सुर्ख़ शराब।

आब-आतशीं—(फ़ा०) (सं० पु०) शराब।

आब-ओ-ताब—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) चमक-दमक, रौनक़, (२) सुन्दरता, श्रेष्ठता।

आब-कश—(फ़ा०) (वि०) सक़्क़ा, भिश्ती, कुएँ से पानी निकालने वाला।

आब-कार—(फ़ा०) (सं० पु०) शराब बेचनेवाला, कलार।

आबकारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) वह कारख़ाना जहाँ शराब खींची या बेची जाती हो, कलारी; (२) वह सरकारी महकमा जिसमें मादक वस्तुओं पर का महसूल लिया जाय और उनकी देख-भाल की जाय।

आब-ख़ाना—(फ़ा०) (सं० पु०) पाख़ाना।

आब-ख़ासा—(फ़ा०) (सं० पु०) राजा-रईसों के पीने का पानी।

आब-ख़िजलत आब-ख़िजालत—(फ़ा०) (सं० पु०) वह पसीना जो शरमिन्दा होने से आए।

आब-ख़ोर—(फ़ा०) (सं० पु०) किनारा, तट, घाट।

आब-ख़ोरद—(फ़ा०) (सं० पु०) अन्न-जल, खाना-पीना।

आब-ख़ोरा—(फ़ा०) (सं० पु०) पानी पीने का छोटा सा मिट्टी का बर्तन।

आब-गीना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) शीशा, कांच, बिल्लौर, आईना; (२) अंगूरी शराब, (३) आशिक़ का दिल, प्रेमी का हृदय (चूर चूर हो जाने वाला)

आब-गीर—(फ़ा०) (सं० पु०) हौज़, तालाब।

आब-ज़न—(फ़ा०) (सं० पु०) वह बर्तन जिसमें औषधों के काढ़े में रोगी को बिठाया जाता है।

आब-जारी—(फ़ा०) (वि०) बहता हुआ पानी।

आब-जू—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) नदी, नहर।

आब-ज़ेरे-काह—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) वह पानी जो घास के नीचे छिपा हुआ हो; (२) छल, फ़रेब। (वि०) कपटी, मक्कार, दग़ाबाज़।

आब-जोश—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) यख़नी, गोश्त का अर्क़, (२) मुनक्का।

आब-तल्ख़—(फ़ा०) (सं० पु०) शराब, तेज़ाब, खारा पानी, आँसू।

आब-ताब—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) रौनक़, चमक, आभा, कान्ति।

आब-दस्त—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) पानी से हाथ-पैर धोना, (२) सींचना।

आब-दान—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) पानी का बर्तन, (२) तालाब।

आब-दाना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) अन्न-जल; (२) भाग्य, तक़दीर, क़िस्मत, (३) जीवन, ज़िंदगी!

आब-दार—(फ़ा०) (सं० पु०) पानी रखने और पिलानेवाला नौकर। (वि०) (१) चमकदार, चमकीला, (२) धार वाला (हथियार)।

आब-दार-ख़ाना—(फ़ा०) (सं० पु०) वह मकान जिसमें राजाओं और बादशाहों का पानी पीने का सामान रहता है।

आब-दारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) चमक दमक; (२) धार, तेज़ी, बाढ़; (३) आब-दार का काम।

आब-दीदा—(फ़ा०) (वि०) जिसकी आँखों में आँसू भरे हों, रोआँसा।

आबनाए—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) जल-डमरू-मध्य।

आबनूस—(फ़ा०) (सं० पु०) एक पेड़ जिसकी लकड़ी काली होती है; (स्त्री०) एक प्रकार की मछली। आबनूस का कुंदा—बहुत मोटा और काला आदमी।

आबनूसी—(फ़ा०) (वि०) काला, स्याह रंग का, आबनूस से बना हुआ।

आब-पाश- (फ़ा०) (सं० पु०) पानी छिड़कने वाला, सक्क़ा।

आब पाशी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) सींचना; खेतों में पानी देना; (२) पानी का छिड़कना; (३) नहर के महकमे का नाम। आब-पाशी की—(देह०) दम दिया, धोखा दिया, छींटा दिया (लख०)।

आब-बाराँ—(फ़ा०) (सं० पु०) मेंह का पानी।

आब-यार—(फ़ा०) (वि०) खेतों और पेड़ों में पानी देनेवाला।

आब-यारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बाग़ों और खेतों को सींचना, पानी देना।

आब-रसीदा—(फ़ा०) जो पानी से भीग कर ख़राब हो गया हो।

आबरू—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) प्रतिष्ठा, सम्मान; (२) बात, साख, ऐतबार; (३) शर्म, लाज; (४) मर्यादा, हैसियत।

आबरू-दार—(फ़ा०) वि० (१) प्रतिष्ठित, इज़्ज़तदार, शरीफ़; (२) हया-दार।

आबला—(फ़ा०) (सं० पु०) छाला, फफोला।

आबला-रू—(फ़ा०) (वि०) चेचक-रू आदमी।

आब-शार—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पानी की चादर, झरना।

आब-हराम—(फ़ा०) (सं० पु०) शराब।

आब-हवा—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) जल-वायु।

आबा—(अ०) (सं० पु०) बाप-दादा, अगली पीढ़ियाँ।

आबाई—(अ०) (वि०) पैतृक, मौरूसी, ख़ानदानी।

आबाद—(फ़ा०) (वि०) (१) भरा हुआ, बसा हुआ; (२) हरा-भरा; फूला-फला; (३) (यौगिक) में शहर, बस्ती, गाँव।

आबाद-कार—(फ़ा०) (सं० पु०) परती ज़मीन को आबाद करने वाला।

आबा-दानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) बस्ती, आबादी; (२) चहल-पहल, रौनक़, वैभव।

आबादी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) बस्ती; (२) रहने वालों की गिनती, जन-संख्या; (३) चहल-पहल, रौनक़; (४) वह ज़मीन जो काम में आती हो।

आबान—(फ़ा०) (सं० पु०) (१ फ़ारसी आठवाँ महीना ; (२) हर सौर मास का दसवाँ दिन।

आबिद—(अ०) (सं० पु०) भक्त, उपासक, ज़ाहिद, परहेज़गार, (स्त्री०) आबिदा।

आबिस्तगी—(फ़ा०) (सं०स्त्री०) गर्भवती होना।

आबी—(फ़ा०) (वि०) (१) जल से सम्बन्ध रखने वाला ; जल का ; (२) पानी में रहने वाला। (सं० स्त्री०) एक प्रकार की ख़मीरी रोटी जिसमें दूध घी नहीं डाला जाता है।

आबे-अंगूरी, आबे-इनब—(फ़ा०) (सं० पु०) अंगूरी शराब।

आबे-इशरत—(फ़ा०) (सं० पु०) शराब।

आबे-कौसर—(फ़ा०) (सं० पु०) स्वर्ग की कौसर नामक नहर का पानी।

आबे-ख़ंजर—(फ़ा०) (सं० पु०) तलवार की तेज़ी या काट।

आबे-ख़िज्र—(फ़ा०) (सं० पु०) अमृत।

आबे-गिरिया—(फ़ा०) (सं० पु०) आँसू।

आबे-गुलगूं—(फ़ा०) (सं० पु०) सुर्ख़ शराब।

आबे चश्म—(फ़ा०) (सं० पु०) आँसू।

आबे-ज़मज़म—(फ़ा०) (सं० पु० ज़मज़म (मक्का का एक कुआँ) का पानी।

आबे-जू—(फ़ा०) (सं० पु०) नदी का पानी, नहर का पानी।

आबे-दीदा—(फ़ा०) (स० पु०) आँसू।

आबे-नुक़रा—(फ़ा०) (सं० पु०) पारा।

आबे-बक़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) अमृत।

आबे-बाराँ—(फ़ा०) (सं० पु०) वर्षा का जल।

आबे रवाँ—(फ़ा०) (सं० पु०) (१ एक प्रकार का महीन कपड़ा ; (२ बहता हुआ पानी, जारी पानी।

आबे-शोर—(फ़ा०) (सं० पु०) खारा पानी, समुद्र का पानी।

आबे-हयात—(फ़ा०) (सं० पु०) अमृत।

आबे हराम—(फ़ा०) (सं० पु०) शराब।

आम—(अ०) (वि०) (१) फैला हुआ, प्रसिद्ध, मशहूर ; (२) मामूली, साधारण; (३) बाज़ारी, नीचा, कम-क़द्र। (सं० पु०) जनता, सब लोग, सर्व साधारण। आम में—खुल्लम-खुल्ला।

आमद्—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) आमदनी, आय ; (२) आगमन, आने की ख़बर, आने के आसार; (३) जो बात अपने आप मन में पैदा हो, बे-बनावट की बात। आमद-ओ-रफ़्त (१) आना-जाना, मेल-जोल; (२) आयात निर्यात।

आमद-आमद्—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) आने की धूम, आने का चर्चा।

आमदनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) आय, प्राप्ति, याफ़्त; (२) आयात, जो चीज़ें बाहर से आवें।

आम-पसंद्—(फ़ा०) (वि०) सर्व-प्रिय, वह जो सब लोगों को पसंद हो।

आम-फ़हम—(अ०) (वि०) सरल, सहज, आसान, सब की समझ में आने वाला।

आमला—(फ़ा०) (सं० पु०) आँवला, एक वृक्ष का फल।

आमादगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) तैयार होना, उद्यत होना, तत्परता।

आमादा—(फ़ा०) (वि०) तत्पर, तैयार, मुस्तैद, राज़ी।

आमास—(फ़ा०) (सं० पु०) सूजन, शोथ, वरम।

आमिद्—(अ०) (वि०) उलट कर आने वाला।

आमियाना—(फ़ा०) (वि०) सर्व-साधारण का, जाहिलों का।

आमिर—(अ०) (वि०) आबाद, आबाद करनेवाला।

आमिरा—(अ०) (वि०) भरा हुआ।

आमिल—(अ०) (सं० पु०) (१) काम करने वाला; (२) हाकिम, अधिकारी, तहसीलदार ; (३) कारीगर, दक्ष, (४) साधक, स्याना, यंत्र मंत्र करने वाला, भूत प्रेत का अमल जाननेवाला।

आमी—(अ०) (सं० पु०) जाहिल आदमी।

आमीन—(अ०) (अव्यय) (१) ऐसा ही हो, तथास्तु, ईश्वर प्रार्थना स्वीकार करे ; (२) क़ुरान शरीफ़ की समाप्ति का उत्सव।

आमुर्ज़गार—(फ़ा०) (वि०) क्षमा करने वाला, दयालु, रहीम।

आमुर्ज़िश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बख़शिश, दया, क्षमा।

आमेज़िश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मेल, मिलावट, अच्छी चीज़ में बुरी चीज़ मिलाना।

आमोख़्ता—(फ़ा०) (सं० पु०) पिछला पाठ, पिछला पढ़ा हुआ। आमोख़्ता पढ़ना या सुनाना—पढ़े हुए को दोहराना।

आमोज़गार—(फ़ा०) (सं० पु०) शिक्षक, सिखलाने वाला, उस्ताद।

आम्मह—(अ०) (वि०) (१) आम, कुल, सार्वजनिक; (२) प्रसिद्ध, मशहूर।

आयत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) क़ुरान का कोई पूरा वाक्य ; (२) निशान, चिह्न।

आयद्—(फ़ा०) (वि०) प्रयुक्त, लागू होने योग्य।

आयन्दा—(फ़ा०) (वि०) (१) आने वाला, आगामी; (२) आगे, भविष्य में। आयन्दा को—आगे को, भविष्य के लिए।

आया—(फ़ा०) (अव्यय) क्या। (सं० स्त्री०) धाय, बच्चों को रखनेवाली।

आर—(अ०) (सं० पु०) शर्म, लज्जा, नंग, ऐब। आर आना—शर्म आना, लज्जा आना। आर समझना—ऐब समझना।

आरज़ा—(अ०) (सं० पु०) रोग, बीमारी।

आरज़ी—(अ०) (वि०) वैसे ही, बिना आवश्यकता के।

आरज़ू—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) इच्छा, कामना, तमन्ना; (२) विनय, मिन्नत, विनती।

आरज़ू-गाह—(फ़ा०) (वि०) उम्मेद की जगह, संसार, दुनिया।

आरज़ू-मन्द—(फ़ा०) इच्छुक, आकांक्षी, तमन्ना रखनेवाला।

आरद—(फ़ा०) (सं० पु०) आटा, पिसा हुआ नाज।

आरा—(फ़ा०) (प्रत्यय) यौगिक शब्दों के अन्त में, आरास्ता करनेवाला, सजाने वाला।

आराइश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सजावट, बनाव, सिंगार।

आराइश-पसंद—(फ़ा०) (वि०) बनाव सिंगार का शौक़ीन।

आराई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सजाने की क्रिया।

आराज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) धरती, ज़मीन, ग़ैर-आबाद ज़मीन।

आराबा—(फ़ा०) (सं० पु०) छकड़ा, गाड़ी।

आराम—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) चैन, सुख, राहत; (२) निरोगता, शिफ़ा, स्वास्थ्य-लाभ; (३) विश्राम, नींद, थकान दूर करना। आराम से—धीरे धीरे सहज सहज में।

आराम-गाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सोने का मकान, विश्राम करने की जगह, शयनागार, रहने का मकान।

आराम-जान—(लख०) (सं० पु०) एक क़िस्म का छोटा पानदान।

आराम-तलब—(फ़ा०) (वि०) (१) काहिल, सुस्त, आराम-पसंद; (२) जो परिश्रम करना पसंद न करे।

आराम-तलबी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सुस्ती, मेहनत से घबराना।

आराम-पसंद—(फ़ा०) (वि०) सुस्त, काहिल।

आराम-जां, आराम-जान—(फ़ा०) (वि०) प्रिय, माशूक़, जान को सुख देनेवाला।

आरास्तगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सजावट, तैयारी, सिंगार।

आरास्ता—(फ़ा०) (वि०) (१) सजा हुआ, संवरा हुआ, सुसज्जित; (२) तैयार, लैस।

आरिज़—(अ०) (सं० पु०) गाल। (वि०) (१) होनेवाला, पेश आनेवाला; (२) रोकने वाला, बाधा पहुँचानेवाला। आरिज़-होना—पैदा होना, ज़ाहिर होना।

आरिज़ा—(अ०) (सं० पु०) रोग, बीमारी, मर्ज़।

आरिज़ी (अ०) (वि०) कुछ दिन का, अस्थायी, चंद रोज़ा, योंही।

आरिज़े-सीमीं—(फ़ा०) (सं० पु०) गोरा गाल।

आरिन्दा—(फ़ा०) (वि०) लानेवाला। (सं० पु०)—मज़दूर, भार-वाहक।

आरिफ़—(अ०) (वि०) (१) पहचानने वाला, ज्ञाता; (२) संतोषी, सब्र करने वाला। (सं० पु०) साधु, वली, महात्मा।

आरिफ़ाना—(अ०) (वि०) आरिफ़ से सम्बन्ध रखने वाला।

आरियत—(अ०) (सं० स्त्री०) उधार, क़र्ज़।

आरियतन्—(अ०) (क्रि० वि०) कुछ दिन के लिये उधार, क़र्ज़ के रूप में।

आरियत-नामा—(अ०) (सं० पु०) इक़रारनामा जो माँगी हुई चीज़ के वापस करने के लिये लिखा जाता है।

आरियती—(अ०) (वि०) कुछ दिन के लिये माँगा हुआ, चंद रोज़ा।

आरी—(अ०) (वि०) (१) तंग, दिक़, ज़िच; (२) दीन, नंगा; (३) ख़ाली; (४) (उ०) मजबूर, लाचार, निस्सहाय; (५) थका हुआ, शिथिल। आरी आ जाना, आरी हो जाना—तंग आ जाना, थक जाना।

आरे-बले—(फ़ा०) (सं० पु०) टाल मटोल, हीला हवाला।

आरोग़—(फ़ा०) (सं० पु०) डकार।

आल—(अ०) (सं० स्त्री०) (१ बेटा, बेटी, औलाद, सन्तान ; (२) वंश, कुल ।
(फ़ा०) (सं० पु०) (१) लाल रंग; (२) शराब। आल ओ अतफ़ाल बेटा-बेटी और उनके बाल-बच्चे, कुल ख़ानदान ।

आलत—(अ०) सं० स्त्री०) (१) औज़ार, हथियार; २) लिंगेंद्रिय ।

आलम—(अ०) (सं० पु०) (१) संसार, विश्व, दुनिया, जहान ; (२) अवस्था, दशा, हालत; (३) ढंग, तौर-तरीक़ा ; (४) बहार, रौनक़, रूप, (५ मानिन्द, समान ।

आलम-अफ़रोज़—(फ़ा०) (वि०) संसार को रोशन करनेवाला, सूर्य ।

आलम-आरा—(फ़ा०) (वि०) संसार की शोभा बढ़ानेवाला ।

आलम-गीर—(फ़ा०) (वि०) (१) विश्व-विजयी; (२) संसार में व्याप्त, दुनिया में फैला हुआ ।

आलम-ताब—(फ़ा०) (वि०) देखो 'आलम अफ़रोज़' ।

आलम-पनाह—(फ़ा०) (वि० जहाँ-पनाह, बादशाह ।

आलम-सोज़—(फ़ा०) (वि०) संसार को जला देने वाला ।

आलमे-अरवाह—(फ़ा०) (सं० पु०) आत्माओं का जगत्, रूहों का जहान ।

आलमे-असबाब—(फ़ा०) (सं० पु०) संसार, दुनिया ।

आलमे-क़ुदस—(फ़ा०) (सं० पु०) बहिश्त, स्वर्ग ।

आलमे-ख़ाक—(फ़ा०) (सं० पु०) संसार, दुनिया ।

आलमे-ग़ैब—(फ़ा०) (सं० पु०) परलोक ।

आलमे-फ़ानी—(फ़ा०) (सं० पु०) नश्वर संसार ।

आलमे-बाला—(अ०) (सं० पु०) फरिश्तों का संसार ।

आलमे-बेदारी—(फ़ा०) (सं० पु०) जाग्रतावस्था, जागने की हालत ।

आलमे-सिफ़ली—(अ०) (सं० पु०) संसार, दुनिया ।

आला—(अ०) (सं० पु०) औज़ार, हथियार, साज़-सामान वि० श्रेष्ठ, बहुत अच्छा, बहुत बुलंद, बहुत उम्दा ।

आलात—(अ०) (सं० पु०) (१) औज़ार, हथियार ; (२) साज़-सामान, सामग्री, लवाज़िम ।

आलाम—(अ०) (सं० पु०) दुःख, ग़म, रंज । 'अलम' का बहुवचन ।

आलायश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मैल-कुचैल ; फोड़े की पीप और लहू ; पेट की अँतड़ियाँ ।

आलिम—(अ०) (वि०) विद्वान्, जानने वाला, फ़ाज़िल ।

आलिमाना—(अ०) (वि०) विद्वानोचित, आलिमों का सा ।

आलिया—(अ०) (वि०) (स्त्री०) बड़ी ऊँची ।

आली—(अ०) (वि०) श्रेष्ठ, उच्च ।

आली-जनाब—(अ०) (वि०) बहुत उच्च, परम-प्रतिष्ठित ।

आली-जाह—(अ०) (वि०) बादशाहों के लिए सम्बोधन ।

आली-तबार—(अ०) (वि०) उच्च कुल का, आली ख़ानदान ।

आली-दिमाग़—(फ़ा०) (वि०) बुद्धिमान्, अक़्ल-मंद, बड़े दिमाग़ वाला ।

आली-शान—(अ०) (वि०) बड़ी शान-वाला, शानदार ।

आली-हज़रत—(अ०) (वि०) परम प्रतिष्ठित ।

आलुफ़्ता—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) ग़ैर, अन्य, पराया; (२ स्वाधीन-चेता ।

आलूचा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) एक पेड़ का नाम; (२) उस पेड़ का फल ।

आलूद—(फ़ा०) (वि०) लथड़ा हुआ, लिसा हुआ।

आलूदगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) मलिनता, गंदगी ; (२) संसारिक सम्बन्ध, लिप्त होना।

आलूदा—(फ़ा०) (वि०) भरा हुआ, बुरे कामों में फँसा हुआ, लिसा हुआ।

आलूदा-दामन—(फ़ा०) (वि०) गुनाहगार, दोषी।

आलू-बुख़ारा—(फ़ा०) (सं० पु०) एक फल का नाम।

आवरद (आवुर्द)—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बनावट से ऐसी बात पैदा करना जो मन में न हो।

आवा—(फ़ा०) (सं० पु०) वह भट्टी जिसमें कुम्हार कच्चे बर्तन पकाते हैं। कहा० आवे का आवा बिगड़ना—जत्थे का जत्था ख़राब होना, पूरा ख़ानदान बिगड़ना।

आवाज़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) शब्द, सदा, ध्वनि ; (२) बोली, वाणी ; (३) पुकार, हाँक।

आवाज़-ग़ैब—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अन्तरात्मा की पुकार, आकाश-वाणी।

आवाज़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) प्रसिद्धि नामवरी, धूम, शोर ; (२) बोली-ठोली, ताना, व्यंग्य।

आवाज़े-ख़न्दा—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) हँसी की आवाज़।

आवाज़े-गिरिया आवाज़े-बुका—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) रोने की आवाज़।

आवारगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शोहदा-पन, आवारा-पन।

आवारा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) मारा मारा फिरनेवाला ; (२) निकम्मा; (३) बदकार, बदचलन।

आवारा-मिज़ाज—(फ़ा०) (वि०) बद-चलन, बदमाश।

आवुर्द—(फ़ा०) (वि०) बनावटी, कृत्रिम।

आवुर्दा—(फ़ा०) (वि०) लाया हुआ, किसी का सिफ़ारिशी, कृपा-पात्र।

आवेज़—(फ़ा०) (वि०) लटकाया हुआ। (शब्दों के अन्त में)।

आवेज़ाँ—(फ़ा०) (वि०) लटका हुआ।

आवेज़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) एक ज़ेवर, बाला।

आश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पतला भोजन। (पु०) एक प्रकार का खाना।

आशकार, आशकारा—(फ़ा०) (वि०) ज़ाहिर, प्रकट, स्पष्ट।

आश-जौ—(फ़ा०) (सं० पु०) छिले और भुने हुए जौ का जोश दिया हुआ पानी।

आशना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) मित्र, दोस्त; (२) प्रेमी, प्रेमिका, प्रेयसी ; (२) दास, ग़ुलाम। (वि०) परिचित, जान-पहचान; आगाह।

आशनाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) मित्रता, दोस्ती ; (२) परिचय, जान-पहचान; (३) प्रेम, मुहब्बत, चाह; (४) अनुचित सम्बन्ध।

आशिक़—(अ०) (सं० पु०) (१) प्रेमी, प्रेम करनेवाला, चाहनेवाला ; (२) बहुत पसंद करने वाला, क़ायल ; (३) ईश्वर प्रेम में मग्न; (४) हुक, वह पुरज़ा जो घुंडी की तरह हलक़े में डाला जाता है।

आशिक़-मिज़ाज—(अ०) (वि०) रंगीला, छैला, ज़िन्दा-दिल।

आशिक़ाना—(अ०) (वि०) आशिक़ों का-सा ; प्रेम-सम्बन्धी।

आशिक़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) प्रेम, आसक्ति, मुहब्बत। कहा० आशिक़ी ख़ाला जी का घर नहीं है—प्रेम करना सहज नहीं है।

आशियाँ, आशियाना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) घोंसला, परिन्दों का घर ; (२) रहने का मकान।

आशिर—(अ०) (वि०) दसवाँ।

आशुफ़्तगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) परेशानी, घबराहट, बे-चैनी, विकलता ; (२) दुर्दशा।

आशुफ़्ता—(फ़ा०) (वि०) (१) विकल, व्याकुल, परेशान, हैरान ; (२) दुर्दशा-ग्रस्त ; (३) आशिक़, दीवाना।

आशूर, आशूरा—(अ०) (सं० पु०) (१) मोहर्रम की दसवीं तारीख़ जिस दिन हज़रत इमाम हुसेन की शहादत हुई ; (२) मोहर्रम के पहले दस दिन।

आशोब—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) शोर, ग़ोग़ा, झगड़ा, फ़िसाद ; (२) सूजन, शोथ।

आश्कार, आश्कारा—(फ़ा०) (वि०) ज़ाहिर, प्रकट, स्पष्ट, खुला हुआ।

आसफ़—(अ०) (सं० पु०) (१) हज़रत सुलेमान के वज़ीर का नाम ; (२) वज़ीर।

आसफ़-जाह—हैदराबाद के निज़ाम की उपाधि।

आसफ़ीया—आसफ़ जाह से सम्बन्धित

आसमान—(फ़ा०) (सं० पु०) देखो—'आस्मान'।

आसाइश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सुख, चैन, आनन्द, आराम।

आसान—(फ़ा०) (वि०) सहज, सहल, सरल, सुगम।

आसानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सरलता, सुगमता।

आसामी—(अ०) (सं० पु०) देखो—'असामी'।

आसायश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) देखो—'आसाइश'।

आसार—(अ०) (सं० पु०) (१) लक्षण ; (२) निशान, चिह्न ; (३) ढंग, अन्दाज़ ; (४) इमारत की बुनियाद ; (५) दीवार की चौड़ाई।

आसिम—(अ०) (वि०) पापी, गुनाहगार।

आसिया—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) चक्की।

आसिया-ए-आब—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पनचक्की।

आसी—(अ०) (वि०) (१) पापी, अपराधी, गुनाहगार, मुजरिम ; (२) वह पेट जिस पर रेचक औषध असर न करे।

आसूदगाने-ख़ाक—(फ़ा०) (सं० पु०) मुरदे।

आसूदगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) चैन, आराम, सुख, शान्ति; (२) संपन्नता, ख़ुश-हाली; (३) तुष्टि, शान्ति, ख़ामोशी।

आसूदा—(फ़ा०) (वि०)—संतुष्ट, संपन्न, आराम पानेवाला, निश्चिन्त।

आसूदा-दिल, आसूदा-हाल—(फ़ा०) (वि०) संपन्न, ख़ुश हाल, अमीर, निश्चिन्त।

आसेब—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) भूत-बाधा; (२) विपत्ति, संकट, आफ़त, बला, तकलीफ़; (३) विरोध, दुश्मनी; (४) हानि, क्षति।

आसेबज़दा, आसेबी—(फ़ा०) (वि०) (१) वह शख़्स जिसे आसेब का ख़लल हो, जिस पर भूत-बाधा हो; (२) वह मकान जिसमें भूत रहते हों।

आस्तान—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) चौखट, दहलीज़; (२) मकान, दरगाह, स्थान ; (३) फ़क़ीरों के रहने का स्थान; (४) प्रवेश-द्वार।

आस्तान-बोस—(फ़ा०) (वि०) चौखट चूमनेवाला, ख़ादिम, दास, जो सदा उपस्थित रहे।

आस्तान-बोसी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सेवा, ख़िदमत, दासता।

आस्तीन—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पहनने के कपड़े का वह भाग जिसमें बाँह रहती है। कहा० आस्तीन का साँप—वह मनुष्य

जो मित्रता की आड़ में वैर करे; छुपा हुआ दुश्मन जो साथ रह कर दुश्मनी करे। आस्तीन उलटना, आस्तीन चढ़ाना —(१) किसी काम करने को उद्यत होना, (२) ग़ुस्से में लड़ने को तैयार होना। आस्तीन झाड़ना—तर्क करना, दे देना, सब कुछ देकर अलग होना। आस्तीन पकड़ना—किसी काम से रोकना। आस्तीन में सांप पालना—दुश्मन के साथ सलूक करना; वैरी को साथ रखना।

आस्मान—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) आकाश (२) स्वर्ग, देवलोक। आस्मान ज़मीन का फ़र्क़—बहुत बड़ा अन्तर। आस्मान का रखना न जमीन का—कहीं का न रखना, नष्ट कर देना। आस्मान पर उड़ना—घमंड करना, शेख़ी मारना। आस्मान पर चढ़ना—बहुत ऊँचा हो जाना, घमंड करना। आस्मान ज़मीन के कुलाबे मिलाना—(१) बेहद कोशिश करना; (२) बेहद झूठ बोलना, बढ़ा बढ़ा कर बात करना; (३) ज़ोड़ तोड़ मिलाना, चालाकी करना; (४) हलचल डालना, झगड़ा खड़ा करना। आस्मान-ज़मीन एक कर देना, आस्मान-ज़मीन एक कर डालना—हुल्लड़ मचाना, बेहद कोशिश करना। आस्मान पर चढ़ाना, आस्मान पर चढ़ा देना—बहुत तारीफ़ करना, बेहद बढ़ा कर तारीफ़ करना। आस्मान पर चढ़ाके उतारना, आस्मान पर चढ़ाके गिराना—इज्ज़त बढ़ा कर घटाना। आस्मान पर दिमाग़ रहना—बहुत घमंड करना। आस्मान पर पहुँचा देना—(१) इज़्ज़त देना; (२) घमंडी बना देना। आस्मान पर ले उड़ना—(१) घमंडी कर देना, (२) किसी नशेवाली चीज़ का बेहोश कर देना। आस्मान फट पड़ना—बरबाद हो जाना, अचानक विपत्ति आजाना। आस्मान फाड़के थेगली लगाना—चालाकी करना, जोड़-तोड़ लगाना। आस्मान में थेगली लगाना—कठिन काम करना, जहाँ कोई न जा सके वहाँ पहुँचना। आस्मान सर पर उठाना —(१) बहुत ऊधम मचाना, चीख़ना-चिल्लाना; (२) इतराना, ख़ुशियाँ मनाना। आस्मान सर पर गिरना—बड़ी विपत्ति आ पड़ना। आस्मान से तारे उतारना —बहुत कठिन काम करना, असंभव काम करना। आस्मान से बातें करना—बहुत ऊँचा होना। आस्मान हिला देना, आस्मान हिला मारना—हलचल डालना।

आस्मानी—(फ़ा०) (वि०) (१) आस्मान से सम्बन्ध रखनेवाला, आकाशीय; (२) आकस्मिक, नागहानी, अचानक; (३) नीला, आकाश के रंग का। (सं० स्त्री०) ताड़ी।

आहंग—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) क़स्द, इरादा विचार; (२) (स्त्री०) आवाज़, किसी कष्ट से कराहने का शब्द।

आह—(अ०) (सं० स्त्री०) गहरी साँस, दीर्घ निश्वास। आह ओ ज़ारी, आह ओ फ़ुग़ां, आहओबुका—रोना पीटना।

आहन—(फ़ा०) (स० पु०) लोहा।

आहन-गर—(फ़ा०) (सं० पु०) लोहार, लोहे का काम करनेवाला।

आहन-दिल—(फ़ा०) (वि०) वज्र-हृदय, ज़ालिम, क्रूर।

आहन-रुबा—(फ़ा०) (सं० पु०) वह पत्थर जो लोहे को अपनी ओर खींच लेता है, संग-मक़नातीस।

आहनी—(फ़ा०) (वि०) लोहे का।

आहिस्तगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) धीमापन, सुस्ती, सहूलियत; (२) कोमलता।

आहिस्ता—(फ़ा०) (क्रि० वि०) (१) ठहर ठहर कर, धीरे धीरे ; (२) नरमी से, कोमलता से, सहूलियत से ; (३) क्रम क्रम से, नंबरवार । (वि०)—धीमा, कोमल ।

आहू—(स्त्री०) (सं० पु०) हिरन ।

आहू-ए-चर्ख़, **आहू-ए-फ़लक** (फ़ा०) (सं० पु०) सूर्य, आफ़ताब ।

आहू-गीर—(फ़ा०) (वि०) (१) हिरन को पकड़नेवाला, सैय्याद ; (२) ऐब-जू, ऐब ढूँढनेवाला ।

आहू-चश्म—(फ़ा०) (वि०) हिरन की आँख रखनेवाला, मृग-नयन ।

इ

इंजील—(यू०) (सं० स्त्री०) ईसाइयों की धर्म-पुस्तक ।

इआदत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) दोहराना; (२) बीमार का हाल पूछना ।

इआदह—(अ०) (सं० स्त्री०) पलटना, फिरना, किसी काम या बात को दोहराना ।

इआनत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) मदद देना, सहायता ; (२) कृपा, दया, अनुग्रह ।

इकबारगी—(फ़ा०) (क्रि० वि०) एक-साथ, एक ही बार में, सहसा, अचानक ।

इक़बाल—(अ०) (सं० पु०) (१) भाग्य, ख़ुश-क़िस्मती ; (२) प्रताप ; (३) सम्पत्ति, वैभव ; (४) स्वीकृति, मानना, क़बूलना, स्वीकार कर लेना ।

इक़बाल-मन्द—(अ०) (वि०) भाग्यवान्, प्रतापशाली, खुशक़िस्मत ।

इक़बाली—(अ०) (वि०) स्वीकार करने वाला, क़बूल करने वाला ।

इकराम—(अ०) (सं० पु०) (१) पुरस्कार, इनाम; (२) मान, इज्ज़त, बड़प्पन; (३) बख़शिश, उपहार, भेंट । इनाम ओ इकराम—पारितोषक और पुरस्कार ।

इक़रार—(अ०) (सं० पु०) (१) प्रतिज्ञा, वादा ; (२) मान लेना, क़बूल कर लेना ।

इक़रार-नामा—(अ०) (सं० पु०) प्रतिज्ञा-पत्र, वह कागज़ जिस पर स्वीकृति की शर्तें लिखी हों ।

इक़रारी—(अ०) (वि०) इक़बाली, स्वीकार करनेवाला, क़बूल करनेवाला ।

इकराह—(अ०) (सं० पु०) (१) घृणा, नफ़रत ; (२) नागवारी ।

इक़साम—(अ०) (सं० पु०) देखो-'अक़साम' ।

इक्तिदा—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) पैरवी करना ; (२) इमाम के पीछे नमाज़ पढ़ना ।

इक्तिदार—(अ०) (सं० पु०) अधिकार, सामर्थ्य, ताक़त ।

इक्तिफ़ा—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) किफ़ायत करना, बस करना ; (२) काफ़ी समझना, संतोष करना ।

इक्तिबास—(अ०) (सं० पु०) (१) किसी और की कविता या कृति को अपनी कविता में शामिल कर लेना ; (२) रोशनी लेना ।

इक्तिसाब—(अ०) (सं० पु०) कमाना, परिश्रम से प्राप्त करना ।

इख़फ़ा—(अ०) (सं० पु०) छिपाना, गुप्त रखना ।

इख़राज—(अ०) (सं० पु०) (१) बाहर निकलना, ख़ारिज होना ; (२) ख़र्च होना, व्यय होना ।

इख़राजात—(अ०) (सं० पु०) ख़र्च, व्यय ।

इख़लाक़—(अ०) (सं० पु०) देखो-'अख़लाक़' ।

इख़लास—(अ०) (सं० पु०) मित्रता, मेल-मिलाप, प्रेम, रब्त-ज़ब्त। इख़लास बढ़ाना—मेल-जोल बढ़ाना।

इख़लास-मन्द—(अ०) (वि०) सच्चा दोस्त, प्रेमी, निष्कपट।

इख़्तराअ—(अ०) (सं० पु०) आविष्कार, ईजाद, नई बात निकालना।

इख़्तलात—(अ०) (सं० पु०) हेल-मेल, प्रेम, मुहब्बत, दोस्ती।

इख़्लाफ़—(अ०) (सं० पु०) विरोध, अनबन, असहमति।

इख़लाल—(अ०) (सं० पु०) (१) ख़लल डालना, भंग करना; (१) बेहोशी, बदहवासी।

इख़्तिताम—(अ०) (सं० पु०) समाप्ति, ख़ात्मा, ख़तम करना।

इख़्तिफ़ा—(अ०) (सं० पु०) छिपाना, पोशीदा करना।

इख़्तियार—(अ०) (सं० पु०) (१) अधिकार, क़ाबू, बस; (२) सामर्थ्य, इमकान; (३) प्रभुत्व, हुकूमत, शक्ति; (४) स्वीकार, क़बूल, मंज़ूर।

इख़्तियारी—(अ०) (वि०) अपने बस की, अपने क़ाबू की।

इख़्तिराअ—(अ०) (सं० पु०) नई बात पैदा करना, ईजाद, गढ़ना, आविष्कार।

इख़्तिलाज—(अ०) (सं० पु०) दिल धड़कना।

इख़्तिसार—(अ०) (सं० पु०) कम करना, घटाना, संक्षिप्त करना।

इख़्तिसास—(अ०) (सं० पु०) विशेषता, ख़ुसूसियत।

इग़माज़—(अ०) (सं० पु०) बे परवाई, उदासीनता, उपेक्षा, चश्मपोशी।

इग़राक़—(अ०) (सं० पु०) डुबा देना।

इग़लाम—(अ०) (सं० पु०) लौंडेबाज़ी, अप्राकृतिक मैथुन।

इग़लामी—(अ०) (वि०) लौंडे-बाज़।

इग़वा—(अ०) (सं० पु०) बरग़लाना, बहकाना, भ्रम में डालना।

इज़आन—(अ०) (सं० पु०) यक़ीन करना, विश्वास करना।

इज़तराब—(अ०) (सं० पु०) बेचैनी, अशान्ति, विकलता, घबराहट, बेताबी, बेक़रारी।

इजतिनाब—(अ०) (सं० पु०) (१) परहेज़, दूर रहना, किनारा-कशी; (२) संयम।

इजतिमाअ—(अ०) (सं० पु०) जमाव, जमा होना।

इजतिहाद—(अ०) (सं० पु०) कोशिश करना, दिल से सोचकर कोई बात निकालना।

इज़दियाद—(अ०) (सं० पु०) अधिक होना, ज़्यादा होना, ज़्यादती।

इज़दिवाज़—(अ०) (सं० पु०) विवाह, शादी।

इज़दहाम—(फ़ा०) (सं० पु०) जमघट, बहुत बड़ी भीड़ या जमाव।

इज़न—(अ०) (सं० पु०) आज्ञा, इजाज़त।

इजमाअ—(अ०) (सं० पु०) (१) जमा होना, एकत्र होना; (२) सहमत होना, एक-राय होना, इत्तफ़ाक़।

इज़मान—(अ०) (सं० पु०) पुराना होना।

इज़माने-हरमत—जीर्ण ज्वर।

इजमाल—(अ०) (सं० पु०) (१) इतना संक्षेप करना कि बात समझने में कठिनता हो; (२) इकट्ठा करना।

इजमाली—(अ०) (वि०) (१) अविभाजित, सम्मिलित; (२) गोल, संक्षिप्त।

इजरा—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) जारी करना, तामील करना, अदालत की कारवाई करना; (२) काम चलाना।

इज़राईल—(अ०) (सं० पु०) यमदूत, जान निकालनेवाला फ़रिश्ता।

इजलत—(अ०) (सं० स्त्री०) देखो—'उज-लत'।

इजलाल (अ०) (सं० पु०) (१) बड़प्पन, महत्ता, बुज़ुर्गी; (२) प्रतिष्ठा, सम्मान; (३) शान-शौकत।

इज़लाल—(अ०) (सं० पु०) बहकाना, गुमराह करना।

इजलास—(अ०) (सं० पु०) (१) कचहरी, अदालत, न्यायालय; (२) कचहरी का काम करने के लिए बैठना।

इज़हार—(अ०) (सं० पु०) (१) खोलना, प्रकट करना, ज़ाहिर करना; (२) बयान, वक्तव्य।

इजाज़त (अ०) (सं० स्त्री०) (१) आज्ञा; (२) मंज़ूरी, परवानगी; (३) रुख़सत, छुट्टी।

इजाज़त-तलब—(अ०) (वि०) इजाज़त चाहने वाला।

इजाबत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) स्वीकृति, मानना, मंज़ूर करना; (२) पाख़ाना होना, दस्त होना।

इज़ाफ़त—(अ०) (सं० स्त्री०) सम्बन्ध, लगाव, निसबत, इलाक़ा।

इज़ाफ़ा—(अ०) (सं० पु०) वृद्धि, बढ़ाना, बेशी, तरक़्क़ी। इज़ाफ़ा बोलना—बोली बढ़ाना, बढ़ाकर क़ीमत लगाना।

इज़ाफ़ी—(अ०) (वि०) ऊपर से बढ़ाया हुआ; जो असली न हो।

इज़ाम—(अ०) (सं० पु०) हड्डियाँ।

इज़ार—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पाजामा। (अ०) (सं० पु०) गाल।

इज़ार-बन्द—(फ़ा०) (सं० पु०) कमर-बन्द, नाड़ा। इज़ार-बन्द की ढीली—बदकार स्त्री, व्यभिचारिणी। इज़ार-बन्द की सच्ची—पतिव्रता, साध्वी। इज़ार-बन्दी रिश्ता—सुसराली रिश्ता; जोरू की तरफ़ का रिश्ता। इज़ार-बन्द न खुलना—औरत का कुमारी होना। इज़ार-बन्द से बाहर हो जाना—ग़ुस्से में आपे से बाहर होना।

इजारा—(अ०) (सं० पु०) (१) ठेका; (२) अधिकार, ज़ोर, दावा; (३) किराया, लगाना; (४) किराये पर कोई चीज़ देना; (५) उजरत पर कोई काम करना। कहा० इजारा उजाड़ा—जो काम ठेके पर कराया जाय, वह ख़राब होता है; जो जायदाद ठेके पर दी जाती है वह बर-बाद हो जाती है। इजारा करना—(१) ठेके पर कोई काम ठहराना, (२) इक़-रार करना, ज़िम्मेदारी करना। इजारे देना—ठेके पर देना। इजारा बाँधना—क़ब्ज़ा करना, अधिकार में लाना। इजारा लिखना—ठेका लेना।

इजारा-दार—(अ०) (सं० पु०) ठेकादार।

इजारा-नामा—(अ०) (सं० पु०) वह काग़ज़ जिसमें ठेके की शर्तें दर्ज हों।

इज़ाला—(अ०) (सं० पु०) (१) मिटाना, नष्ट करना; (२) ज़ायल करना, दूर करना। इज़ाल-ए-हैसियत-उरफ़ी—इज़्ज़त-हतक, मान-हानि।

इज़्ज़—(अ०) (सं० पु०) दीनता, नम्रता, आजिज़ी।

इज़्ज़—(अ०) (सं० पु०) इज़्ज़त, रुतबा, प्रतिष्ठा, मर्यादा। इज़्ज़ ओ जाह, इज़्ज़ ओ शान—प्रतिष्ठा और मर्यादा।

इज़्ज़त—(अ०) (सं० स्त्री०) प्रतिष्ठा, मान, मर्यादा, आबरू, शान। इज़्ज़त का लागू—इज़्ज़त के पीछे पड़ने वाला, किसी की आबरू मिटाने के लिए कटि-बद्ध।

इज़्ज़त-दार, इज़्ज़त-वाला—(उ०) (वि०) सम्मानित, प्रतिष्ठित।

इज़्न—(अ०) (सं० पु०) (१) विवाह की स्वीकृति; (२) मालिक का ग़ुलाम को व्यापार करने की आज्ञा देना।

इज़्न-नामा—(अ०) (सं० पु०) वसीयत-नामा।

इतमाम—(अ०) पूरा करना, अंजाम को पहुँचना।

इतमामे-हुज्जत—(अ०) (सं० पु०) हुज्जत का पूरा करना; किसी मामले को अंतिम बार समझाने और निबटाने की कोशिश करना।

इतमीनान—(अ०) (सं० पु०) विश्वास, संतोष, तसल्ली, दिल-जमई।

इतरत—(अ०) (सं० स्त्री०) सन्तान, बेटे-बेटियाँ।

इतरते-अतहार—(अ०) (सं० पु०) पाक औलाद।

इतराफ़—(अ०) (सं० स्त्री०) दिशाएँ, तरफ़ें। 'तरफ़' का बहुवचन।

इतरीफ़ल—(अ०) (सं० पु०) त्रिफले (हड़ बहेड़ा, आँवला) की माजून।

इतलाक़—(अ०) (सं० पु०) (१) छोड़ना, विच्छेद करना; (२) लगाना, प्रयोग करना।

इतलाफ़—(अ०) (सं० पु०) तलफ़ करना, नष्ट करना।

इतहाफ़—(अ०) (सं० पु०) उपहार, भेंट।

इताअत—(अ०) (सं० स्त्री०) आज्ञा-पालन, फ़रमां-बरदारी, हुक्म मानना।

इताब—(अ०) (सं० पु०) क्रोध, गुस्सा। इताब ओ ख़िताब—क्रोध के वचन।

इताब-नामा—(अ०) (सं० पु०) वह पत्र जिसमें क्रोध प्रकट किया गया हो।

इत्तफ़ाक़—(अ०) (सं० पु०) (१) मेल-जोल, एकता, एका; (२) संयोग, मौक़ा-महल। इत्तफ़ाक़ से—(१) संयोग से; (२) सहमत होकर।

इत्तफ़ाक़न—(अ०) (क्रि० वि०) अचानक, अनायास, बे सान-गुमान।

इत्तफ़ाक़िया—(फ़ा०) (क्रि० वि०) संयोग से, अकस्मात्, बे सान-गुमान।

इत्तफ़ाक़ी—(अ०) (वि०) अचानक, अनायास।

इत्तला—(अ०) (सं० स्त्री०) देखो—'इत्तिला'।

इत्तलाअन्—(अ०) (क्रि० वि०) सूचनार्थ, इत्तिला के तौर पर।

इत्तसाल—(अ०) (सं० पु०) (१) सम्बन्ध, लगाव; (२) मिलना; मिला हुआ होना; (३) लगातार होना।

इत्तहाद—(अ०) (सं० पु०) (१) अनुकूलता, एकता, समानता; (२) मेल-जोल स्नेह, मुहब्बत, दोस्ती।

इत्तहाम—(अ०) (सं० पु०) (१) दोष लगाना, तोहमत लगाना; (२) इलज़ाम; (३) भ्रम में डालना।

इत्तिला—(अ०) (सं० स्त्री०) सूचना, विज्ञप्ति, ख़बर देना।

इत्तिला नामा—(अ०) (सं० पु०) सूचना-पत्र, अदालत का परवाना जिससे ख़बर की जाय।

इत्तिला-याबी—(अ०) (सं० स्त्री०) इत्तिला पाना, सूचना मिलना।

इत्र—(अ०) (सं० पु०) (१) सुगंधि, ख़ुश-बू, सुगंधि का सार; (२ जौहर, ख़ुलासा, लुब-लुआब, निचोड़।

इत्र-दान—(अ०) (सं० पु०) वह बर्तन जिसमें इत्र रखते हैं, इत्र रखने का बक्स।

इत्र-बेज़—(फ़ा०) (वि०) ख़ुशबू फैलाने-वाला।

इत्र-बेज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ख़ुशबू फैलाना।

इत्रयात—(अ०) (सं० स्त्री०) ख़ुशबूदार चीज़ें, सुगंधित द्रव्य।

इद्ख़ाल—(अ०) (सं० पु०) दाख़िल करना, दाख़िल कराना।

इद्बार—(अ०) (सं० पु०) (१) दुर्भाग्य, अभाग्य, बद नसीबी; (२) परेशानी, घब-राहट।

इद्राक—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) बुद्धि, अक़्ल, समझ; (२) दरयाफ़्त करना।

इद्दत—(अ०) (सं० स्त्री०) स्त्रियों के लिए वह निश्चित समय जिसमें दूसरा पति करना वर्जित है। (तलाक़ दी हुई की इद्दत तीन महीने, बेवा की चार महीने दस दिन है)।

इनज़ाल—(अ०) (सं० पु०) उतारना, गिराना, वीर्य-पात।

इनब—(अ०) (सं० स्त्री०) अंगूर।

इनसान—(अ०) (सं० पु०) मनुष्य, आदमी।

इनहितात—(अ०) (सं० पु०) घटाव, टेढ़ापन।

इनहिदाम—(अ०) (सं० पु०) उजड़ना, वीराना होना, नष्ट होना।

इनहिराफ़—(अ०) (सं० पु०) (१) फिर जाना, बिलट जाना; (२) विद्रोह, विरोध, सरकशी, बग़ावत।

इनहिसार—(अ०) (सं० पु०) घिरना, घेरे में आजाना।

इनाद—(अ०) (सं० पु०) वैर, दुश्मनी।

इनादाम—(अ०) (सं० सं०) नष्ट होना, नेस्त-नाबूद होना।

इनान—(अ०) (सं० स्त्री०) लगाम, बाग़।

इनान-गीर—(फ़ा०) (वि०) बाग़ पकड़नेवाला; चलने से रोक देनेवाला।

इनान-गुस्ता—(फ़ा०) (वि०) लगाम टूटा हुआ, बग-टूट, बहुत तेज़।

इनान-ताब—(फ़ा०) (वि०) वह घोड़ा जो इशारे पर चलता हो।

इनाबत—(अ०) (सं० स्त्री०) पश्चात्ताप-पूर्वक ईश्वर का ध्यान करना।

इनाम—(अ०) (सं० पु०) पुरस्कार, उपहार, सिला, भेंट। इनाम इकराम—उपहार।

इनाम-दार—(अ०) (सं० पु०) माफ़ीदार, जिसे उपहार में ज़मीन मिली हो।

इनायत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) अनुग्रह, कृपा, मेहरबानी; (२) भेंट, तोहफ़ा; (३) तवज्जह, कृपा-दृष्टि।

इनायत-नामा—(अ०) (सं० पु०) कृपा-पत्र, बड़े का पत्र।

इनायत-फ़रमा—(अ०) (वि०) कृपालु, मित्र।

इनायात—(अ०) (सं० स्त्री०) कृपाएँ। 'इनायत' का बहुवचन।

इन्क़ज़ा—(अ०) (सं० पु०) पूरा होना, समाप्त होना, गुज़रना, बीतना। इन्क़ज़ाए-मियाद—मुद्दत का गुज़र जाना; अवधि का समाप्त हो जाना।

इन्कशाफ़—(अ०) (सं० पु०) भेद का खुलना, रहस्य का प्रकट हो जाना।

इन्कसार—(अ०) (सं० पु०) दीनता, नम्रता, आजिज़ी।

इन्कार—(अ०) (सं० पु०) (१) किसी बात को न मानना, अस्वीकार करना; (२) परहेज़, उज़्र।

इन्क़िताअ—(अ०) (सं० पु०) कटजाना, अलग होजाना, बंद होना।

इन्क़िलाब—(अ०) (सं० पु०) क्रान्ति, उलट-पलट, परिवर्तन; समय का उलट-फेर।

इन्किशाफ़—(अ०) (सं० पु०) खोलना, खुलाना, प्रकट होना।

इन्क़िसाम—(अ०) (सं० पु०) बाँट, बटवारा, विभाजन।

इन्जमाद—(अ०) (सं० पु०) जम जाना, जमना।

इन्ज़ाल—(अ०) (सं० पु०) गिरना; वीर्य-पात।

इन्तक़ाम—(अ०) (सं० स०) प्रतिशोध, बदला, एवज़।

इन्तक़ाल—(अ०) (सं० पु०) (१) दूसरे मुक़ाम को जाना, जगह बदलना ; (२) मृत्यु, परलोक-गमन, मर जाना । इन्तक़ाल-जायदाद—जायदाद का दूसरे के नाम होना, बिक जाना ।

इन्तख़ाब—(अ०) (सं० पु०) (१) चुनाव, छाँटना, निर्वाचन, (२) पसंद करना, चुनना; (३) पसंद । (वि०)—चुना हुआ, पसंद किया हुआ; चीदा ।

इन्तजाम—(अ०) (सं० पु०) प्रबंध, व्यवस्था, बंदोबस्त ।

इन्तज़ाम-कार—(अ०) (सं० पु०) व्यवस्थापक, प्रबंध-कर्ता, मैनेजर ।

इन्तज़ाय—(पु०) (सं० पु०) उखाड़ना, छोड़ना ।

इन्तज़ार—(अ०) (सं० पु०) प्रतीक्षा, राह देखना, बाट जोहना ।

इन्तफ़ाअ—(अ०) (सं० पु०) नफ़ा, लाभ उठाना, फ़ायदा पाना ।

इन्तशार—(अ०) (सं० पु०) (१) परेशानी घबराहट, दुर्दशा ; (२) तितर-बितर होना, बिखरना ।

इन्तसाब—(अ०) (सं० पु०) लगाव, सम्बन्ध, निसबत ।

इन्तिफ़ा—(अ०) (सं० पु०) बुझ जाना, मुरझा जाना, कुम्हला जाना ।

इन्तिबाक़—(अ०) (सं० पु०) आपस में मिलना ।

इन्तिहा—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) समाप्ति, ख़ात्मा, आख़ीर ; (२) सीमा, चरम सीमा; (३) परिणाम, फल ; (४) अत्यन्त । इन्तिहा का—हद से ज़्यादा, परले सिरे का ।

इन्द—(अ०) (वि०) पास, समीप, नज़दीक ।

इन्दिमाल—(अ०) (सं० पु०) घाव का भरना, ज़ख़्म का भर आना ।

इन्दिया—(अ०) (सं० पु०) (१) अभिप्राय मंशा, राय, विचार ; (२) मनसूबा । इन्दिया लेना—मंशा जानने की कोशिश करना, राय लेना । इन्दिया पाना—मंशा मालूम करना ।

इन्दिराज—(अ०) (सं० पु०) दर्ज करना, दाख़िल होना, लिख लेना ।

इन्दुल-ज़रूरत (उ०) (वि०) ज़रूरत पड़ने पर, आवश्यकता होने पर ।

इन्दुल-तलब—(उ०) (वि०) तलब करने पर, मांगने पर ।

इन्दुल-मुलाक़ात—(अ०) (वि०) मिलने पर, मुलाक़ात के वक्त ।

इन्फ़ाज़—(अ०) (सं० पु०) जारी करना, प्रचलित करना, भेजना ।

इन्फ़िराग़—(अ०) (सं० पु०) फ़राग़त, छुट्टी ।

इन्फ़िकाक—(अ०) (सं० पु०) (१) अलग होना ; (२) जायदाद का रेहन से छुड़ाना ।

इन्फ़िराद—(अ०) (सं० पु०) अकेला होना, एकाकी होना ।

इन्फ़िसाख़—(अ०) (सं० पु०) टूट जाना ।

इन्फ़िसाल—(अ०) (सं० पु०) निर्णय, फ़ैसला ।

इन्शा—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) लिखना, लेख, इबारत ; (२) लेख-शैली, तर्ज़-तहरीर ; (३) पत्र-लेखन-कला । इन्शा करना—लिखना ।

इन्शा-अल्लाह—(अ०) (क्रि० वि०) यदि ईश्वर ने चाहा तो ।

इन्शा-परदाज़—(अ०) (सं० पु०) लेखक, मुंशी ।

इन्शा-परदाज़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) लेखन-कला ; (२) उत्तम लेख लिखने का अभ्यास, लेखन-चातुर्य ।

इन्स—(अ०) (स० पु०) इनसान, आदमी।

इन्सान—(अ०) (सं० पु०) मनुष्य, आदमी।

इन्सानियत—(अ०) (सं० स्त्री०) मनुष्यता, आदमियत, मिलनसारी।

इन्साफ़—(अ०) (सं० पु०) (१) न्याय; (२) निर्णय, फ़ैसला।

इन्साब—(अ०) (सं० पु०) गिरना, पटकना।

इन्सिदाद—(अ०) (सं० पु०) बंद होजाना, रोक।

इन्सिराम—(अ०) (सं० पु०) (१) प्रबंध, व्यवस्था, इन्तज़ाम, बंदोबस्त; (२) अलग होना, पूरा होना।

इफ़रात—(अ०) (सं० स्त्री०) बहुतायत, ज़्यादती, कसरत।

इफ़्लास—(अ०) (सं० पु०) दरिद्रता, मोहताजी, ग़रीबी।

इफ़्लाह—(अ०) (सं० पु०) भलाई, उपकार, नेकी।

इफशा—(फ़ा०) (वि०) प्रकट, ज़ाहिर करना, फ़ाश करना।

इफ़हाम—(अ०) (सं० पु०) समझाना।

इफ़ाक़ा—(अ०) (सं० पु०) आराम; कष्ट में कमी होना, रोग में कमी होना, सेहत पाना, होश में आना।

इफ़ादत—(अ०) (सं० स्त्री०) फ़ायदा पहुँचाना।

इफ़ादा—(अ०) (सं० पु०) लाभ, नफ़ा, फ़ायदा।

इफ़्तख़ार—(अ०) (सं० पु०) (१) अभिमान करना, घमंड करना; (२) इज़्ज़त बढ़ाई।

इफ़्तताह—(अ०) (सं० पु०) खोलना, जारी करना।

इफ़्तरा—(अ०) (सं० पु०) तोहमत, इलज़ाम, कलंक।

इफ़्तरा-परदाज़—(फ़ा०) (वि०) तोहमत लगानेवाला, शरीर, झगड़ालू।

इफ़्तार—(अ०) (सं० पु०) रोज़ा खोलना, उपवास के अनन्तर कुछ जल-पान करना।

इफ़्तारी—(अ०) (सं० स्त्री०) रोज़ा खोलने के समय का भोजन।

इफ़्फ़त—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) सदाचरण, परहेज़-गारी, पारसाई; (२) पाकदामनी, संयम, व्यभिचार से बचा रहना।

इफ़्फ़त-मआब—(फ़ा०) (वि०) पारसा, सदाचारी।

इफ़्रीत—(अ०) (सं० पु०) भूत-प्रेत।

इबकार—(अ०) (सं० स्त्री०) कुमारिकाएँ। 'बिक्र' का बहुवचन।

इबरत—(अ०) (सं० पु०) शिक्षा, नसीहत, ख़ौफ़।

इबरत-अंगेज़—(अ०) (वि०) (१) जिससे कुछ शिक्षा मिले; (२) जिससे आदमी को ख़ौफ़ हो और नसीहत पकड़े।

इबरा—(अ०) (सं० पु०) छोड़ना।

इबरानी—(अ०) (सं० स्त्री०) यहूदी।

इबरीक़—(अ०) (सं० पु०) पानी पीने का लोटा, सुराही।

इबलाग़—(अ०) (क्रि०) भेजना, पहुँचाना।

इबलीस—(अ०) (सं० पु०) शैतान।

इबहाम—(अ०) (सं० पु०) (१) अंगूठा; (२) खोल कर न कहना।

इबा—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) एक प्रकार का चोग़ा; (२) कम्बल।

इबाद—(अ०) (सं० पु०) सेवक, दास; ग़ुलाम, ख़ुदा के बन्दे।

इबादत—(अ०) (सं० स्त्री०) उपासना, परस्तिश, नमाज़।

इबादत-कदा इबादत-ख़ाना—(अ०) (सं० पु०) मन्दिर, मसजिद।

इबादत-गाह—(अ०) (सं० स्त्री०) मन्दिर, पूजा करने की जगह।

इबारत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) लेख, प्रबंध, मज़मून ; (२) लेख-शैली ।

इबारत - आराई—(अ०) (सं० स्त्री०) चित्रण, मज़मून की रंगीनी, संवार कर लिखना, लेखन-चातुर्य्य ।

इबारत-ज़ुहरी—(अ०) (सं० स्त्री०) वह इबारत जो किसी लेख की पीठ पर लिखी हो ।

इबाहत—(अ०) (सं० स्त्री०) नियमित करना, जायज़ करना, इजाज़त ।

इब्तदा—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) आरंभ, शुरू; (२) नींव, उद्गम, निकास ।

इब्तदाई—(फ़ा०) (वि०) आरम्भिक, पहला, शुरू-का ।

इब्तदाअन—(फ़ा०) (क्रि० वि०) आरंभ में, शुरू में, पहले-पहल ।

इब्ताल—(अ०) (सं० पु०) व्यर्थ कर देना, झूठा करना ।

इब्तिज़ाल—(अ०) (सं० पु०) (१) व्यर्थ व्यय करना, बेहूदा ख़र्च करना, खो देना; (२) अविश्वास, हलका-पन ।

इब्तिला—(अ०)(सं० स्त्री०) परीक्षा, आज़-मायश, बला में पड़ना ।

इब्तिसाम—(अ०) (सं० पु०) हँसना, मुसकुराना, खिलना ।

इब्तिहाज—(अ०) (सं०पु० हर्ष, प्रसन्नता, ख़ुशी ।

इब्न—(अ०) (सं० पु०) बेटा, पुत्र, लड़का ।

इब्न-उल्-वक़्—(अ०) (सं० पु०) अवसर-सेवी, वह आदमी जो वक़्त देख कर काम करे, स्वार्थ-साधक ।

इब्नत—(अ०) (सं० स्त्री०) बेटी, पुत्री, लड़की ।

इत्तबाअ—(अ०) (सं० पु०) पैरवी, पैरवी करना, समर्थन ।

इमकान—(अ०) (सं० पु०) (१) अधिकार, क़ाबू, संभावना ; (२) सामर्थ्य, शक्ति, मजाल, मक़दूर ।

इमदाद—(अ०) (सं० स्त्री०) सहायता, मदद, मदद करना ।

इमरोज़—(फ़ा०) (क्रि० वि०) आज, आज का दिन ।

इमरोज़-फ़रदा—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) टालमटूल, हीला-हवाला, आज-कल करना । इमरोज़-फ़रदा करना—टालना, आज कल करना ।

इमला—(अ०) (सं० पु०) शुद्ध लिखना, लिपि के अनुसार लिखना, शुद्ध रूप में लिखना ।

इमलाक—(अ०) (सं० पु०) सम्पत्ति, जायदाद, मकानात ।

इमशब—(अ०) (क्रि० वि०) आज की रात ।

इमसाक—(अ०) (सं० पु०) (१) रोकना, रुकाव, कंजूसी ; (२) स्तंभन, बंधेज ।

इमसाल—(अ०) (क्रि० वि०) अब की साल, इस वर्ष ।

इमाद—(अ०) (सं० पु०) खंभा, स्तंभ, सितून और ऊँचे मकान ।

इमाम—(अ०) (सं० पु०) (१) मार्ग-दर्शक, नेता, पेशवा; (२) धर्म-शास्त्र का ज्ञाता, धर्माचार्य ; (२) नमाज़ पढ़ाने वाला; (४) माला या तस्बीह का वह लंबा दाना जो सिरे पर गुंधा होता है, सुमेरु ।

इमाम-ज़ामिन—(अ०) (सं० पु०) आठवें इमाम (हज़रत अली मूसी रज़ा) का नाम । इमाम-ज़ामिन का रुपया—यात्रा करनेवाले के घरवाले उसके बाज़ू पर इमाम ज़ामिन का रुपया बाँध देते हैं जिससे यात्रा सकुशल समाप्त हो । बाद को यह रुपया दान कर दिया जाता है ।

इमामत—(अ०) (सं० स्त्री०) नमाज़ में इमाम होना, पेशवाई, नेतृत्व ।

इमाम-बाड़ा—(अ०) (सं० पु०) वह मकान जो विशेष रूप से ताज़िया-दारी के लिए बनाया जाता है ।

इमामा—(अ०) (सं० पु०) एक प्रकार की पगड़ी, साफ़ा।

इमारत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) बना हुआ मकान, भवन; (२) संपन्नता, अमीरी, धनाढ्यता; (३ राज्य, शासन, हुकूमत। इमारत खड़ी होना—मकान बन जाना।

इम्तिज़ाज—(अ०) (सं० पु०) मिलाना, मिश्रण।

इम्तिदाद—(अ०) (सं० पु०) लंबाई, तूल, दराज़ी।

इम्तिना—(अ०) (सं० पु०) रोक, मनाही, मुमानियत।

इम्तिनाई—(अ० वि०) रोकने वाला, मनाही करने वाला।

इम्तिनान—(अ०) (सं० पु०) किसी पर एहसान रखना।

इम्तियाज़—(अ०) (सं० पु०) (१) तमीज़ पहचान; (२) अन्तर, फ़र्क़।

इम्तिहान—(अ०) (सं० पु०) परीक्षा, जाँच।

इम्बिसात—(अ०) (सं० पु०) प्रसन्नता, हर्ष, उत्फुल्ल होना, खिलना।

इयाँ—(अ०) (वि०) ज़ाहिर, प्रकट, खुला हुआ।

इयादत -(अ०) (सं० स्त्री०) बीमार का हाल पूछना। इयादत को जाना—बीमार की हालत दरयाफ़्त करने जाना।

इयाल—(अ०) (सं० पु०) जोरू, बाल-बच्चे।

इयाल दार—(अ०) (सं० पु०) गृहस्थ, बाल-बच्चे वाला, कुनबे वाला।

इयाल-दारी—(अ०) (सं० स्त्री०) इयाल-दार होना। इयाल-दारी में फँसना—गृहस्थी के जंजाल में फँसना।

इरक़ाम—(फ़ा०) (सं० पु०) लिखना।

इरजाअ—(अ०) (सं० पु०) दायर करना।

इरफ़ान—(अ०) (सं० पु०) देखो 'इर्फ़ान'

इरम—(अ०) (सं० पु०) स्वर्ग (जो शद्दाद ने बनाया था)।

इरशाद—(अ०) (सं० पु०) (१) आज्ञा, हुक्म; (२) बयान, आदेश। इरशाद करना—(१) हुक्म देना, कहना; (२) कुछ पढ़ना। इरशाद बजा लाना—हुक्म की तामील करना।

इरस—(अ०) (सं० स्त्री०) मीरास, जो किसी के मरने पर मिले।

इरसाल—(अ०) (सं० पु०) भेजना, रवाना करना, प्रेषित करना।

इराक़—(अ०) (सं० पु०) (१) अरब का एक प्रान्त; (२) एक राग का नाम।

इराक़ी—(अ०) (सं० पु०) इराक़ का घोड़ा, अरबी घोड़ा। कहा०—इराक़ी पर बस न चला गधैया के कान उमेठे—ज़बरदस्त पर क़ाबू न चला तो ग़रीब को सज़ा देने लगे।

इरादत—(अ०) (सं० स्त्री०) विश्वास, ऐतक़ाद रखना।

इरादतन—(अ०) (क्रि० वि०) जान-बूझ कर।

इरादत-मन्द—(फ़ा०) (वि०) विश्वासी, मोतक़िद।

इरादा—(अ०) (सं० पु०) क़स्द, विचार, इच्छा, नीयत।

इर्क़-उन्निसा—(अ०) (सं० पु०) एक बीमारी का नाम, गृध्रसी।

इर्तिक़ा—(अ०) (सं० पु०) ऊपर चढ़ना, उन्नति करना।

इर्तिकाब—(अ०) (सं० पु०) (१) गुनाह करना; (२) इख़्तियार करना, ग्रहण करना; (३) अवैध काम शुरू करना।

इर्तिदाद—(अ०) (सं० पु०) धर्म छोड़ना, मज़हब से फिर जाना।

इर्तिबात—(अ०) (सं० पु०) मित्रता, मेल-जोल, दोस्ती।

इर्द-गिर्द—(अ०) (क्रि० वि०) इधर उधर, चारों तरफ़।

इर्फ़ान—(अ०) (सं० पु०) बुद्धि, ज्ञान, ईश्वर को पहचानना, ख़ुदा-शनासी।

इलक़ा—(अ०) (सं० पु०) ईश्वरीय ज्ञान, इलहाम, वह बात जो ईश्वर मन में उत्पन्न कर दे।

इलज़ाम—(अ०) (सं० पु०) (१) अपराध, दोष; (२) अभियोग, तोहमत; (३) उलहना, दोषी ठहरना।

इलमास—(फ़ा०) (सं० पु०) हीरा।

इलल—(अ०) (सं० स्त्री०) 'इल्लत' का बहुवचन।

इलहाक़—(अ०) (सं० पु०) मिलाना, शामिल करना।

इलहाद—(अ०) (सं० पु०) मज़हब से फिरना।

इलहान—(अ०) (सं० पु०) (१) अच्छी आवाज़ से पढ़ना; गाना; (२) गीत। 'लहन' का बहुवचन।

इलहाम—(अ०) (सं० पु०) ईश्वर की ओर से कोई बात मन में आना, ईश्वरीय ज्ञान।

इलहाह—(अ०) (सं० स्त्री०) ख़ुशामद, अनुनय-विनय, मिन्नत।

इलहियात—(अ०) (सं० स्त्री०) आध्यात्मिक बातें।

इलाक़-ए-दस्तार—(फ़ा०) (सं० पु०) पगड़ी का तुर्रा या शेला।

इलाक़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) सम्बन्ध, सरोकार, वास्ता, ताल्लुक़, लगाव, मिसबत; (२) सूबा, प्रान्त, अमलदारी, राज्य; (३) ताल्लुक़ा, ज़मींदारी, रियासत, राज; (४) नौकरी का सम्बन्ध।

इलाक़ा-दार—(अ०) (सं० पु०) (१) सम्बन्धी, रिश्तेदार, (२) ताल्लुक़े-दार बड़ा ज़मींदार।

इलाक़ा-बन्द—(फ़ा०) (सं० पु०) ज़ेवर में डोरे डालने वाला, पटवा।

इलाक़ा-बन्दी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पटवा का काम या पेशा।

इलाज—(अ०) (सं० पु०) (१) चिकित्सा, उपचार; (२) उपाय, चारा, तदबीर; (३) दंड, सज़ा।

इलावा—(अ०) (क्रि० वि०) अतिरिक्त, सिवा।

इलाह—(अ०) (सं० पु०) ईश्वर, ख़ुदा।

इलाही—(अ०) (सं० पु०) ईश्वर।

इलाही तौबा—हे ईश्वर, पापों से बचा।

इलाही-ख़र्च—जहाँ देखने में आमदनी तो कहीं से हो नहीं और ख़र्च बेहद हो।

इलाही-गज़—(अ०) (सं० पु०) इमारती गज़, जो मामूली गज़ से कुछ छोटा होता है।

इलाही-सन्—(अ०) (सं० पु०) अकबर का चलाया हुआ सम्वत्।

इलियास—(अ०) (सं० पु०) एक पैग़म्बर का नाम जिनकी उम्र बड़ी है और यह माना जाता है कि क़यामत तक ज़िन्दा रहेंगे।

इल्तिजा—(अ०) (सं० स्त्री०) विनय, प्रार्थना, मिन्नत, दरख़्वास्त, ख़ुशामद।

इल्तिफ़ात—(अ०) (सं० पु०) (१) तवज़्ज़ुह, अनुराग, प्रवृत्ति; (२) मेहरबानी, कृपा, अनुग्रह।

इल्तिबास—(अ०) (सं० पु०) (१) पेचीदापन, कठिनता, जटिलता, उलझाव; (२) उच्चारण एक और अर्थ दो होना।

इल्तिमास—(अ०) (सं० स्त्री०) प्रार्थना, निवेदन, विनती, गुज़ारिश।

इल्तियाम—(अ०) (सं० पु०) (१) मेल-जोल, मित्रता, दोस्ती; (२) ज़ख़्म का भरना, घाव पुरना।

इल्तिवा—(अ०) (सं० पु०) मुल्तवी करना, देर।

इलितहाब—(अ०) (सं० पु०) आग का भड़कना।

इल्म—(अ०) (सं० पु०) (१) ज्ञान, जानना आगाही, परिचय ; (२) शास्त्र, विज्ञान, विद्या ; (३) जादू-मंत्र, टोटका।

इल्म-दाँ—(अ०) (सं० पु०) विद्वान्, शास्त्रज्ञ, जाननेवाला।

इल्मियत—(अ०) (सं० स्त्री०) विद्या होना, इल्म होना।

इल्मी—(अ०) (वि०) इल्म से संबन्ध रखने वाला, विद्या-विषयक।

इल्मे-अख़लाक़—(अ०) (सं० पु०) नीति, नीति-शास्त्र।

इल्मे-अदब—(अ०) (सं० पु०) साहित्य।

इल्मे-इलाही—(अ०) (सं० पु०) अध्यात्म-विद्या।

इल्मे-उरूज़—(अ०) (सं० पु०) छन्द-शास्त्र, पिंगल।

इल्मे-क़ुयाफ़ा—(अ०) (सं० पु०) सूरत देखकर हाल जानने की विद्या।

इल्मे-कीमिया—(अ०) (सं० पु०) रसायन-शास्त्र।

इल्मे-ग़ैब—(अ०) (सं० पु०) अध्यात्म-विद्या, ज्योतिष, भविष्य जानना।

इल्मे-जमादात—(अ०) (सं० पु०) खनिज विज्ञान।

इल्मे-तबई—(अ०) (सं० पु०) पदार्थ-विज्ञान।

इल्मे-तवारीख़—(अ०) (सं० पु०) इति-हास-शास्त्र।

इल्मे-दीन—(अ०) (सं० पु०) धर्म-शास्त्र।

इल्मे-नबातात—(अ०) (सं० पु०) वनस्पति-विज्ञान।

इल्मे-नुजूम—(अ०) (सं० पु०) ज्योतिष।

इल्मे-फ़िक़ा—(अ०) (सं० पु०) मुसल्मानी धर्म-शास्त्र।

इल्मे-बहस—(अ०) (सं० पु०) तर्क-शास्त्र।

इल्मे-मजलिस—(अ०) (सं० पु०) सभा-चातुर्य।

इल्मे-मन्तक़—(अ०) (सं० पु०) तर्क-शास्त्र, न्याय शास्त्र।

इल्मे-मादनियात—(अ०) (सं० पु०) खनिज विज्ञान।

इल्मे-मौसीक़ी—(अ०) (सं० पु०) गान-विद्या, संगीत शास्त्र।

इल्मे-हिन्दसा—(अ०) (सं० पु०) गणित।

इल्मे-हैयत—(अ०) (सं० पु०) खगोल विज्ञान।

इल्लत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) रोग, बीमारी ; (२) कारण, सबब, वजह ; (३) झगड़ा, बखेड़ा ; (४) कूड़ा-करकट, नाकारा चीज़, रद्दी ; (५ लत, बुरी आदत, टेव ; (६) अपराध, इलज़ाम ; (७) जुर्म, गुनाह।

इल्लती—(अ०) (वि०) जिसे कोई लत या बुरी आदत हो, लतियल।

इल्ला—(अ०) (अव्यय) (१) परन्तु, लेकिन; (२) अतिरिक्त, सिवा।

इल्लल्लाह—(अ०) हे ईश्वर, सहायता कर।

इशरत—(अ०) (सं० स्त्री० आनन्द, चैन। ऐश ओ इशरत, ऐश ओ निशात—भोग और आनन्द।

इशरत-कदा, इशरत-ख़ाना, इशरत-सरा—(अ०) (सं० पु०) ऐश का घर।

इशवा—(अ०) (सं० पु०) (१) चमत्कार, करिश्मा ; (२) नाज़-अदा, नख़रा।

इशवा-कार—(अ०) (सं० पु०) नख़रा करनेवाला, फ़रेबी, माशूक़।

इशवा-गर—(अ०) (सं० पु०) माशूक़।

इशा—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) रात का पहला पहर; (२) रात की नमाज़।

इशाअत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) प्रकाशन; (२) मसिद्ध करना, शोहरत।

इशारत—(अ०) (सं० स्त्री०) इशारा करना, संकेत।

इशारतन्—(अ०) (क्रि० वि०) इशारे में, संकेत से।

इशारा—(अ०) (सं० पु०) (१) संकेत, सैन; (२) हलका सहारा; (३) प्रेरणा।

इशारा-फ़हम—(अ०) (वि०) संकेत से मतलब समझ जानेवाला।

इशारात—(अ०) (सं० पु०) 'इशारा' का बहुवचन।

इश्क़—(अ०) (सं० पु०) (१) अत्यन्त प्रेम, हद से ज्यादा मुहब्बत; (२) सलाम, रुख़सती सलाम; (३) (उ०) पहलवानों का सलाम जो अखाड़े में उतर कर करते हैं। इश्क़ है—शाबाश है।

इश्क़-पेचाँ—(अ०) (सं० पु०) एक लता या बेल का नाम।

इश्क़-बाज़—(फ़ा०) (वि०) ऐय्याश, आशिक़-मिज़ाज।

इश्क़-बाज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ऐय्याशी, हुस्न-परस्ती।

इश्क़-मजाज़ी—(फ़ा०) (सं० पु०) संसारी माशूक़ का प्रेम।

इश्क़-हक़ीक़ी—(फ़ा०) (सं० पु०) ईश्वर से प्रेम।

इश्तबाह—(अ०) (सं० पु०) सन्देह, शक, गुमान।

इश्तराश्र—(अ०) (सं० पु०) ख़रीदना, मोल लेना।

इश्तराक—(अ०) (सं० पु०) साझा, शिरकत, मेल।

इश्तहा—(अ०) (सं० स्त्री०) भूख, क्षुधा; (२) चाह, इच्छा।

इश्तहार—(अ०) (सं० पु०) विज्ञापन, ऐलान, नोटिस।

इश्तिश्राल—(अ०) (सं० पु०) भड़कना, जोश पैदा होना।

इश्तिश्रालक—(अ०) (सं० स्त्री०) उकसाना, भड़काना।

इश्तिदाद—(अ०) (सं० पु०) आधिक्य, ज़्यादती, शिद्दत।

इश्तिमाल—(अ०) (सं० पु०) मिलाना, शामिल होना।

इश्तियाक़—(अ०) (सं० पु०) (१) चाव, शौक़; (२) उत्कंठा; (३) अनुराग, आसक्ति।

इश्तिहा—(अ०) (सं० स्त्री०) भूख, चाह, इच्छा।

इश्वा—(फ़ा०) (सं० पु०) हाव भाव, नख़रा। देखो—'इशवा'।

इसपंद, इसबंद—(फ़ा०) (सं० पु०) एक क़िस्म का बीज जो नज़र उतारने और आसेब दूर करने में व्यवहृत होता है। इसपंद करना—नज़र-बद के लिए इसपंद जलाना।

इसबात—(अ०) (सं० पु०) साबित करना, सबूत, प्रमाण।

इसम—(अ०) (सं० पु०) अपराध, गुनाह, क़सूर।

इसराईल—(अ०) (सं० पु०) एक पैग़ंबर का नाम।

इसराफ़—(अ०) (सं० पु०) धन उड़ाना, फ़ुज़ूल-ख़र्ची।

इसराफ़ील—(अ०) (सं० पु०) एक फ़रिश्ता जो क़यामत के दिन मुरदे जगाने को सूर बजावेगा।

इसरार—(अ०) (१) हठ, आग्रह, ज़िद, तकरार; (२) आसेब, जिन का साया।

इसलाह—(अ०) (सं० स्त्री०)—देखो—'इस्लाह'।

इसहाल—(अ०) (सं० पु०) दस्त आना।

इसाबा—(अ०) (सं० पु०) औरतों के सर से बाँधने का कपड़ा।

इसियाँ—(अ०) (सं० पु०) अपराध, पाप, गुनाह।

इस्क़ात—(अ०) (सं० पु०) गिराना, निकालना। इस्क़ात-हमल—गर्भ गिराना, गर्भपात।

इस्तग्रानत—(अ०) (सं० स्त्री०) सहायता, मदद, आश्रय।

इस्तग्रारा—(अ०) (सं० पु०) रूपक अलंकार; (२) मंगनी लेना।

इस्तक़बाल—(अ०) (सं० पु०) (१) स्वागत, पेशवाई; (२) भविष्यत् काल, ज़माना आयन्दा।

इस्तक़रार—(अ०) (सं० पु०) (१) निश्चय होना, पक्का होना, तसदीक होना; (२) स्थिर होना, शान्ति-पूर्वक रहना।

इस्तकराह—(अ०) (सं० पु०) घृणा करना, नफ़रत करना।

इस्तक़लाल—(अ०) (सं० पु०) (१) धैर्य, क़याम; (२) दृढ़ता, पायदारी, मज़बूती; (३) अध्यवसाय, संकल्प, दृढ़-निश्चय।

इस्तक़ामत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) दृढ़ता, मज़बूती, इस्तक़लाल, (२) स्थिरता, जमे रहना।

इस्तख़ारा—(अ०) (सं० पु०) ईश्वर से मंगल कामना करना; श्री-गणेश करना।

इस्तग़ना—(अ०) (सं० स्त्री०) निश्चिन्त होना, बे-परवाई।

इस्तग़फ़ार—(अ०) (सं० पु०) (१) क्षमा के लिए प्रार्थना करना; (२) तौबा करना।

इस्तग़राक़—(अ०) (सं० पु०) (१) किसी चिन्ता में डूबना; (२) ईश्वर में लीन होना।

इस्तग़ासा—(अ०) (सं० पु०) (१) नालिश, दावा, अभियोग; (२) न्याय के लिए प्रार्थना करना।

इस्तदलाल—(अ०) (सं० पु०) दलील लाना, प्रमाण लाना।

इस्तदुआ—(अ०) (सं० स्त्री०) निवेदन, दरख़्वास्त, ख़्वाहिश।

इस्तफ़सार—(अ०) (सं० पु०) (१) पूछना, दरयाफ़्त करना; (२) हाल पूछना, स्थिति समझना।

इस्तफ़हाम—(अ०) (सं० पु०) पूछना, समझने की इच्छा।

इस्तफ़ा—(अ०) (सं० स्त्री०) चुना जाना, मुंतख़िब होना।

इस्तफ़राग—(अ०) (सं० पु०) वमन, क़ै।

इस्तबदाद—(अ०) (सं० पु०) (१) हठ, ज़िद, इस्तक़लाल; (२) रोक-टोक की परवा न करना।

इस्तमरार—(अ० (सं० पु०) (१) स्थायी रहना, सदा-रहना, (२) दवामी हक़ जो हमेशा रहे।

इस्तमरारी—(अ०) (वि०) दवामी, सदा के लिए, जिसमें घट-बढ़ न हो। इस्तमरारी बंदोबस्त—ज़मींदारी पर सरकार की ओर से मालगुज़ारी की रक़म का सदा के लिए मुक़र्रर किया जाना, जिससे वह भविष्य में बढ़ाई न जा सके।

इस्तमाअ—(अ०) (सं० पु०) सुनना।

इस्तमालत—(अ०) (सं० पु०) ख़ुशामद, दिलजोई।

इस्तरदाद—(अ०) (सं० पु०) रद्द करना, मनसूख़ करना।

इस्तराहत—(अ०) (सं० स्त्री०) चैन, सुख आराम।

इस्तलाह—(अ०) (सं० स्त्री०) शब्द को विशेष अर्थ में प्रयोग करना।

इस्तवा—(अ०) (सं० पु०) बराबर होना, समानता, बराबरी।

इस्तना—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) छूट, अपवाद; (२) अस्वीकार, जो प्रभाव से परे या अलग हो।

इस्तहक़ाक़—(अ०) अधिकार, हक़, दावा, योग्यता।

इस्तहकाम—(अ०) (सं० पु० (१) दृढ़ता, पुख़्तगी, मज़बूती, (२) समर्थन।

इस्तादगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) खड़ा होना।

इस्तादा—(फ़ा०) वि०) खड़ा हुआ।

इस्तिख़ारा—(अ०) (सं० पु०) कोई बात करने में शकुन देखना।

इस्तिख़िराज—(अ०) (सं० पु०) निकालने की इच्छा करना।

इस्तिंजा—(अ०) (सं० पु०) (१) धोना, अशुद्धता दूर करना; (२) पेशाब करना, मूत्र करने के बाद इंद्रिय को पानी से धोना या मिट्टी के ढेले से साफ़ करना।

इस्तितार—(अ०) (सं० पु०) छिपाना।

इस्तिलाह—(अ०) (सं० स्त्री०) किसी शब्द को विशेष अर्थ में प्रयुक्त करना।

इस्तिलाही—(अ०) (सं० स्त्री०) इस्तिलाह सम्बन्धी।

इस्तिस्क़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) पानी माँगना; (२) जलंधर का रोग।

इस्तिस्ना—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) छूट, अपवाद; (२) अलग, अलहदा; (३) न मानना।

इस्तिहाला—(अ०) (सं० पु०) (१) असंभव होना, कठिन होना, दुष्कर जानना; (२) कई चीजें मिला कर एक नई चीज़ पैदा करना; (३) हवा का पानी हो जाना।

इस्तीआब—(अ०) (वि०) कुल, तमाम, सब।

इस्तीफ़ा—(अ०) (सं० पु०) त्याग-पत्र, छोड़ना।

इस्तीसाल—(अ०) (सं० पु०) उखाड़ना, नष्ट करना।

इस्तेदाद—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) योग्यता, ज्ञान, अभ्यास; (२) सामर्थ्य, शक्ति, दक्षता।

इस्तेफ़ा—(अ०) (सं० पु०) देखो—'इस्तीफ़ा'।

इस्तेमाल—(अ०) (सं० पु०) प्रयोग, व्यवहार, काम में लाना, उपयोग करना।

इस्तेमाली—(अ०) (वि०) (१) बर्ता हुआ, काम में लाया हुआ; (२) व्यवहार किया जाने वाला, प्रचलित।

इस्नाम—(अ०) (सं० पु०) मूर्तियाँ, बुत। 'सनम' का बहुवचन।

इस्पग़ोल—(फ़ा०) (सं० पु०) एक क़िस्म के बीज जो दवा के काम आते हैं, ईसबगोल।

इस्म—(अ०) (सं० पु०) नाम संज्ञा।

इस्मत—(अ०) (सं० स्त्री०) अपने आपको पाप से बचाना, पातिव्रत, पाक-दामनी।

इस्म-नवीसी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) नाम लिखना; (२) गवाहों के नाम की सूची जो अदालत में पेश की जाती है।

इस्म-वार—(अ०) (वि०) नाम के साथ, नाम के अनुसार।

इस्मा—(अ०) (सं० पु०) नाम। 'इस्म' का बहुवचन।

इस्मे-अदद—(अ०) (सं० पु०) संख्यावाचक, जिससे संख्या का ज्ञान हो।

इस्मे-आज़म—(अ०) (सं० पु०) ईश्वर का नाम, सब से बड़ा नाम।

इस्मे-ज़मीर—(अ०) (सं० पु०) सर्व-नाम।

इस्मे-जलाली—(सं० पु०) ईश्वर का नाम।

इस्मे-फ़रज़ी—(अ०) (सं० पु०) कल्पित नाम।

इस्मे-फ़ायल—(अ०) (सं० पु०) कर्ता।

इस्मे-सिफ़त—(सं० पु०) विशेषण, गुणवाचक नाम।

इस्लाम—(अ०) (सं० पु०) (१) मुसल्मानी धर्म; (२) धर्म के लिए प्राण देने को तैयार रहना।

इस्लाह—(अ०) सं० स्त्री०) (१) संशोधन; सुधार, तरमीम; (२) मेल, मैत्री, सुलह; (३) हजामत, ख़त बनवाना, बनाना।

इहतमाम—(अ०) (सं० पु०) प्रबंध, व्यवस्था, बंदोबस्त।

ई

ई—(फ़ा०) (सर्व नाम) यह । ई-जानिब—हम ।

ईज़द—(फ़ा०) (सं० पु०) ईश्वर ।

ईज़दी—(फ़ा०) (वि०) ईश्वर का ।

ईज़ा—(अ०) (सं० स्त्री०) दुःख, पीड़ा, कष्ट ।

ईजाद—(अ०) (सं० स्त्री०) आविष्कार, नई बात निकालना ।

ईजाब—(अ०) (सं० पु०) (१) प्रार्थना; प्रस्ताव; (२) स्वीकृति, मंज़ूर करना, क़बूल करना, इक़बाल करना । ईजाब ओ क़बूल—(१) प्रस्ताव और स्वीकृति; (२) औरत-मर्द का विवाह करने का प्रस्ताव और मंज़ूरी; (३) किसी चीज़ के बेचने का प्रस्ताव (ईजाब) और ख़रीदने की रज़ामन्दी (क़बूल) ।

ईज़िद—(फ़ा०) (सं० पु०) ईश्वर ।

ईज़िदी—(फ़ा०) (वि०) ईश्वर का, ईश्वरीय ।

ईद—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) मुसलमानों का एक ख़ुशी का त्यौहार; (२) प्रसन्नता तथा आनन्द का दिन; (३) ख़ुशी, आनन्द, कामना पूर्ण होना । ईद का चाँद—वह जिसे बहुत काल बीतने पर देखें; जो कभी कभी दिखाई दे । ईद का चाँद हो जाना—बहुत कम दिखाई देना । ईद करना—ख़ुशी करना । ईद मनाना—ख़ुशी मनाना, जश्न करना । ईद होना—बड़ी ख़ुशी होना, मनोकामना पूरी होना ।

ईद-उ-ज़ज़ुहा—(अ०) (सं० स्त्री०) मुसल्मानों का बकरीद नामक त्यौहार, जिसमें क़ुर्बानी की जाती है ।

ईद-उल्-फ़ितर—(अ०) (सं० स्त्री०) मुसल्मानों का ख़ुशी का त्यौहार, ईद ।

ईद-गाह—(अ०) (सं० स्त्री०) वह स्थान जहाँ मुसलमान ईद की नमाज़ पढ़ते हैं ।

ईदी—(अ०) (सं० स्त्री०) ईद का इनाम, ईद का ख़र्च जो बच्चों को दिया जाता है ।

ईफ़ा—(अ०) (सं० पु०) पूरा करना, पालन करना; प्रतिज्ञा या वचन पूर्ण करना । ईफ़ाए-वादा—वादा पूरा करना ।

ईमा—(अ० (सं० पु०) (१) आज्ञा, हुक्म; (२) मन्शा, इन्दिया ।

ईमान—(अ०) (सं० पु०) (१) धर्म, मज़हब; (२) निर्भय करना, शान्ति प्रदान करना; (३) न्याय, इन्साफ़; (४) विश्वास; (५) नीयत; (६) सत्य ।

ईमान-दार—(अ०) (सं० पु०) (१) धर्म पर विश्वास रखने वाला, धर्म-भीरु; (२) विश्वसनीय, विश्वास-पात्र, व्यवहार का सच्चा; (३) न्यायशील, सच्चा, इन्साफ़-पसन्द ।

ईमान-दारी—(अ०) (सं० स्त्री०) सचाई; नीयत का सच्चा होना, सत्य निष्ठा ।

ईरान—(फ़ा०) (सं० पु०) फ़ारस देश, परशिया ।

ईरानी—(फ़ा०) (सं० पु०) फ़ारस देश का रहने वाला ।

ईसवी—(अ०) (सं० पु०) (१) ईसा से सम्बन्ध रखने वाला; (२) वह सम्वत् जो ईसा की मृत्यु से शुरू होता है ।

ईसा—(अ०) (सं० पु०) ईसाई धर्म के प्रवर्तक, जीसस क्राइस्ट ।

ईसाई—(अ०) (सं० पु०) ईसा का अनुयायी, ईसा के चलाये धर्म को मानने वाला, क्रिस्चियन ।

ईसार—(अ०) (सं० पु०) (१) ग्रहण करना; (२) बड़प्पन, बुज़ुर्गी; (३) त्याग, तपस्या ।

ईसी-नफ़्स—(फ़ा०) (वि०) पहुँचा हुआ महात्मा जो फूंक मारके मुरदों को ज़िन्दा करे ।

उ

उक़्बा—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) परलोक; (२) आख़िरत, अंतिम काल। उक़्बा बनाना—आक़बत संवारना।

उक़ला—(अ०) (सं० पु०) बुद्धिमान् मनुष्य, सुधी। 'अक़ील' का बहुवचन।

उक़ाब—(अ०) (सं० पु०) (१ एक क़िस्म का गिद्ध (पक्षी); (१) नौसादर।

उकौने—(हि०) (सं० पु०) वह जी मतलाना जो गर्भवती को गर्भ की अवस्था में होता है।

उक़द—(अ०) (सं० पु०) (१) गिरहें, गाठें। उक़दा का बहुवचन।

उक़दा—(अ०) (सं० पु०) १) गुत्थी, गाँठ, गिरह; (२) पेचीदा मसला, कठिन समस्या; (३) बखेड़ा, उलझन, पेच; (४) भेद, रहस्य।

उक़दा-कुशा—(अ०) (वि०) (१) मुश्किल आसान करने वाला, गुत्थी सुलझाने वाला; (२) ईश्वर।

उक़दा-कुशाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) समस्या हल करना, दिक़्क़त दूर करना।

उज़बक—(तु०) (सं० पु०) तुर्कों की एक जाति। (वि०)—वहशी, उजड्ड, मूर्ख, बद-सलीक़ा

उजरत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) मज़दूरी, पारिश्रमिक; (२) बदला, एवज़।

उजलत—(अ०) (सं० स्त्री०) शीघ्रता, तेज़ी, फ़ुरती, जल्दी।

उज़लत—(अ०) (सं० स्त्री०) एकान्त, ईश्वर-स्मरण के लिए एकान्त में रहना, गोशा-नशीनी।

उजूबा—(अ०) (सं० पु०) अनोखी वस्तु, अजीब चीज़।

उज्ब—(अ०) (सं० पु०) घमंड, अहंकार।

उज़्म—(अ०) (सं० पु०) बड़प्पन, बुज़ुर्गी, श्रेष्ठता।

उज़्मा—(अ०) (वि०) (स्त्री०) बड़ी, बुज़ुर्ग।

उज़्र—(अ०) (सं० पु०) (१) बहाना, हीला; (२) आपत्ति, विरोध, ऐतराज़, हुज्जत, दलील; (३) इन्कार; (४) क्षमा, माफ़ी, माफ़ी माँगना, क्षमा-याचना। उज़्र-माज़रत—क्षमा प्रार्थना।

उज़्र-ख़्वाह—(फ़ा०) (वि०) उज़्र करने वाला।

उज़्र-ख़्वाही—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) आपत्ति करना, उज़्र करना।

उज़्र-दार—(फ़ा०) (वि०) दावे-दार, विरोधी।

उज़्र-दारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दावा, ऐतराज़, विरोध, दलील।

उज़्र-बेगी—(अ०) (सं० पु०) पेशकार, जो बादशाह के सामने लोगों के प्रार्थना-पत्र पेश करे।

उज़्—(अ०) (सं० पु०) बदन का कोई हिस्सा, अंग।

उज़्व-तनासल—(फ़ा०) (सं० पु०) लिंग।

उतारिद—(अ०) (सं० पु०) बुध ग्रह।

उत्त—(अ०) (सं० पु०) कपड़े पर नक़्श बनाने का लोहे का यंत्र, नक़्श। उत्तू करना—इतना मारना कि बदन पर चोट के निशान पड़ जायँ।

उदूल—(अ०) (सं० पु०) (१) मुँह फेरना, विमुख होना; (२) न मानना, आज्ञा भंग करना, राह से हट जाना।

उदूल-हुक्म—(अ०) (वि०) आज्ञा न माननेवाला, सरकश।

उदूल-हुक्मी—(अ०) (सं० स्त्री०) आज्ञा न मानना, आज्ञा भंग करना, सरकशी।

उन्क़ा—(अ०) (सं० पु०) एक कल्पित पक्षी। (वि०) (१) अप्राप्त, ना-पैद; (२) दुर्लभ; (३) अनुपम, नायाब। उन्क़ा होना—ना-पैद होना, अप्राप्त होना।

उन्नाब—(अ०) (सं० पु०) एक सुर्ख़ फल जो दवा में काम आता है।

उन्नाबी—(अ०) (सं० पु०) एक प्रकार का लाल रंग। (वि०)—लाल रंग का, उन्नाब के रंग का।

उन्वान—(अ०) (सं० पु०) (१) शीर्षक, सिरनामा, सुर्ख़ी; (२) हर चीज़ का आरंभ, यौवन का आरंभ; (३) ढंग, तरह, तौर; (४) भूमिका, तमहीद।

उन्स—(अ०) (सं० पु०) प्रेम, मुहब्बत, प्यार।

उन्सुर—(अ०) (सं० पु०) मूल तत्व (पृथ्वी, अप्, तेज इत्यादि)

उन्सरी—(अ०) (वि०) मूल तत्व से संम्बन्धित।

उफ़—(अ०) (अव्यय) दुःख, बेचैनी या कष्ट सूचक शब्द; आह, ओह। उफ़ न करना—शिकायत न करना, बहुत ज़ब्त करना। उफ़ हो जाना—नष्ट हो जाना, ख़र्च हो जाना।

उफ़क़-उफ़ुक़—(अ०) (सं० पु०) क्षितिज, आस्मान का किनारा जो ज़मीन से मिला हुआ मालूम होता है।

उफ़्तां-ख़ेज़ां—(फ़ा०) (क्रि० वि०) बेहोशी की दशा में, बदहवासी की हालत में, गिरते-पड़ते।

उफ़्ताद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) आकस्मिक दुर्घटना, हादसा; (२) ढंग, आदत, तर्ज़; (३) बुनियाद, जड़।

उफ़्तादगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दीनता, आजिज़ी, ख़ाकसारी।

उफ़्तादा—(अ०) (वि०) (१) गिरा हुआ; (२) आजिज़, दीन; (३) ग़ैर-आबाद (ज़मीन), बिना जोता-बोया (खेत)

उबसना—(हि०) (क्रि०) (१) गलना, सड़ना, बोसीदा होना; (२) सड़ने के आसार होना, रक्खे रहने से एक प्रकार की बू आजाना।

उबूर—(अ०) (सं० पु०) (१) राह पर गुज़रना, मार्ग में होकर जाना; (२) पानी में जाना, पुल के पार जाना, नांघना, (३) अभ्यास, महारत, पारंगत होना। उबूर-दरियाए-शोर—काला पानी।

उब्बाद—(अ०) (सं० पु०) इबादत करने वाले, पूजा करनेवाले, उपासक। 'आबिद' का बहुवचन।

उमक़—(अ०) (सं० पु०) गहराई, गंभीरता।

उमर—(अ०) (सं० पु०) मोहम्मद साहब के दूसरे ख़लीफ़ा का नाम।

उमरा—(अ०) (सं० पु०) (१) दौलतमंद, धनाढ्य; (२) वज़ीर, राज्य के बड़े अधिकारी। 'अमीर' का बहुवचन।

उमुक़—(अ०) (सं० पु०) गहराई, हौज़ या नदी की तह।

उमूम—(अ०) (सं० पु०) आम होना।

उमूमन—(अ०) (क्रि० वि०) आम तौर पर, साधारणतः, अकसर।

उमूरात—(अ०) (सं० पु०) 'उम्र' का बहुवचन।

उम्दगी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) अच्छाई, ख़ूबी, बढ़िया होना; (२) जौहर, बुज़ुर्गी।

उम्दा—(अ०) (वि०) अच्छा, बढ़िया, नफ़ीस, पसंद किया हुआ।

उम्म—(अ०) (सं० स्त्री०) माता, माँ।

उम्म-उल्-सिबियाँ—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) मिरगी रोग, (२) शैतान की स्त्री; (३) बच्चों की माँ।

उम्मत—(अ०) (सं० स्त्री०) किसी पैग़म्बर या धर्म के अनुयायी। छोटी उम्मत—नीच जाति।

उम्मती—(अ०) (सं० पु०) किसी पैग़म्बर के अनुयायी, उम्मत के लोग।

उम्माल—(अ०) (सं० पु०) 'आमिल' का बहुवचन'। सरकारी कार-गुज़ार, रुपया वसूल करने वाले ओहदेदार।

उम्मी—(अ०) (सं० पु०) (१) वह जिसका बाप बचपन में मर गया हो और जिसका

पालन केवल मा या दाई ने किया हो और इस कारण शिक्षा न पा सके; (२) अशिक्षित; (३) मोहम्मद साहब का नाम; (४) उम्मत का अनुयायी।

उम्मीद, उम्मेद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) आशा, भरोसा; (२) आस, आरज़ू, अभिलाषा; (३) गर्भ, हमल।

उम्मेदवार—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) नौकरी पाने का अभिलाषी; (२) काम सीखनेवाला।

उम्मेदवारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) आशा, अभिलाषा; (२) काम सीखना; (३) नौकरी पाने के अभिप्राय से काम करना; (४) बच्चा पैदा होने की आशा।

उम्र—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) अवस्था, वय, सिन; (२) बहुत समय, अर्सा, मुद्दत, वर्षों; (३) आयु, जीवन की अवधि।

उम्र-जावदां, उम्र-जावेद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) हमेशा ज़िन्दा रहना, अमरत्व।

उम्र-तबई—(अ०) (सं० स्त्री०) मनुष्य की स्वाभाविक आयु।

उम्र-नूह—(अ०) (सं० स्त्री०) बहुत बड़ी उम्र, सैंकड़ों वर्ष।

उम्र-रसीदा—(उ०) (वि०) बड़ी उम्र का, बुड्ढा।

उरदा-बेगनी—(तु०) (सं० स्त्री०) वह स्त्री जो सशस्त्र होकर राज-महलों में पहरा दे।

उरफ़ा—(अ०) (सं० पु०) 'आरिफ़' का बहु-वचन; महात्मा।

उरफ़ी—(अ०) (वि०) साधारण, मामूली, ज़ाहिरी, मशहूर।

उरियां—(अ०) (वि०) नंगा, बरहना, नग्न।

उरियानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) नंगा होना।

उरूक़—(अ०) (सं० पु०) (१) निचोड़ा हुआ पानी, रस; (२) रगें, नसें, जड़ें (वनस्पति की)—

उरूज—(अ०) (सं० पु०) (१) चढ़ना, उन्नति; (२) शीर्ष बिन्दु, चोटी।

उरूज़—(अ०) (सं० पु०) ज़ाहिर होना।

उरूज-माह—(फ़ा०) (सं० पु०) चाँद की पहली तारीख़ से चौदहवीं तारीख़ तक का काल, शुक्ल पक्ष।

उरूस—(अ०) (सं० पु०) वर, दूल्हा। (सं० स्त्री०)—वधू, दुलहिन।

उरूसी—(अ०) (सं० पु०) विवाह, निकाह।

उरेब—(फ़ा०) (वि०) (१) आड़ा-तिरछा, टेढ़ा, औरेब; (२) छल-पूर्ण। उरेब की चाल—टेढ़ी चाल, दग़ा फ़रेब का काम, कपट-पूर्ण व्यवहार, धोखे की चाल।

उर्दी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) फ़ारसी वर्ष का दूसरा महीना।

उर्दू—(तु०) (सं० पु०) (१) लश्कर, छावनी; (२) वह बाजार जहाँ सब तरह की चीज़ें बिकती हों। (स्त्री०)—उर्दू-भाषा, हिन्दोस्तानी जो फ़ारसी लिपि में लिखी जाय और जिसमें फ़ारसी, अरबी के शब्दों का बाहुल्य हो।

उर्दू-ए-मुअल्ला—(तु०) (सं० स्त्री०) दरबार के प्रतिष्ठित पुरुषों की भाषा, प्रामाणिक और परिष्कृत उर्दू।

उर्दू-बाज़ार—(उ०) (सं० पु०) छावनी का बाज़ार, सदर बाज़ार।

उर्फ़—(अ०) (सं० पु०) उपनाम, आम नाम, प्रसिद्ध नाम।

उर्फ़न्—(अ०) (क्रि० वि०) उर्फ़ के अनुसार।

उर्फ़ी—(अ०) (वि०) प्रसिद्ध, मशहूर।

उर्स—(अ०) (सं० पु०) किसी महात्मा की मृत्यु-तिथि का वार्षिक उत्सव।

उल्-उल्-अज़्म—(अ०) (वि०) साहसी, हिम्मतवाला, हौसलेदार।

उल्-उल्-अज़्मी—(अ०) (सं० स्त्री०) बड़ा साहस, हौसला।

उलट-बांसी—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) अपना अपराध दूसरे के सिर मढ़ना; (२) सीधी बात को पलट देना; (३) उलटे काम, उलटी बात।

उलफ़त—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) प्रेम, प्यार, मुहब्बत, चाहत; (२) दोस्ती, मित्रता। उलफ़त करना—मुहब्बत करना। उलफ़त जताना—चाह ज़ाहिर करना।

उलमा—(अ०) (सं० पु०) विद्वान् लोग। 'आलिम' का बहुवचन।

उलवी—(अ०) (वि०) स्वर्ग से सम्बन्ध रखने वाला, आकाशीय।

उलुग़—(तु०) (सं० पु०) महा पुरुष, बड़ा बुज़ुर्ग।

उलुश—(तु०) (सं० पु०) बचा हुआ खाना, झूठन, (प्रसाद लगा हुआ)।

उलू—(अ०) (सं० पु०) बुलंदी, उच्चता।

उलूक़—(अ०) (सं० पु०) गर्भ रहना, हमल रहना।

उलूफ़ा—(अ०) (सं० पु०) रोज़ीना, ख़ुराक, रोज़ का ख़र्च।

उलूम—(अ०) (सं० पु०) विद्याएँ। 'इल्म' का बहुवचन।

उल्मा—(अ०) (सं० पु०) आलिम का बहुवचन।

उशगुला—(अ०) (सं० पु०) झगड़ा, फ़िसाद।

उशबा—(अ०) (सं० पु०) एक बूटी जो दवा के काम आती है।

उशर—(अ०) (वि०) दशवाँ भाग, दसवाँ हिस्सा।

उश्तुर—(फ़ा०) (सं० पु०) ऊँट।

उश्शाक़—(अ०) (सं० पु०) 'आशिक़' का बहुवचन। (१) प्रेमी लोग, (२) एक राग का नाम।

उसफ़ोर—(अ०) (सं० स्त्री०) चिड़िया।

उसलूब—(अ०) (सं० पु०) ढंग, तरीक़ा। ख़ुश-उसलूब—जिसके ढंग अच्छे हों।

उसारा—(अ०) (सं० पु०) निचोड़ा हुआ पानी, रस, शीरा।

उसूल—(अ०) सिद्धान्त, नियम, क़ायदे, क़ानून।

उस्तख़्वाँ—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) हड्डी, अस्थि।

उस्तरा—(फ़ा०) (सं० पु०) छुरा, हजामत बनाने का औज़ार।

उस्तवार—(फ़ा०) (वि०) (१) पक्का, दृढ़, मज़बूत, पाय-दार; (२) सम-तल, हमवार; (३) सीधा।

उस्तवारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) दृढ़ता, मज़बूती, पाये-दारी; (२) हमवारी, सीधापन।

उस्ताद—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) गुरु, शिक्षक; (२) चालाक, धूर्त, अय्यार।

उस्तादी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) गुरुआई; (२) चातुर्य्य, चतुरता; (३) चालाकी, धूर्तता।

उस्तानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१ शिक्षका; उस्ताद की बीबी।

उस्तुरलाब—(यू०) (सं० स्त्री०) नक्षत्र-यंत्र।

उस्र—(अ०) (सं० पु०) तंगी, संकीर्णता।

उस्रत—(अ०) (सं० स्त्री०) तंगी, कठिनता, विरोध, मुक़ाबिला।

उस्लूब—(अ०) (सं० पु०) राह, सूरत, तौर, तर्ज़, तरीक़ा।

ऊ

ऊद—(अ०) (सं० पु०) अगर नामक लकड़ी जिसका धुआँ ख़ुशबू दार होता है।

ऊद-ग़रक़ी—(अ०) (सं० पु०) (१) पानी में डूबजाने वाला अगर; (२) एक क़िस्म का बाजा।

ऊद-सोज़—(अ०) (सं० पु०) वह पात्र जिसमें रखकर सुगंधि के लिए ऊद या अगर जलाते हैं।

ऊदा—(फ़ा०) (वि०) ऊद के रंग का, गहरे लाल रंग का।

ऊदी—(अ०) (वि०) ऊद से सम्बन्धित।

ए

एतक़ाद—(अ०) (सं० पु०) पक्का यक़ीन, अक़ीदा, पूर्ण विश्वास।

एतक़ाफ़—(अ०) (सं० पु०) उपासना के लिए एकान्त-वास करना; इबादत के लिए संसार छोड़ कर गोशा-नशीनी इख़्तयार करना।

एतदाल—(अ०) (सं० पु०) देखो—'ऐतदाल'।

एतना—(अ०) (सं० स्त्री०) परवा, सहानुभूति, हमदर्दी।

एतनाई—(अ०) (सं० स्त्री०) सहानुभूति, समवेदना, दया।

एतबार—(अ०) (सं० पु०) देखो—'ऐतबार'।

एतमाद—(अ०) (सं० पु०) विश्वास, भरोसा, यक़ीन, साख।

एतराज़—(अ०) (सं० पु०) (१) सन्देह, शंका, शक; (२) आपत्ति, उज्र, करना।

एतराफ़—(अ०, (सं० पु०) मान लेना, तसलीम करना।

एलची—(तु०) (सं० पु०) राजदूत, क़ासिद, सन्देश-वाहक, पैग़ाम-वर।

एलची-गीरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) राजदूत का काम या पद; सन्देश ले जाना।

एवज़—(अ०) (सं० पु०) (१) बदला, प्रतिकार, मुआवज़ा; (२) जो किसी की जगह हो, बजाय। एवज़-मुआवज़ा—अदला-बदला।

एवज़ी—(अ०) (वि०) स्थानापन्न, किसी की जगह अस्थायी रूप से काम करने वाला।

एहतज़ाज़—(अ०) (सं० पु०) आनन्द पाना, मज़ा उठाना।

एहतज़ार—(अ०) (सं० पु०) मौत आना, मरना।

एहतमाम—(अ०) (सं० पु०) (१) प्रबंध, व्यवस्था, इन्तज़ाम; (२) देख-रेख, निरीक्षण; ३) प्रयत्न, उद्योग, कोशिश; (४) अधिकार-क्षेत्र, शासन, राज्य।

एहतमाल—(अ०) (सं० पु०) (१) शक, आशंका, गुमान; (२) भय, अन्देशा; (३) बरदाश्त करना।

एहतराज़—(अ०) (सं० पु०) बचना, परहेज़ करना, दूर रहना, किनारा-कशी।

एहतराम—(अ०) (सं० पु०) आदर, सम्मान, इज़्ज़त, तौक़ीर।

एहतलाम—(अ०) (सं० पु०) बद-ख़्वाबी, स्वप्न में अपवित्र होना।

एहतशाम—(अ०) (सं० पु०) प्रतिष्ठा, वैभव, विभूति, शान-शौकत।

एहतसाब—(अ०) (सं० पु०) (१) हिसाब लगाना, गिनती; (२) परीक्षा, जाँच, आज़मायश; (३) प्रजा की रक्षा का प्रबंध।

एहतियाज—(अ०) (सं० पु०) हाजत, ज़रूरत, ग़रज़, आवश्यकता।

एहतियात—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) सावधानी, सतर्कता, होशियारी से काम करना; (२) बचाव, रक्षा, हिफ़ाज़त; (३) दूर-दर्शिता, दूर-अन्देशी; (४) परहेज़ करना, बुरे काम से बचना, संयम।

एहतियातन्—(अ०) (क्रि० वि०) सावधानी की दृष्टि से।

एहमाल—(अ०) (सं० पु०) उपेक्षा करना, ध्यान न देना, उदासीनता।

एहमाली—(अ०) (वि०) (१) निकम्मा, सुस्त; (२) उदासीन, ध्यान न देनेवाला।

एहसान—(अ०) (सं० पु०) (१) उपकार, भलाई, नेकी; (२) कृतज्ञता।

एहसान-फ़रामोश—(अ०) (सं० पु०) कृतघ्न, ना-शुकरा, अहसान को भूल जाने वाला।

एहसान-फ़रामोशी—(अ०) (सं० स्त्री०) कृतघ्नता।

एहसान-मन्द—(अ०) (वि०) कृतज्ञ, शुक्र-गुज़ार।

एहसास—(अ०) (सं० पु०) किसी ज्ञानेन्द्रिय से मालूम करना, अनुभव करना।

ऐ

ऐज़न्—(अ०) (वि०) वही, जैसा ऊपर है वैसा ही।

ऐज़ाज़—(अ०) (सं० पु०) (१) चमत्कार, करिश्मा, करामात; (२) आदर, सम्मान, प्रतिष्ठा, रुतबा।

ऐतदाल—(अ०) (सं० पु०) बीच की रास होना, सम-रस होना, न गर्म और न तर होना, समशीतोष्ण होना।

ऐतबार—(अ०) (सं० पु०) (१) विश्वास, यक़ीन; (२) भरोसा, साख; (३) लिहाज़, नज़र।

ऐतबारी—(अ०) (वि०) विश्वसनीय, भरोसे के लायक़।

ऐतसार—(अ०) (सं० पु०) औरों का अपने ऊपर प्राधान्य समझना।

ऐदाद—(अ०) (सं० स्त्री०) संख्याएँ। 'अदद' का बहुवचन।

ऐन—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) आँख, नेत्र; (२) पानी का चश्मा; (३) सरदार; (४) तत्व, हक़ीक़त, जौहर, तथ्य; (५) एक ही मा बाप का भाई, सगा। (वि०)—ठीक, ख़ास, असली, बिलकुल।

ऐन-उल्-माल—(अ०) (सं० पु०) (१) पूँजी, मूल-धन; (२) मालगुज़ारी; (३) बचत, असल आमदनी।

ऐनक—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) चश्मा; (२) शराब।

ऐन-ग़ैन—(अ०) (वि०) एक सी सूरत के, हम-शक्ल।

ऐन-मैन—(वि०) हू बहू, बिलकुल एक से।

ऐनी—(अ०) (वि०) (१) देखी हुई; (२) सगा, एक माँ बाप से।

ऐब—(अ०) (सं० पु०) दोष, अवगुण, नुक्स, बुराई, ख़राबी। ऐब ओ सवाब—बुराई-भलाई। कहा०—ऐब करने को हुनर चाहिये—चतुरता से दोष करने में कोई बुरा नहीं कहता। ऐब उछालना—प्रसिद्ध करने के लिए ऐब का वर्णन करना। ऐब करना—हराम करना, व्यभिचार करना। ऐब जानना—बुरा समझना ऐब ढाँकना—ऐब छुपाना। ऐब थुप जाना—ऐब लग जाना। ऐब श्खा-नना—(औ०) भेद खोलना। ऐब लाना—शरारत करने लगना। ऐब सर पर आईना होना—ऐब प्रकट हो जाना।

ऐबक—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) प्यारा, प्रिय; (२) दास, दूत।

ऐब-गीरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ऐब निकालना, दोष ढूंढना।

ऐब-गो—(अ०) (वि०) दोष कहने वाला, निन्दा करने वाला।

ऐब-गोई—(अ०) (सं० स्त्री०) ऐब बयान करना, निंदा करना।

ऐब-चीनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ऐब निकालना, दोष ढूंढना।

ऐब-जो—(फ़ा०) (वि०) ऐब ढूंढने वाला, छिद्रान्वेषी, नुक्ताचीं।

ऐब-जोई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ऐब निकालना, दोष ढूंढना।

ऐब-तराश—(फ़ा०) (वि०) ऐब ढूंढने वाला।

ऐब-दार—(फ़ा०) (वि०) (१) जिसमें कुछ ऐब हो; (२) शरीर।

ऐब-पोश—(फ़ा०) (सं० पु०) ऐब छिपाने वाला।

ऐब-पोशी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ऐब छिपाना, दोष ढांकना।

ऐब-बीनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ऐब देखना, दोष ढूंढना।

ऐबी—(फ़ा०) (वि०) (१) ऐब-दार, ऐब रखने वाला, जिसमें बुराई हो; (२) शरीर, बद-ज़ात, नाक़िस।

ऐमाल—(अ०) (सं० पु०) कर्म, कृत्य। 'अमल' का बहुवचन।

ऐमाल-नामा—(अ०) (सं० पु०) भले-बुरे कामों की सूची, वह काग़ज़ जिसमें लोगों के भले-बुरे काम दर्ज किये जायं।

ऐय्यार—(अ०) (सं० पु०) बड़ा चालाक, बड़ा धूर्त, जो भेष बदल बदल कर लोगों को ठगे।

ऐय्यारी—(अ०) (सं० स्त्री०) धूर्तता, चालाकी, कपट।

ऐय्याश—(अ०) (सं० पु०) कामुक, व्यभिचारी, बद-कार।

ऐय्याशी—(अ०) (सं० स्त्री०) व्यभिचार, कामुकता, बदचलनी।

ऐरा—(अ०) (सं० पु०) अदंब, बीच में डालना।

ऐराफ़—(अ०) (सं० पु०) स्वर्ग और नरक के बीच का स्थान (मुसलमानों के अनुसार)

ऐराब—(अ०) (सं० पु०) (१) अरब के बद्दू लोग, देहाती; (२) अरबी लिपि के चिह्न या संकेत, जो मात्राओं का काम देते हैं।

ऐलान—(अ०) (सं० पु०) (१) विज्ञापन, ज़ाहिर करना; (२) राजाज्ञा, घोषणा, मुनादी।

ऐलाम—(अ०) (सं० पु०) घोषणा।

ऐवान—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सहायक, मददगार; (२) महल, राज-भवन।

ऐश—(अ०) (सं० पु०) (१) भोग-विलास, आमोद-प्रमोद; (२) आराम, आसायश, ख़ुशी, चैन। ऐश-ओ-इशरत—भोग-विलास। ऐश का बन्दा—ऐय्याश, शरीर-सेवी। ऐश उड़ाना—मज़े उड़ाना, आनन्द लूटना। ऐश करना—ख़ुशी और चैन करना।

ऐश-गाह, ऐश-मंज़िल—(अ०) (सं० स्त्री०) ऐश की जगह, विलास-भवन।

ऐसाब—(अ०) (सं० पु०) शरीर के रग-पट्ठे।

ऐसार—(अ०) (सं० पु०) धनाढ्यता, संपन्नता।

ओ

ओद—(अ०) (सं० पु०) लौटना, फिरना। ओद करना—लौट आना, फिर आ जाना।

ओहदा—(अ०) (सं० पु०) पद, मर्तबा, मनसब। ओहदे से बाहर आना—किसी काम की ज़िम्मेदारी को पूरा करके उससे मुक्त होना।

ओहदे-दार—(अ०) (सं० पु०) किसी अच्छे पद पर प्रतिष्ठित, ऊँचा अफ़सर, कर्मचारी।

औ

औक़ात—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) समय, वक्त; (२) निर्वाह, जीविका; (३) हैसियत, बिसात, सामर्थ्य; (४) ज़िंदगी, हालत। ('वक्त' का बहुवचन)

औक़ात-बसरी—(अ०) (सं० स्त्री०) गुज़र-बसर; ज़िंदगी के दिन काटना।

औक़ाफ़—(अ०) (सं० पु०) 'वक़्फ़' का बहुवचन।

औज—(अ०) (सं० पु०) (१) बुलंदी, उच्चता; (२) उच्च स्थान, मर्तबा, उन्नति; (३) शीर्ष-बिन्दु । औज मौज—धूम-धाम, शान-शौकत ।

औज़ार—(अ०) (सं० पु०) हथियार, कारीगरों के यंत्र ।

औबाश—(अ०) (सं० पु०) बदचलन, लुच्चा, आवारा-मिज़ाज ।

औबाशी—(अ०) (सं० स्त्री०) लुच्चापन, शोहदे-पन, आवारगी ।

औरंग—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) राज-सिंहासन, तख़्त; (२) बुद्धि, समझ; (३) छल,कपट; (४) दीपक; (५) एक फूल का नाम ।

औरंगज़ेब—(फ़ा०) (सं० पु०) राज-सिंहासन की शोभा बढ़ाने वाला ।

औरत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) स्त्री, महिला; (२) पत्नी, जोरू ।

औराक़—(अ०) (सं० पु०) (१) काग़ज के परत, सफ़े; (२) पेड़ के पत्ते । ('वर्क़' का बहुवचन)

औला—(अ०) (वि०) श्रेष्ठ, सबसे बढ़कर ।

औलाद—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) संतान; (२) वंश, नस्ल ।

औलिया—(अ०) (सं० पु०) (१) सन्त, महात्मा । 'वली' का बहुवचन । (२) भोले-भाले और सीधे-सादे लोग ।

औसत—(अ०) (सं० पु०) बीचका, दर-मियानी, सामान्य ।

औसान—(अ०) (सं० पु०) (१) शक्ति; (२) समझ, बुद्धि; (३) होश-हवास । औसान ख़ता होना—होश-हवास ठिकाने न रहना ।

औसाफ़—(अ०) (सं० पु०) ('वस्फ़ का बहुवचन) (१) गुण, (२) जौहर, ख़ासियत; (३) तारीफ़ें; (४) हालात; (५) आदतें, शील-स्वभाव ।

क

कंगुरा-कंगूरा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) चोटी, शिखर; (२) बुर्ज, क़िले की दीवार में बने हुए ऊँचे स्थान जहाँ से बंदूक़ चलाते हैं ।

कंचन—(हि०) (सं० पु०) (१) सोना, स्वर्ण; (२) एक जाति जिसमें स्त्रियां वेश्या-वृत्ति करती हैं ।

कंचनी—(हि०) (सं० स्त्री०) नाचनेवाली स्त्री ।

कंथा—(हि०) (सं० पु०) पति, शौहर ।

कअब—(अ०) (सं० पु०) (१) घन, किसी संख्या को उसीसे तीन बार गुणा करने का गुणन-फल; (२) लंबाई, चौड़ाई और उँचाई का विस्तार ।

कअबा—(अ०) (सं० पु०) देखो—'काबा' ।

क़अर—(अ०) (सं० पु०) (१) बड़ा गड्ढा; (२) कूँए या नदी की गहराई ।

क़ऊद—(अ०) (सं० पु०) बैठना; नमाज़ में बैठना ।

कचकोल—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) देखो—'कज-कोल' ।

कज—(फ़ा०) (सं० पु०) टेढ़ा-पन, वक्रता । (वि०)—टेढ़ा, वक्र ।

कज-अदा—(फ़ा०) (वि०) बे-मुरव्वत, शील रहित ।

कज-अदाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बे-मुरव्वती, बेवफ़ाई ।

कजक—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) फ़ीलबानों का अंकुश ।

कशकोल—(फ़ा०) (पु० स्त्री०) (१) भीख की झोली, फ़क़ीर का ठीकरा, (२) दूसरों की अच्छी उक्तियों के संग्रह की पुस्तक ।

कज-ख़ुल्क़—(फ़ा०) (वि०) अक्खड़, बुरे स्वभाव का ।

कज-नज़र—(फ़ा०) (वि०) टेढ़ी नज़र वाला ।

कज-नज़री—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) तिरछी निगाह से देखना।

कज-निहाद—(फ़ा०) (वि०) बुरे स्वभाव का, दुष्ट-प्रकृति।

क़ज़्फ़—(अ०) (सं० पु०) (१) गाली देना; (२) व्यभिचार का आरोप लगाना, ज़िना की तुहमत लगाना।

कज-फ़ह्म—(फ़ा०) (वि०) उलटी समझ का।

कज-फ़ह्मी—(फ़ा०) (सं०स्त्री०) नासमझी, ग़लत-फ़हमी।

कज-बहस—(फ़ा०) (सं० पु०) उलटी-सीधी बहस करने वाला। (सं० स्त्री०)—हुज्जत, व्यर्थ की बहस।

कज-बाज़—(फ़ा०) (वि०) फ़िसादी, बखेड़िया।

कज-मज—(फ़ा०) (वि०) वह जो अच्छी तरह बात न कर सके।

कज-मिज़ाज—(फ़ा०) (वि०) बद-ख़ु, बुरे स्वभाव का।

कज-रफ़्तार—(फ़ा०) (वि०) टेढ़ा चलने वाला।

कज-रफ़्तारी, कज-रवी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) टेढ़ी चाल।

कज-राय—(फ़ा०) (वि०) जिसकी राय टेढ़ी और ग़लत हो।

कज-रौ—(फ़ा०) (वि०) टेढ़ी चाल चलने वाला।

कज-हुज्जती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बेहूदा तकरार।

क़ज़लबाश—(तु०) (सं० पु०) देखो—'क़ज़िल-बाश'।

क़ज़ा—(अ०) सं० स्त्री०) (१) वह इबादत (पूजा, नमाज़) जिसका समय निकल गया हो; क़ज़ा की नमाज़; (२) मौत; (३) भाग्य, क़िस्मत; (४) नाग़ा, अनाध्याय।

क़ज़ा-ए-इलाही—(अ०) (सं० स्त्री०) अपनी मौत मरना, स्वाभाविक मृत्यु।

क़ज़ा-ओ-क़द्र—(अ०) (सं० स्त्री०) ख़ुदा की मर्ज़ी या रज़ा।

क़ज़ा-ए-नागहानी—(अ०) (सं० स्त्री०) अचानक मरना, आकस्मिक मृत्यु।

क़ज़ा-ए-हाजत—(अ०) (सं० स्त्री०) पाख़ाना फिरना, टट्टी जाना।

क़ज़ा-कार—(अ०) (क्रि० वि०) अकस्मात्, अचानक, इत्तफ़ाक़ से।

क़ज़ात—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) क़ाज़ी का काम या पद; (२) विवाह; (३) झगड़ा, बखेड़ा।

क़ज़ादम—(फ़ा०) (वि०) तेज़ (तलवार)।

क़ज़ाया—(अ०) (सं० पु०) (१) वाक्य; (२) झगड़े, बखेड़े; (३) मतलब; (४) हुक्म, आज्ञाएँ; (५) ख़बरें, समाचार। (क़ज़िया का बहुवचन)।

क़ज़ारा—(फ़ा०) (क्रि० वि०) इत्तफ़ाक़ से, अचानक, यकायक।

कजाघा—(फ़ा०) (सं० पु०) ऊँट की काठी।

क़ज़िया—(अ०) (सं० पु०) (१) झगड़ा, बखेड़ा, फ़िसाद; (२) मामला, मुक़द्दमा। क़ज़िया उठाना—झगड़ा खड़ा करना। क़ज़िया करना—झगड़ा करना। क़ज़िया कराना—दूसरे को लड़वाना। क़ज़िया चुकाना—झगड़ा पाक करना। क़ज़िया मिटाना—झगड़ा मिटाना।

क़ज़िल-बाश—(तु०) (सं० पु०) (१) मुग़लों की एक जाति जिनका पेशा सिपहगरी था; (२) ईरान और अफ़ग़ानिस्तान के शीआ लोग; (३) सैनिक।

कजी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) टेढ़ा-पन, वक्रता, ख़मीदगी।

क़ज़ीब—(अ०) (सं० पु०) (१) पेड़ की शाख़, वृक्ष की शाखा; (२) हाथ की छड़ी, कोड़ा; तलवार; (३) पुरुष की इन्द्रिय, लिंग।

क़ज़्ज़ाक़—(तु०) (सं० पु०) डाकू, रह-ज़न, लुटेरा।

क़ज़्ज़ाक़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) लूट-मार। (वि०)—लुटेरों का-सा।

क़ज़्ज़ाक़े-अजल—(तु०) (सं० पु०) यम-दूत।

क़ज़्ज़ाब—(अ०) (वि०) बड़ा झूठा।

क़त—(अ०) (सं० पु०) (१) क़लम की नोक काटना, काटना; (२) क़लम की नोक।

क़तऽ(क़ता)—(अ०) (सं०स्त्री०) (१) टुकड़ा, खंड; (२) काटना। क़ता बुरीद्—काट-छाँट, बनावट।

क़तअन्—(अ०) (अव्यय) हरगिज़, कदापि।

क़तई—(अ०) (वि०) (१) आख़ीर, अन्तिम, (२) यक़ीनी, निस्सन्देह; (३) बिलकुल, कामिल।

क़तई-गज़—(अ०) (सं० पु०) दर्ज़ियों का गज़ जिससे कपड़ा नाप कर काटते हैं।

क़त-गीर, क़त-ज़न—(फ़ा०) (सं० पु०) वह लकड़ी या हाथी-दांत की चपटी चीज़ जिस पर क़लम की नोक रख कर काटते हैं।

कतबा—(अ०) (सं० पु०) लेख।

क़तरा—(अ०) (सं० पु०) (१) पानी की बूँद, बूँद; (२) टुकड़ा, खंड; (३) थोड़ा-सा तरल पदार्थ। (कहा०)—क़तरा क़तरा दरिया हो जाता है—थोड़ा थोड़ा कर के बहुत हो जाता है।

क़तरा-अफ़शाँ—(फ़ा०) (वि०) क़तरा छिड़कने वाला।

क़तरा-ज़न—(फ़ा०) (वि०) दौड़नेवाला, तेज़।

क़तला—(अ०) (सं० पु०) (१) टुकड़ा, खंड, (२) फाँक, काश; (३) गोल तराशा हुआ टुकड़ा।

क़ता—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) तराश, ब्योंत; (२) अंदाज़, ढंग, तौर-तरीक़; (३) वज़ा। (देखो—क़तऽ) क़ता-करना—(१) काटना, ब्योंतना; (२) छोड़ना; (३) बीच से बात काटना, रद्द करना। क़ता ओ बुरीद्—काट-छांट, तराश-ख़राश।

क़ता-कलाम—(अ०) (सं० पु०) बात काटना, बीच में बोलने लगना।

क़ता-ताल्लुक़—(अ०) (सं० पु०) कुछ सम्बन्ध न रखना, छोड़ना, मतलब न रखना।

क़ता-दार—(अ०) (वि०) जिसकी बनावट अच्छी हो।

क़ता-नज़र—(अ०) (क्रि० वि०) इस पर भी, इसके सिवा, ताहम। क़ता-नज़र करना—किसी चीज़ का ख़याल छोड़ देना।

क़ता-रहम—(फ़ा०) (सं० पु०) रिश्तेदारों से सम्बन्ध-विच्छेद करना।

क़ता-राह—(फ़ा०) (सं० पु०) राह तै करना।

क़ता-स.ख़ुन—(फ़ा०) (सं० पु०) बात काटना।

कतान—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) अलसी; (२) एक प्रकार का महीन कपड़ा।

क़तार—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) तरतीब, सिलसिला, श्रेणी, क्रम; (२) (उ०) शुमार, संख्या।

कतारा—(फ़ा०) (सं० पु०) कटारी।

कतीरा—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार का गोंद।

क़तील—(अ०) (वि०) शहीद, जो मार डाला गया हो।

क़त्तामा—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) फ़ाहशा स्त्री, कुलटा, छिनाल; (२) बहुत अधिक कामातुर, अत्यन्त विलास-प्रिय।

क़त्ताल—(अ०) (वि०) बहुत क़त्ल करने वाला।

कत्म—(अ०) (सं० पु०) परदा, हिजाब, ओट।

क़त्ल—(अ०) (सं० पु०) ख़ून करना, हत्या करना, हत्या, जान से मार डालना।

क़त्ल-गाह—(अ०) (सं० स्त्री०) क़त्ल करने की जगह, बध करने का स्थान।

क़त्ले-अम्द—(अ०) (सं० पु०) जान-बूझ कर क़त्ल करना।

क़त्ले-आम—(अ०) (सं० पु०) सब को मार डालना; सर्व-संहार।

कद—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) कोशिश, प्रयत्न; (२) हठ, ज़िद। कद ओ काविश—छानबीन, कोशिश।

क़द—(अ०) (सं० पु०) डील, शरीर की लंबाई। क़द ओ क़ामत—डील, जसामत। क़द-कशी करना—इतराना, अकड़ना।

क़द-आवर—(अ०) (वि०) अच्छे बदन का, लंबे-चौड़े जिस्म का।

कद ख़ुदा—(फ़ा०) (सं० पु०) घर का मालिक, गृह-स्वामी, दूल्हा, वर।

कद-ख़ुदाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) विवाह, शादी।

क़द-ग़न—(तु०) (सं० स्त्री०) रोक-टोक, मनाही।

क़द-दार—(अ०) (वि०) क़द-आवर, अच्छे बदन का।

क़दम—(अ०) (सं० पु०) (१) पैर, पाँव; (२) दोनों पाँव का फ़ासला; निशान; (३) आना; (४) दम, उपस्थिति; (५) घोड़े की एक चाल जिसमें थकान नहीं होती। क़दम उठाकर—तेज़ तेज़, जल्दी जल्दी। क़दम आना—तशरीफ़ लाना। क़दम आगे न बढ़ना—आगे बढ़ने की हिम्मत न होना। क़दम आगे रहना—आगे चलना। क़दम उठाये चलना—जल्दी जल्दी चलना। क़दम खोटा होना—किसी का आना अशुभ होना। क़दम गड़ जाना—किसी जगह जम जाना। क़दम जमाना—जम कर रहना। क़दम ज़मीन पर न रखना—बहुत घमंड करना। क़दम फूंक के रखना—सावधानी करना। क़दम बाहर निकालना—किसी हद से बाहर जाना।

क़दमचा—(अ०) (सं० पु०) खुड्डी का पाया जिस पर पैर रख कर बैठते हैं।

क़दम-ब-क़दम—(अ०) (वि०) पैरवी करने वाला, पीछे चलने वाला।

क़दम-बाज़—(अ०) (वि०) तेज़-रफ़्तार, ख़ुश-रफ़्तार।

क़दम-बोस—(अ०) (वि०) आदर-भाव से पाँव चूमने वाला; बड़ों की सेवा में उपस्थित होने वाला।

क़दम-बोसी—(अ०) (सं० स्त्री०) बड़ों के पैर चूमना, बुज़ुर्गों की ख़िदमत में हाज़िर होना।

क़दम-रसूल—(अ०) (सं० पु०) मोहम्मद साहब के पद-चिह्न।

क़दम-शरीफ़—(अ०) (सं० पु०) शुभ चरण; मोहम्मद साहब के क़दम।

क़दर—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) मात्रा, परिमाण, मिक़दार; (२) हुक्म, ईश्वरेच्छा; (३) मान, प्रतिष्ठा। देखो—क़द्र।

क़दर-दाँ—(अ०) (वि०) गुण-ग्राहक।

क़दर-दानी—(अ०) (सं० स्त्री०) गुण-ग्राहकता, क़दर करना।

क़दरशनास—(अ०) (वि०) क़दर जानने वाला, गुण-ग्राहक।

क़दरे—(अ०) (वि०) थोड़ा-सा, किसी क़दर, ज़रा-सा।

क़दरे-क़लील—(अ०) (वि०) थोड़ा-सा, अल्प।

क़दह—(अ०) (सं० पु०) प्याला, बड़ा प्याला।

क़दह-नोश—(फ़ा०) (वि०) शराब-ख़ोर, शराबी, मद्यप।

कदा—(फ़ा०) (सं० पु०) ख़ाना, मकान, घर (यौगिक शब्दों के अन्त में)।

क़दामत—(अ०) (सं० स्त्री०) क़दीम होना, पुराना-पन, प्राचीनता।

क़दीम—(अ०) (वि०) (१) हमेशा का, अनादि; (२) अगले ज़माने का, प्राचीन; (३) पैतृक, मौरूसी, बाप-दादा के समय का।

क़दीमी—(अ०) (वि०) पुराना, प्राचीन।

क़दीर- (अ०) (वि०) ईश्वर का नाम (साहबे-क़ुदरत)।

कदू—(फ़ा०) (सं० पु०) कद्दू, एक तरकारी का नाम।

कदूरत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) गंदला-पन, मैलापन, गंदापन; (२) रंजिश, मलाल, मनो-मालिन्य, मन-मुटाव। कदूरत रखना—कपट रखना।

क़दे-आज़ाद—(फ़ा०) (सं० पु०) सीधा क़द।

क़दे-आदम—(अ०) (वि०) आदमी के क़द के बराबर, मनुष्य के बराबर ऊँचा। क़दे-आदम ताज़ीम को उठना—सीधा खड़ा होकर ताज़ीम देना।

क़द्दावर—(वि०) देखो-'क़द-आवर'।

कद्दू—(फ़ा०) (सं० पु०) देखो-'कदू'।

कद्दू-कश—(फ़ा०) (सं० पु०) कद्दू के महीन टुकड़े करने का यंत्र।

कद्दू-दाना—(फ़ा०) (सं० पु०) पेट के भीतर हो जाने वाले छोटे छोटे सफ़ेद कीड़े जो पाख़ाने के साथ निकलते हैं।

क़द्र—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) इज़्ज़त, मान, प्रतिष्ठा, पद; (२) अंदाज़, मात्रा, मिक़दार; (३) बराबर, यकसाँ, मिस्ल। (कहा०) क़द्रे जौहर शाह दानद या बदानद जौहरी—जवाहिर की क़द्र हर आदमी नहीं जानता।

क़द्र-ओ-मनज़लत—(स्त्री०) प्रतिष्ठा, इज़्ज़त।

क़द्र-दाँ—(अ०) (वि०) क़द्र जानने वाला, मुरब्बी, सरपरस्त।

क़द्र-दानी—(अ०) (सं० स्त्री०) सरपरस्ती।

क़द्रे—अ०) (वि०) थोड़ा-सा, अल्प।

कन—(फ़ा०) (वि०) खोदने वाला। (यौगिक शब्दों के अन्त में)।

कनआन—(अ०) (सं० पु०) (१) नूह के पुत्र का नाम जो काफ़िर था; (२) एक प्राचीन नगर का नाम।

कनाअत—(अ०) (सं० स्त्री०) सब्र, संतोष थोड़े पर राज़ी होना।

क़नात—(अ०) (सं० स्त्री०) मोटे कपड़े की दीवार या पर्दा जो ख़ेमे के चारों तरफ़ लगाते हैं; कपड़े की बनी ओट।

कनाया—(अ०) (सं० पु०) देखो-'किनाया'

कनार—(फ़ा०) (सं० स्त्री०, (१) बग़ल; (२) बग़ल में सोना; (३) (उ०) (पु०) घोड़े का ज़ुकाम; (४) हाशिया, किनारा, गोट। कनार गरम होना—हम-बिस्तरी होना।

कनारा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) नदी का तट; (२) कोना, गोशा; (३) हद, सीमा, सिरा; (४) अंत; (५) जुदाई; (६) गोट, हाशिया, फ़ीता, कोर। कनारा करना—बचना, अलहदा होना।

कनारा-कशी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) जुदाई, बिछोह, अलहदगी।

क़नावीज़—(तु०) (सं० स्त्री०) एक क़िस्म का चमकदार मोटा रेशमी कपड़ा।

कनीज़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) लौंडी, दासी, परिचारिका।

कनोड़ा—(हि०) (वि०) (पु०) (१) शर-मिंदा, लज्जित; बाधित, अहसान-मंद, (२) ज़लील, रुसवा; (३) ऐबी, ऐब-दार। कनोड़ा बनना—शरमिन्दा होना।

क़न्द—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) शकर, चीनी; (२) मिसरी, जमी हुई चीनी। (सं० स्त्री०) (१) चीनी; (२) एक क़िस्म की दानेदार मिठाई; (३) सुर्ख़ पक्के रंग का कपड़ा। (वि०) बहुत मीठा, मिसरी के समान।

कन्दन—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) खोदना; (२) खोद कर बेल-बूटे बनाना,

कन्दा—(फ़ा० (१) खुदा हुआ, खोदकर नक़्क़ाशी किया हुआ; (२) छीला हुआ।

कन्दा-कार, कन्दा-गर—(फ़ा०) (वि०) खोदकर बेल-बूटे बनानेवाला।

क़न्दील—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) एक प्रकार का शीशे का बर्तन जिसमें बत्ती जलाकर रखते हैं; (२) एक क़िस्म का फ़ानूस जिसमें चिराग़ जला कर लटकाते हैं; (३) (उ० काग़ज़ या अबरक से मढ़ा हुआ फ़ानूस।

कन्नास—(अ०) (सं० पु०) महतर, ख़ाक-रोब, भंगी, फाँसी देनेवाला।

कफ़—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) झाग, फेन; (२) बलग़म, श्लेष्मा; (३) हाथ, हथेली; (४) तलवा; (५) लुआब, थूक।

कफ़क—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) हथेली; (२) तलवा।

कफ़-गीर—(फ़ा०) (सं० पु०) कलछी।

कफ़चा—(फ़ा०) (सं० पु०) साँप का फन।

कफ़-तार—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बिज्जू।

कफ़न—(अ०) (सं० पु०) वह कपड़ा जिसमें मुरदे को लपेटते हैं। कफ़न फाड़ के—बेताब होकर। कफ़न को कौड़ी न रहना—निहायत ग़रीब होना। कफ़न फाड़के निकल भागना—बेताब होकर निकल भागना, मरने को तैयार होना। कफ़न मैला न होना—मरे हुए बहुत दिन न होना। कफ़न सर से बाँधना—मरने को तैयार होकर लड़ाई पर जाना; सर हथेली पर रखना।

कफ़न-खसोट, कफ़न-चोर—(उ०) (सं० पु०) वह चोर जो क़ब्र खोद कर मुरदे का कफ़न चुराता है।

कफ़नी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) एक क़िस्म का फ़क़ीरों का जामा; (२) बे-आस्तीन का कुरता जो नये बच्चों को पहनाते हैं; (३) बे-आस्तीन का कुरता जो मुरदे के गले में पहनाते हैं।

क़फ़स—(अ०) (सं० पु०) (१) जाल, फंदा, पिंजरा; (२) शरीर, जिस्म, देह; (३) (औ०) क़ैद-ख़ाना।

कफ़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) मेहनत, रंज, परिश्रम। जफ़ा-कफ़ा—मुश्किल से, दिक़्क़त से।

क़फ़ा—(अ०) (सं० स्त्री०) पीछे।

कफ़ाफ़—(अ०) (सं० पु०) अन्दाज़ा, रोज़ का ख़र्च, रोज़ी, निर्वाह।

कफ़ारा—(अ०) (सं० पु०) देखो—'कफ़्फ़ारा'।

कफ़ालत—(अ०) (सं० स्त्री०) ज़मानत, ज़िम्मेदारी, बार या बोझ उठाना।

कफ़ील—(अ०) (सं० पु०) ज़ामिन, ज़िम्मेदार।

कफ़े-पाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) जूता।

कफ़्फ़ारा—(अ०) (सं० पु०) प्रायश्चित्त।

कफ़्श—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) नाल-दार जूता; (२) नालें।

कफ़्श-ख़ाना(फ़ा०) (सं० पु०) दीनता से अपने घर को कहते हैं

कफ़्श-गर कफ़्श-दोज़—(फ़ा०) (सं० पु०) मोची, जूती बनाने वाला।

कफ़्शे-बरदार—(फ़ा०) (वि०) जूते उठाने वाला, बहुत नीचे दर्जे का।

कफ़्शे पा—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) जूता।

कबक—(फ़ा०) (सं० पु०) चकोर (पक्षी)।

क़बर—(अ०) (सं० स्त्री०) देखो—'क़ब्र'।

क़बरिस्तान—(अ०) (सं० पु०) वह जगह जहाँ मुरदे गाड़े जाते हैं।

क़बल—(अ०) (वि०) पहले का। (क्रि० वि०) पहले।

क़बा—(अ०) (सं० स्त्री०) रुई-दार ढीला जामा। क़बा करना—चाक करना, टुकड़े टुकड़े करना। क़बा होना—चाक होना।

क़बाचा—(अ०) (सं० पु०) छोटी क़बा।

क़बा-दोज़—(फ़ा०) (वि०) क़बा सीने वाला।

कबाब—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) कड़ाई में तली गोश्त की गोल टिकिया; (२) सीख़ पर भुना हुआ गोश्त।

कबाब-चीनी—(फ़ा०) (सं० पु०) एक दवा का नाम।

कबाबा—(फ़ा०) (सं० पु०) एक दवा का नाम।

कबाबी—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) कबाब बनाने या बेचने वाला; (२) मांस खाने वाला। (वि०) कबाब-सम्बन्धी।

क़बायल—(अ०) (सं० पु०) (१) जमायतें, फ़िरक़े, जातियां; (२) बाल-बच्चे, घर के लोग। ('क़बीला' का बहु-वचन)।

क़बाला—(अ०) (सं० पु०) (१) मकान, ज़मीन का काग़ज़ जिससे मालिक होना साबित हो; (२) बै-नामा।

क़बाला-नवीस—(अ०) (सं० पु०) बै-नामा आदि लिखने वाला।

क़बाहत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) बुराई, नुक़्स, ऐब, त्रुटि; (२) दिक़्क़त, अड़चन।

कबीर—(अ०) (वि०) बड़ा, श्रेष्ठ, बुज़ुर्ग।

कबीरा—(अ०) (सं० पु०) बहुत बड़ा पाप।

क़बील—(अ०) (सं० पु०) क़िस्म, जाति, फ़िरक़ा।

क़बीला—(अ०) (सं० पु०) (१) एक दादा की औलाद, ख़ानदान, (२) फ़िरक़ा, गरोह, समूह; (३) (अ०) (स्त्री०) जोरू, पत्नी।

कबीसा—(अ०) (वि०) बीच में पड़ने वाला।

क़बीह—(अ०) (वि०) (१) भद्दा, बद-सूरत; (२) लज्जास्पद, शर्म के क़ाबिल।

कबूतर—(फ़ा०) (सं० पु०) एक पक्षी का नाम, कपोत।

कबूतर-ख़ाना—(फ़ा०) (सं० पु०) कबूतरों के रहने की जगह।

कबूतर-बाज़—(फ़ा०) (वि०) कबूतर पालनेवाला।

कबूद—(फ़ा०) (वि०) नीला, आसमानी।

कबूदी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) नीला-पन, निलाहट, स्याही।

क़बूर—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) पिस्तौल रखने का चमड़े का ख़ाना जो काठी में बना होता है; (२) क़ब्रें (क़ब्र का बहुवचन)।

क़बूल—(अ०) (वि०) पसंद, मंजूर, स्वीकार, अंगीकार।

क़बूलना—(अ०) (क्रि०) स्वीकार करना, मंजूर करना; तसलीम करना, इक़रार करना।

क़बूल-सूरत—(अ०) (वि०) सुन्दर, आकर्षक, ख़ूब-सूरत; हसीन।

क़बूलियत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) वह काग़ज़ जो पट्टा लेने वाला कारतकार ज़मींदार को लिखकर देता है; (२) पसंद होना, क़बूल होना; (३) दुआ क़बूल होना।

क़बूली—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) चने की दाल और चावल मिला कर बनाया हुआ पुलाव; (२) क़बूल करना, क़बूल करने की क्रिया या भाव।

क़बूले-आम—(अ०) (वि०) हर शख़्स को पसंद, सर्व-प्रिय।

कब्क, कब्के-दरी—(फ़ा०) (सं० पु०) चकोर (पक्षी)।

क़ब्ज़—(अ०) (सं० पु०) (१) मलावरोध, पाख़ाना साफ़ न होना, पेट में मल का रुकना; (२) बस, दख़ल, अधिकार,।

क़ब्ज़-उल्-वसूल—(अ०) (सं० स्त्री०) रसीद का रजिस्टर, वह रजिस्टर जिस पर तनख़्वाह वसूल करने वाले नौकरों के दस्तख़त लिये जाते हैं।

क़ब्ज़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) मूठ, दस्ता; (२) मोटे आदमी का बाज़ू; (३) किवाड़ या सन्दूक़ को जोड़ने वाला लोहे या पीतल का चौखूंटा टुकड़ा; (४) क़ाबू, अधिकार, दख़ल।

क़ब्ज़ा-दार—(अ०) (सं० पु०) एक क़िस्म का मौरूसी क़ाश्तकार।

क़ब्ज़ा-दारी—(अ०) (सं० स्त्री०) क़ब्ज़ा होने की हालत।

क़ब्ज़ियत—(अ०) (सं० स्त्री०) मलावरोध, दस्त साफ़ न होना।

क़ब्ज़े-रूह—(अ०) (सं० पु०) रूह का जिस्म से निकलना, जीव का देह से निकलना।

क़ब्र—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) वह गड्ढा जिसमें मुरदे गाड़े जाते हैं; (२) चबूतरा जो इस गढ़े पर बनाया जाता है। कहा०—क़ब्र पर क़ब्र नहीं बनती—(देह०) क़र्ज़ पर क़र्ज़ नहीं मिलता।

क़ब्रिस्तान—(फ़ा०) (सं० पु०) मुरदे गाड़ने का स्थान।

क़ब्ल—(अ०) (वि०) पहले, आगे, पेश्तर, अव्वल। कहा०—क़ब्ल अज़ मर्ग वावैला—मुसीबत या विपत्ति आने से पहले शिकायत करना।

क़बल-अज़ीं—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) इससे पहले।

कमंगर—(फ़ा०) (सं० पु०) कमान या धनुष बनाने वाला।

कमंगरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) कमान बनाने का काम; (२) हड्डी बैठाने का काम (३) चित्रकारी, मुसव्वरी।

कम—(फ़ा०) (वि०) (१) थोड़ा, अल्प, ज़रा-सा; (२) बद, बुरा; (३) छोटा, अदना। कम ओ बेश—लगभग, तख़मीनन्, तक़रीबन्।

कम-अक़्ल—(फ़ा०) (वि०) मूर्ख, अल्प-बुद्धि।

कम-अयार—(फ़ा०) (वि०) खोटा रुपया।

कम-असल—(फ़ा०) (वि०) कमीना, नालायक़, ज़लील।

कम-उम्र—(फ़ा०) (वि०) छोटा, छोटी उम्र का।

कम-औक़ात—(फ़ा०) (वि०) कम-हैसियत, बे-हैसियत।

कम-क़िस्मती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) कम-नसीबी, दुर्भाग्य।

कम-क़ीमत—(फ़ा०) (वि०) सस्ता, थोड़े मूल्य का।

कम-ख़र्च—(फ़ा०) (वि०) मितव्ययी, किफ़ायत-शआर, कंजूस। (कहा०)—कम ख़र्च बाला नशीं—वह चीज़ जो क़ीमत में कम हो और नुमायश (दिखावे) में ज़्यादा हो।

कम-ख़ाब, कम-ख़्वाब—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा जिस पर सोने-चांदी के तारों का काम बना हुआ हो।

कम-गुफ़्तार, कम-गो—(फ़ा०) (वि०) कम बोलने वाला, चुप, अल्प-भाषी।

क़मची—(तु०) (सं० स्त्री०) (१) पतली छड़ी जो झुक जाय; छड़ी, (२) टहनी, शाखा।

कम-ज़र्फ़—(फ़ा०) (वि०) (१) ओछा, कम-हौसला; (२) कमीना, सिफ़ला।

कम-ज़ात—(फ़ा०) (वि०) नीच, कमीना, नीच ज़ात का।

कम-ज़ोर—(फ़ा०) (वि०) दुर्बल, बोदा, ज़ईफ़, अशक्त।

कम-ज़ोरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) निर्बलता, नाताक़ती।

कम-तर—(फ़ा०) (वि०) बहुत कम।

कम-तरीन—(फ़ा०) (सं० पु०) ख़ाक-सार, ना-चीज़, तुच्छ सेवक।

कम-नसीब—(फ़ा०) (वि०) अभागा, बद-क़िस्मत।

कम-नसीबी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दुर्भाग्य, बद-क़िस्मती।

कम-निगाही—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बे-परवाही, बे-तवज्जही।

कमन्द—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) एक क़िस्म का फंदा, जाल; (२) रस्सी की सीढ़ी जो ऊँचे मकानों पर चढ़ने को चोर वग़ैरह लगा लेते हैं; (३) रसाई का ज़रिया, पहुँच का साधन।

कम-फ़हम—(फ़ा०) (वि०) कम-अक़्ल, कम-समझ।

कम-फ़ुरसती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) फ़ुरसत का न होना, अवकाश न मिलना।

कम-बख़्त—(फ़ा०) (वि०) अभागा, बद-क़िस्मत।

कम-बख़्ती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दुर्भाग्य, मुसीबत, शामत।

कम-मायगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बे-हैसियत होना, निर्धनता।

कम-माया—(फ़ा०) (वि०) छोटी पूँजी रखनेवाला।

कम-याब—(फ़ा०) (वि०) कम मिलने वाला, नादिर, दुर्लभ।

कमर—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) शरीर का मध्य भाग, जिस्म का दरमियानी हिस्सा; (२) काबुली कबूतर का हवा पर कला-बाज़ी खाना; (३) पोशाक का वह हिस्सा जो कमर पर रहता है; (४) पहलवानों का एक पेच। **कमर कसना**—किसी काम पर मुस्तैद होना, पक्का इरादा करना। **कमर गड़ जाना**—बहुत ही लज्जित होना। **कमर चुस्त होना**—तैयार होना। **कमर टूट जाना**—हिम्मत टूट जाना, आशा जाती रहना। **कमर तोड़ना**—हिम्मत तोड़ना, ज़ोर तोड़ना। **कमर पकड़ना**—सहारा देना। **कमर बाँधना**—चलने को तैयार होना, मुस्तैद होना, आशा रखना, भरोसा करना। **कमर बिस्तर से लगना**—तड़पना, बहुत बे-चैन होना।

क़मर—(फ़ा०) (सं० पु०) चंद्रमा, चाँद। (स्त्री०) चाँदी।

कमर-कुशाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सिपाही का अपने हथियारों को कमर से खोलना।

कमर-बन्द—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) कमर बाँधने का डुपट्टा, पटका; (२) पेटी; (३) इज़ार-बन्द।

कमर-बन्दी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) फ़ौज का हथियारों और वर्दी से लैस होना, सेना का सुसज्जित होना।

कमर-बस्ता—(फ़ा०) (वि०) आमादा, तैयार, उद्यत।

कमर-शिकस्ता—(फ़ा०) (वि०) बे यार व मददगार, बिना मित्र और सहायक।

कमरी—(फ़ा०) (सं० पु०) घोड़े के एक रोग का नाम।

क़मरी—(अ०) (वि०) चंद्रमा का, चांद्र।

कम-रू—(फ़ा०) (वि०) देखने में हक़ीर।

कम-रौ—(फ़ा०) (वि०) सुस्त-रफ़्तार, धीरे चलनेवाला।

कम-शहवत—(फ़ा०) (वि०) कमर का ढीला, सुस्त।

कम-सख़ुन—(फ़ा०) (वि०) कम बोलने वाला, चुप्पा, बे ज़बान।

कम-सख़ुनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) कम बोलना, चुप रहना, अल्प-भाषी होना।

कम-साल—(फ़ा०) (वि०) कम उम्र ।

कम-सिन—(फ़ा०) (वि०) छोटी उम्र का, कम उम्र का, अल्प-वयस्क ।

कमसिनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) छोटी उम्र का होना ।

क़मा—(अ०) (सं० पु०) तोड़ना ।

कमान—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) धनुष; (२) मेहराब; (३) तोप, बंदूक़; (४) क्रोध, ग़ुस्सा; (५) झुका हुआ, ख़मीदा; (६) लचक-दार ।

कमान-कश—(फ़ा०) (सं० पु०) कमान खींचनेवाला ।

कमान-गर—(फ़ा०) (सं० पु०) कमान बनाने वाला ।

कमान-गीर—(फ़ा०) (वि०) वह शख़्स जो तीरन्दाज़ी में कमाल रखता हो ।

कमानचा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) छोटी कमान या धनुष; (२) एक प्रकार की सारंगी; (३) मेहराबदार छत; (४) वह ग़ुलेल जिससे औरतें रुई धुनकती हैं; (५) फ़ौलाद की कमानी ।

कमान-दार—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) कमार रखनेवाला, धनुर्धर; (२) मेहराब-दार ।

कमानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) झुका हुआ और लचकदार लोहे का हलक़ा जो प्रायः बग्घियों, घड़ियों, कुरसी की गद्दी में लगाते हैं; (२) बढ़ई की वह लकड़ी जिसमें बरमा लगा कर घुमाते हैं; (३) सारंगी का गज़ ।

कमाल—(अ०) (सं० पु०) (१) पूर्णता, इन्तहाई तरक्की; (२) दक्षता, निपुणता; (३) अद्भुत काम, अनोखी बात; (४) हुनर, कारीगरी, योग्यता । **कमाल का बना हुआ**—(वि०) चाल-बाज़, निहायत होशयार, फ़रेबी ।

कमालात—(अ०) (सं० पु०) 'कमाल' का बहुवचन ।

कमालियत—(अ०) (सं० स्त्री०) पूर्णता; दक्षता ।

कमाहक़्क़हू—(अ०) (वि०) ठीक ठीक, यथेष्ट, बख़ूबी ।

कमाही—(अ०) (वि०) कामिल, पूरा ।

कमी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) घाटा, नुक़सान, हानि; (२) कसर, कोताही, न्यूनता ।

कमीन—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) शिकार की घात में छिपकर बैठना; (२) छिप कर बैठने का स्थान ।

कमीन-गाह—(अ०) (सं० स्त्री०) घात की जगह, वह स्थान जहाँ शिकारी शिकार की ताक़ में छिपकर बैठता है ।

कमीना—(फ़ा०) (वि०) ओछा, नीच, रज़ील ।

कमीना-पन—(फ़ा०) (सं० पु०) पाजीपन, नीचता, ओछापन ।

कमीज़—(अ०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार का कुरता ।

क़मीवेशी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) घटा-बढ़ी ।

कमीस—(अ०) (सं० स्त्री०) बे-कली का कुरता, एक प्रकार का कुरता ।

कमूनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक पाचक माजून का नाम ।

कम्बख़्त—(फ़ा०) (वि०) बदक़िस्मत, अभागा ।

कम्मून—(अ०) (सं० पु०) ज़ीरा ।

क़यादत—(अ०) (सं० स्त्री०) मार्ग दिखाना, रह बरी ।

क़याफ़ा—(अ०) (सं० पु०) सूरत, शक्ल, आकृति ।

क़याफ़ा-शनास—(अ०) (वि०) सूरत देख कर मन के भाव पहचाननेवाला ।

क़याफ़ा-शनासी—(अ०) (सं० स्त्री०) सूरत देख कर मन की बात जान लेना ।

क़याम—(अ०) (सं० पु०) (१) ठहरना, टिकना; (२) ठहरने की जगह; (३) मुक़ाम, ठिकाना; (४) स्थिरता, दृढ़ता।

क़यामत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) सब के मरने और फ़ना होने का दिन, प्रलय; (२) वह दिन जब मुरदे ज़िन्दा होकर खड़े होंगे; (३) मुद्दत-दराज़, हमेशा; (४) अंधेर, अन्याय, ज़ुल्म; (५) आफ़त, मुसीबत। (वि०) मुश्किल, कठिन, बुरा; ग़ज़बनाक।

क़यास—(अ०) (सं० पु०) (१) अटकल, अनुमान, अंदाज़ा; (२) ध्यान, विचार। क़यास से बाहर—समझ से बाहर, बेहद।

क़यासन्—(अ०) (क्रि० वि०) अंदाज़े से।

क़यासी—(अ०) (वि०) ख़याली, अटकल-पच्चू, वहमी, कल्पित।

क़य्यूम—(अ०) (वि०) ईश्वर का नाम जो संसार को क़ायम रखनेवाला है।

कर—(फ़ा०) (सं० पु०) ताक़त, शक्ति, बल।

कर—(फ़ा०) (वि०) बहरा।

करख़्त—(फ़ा०) (वि०) कड़ा, कठोर।

करख़्तगी, करख़्ती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) कड़ा-पन।

करगदन—(फ़ा०) (सं० पु०) गेंडा।

करगस—(फ़ा०) (सं० पु०) गिद्ध।

करगह—(फ़ा०) (सं० पु०) करघा, कपड़ा बुनने का यंत्र।

क़रज़, क़रज़ा—(अ०) (सं० पु०) ऋण, उधार, क़र्ज़।

करदनी—(फ़ा०) (वि०) करने के लायक़; (उ०) आमाल, कर्म।

करदा—(फ़ा०) (वि०) (१) किया हुआ, आज़मूदा; (२) बनाया हुआ। (यौगिक-शब्दों के अन्त में)।

करदा-कार—(फ़ा०) (वि०) तजुर्बेकार।

करन-फ़ूल—(अ०) (सं० पु०) कानों में पहनने का एक ज़ेवर, लौंग।

क़रनबीक़—(अ०) (सं० पु०) अर्क़ खींचने का भबका, वारुणी यंत्र।

करबला—(अ०) (सं० पु०) (१) अरब देश का वह स्थान जहाँ अली के वंशज शहीद हुए; (२) उस जगह का नाम जहाँ मुसल्मान मोहर्रम में ताज़िए दफ़न करते हैं।

करम—(अ०) (सं० पु०) (१) कृपा, अनुग्रह, इनायत; (२) उदारता, हिम्मत, साहस। करम करना, करम फ़रमाना—मेहरबानी करना, तशरीफ़ लाना।

करमकल्ला—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार की तरकारी, बंद-गोभी।

करम-परवर—(फ़ा०) (वि०) कृपा करने वाला, दोस्त।

करम-पेशा—(फ़ा०) (वि०) जवाँ-मर्द, उदार।

करम-फ़रमाँ—(फ़ा०) (वि०) मेहरबानी करने वाला, तशरीफ़ लाने वाला।

क़रम-बीक़—(अ०) (सं० पु०) भबका, वारुणी यंत्र।

करश्मा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) आँख का इशारा; (२) अजीब बात, अनोखी बात शोबदा; (३) कवच, तावीज़, यंत्र; (४) चाल, हरकत; (५) नाज़-नख़रा; (६) निशान, नमूना, चिह्न।

क़रह—(अ०) (सं० पु०) ज़ख़्म, घाव।

क़राबत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) नज़दीकी, सामीप्य, निकटता; (२) सम्बन्ध, रिश्तेदारी। क़राबत ठहरना—निसबत क़रार पाना, सगाई होना।

क़राबत-दार—(उ०) (सं० पु०) सम्बन्धी, रिश्तेदार।

क़राबत-दारी—(अ०) (सं० स्त्री०) सम्बन्ध, रिश्तेदारी।

क़राबती—(अ०) (वि०) रिश्ते का; जिसके साथ निकट का संबंध हो।

क़राबा—(फ़ा०) (सं० पु०) अर्क़ रखने का बड़ा शीशा।

क़राबादीन—(तु०) (सं० पु०) दवाओं का कोष, निघंटु।

क़राबीन—(तु०) (सं० स्त्री०) एक क़िस्म की छोटी बंदूक़ जिसका मुँह चौड़ा होता है।

करामत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) ख़ूबी, अनोखा-पन, चमत्कार; (२) कृपा, इनायत, बड़प्पन, अज़मत।

करामत-नामा—(उ०) (सं० पु०) बुज़ुर्ग का पत्र, इनायत-नामा।

करामात—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) चमत्कार, करश्मा; (२) उम्दगी, ख़ूबी।

करामाती—(अ०) (वि०) करामात दिखाने वाला, चमत्कारी, करश्मा दिखलाने वाला।

क़रायन—(अ०) (सं० पु०) (१) अवस्थाएँ, परिस्थितियाँ, (२) ढंग, तरीक़ा। ('क़रीना का बहुवचन)।

क़रार—(अ०) (सं० पु०) (१) ठहरना, स्थिरता, क़याम; (२) वचन, इक़रार, प्रतिज्ञा; (३) संतोष, धैर्य, तसल्ली; (४) चैन, आराम। क़रार आना—चैन पड़ना क़रार करना—वादा करना। क़रार पाना—(१) चैन पड़ना, (२) तय होना। क़रार लेना—ठहरना, दम लेना। क़रार होना—(१) चैन होना, दिलचस्पी होना, (२) प्रतिज्ञा होनी, वादा होना।

क़रार-गाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ठहरने की जगह।

क़रार-दाद—(अ०) (सं० पु०) (१) वचन, प्रतिज्ञा, अहद-पैमाँ; (२) तजवीज़, फ़ैसला।

क़रार-मदार—(सं० पु०) (औ०) अहद-पैमाँ, वचन, क़ौल-क़रार।

क़रार-वाक़ई—(अ०) (क्रि० वि०) पूरी, बख़ूबी, कामिल।

क़रारी—(अ०) (वि०) ठहराया हुआ, निश्चित।

क़रावल—(तु०) (सं० पु०) बंदूक़ची; (२) संतरी; (३) फ़ौज के आगे चलने वाले कुछ सरदारों का समूह जो दुश्मन का हाल दरयाफ़्त करते हैं।

कराहत, कराहियत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) नफ़रत, घृणा, बेज़ारी; (२) अरुचि, ऊब जाना; (३) अनुचित काम।

क़रिया—(अ०) (सं० पु०) गाँव।

करिश्मा—(अ०) (सं० पु०) देखो-'करश्मा'।

क़रीन—(अ०) (वि०) (१) मिला हुआ, पास; (२) संगत। (सं० पु०) मुसाहब। (फ़ा०) यौगिक शब्दों में—मिस्ल, मानिंद।

क़रीना—(अ०) (सं० पु०) (१) सूरत-शक्ल, ढंग, तरीक़ा; (२) सलीक़ा, शऊर; (३) क़यास, अटकल, अन्दाज़ा; (४) तरतीब; क्रम, क़ायदा।

क़रीने-अक़्ल, क़रीने-क़यास—(अ०) (वि०) वह बात जिसे अक़्ल क़बूल करे, समझ की बात।

क़रीने-मसलहत—(अ०) (वि०) मुनासिब, उपयुक्त।

क़रीब—(अ०) (क्रि० वि०) (१) समीप, पास; (२) तक़रीबन, लगभग।

क़रीब-उल्-इख़्तिताम, क़रीब-उल्-ख़त्म—(अ०) (वि०) ख़तम होने के क़रीब, समाप्त-प्राय।

क़रीब-उल्-फ़हम—(अ०) (वि०) जल्द समझ में आनेवाला।

क़रीब-उल्-मर्ग—(अ०) (वि०) कोई दम का मेहमान, मरण प्रायः।

क़रीब-क़रीब—पास पास, तख़मीनन्।

क़रीब-तर—ज़्यादा क़रीब, ज़्यादा पास।

क़रीबन्—अन्दाज़ से ।

करीम—(अ०) (वि०) (१) करम करने वाला, कृपालु, दयालु; (२) जवां-मर्द, प्रेमी, बा-मुरव्वत, (३) दाता, उदार; (४) क्षमा करनेवाला । (सं० पु०) ईश्वर का एक विशेषण ।

करीम-उल्-नफ़्स—(अ०) (वि०) नेक-दिल, दयालु, बुज़ुर्ग ।

करीम-उल्-नफ़्सी—(अ०) (सं० स्त्री०) महरबानी, कृपा, क़द्र-दानी, गुणग्राहकता ।

करीमी—(अ०) (सं० स्त्री०) उदारता, कृपा, बुज़ुर्गी ।

करीह—(अ०) (वि०) बुरा, घिनौना, घृणित ।

करीह-मंज़र—(अ०) (वि०) भद्दा, बद-सूरत ।

क़रौली—(तु०) (सं० स्त्री०) (१) शिकार की घात में बैठना; (२) शिकारी चाकू; (३) एक क़िस्म की छुरी जिसको कमर में बाँधते हैं । क़रौलियाँ करना—युद्ध-कौशल दिखाना ।

क़र्ज़—(अ०) (सं० पु०) ऋण, उधार । क़र्ज़ दाख़िल—क़र्ज़ की तरह ।

क़र्ज़-ख़्वाह—(फ़ा०) (वि०) क़र्ज़ देनेवाला; उधार देनेवाला ।

क़र्ज़-दार—(अ०) (सं० पु०) क़र्ज़ लेने वाला, उधार लेनेवाला ।

क़र्ज़-दारी—(अ०) (सं० स्त्री०) ऋणी होना, क़र्ज़ देना होना ।

क़र्ज़ा—(उ०) (सं० पु०) क़र्ज़, ऋण ।

क़र्ज़ी—(अ०) (वि०) क़र्ज़ के रूप में लिया हुआ ।

कर्दा—(फ़ा०) (वि०) देखो-'करदा' ।

क़र्न—(अ०) (सं० पु०) युग, कालान्तर ।

क़र्ना—(फ़ा०) (सं० स्त्री०)सींग का बुगल, तुरही ।

कर्ब—(अ०) (सं० पु०) बेचैनी, रंज, दुःख, आफ़त; कष्ट, दर्द ।

कर्र—(अ०) (सं० पु०) (१) हमला, दुश्मन को पीछे हटाना ; (२) शान, वैभव । कर्र ओ फ़र्र—शान-शौकत ।

कर्रार—(अ०) (वि०) बार बार हमला करनेवाला । (सं० पु०) हज़रत अली की एक उपाधि ।

क़लई—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) राँगा; (२) सफ़ेदी, मकानों पर फेरने का चूना ; (३) मुलम्मा, गिलट; (४) ऊपरी चमक-दमक, दिखावा । क़लई खुलना—किसी बात का ज़ाहिर होना, गुप्त दोष प्रकट होना । क़लई न लगना—चाल न चलना, तरकीब न चलना ।

क़लई-गर—(अ०) (सं० पु०) राँग का मुलम्मा करनेवाला ।

क़लक़—(अ०) (सं० पु०) (१) बेचैन होना बेताबी, व्याकुलता ; (२) रंज, दुःख, शोक; (३) पछतावा, हसरत, पश्चात्ताप ।

कलग़ी—(तु०) (सं० स्त्री०) (१) कुछ पक्षियों के सुन्दर पर जिन्हें पगड़ी पर लगाते हैं ; (२) सोने या जवाहिर का सिर पर पहनने का एक ज़ेवर ; (३) पक्षी के सिर पर की चोटी ; (४) इमारत का शिखर; (५) लावनी या ख़यालबाज़ी का एक भेद ।

क़ल-चाक़—(तु०) (सं० पु०) लोहे का दस्ताना जो फ़ौजी लोग रखते हैं ।

क़लन्दर—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) पहुँचा हुआ साधु ; (२) आज़ाद, रिन्द, मस्त; (३) ख़ेमे का कुलाबा या आँकड़ा ।

क़लन्दरा—(उ०) (सं० पु०) (१) एक क़िस्म का रेशमी कपड़ा; (२) ख़ेमे का आँकड़ा ।

क़लन्दरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) एक क़िस्म की छोलदारी ; (२) एक क़िस्म का

कपड़ा; (३) क़लन्दर का पद या पेशा। (वि०) क़लन्दर से सम्बन्ध रखने वाला।

कलफ़—(अ०) (सं० पु०) (१) माँडी; (२) चेहरे की झाइयाँ; (३) काले धब्बे जो मुँह पर हो जाते हैं; (४) स्याह दाग़ जो चाँद में नज़र आते हैं।

कलफ़त—(अ०) (सं० स्त्री०) तकलीफ़, कष्ट, मुसीबत, बेचैनी। कलफ़त दूर होना—तकलीफ़ या रंज मिटना।

क़लम—(अ०) (सं० पु०) (१) लिखने का क़लम, लेखनी; (२) बालों का ब्रश या कूची जिससे रंग भरते हैं; (३) हुक्म (फ़ा०) (स्त्री०) (१) पेड़ की टहनी जो हरी काट कर ज़मीन में लगाते हैं या एक पेड़ से लेकर दूसरे में लगाते हैं; (२) वह छोटे छोटे तराशे हुए बाल जो कनपटियों पर छोड़ देते हैं; (३) फुल-झड़ी; (४) शीशे या बिल्लौर का तराशा हुआ लंबा टुकड़ा; (५) किसी चीज़ का लंबा टुकड़ा; (६) सींग, (७) पतली लंबी शीशी; (८) गाय बकरी की पिंडली की हड्डी। (वि०) काटा हुआ, तराशा हुआ। क़लम उठाना—लिखना, कुछ लिखने का इरादा करना। क़लम उठाकर लिखना—बे सोचे-समझे जल्दी लिखना। क़लम करना—काटना, छाँटना। क़लम खींचना—(१) काटना, रद करना; (२) लिखना छोड़ देना।—क़लम-ज़द करना—मिटा देना। क़लम जारी रहना—हुकूमत बरक़रार रहना। क़लम तोड़ देना—बहुत अच्छी कविता या लेख लिखना। क़लम पकड़ना नहीं आना—लिखना नहीं आना। क़लम फिरना—हुक्म हो जाना। क़लम फेर देना—लिखे हुए को काट देना, मिटा देना।

क़लम-अन्दाज़—(अ०) (वि०) लिखने में छोड़ जाना, न लिखना।

क़लम-कशीदा—(फ़ा०) (वि०) कटा हुआ।

क़लम-कार—(अ०) (सं० पु०) (१) रंग भरनेवाला, नक़्क़ाश, (२) मुंशी, मुहर्रिर।

क़लम-कारी—(अ०) (सं० स्त्री०) रंग भरना, नक़्क़ाशी।

क़लम-ज़न—(फ़ा०) (वि०) कातिब, लिखने वाला।

क़लम-तराश—(अ०) (सं० पु०) पतले फल का चाकू, क़लम बनाने का चाकू।

क़लम-दान—(अ०) (सं० पु०) छोटा बक्स जिसमें क़लम, दावात व लिखने का सामान रखते हैं। क़लम-दान देना—ओहदा देना, वज़ीर बनाना।

क़लम-पाक—(अ०) (सं० पु०) क़लम पोंछने और साफ़ करने का कपड़ा।

क़लम बन्द—(अ०) (वि०) १) लिखा हुआ; (२) बेशुमार, बे-गिनती। क़लम-बन्द करना—लिखना, दर्ज करना। क़लम-बन्द सुनाना—ख़ूब गालियाँ सुनाना।

क़लम-रौ—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) राज्य, सल्तनत।

क़लमर्द—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मुल्क, सल्तनत।

कलमा—(अ०) (सं० पु०) (१) वाक्य, बात, क़ौल, शब्द; (२) वह वाक्य जो इस्लाम का मूल-मंत्र है। कलमे की उँगली—अंगूठे के पास की उँगली।

कमा-उल्-ख़ैर—(अ०) (सं० पु०) नेक बात, नेक सलाह।

कलमा-उल्-हक़—(अ०) (सं० पु०) सच्ची-बात, न्याय की बात।

कलमा पढ़ाना—(क्रि०) मुसल्मान बनाना।

कलमा भरना—(औ०) (१) किसी का बेहद मौतक़िद होना; (२) किसी को हर वक़्त याद करते रहना।

कलमात—(अ०) (सं० पु०) 'कलमा' का बहुवचन।

क़लमी—(अ०) (वि०) (१) हाथ का लिखा जो छपा न हो ; (२) क़लम काट कर लगाया हुआ वृक्ष।

कलां—(फ़ा०) (वि०) बड़ा, दराज़, बहतर, बुलंद।

क़लाक़ना—(औ०) बनाना, आवाज़े कसना।

क़ला-क़न्द—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक क़िस्म की मिठाई।

क़ला-क़मा—(अ०) (सं० पु०) उखाड़-पछाड़, तोड़-फोड़, मिस्मार करना।

कलाग़—(फ़ा०) (सं० पु०) जंगली कौआ।

कला-बतून—(तु०) (सं० पु०) चाँदी सोने के तार जो रेशम या सूत के डोरे पर लिपटे होते हैं।

कलाबा—(फ़ा०) (सं० पु०) कच्चा सूत जो तकली पर लगा हो।

कलाबाज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) सर नीचे पाँव ऊपर करके अपने तईं उलटा कर देना, कला-मुंडी ; (२) बच्चे का पट-ख़नियाँ खाना, लोटा लोटा फिरना।

कलाम—(अ०) (सं० पु०) (१) वाक्य, वचन; (२) बात-चीत, क़ौल, कथन; (३) वादा, प्रतिज्ञा, वचन; (४) शंका, हुज्जत, कहा-सुनी, उज्र., एतराज़ ; (५) सवाल ; (६) शेर-सुख़न, कविता। कलाम आजाना, कलाम आना—बहस हो जाना, झगड़ा हो जाना। कलाम उलटना—बात का पहलू बदलना। कलाम करना—(१) बोलना ; (२) झगड़ना। कलाम रखना—हुज्जत रखना, शुबह रखना। कलाम होजाना—बहस हो जाना।

कलावा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सूत जो तकली पर लगा हो ; (२) सुर्ख़ और पीला रंगा हुआ गंडेदार सूत जो शादी पर काम आता है या गंडे-तावीज़ों में लगाया जाता है ; (३) हाथी की गरदन।

क़लिया—(अ०) (सं० पु०) सादा गोश्त जो (शोरबा-दार) घी में भूनकर पकाया जाय।

क़लियान—(फ़ा०) (सं० पु० एक प्रकार का हुक़्क़ा।

क़लीच—(फ़ा०) (सं० पु०) तलवार।

कलीद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) कुंजी।

कलीम—(अ०) (वि०) (१) कहनेवाला; (२) हज़रत मूसा का नाम।

कलील—(फ़ा०) (वि०) कुंद, सुस्त, थका हुआ, गूँगा।

क़लील—(अ०) (वि०) थोड़ा, अल्प।

कलीसा—(यू०) (सं० पु०) बुतख़ाना, मन्दिर।

कल्ब—(अ०) (सं० पु०) कुत्ता।

क़ल्ब—(अ०) (सं० पु०) (१) हृदय, दिल; (२) फ़ौज का बीच का भाग ; (३) किसी चीज़ का बीच का हिस्सा, मध्य भाग ; (४) खोटा सिक्का ; (५ अक़्ल, बुद्धि; (६) उलटा हुआ, औंधा।

क़ल्ब-गाह—(अ०) (सं० स्त्री०) वह ज़गह जहाँ बीच की फ़ौज खड़ी होती है।

क़ल्ब-साज़—(अ०) (सं० पु०) झूठा सिक्का बनाने वाला।

क़ल्ब-साज़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) झूठे सिक्के बनाना, जाली रुपया बनाना।

क़ल्बी—(अ०) (वि०) (१) हृदय-सम्बन्धी; (२) दिली, हार्दिक, (३) उलटा किया हुआ, औंधा; (४) खोटा, जाली।

कल्ला—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) जबड़ा ; (२) गला; (३) सिर, खोपड़ी ; (४) आवाज़, स्वर।

क़ल्लांच—(तु०) (सं० पु०) निर्धन, ग़रीब, दरिद्र, मुफ़लिस।

कल्ला-तोड़—(फ़ा०) (वि०) ज़बर-दस्त, बलिष्ट।

कल्ला-दराज़—(फ़ा०) (वि०) (१) बहुत चिल्लानेवाला ; (२) बहुत बढ़कर बोलने वाला ।

क़ल्लाश—(तु०) (सं० पु०) बेहया, ग़रीब ।

क़वानीन—(अ०) (सं० पु०) 'क़ानून' का बहुवचन; देखो 'क़ानून' ।

क़वायद—(अ०) (सं० पु०) क़ायदे, नियम 'क़ायदा' का बहुवचन । (सं० स्त्री०) (१) व्यवस्था, नियम; (२) व्याकरण ; (३) सेना के युद्ध करने के नियम ; (४ युद्ध की क्रियाओं का अभ्यास ।

क़वी—(अ०) (वि०) ज़ोरावर, मज़बूत, शक्तिमान् ।

क़वी-जुस्सा—(फ़ा०) (वि०) मोटा-ताज़ा, हट्टा-कट्टा ।

क़व्वाल—(अ०) (सं० पु०) क़व्वाली गाने वाला ।

क़व्वाली—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) सूफ़ियाना और ईश्वर-सम्बन्धी गीत ; (२) क़व्वाल का पेशा ।

कश—(फ़ा०) (वि०) खींचने वाला, बरदाश्त करने वाला ; (यौगिक में) ; (सं० पु०) (१) खिंचाव, आकर्षण ; (२) हुक़्क़े या चिलम का घूंट, फूंक ।

कशक—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) रेखा ।

क़शक़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) टीका, माथे पर लगाया जाने वाला तिलक ।

कशकोल—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) भीख का प्याला; (२) वह पुस्तक जिसमें विविध चुने हुए निबंध या कविता हो ।

कशनीज़—(फ़ा०) (सं० पु०) धनिया ।

कशमकश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) खींचा-तानी; (२) लड़ाई-झगड़ा, झगड़ा-फ़िसाद; (३) असमंजस, दुबधा ; (४) वह भीड़ जिससे निकलना मुश्किल हो, जगह की तंगी ।

कशां—(फ़ा०) (वि०) खींचते हुए ।

कशाकश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) ऐंचा-तानी, छीना-झपटी ; (२) धक्का-पेल; (३) कष्ट, तकलीफ़, असमंजस, अन-बन; (४) किसी चीज़ का बार बार एक जगह से दूसरी जगह बाहर आना-जाना, झड़प ।

कशीद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अर्क़ निकालना, खींच ।

कशीदगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) खिंचाव, रुकावट, नाराज़ी, मलाल, मन-मुटाव ।

कशीदा—(फ़ा०) (सं० पु०) कपड़े पर सूई तागे से बने हुए बेल-बूटे । (वि०) (१) खिंचा हुआ, बरदाश्त किया हुआ ; (२) रंजीदा ; (३) सूई-तागे से काढ़ा हुआ, ज़र-दोज़ी या गुल-कारी का काम ; (४) लंबा, बुलंद ।

कशीदा-ख़ातिर—(फ़ा०) (वि०) रंजीदा-दिल, नाराज़, अप्रसन्न ।

कशिश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) खिंचाव, आकर्षण, जज़्ब, खींचने की ताक़त ; (२) मन-मुटाव, नाराज़गी ; (३) (औ०) ढील, वक़्फ़ा; (४) (औ०) सख़्ती, कष्ट, तकलीफ़; (५) अन-बन; (६) मेल, मुरव्वत, रुझान ।

क़श्क़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) टीका, माथे पर लगाया जाने वाला तिलक ।

कश्ती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) नाव, नौका; (२) एक प्रकार की नाव की शक्ल की थाली ।

कश्नीज़—(फ़ा०) (सं० पु०) धनिया ।

कश्फ़—(अ०) (सं० पु०) (१) खोलना, ज़ाहिर करना, उघारना; (२) सूफ़ियों की वह अवस्था जिसमें उनको मुरदे की क़ब्र से हालात मालूम हो जाते हैं ।

कश्फ़ी—(फ़ा०) (वि०) खुला हुआ, साफ़, स्पष्ट ।

कश्मीर—(फ़ा०) (सं० पु०) भारत के उत्तर का प्रसिद्ध स्थान ।

कश्मीरा—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार का पशमीना जो कश्मीर से आता है।

कश्शाफ़—(अ० वि०) बहुत खोलने वाला, बहुत ज़ाहिर करने वाला।

कस—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) आदमी, मनुष्य, व्यक्ति; (२) साथी, सहायक। कस-ओ-कू—(फ़ा०) (सं० पु०) यार, दोस्त।

कस-ओ-नाकस—(फ़ा०) (सं० पु०) हर शख़्स, छोटे-बड़े सब।

कसब—(अ०) (सं० पु०) देखो-'कस्ब'।

क़सबा—(सं० पु०) देखो-'क़स्बा'।

क़सम—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) शपथ, हलफ़, सौगन्द; (२) किसी काम का इनकार करना। क़सम खाने को—नाम मात्र को। क़सम उतारना—प्रतिज्ञा पूरी करना। क़सम खाने को न रहना—बिलकुल न रहना। क़सम टूटना—वचन भंग होना। क़सम तोड़ना—वचन विरुद्ध काम करना। क़सम होना—बिलकुल इनकार होना।

कस-मपुरसी—(फ़ा०) सं० स्त्री०) वह हालत जिसमें कोई पुरसाने-हाल न हो; बिलकुल बेबसी की दशा।

कसर—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) कमी, नुक़्स; (२) नुक़सान, घाटा, टोटा; (३) दोष, विकार, बच्चों की बदहज़मी, पेट का ख़लल; (४) द्वेष, दुश्मनी, मन-मुटाव।

कसरत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) बहुतायत, ज़्यादती, अधिकता; (२) व्यायाम, वर्ज़िश, मश्क़, अभ्यास, परिश्रम।

कसरती—(अ०) (वि०) (१) कसरत करने वाला; (२) वर्ज़िश या व्यायाम किया हुआ, व्यायाम-द्वारा बना हुआ या गठा हुआ।

कसल—(अ०) (सं० पु० (१) बीमारी माँदगी, रुग्णता; २) सुस्ती, काहिली शिथिलता, थकान।

कसल-मन्द—(अ०) (वि०) (१) रोगी, बीमार; (२) थका-माँदा, शिथिल, सुस्त।

क़साई—(अ०) (सं० पु०) (१) मांस बेचने वाला, गोश्त-फ़रोश; (२) बेरहम, निर्दय, ज़ालिम। क़साई का पिल्ला—मोटा ताज़ा आदमी। क़साई के खूंटे से बकरी बाँधना—बेरहम के साथ बेटी ब्याहना; किसी सीधे-साधे को भयानक स्थान में पटक देना।

कसाफ़त—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) गाढ़ापन, गन्दगी, मैला होना; (२) मोटाई, भद्दा पन।

क़सावा—(अ०) (सं० पु०) वह रूमाल जो औरतें सर में बाँधती हैं।

क़सावत—(अ०) (सं० स्त्री०) संग-दिली, बेरहमी, निर्दयता।

क़सीदा—(अ०) (सं० पु०) वह कविता जिसमें किसी की निंदा, स्तुति, उपदेश आदि विषय हो। क़सीदे के पहले दोनों शैरों में और हर शैर के दूसरे मिसरे में क़ाफ़िया होना ज़रूरी है।

कसीफ़—(अ०) (वि०) (१) दबीज़, मोटा, भद्दा; (२) ग़लीज़, मैला-कुचेला, गंदा।

कसीर—(अ०) (वि०) बहुत अधिक।

क़सीर—(अ०) (वि०) नाटा, कोताह, पस्त-क़द।

कसीर-उल्-औलाद—(अ०) (वि०) बहुकुटम्बी, बहुत बाल-बच्चे वाला।

कसीर-उल्-मानी—(अ०) (वि०) वह शब्द जिसके बहुत अर्थ हों।

क़सूर—(अ०) (सं० पु०) अपराध, भूल, चूक, कमी, ख़ता।

क़सूर-मन्द—(अ०) (वि०) दोषी, अपराधी।

क़सूर-वार—(अ०) (वि०) दोषी, ख़तावार।

कसे—(फ़ा०) (वि०) कोई आदमी। कसे बाशद—कोई क्यों न हो; चाहे कोई हो।

क़स्द—(अ०) (सं० पु०) इरादा, नियत, मतलब, विचार।

क़स्दन्—(अ०) (क्रि० वि०) जान-बूझकर, अमदन्।

कस्ब—(अ०) (सं० पु०) (१) पैदा करना, कमाना; (२) हुनर, कला; (३) पेशा, व्यवसाय; (४) वेश्या वृत्ति, व्यभिचार।

क़स्बा—(अ०) (सं० पु०) शहर से छोटी और गाँव से बड़ी जगह।

क़स्बात—(अ०) (सं० पु०) 'क़स्बा' का बहुवचन।

कस्बी—(अ०) (वि०) कस्ब करने वाला। (सं० स्त्री०)—वेश्या, रंडी।

क़स्मा-क़स्मी—(औ०) (स्त्री०) आपस में वचन-बद्ध होना; बाहमी अहद-पैमां।

क़स्मिया—(अ०) (क्रि० वि०) क़सम खाकर हलफ़ से।

कस्र—(अ०) (सं० पु०) तोड़ना। (सं० स्त्री०)—भिन्न (गणित)।

क़स्र—(अ०) (सं० पु०) (१) महल; (२) कमी करना। (सं० स्त्री०) मुसाफ़िरी की संक्षिप्त नमाज़।

कस्र-शान—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वह बात जिससे आदमी की इज़्ज़त-आबरू में फ़र्क़ आये।

क़स्साब—(अ०) (सं० पु०) (१) गोश्त काटने वाला, गोश्त बेचने वाला; कसाई; (२) ज़ालिम, निर्दय, बेदर्द।

क़स्साबा—(अ०) (सं० पु०) वह रूमाल जो स्त्रियाँ सर में बाँधती हैं।

क़स्साबी—(अ०) (सं० स्त्री०) क़स्साब का काम या पेशा।

क़स्साम—(अ०) (वि०) बाँटने वाला, तक़सीम करने वाला। क़स्सामे-अज़ल—ईश्वर।

क़स्सार—(अ०) (सं० पु०) धोबी।

कह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सूखी घास।

क़ह्-क़री—(अ०) (वि०) उलटे पाँव चलने वाला, पीछे की तरफ़ चलने वाला।

कह्-कशां—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) आकाश-गंगा, तारों का एक समूह।

क़हक़हा—(फ़ा०) (सं० पु०) खिलखिला कर हँसना, ज़ोर की हँसी।

कहगिल—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दीवार में लगाने का गारा।

क़हत—(अ०) (सं० पु०) (१) अकाल, खुश्क-साली; (२) अभाव।

क़हत-ज़दा—(अ०) (सं० पु०) (१) अकाल का मारा; (२) भूखों मरने वाला; (३) भूखा मरा हुआ, बहुत भूखा।

क़हत-साली—(अ०) (सं० स्त्री०) क़हत, अकाल।

क़हबा—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) फ़ाहशा, बद-कार औरत, व्यभिचारणी; (२) दुनिया।

क़हर—(अ०) (सं० पु०) (१) ज़बर-दस्ती, अत्याचार; (२) गुस्सा, क्रोध; (३) जोश, वलवला; (४) दुश्वार काम; (५) रोग, मुसीबत, आफ़त, शामत। (६) (वि०) चालाक, फ़िसादी। कहा०—क़हर दरवेश बर जान दरवेश—(फ़ा०)—ग़रीब गुस्सा करेगा तो किसी का क्या लेगा, सिर्फ़ अपनी जान खोवेगा—मुसीबत का बरदाश्त करना।

क़हरन्—(अ०) (क्रि० वि०) चार नाचार, ज़बर-दस्ती।

क़हवा—(अ०) (सं० पु०) काफ़ी, जिसे चाय की तरह पिया जाता है।

कह-रुबा—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार का गोंद जिसे कपड़े या चपड़े पर रगड़ कर घास या तिनके के सामने करें तो उसे चुम्बक की तरह उठा लेता है।

कहालत—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सुस्ती, काहिली, आलस्य।

कहील—(अ०) (वि०) वह आँख जिसमें सुरमा लगा हो।

क़ह्—(अ०) (सं० पु०) देखो—'क़हर'।

क़ा—(स्त्री०) कौवे की आवाज़।

क़ाआन—(तु०) (सं० पु०) (१) बहुत बड़ा धर्मात्मा (चीन के बादशाह की उपाधि); (२) एक बहुत बड़ी तुर्की उपाधि।

क़ाइद—(अ०) (सं० पु०) (१) फ़ौज का सरदार; (१) अंधे की लाठी पकड़ कर चलनेवाला।

क़ाइदा—(अ०) (सं० पु०) देखो-'क़ायदा'।

काइयां—(हि०) (वि०) चालाक, दग़ाबाज़।

काइयां-पन—(हि०) (सं० पु० चालाकी, धूर्त्तता।

क़ाइल—(अ०) (वि०) देखो—'क़ायल'।

काक—(फ़ा०) (सं० पु०) रोग़नी टिकिया, एक प्रकार की रोटी।

क़ाक़—(तु०) (वि०) दुबला-पतला, नातवां।

काकरेज़ी—(फ़ा०) (वि०) स्याही माइल ऊदा रंग।

क़ाक़ुम—(तु०) (सं० पु०) एक क़िस्म के नेवले का नाम, जिसकी खाल से पोस्तीन बनाते हैं।

काकुल—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ज़ुल्फ़, सिर से लटकते हुए लंबे बाल।

काख़—(फ़ा०) (सं० पु०) महल, ऊँची इमारत।

काग़ज़—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) वह चीज़ जिस पर लिखते हैं, (२) पुर्ज़ा रुक्का, तहरीर; (३) क़बाला, तमस्सुक; (४) अख़बार, परचा, ख़बर।

काग़ज़-पत्तर—(सं० पु०) दस्तावेज़।

काग़ज़ात—(फ़ा०) (सं० पु०) 'काग़ज़' का बहुवचन।

काग़ज़ी—(फ़ा०) (वि०) (१) काग़ज़ का बना हुआ; (२) पतले छिलके का; (३) काग़ज़ पर लिखा हुआ।

क़ाज़—(तु०) (सं० स्त्री०) एक परंद का नाम जो क़तार बाँध कर उड़ता है।

क़ाज़ा—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वह गड्ढा जिसमें छिपकर शिकारी शिकार की घात में बैठते हैं।

काज़िब—(अ०) (सं० पु०) झूठ बोलने वाला, मिथ्या-भाषी। (वि०)—झूठा।

काज़िम—(अ०) (वि०) ग़ुस्सा मारने वाला, ग़ुस्सा पी जाने वाला, क्रोध दमन करने वाला।

काज़िमैन—(अ०) (सं० पु०) एक शहर का नाम।

क़ाज़ी—(अ०) (सं० पु०) (१) मुसलमानी क़ानून के अनुसार फ़ैसला करने वाला जज; (२) निकाह पढ़ाने वाला; (३) ज़िम्मेदार शख़्स। (कहा०)—क़ाज़ी जी क्यों दुबले, शहर के अंदेशे से—नाहक़ और बेमौके फ़िक्र करना। क़ाज़ी के घर के चूहे भी सियाने—सियाने लोगों के छोटे भी सियाने होते हैं।

क़ाज़ी-दल्लाल—(अ०) (सं० पु०) फ़िसाद कराने वाला।

क़ातअ—(अ०) (वि०) काटने वाला।

कातिब—(अ०) (सं० पु०) (१) लिखने वाला, दस्तावेज़ लिखने वाला; (२) नक़ल करने वाला, नक़ल-नवीस, मुन्शी।

क़ातिबन—(अ०) (क्रि० वि०) बिलकुल।

कातिबे-अज़ली—(फ़ा०) (सं० पु०) ईश्वर।

कातिबे-ऐमाल—(फ़ा०) (सं० पु०) ऐमाल (कर्म) लिखने वाला, फ़रिश्ता।

कातिबे-क़ुदरत, कातिबे-तक़दीर—(फ़ा०) (सं० पु०) ईश्वर।

क़ातिल—(अ०) (वि०) (१) क़त्ल करने वाला, मार डालने वाला, घातक, हत्यारा; (२) प्रेमिका, माशूक़।

क़ातेअ—(अ०) (वि०) देखो—'क़ातअ'।

क़ादिर—(अ०) (वि०) .कुदरत या शक्ति रखने वाला, समर्थ, ज़ोरावर, बलवान्, क़ाबू रखने वाला।

क़ादिर-अंदाज़, क़ादिर दस्त—(अ०) (वि०) ठीक निशाना लगाने वाला।

क़ादरी—(अ०) (सं० स्त्री० (१) बेगमों का एक क़िस्म का सीना-बन्द या चोली; (पु०) सूफ़ियों का एक गिरोह।

क़ादिरे-मुतलक़—(अ०) (सं० पु०) सर्व-शक्ति-मान्, हर काम में .कुदरत (शक्ति) रखने वाला, ईश्वर।

कान—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) खान, खानि जिससे धातुएँ निकलती हैं।

क़ानअ—(अ०) (वि०) संतोष करने वाला, सतोषी।

कान-कन—(फ़ा०) (सं० पु०) खान खोदने वाला, खनक।

क़ानिअ—(अ०) (वि०) थोड़ी चीज़ पर सब्र करने वाला, संतोषी।

कानी—(फ़ा०) (वि०) (१) कान सम्बन्धी; (२) खनिज।

क़ानी—(तु०) (वि०) बहुत सुर्ख़।

क़ानून—(अ०) (सं० पु०) (१) राज-नियम, क़ायदा, दस्तूर, ज़ाब्ता; (२) किसी प्रकार का नियम, विधि; (३) एक मशहूर रूमी बाजे का नाम। क़ानून छाँटना, क़ानून बघारना—बेज़रूरत तकरार और हुज्जत करना।

क़ानून-गो—(अ०) (सं० पु०) (१) एक कर्मचारी जिसके पास तमाम ज़िले की ज़मीनों का हिसाब-किताब हो; एक कर्मचारी जिसका पद पटवारियों के ऊपर है और जो उनके काग़ज़ों की जाँच करता है; (२) झगड़ालू।

क़ानूनन्—(अ०) (क्रि० वि०) क़ानून की रू से, क़ानून के अनुसार।

क़ानून-दाँ—(अ०) (वि०, क़ानून जानने वाला, आईन से वाक़िफ़।

क़ानून-दानी—(अ०) (सं० स्त्री०) क़ानून का ज्ञान, क़ानून से वाक़फ़ियत।

क़ानून-मुख़्तसुल-अम्र—(अ०) (सं० पु०) वह क़ानून जो किसी ख़ास अम्र की बाबत हो।

क़ानून-मुख़्तसुल-मुक़ाम—(अ०) (सं० पु०) वह कानून जो किसी ख़ास जगह के लिए हो।

क़ानूनियाँ—(वि०) हुज्जती, झगड़ालू।

क़ानूनी—(अ०) (वि०) (१) क़ानून-संबन्धी (२) क़ानून बनाने वाला, क़ानून जानने वाला; (३) हुज्जती, झगड़ालू।

क़ाने—(अ०) (वि०) देखो—'क़ानिअ'।

क़ाफ़—(अ०) (सं० पु०) एक कल्पित पर्वत जो संसार के चारों ओर फैला हुआ माना जाता है; .खूब-सूरत परियाँ इस पर रहती हैं। क़ाफ़ की परियाँ—बहुत हसीन औरतें। क़ाफ़ ता क़ाफ़—तमाम जहान, अखिल विश्व।

क़ाफ़िया—(अ०) (सं० पु०) तुक, अंत्यानुप्रास। क़ाफ़िया तंग करना—तंग करना, दिक़ करना। क़ाफ़िया तंग होना—ला-जवाब होना, ज़िच होना, हैरान होना। क़ाफ़िया मिलाना—तुक मिलाना, दोस्ती करना। क़ाफ़िया लड़ना—क़ाफ़िया एक-सा होना।

क़ाफ़िया-पैमा—(फ़ा०) (वि०) क़ाफ़िया ढूंढ ढूंढ कर शैर कहने वाला।

क़ाफ़िया-पैमाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शैरों की गिनती बढ़ाने के लिए क़ाफ़िया बाँधना।

क़ाफ़िया-बन्दी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) तुक-बन्दी।

क़ाफ़िया-संज—(फ़ा०) (वि०) शायर, कवि।

काफ़िर—(अ०) (सं० पु०) (१) नास्तिक; (२) इस्लाम को न मानने वाला; (३) निर्दय, ज़ालिम, बेरहम (४) माशूक़ दिल-

दार; (५) दुष्ट, बुरा, बे-दर्द; (६) एफ्रीका के एक देश का नाम; (७) इस देश का निवासी।

काफ़िर-नेमन—(अ०) (सं० पु०) कृतघ्न, ना-शुकरा, बेवफ़ा।

काफ़िराना—(फ़ा०) (वि०) काफिरों का-सा।

क़ाफ़िला—(अ०) (सं० पु०) (१) यात्रियों का समूह, (२) सौदागरों का गिरोह।

काफ़ी—(अ०) (वि०) काम निकल जाने के क़ाबिल, पर्याप्त।

काफ़ूर—(अ०) (सं० पु०) कपूर। (वि०) दूर, ग़ायब।

काफ़ूरी—(अ०) (वि०) (१) कपूर का; (२) कपूर के रंग का; (३) कपूर का बना हुआ।

काफ़ूरी शमा—(अ०) (सं० स्त्री०) कपूर की बत्ती, जिसकी रोशनी बहुत साफ़ होती है।

काब—(सं० पु०) देखो—'कअब'।

क़ाब—(तु०) (स० स्त्री०) बड़ी रक़ाबी।

काबक—(फ़ा०) (सं० पु०) देखो 'काबुक'।

काबतैन—(अ०) (सं० पु०) (१) मक्का और जरूसलम के पवित्र स्थान या काबे, (२) एक प्रकार का जुआ जो दो पाँसों से खेला जाता है।

क़ाबलीयत—(अ०) (सं० स्त्री०) योग्यता, विद्वत्ता, लियाक़त, इल्म, सलीक़ा।

काबा—(अ०) (सं० पु०) अरब में मक्का नामक शहर का वह पवित्र स्थान जहाँ मुसलमान यात्रा (हज करने जाते हैं।

क़ाबिज़—(अ०) वि०) (१) क़ब्ज़ा करने वाला, दख़ील; (२) वह दवा जो क़ब्ज़ पैदा करे, मलावरोधक; (३) निकालने वाला, ईश्वर का नाम।

क़ाबिज़े-अरवाह—(फ़ा०) (वि०) रूहों को जिस्म से जुदा करने वाला, मौत का फ़रिश्ता, यम-दूत।

क़ाबिल—(अ०) (वि०) (१) योग्य, उपयुक्त; लायक; (२) होशियार, तजुर्बेकार, विद्वान्, आलिम। (सं० पु०) योग्य पुरुष, विद्वान्।

क़ाबिला—(अ०) (सं० स्त्री०) बच्चा जनानेवाली औरत।

क़ाबिले-एतबार—(अ०) (वि०) मौतबर, विश्वसनीय।

क़ाबिले-एतराज़—(अ०) (वि०) बेजा, ना-मुनासिब, आपत्ति-जनक।

क़ाबिले-ग़ौर—(अ०) (वि०) ध्यान देने योग्य।

क़ाबिले-तारीफ़—(अ०) वि०) प्रशंसनीय

क़ाबिले-समाअत—(अ०) (वि०) सुने जाने के योग्य, जिसकी सुनवाई हो सके।

काबुक—(फ़ा०) (सं० पु०) कबूतरों का दरबा।

काबुल—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) अफ़ग़ानिस्तान की राजधानी। कहा०—काबुल में क्या गधे नहीं होते—जहाँ अच्छे होते हैं वहाँ बुरे भी होते हैं।

क़ाबू—(तु०) (सं० पु०) वश, अधिकार, इख़्तियार, मौक़ा। क़ाबू चलाना—हुक्म चलाना। क़ाबू पर चढ़ना—किसी के वश में हो जाना। क़ाबू पाना—मौक़ा पाना, अधिकार पाना। क़ाबू में आना—बस में आना। क़ाबू से जाना, या निकल जाना—इख़्तियार से बाहर हो जाना। क़ाबू से बाहर होना—आपे से बाहर होना।

क़ाबूची—(तु.) (सं० पु०) (१) दरबान, द्वारपाल; (२) कमीना, नीच, सिफ़ला, बद-ज़ात।

काबूस—(अ०) (सं० पु०) भयानक स्वप्न।

क़ाबे क़लम—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) क़लमदान।

काम—(फ़ा०) (स० पु०) (१) उद्देश्य, मतलब, मुराद; (२) कामना, इच्छा,

ख़्वाहिश; (३) फ़ेल, कार्य, अमल; (४) धंधा, मज़दूरी, पेशा, मेहनत; (५) सरोकार, ज़रूरत, आवश्यकता; (६) सम्बन्ध, ताल्लुक़ ।

काम-गार—(फ़ा०) (वि०) भाग्यवान्, सफल ।

क़ामत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) डील, क़द, आकार; (२) जिस्म, शरीर । क़द ओ क़ामत—डील डौल ।

कामदार (सं० पु०) (१) कर्मचारी; (२) प्रबन्धक, मैनेजर । (वि०) वह चीज़ जिस पर किसी तरह का काम किया हुआ हो ।

काम ना काम—(फ़ा०) (क्रि० वि०) लाचार होकर, विवश होकर ।

कामयाब—(फ़ा०) (वि०) सफल, सफल-मनोरथ ।

कामयाबी—(फ़ा०) (सं० स्त्री० सफलता, जीत ।

कामरान—(फ़ा०) (वि०) सफल, सफल-मनोरथ ।

कामरानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सफलता, जीत ।

कामिल—(अ०) (वि०) (१) पूरा, पूर्ण; (२) पक्का, पहुँचा हुआ; (३) योग्य, माहिर, उस्ताद ।

क़ामूस—(अ०) (सं० पु०) समुद्र ।

क़ायज़ा—(अ०) (सं० पु०) दुमचा, घोड़े की दुम में बाँधने की डोरी ।

क़ायदा—(अ०) (सं० पु०) (१) नियम, रीति, दस्तूर; (२) तरतीब, क्रम व्यवस्था; (३) उसूल, बुनियाद; (४) आदत, स्वभाव (५) अक्षर-ज्ञान की पुस्तक । क़ायदे से—दस्तूर के माफ़िक, सलीक़े से, अदब से ।

क़ायदा-दाँ—(अ०) (वि०) क़ायदा जानने वाला, सभा के नियम जानने वाला ।

कायनात—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) दुनिया विश्व, सृष्टि; (२) पूँजी; (३ मूल्य, असल हक़ीक़त, बिसात ।

क़ायम—(अ०) (वि०) (१) खड़ा होने वाला, खड़ा हुआ, स्थापित; (२) ठहरा हुआ, स्थिर; बरक़रार ; (३) निश्चित, मुक़र्रर; (४) शतरंज की बाज़ी की वह दशा जब दोनों खिलाड़ियों के दो-दो मोहरे रह जाते हैं ।

क़ायम-उल्-नार—(अ०) (वि०) आग पर ठहरनेवाला, अग्नि-स्थायी ।

क़ायम-उल्-मिज़ाज, क़ायम-मिज़ाज—(अ०) (वि०) मुस्तक़िल आदमी, स्थिर-बुद्धि, शान्त-चित्त ।

क़ायम-मिज़ाजी—(अ०) (सं० स्त्री०)—मिज़ाज का ठहरा हुआ होना कि रंज-.ख़ुशी, अमीरी-ग़रीबी में एकसा रहे, स्थिर-प्रज्ञ होना, इस्तक़लाल ।

क़ायम-मुक़ाम (अ०) (वि०) दूसरे की जगह काम करने वाला, एवज़ी ।

क़ायम-मुक़ामी—(अ०) (सं० स्त्री०)—किसी की एवज़ काम करना ।

क़ायमा—(अ०) (सं० पु०) पूरा कोण ।

क़ायल—(अ०) (वि०) मान जाने वाला, लाजवाब होनेवाला, निरुत्तर होनेवाला । क़ायल करना—निरुत्तर कर देना, बंद करना । क़ायल-माक़ूल करना—क़ायल करना, बिलकुल ला-जवाब करना । क़ायल होना—(१) मान जाना, बंद होना; (२) निरुत्तर होना; (३) अपनी ग़लती मानना; (४) उस्ताद मानना, मौतक़िद होना ।

कार—(फ़ा०) (सं० पु०) काम, पेशा । कहा०—कार बकसरत है—अभ्यास से कमाल हासिल हो जाता है ।

कार-आगाह—(फ़ा०) (वि०) जो आदमी काम की स्थिति से परिचित हो ।

कार-आज़मूदा—(फ़ा०) (वि०) तजुर्बेकार, अनुभवी ।

कार-आमद—(फ़ा०) (वि०) उपयोगी, मुफ़ीद-मतलब, ज़रूरी ।

कार-करदा—(फ़ा०) (वि०) अनुभवी, तजुर्बे-कार ।

कार-किश्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) खेती-बारी, ज़राअत।

कार-कुन—(फ़ा०) (सं० पु०) काम करने वाला, कारिन्दा, मैनेजर।

कार-ख़ाना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) मकान कोठी, फ़ेक्टरी; (२) एक ऊँची चौकी जिस पर बैठ कर गोटा-किनारी बुनते हैं; (३) काम-धंधा, व्यवसाय, कार-बार; (४) घटना, दृश्य; (५) प्रबंध, इन्तज़ाम; (६) क्रिया।

कारख़ाना-दार—(फ़ा०) (सं० पु०) कारख़ाने का मालिक।

कार-ख़ास—(फ़ा०) (सं० पु०) ख़ास काम, विशेष कार्य।

कार ख़ैर—(फ़ा०) (सं० पु०) नेक काम, भलाई का काम, पुण्य का काम।

कार-गर—(फ़ा० (वि०) प्रभावशाली, मुफ़ीद, लाभ प्रद।

कार-गाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) जुलाहों का करघा; कारख़ाना।

कार-गुज़ार—(फ़ा० (वि०) काम में होशयार, चालाक, मुस्तैद।

कार-गुज़ारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) बहुत काम करना, मुस्तैदी से काम करना; (२) होशयारी, दक्षता, कर्तव्य-पालन।

कार-चोब—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) लकड़ी का चौखटा जिस पर कपड़ा तान कर ज़र-दोज़ी का काम किया जाता है, अड्डा; (२) एक क़िस्म का कशीदा जो लकड़ी के चौखटे पर फैला कर काढ़ा जाता है; (३) ज़र-दोज़।

कार-चोबी—(फ़ा०) (वि०) ज़र-दोज़ी किया हुआ। (सं० स्त्री०) कशीदा-कारी, गुल-कारी, ज़र-दोज़ी।

कार-ज़ार—(फ़ा०) (सं० पु०) जंग, लड़ाई, युद्ध।

कार-ज़ारी—(फ़ा०) (वि०) जंगी आदमी, लश्करी, योद्धा।

कारद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) चाक़ू, छुरी।

कार-दां—(फ़ा०) (वि०)—अनुभवी, दक्ष, तजुर्बे-कार।

कार-दानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वाक़िफ़-कार होना, मामला समझना।

कार-दार—(फ़ा०) (सं० पु०) वज़ीर, कार-गुज़ार, आमिल।

कार-नामा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) तारीख़ की किताब; (२) दस्तूर-अमल।

कार-परदाज़—(फ़ा०) (सं० पु०) कार-कुन, काम करने वाला, कारिन्दा।

कार-परदाज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) कारिंद-गरी।

कार-फ़रमा—(फ़ा०) (वि०) हाकिम; उस्ताद, आचार्य; बादशाह, हुक्म करने वाला।

कार-फ़रमाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) हुक्म करना, आज्ञा करना।

कार-बरारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मतलब निकालना, कार-रवाई।

कार बन्द—(फ़ा०) (वि०) आज्ञा पालन करने वाला, तामील करने वाला।

कार-बार—(उ०) (सं० पु०) काम, व्यवसाय, शग़ल; लेन-देन का व्यापार।

कार-बारी—(फ़ा०) (सं० पु०) काम काज का आदमी, काम-धंधा करनेवाला।

कार रवाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) काम का जारी करना, तदबीर, प्रबंध, बंदोबस्त।

कारवां—(फ़ा०) (सं० पु०) यात्रियों का दल, क़ाफ़िला।

कारवां-सराय—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सराय, यात्रियों के ठहरने का जगह।

कार शनास—(फ़ा० (वि०) कार-आज़-मूदा, अनुभवी।

कारसाज़—(फ़ा०) (वि०) कार्य बनाने वाला, काम संभालने वाला।

कारसाज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) काम बनाना, काम की दुरुस्ती; (२) चालाकी, ऐय्यारी, दग़ा-बाज़ी ।

कारस्तानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) चालाकी, ऐय्यारी, साज़िश, होशयारी, शरारत ।

कारिन्दा—(फ़ा०) (सं० पु०) कार-कुन, मुख़्तार, मैनेजर ।

कारी—(फ़ा०) (वि०) (१) प्रभावशाली, असर दिखाने वाला; (२) घातक, गहरा, पूरा-पूरा; (३) बा-असर, कार-आमद ।

क़ारी—(अ०) (सं० पु०) पढ़ने वाला; .कुरान पढ़ने वाला ।

कारीगर—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) हुनर-मंद, दस्तकार, (२) होशयार (३) मोची, चमार; (४) मेमार ।

कारीगरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) हुनर-मंदी, दस्तकारी, उस्तादी, होशयारी, दक्षता; (२) सुन्दर बनावट; (३) (व्यंग्य में) नादानी, मूर्खता, बेसलीक़ी ।

क़ारूं—(अ०) (सं० पु०) (१) प्राचीन काल के एक बड़े धनवान व्यक्ति का नाम। कहते हैं इसने बहुत रुपया जमा किया था। चालीस ख़च्चरों पर तो इसके ख़ज़ाने की कुंजियाँ लदती थीं। हज़रत मूसा ने इससे कुछ अंश ख़ैरात करने को कहा पर इसने नहीं माना। अन्त में उनके श्राप से अपने सब माल के साथ ज़मीन में धँस गया; (२) कंजूस मालदार। क़ारूं का ख़ज़ाना—बहुत बड़ा ख़ज़ाना, अपार धन ।

क़ारूरा—(अ०) (सं० पु०) (१) शीशा, शीशी, जिसमें पेशाब रख कर हकीम को दिखलाते हैं; (२) मूत्र, पेशाब; (३) बारूद की कुप्पी जिसमें आग लगा कर दुश्मन पर फेंकते हैं; (४) बरछी या तीर का फल। क़ारूरा मिलना—बहुत ज़्यादा मेल होना ।

कारे दारद—मुश्किल है, आसान नहीं है ।

कार्रवाई—(फ़ा०) (स० स्त्री०) देखो-'काररवाई ।'

क़ाल—(अ०) (सं० पु०) गुफ़्तगू, बहस, वाद-विवाद। क़ाल ओ क़ील—तकरार, बहस, हुज्जत ।

कालबुद, कालबूत—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) शरीर, तन, बदन; (२) वह ढाँचा जिस पर रख कर मोची जूता सीते हैं; (३) क़ालिब, साँचा ।

क़ाल-मक़ाल—(अ०) (सं० स्त्री०) बड़ी भारी चाल, लंबी चौड़ी बात ।

क़ालिब—(अ०) (सं० पु०) (१) साँचा, लकड़ी का वह ढाँचा जिस पर रखकर टोपी या पगड़ी बनाते हैं; (२) तन, बदन, शरीर; (३) छापा। क़ालिब बदलना—दूसरा शरीर धारण करना ।

क़ाली, क़ालीन—(तु०) (सं० पु०) ग़ालीचा, एक क़िस्म का बिछौना ।

काबा—(फ़ा०) (सं० पु०) मक्का शहर का वह पवित्र स्थान जहाँ हज करने वाले जाते हैं ।

कावाक—(फ़ा०) (वि०) (१) ख़ाली, खुक्कल; (२) बेडौल ।

काविश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) तलाश, खोज; (२) रंज, दुश्मनी, बैर ।

काश, काश के—(फ़ा०) (अव्यय) ईश्वर करे ऐसा हो (प्रार्थना और खेद सूचक) ।

क़ाश—(तु.) (सं० स्त्री०) लंबा टुकड़ा जो काटा गया हो, फाँक ।

काशाना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) घर, मकान; (२) घोंसला ।

काशिफ़—(अ०) (वि०) खोलनेवाला, ज़ाहिर करनेवाला ।

क़ाशे-ज़ीन—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ज़ीन के आगे पीछे के तकिये जो क़ाश की तरह के होते हैं ।

काश्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) खेती; (२) जोती बोयी जानेवाली ज़मीन ।

काश्तकार—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) किसान, जोता, असामी, खेतिहर; (२) जो ज़मीन लगान पर लेकर जोतने-बोने का हक़ हासिल करे।

काश्त-कारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) किसानी, खेती-बाड़ी; (२) बोना जोतना।

कासनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) एक दवा का नाम; (२) सुर्ख़ी-मायल नीला रंग (जो कासनी के फूल का होता है)।

कासा—(अ०) (सं० पु०) प्याला, कटोरा। कासए-गदाई—भीख का ठीकरा।

कासा-बाज़—(फ़ा०) (वि०) (१) बाज़ीगर जो कासे से खेल करता है; (२) हीला गर, बहाने-बाज़, मक्कार।

कासा-बाज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मक्कारी, धोखा।

कासिद—(अ०) (वि०) बे-क़द्र, खोटा, नाक़िस, जिसका चलन न हो।

क़ासिद—(अ०) (सं० पु०) (१) क़स्द या इरादा करने वाला; (२) दूत, पत्र-वाहक, सन्देश-वाहक, नामा-वर, एलची।

क़ासिम—(अ०) (वि०) बाँटनेवाला, तक़सीम करने वाला। क़ासिम-महरूम—बाँटने वाले को हिस्सा नहीं मिलता।

कासिर—(अ०) (वि०) तोड़नेवाला।

क़ासिर—(अ०) (वि०) (१) कोताही या कमी करने वाला, मजबूर; (२) असमर्थ। क़ासिर होना—मजबूर होना, किसी काम में कोताही करना।

क़ासिरे-हिम्मत—(अ०) (वि०) कम-हिम्मत, बे-हौसला।

कास्त—(फ़ा०) (सं० पु०) कम होना, घट जाना।

काह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) सूखी घास; (२) तिनका।

क़ाहिरा—(अ०) (वि०) ज़बर-दस्त। (सं० पु०) मिस्र की राजधानी का नाम।

काहिल—(अ०) (वि०) सुस्त, आलसी, आराम-तलब।

काहिली—(अ०) (सं० स्त्री०) सुस्ती, आलस्य, आराम-तलबी।

काहिले-वजूद—(अ०) (सं० पु०) सुस्त आदमी, आलसी।

काहिश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) कमी, त्रुटि अवनति, ज़वाल।

काहिशे-जान—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वह सदमा जो जान को घटाए, तकलीफ दे।

काही—(फ़ा०) (वि०) घास के रंग का, स्याही-मायल हरा।

काहीदगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दुबला होना, सूखा होना।

काहीदा—(फ़ा०) (वि०) (१) घटा हुआ, दुबला; (२) आशिक़।

काहू (अ०) (सं० पु०) एक पौदे का नाम जिसके बीज दवा में काम आते हैं।

कि—(फ़ा०) (अव्यय) (१) तत्क्षण, इतने में; (२) या, अथवा; (३) क्योंकि, इसलिए कि, जैसा कि।

किज़्ब—(अ०) (सं० पु०) झूठ, मिथ्या बात।

क़िता—(अ०) (सं० पु०) (१) ज़मीन का टुकड़ा, हिस्सा; (२) पुरज़ा, परचा; (३) एक प्रकार की कविता-रचना जिसमें दो शैर से कम नहीं होते।

किताब—(अ०) (सं० स्त्री०) पुस्तक, ग्रन्थ। किताब का कीड़ा—वह मनुष्य जो हर समय पुस्तकावलोकन करता रहे।

किताबत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) लिखना, लिखाई, कापी-नवीसी; (२) पत्र, ख़त। ख़त-किताबत—पत्र-व्यवहार।

क़िता-बन्द—(अ०) (सं० पु०) वह बेतें जिनके मानी बग़ैर दूसरी बेत के मिलाये पूरे न हों।

किताबा—(अ०) (सं० पु०) लेख।

किताबी—(अ०) (वि०) किताब या पुस्तक-सम्बन्धी। (सं० पु०)—यहूदी और ईसाई।

किताबी-चहरा, किताबी-रुख़—किसी क़दर लांबा चहरा।

किताबे-आसमानी, किताबे-इलाही—(अ०) (सं०स्त्री०) .क़ुरान शरीफ़, मुसलमानों की धर्म-पुस्तक।

क़िताल—(अ०) (सं० स्त्री०) हथियारों की लड़ाई, ख़ूं-रेज़ी।

किनायत—(अ०) (सं० स्त्री०) किनाया, इशारा।

किनायतन्—(अ०) (क्रि० वि०) इशारे से, संकेत से।

किनाया—(अ०) (सं० पु०) इशारा, संकेत, गुप्त बात। किनाया में कहना—साफ़ न कहना, स्पष्ट शब्दों में न कहना, इशारे से मतलब प्रकट करना।

किनार—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) बग़ल; (२) चूमना और गले लगाना। (सं० पु०)—किनारा, तट। दर किनार—अलग रहे, बात दूसरी है।

किनारा—(फ़ा०) (सं० पु०) देखो—'कनारा'।

किनारा-कश—(फ़ा०) (वि०) अलग रहनेवाला, संबन्ध न रखनेवाला।

किनारी—(उ०) (सं० स्त्री०) पतला गोटा जो स्त्रियाँ डुपट्टे साड़ी के किनारे पर लगाती हैं।

किनारी-बाफ़—(उ०) (सं० पु०) किनारी बुननेवाला।

किफ़ायत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) काफ़ी होना, बहुत होना, नफ़ा, लाभ; (२) कम ख़र्ची, मित-व्ययिता; (३) बचत, कमी।

किफ़ायत-शिआर—(अ०) (वि०) कम ख़र्च करनेवाला, मित-व्ययी।

किफ़ायत-शिआरी—(अ०) (सं० स्त्री०)—कम-ख़र्ची, मित-व्ययिता।

किफ़ायती—(अ०) (वि०) कम ख़र्च करने वाला, मित-व्ययी।

क़िबला—(अ०) (सं० पु०) (१) पश्चिम दिशा, जिस ओर मुख करके नमाज़ पढ़ी जाती है; (२) काबा, मक्का; (३) पिता, वालिद; (४) (आदर-सूचक) पूज्य, हु.जूर, जनाब; (५) (व्यंग में) बड़ा चालाक। क़िबला ओ काबा—आदर सूचक शब्द। किबला ओ काबा समझना—बु.ज़ुर्ग समझना।

क़िबला-कौनेन—(अ०) (सं० पु०) (आदर-सूचक, बाप, चचा।

क़िबला-गाह—(अ०) (सं० पु०) (आदर-सूचक संबोधन) बु.ज़ुर्ग, हिमायती।

क़िबला-नुमा—(अ०) (सं० पु०) एक यंत्र जिससे क़िबला की दिशा जानी जाय।

क़िबला-रू—(अ०) (वि०) वह शख़्स या चीज़ जिसका मुँह क़िबला की तरफ़ हो।

किब्र—(अ०) (सं० पु०) (१) बु.ज़ुर्गी, बड़प्पन, वृद्धावस्था; (२) घमंड, .ग़ुरूर।

किब्रिया—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) बु.ज़ुर्गी, बड़प्पन; (२) (पु०) ईश्वर का नाम।

किब्रियाई—(अ०) (सं० स्त्री०) बड़प्पन, बु.ज़ुर्गी, ऊँचा दर्जा।

किब्री—(अ०) (वि०) बहुत बड़ी, बहुत बुज़ुर्ग। (सं० स्त्री०)—बु.ज़ुर्ग औरत।

क़िब्लए-आलम—(अ०) (सं० पु०) (१) (आदर में) बादशाहों की उपाधि या सम्बोधन; (२) ध्रुव तारा।

क़िब्लए-हाजात—(अ०) (सं० पु०) सब की हाजतों को रफ़ा करने वाला, कामना पूरी करने वाला।

क़िमार—(अ०) (सं० पु०) जुआ, हर बाज़ी जिसमें शर्त हो।

क़िमार-ख़ाना—(अ०) (सं० पु०) जुआ-घर, जुआ खेलने की जगह।

क़िमार-बाज़—(अ०) (सं० पु०) जुआरी, जुआ खेलने वाला।

क़िमारिया—(लख०) (वि०) चालाक, मक्कार।

क़िमाश—(तु०) (सं० स्त्री०) (१) क़िस्म, तरह, प्रकार, ढंग; (२) गंजफ़े की एक बाज़ी का नाम; (३) रेशम का कपड़ा।

क़ियाफ़ा—(अ०) (सं० पु०) सूरत, शक्ल, चहरा; (२) सूरत देखकर भला बुरा पहचानना। देखो—'क़याफ़ा'।

क़िरअत—(अ०) (सं० स्त्री०) क़ुरान का अरब के ख़ास लहजे में पढ़ना।

क़िरतास—(अ०) (सं० पु०) काग़ज़।

किरदार—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) कार्य, काम; (२) ढंग, शैली।

क़िरमिज़ी—(अ०) (सं० पु०) एक प्रकार का लाल रंग। (वि०)—लाल रंग का।

क़िरात—(अ०) (सं० स्त्री०) अच्छे ढंग से पढ़ना। देखो—'क़िरअत'।

क़िरान—(अ०) (सं० पु०) (१) दो ग्रहों का एक राशि पर मिलना; दो ग्रहों का एक जगह जमा होना, (२) एक जगह जमा होना; (३) शुभ संयोग, शुभ योग। साहबे-क़िरान—भाग्यवान्, अच्छे योग में जन्म लेनेवाला।

किराम—(अ०) (वि०) 'करीम' का बहुवचन।

किराया—(अ०) (सं० पु०) भाड़ा, दूसरे की चीज़ के काम में लाने का बदला।

किर्दगार—(फ़ा०) (सं० पु०) सृष्टि का रचयिता, विधाता, ईश्वर।

किर्म—(फ़ा०) (सं० पु०) कीड़ा।

किर्म-ख़ुर्दा—(फ़ा०) (वि०) पुराना, बोसीदा, कीड़ों का खाया हुआ।

किर्म-पीला—(फ़ा०) (सं० पु०) रेशम का कीड़ा।

किर्म-शब-अफ़रोज़, किर्म-शबे-चिराग़ किर्म-शब-ताब—(फ़ा०) (सं० पु०) जुगनूं, पटबीजना।

किलक—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) नरसल, जिसकी क़लम बनती है।

क़िलक़ारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) आवाज़ के साथ हँसना (बच्चों का)।

क़िला—(अ०) (सं० पु०) (१) गढ़, दुर्ग; (२) एक क़िस्म की आतिश-बाज़ी; (३) क़िले की फ़ौज।

क़िला-कुशा—(फ़ा०) (वि०) क़िला जीतने वाला।

क़िलादा—(अ०) (सं० पु०) पट्टा।

क़िला-बन्द—(फ़ा०) (वि०) क़िले में पनाह लेनेवाला।

क़िले-दार—(फ़ा०) (वि०) क़िले का अफ़सर, गढ़-पति।

किलक—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) नरसल या नेज़ा जिसकी क़लम बनाते हैं; (२) क़लम।

क़िल्लत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) कमी, कमयाबी, न्यूनता; (२) कठिनता, दिक़्क़त।

क़िवाम—(अ०) (सं० पु०) शीरा, चाशनी।

किश-मिश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सूखे हुए अंगूर, छोटी दाख।

किश मिशी—(फ़ा०) (वि०) (१) किश-मिश के रंग का; (२) जिसमें किश-मिश मिली हो। (सं० पु०) एक प्रकार का रंग।

किशवर—(फ़ा०) (सं० पु०) देश, विलायत, मुल्क।

किशवर-कुशा, किशवर-गीर, किशवर-सितां—(फ़ा०) (वि०) बादशाह, शासक, हाकिम, मालिक।

किश्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) खेती-बारी, खेती; (२) (शतरंज में) शह।

किश्तज़ार—(फ़ा०) (सं० पु०) खेत।

किश्ती—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) नाव, नौका; (२) शराब पीने की एक क़िस्म की

प्याली; (३) सर में तेल डालने की प्याली; (४) छोटी आलमारी, रैक; (५) कासा-गदाई, भीख माँगने का प्याला।

किश्तीबान—(फ़ा०) (सं० पु०) मल्लाह।

क़िश्र—(अ०) (सं० पु०) छिलका, छाल।

किश्वर—(फ़ा०) (सं० पु०) देश, मुल्क, विलायत।

किसवत—(अ०) (सं० स्त्री०) देखो—'किस्वत'।

किसरा—(फ़ा०) (सं० पु०) फ़ारस के बादशाहों की उपाधि।

क़िसस—(अ०) (सं० पु०) 'क़िस्सा' का बहुवचन।

क़िसास—(अ०) (सं० पु०) ख़ून का बदला, ख़ून या हत्या का बदला लेना।

क़िस्त—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) वह रुपया जो थोड़ा थोड़ा करके वादे के अनुसार चुकाया जाय; (२) किसी काम के टुकड़े जिनको करने का समय निश्चित हो।

क़िस्त-ख़िलाफ़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) क़िस्त देने में चूक होना।

क़िस्त-बन्दी—(अ०) (सं० स्त्री०) थोड़ा थोड़ा करके कई बार में रुपया देने का तरीक़ा; क़िस्त निश्चय करना।

क़िस्त वार—(अ०) (क्रि० वि०) क़िस्त के अनुसार।

किस्वत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) लिबास, पोशाक; (२) नाई की पेटी।

क़िस्म—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) प्रकार, तरह; (२) ढंग, वज़ा, चाल।

क़िस्मत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) भाग्य, नसीब, तक़दीर, प्रारब्ध; (२) कमिश्नरी, जिसमें कई ज़िले हों; (३) सूबा, अहाता।

क़िस्मत-आज़माई—(अ०) (सं० स्त्री०) भाग्य की परीक्षा।

क़िस्मत-वर—(अ०) (वि०) भाग्य-शाली।

क़िस्सा—(अ०) (सं० पु०) (१) कहानी, आख्यान, (२) वृत्तांत, हाल, बयान, वर्णन; (३) लड़ाई, हुज्जत, तकरार, घटना। **क़िस्सा अपने सर मोल लेना**—बखेड़े में पड़ना। **क़िस्सा आख़िर होना**—झगड़ा ख़तम होना। **क़िस्सा उठना**—झगड़ा खड़ा होना। **क़िस्सा कोताह करना**—झगड़ा तय करना। **क़िस्सा खड़ा करना**—झगड़ा उठाना। **क़िस्सा निकालना**—बहाना बनाना, झगड़ा निकालना। **क़िस्सा पड़ना**—आपस में झगड़ा होना। **क़िस्सा पाक करना**—झगड़ा तय करना। **क़िस्सा यकसू हो जाना**—झगड़ा तय हो जाना।

क़िस्सा-कोताह—(अ०) (क्रि० वि०) तात्पर्य यह है कि, अल ग़रज़।

क़िस्सा-ख़्वाँ—(अ०) (सं० पु०) क़िस्सा सुनाने वाला।

क़िस्सा-ख़्वानी—(अ०) (सं० स्त्री०) क़िस्सा सुनाना, कहानी कहना।

क़ीक़ मारना—(औ०) ज़ोर से चीख़ना।

कीन, कीना—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) वैर, अदावत, दुश्मनी; (२) फ़रेब, कपट।

कीना-वर—(फ़ा०) (वि०) वैर रखने वाला, दुश्मन।

क़ीफ़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक बर्तन जिसका मुँह ऊपर से खुला हुआ होता है और नीचे एक नली लगी होती है जिससे पतली चीज़ें आसानी से बोतलों में भरी जा सकती हैं।

क़ीमत—(अ०) (सं० स्त्री०) मूल्य, दाम।

क़ीमती—(अ०) (वि०) बहु-मूल्य।

क़ीमा—(अ०) (सं० पु०) रेज़ा रेज़ा किया हुआ गोश्त।

कीमिया—(यू०) (सं० स्त्री०) (१) रसायन शास्त्र; (२) रासायनिक क्रिया, रसायन; (३) रसायन, अक्सीर, निहायत मुफ़ीद। **कीमिया बनाना**—(१) चाँदी सोना बनाना, (२) मतलब हासिल करना, आसानी से जीविका कमाना।

कीमिया-गर, कीमिया-साज़—(अ०) (सं० पु०) रसायन बनानेवाला।

कीमुख़्त—(फ़ा०) (सं० पु०) घोड़े या गधे का चमड़ा जिसको दाने-दार बना कर हरा रंगते हैं और जूते बनाते हैं।

क़ीर—(अ०) (सं० पु०) (१) एक क़िस्म का स्याह रौग़न जो किश्तियों और जहाज़ों पर लगाया जाता है ताकि दरज़ों से पानी न आवे; (२) बिलकुल स्याह।

क़ीरात—(अ०) (सं० पु०) एक वज़न।

क़ील ओ क़ाल—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) बात-चीत, गुफ़्तगू; (२) तकरार, हुज्जत, बहस, विवाद।

कीसा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) थैली; (२) जेब, पाकट, खीसा।

कुंज—(फ़ा०) (सं० पु०) किनारा, कोना।

कुंजद—(फ़ा०) (सं० पु०) तिल।

कुंजड़ा—(हि०) (सं० पु०) तरकारी बेचने वाला। कुंजड़े-कसाई—नीचे दरजे के लोग। कुंजड़े का ग़ल्ला—ऐसा हिसाब जिसकी आमदनी और ख़र्च का पता न चले, गड़बड़-हिसाब।

कुंजे-क़फ़स—(फ़ा०) (सं० पु०) पिंजर का कोना।

कुंजे-ख़िलवत, कुंजे-तनहाई—(फ़ा०) (सं० पु०) कामिल तनहाई, बिलकुल एकान्त।

कुंजे-दहन—(फ़ा०) (सं० पु०) मुँह का कोना।

कुक़नस—(यू०) (सं० पु०) एक अत्यन्त सुन्दर और सुरीले पक्षी का नाम।

कुजा—(फ़ा०) (क्रि० वि०) कहाँ, किस जगह।

.कुज़ात—(अ०) (सं० पु०) 'काज़ी' का बहुवचन।

कुतका—(तु०) (सं० पु०) (१) मोटा और बड़ा डंडा; (२) पुरुष का लिंग।

कुताबा—(अ०) (सं० पु०) (१) वह लेख जो क़ब्र या मसजिद वग़ैरह के पत्थर पर खुदवा कर लगाते हैं; (२) वह गद्य या पद्य जो किसी की प्रशंसा में पत्थर पर लिखते हैं।

कुतुब—(अ०) (सं० पु०) पुस्तकें। ('किताब' का बहुवचन)।

कुतुब-ख़ाना—(अ०) (सं० पु०) पुस्तकालय।

.कुतुब-नुमा—(अ०) (सं० पु०) देखो—'.कुत्बनुमा'।

कुतुब-फ़रोश—(अ०) (सं० पु०) किताब बेचनेवाला, पुस्तक-विक्रेता।

.कुत्ती—(तु०) (सं० स्त्री०) अंगूर की पिटारी।

.कुत्ब—(अ०) (सं० पु०) (१) ध्रुव तारा; (२) वह कील जिस पर चक्की घूमती है; (३) वह कीली जिस पर कोई चीज़ घूमे; (४) सालार, सरदार, नायक, नेता; (५) वह वली-अल्लाह जिस पर दुनिया के इन्तज़ाम और देख-भाल का दायित्व हो। (वि०)—उम्दा।

.कुत्ब-नुमा—(अ०) (सं० पु०) दिशा जानने का यंत्र, दिग्दर्शक यंत्र।

.कुत्बी—(अ०) (वि०) (१) .कुत्ब से संबंधित; (२) (उ०) (स्त्री०) याक़ूत (मानक) या पन्ना का छोटा नगीना।

कुत्र—(अ०) (सं० पु०) वह सीधी रेखा जो वृत्त के केन्द्र में होती हुई उसे दो बराबर हिस्सों में बाँटे।

.कुदरत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) शक्ति, ताक़त, ज़ोर, प्रभुत्व, मजाल; (२) प्रकृति, माया; ईश्वर की शान, प्रभुता; (३) कारीगरी, बनावट, रचना। .कुदरत के कारख़ाने, .कुदरत के खेल—ईश्वर की लीला। .कुदरत का खिलौना—जो जन्म से ही सुन्दर हो। .कुदरत पाना—क़ाबू हासिल करना, अधिकार प्राप्त करना।

क़ुदरत रखना—योग्यता रखना, लायक़ होना ।

क़ुदरती—(अ०) (वि०) (१) असली, स्वाभाविक, प्राकृतिक; (२) दैवी, ईश्वरीय ।

क़ुदरी करना—(उ०) (औ०) कोशिश करना, दबाव डालना ।

क़ुद्स—(अ०) (वि०) पाक, पवित्र ।

क़ुदसिया—(अ०) (वि०) (स्त्री०) पवित्र, पाक ।

क़ुदसियान—(अ०) (सं० पु०) फ़रिश्ते ।

क़ुदसी—(अ०) (वि०) (१) पवित्र, पाक; (२) फ़रिश्ता, देव-दूत ।

क़ुदुस—(अ०) (वि०) पाक, पवित्र, मुतबर्रक, मुकद्दस ।

कुद्दस—(अ०) (वि०) पाक, मुबारक, ईश्वर ।

कुन—(फ़ा०) (वि०) करने वाला, कर्त्ता (यौगिक शब्दों के अन्त में) ।

कुनह—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) बात की तह, बारीकी, तत्त्व, तथ्य; (२) सूक्ष्मता । (फ़ा०) (सं० स्त्री०)—कीना, वैर, द्वेष ।

कुनार—(फ़ा०) (सं० पु०) बेर (फल) ।

कुन्द—(फ़ा०) (वि०) (१) भौंतरा, कुंठित; (२) मन्द, सुस्त, काहिल । कुन्द-ज़हन—मन्द-बुद्धि, ठस । कुन्द छुरी से हलाल करना—बहुत पीड़ा देना ।

कुन्दा—(उ०) (सं० पु०) (१) परन्द का बाज़ू ; (२) पैजामे की लंबी तिकोनिया कली; (३) बंदूक़ की वह तिकोनी लकड़ी जिसमें घोड़ा और नाल लगा होता है; (४) बंदूक का पिछला हिस्सा; (५) दस्ता, क़ब्ज़ा; (६) खोया, मावा । कुन्दा कसना, कुन्दा भूनना—दूध का खोया बनाना । कुन्दा चढ़ाना—बंदूक़ की नाल में लकड़ी का दस्ता लगाना । कुन्दे तोलना—(१) परन्द का अपने पर समेट कर अपने बाज़ुओं को उड़ने के मतलब से हिलाना ; (२) कहीं जाने का इरादा करना ।

कुन्दा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) मोटी लकड़ी का टुकड़ा; (२) लकड़ी का वह मोटा टुकड़ा जिस पर गोश्त रखकर क़स्साब कीमा बनाते हैं; (३) दरख़्त का तना; (४) सूराख़-दार मोटी लकड़ी जिसमें मुजरिमों के पाँव डालते हैं । (वि०) खुदा हुआ । कुन्दए-नातराश—बेतमीज़, बे-सलीक़ा, जाहिल, मूर्ख, गँवार ।

कुन्दी—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) मोगरी जिससे धोबी कपड़ों को कूट-कूट कर दुरुस्त करते हैं; (२) मार-पीट । कुन्दी करना—ख़ूब पीटना, मारना ।

कुन्दी-गर—(हि०) (वि०) रेशमी और उम्दा कपड़ों को साफ़ करनेवाला ।

कुन्नियत—(अ०) (सं० स्त्री०) वंश का नाम; गोत्र ।

क़ुफुल—(अ०) (सं० पु०) देखो 'क़ुफ़्ल' ।

कुफ़्फ़ार—(अ०) (सं० पु०) (१) 'काफ़िर' का बहुवचन ।

कुफ़्र—(अ०) (सं० पु०) (१) नास्तिकता, इस्लाम को न मानना; (२) ज़िद, हठ ।

कुफ़्र तोड़ना—ज़िद दूर करना, कोई बात किसी को मुश्किल से मनवाना ।

क़ुफ़्ल—(अ०) (सं० पु०) ताला ।

क़ुफ़्ल-बन्द—(अ०) (वि०) वह चीज़ जिसमें ताला लगा हो ।

क़ुफ़्ली—(उ०) (सं० स्त्री०) (१) ढकनेदार बर्तन—जैसे बरफ़ की क़ुफ़्ली; (२) पेच-दार बर्तन जो एक दूसरे में फँस जाते हैं; (३) पहलवानों का एक पेच ।

क़ुबूल—(वि०) देखो 'क़बूल' ।

कुब्बा—(अ०) (सं० पु०) गुम्बद, बुर्ज, गेंद की सूरत का कलश ।

कुब्ल—(अ०) (सं० स्त्री०) औरत की योनि ।

.कुम—(अ०) (सं० पु०) जी उठ, उठ कर खड़ा हो। (ईसा यह कह कर मुरदे को खड़ा करते थे)

कुमक—(तु०) (सं० स्त्री०) (१) सहारा, सहायता; मदद; (२) पक्षपात, हिमायत।

.कुमकुमा—(अ०) (सं० पु०) (१) एक क़िस्म की छोटी क़न्दील, (२) एक क़िस्म का शीशे का गोला जो छतों में लटकाते हैं; (३) लाख का गोला जिसमें अबीर-गुलाल और रंग भरते हैं और होली में एक दूसरे पर फेंकते हैं।

.कुमरी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) एक जाति की चिड़िया, फ़ाख़्ता; (२) एक भीख माँगने-वाली जाति की स्त्री; (३) आशिक़।

कुमाज़—(तु०) (सं० स्त्री०) (१) वह रोटी जो कहीं पर पतली और कहीं पर मोटी हो; (२) मोटी और गोल चीज़।

कुम्मैत—(अ०) (सं० पु०) (१) स्याही-माइल सुर्ख़ रंग का घोड़ा; (२) स्याही-माइल सुर्ख़ रंग।

.कुरआ—(अ०) (सं० पु०) (१) पाँसा, जिससे रमल वाले भविष्य बतलाते हैं; (२) कबूतर की आँख का एक ऐब।

.कुरआ-अन्दाज़—(फ़ा०) (सं० पु०) रम्माल, पाँसा फेंकने वाला।

.कुरक़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) रोक-टोक; किसी देन-दार की जायदाद पर रोक लगा देना; ज़ब्ती।

कुरता—(तु०) (सं० पु०) पहनने का कुर्ता।

कुरतास—(अ०) (सं० पु०) काग़ज़।

.कुरबत—(अ०) (सं० स्त्री०) नज़दीकी, पास होना, सामीप्य। .कुरबत करना—सोहबत करना।

.कुरबान—(अ०) (सं० पु०) (१) वह तसमा जिसमें तरकश बँधा हुआ पीठ पर लटकता है; (२) सदक़े, .कुरबान होना।

.कुरबान गाह—(अ०) (सं० स्त्री०) .कुर-बानी करने की जगह।

.कुरबानी—(अ०) (सं० स्त्री०) बलि, वह जानवर जो .ख़ुदा की राह में बलि किया जाय।

कुरवी—(अ०) (वि०) गोल, कुरह की शक्ल का।

.कुरसी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) छोटा तख़्त; (२) अक्षरों का सुन्दर और बराबर होना; (३) आठवाँ आसमान; (४) मकान या इमारत की तह की ऊँचाई; (५) पीढ़ी, पुश्त, ख़ानदान; (६) ज़ीना, दरजा, (७) ऊँचाई जो मकान के सहन से ज़्यादा हो। कुरसी का अहमक़ (लख०)—कुरसी अवध में एक क़स्बे का नाम है जहाँ के निवासी मूर्ख समझे जाते हैं; बिलकुल बेवक़ूफ़।

कुरसी-नामा—(अ०) (सं० पु०) वंश-वृक्ष, शजरा।

कुरह—(फ़ा०) (सं० पु०) हर एक गोल चीज़, गोला।

कुरह-ए-आब—(फ़ा०) (सं० पु०) वह पानी जिसने कुल ज़मीन को घेर रक्खा है।

कुरह-ए-ज़मीन—(फ़ा०) (सं० पु०) ज़मीन का गोला, कुल ज़मीन।

.कुराज़ा—(अ०) (सं० पु०) रेज़ा जो काटने से गिरे, सोने-चाँदी के टुकड़े।

.कुरान—(अ०) (सं० पु०) मुसलमानों की धर्म-पुस्तक, कलाम-अल्लाह।

.कुरान-ख्वाँ—(अ०) (वि०) .कुरान पढ़ने वाला।

कुरीज़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पक्षियों का पुराने पर झाड़ कर नये पर निकालना। (वि०) मक्कार, बहानेबाज़, कपटी।

कुरेज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मक्कारी, कपट।

.कुरैश—(अ०) (सं० पु०) अरब का एक मशहूर क़बीला (वर्ग) जो मान-प्रतिष्ठा में

सबसे ऊपर है। मोहम्मद साहब इसी क़बीले के थे।

.क़ुरैशी—(अ०) (वि०) .क़ुरैश क़बीले का।

.क़ुर्क़—(अ०) (वि०) ज़ब्ती, बंदिश, रोक ज़ब्त किया हुआ। .क़ुर्क़ करना—ज़ब्त करना; (औ०) रोब बिठाना। .क़ुर्क़ बिठाना—(औ०) रोक-टोक करना, हुक्म चलाना। .क़ुर्क़ ले जाना—सबक़त ले जाना, बढ़ जाना।

.क़ुर्क़ अमीन—(अ०) (सं० पु०) अदालत का वह कर्मचारी जो .क़ुर्क़ी करता है।

.क़ुर्क़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) देखो—'.क़ुरक़ी' माल असबाब का ज़ब्त होना जब तक अदालत रिहा न करे।

.क़ुर्ब—(अ०) (सं० पु०) (१) नज़दीकी, सामीप्य, पास होना; (२) मर्तबा, पद, मर्यादा।

.क़ुर्ब ओ जवार—(अ०) (सं० पु०) आस-पास, गिर्द-नवाह।

.क़ुर्बे रूहानी—(फ़ा०) (सं० पु०) दिली नज़दीकी, आंतरिक सामीप्य।

कुर्र-ए-अर्ज़—(अ०) (सं० पु०) पृथ्वी, पृथ्वी का गोला।

.क़ुर्रत—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) प्रसन्नता, .ख़ुशी।

कु़र्रम—(उ०) (सं० पु०) भड़ुआ, दलाल, पाजी, कमीना।

.क़ुर्रत-उल्-ऐन—(अ०) (सं० पु०) बेटा।

कुर्रा—(अ०) (सं० पु०) (१) गोल चीज़; (२) गेंद की तरह गोल; (३) गेंद। देखो-'कुरह'।

.क़ुराअ—(अ०) (सं० पु०) बहुत से .क़ुरान पढ़ने वाले। 'क़ारी' का बहुवचन।

.क़ुर्स—(अ०) (सं० पु०)—सूर्य-बिम्ब; (२) किसी दवा की टिकिया, वटी, गोली; (३) चाँदी का सिक्का जो अरब में चलता है; (४) एक क़िस्म की मिठाई।

कुलंग—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) एक जल-पक्षी, क़ाज़; (२) लांबी टाँगों वाला आदमी; (३) असील मुर्ग़ा।

कुल—(अ०) (वि०) (१) सब, तमाम, (२) हर, हर एक; (३) सिर्फ़, फ़क़त। कुल-जमा—सारी जमा, सब मिला कर, केवल।

.क़ुल—(अ०) (सं० पु०) (१) फ़ातिहा, दरवेशों के सालाना फ़ातिहा के दिन; (२) ख़ात्मा, काम तमाम होना, जान निकल जाना।

कुलचा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) एक प्रकार की छोटी ख़मीरी रोटी; (२) लकड़ी का गोल गत्ता जो ख़ेमे की चोप में लगा होता है।

कुलज़ुम—(अ०) (सं० पु०) (१) अरब और मिस्र के बीच का समुद्र; (२) निहायत गहरा दरिया।

कुलफ़त—(अ०) (सं० स्त्री०) कष्ट, विपत्ति, चिन्ता, फ़िक्र।

कुलफ़ा—(अ०) (सं० पु०) एक प्रकार का साग, एक भाजी।

कुलफ़ी—(सं० स्त्री०) कुफ़्ली से बिगड़ा हुआ शब्द; देखो-'कुफ़्ली'।

कुल-बुल—(अ०) (सं० स्त्री०) वह शब्द जो पानी उंडेलने में होता है।

कुलमा—(उ०) (सं० पु०) बकरी की अँतड़ी मसाले और क़ीमा के साथ पकाई हुई।

कुल-मुख़्तार—(फ़ा०) (सं० पु०) वह जिसे सब बातों का अधिकार दिया गया हो।

कुलह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) देखो-'कुलाह'।

.क़ुलांच—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) चौकड़ी, कूदना।

.क़ुला—(अ०) (वि०) घोड़े का एक रंग।

.क़ुलाबा—(अ०) (सं० पु०) (१) मोरी, पानी जाने का रास्ता; (२) किवाड़, या संदूक़ को जुड़ा रखनेवाला लोहे का टुकड़ा।

.कुल्लार—(तु०) (सं० पु०) वह सिपाही जो बादशाह की सवारी के साथ चलते थे।
कुलाल—(फ़ा०) (सं० पु०) कुम्हार।
कुलाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) लाँबी टोपी; (२) राज-मुकुट। कुलाह उतारना—बेइज़्ज़त करना।
.कुली—(तु०) (सं० पु०) बोझ उठानेवाला मज़दूर, .गुलाम (नामों में आता है)।
.कुली-गरी, .कुली-गीरी—(तु०) (सं० स्त्री०) .कुली का काम।
कुलीचा—(फ़ा०) (सं० पु०) ख़मीरी छोटी रोटी।
कुलूख़—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) मिट्टी का ढेला जो सख़्त हो गया हो; (२) ईंट का टुकड़ा।
कुलूख़-अन्दाज़—(फ़ा०) (वि०) ढेला मारने वाला।
.कुलूब—(अ०) (सं० पु०) 'क़ल्ब' का बहुवचन; दिल।
कुल्फ़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) देखो-'क़ुफ़्ली'।
कुलबा—(फ़ा०) (सं० पु०) छोटा सा घर।
.कुल्बा—(अ०) (सं० पु०) हल।
.कुल्बा-रानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) हल चलाना, काश्त करना।
कुल्लहुम—(अ०) (क्रि० वि०) कुल, बिलकुल।
कुल्ला—(अ०) (सं० पु०) घोड़े का एक रंग।
.कुल्लाब, .कुल्लाबा—(अ०) (सं० पु०) (१) मछली पकड़ने का काँटा; (२) हल्क़ा, कड़ी।
.कुल्ला-शज़रा—(अ०) (सं० पु०) अंगड़-खंगड़, बोरिया-बंधना।
कुल्लियात—(अ०) (सं० पु०) किसी कवि या लेखक के संपूर्ण ग्रन्थों का संग्रह; सब कृतियों का संग्रह।
कुल्ली—(अ०) (वि०) कुल, सब, पूरा, तमाम। (सं० स्त्री०) समष्टि।

.कुव्वत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) शक्ति, ताक़त, ज़ोर, मजाल; (२) बल, सहारा; (३) सल्तनत, रियासत, राज्य।
कुश—(फ़ा०) (वि०) मार डालने वाला (यौगिक शब्दों में)।
कुशा—(फ़ा०) (वि०) (१) खोलने वाला, विकसित करने वाला; (२) दूर करनेवाला (यौगिक शब्दों के अन्त में)।
कुशादगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) फैला हुआ होना, लंबा-चौड़ा होना; (२) फैलाव, विस्तार।
कुशाद-नामा—(फ़ा०) (सं० पु०) माफ़ी का बादशाही फ़रमान।
कुशादा—(फ़ा०) (वि०) खुला हुआ, विस्तृत, लंबा-चौड़ा। कुशादा-कुशादा—दूर-दूर।
कुशादा-अब्रू—(फ़ा०) (वि०) वह आदमी जिसके भौं के नीचे की जगह ज़्यादा खुली हो।
कुशादा-कफ़—(फ़ा०) (वि०) उदार, जवाँमर्द।
कुशादा-जिबीं, कुशादा-पेशानी—(फ़ा०) (वि०) हँस-मुख, प्रसन्न-वदन।
कुशादे-कार—(फ़ा०) (सं० पु०) सफलता कामयाबी, कामना पूरी होना।
कुशायश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) विस्तार, फैलाव, कुशादगी।
कुशिन्दा—(फ़ा०) (वि०) मारनेवाला।
.कुशुन, .कुशून—(तु०) (सं० पु०) (१) फ़ौज का दस्ता, लश्कर, गिरोह; (२) छावनी, कंप।
कुशूद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) खुलना, फ़ायदा, कामयाबी, सफलता।
कुश्त—(फ़ा०) (सं० पु०) क़त्ल, .ख़ूँ-रेज़ी।
कुश्त-ख़ूँ—(फ़ा०) (सं० पु०) ख़ूँ-रेज़ी।
कुश्तनी—(फ़ा०) (वि०) गर्दन मारने के क़ाबिल।

कुश्तम-कुश्ता—(उ०) (सं० पु०) कुश्ती लड़ना, गुत्थम-गुत्था होना; लिपट पड़ना।

कुश्ता—(फ़ा०) (वि०) हत, जो मार डाला गया हो। (सं० पु०) (१) भस्म, धातुओं की भस्म जो चिकित्सा में काम आती है, रस; (२) मारे हुए की लाश; (३) आशिक़, प्रेमी।

कुश्ती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मल्ल-युद्ध, पकड़, ज़ोर-आज़माई।

कुश्ती-गीर, कुश्ती-बाज़—(फ़ा०) (सं० पु०) कुश्ती लड़ने वाला।

कुस—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) भग, योनि। कुस्सो—बदकार (एक प्रकार की गाली)।

कुसूफ़—(अ०) (सं० पु०) सूर्य-ग्रहण।

कुसूर—(सं० स्त्री०) 'क़सर' का बहु-वचन।

कुहन—(फ़ा०) (वि०) पुराना, क़दीम, प्राचीन।

कुहन-गी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पुराना-पन, बुढ़ापा।

कुहन-साला—(फ़ा०) (वि०) बूढ़ा, बड़ी उम्र का।

कुहन-साली—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बुढ़ापा, ज़ईफ़ी।

कुहना—(फ़ा०) (वि०) पुराना। तपे-कुहना—जीर्ण ज्वर।

कुहना-मश्क़—(फ़ा०) (वि०) अनुभवी, तजुर्बेकार, अभ्यस्त।

कुहराम—(अ०) (सं० पु०) रोना, मातम, कई आदमियों का एक ही मुसीबत पर रोना, आह ओ ज़ारी।

कुहल—(अ०) (सं० पु०) (१) सुरमा; (२) दुर्भिक्ष का वर्ष, सूखा।

कुहल-उल्-जवाहर—(अ०) (सं० पु०) वह सुरमा जिसमें जवाहर पड़े हों।

कुहल - उल् - बसर—(अ०) (सं० पु०) आँखों का सुरमा।

कुहाल—(अ०) (सं० पु०) आँखों का इलाज करने वाला।

कू—(फ़ा०) (सं० पु०) गली, कूचा। कू-ब-कू—गली-गली, दर-दर।

कूए—(फ़ा०) (सं० पु०) गली, कूचा।

कूक—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) सुरीली आवाज़; (२) (अ०) चीख़, किलकारी; (३) घड़ी या बाजे को चलाने के लिए कुंजी देना।

कूच—(फ़ा०) (सं० पु०) प्रस्थान, रवाना होना, चलना, रवानगी। कूच का दिन—मौत का दिन। कूच-मुक़ाम—चलना और ठहरना। कूच करना—(१) सफ़र करना; (२) रवाना होना, (३) रुख़सत होना; (४) दुनिया से गुज़रना, मरना। कूच का नक़्क़ारा करना—मर जाना, मरना। कूच होना—रवानगी होना, मर जाना।

कूचक—(फ़ा०) (वि०) देखो—'कोचक'।

कूचा—(फ़ा०) (सं० पु०) गली, छोटा रास्ता।

कूज़—(फ़ा०) (वि०) टेढ़ा, वक्र।

कूज़-पुश्त, कूज़ा-पुश्त—(फ़ा०) (वि०) कुबड़ा।

कूज़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) डोंगा, दस्ते-दार बर्तन; (२) कुफ़्ली, ढक्कनदार बर्तन; (३) आब-खोरा या कुल्हड़; (४) मिसरी का डला; (५) मिट्टी का बर्तन।

कूज़ा-गर—(फ़ा०) (सं० पु०) कुम्हार।

कूत—(हि०) (सं० स्त्री०) अंदाज़ा, तख़-मीना, पैमायश। कूतना—अंदाज़ा करना।

क़ूत—(अ०) (सं० पु०) ख़ुराक, आहार, रोज़ी।

क़ूत-बसरी—(अ०) (सं० स्त्री०) बुरा भला खाकर ज़िन्दगी बसर करना, रूखा-सूखा खाकर रहना।

कून—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) गुदा।

कूनी—(फ़ा०) (वि०) बवेसिया।

कूने-ख़र—(फ़ा०) (वि०) अहमक़ आदमी, मूर्ख, मूढ़।

क़ूरची—(तु०) (सं० पु०) हथियार-बन्द सिपाही।

क़ूलंज, क़ूलिंज—(यू०) (सं० पु०) उदर-शूल, पसली के नीचे का दर्द।

क़ूवत—(अ०) (सं० स्त्री०) देखो—'क़ुव्वत'।

कूस—(फ़ा०) (सं० पु०) बड़ा नक्क़ारा।

कैर—(फ़ा०) (सं० पु०) पुरुष की इन्द्रिय, लिंग।

कैंची—(तु०) (सं० स्त्री०) (१) कतरनी, बाल, कपड़े वग़ैरह कतरने का औज़ार; (२) दो लंबी लकड़ियाँ या लोहे की छड़ें जो क़ैंची की शक्ल में एक दूसरे के ऊपर रक्खी हों।

क़ै—(अ०) (सं० स्त्री०) वमन, मतली, उलटी।

क़ैतून—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) एक क़िस्म की ज़री और रेशम की बटी हुई डोरी; (२) एक किस्म की बारीक पेचक।

कैद—(अ०) (सं० पु०) फ़रेब, दग़ा।

क़ैद—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) बंदी-गृह में रखा जाना, बंधन; (२) कारावास, पहरे में रोक रखना; (३) रोक, शर्त, पाबन्दी।

क़ैद-ख़ाना—(अ०) (सं० पु०) जेल, जेल-ख़ाना, कारागार।

क़ैद-तनहाई—(अ०) (सं० स्त्री०) काल-कोठरी की सज़ा, अकेला बन्द रहना।

क़ैद-बा-मशक़्क़त—(अ०) (सं० स्त्री०) कड़ी सज़ा जिसमें मेहनत भी करनी पड़े।

क़ैद-बे-मशक़्क़त—(अ०) (पु० स्त्री०) सादी क़ैद, जिसमें मेहनत न करनी पड़े।

क़ैद-महज़—(अ०) (सं० स्त्री०) सादी सज़ा, बिना परिश्रम की।

क़ैद-सख़्त—(अ०) (सं० स्त्री०) कड़ी सज़ा—जिसमें मेहनत करनी पड़े।

क़ैदी—(अ०) (सं० पु०) बंधुवा, बंदी।

कैफ़—(अ०) (सं० पु०) (१) नशा, सरूर; (२) कैफ़ियत। (अव्यय) किस तरह, क्योंकर। कैफ़ ओ कम—(अ०) (सं० पु०) कैसा और कितना।

कैफ़ियत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) हालत, दशा, हाल, हक़ीक़त, समाचार; (२) तफ़सील, ब्यौरा, विवरण; (३) रंग-ढंग; (४) बहार, मज़ा, आनन्द; (५) रौनक, (६) नशा। कैफ़ियत आना—मज़ा या लुत्फ़ आना। कैफ़ियत उठाना—आनन्द प्राप्त करना। कैफ़ियत दिखाना—तमाशा दिखाना। कैफ़ियत लूटना—मज़ा लूटना।

कैफ़ी—(अ०) (वि०) नशे-बाज़, सरशार, नशे में चूर।

कैमूस—(यू०) (सं० पु०) पेट में भोजन के रस का दूसरा रूप।

क़ैरात—(सं० पु०) देखो—'क़ीरात'।

क़ैरूती—(अ०) (सं० स्त्री०) एक क़िस्म का रौग़न; मरहम।

क़ैवान—(अ०) (सं० पु०) (१) शनीचर ग्रह; (२) सातवाँ आसमान।

क़ैस—(अ०) (सं० पु०) मजनूं का नाम जो लैला का आशिक़ था।

क़ैसर—(अ०) (सं० पु०) (१) बादशाह, सम्राट्; (२) रूम के बादशाह की उपाधि।

कोकनार—(फ़ा०) (सं० पु०) ख़शख़ाश का डोंडा।

कोकनी—(उ०) (सं० पु०) एक रंग का नाम।

कोकब—(अ०) (सं० पु०) रोशन सितारा।

कोकलताश—(तु०) (सं० पु०) बादशाह का रज़ाई-भाई; दूध-भाई (एक ही धाय से दूध पीनेवाला)।

कोकला—(फ़ा०) (सं० पु०) कोयल।

कोका—(तु०) (सं० पु०) दूध-शरीक भाई, दूध-भाई, दूध पिलानेवाली का लड़का।

कोकी—(तु०) (सं० स्त्री०) रज़ाई बहन (दूध पिलानेवाली की बेटी)।

कोचक—(फ़ा०) (वि०) छोटा।

कोतल—(तु०) (सं० पु०) (१) अमीरों की ख़ास सवारी का घोड़ा; (२) सजा-सजाया घोड़ा जिस पर कोई सवार न हो, जलूसी घोड़ा।

कोता, कोताह—(फ़ा०) (वि०) (१) छोटा; (२) कम; (३) मुख़्तसिर, तमाम; (४) तंग। क़िस्सा-कोता—मुख्तसिर यह है कि, अलग़रज़।

कोताह-अन्देश—(फ़ा०) (वि०) बे सोचे-समझे काम करनेवाला।

कोताह-क़द—(फ़ा०) (वि०) पस्ता-क़द, नाटा।

कोताह-क़लम—(फ़ा०) (वि०) कम लिखने वाला।

कोताह-गरदन—(फ़ा०) (वि०) जिसकी गरदन छोटी हो।

कोताह-नज़र—(फ़ा०) (वि०) ग़ाफ़िल, अदूर-दर्शी।

कोताह-फ़हम—(फ़ा०) (वि०) ना समझ, बे-अक़्ल।

कोताह-हिम्मत—(फ़ा०) (वि०) पस्त-हिम्मत।

कोताही—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) छोटा होना; (२) कमी, त्रुटि; (३) संक्षेप करना; (४) बे-परवाई, ग़फ़लत।

कोदक—(फ़ा०) (सं० पु०) लड़का, बच्चा। कोदक-मिज़ाज—(फ़ा०) (वि०) जिसके मिज़ाज में लड़कपन हो।

कोफ़्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) दुःख, ग़म, कष्ट, रंज, मलाल; (२) थकावट, सदमा; (३) घुटाई, कूटना। कोफ़्त खाना—जी जलाना, रंज को बरदाश्त करना। कोफ़्त पर कोफ़्त उठाना—सदमे पर सदमा सहना।

कोफ़्ता—(फ़ा०) (वि०) कूटा हुआ। (सं० पु०) कीमा के गोल कबाब।

कोफ़्ता-बेख़्ता—कूट छान कर (हकीम नुस्ख़ों में लिखते हैं)।

कोब—(फ़ा०) (सं० पु०) मारना, पीटना। ज़द ओ कोब करना—मार-पीट करना।

कोबा—(फ़ा०) (सं० पु०) काठ की मोंगरी जिससे कूटते हैं।

कोबा-कारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मार-पीट करना।

कोर—(फ़ा०) (वि०) (१) अंधा; (२) न देखने या ध्यान रखनेवाला। कोर-ओ कर—अंधा, बहरा।

क़ोर—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) नाख़ून की कोर; (२) फ़ीता जो कपड़ों के हाशिए पर लगाते हैं; (३) ख़ासे का हाथी; (४) हथियार।

क़ोरची—(अ०) (सं० पु०) हथियार-बन्द सिपाही।

कोर-नमक—(फ़ा०) (वि०) नमक-हराम, कृतघ्न।

कोर-नमकी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) नमक-हरामी, कृतघ्नता।

कोरनिश—(तु०) (सं० स्त्री०) झुक कर सलाम करना। कोरनिशात—बहुवचन।

कोर-बख़्त—(फ़ा०) (वि०) अभागा, बद-क़िस्मत।

कोर-मादरज़ाद—(फ़ा०) (वि०) पैदायशी अंधा।

क़ोरमा—(तु०) (सं० पु०) भुना हुआ गोश्त।

कोरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अंधापन।

कोशक—(फ़ा०) (सं० पु०) महल, ऊँची इमारत।

कोशाँ—(फ़ा०) (वि० कोशिश करने वाला

कोशिश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) प्रयत्न, उद्योग; (२) मेहनत, दौड़-धूप।

कोस—(फ़ा०) (सं० पु०) बड़ा नक़्क़ारा।

कोह—(फा०) (सं० पु०) पहाड़, पर्वत। कोहे आफ़त गिरना—अचानक बड़ी

मुसीबत आना। कोह टूटना—आफ़त का पहाड़ टूटना। कोह को काह समझना—मुश्किल काम को आसान समझना।

कोहकन—(फा०) (वि०) (१) पहाड़ खोदने वाला; (२) शीरीं के प्रेमी फ़रहाद का उपनाम जिसने पहाड़ खोद कर नहर बनाई थी।

कोह-कनी—(फा०) (सं० स्त्री०) (१) पहाड़ खोदना; (२) बहुत कठिन परिश्रम करना।

कोह-क़ाफ़—(फा०) (सं० पु०) (१) क़ाफ़; (२) वह जगह जो बहुत दूर हो, जहाँ आदमी की पहुँच न हो सके।

कोहचा—(फा०) (सं० पु०) उभरी हुई ज़मीन, टीला।

कोहन—(फा०) (वि०) पुराना, देखो—'कुहन'।

कोहना—(फा०) (वि०) पुराना, देखो—'कुहना'।

कोह-नूर—(फा०) (सं० पु०) हिन्दोस्तान का बहुत बड़ा और प्रसिद्ध हीरा जो आजकल अंगरेज़ों के पास है।

कोहराम—(अ०) (सं० पु०) रोना-पीटना, मातम, देखो—कुहराम।

कोह-सार—(फा०) (सं० पु०) पहाड़ी जगह, पार्वत्य प्रदेश।

कोहस्तान—(फा०) (सं० पु०) वह जगह जहाँ बहुत से पहाड़ हों।

कोहस्तानी—(फा०) (वि०) (१) पहाड़ी, (२) पहाड़ का रहनेवाला।

कोहान—(फा०) (सं० पु०) ऊँट का कुब्ब।

कोही—(फा०) (वि०) (१) कोह से सम्बन्धित; (२) पहाड़ का निवासी।

कोहे-आतिश-फ़िशाँ—(फा०) (सं० पु०) ज्वाला-मुखी पर्वत।

कौंचा—(फा०) (सं० पु०) भड़भूंजे का करछा जिससे बालू निकालता है।

कौकब—(अ०) (सं० पु०) बड़ा चमकता हुआ तारा।

कौदन—(अ०) (सं० पु०) (१) अहमक़, मूर्ख, कुन्द-ज़हन, मूढ़; (२) मरियल टट्टू।

कौन—(अ०) (सं० पु०) (१) सत्ता, हक़ीक़त, तथ्य; (२) प्रकृति।

कौनैन—(अ०) (सं० पु०) इहलोक और परलोक।

क़ौम—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) जाति, आदमियों का गिरोह, फिरक़ा, ख़ानदान; (२) वंश, नस्ल।

क़ौम-दार—(उ०) (वि०) अच्छी नस्ल का।

क़ौमियत—(अ०) (सं० स्त्री०) क़ौम, जाति, नस्ल, असल।

क़ौमी—(अ०) (वि०) (१) जातीय; (२) राष्ट्रीय।

क़ौल—(अ०) (सं० पु०) (१) बात, कथन, कहावत, मक़ूला; (२) प्रतिज्ञा, वचन, अहद; (३) एक प्रकार का राग। क़ौल का पूरा—बात का पक्का, सच्चा। क़ौल औ फ़ेल—वचन और कर्म, रंग-ढंग। क़ौल-क़रार—अहद पैमाँ।

क़ौस—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) धनुष, कमान; (२) धन-राशि।

कौस-ए क़ज़ा—(अ०) (सं० स्त्री०) इंद्र-धनुष।

कौसर—(अ०) (सं० पु०) (१) बड़ा दानी; (२) जन्नत (स्वर्ग) की एक नहर का नाम। कौसर की धोई ज़बान—पाक साफ़ शुस्ता ज़बान।

ख

ख़ंजर—(अ०) (सं० पु०) एक प्रकार का छुरा, कटार।

ख़ंजरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) डफली।

खकेड़—(हि०) (सं० स्त्री०) व्यर्थ का श्रम; लड़ाई-झगड़ा, झंझट।

खचा-खच—(हि०) (वि०) ख़ूब भरा हुआ।

ख़जल—(अ०) (वि०) शरमिन्दा।

ख़जलत—(अ०) (सं० स्त्री०) ख़िजालत; शरमिन्दगी।

ख़जलत-ज़दा, ख़जलत-नाक—(फ़ा०) (वि०) शर्मिंदा।

ख़ज़ानची—(फ़ा०) (सं० पु० तहवील-दार, कोषाध्यक्ष, जिसके पास रुपया रहता हो।

ख़ज़ाना—(अ०) (सं० पु०) (१) वह स्थान जहाँ धन या अन्य वस्तु जमा रहे, गोदाम, खत्ता; (२) बहुत माल, रुपया, धन; (३) बंदूक़ की वह जगह जहाँ बारूद रहती है, कोठी।

ख़ज़ीना—(फ़ा०) (सं० पु०) ख़ज़ाना, संग्रहालय।

खट-राग—(हि०) (सं० पु०) झगड़ा, बखेड़ा।

खटले—(हि०) (सं० पु०) स्त्रियों के ज़ेवर पहनने के कान के ऊपर के छेद।

ख़त—(अ०) (सं० पु०) (१) लकीर, रेखा, निशान; (२) पत्र, चिट्ठी; (३) होठों और गालों पर के बाल; (४) हाथ का लिखा अक्षर, लिखावट; (५) लिखने का ढंग।

ख़त-कश—वह सौदा जो बेचनेवाले को फिर वापस न हो सके; जाकड़ का उलटा।

ख़त-तराश—(अ०) (सं० पु०) नाई, हज्जाम।

ख़तना—(अ०) (सं० पु०) सुन्नत, मुसल्मानी, मुसल्मानों में बच्चों के लिंग के अगले भाग का बढ़ा हुआ चमड़ा काटने की रस्म।

ख़तम—(अ०) (सं० पु०) आख़ीर, अन्त, तमाम। (वि०) समाप्त, पूर्ण। ख़तम करना—जान से मार डालना।

ख़तमी—(अ०) (सं० स्त्री०) गुल-ख़ैरू, एक पौदा।

ख़तर—(अ०) (सं० पु०) (१) [illegible] अन्देशा; (२) आफ़त।

ख़तर-नाक—(फ़ा०) भयानक, भीषण, ख़ौफ़नाक।

ख़तरा—(अ०) (सं० पु०) (१) भय, डर, ख़ौफ़; (२) खटका, आशंका।

ख़ता—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) क़सूर, जुर्म, अपराध; (२) भूल, चूक, ग़लती; (३) धोखा। (पु०) तुर्किस्तान और चीन के बीच का एक नगर।

ख़ताई—(अ०) (वि०) ख़ता नगर से सम्बन्धित।

ख़ता-गर, ख़तावार—(फ़ा०) (वि०) अपराधी, क़सूरवार।

ख़तीब—(अ०) (सं० पु०) (१) ख़ुतबा पढ़ने वाला; (२) व्याख्यान-दाता।

ख़तीर—(अ०) (वि०) बड़ा, बहुत, कसीर।

ख़ते-इस्तवा—(अ०) (सं० पु०) भू मध्य रेखा।

ख़ते-जदी—(अ०) (सं० पु०) मकर रेखा।

ख़ते नस्तालीक़—(अ०) (सं० पु०) सुन्दर साफ़ अक्षर।

ख़ते-मुतवाज़ी—(अ०) (सं० पु०) समानान्तर रेखा।

ख़ते-मुमास—(अ०) (सं० पु०) संपात रेखा।

ख़ते-मुस्तक़ीम—(अ०) (सं० पु०) सीधी रेखा।

ख़ते-मुस्तदीर—(अ०) (सं० पु०) गोल रेखा।

ख़ते-शिकस्ता—(अ०) (सं० पु०) घसीट।

ख़ते सरतान—(अ०) (सं० पु०) कर्क-रेखा।

खत्ता—(हि०) (सं० पु०) गड्ढा; नाज या बर्फ़ दबा रखने का गड्ढा, लड़ाई में मुर्दों के डालने का गड्ढा।

ख़त्म—(अ०) (सं० पु०) देखो—'ख़तम'।

ख़दंग—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) तीर, एक प्रकार का छोटा तीर।

ख़दअ—(अ०) (सं० पु०) फ़रेब करना, दग़ा देना।

ख़दम—(अ०) (सं० पु०) नौकर चाकर।

ख़दीजा—(अ०) (सं० स्त्री०) पैग़ंबर मोहम्मद साहब की पहली बीबी का नाम।

ख़दीव—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) ख़ुदाबन्द, स्वामी, मालिक, बादशाह; (२) मिस्र के बादशाहों की उपाधि।

खदेड़—(हि०) (सं० स्त्री०) पीछा। खदेड़ना—पीछा करना, रगेदना।

खद्दर—(हि०) (सं० पु०) मोटा कपड़ा, गज़ी खादी।

ख़नाज़ीर—(अ०) (सं० पु०) कंठमाला (एक रोग)।

ख़न्दक़—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) शहर या क़िले के चारों ओर की खाई; (२) बड़ा गड्ढा।

ख़न्दा—(फ़ा०) (सं० पु०) हँसी, हास्य।

ख़न्दा-पेशानी, ख़न्दा-रु—(फ़ा०) (वि०) हँस-मुख।

ख़न्दा-रेश—(फ़ा०) (वि०) वह मनुष्य जिस पर लोग हँसें।

ख़न्दी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बेहया, दुश्चरित्रा, कुलटा।

ख़न्नास—(अ०) (सं० पु०) भूत-प्रेत, शैतान।

खपची—(हि०) (सं० स्त्री०) गोद।

खप्पट—(हि०) (वि०) बूढ़ा, बूढ़ी।

ख़फ़क़ान—(अ०) (सं० पु०) (१) दिल के धड़कने का रोग, घबराहट; (२) मालीख़ोलिया, पागलपन।

ख़फ़गी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) नाख़ुशी, अप्रसन्नता, नाराज़ी, ग़ुस्सा।

ख़फ़तान—(अ०) (सं० स्त्री०) ज़र्रा।

ख़फ़ा—(फ़ा०) (वि०) अप्रसन्न, नाराज़, नाख़ुश, रुष्ट।

ख़फ़ीफ़—(अ०) (वि०) (१) थोड़ा, अल्प, कम; (२) तुच्छ, ज़लील; (३) सामान्य, साधारण, मामूली; (४) लज्जित, शरमिन्दा, रुसवा।

ख़फ़ीफ़ा—(अ०) (सं० स्त्री०) दीवानी की एक अदालत जिसमें छोटे छोटे मुक़दमों की सुनवाई होती है।

ख़बर—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) समाचार, हाल, वृत्तान्त; (२) सूचना, इत्तला, आगाही, जानकारी; (३) संदेश; (४) चर्चा शोहरत; (५) पता, निशान, सुराग़; (६) होश, औसान, समझ, अक़्ल सुध बुध। ख़बर गर्म होना—बात का प्रसिद्ध होना। ख़बर लगाना—पता लगाना। ख़बर लेना—(१) मदद करना; (२) पूछना; (३) नज़र रखना; (४) बदला लेना आड़े हाथों लेना; (५) हालत पर ग़ौर करना; (६) वार करना; (७) असर करना, असर डालना।

ख़बर-गीर—(अ०) (वि०) (१) जासूस, भेदी; (२) संरक्षक, निगहबान।

ख़बर-गीरी—(अ०) (सं० स्त्री०) निगहबानी, संरक्षण।

ख़बर-दार—(अ०) (वि०) होशयार, आगाह, चौकन्ना, सजग, सावधान।

ख़बर-दारी—(अ०) (सं० स्त्री०) सावधानी, होशयारी, निगहबानी, एहतियात।

ख़बर-रसाँ—(अ०) (सं० पु०) ख़बर पहुँचाने वाला, दूत।

ख़बीर—(अ०) (सं० पु०) जाननेवाला, ईश्वर का नाम।

ख़बीस—(अ०) (सं० पु०) (१) भूत-प्रेत, दुष्ट आत्मा; (२) कंजूस; (३) दुष्ट। (वि०) गंदा, नापाक, शरीर, दुष्ट।

ख़ब्त—(अ०) (सं० पु०) जनून, झक, पागलपन, सनक। ख़ब्त सवार होना—बेहूदा ख़याल दिल में समाना।

ख़ब्ती—(अ०) (सं० पु०) पागल, बद-हवास, बेवक़ूफ़, ख़बीस।
खब्बा—(हि०) (वि०) जो बाएँ हाथ से काम करे।
ख़म—(अ०) (सं० पु०) (१) टेढ़, टेढ़ापन, वक्रता, झुकाव; (२) बाज़ू। ख़म ओ चम—चमक-दमक। ख़म ठोंकना—किसी काम में किसी से मुक़ाबिला करना।
ख़म-दार—(अ०) (वि०) टेढ़ा, तिरछा।
ख़मर—(अ०) (सं० स्त्री०) शराब।
ख़मियाज़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) अँग-ड़ाई, हाथों को ऊँचा करके बदन तानना; (२) जँम्हाई; (३) बुरा परिणाम, कुफल; (४) बदला, तकलीफ़, अफ़सोस।
ख़मीदा—(फ़ा०) (वि०) (१) झुका हुआ; (२) टेढ़ा, वक्र।
ख़मीर—(अ०) (सं० पु०) (१) गूँधे हुए आटे का सड़ाव; उठा हुआ आटा; (२) मिट्टी, एक प्रकार की मिट्टी; (३) स्वभाव, प्रकृति।
ख़मीरा—(अ०) (सं० पु०) (१) एक प्रकार का पीने का तम्बाकू; (२) औषधों का एक योग जिसमें गाढ़ा शरबत बना कर उसे घोटा जाता है।
ख़मीरी—(अ०) (वि०) जिसमें ख़मीर मिला हो। (सं०) एक प्रकार की रोटी जो ख़मीर उठे हुए आटे से बनती है।
ख़म्सा—(अ०) (वि०) पाँच। (सं०) वह पद्य जिसमें पाँच-पाँच मिसरों का एक बन्द हो।
ख़यानत—(अ०) (सं० स्त्री०) दूसरे की धरोहर को हड़प जाना; दग़ा, ग़बन।
ख़यारैन—(अ०) (सं० पु०) ख़रबूज़ा-ककड़ी के बीज।
ख़याल—(अ०) (सं० पु०) (१) विचार, कल्पना; (२) ध्यान, अंदेशा; (३) ग़ौर, चिन्ता; (४) समझ, राय, सम्मति; (५) मंशा, इरादा, मनसूबा; (६) पास, आदर, लिहाज़; (७) एक प्रकार का गाना। ख़याल आना—कुछ याद आना। ख़याल पर चढ़ना—याद आना (हर समय)। ख़याल बँधना—किसी बात का बराबर ध्यान रहना। ख़याल बाँधना-मनसूबा बाँधना, सोचना। ख़याल में न लाना—कुछ परवा न करना। ख़याल रखना—ध्यान रखना, न भूलना। ख़याल से बाहर—समझ से दूर।
ख़यालात—(अ०) (सं० पु०) विचार, भाव। (ख़याल का बहुवचन)।
ख़याली—(अ०) (वि०) (१) कल्पित, फ़र्ज़ी; (२) ख़याल-सम्बन्धी। ख़याली पुलाव पकाना—बेजा ख़याल करना, बे सिर-पैर की बात सोचना।
ख़य्यात—(अ०) (सं० पु०) दरज़ी।
ख़य्याम—(अ०) (सं० पु०) ख़ेमा बनाने वाला।
ख़र—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) गधा; (२) बेवक़ूफ़।
ख़रक़—(अ०) (सं० पु०) पुराना जामा, पैबन्द लगा हुआ कपड़ा, गुदड़ी।
ख़रक़ा-पोश—(फ़ा०) (सं० पु०) दरवेश, सूफ़ी।
ख़रख़शा—(फ़ा०) (सं० पु०) परेशानी, झगड़ा, बखेड़ा, झंझट।
ख़र-गह, ख़र-गाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) बड़ा ख़ेमा; (२) ख़रगोश।
खरगुनिया—(हि०) (वि०) मूर्ख, कम अक़्ल।
ख़रगोश—(फ़ा०) (सं० पु०) खरहा, ससा, शश।
ख़र-चग—(फ़ा०) (सं० पु०) सरतान, केकड़ा।
ख़र्च—(अ०) (सं० पु०) रुपया, व्यय, व्यय करने की चीज़।
ख़रची—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वेश्या की फ़ीस। ख़रची चुकाना—वेश्या से फ़ीस

ठहराना। ख़र्ची जाना—धन लेकर व्यभिचार कराना।

ख़रतूम—(अ०) (सं० पु०) हाथी की सूंड।

ख़रदल—(अ०) (सं० पु०) राई।

ख़र-दिमाग़—(फ़ा०) (वि०) घमंडी, मूर्ख।

ख़र-दिमाग़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) घमंड, मूर्खता, मद।

ख़र-नफ़्स—(फ़ा०) (वि०) (१) दुराचारी, बदकार; (२) दीर्घ-लिंगी।

ख़रफ़—(अ०) (वि०) बेहूदा, बुढ़ापे के कारण बद-हवास।

ख़रबुज़ा, ख़रबूज़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रसिद्ध फल। कहा०—ख़रबुज़ा छुरी पर गिरे या छुरी ख़रबुज़े पर, ज़रर ख़रबुज़े का होता है—कमज़ोर की हर तरह शामत है। ख़रबुज़े को देखकर ख़रबुज़ा रंग पकड़ता है—सोहबत का असर होता ही है।

ख़रमस्त—(फ़ा०) (वि०) (१) मूर्ख, नादान; (२) मतवाला, बदमस्त; ख़रमस्ता।

ख़रमस्ती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मूर्खता, मतवालापन।

ख़र मोहरा—(फ़ा०) (सं० पु०) कौड़ी।

ख़रसंग—(फ़ा०) (सं० पु०) भारी पत्थर, प्रतिद्वंदी।

खरा—(हि०) (वि०) (१) विशुद्ध, बेमेल; (२) निष्कपट, स्पष्ट-वक्ता; (३) लेन-देन का साफ़।

खरा-खेल—(हि०) (१) साफ़ बात, मामले की सफ़ाई; (२) फ़ौरन, शीघ्र, तत्काल। खरा (खड़ा) खेल फ़रुख़ाबादी—(फ़रुख़ाबाद का रुपया खरा माना जाता था) साफ़ बात।

ख़राज—(अ०) (सं० पु०) ज़मीन का महसूल, राज-कर।

ख़राज-गुज़ार—(सं० पु०) ख़िराज देनेवाला, राजा के अधीन।

ख़रातीन—(पु०) केंचुवा।

ख़राद—(फ़ा०) (सं० पु०) एक औज़ार जिस पर लकड़ी या धातु की चीज़ों में चिकनापन लाया जाता है; लेद।

ख़राब—(अ०) (वि०) (१) बुरा, निकृष्ट; दुर्दशा-ग्रस्त; (२) ज़लील, परेशान, ख़राब ओ ख़स्ता—बुरी दशा में।

ख़राबा—(फ़ा०) (सं० पु०) वीराना, खंडहर, वीराना मकान।

ख़राबात—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) अड्डा, कुकर्म का स्थान; (२) शराबख़ाना, जुआघर।

ख़राबी—(अ०) (सं० स्त्री०) तबाही, बरबादी, बिगाड़, बदी, दिक़्क़त, मुश्किल।

ख़राम—(फ़ा०) (सं० पु०) नाज़-अन्दाज़ की चाल, मटक कर चलना।

ख़रामाँ—(फ़ा०) मटक कर चलनेवाला। ख़रामाँ-ख़रामाँ—आहिस्ता-आहिस्ता चलते हुए।

ख़राश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) खरोंच, रगड़, छीलन, खुजली।

ख़रास—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) आटा पीसने की चक्की।

ख़रीता—(अ०) (सं० पु०) (१) जेब; (२) थैला; (३) वह बड़ा लिफ़ाफ़ा जिसमें सरकारी हुकुम भेजे जायँ।

ख़रीती—(अ०) (सं० स्त्री०) थैली।

ख़रीद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) मोल ली हुई, ख़रीदी हुई चीज़, ख़रीदारी। ख़रीद-फ़रोख़्त—लेन-देन, लेना बेचना। ज़र-ख़रीद—धन से ख़रीदी हुई चीज़।

ख़रीदार—(फ़ा०) (सं० पु०) ग्राहक, मोल लेनेवाला, चाहनेवाला, तलबगार।

ख़रीदारी—(अ०) (सं० स्त्री०) मोल लेना।

ख़रीफ़—(अ०) (सं० स्त्री०) वह फ़सल जो आषाढ़ से कार्तिक तक बोयी जाती है और जिसमें ज्वार, बाजरा, मक्का पैदा होती है।

ख़रीफ़ी—(अ०) (वि०) ख़रीफ़ से सम्बन्ध रखने वाली।

ख़रोश—(फ़ा०) (सं० पु०) शोर, ग़ुल, रोने की आवाज़, फ़रयाद ।
ख़र्च, ख़र्चा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) व्यय; (२) वह धन जो किसी काम में लगाया जाय ।
खर्रा—(हि०) (सं० पु०) फ़ेहरिस्त, परचा; (लक्ष०) लंबा-चौड़ा लेख ।
ख़र्राच—(फ़ा०) (वि०) फ़िज़ूल-ख़र्च, अपव्ययी, उदार ।
ख़लख़ाल—(अ०) (सं० स्त्री०) पाज़ेब ।
ख़लखोल— वि०) ढीला-ढाला ।
ख़लजान—(अ०) (सं० पु०) फ़िक्र, अंदेशा चिन्ता, बेचैनी ।
ख़लफ़—(अ०) (सं० पु०) (१) बेटा, पुत्र; (२) उत्तराधिकारी, वारिस । (वि०) आज्ञाकारी, सुशील । ना-ख़लफ़—अयोग्य, दुश्शील ।
ख़लल—(अ०) (सं० पु०) (१) रोक, बाधा, बिगाड़, फ़ितूर; (२) बदहज़मी, पेट का बिगाड़; (३) बीमारी । ख़लल-दिमाग़—पागलपन, मालीख़ोलिया ।
ख़लल-अन्दाज़—(अ०) (वि०) बाधक, रोक लगानेवाला ।
ख़लल-अन्दाज़ी—(अ०) (सं०स्त्री०) बाधा, रोक, अड़ंगा ।
ख़लवत—(अ०) (सं० स्त्री०) एकान्त, निर्जन-स्थान ।
ख़लवत-ख़ाना—(अ०) (सं० पु०) (१) एकान्त स्थान; (२) ज़नान-ख़ाना ।
ख़लवती—(अ०) (सं० पु०) (१) एकान्तवासी; (२) अन्तरंग मित्र ।
ख़ला—(अ०) (सं० पु०) (१) आकाश, ख़ाली जगह; (२) पाख़ाना ।
ख़ला-मला—(पु०) मेल-जोल, रब्त-ज़ब्त ख़ल्त-मल्त ।
ख़लायक़—(अ०) (सं० स्त्री०) ख़लक़त, सृष्टि ।
ख़लास—(अ०) (सं० पु०) (१) छुटकारा, मुक्ति; (२) वीर्य-पात । (वि०)—(१) छुटा हुआ, मुक्त; (२) समाप्त; (३) गिरा हुआ ।
ख़लासी—(अ०) (सं० स्त्री०) मुक्ति, छुटकारा, रिहाई । (सं० पु०) (१) तोप चलानेवाला; (२) मज़दूर ।
ख़लिया-सास—(स्त्री०) सास की बहन ।
ख़लिश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) कसक, खटक; (२) चुभन, गड़ना; (३) रंजिश, द्वेष; (४) चिन्ता ।
ख़लीक़—(अ०) (वि०) (१) सुशील, शिष्ट, सज्जन; (२) मिलनसार ।
ख़लीज—(अ०) (सं० स्त्री०) खाड़ी, समुद्र का वह टुकड़ा जो तीन ओर स्थल से घिरा हो ।
ख़लीत—(अ०) (वि०) शरीक, साझी ।
ख़लीता—(फ़ा०) (सं० पु०) थैली, जेब ।
ख़लीफ़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) उत्तराधिकारी, वारिस; (२) उस्ताद का नायब; (३) दरज़ी, हज्जाम आदि को भी ख़लीफ़ा कहते हैं; (४) मुसल्मानों के सबसे प्रधान धार्मिक नेता; (यह पद अब तोड़ दिया गया है) । (वि०)—धूर्त, चालाक ।
ख़लील—(अ०) (सं० पु०) सच्चा मित्र । ख़लील खाँ ने फ़ाख़्ता मारी—छोटे से काम पर बहुत इतराना ।
ख़लेरा—(अ०) (वि०) ख़ाला या ख़ालू (मौसी, मौसा) द्वारा संबन्धित ।
ख़ल्क़—(अ०) (सं० स्त्री०) दुनिया के लोग, सब मनुष्य । ख़ल्क़े-ख़ुदा—ईश्वर की रची हुई सृष्टि ।
ख़ल्त—(अ०) (सं० पु०) मिलना-जुलना, मिश्रण ।
ख़ल्लाक़—(अ०) (सं० पु०) बहुत पैदा करनेवाला, ईश्वर का नाम ।
खवा—(हि०) (सं० पु०) कंधा, मूँढ़ा ।
ख़वातीन—(स्त्री०) बेगमें—('ख़ातून' का बहुवचन) ।

ख़वास—(अ०) (सं० पु०) रईसों के ख़िदमतगार। (स्त्री०) (१) रईसों की लौंडियाँ, दासियाँ; (२) ख़ासियत, गुण, तासीर।

ख़वासी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) ख़िदमतगारी, मुलाज़मत; (२) हाथी की अंबारी की पिछली बैठक; (३) सहेली, हमजोली।

ख़शख़ाश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) पोस्त के दाने; (२) अफ़ीम का पेड़; (३) चावल का आठवाँ हिस्सा (तोल); (४) बहुत छोटा, कुछ भी नहीं।

ख़श्म—(फ़ा०) (सं० पु०) क्रोध, गुस्सा।

ख़श्मगीं—(फ़ा०) (वि०) गुस्से में भरा हुआ, क्रुद्ध।

ख़श्मनाक—(फ़ा०) (वि०) गुस्से से भरा हुआ, क्रुद्ध।

ख़स—(सं० पु०) (१) सूखी घास, कूड़ा-करकट, फूस; (स्त्री०) एक सुगंधित घास की जड़। ख़स ओ ख़ाशाक—कूड़ा-करकट।

ख़सक—(फ़ा०) (सं० पु०) (१ गोखरू; (२) लोहे के काँटे।

ख़स-पोश—(फ़ा०) (वि०) वह चीज़ जिसको सूखी घास से छिपा दिया हो।

ख़सम—(अ०) (स० पु०) (१) शत्रु, दुश्मन, विरोधी; (२) स्वामी, मालिक; (३) पति, शौहर।

खसरा—(हि०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार की छोटी चेचक।

ख़सरा—(अ०) (सं० पु०) (१) पटवारी का एक काग़ज जिसमें खेतों के नंबर, रक़बा, काश्तकार का नाम दर्ज होता है; (२) हिसाब कच्चा चिट्ठा।

ख़सलत—(अ०) (सं० पु०) (१) प्रकृति, स्वभाव; (२) आदत।

ख़सांदा—(फ़ा०) (सं० पु०) क्वाथ, काढ़ा फाँट।

ख़सायल—(अ०) (सं० पु०) स्वभाव—('ख़सलत' का बहुवचन)।

ख़सारा—(अ०) (सं० पु०) घाटा, हानि, नुक़सान।

ख़सासत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) कंजूसी; (२) कमीनापन; (३) अयोग्यता।

ख़सी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) आख़्ता, वह पशु जिसके अंड-कोष निकाल लिए गये हों, बधिया; (२) ज़नाना, हिजड़ा; (३) बकरी का नर बच्चा; (४) छोटे कुच वाली स्त्री। ख़सी परनाला—दीवार के अंदर का परनाला।

ख़सीस—(अ०) (वि०) (१) कंजूस; (२) कमीना, (३) अयोग्य, बुरा।

ख़सूफ़—(अ०) (सं० पु०) ज़मीन में धँसना; (२, चन्द्र-ग्रहण।

ख़सूमत—(अ०) (सं० स्त्री०) दुश्मनी, झगड़ा, फ़िसाद।

ख़सूसियत—(अ०) (सं० स्त्री०) विशेषता।

ख़स्तगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) ज़ख़्मी-पन; (२ ग़रीबी, तंग-दस्ती; (३) थकावट, थकन।

ख़स्ता—(फ़ा०) (वि०) (१) ज़ख़्मी; (२) बीमार, ग़रीब; (३) रंजीदा, शोक-ग्रस्त; (४) भुरभुरा, कुरकुरा; (५) ख़राब, बदहाल; (६) परेशान, ज़लील। (सं० स्त्री०) ख़ुबानी की गिरी जो बादाम के धोखे में बिकती है।

ख़स्ता-जिगर, ख़स्ता-हाल-(फ़ा०) (वि०) परेशान, नाख़ुश।

ख़स्ता-हाली—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) परे-शानी, दुर्दशा।

ख़ाइन—(अ०) (सं० पु०) बेईमान, ख़या-नत करने वाला।

ख़ाइफ़—(अ०) (सं० पु०) डरनेवाला, भयभीत।

ख़ाक—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) धूल, गर्द; (२) राख, भभूत; (३) ज़मीन, (४) हेच,

बेवक़्त; (५) कुछ नहीं; (६) क्योंकर, क्या, किसलिए । ख़ाक उड़ाना—बरबाद करना । ख़ाक छानना—ख़ूब ढूँढना, आवारा फिरना । ख़ाक डालना—ऐब छिपाना । ख़ाक फांकना—आवारा फिरना, झूठ बोलना । ख़ाक ले डालना—मतलब के वास्ते बारबार किसी के दर पर जाना । कहा०—ख़ाक न धूल, वकायन का फूल—कोरी शेख़ी मारना; निकम्मा ।

ख़ाक-आलूदा—(फ़ा०) (वि०) ख़ाक से छिपा हुआ, भरा हुआ ।

ख़ाक-पा—(फ़ा०) (वि०) आजिज़, दीन ।

ख़ाकनाए—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) स्थल-डमरूमध्य ।

ख़ाकरोब—(फ़ा०) (सं० पु०) झाड़ू देनेवाला, भंगी ।

ख़ाकसार—(फ़ा०) (वि०) ग़रीब, दीन, निरभिमानी ।

ख़ाकसारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दीनता ।

खाकस्री—(हि०) (सं० स्त्री०) मोटी मोटी लकीरें और निशान जो स्त्री के पेट और जांघों पर बच्चा होने के बाद पड़ जाते हैं ।

ख़ाकसीर—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ख़ूबकला नामक ओषधि ।

ख़ाका—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) ढाँचा, मसौदा, नक़्शा; (२) तख़मीना । ख़ाका उड़ना—उपहास होना, मज़ाक उड़ना । ख़ाका उड़ाना—(१) किसी का ढंग अपने में पैदा करना; (२) बदनाम करना, रुसवा करना ।

ख़ाक़ान—(तु०) (सं० पु०) (१) सुलतान, बादशाह; (२) चीन के बादशाहों की पुरानी उपाधि ।

ख़ाकिस्तर—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) जली हुई चीज़ की राख ।

ख़ाकी—(फ़ा०) (वि०) (१) मिट्टी की पैदायश, मटीला; (२) भूरा, मिट्टी के रंग का; (३) बिना सींचा हुआ ।

खाग—(हि०) (सं० पु०) गैंडे का सींग जिसका कटार का दस्ता बनाते हैं ।

ख़ागीना—(फ़ा०) (सं० पु०) तले हुए अंडे, पके हुए अंडों का सालन ।

ख़ाज़िन—(अ०) (वि०) ख़ज़ांची, जमा करनेवाला ।

ख़ातम—(अ०) (सं० स्त्री०) अंगूठी, मोहर ।

ख़ातम-कारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) हाथी दाँत या लकड़ी की गुलकारी जो अमीर लोग छतों में कराते हैं ।

खाता-पीता—(हि०) (वि०) खाने पीने से सुखी, संपन्न । खातेपीते लातें मारना—कृतघ्न होना ।

ख़ातिम—(अ० (वि०) ख़तम करने वाला, अंजाम को पहुँचाने वाला ।

ख़ातिम-उल्-अम्बिया—(अ०) (सं० पु०) आख़री पैग़ंबर ।

ख़ातिमा—(अ०) (सं० पु०) (१) परिणाम, अन्त; (२) इन्तक़ाल, मौत, मृत्यु; (३) अन्त, समाप्ति; (४) आख़री हिस्सा । ख़ातिमा-बिल-ख़ैर—मर जाना, सकुशल समाप्ति ।

ख़ातिर—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) दिल, जिगर, कलेजा; (२) ध्यान; (३) इच्छा, मर्ज़ी; (४) मुरव्वत, लिहाज़ स्नेह; (५) आतिथ्य, आव-भगत; (६) तबीयत, मिज़ाज ।

ख़ातिर-आज़ुर्दा—(अ०) (वि०) रंजीदा ।

ख़ातिर-ख़्वाह—(अ०) (क्रि० वि०) दिल पसंद, इच्छानुसार ।

ख़ातिर-जमा—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) संतोष, तसकीन, इतमीनान, तसल्ली ।

ख़ातिर-तवाज़ा—(अ०) (सं० स्त्री०) आतिथ्य, आदर-सत्कार, आव-भगत ।

ख़ातिर-दारी—(अ०) (सं० स्त्री०) सम्मान, आव-भागत, आदर।

ख़ातिर-नशीं—(फ़ा०) (वि०) जो बात दिल में बैठ जाय, दिल-नशीं।

ख़ाती—(अ०) (वि०) जो जान बूझ कर ग़लती करे।

ख़ातून—(तु०) (सं० स्त्री०) बेगम, भले घर की स्त्री।

ख़ातूने-जान्नत—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) जन्नत की शाहज़ादी, पैग़ंबर की बेटी, बीबी फ़ातिमा।

खादर—(हि०) (सं० स्त्री०) तराई।

ख़ादिम—(अ०) (सं० पु०) (१) नौकर, सेवक; (२) किसी मसजिद या दरगाह का ख़िदमतगार; (३) मुजाविर।

ख़ादिमा—(अ०) (सं० स्त्री०) दासी, नौकरानी।

ख़ान—(तु०) (सं० पु०) फ़ारस के तथा पठान सरदारों की उपाधि, मुखिया।

ख़ान-ए-ख़ुदा—(फ़ा०) (सं० पु०) मसजिद।

ख़ानक़ह, ख़ानक़ाह—(अ०) (सं० स्त्री०) दरवेशों के रहने की जगह।

ख़ानख़ानाँ—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) बहुत बड़ा सरदार, सरदारों का सरदार;। (२) बहराम ख़ाँ के पुत्र अबदुल रहीम खाँ के लिए प्रयुक्त।

ख़ानगी—(फ़ा०) (वि०) (१) घरेलू, घर का; (२) निज का, ज़ाती, ख़ास अपना। (सं० स्त्री०) पर्दानशीन औरत जो वेश्या-वृत्ति करती हो। ख़ानगी झगड़ा—ख़ानदानी फ़िसाद, आपस का झगड़ा, आपसी तकरार।

ख़ानम—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) अमीर ज़ादी, बेगम, बीवी; (२) भले घर की स्त्री, भद्र महिला।

ख़ानमाँ—(फ़ा०) (सं० पु०) घर-गृहस्थी का सामान।

ख़ानसामा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) घर का सामान करने वाला, दारोग़ा; (२) खाना पकानेवाला, बावर्ची।

खाना—(हि०) (सं० पु०) भोजन, ख़ुराक। खाके डकार न लेना—पराया धन बिलकुल पचा जाना। खा पी डालना—उड़ा देना। खा बदना—चुप हो जाना, उत्तर न देना। खा बैठना—ग़बन कर जाना, रक़म दबा लेना।

ख़ाना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) मकान, घर, हवेली; (२) मुर्ग़ियों और कबूतरों के रहने का दरबा; (३) संदूक़ के भीतर का घर; (४) शतरंज या चौसर के कोठे; (५) (औ०) पेट, शिकम; (६) डिब्बा; (७) किसी चीज़ के रखने का घर। ख़ाना अहसान आबाद—जब कोई दूसरे का अहसान लेना नहीं चाहता तो कहता है।

ख़ाना-ख़राब—(फ़ा०) (वि०) (१) जिसका घर-बार और सब कुछ बरबाद हो गया हो; (२) आवारा-गर्द, लफंगा; (३) हरजाई।

ख़ाना-ख़राबी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) घर की बरबादी, बरबादी; नाश।

ख़ाना-जंग—(फ़ा०) (वि०) जो ज़रा सी इच्छा-विरुद्ध बात पर लड़ पड़े, जंग-जू।

ख़ाना-जंगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) आपस का झगड़ा, गृह-कलह।

ख़ाना-ज़ाद—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) नौकरों, लौंडियों की सन्तान जो मालिक के घर में पैदा हुई हो; (२) जो दूसरे के घर जन्मा और पला हो।

ख़ाना-तलाशी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) घर की तलाशी, किसी खोई हुई चीज़ के लिए।

ख़ाना-दारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) घर-बार का काम-काज, गृहस्थी का प्रबन्ध।

ख़ाना-नशीन—(फ़ा०) (वि०) बेकार, जो सब काम छोड़कर घर में घुसा रहे।

ख़ाना-पुरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) नक़्शा भरना, दिये हुए शीर्षकों के नीचे तत्संबंधी बातें लिखना।

ख़ाना-बदोश, ख़ाना-बरदोश—(फ़ा०) (वि०) आवारा, परेशान, घर को साथ लिये फिरने वाला, जिसका कोई ख़ास ठिकाना न हो।

ख़ाना-बर-अन्दाज़—(फ़ा०) (वि०) घर-बार उजाड़ देने वाला।

ख़ाना-बरबादी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) घर की तबाही, नाश।

ख़ाना-बाग़—(फ़ा०) (सं० पु०) वह बाग़ जो मकान की चहार-दीवारी के भीतर हो।

ख़ाना-शुमारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) घरों की गणना।

ख़ाना-साज़—(फ़ा०) (वि०) घर का बना हुआ। (सं० पु०) खाना बनानेवाला।

ख़ानुमां—(फ़ा०) (पु०) घर का असबाब।

ख़ानुमा-ख़राब—(फ़ा०) (वि०) तबाह, बरबाद।

ख़ान्दान—(फ़ा०) (सं० पु०) वंश, कुल, घराना, नस्ल।

ख़ानदानी—(फ़ा०) (वि०) (१) पुराना रईस; (२) अच्छे कुल का; (३) पैतृक, पुश्तैनी।

खाबड़—(हि०) (वि०) ऊँचा नीचा, असम।

ख़ाम—(फ़ा०) (वि०) (१) कच्चा, बिना पका हुआ; (२) बुरा, ख़राब, बोदा; (३) ना-तजुर्बेकार, अनुभव-हीन। ख़ाम कर-ना—बंद करना, आटा लगा कर हाँडी का मुँह बंद करना।

ख़ाम-कार—(वि०) अनुभव हीन।

ख़ाम-ख़याल—(फ़ा०) (वि०) बेहूदा और व्यर्थ विचार वाला।

ख़ाम-ख़याली—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ग़लत गुमान, झूठा ख़याल, वहम।

ख़ाम-पारा—(फ़ा०) (वि०) (स्त्री०) (१) मक्कार औरत; (२) छोटी अवस्था से व्यभिचार करने वाली; (३) एक प्रकार की छोटी तोप।

ख़ाम-राय—(फ़ा०) (वि०) नादान, कम-अक़्ल।

ख़ामा—(फ़ा०) (सं० पु०) क़लम।

ख़ामा-दान—(फ़ा०) (सं० पु०) क़लम-दान।

ख़ामी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) कचाई; (२) त्रुटि, कमी, नुक्स; (३) अनुभव-हीनता।

ख़ामुश, ख़ामोश—(फ़ा०) (वि०) चुप, मौन। ख़ामोश-करना—चुप करना, बुझाना, गुल करना (चिराग़)।

ख़ामोशी—मौन, चुप्पी।

ख़ायन—(अ०) (वि०) बेईमान, धरोहर हड़पने वाला।

ख़ायफ़—(अ०) (वि०) डरा हुआ, भय-भीत, डरपोक।

ख़ाया—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) मुर्ग़ी का अंडा; (२) अंड-कोश।

ख़ाया-बरदार—(फ़ा०) (वि०) ख़ुशामदी, चापलूस।

ख़ाया-बरदारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) चाप-लूसी, ख़ुशामद में नीच से नीच सेवा करना।

खार—(हि०) (सं० पु०) काट करने वाली चीज़, सज्जी।

ख़ार—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) काँटा, फाँस; (२) जलन, खटक, ईर्षा; (३) डाढ़ी; (४) ना-गवार, दूभर। ख़ार औ ख़स—(फ़ा० पु०) कूड़ा-करकट।

ख़ार-दार—(फ़ा०) (वि०) काँटेदार।

ख़ार-पुश्त—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सेही, बड़ा चूहे की तरह का जानवर जिसके शरीर पर काँटे होते हैं; (२) कटहल।

ख़ार-बन्द—(फ़ा०) (सं० पु०) काँटों की बाढ़ जो बाग़ों और खेतों के किनारे लगाते हैं।

ख़ार-मुग़ीलाँ—(फ़ा०) (सं० पु०) बबूल का काँटा।

ख़ारा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) कड़ा पत्थर; (२) एक प्रकार का कपड़ा।

ख़ारा-शिगाफ़—(फ़ा०) (वि०) पत्थर में शिगाफ़ डालनेवाला।

ख़ारिज—(अ०) (वि०) (१) बाहर, अलग, छोड़ा हुआ; (२) डिसमिस, जो नामंज़ूर हुआ हो। खारिज-अज़-अक़्ल—मूर्ख। खारिज अज़-बहस—व्यर्थ बात।

ख़ारिज-आहंग—(फ़ा०) (वि०) बेसुरा।

ख़ारिजन्—(अ० (क्रि० वि०) ऊपर से, बाहर से।

ख़ारिजा—(अ०) (पु०) बाहर का।

ख़ारिजी—(अ०) (सं० पु०) अली को ख़लीफ़ा न माननेवाले मुसलमान। (वि०) बाहर का, बैरूनी।

ख़ारिश, ख़ारिश्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) खुजली।

ख़ारिशी—(वि०) खुजली का रोगी, खुजली वाला। कहा०—ख़ारिशी कुतिया मख़मल की झूल—बदसूरत अच्छे-अच्छे कपड़े पहने।

खारे—(हि०) (सं० पु०) ज़च्चा के पेट पर की झुर्रियाँ।

ख़ाल—(अ०) (सं० पु०) (१) मामा; (२) जन्म-जात काला तिल; (३) सफ़ेदी के साथ और रंग मिला हुआ कबूतर, (४) डिठोना।

ख़ाल-ख़ाल—इक्का-दुक्का, बहुत कम।

ख़ालसा—(अ०) (सं० पु०) (१) सरकारी ज़मीन जिसमें किसी और का हक़ न हो; (२) सिक्ख सरदार।

ख़ाला—(अ०) (सं० स्त्री०) मौसी, माँ की बहन। ख़ाला जी का घर नहीं—आसान काम नहीं, मामूली बात नहीं।

खाला—(हि०) (सं० पु०) नाला, नदी।

ख़ालाती—मौसेरा, मौसेरी।

ख़ालिक़—(अ०) (सं० पु०) सृष्टि की रचना करने वाला, ईश्वर, पैदा करने वाला।

ख़ालिस—(अ०) (वि०) बेमेल, खरा, जिसमें दूसरी कोई वस्तु न मिली हो, शुद्ध।

ख़ाली—(अ०) (वि०) (१) जो भरा न हो, खोखला; (२) सिर्फ़, महज़, केवल, मात्र; (३) अकेला; (४) बेकार, निकम्मा; (५) बे-रोज़गार; (६) सूना; (७) चाँद का ग्यारहवाँ महीना (नूरजहाँ बेगम का रखा हुआ नाम); (८ बिना बसा हुआ, ग़ैर-आबाद, जिसमें कोई रहता न हो। ख़ाली जाना—निशाने पर न बैठना, गोली न लगना। ख़ाली देना—वार बचाना। ख़ाली फिरना—कुछ न पाना।

ख़ाली पेट—निराहार, बिना कुछ खाये।

ख़ाली हाथ—बे हथियार।

ख़ालू—(अ०) (सं० पु०) मौसा।

ख़ावर—(फ़ा०) (सं० पु०) पूर्व (दिशा)।

ख़ाविन्द—(फ़ा०) (सं० पु०) पति; (२) स्वामी, मालिक।

ख़ाविन्दी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) कृपा, मेहरबानी, अनुग्रह, इनायत।

ख़ाशाक—(फ़ा०) (सं० पु०) कूड़ा-करकट।

खास—(हि०) (सं० स्त्री०) उपलों की जालीदार बोरी।

ख़ास—(अ०) (वि०) (१) विशेष, मुख्य, प्रधान; (२) निज का, अपना, ज़ाती; (३) केवल, सिर्फ़; (४) ठीक, शुद्ध।

ख़ास ओ आम—छोटे बड़े, सब; अमीर-ग़रीब।

ख़ास कर—(अ०) (क्रि० वि०) विशेषतः, विशेष रूप से।

ख़ासगी—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) मुसाहब, ख़ज़ांची; (२) लौंडी, जो मालिक की रखेली हो; (३) नफ़ीस चीज़।

ख़ास तराश—(फ़ा०) (सं० पु०) बादशाह या राजा का नाई।

ख़ास-दान—(फ़ा०) (सं० पु०) गिलौरी रखने का बरतन या पात्र; पान-दान ।

ख़ास-नवीस—(अ०) (सं० पु०) प्राइवेट सेक्रेटरी, ज़ाती मुन्शी, राजा या रईस का निजी लेखक ।

ख़ास-बरदार—(अ०) (सं० पु०) वह सिपाही जो किसी राजा के आगे कांधों पर बंदूक़ रखकर चलते हैं ।

ख़ास-महल्ल—(अ०) (सं० पु०) (१) वह बेगम जिससे पहले शादी हुई; (२) बड़ा महल ।

ख़ास-महाल—(अ०) (सं० पु०) वह ज़मीन या ज़मींदारी जिसका प्रबन्ध स्वयं सरकार करे ।

ख़ासा—(अ०) (सं० पु०) (१) राजा, रईसों का भोजन; (२) राजा, रईसों की सवारी का घोड़ा; (३) एक प्रकार का कपड़ा; (४) राजा के ख़ास हाथी-घोड़े बाँधने का स्थान । (वि०) (१) अच्छा, बढ़िया; (२) मध्यम श्रेणी का अच्छा; (३) भरपूर, पूरा; (४) रोग-हीन, स्वस्थ; (५) सुन्दर, मौज़ूँ, सुडौल ।

ख़ासियत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) प्रकृति स्वभाव; (२) विशेषता, गुण; (३) असर, प्रभाव, आदत ।

ख़ासी—(वि०) (१) अच्छी, उम्दा, भली; (२) बुरी न भली; (३) अमीरों की बंदूक़।

ख़ासताई—(पु०) कबूतर का एक रंग ।

ख़ास्सा—(अ०) (सं० पु०) वह गुण जो एक ही वस्तु में पाया जाय, विशेष गुण ।

खिचड़ी—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) दाल चावल मिलाकर पकाया हुआ खाद्य; (२) बेरी का फूल; (३) गुप्त मंत्रणा; (४) काले और सफेद बाल मिले हुए; (५) मिली-जुली वस्तु; (६) नाच की साईं; (७) हिन्दुओं का संक्रान्ति त्यौहार जिस पर खिचड़ी खाते और बाँटते हैं । **खिचड़ी खाते पहोंचा उतरना**—बहुत ही सुकुमार होना । **खिचड़ी पकाना**—गुप्त मंत्रणा करना, षड्यंत्र करना ।

ख़िज़र—(अ०) (सं० पु०) (१) एक प्रसिद्ध पैग़ंबर या वली का नाम जिसने अमृत पिया है; (२) रहनुमा, मार्ग-दर्शक ।

ख़िज़ाँ—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) पत-झड़; (२) पतन, ह्रास के दिन; (३) बे-रौनक़ी, ज़वाल । **ख़िज़ाँ-रसीदा**—बे-रौनक़, शोभा-हीन ।

ख़िज़ाब—(अ०) (सं० पु०) बाल काला करने की औषधि, केश-कल्प । **ख़िज़ाब आह्नी फेरना**—उस्तरे से बाल मूँड़ना ।

ख़िजालत—(अ०) (सं० स्त्री०) शरमिन्दगी, हया, नदामत, लज्जा ।

ख़िज्र—(फ़ा०) (पु० स्त्री०) देखो—"ख़िज़र" ।

ख़िताब—(अ०) (सं० पु०) (१) उपाधि, पदवी; (२) गुफ़्तगू, बात; (३) नाम रखना ।

ख़ित्ता—(अ०) (सं० पु०) (१) प्रदेश, प्रान्त, देश; (२) ज़मीन का टुकड़ा, पृथ्वी का भाग ।

ख़िदमत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) नौकरी-चाकरी, सेवा; (२) काम-काज; (३) सामने, पास ।

ख़िमदत-गार—(अ०) (सं० पु०) नौकर, सेवक ।

ख़िदमत-गुज़ार—(अ०) (वि०) कार-गुज़ार; स्वामि-निष्ठ ।

ख़िदमती—(फ़ा०) (वि०) नौकर ।

ख़िदमात—(अ०) (सं० स्त्री०) सेवाएँ, कारगुज़ारियाँ । 'ख़िदमत' का बहुवचन ।

ख़िफ़्फ़त—(अ०) (सं० स्त्री०) ज़िल्लत, शर्म, ओछा-पन, अप्रतिष्ठा, अपमान ।

ख़ियार—(अ०) (सं० पु०) खीरा, ककड़ी ।

ख़िरक़ा—(अ०) (सं० स्त्री०) फ़क़ीरों के ओढ़ने की गुदड़ी ।

ख़िरद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बुद्धि, अक़्ल।

ख़िरद-मन्द—(फ़ा०) (वि०) बुद्धिमान्, दाना, अक़्लमन्द ।

ख़िरद-मन्दी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दानाई, बुद्धिमता, दानिशमन्दी ।

ख़िरमन्—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) खलिहान; (२) ग़ल्ले का ढेर, जिसमें से भूसा अलग न किया गया हो ।

ख़िरद-वर—(फ़ा०) (वि०) ख़िरद-मन्द, बुद्धिमान्, समझदार ।

ख़िराज—(अ०) (सं० पु०) राजस्व, राज-कर ।

ख़िराजी—(अ०) (वि०) (१) ख़िराज-सम्बन्धी; (२) जिस पर ख़िराज लगता हो या जो ख़िराज देता हो ।

ख़िराम—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) चाल, गति; (२) नाज़-अन्दाज़ से चलना; (३) मटक कर चलना, मस्तानी चाल ।

ख़िरामा—(फ़ा०) (वि०) मटक कर चलने वाला ।

ख़िरामा-ख़िरामा—धीरे धीरे चलकर ।

ख़िर्स—(फ़ा०) (सं० पु०) रीछ, भालू ।

ख़िलअत—(अ०) (सं० पु०) लिबास, जोड़ा, सिरोपाव ।

ख़िलवत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) एकान्त; (२) ख़ाली जगह; (३) सोने का कमरा, शयनागार; (४) पोशीदगी, गुप्त स्थान ।

खिलाड़—(हि०) (सं० स्त्री०) दुश्चरित्र स्त्री, चंचला ।

खिलाड़न—(हि०) (सं० स्त्री०) दुश्चरित्रा, चंचला ।

ख़िलाफ़—(अ०) (वि०) विरुद्ध, उलटा, विपरीत । (सं० पु०) झूठ, विरोध, विरोधी । ख़िलाफ़ कहना—झूठ बोलना, किसी के विरुद्ध कहना ।

ख़िलाफ़-गोई—(अ०) (सं० स्त्री०) झूठ बोलना, मिथ्या भाषण ।

ख़िलाफ़त—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) मुसल्मानों के ख़लीफ़ा का पद, या ओहदा; (२) उत्तराधिकार, जां-नशीनी; (३) बादशाह या नबी की जां-नशीनी ।

ख़िलाफ़-वर्ज़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) अवज्ञा, आज्ञा का उल्लंघन, अनुचित व्यवहार ।

ख़िलाल—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) खेल में हार जाना, मात खा जाना; (२) दाँत कुरेदने का तिनका; (३) अन्तर, फ़ासला ।

ख़िलक़त—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) पैदायश, सृष्टि; (२) जन-समूह ।

ख़िल्क़ी—(अ०) (वि०) (१) प्राकृतिक; (२) स्वभावज, पैदायशी ।

ख़िल्त—(अ०) (सं० पु०) (१) शरीर का कफ़, पित आदि में से एक वस्तु; (२) प्रकृति । ख़िल्त-मिल्त—मिला-जुला, मिश्रित ।

खिल्ली—(हि०) (सं० स्त्री०) हँसी, ठट्ठा, दिल्लगी ।

ख़िश्त—(अ०) (सं० स्त्री०) ईंट ।

ख़िश्तक—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) मियानी, रूमाली; (२) पैजामा ।

ख़िश्ती—(अ०) (वि०) ईंटों से बना हुआ ।

ख़िसाल—(अ०) (सं० पु०) प्रकृति, 'ख़सलत' का बहुवचन ।

ख़िसांदा—(फ़ा०) (सं० पु०) पानी में भिगोकर और निथार कर पीने की दवा, फाँट ।

ख़िसारा—(अ०) घाटा, नुक़सान, टोटा, हानि ।

ख़िस्सत—(अ०) (सं० स्त्री०) कृपणता, कंजूसी ।

ख़ीरा—(फ़ा०) (वि०) (१) अंधेरा; (२) दुष्ट, पाजी ।

खुक्ख, खुक्खल—(हि०) (वि०) खोखला, ख़ाली, दरिद्री ।

खुटका—(हि०) (सं० पु०) आहट, सन्देह, अंदेशा ।

खुड़पेच—(हि०) (सं० पु०) रोड़ा अटकाना, ऐब निकालना ।

.ख़ुतक .ख़ुतका—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) अंगूठा, ठेंगा; (२) भंग छानने का डंडा।

.ख़ुतबा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) प्रशंसा, स्तुति, तारीफ़; (२) पुस्तक की भूमिका; (३) घोषणा। .ख़ुतबा पढ़ा जाना—घोषणा करना।

ख़ुतूत—(अ०) (सं० पु०) पत्र, 'ख़त' का बहुवचन।

.ख़ुत्तामा—(अ०) (सं० स्त्री०) कुलटा, बदकार औरत, वेश्या।

खुत्ती—(हि०) (औ०) ख़ज़ाना, धन।

.ख़ुफ़्ता—(फ़ा०) (वि०) सोया हुआ, सुप्त।

.ख़ुद—(फ़ा०) (वि०) स्वयं, आप। .ख़ुद ब .ख़ुद—अपने आप।

.ख़ुद-आराई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बनाव-सिंगार, अपने आपको बनाना, सँवारना।

.ख़ुद-करदा—(फ़ा०) (वि०) अपना किया हुआ।

.ख़ुदका—(पु०) भंग घोटने का आला।

.ख़ुद-काम—(फ़ा०) (वि०) स्वार्थ-साधक, स्वार्थी, मतलबी।

ख़ुद-कामी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) स्वार्थ, मतलब।

ख़ुद-काश्त—(फ़ा०) (वि०) वह ज़मीन जिसे ज़मींदार अपने आप जोते बोये।

ख़ुद-कुशी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) आत्म-हत्या।

ख़ुद-ग़रज़—(फ़ा०) (वि०) स्वार्थी, मत-लबी।

.ख़ुद-ग़रज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) आपा-धापी, स्वार्थ-साधन।

.ख़ुद-नुमा—(फ़ा०) (वि०) अभिमानी, घमंडी, शेख़ीबाज़।

ख़ुद-नुमाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शेख़ी, घमंड, अभिमान।

ख़ुद-परस्त—(फ़ा०) (वि०) घमंडी, स्वार्थी।

ख़ुद-परस्ती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) घमंड, स्वार्थ।

.ख़ुद पसंद—(फ़ा०) (वि०) अपने आपको अच्छा समझनेवाला, जो दूसरे की राय को न माने।

.ख़ुद-बदौलत—आप, हुज़ूर।

.ख़ुद-बीं—(फ़ा०) (वि०) घमंडी, जो अपने सामने सबको तुच्छ समझे।

.ख़ुद-बीनी—(फ़ा०)(सं० स्त्री०) अभिमान, घमंड।

.ख़ुद मुख़्तार—(फ़ा०) (वि०) स्वाधीन, आज़ाद।

.ख़ुद-मुख़्तारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) स्वा-धीनता, आज़ादी।

.ख़ुद-रफ़्ता—(फ़ा०) (वि०) आपे से बाहर, बेहोश, बेख़ुद।

.ख़ुद-राय—(फ़ा०) (वि०) घमंडी, अपनी राय पर चलनेवाला, स्वेच्छाचारी।

.ख़ुद-राई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) घमंड, स्वेच्छाचार।

.ख़ुद-रौ—(फ़ा०) (वि०) बिना बोये उगने वाला, आपसे आप उगनेवाला।

.ख़ुद-सर—(फ़ा०) (वि०) स्वतन्त्र, मन-मानी करनेवाला, स्वेच्छाचारी, सरकश।

.ख़ुद-सरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ज़िद, हठ, स्वेच्छाचार।

.ख़ुद-सिताई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) आत्म-श्लाघा, अपनी प्रशंसा अपने आप करना।

.ख़ुदा—(फ़ा०) (सं० पु०) ईश्वर, पर-मात्मा। .ख़ुदा का घर—मसजिद। .ख़ुदा-लगती—सच, न्याय-पूर्ण। .ख़ुदा .ख़ुदा करके—बड़ी कठिनता से, दिक़्क़त से। .ख़ुदा वास्ते का बैर—नाहक़ की दुश्मनी, बेजा अदावत।

.ख़ुदाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) ईश्वरता; (२) दुनिया, संसार, सृष्टि; (३) .ख़ुदा की शान; (४) ईश्वरीय। .ख़ुदाई का दावा करना—बड़ा घमंड करना, अपने को बड़ा शक्तिमान् समझना। .ख़ुदाई का झूठा—बड़ा फ़रेबी, दग़ाबाज़।

ख़ुदाई-ख़राब—(वि०) आवारा-गर्द, ख़ाना-ख़राब ।

ख़ुदाई-ख़्वार—(वि०) दुनिया भर में ज़लील । ख़ुदाई-ख़्वार, गधे सवार—(औ०) परेशान आवारा फिरनेवाला ।

ख़ुदाई-रात—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) किसी आपत्ति के पड़ने पर मुसलमान औरतें मानता मानती हैं और कार्य हो जाने पर रात भर जागरण करती हैं, तथा ईश्वर के ध्यान के साथ-साथ ग़रीबों के लिए प्रसाद भी बना कर रखती हैं। ऐसी रात ।

ख़ुदा-तर्स—(फ़ा०) (वि०) (१) ईश्वर से डरने वाला; (२) दयालु, कृपालु ।

ख़ुदा-ताला—(फ़ा०) (सं० पु०) ईश्वर ।

ख़ुदा-दाद—(फ़ा०) (वि०) ईश्वर का दिया हुआ, ईश्वर-प्रदत्त ।

ख़ुदा न ख़्वास्ता—(फ़ा०) ख़ुदा न करे, नोज ।

ख़ुदा ना तरस—(फ़ा०) ख़ुदा से न डरने वाला, बेरहम ।

ख़ुदा-परस्त—(फ़ा०) (वि०) ईश्वर की उपासना करनेवाला, ईश्वर-भक्त ।

ख़ुदा-परस्ती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ईश्वर-भक्ति ।

ख़ुदाया—(फ़ा०) (अव्यय) या इलाही, हे ईश्वर ।

ख़ुदारा—(फ़ा०) बराये ख़ुदा, ईश्वर के लिए ।

ख़ुदावन्द—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) स्वामी मालिक; (२) बड़े आदमियों के लिए संबोधन ।

ख़ुदावन्द-गार—(फ़ा०)(सं० पु०) मालिक, स्वामी, साहब ।

ख़ुदा-शनास—(फ़ा०) (वि०) ईश्वर को पहचानने वाला, पारसा, पुण्यात्मा ।

ख़ुदा-साज़—(फ़ा०) (वि०) ख़ुदा का बनाया हुआ, इत्तफ़ाक़ी ।

ख़ुदा-हाफ़िज़—(फ़ा०) ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे । (विदाई के समय कहते हैं) ।

ख़ुदी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) अहम्भाव, अहंकार; (२) स्वार्थ-परता ।

ख़ुद्दाम—(अ०) (सं० पु०) नौकर—('ख़ादिम' का बहुवचन) ।

ख़ुनक—(फ़ा०) (वि०) सर्द, ठंडा, शीतल ।

ख़ुनकी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सर्दी, ठंडक, शीतलता ।

ख़ुन्ना—(अ०) (वि०) (१) मसख़री औरत; (२) बद-मिज़ाज औरत; (३) कसाई । ख़ुन्ना बहकना—(औ०) इतराना । ख़ुन्ना होना—घमंड होना ।

ख़ुन्नाक़—(अ०) (सं० पु०) गले की एक बीमारी ।

ख़ुन्नास—(अ०) (सं० पु०) शैतान, राक्षस, दुष्ट आत्मा । (वि०) शरीर, बहकाने वाला, हरामज़ादा ।

ख़ुन्सी—(अ०) (सं० पु०) (१) वह आदमी जो मर्दाने और ज़नाने दोनों लक्षण रखता हो; (२) हिजड़ा, नपुंसक ।

ख़ुफ़िय—(अ०) (वि०) छिपा हुआ, गुप्त। (क्रि० वि०) गुप्त रूप से ।

ख़ुफ़िय-नवीस—(अ०) (वि०) जासूस, गुप्त समाचार लिखनेवाला ।

ख़ुफ़िया-नवीसी—(अ०) (सं० स्त्री०) जासूसी ।

ख़ुफ़्फ़—(अ०) (सं० पु०) मोज़ा ।

ख़ुफ़्फ़ाश—(अ०) (सं० पु०) चमगादड़ ।

ख़ुबस—(अ०) (सं० पु०) शरारत, गंदगी, पलीदी ।

ख़ुबासत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) अप-वित्रता, नापाकी, गन्दगी; (२) शरारत ।

ख़ुम—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) शराब का मटका, मदिरा-घट; (२) घड़ा, बड़ी हाँडी ।

ख़ुम-कदा—(फ़ा० (सं० पु०) मधुशाला, शराब-ख़ाना ।

ख़ुम-ख़ाना—(अ०) (सं० पु०) मधुशाला, शराब-ख़ाना, कलारी ।

ख़ुमरा—(अ०) (सं० पु०) (१) एक जाति का नाम जो चटाई बनाते हैं; (२) एक प्रकार के मुसल्मान फ़क़ीर; (३) (लख०) मुसल्मान कहार।

ख़ुमार—(अ०) (सं० पु०) (१) नशा, मद; (२) नशे के उतार का समय, दर्द-सर होना, हाथ पैर टूटना; (३) नींद न आने का असर।

ख़ुमार-आलूदा—(अ०) (वि०) मतवाला, नशे में चूर।

ख़ुमारी—(अ०) (सं० स्त्री०) नशे के उतार की थकावट, हाथ-पैर टूटना।

ख़ुम्र—(अ०) (सं० स्त्री०) शराब, मदिरा, मद्य।

ख़ुरजी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) बड़ा थैला, बैग, झोला; (२) घोड़े की पीठ पर ज़रूरी असबाब बाँधने का थैला।

ख़ुरतूम—(अ०) (सं० स्त्री०) हाथी की सूंड़।

ख़ुरदा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) टुकड़ा, कपड़ा; (२) छुटन, झड़न; (३) रेज़गारी; (४) बै, फ़रोख़्त।

ख़ुरदा-गीर—(फ़ा०) (वि०) ऐब देखने वाला।

ख़ुरदा-फ़रोश—(फ़ा०) (सं० पु०) बिसाती, फेरी फिर कर बेचनेवाला, छोटी-मोटी चीज़ें बेचनेवाला।

ख़ुरदा-फ़रोशी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) फुट-कल बेचना।

ख़ुरदा-बीं—(फ़ा०) (सं० पु०) ऐबजो, नुक्ताचीं, बारीक-बीन, दोष-दर्शी।

ख़ुरदा-बीनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) नुक्ता-चीनी, ऐब देखना।

ख़ुरफ़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) कुलफ़ा (एक साग)।

ख़ुरमा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) खजूर; छुहारा; (२) एक मिठाई का नाम।

ख़ुरशेद—(फ़ा०) (सं० पु०) सूर्य्य, सूरज।

ख़ुरशेद-पैकर—(फ़ा०) (वि०) माशूक़।

ख़ुरसन्द—(फ़ा०) (वि०) प्रसन्न, ख़ुश।

ख़ुरसन्दी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ख़ुशी, प्रसन्नता, रज़ामन्दी।

ख़ुराफ़ात—(अ०) (सं० स्त्री०) बेहूदा बातें, गन्दी बातें।

ख़ुरासान—(फ़ा०) (सं० पु०) फ़ारस का एक प्रान्त।

ख़ुरूस—(फ़ा०) (सं० पु०) मुर्ग़ा, घर का पला हुआ मुरग़ा।

ख़ुर्द—(फ़ा०) (वि०) (१) छोटा; (२) कम-उम्र; (३) कम-क़द्र।

ख़ुर्द-बीन—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सूक्ष्म-दर्शक यंत्र।

ख़ुर्द-बुर्द—(फ़ा०) (सं० पु०) अपव्यय, बेजा ख़र्च।

ख़ुर्दनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) खाने की चीज़।

ख़ुर्द-महल—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) रखेली स्त्रियों के रहने का घर; (२) रखेली।

ख़ुर्द-साल—(फ़ा०) (वि०) कम-सिन, कम-उम्र, अल्प-वयस्क, छोटी उम्र का।

ख़ुर्द-साली—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बचपन, लड़कपन, कम-उम्री।

ख़ुर्दाद—(फ़ा०) (सं० पु०) सौर महीनों में तीसरे महीने का नाम।

ख़ुर्दिया—ख़ुरदा-फ़रोश, सर्राफ़।

ख़ुर्दी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) छुटपन, लड़क-पन।

ख़ुर्रम—(फ़ा०) (वि०) (१) सर-सब्ज़, हरा-भरा, तर व ताज़ा; (२) प्रसन्न, बहुत ख़ुश।

ख़ुर्रमी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) प्रसन्नता, ख़ुशी, ताज़गी।

खुर्रा—(हि०) (वि०) अक्खड़, बद-मिज़ाज।

ख़ुल्क़—(अ०) (सं० स्त्री०) आदत, स्वभाव, ख़सलत, प्रकृति।

ख़ुल—(अ०) (सं० पु०) औरत का मेहर के बदले तलाक़ लेना।

ख़ुलासा—(अ० (वि०) (१) खुला हुआ; (२) साफ़, स्पष्ट। (सं० पु०) चुना हुआ, छोटा किया हुआ, संक्षिप्त।

ख़ुलूस—(अ० सं० पु०) (१) सचाई, सफ़ाई; (२) सच्ची मित्रता, वफ़ादारी।

ख़ुल्क़—(अ०) (सं० पु०) (१) आदत, प्रकृति; (२) मुरव्वत, मिलनसारी; (३) ख़ुश-मिज़ाजी, शालीनता।

ख़ुलना—(पु०) मेल-जोल।

ख़ुल्द—(अ०) (सं० पु०) बहिश्त, स्वर्ग।

ख़ुल्लत—(अ०) (सं० स्त्री०) प्रेम, मित्रता, दोस्ती।

ख़ुश—(फ़ा०) (वि०) (१) प्रसन्न; (२) चंगा, स्वस्थ, तनदुरुस्त; (३) राज़ी, सन्तुष्ट; (४) हरा-भरा, तरोताज़ा; (५) उम्दा, उत्तम। ख़ुश ओ ख़ुर्रम—प्रसन्न, आनन्द-मग्न।

ख़ुश-अतवार—(फ़ा०) (वि०) जिसका ढंग अच्छा हो, बहुत अच्छे तौर-तरीक़े वाला।

ख़ुश-असलूब—(फ़ा०) (वि०) सुदर्शन, प्रिय-दर्शी, सुडौल।

ख़ुश-इक़बाल—(वि०) ख़ुश-नसीब, भाग्य-शाली।

ख़ुश-इन्तज़ामी—उम्दा बन्दोबस्त।

ख़ुश-इलहान—(फ़ा०) (वि०) ख़ुश-गुलू, अच्छी आवाज़ वाला।

ख़ुश-औक़ात—(१) इज़्ज़त वाला; (२) ईश्वर की पूजा पाठ में अधिक लगा रहने-वाला।

ख़ुश-ख़त—(फ़ा०) (वि०) अच्छा लिखने वाला, जिसके अक्षर सुंदर हों। (सं० पु०) सुन्दर लिखावट, अच्छा लिखा हुआ।

ख़ुश-ख़बर—(फ़ा०) (वि०) शुभ समाचार सुनानेवाला।

ख़ुश-ख़बरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शुभ समाचार।

ख़ुश-ख़राम, ख़ुश-रफ़्तार—(फ़ा०) (वि०) धीरे धीरे चलनेवाला।

ख़ुश-ख़रीद—(फ़ा०) (वि०) फ़सल को तैयार होने से पहले सस्ते भाव ख़रीद ली जाय।

ख़ुश-ख़ूराक—(फ़ा०) अच्छा और स्वादिष्ट भोजन करनेवाला।

ख़ुश ख़ल्क़—(फ़ा०) (वि०) सुशील, उत्तम स्वभाव वाला।

ख़ुश-गप—ख़ुश-गुफ़्तार, चरब-ज़बान, बातून।

ख़ुश-गवार—(फ़ा०) (वि०) अच्छा लगने वाला, ख़ुश-ज़ायक़ा, स्वादिष्ट।

ख़ुश-ग़िलाफ़—(फ़ा०) (वि०) (१) तलवार जो अपने आप मियान से निकल निकल पड़े, जो ज़रा से इशारे से निकल आए; (२) नंग-धड़ंग, इज़ार-बन्द की ढीली औरत।

ख़ुश-गुलू—(अ०) (वि०) जिसकी आवाज़ अच्छी हो, सुरीला।

ख़ुश-चश्म—(फ़ा०) (वि०) माशूक़।

ख़ुश-ज़ायक़ा—(फ़ा०) (वि०) मज़ेदार, स्वादिष्ट।

ख़ुश-तक़रीर—(फ़ा०) (वि०) मीठा बोली बोलनेवाला, शीरीं-कलाम।

ख़ुश-तबा—(फ़ा०) (वि०) ख़ुश मिज़ाज, दिल्लगी बाज़, ठट्ठे-बाज़, हँसोड़।

ख़ुश-दामन—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सास।

ख़ुश-दिमाग़—(फ़ा०) (वि०) अच्छे दिमाग़ वाला, बुद्धिमान।

ख़ुश-नवीस—(फ़ा०) (वि०) अच्छे अक्षर लिखनेवाला, जिसका लिखना अच्छा हो।

ख़ुश-नसीब—(फ़ा०) (वि०) भाग्यवान्, सौभाग्यशाली, क़िस्मतवर।

ख़ुश-नसीबी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) भाग्य-मानी, अच्छी क़िस्मत।

ख़ुश-नुमा—(फ़ा०) (वि०) सुन्दर, ख़ूब-सूरत।

ख़ुश-नुमाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ख़ूब-सूरती, ज़ीनत, भड़क।

ख़ुश-नूद—(फ़ा०) (वि०) प्रसन्न, सन्तुष्ट।

ख़ुश-नूदी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ख़ुशी, प्रसन्नता, रज़ामंदी।

ख़ुश-फ़ेली—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) चुहल, उमंग।

ख़ुश-बयान—(फ़ा०) (वि०) सुवक्ता, अच्छा बोलनेवाला।

ख़ुश-बयानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सुन्दर वर्णन, सुन्दर भाषण।

ख़ुश-बाश—(फ़ा०) (वि०) आज़ाद, बेफ़िक्र।

ख़ुश-बू—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सुगंधि, अच्छी बू।

ख़ुशबूदार—(फ़ा०) (वि०) सुगंधित, सुगंध देनेवाला।

ख़ुश-मज़ाक़—(फ़ा०) (वि०) बा-मज़ाक़, हास्य-पूर्ण।

ख़ुश-मिज़ाज—(फ़ा०) (वि०) हँसमुख, प्रसन्न-चित, आमोद-प्रिय।

ख़ुशमिज़ाजी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अच्छा स्वभाव, हँसमुख स्वभाव।

ख़ुश-रंग—(फ़ा०) (वि०) जिसका रंग सुन्दर हो।

ख़ुश-लिबास—(फ़ा०) (वि०) अच्छे कपड़े पहननेवाला।

ख़ुश-वक़्त—(फ़ा०) (वि०) प्रसन्न, सुखी।

ख़ुश-वक़्ती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सुख, सुख के दिन।

ख़ुश-हाल—(फ़ा०) (वि०) मालदार, संपन्न, सुखी।

ख़ुश-हाली—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सुख, संपन्नता।

ख़ुशामद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) चापलूसी, लल्लो-पत्तो, झूठी प्रशंसा।

ख़ुशामदी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) चापलूस।

ख़ुशी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०, (१) प्रसन्नता, आनन्द; (२) इच्छा।

ख़ुश्क—(फ़ा०) (वि०) (१) रूखा, सूखा, जिसमें तरी न हो; (२) अरसिक; (३) बिना किसी और आमदनी के, केवल; (४) रूखा, जिससे कोई लाभ न उठाया जा सके। ज़ाहिदे-ख़ुश्क—ऐसा भक्त जो किसी और के काम न आवे। ख़ुश्क ओ तर—बुरा भला।

ख़ुश्क-दिमाग़ी, ख़ुश्क-मग़ज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दीवानगी, जनून, गावदीपन।

ख़ुश्क-साली—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) काल, क़हत, अकाल, वह वर्ष जिसमें वर्षा न हो।

ख़ुश्का—(फ़ा०) (सं० पु०) उबाले हुए चावल, भात।

ख़ुश्की—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) सूखापन, रूखापन; (२) अकाल, क़हत; (३) पलेथन, अटावन; (४) स्थल, भूमि।

ख़ुश्कीदा—(लख०) ख़ुश्क, सूखा।

ख़ुसर—(फ़ा०) (सं० पु०) ससुर, श्वसुर।

ख़ुसर-पूरा—(फ़ा०) (सं० पु०) साला।

ख़ुसरवाना—(फ़ा०) (वि०) शाही, राज-कीय।

ख़ुसरू—(फ़ा०) (सं० पु०) बादशाह, सम्राट्।

ख़ुसिया—(अ०) (सं० पु०) अंडकोश, फ़ोता। ख़ुसिए सहलाना—ख़ुशामद करना।

ख़ुसिया-बरदार—(अ०) (सं० पु०) बड़ा ख़ुशामदी, नीच ख़ुशामदी।

ख़ुसिया-बरदारी—(अ०) (सं० स्त्री०) नीचता, ख़ुशामद।

ख़ुसूफ़—(अ०) (सं० पु०) (१) ज़मीन में धँसना; (२) चन्द्र-ग्रहण।

ख़ुसूमत—(अ०) (सं० स्त्री०) शत्रुता, दुश्मनी।

ख़ुसूस—(अ०) (सं० पु०) ख़ुसूसियत, ख़ास बात; ख़ास, ख़ासकर।

ख़ुसूसन्—(अ०) (क्रि० वि०) ख़ास तौर पर, विशेष रूप से, विशेषतः, ख़ासकर।

ख़ुसूसयत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) विशेषता, ख़ास सिफ़त, ख़ास बात; (२) मेल-मिलाप, मित्रता, रब्त-ज़ब्त।

ख़ूं-ख़्वार—(फ़ा०) (वि०) ख़ून पीने वाला, ज़ालिम, जल्लाद, क्रूर; (२) ग़ुस्से में भरा हुआ।

ख़ूं-ख़्वारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ज़ुल्म, सितम।

ख़ूं-बहा—(फ़ा०) (सं० पु०) वह धन जो किसी की हत्या होने पर ख़ून के बदले में उसके सम्बन्धियों को दिया जाय।

ख़ूं-बार—(फ़ा०) (वि०) ख़ून बरसाने वाला।

ख़ूं-रेज़—(फ़ा०) (वि०) ख़ून बहाने वाला, जल्लाद, ज़ालिम, जिसने किसी को मार डाला हो।

ख़ूं-रेज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ख़ून बहाना, मार डालना, जान लेना।

ख़ू—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) आदत, स्वभाव।

ख़ूक—(फ़ा०) (सं० पु०) सूअर, शूकर।

ख़ू-गर—(फ़ा०) (वि०) अभ्यस्त, आदी।

ख़ूगीर—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) ख़ूगर; (२) वह गद्दी जो घोड़े की ज़ीन के नीचे रखते हैं जिससे पसीना सोखती रहे और उसकी पीठ न छिले।

ख़ूज़ादी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) रोटी, भोजन।

ख़ून—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) रक्त, रुधिर, लहू; (२) क़त्ल, हत्या, बध। ख़ून उछलना—क़त्ल की शोहरत होना। ख़ून ख़ुश्क होना—डर जाना, सहम जाना, चुप हो जाना। ख़ून के घूंट पीना—ग़म और ग़ुस्से को बरदाश्त करना। ख़ून चाटना—(तलवार के लिए) ख़ून लगा होना। ख़ून चूसना—मारना, क़त्ल करना; सताना, दिक़ करना। ख़ून छिपाना—क़त्ल का गुप्त रहना। ख़ूने जिगर खाना—कोई काम बड़ी मेहनत से करना, रंज उठाना। ख़ूने दिल पीना—अंदर ही अंदर ग़म खाना, बहुत अफ़सोस करना। ख़ून दामन से न छूटना—वध का दोषी ठहराया जाना। ख़ून पानी होना—बेहद तकलीफ़ पहुँचना। ख़ून बिगड़ना—ख़ून ख़राब होना, कोढ़ होना। ख़ून मुँह को लगना—मज़ा पड़ना। ख़ून रुलाना—हद से ज़्यादा रुलाना। ख़ून सर चढ़ना, ख़ून सर पर सवार होना—किसी के मारने पर तैयार होना। ख़ून सफ़ेद होना—संग-दिल हो जाना, निर्दय हो जाना, बेमुरौवत होना। ख़ून सूख जाना—भय या चिन्ता से परेशान हो जाना। ख़ून हलका होना—दूसरे का ख़ून निकलना बरदाश्त न कर सकना।

ख़ून-आलूदा—(फ़ा०) (वि०) ख़ून में भरा हुआ, लहू-लुहान।

ख़ून-का-प्यासा—जान का दुश्मन।

ख़ून-ख़च्चर—(पु०) (औ०) ख़ूं-रेज़ी; क़त्ल और मार।

ख़ूनी—(फ़ा०) (वि०) (१) हत्यारा, घातक मार डालनेवाला, क़ातिल, अत्याचारी।

ख़ूने-जिगर—(फ़ा०) (सं० पु०) ग़म, ग़ुस्सा, रंज।

ख़ूब—(फ़ा०) (वि०) सुन्दर, पसन्द, अच्छा, भला।

ख़ूबकलां—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ख़ाकसी, ख़ाकसीर, एक प्रकार के बीज जो औषध के काम में आते हैं।

ख़ूबरू—(फ़ा०) (वि०) ख़ूबसूरत, सुन्दर।

ख़ूब-सूरत—(फ़ा०) (वि०) सुन्दर, रूपवान्।

ख़ूब-सूरती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सौन्दर्य, अच्छी सूरत-शक्ल।

.ख़ूबाँ—(फ़ा०) (सं० पु०) सुन्दरियाँ, सुन्दर स्त्रियाँ।

.ख़ूबानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक फल, ज़रदालू।

.ख़ूबी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) भलाई, अच्छाई; (२) गुण, विशिष्टता।

.ख़ूर—(फ़ा०) (वि०) खानेवाला। (सं० फ़ा०) भोजन।

.ख़ूरा—(फ़ा०) (सं० पु०) कुष्ट, कोढ़।

ख़ूराक—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) भोजन, आहार, खाना; (२) चारा; (३) भत्ता, सफ़र-ख़र्च।

.ख़ूराकी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) खाने पीने की चीज़, खाने का ख़र्च।

.ख़ूरिश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) भोजन, खाना, खाने का सामान।

.ख़ूलंजान—(फ़ा०) (सं० पु०) पान की जड़, कुलीजन।

खूसट—(हि०) (सं० पु०) (१) उल्लू; (२) निकम्मा, बहुत बुड्ढा।

खेदा—(हि०) (सं० पु०) (१) हाथी पकड़ने का गड्ढा; (२) एक बलवान् पक्षी।

ख़ेमा—(अ०) (सं० पु०) तंबू, डेरा।

खेमा-गाह—(अ०) (सं० पु०) ख़ेमें लगाने की जगह।

ख़ेमादोज़—(अ०) (सं० पु०) .खेमा बनाने वाला।

खेवट—(हि०) (सं० स्त्री०) सरकारी रजिस्टर जिसमें गाँव के मालिकों के नाम व हिस्से लिखे जाते हैं।

.खेश—(फ़ा०) (वि०) अपना। (सं० पु०) (१) सम्बन्धी, रिश्तेदार; (२) दामाद, जामाता। .खेश ओ अक़ारिब—रिश्तेदार।

खेस—(हि०) (सं० पु०) ओढ़ने-बिछाने का सूती कपड़ा।

.ख़ैर—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) नेकी, भलाई, कुशल-क्षेम; (२) बढ़ोतरी, उन्नति, बरकत; (३) तनदुरुस्ती, सलामती। (अव्यय) कुछ परवा नहीं, अच्छा, ठीक, बजा। .ख़ैर-आफ़ियत—कुशल क्षेम।

.ख़ैर-अन्देश—(फ़ा०) (वि०) शुभ-चिन्तक, .ख़ैर-ख़्वाह।

.ख़ैर-अन्देशी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शुभ-चिन्तन, .ख़ैर-ख़्वाही।

.ख़ैर-खबर—(स्त्री०) (औ०) ख़बर, हाल, चाल, कुशल-मंगल।

.ख़ैर-ख़्वाह—(फ़ा०) (वि०) शुभ-चिन्तक।

.ख़ैरगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) चकाचौंद; आँखों के आगे अंधेरा आ जाना; (२) बेहयाई, ढिठाई।

.ख़ैर-बाद—(फ़ा०) (सं० पु०) सफ़र के लिए विदा करना, कुशल हो।

.ख़ैर-बाशद—.ख़ैर तो है।

.ख़ैर-मुक़द्दम—(अ०) (सं० पु०) शुभागमन, स्वागत।

.ख़ैर-सल्लाह—(स्त्री०) कुशल, .ख़ैराफ़ियत, मिज़ाज-पुर्सी।

खैरा—(हि०) (वि०) (१) भूरा; (२) बायाँ हाथ।

.ख़ैरात—(अ०) (सं० स्त्री०) दान-पुण्य।

.ख़ैराती—(अ०) (वि०) दान का, दातव्य।

.ख़ैराद—(फ़ा०) (सं० पु०) खराद, वह औज़ार जिस पर लकड़ी या धातु की चीजें चिकनी की जाती हैं।

ख़ैरियत—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) कुशल-क्षेम, राज़ी-.ख़ुशी; (२) भलाई, कल्याण।

.ख़ैरू—(फ़ा०) (सं० पु०) ख़तमी (एक पौदा)।

.ख़ैल—(अ०) (सं० पु०) झुंड, गिरोह, समूह।

.ख़ैला—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मूर्ख स्त्री, बेहूदा, लग़्व।

.ख़ैला-पन—(फ़ा०) (सं० पु०) बेहूदापन।

ख़ैले—(फ़ा०) (वि०) बहुत ज़्यादा।

खोंप—(हि०) (सं० स्त्री०) फटने से कपड़े में हुई दर्ज़, दरार, एक प्रकार की लंबी सिलाई।

ख़ोगीर—(फ़ा०) (सं० पु०) घोड़े की ज़ीन के नीचे बिछाने का कपड़ा। ख़ोगीर की भर्ती—व्यर्थ और रद्दी चीज़ें।

खोजड़—(हि०) (सं० पु०) फोक।

खोजड़ा—(हि०) (सं० पु०) (औ०) पता, सुराग़, नाम-निशान; प्रारब्ध, क़िसमत। खोजड़ा खोना—सत्यानाश करना। खोजड़ा जाय—नाश हो (श्राप)। खोजड़ा पीटा—(औ०) (निगोड़ा)।

ख़ोजा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) हिजड़ा, ख़्वाजा-सरा; (२) नो-मुसल्मानों की एक जाति।

ख़ोद—(फ़ा०) (सं० पु०) युद्ध में पहनने का लोहे का टोप, कूंड़।

ख़ोनचा—(सं० पु०) बड़ा थाल, बड़ा थाल जिसमें मिठाई इत्यादि रखकर बेचते हैं।

ख़ोर—(फ़ा०) (वि०) खानेवाला। (फ़ा०) (पु०) थोड़ा सा खाना।

ख़ोरो-नोश—(फ़ा०) (सं० पु०) खाना-पीना, दाना-पानी।

ख़ोल—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) छिलका; (२) मियान, ग़िलाफ़।

ख़ोशा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) अनाज की बाल; (२) गुच्छा।

ख़ोशा-चीं—(फ़ा०) (वि०) गुच्छे बनाने वाला, बाल चुननेवाला।

खोंसड़ा, खोंसरा—(हि०) (सं० पु०) फटा-पुराना जूता।

खोसा—(हि०) (सं० पु०) बिना डाढ़ी मूंछ का मनुष्य।

ख़ौज़—(अ०) (सं० पु०) चिन्ता, फ़िक्र, सोच, गहरा विचार। ग़ौर-ख़ौज़—विचार-चिन्तन।

ख़ौफ़—(अ०) (सं० पु०) डर, भय।

ख़ौफ़ ज़दा—(फ़ा०) (वि०) डरा हुआ, भयभीत।

ख़ौफ़-नाक—(फ़ा०) (वि०) भयानक, भीषण।

ख़्वाँ—(फ़ा०) (वि०) (१) पढ़ने वाला; (२) कहने वाला; (३) गाने वाला; (४) जानने वाला। (शब्दों के अन्त में लगता है)।

ख़्वाँदगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पढ़ना, पढ़ाई।

ख़्वाँदा—(फ़ा०) (वि०) (१) पढ़ा-लिखा, शिक्षित, बुलाया हुआ। ना-ख़्वांदा—अशिक्षित, बिन बुलाया।

ख़्वाजा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) गृह-स्वामी; (२) सरदार; (३) संपन्न व्यक्ति; (४) हिजड़ा, जो प्रायः महलों में सेवा के लिए रखते हैं।

ख़्वाजा-ख़िज़्र—(अ०) (सं० पु०) एक पैग़ंबर का नाम। (देखो ख़िज़र)।

ख़्वाजा-ताश—(फ़ा०) (सं० पु०) एक मालिक के नौकर।

ख़्वाजा-सरा—(फ़ा०) (सं० पु०) हिजड़ा जो घर में काम करता हो, ज़नाने का नौकर।

ख़्वातीन—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बेगमें। ('ख़ातून' का बहुवचन)।

ख़्वान—(फ़ा०) (सं० पु०) दस्तर-ख़्वान, चंगेर, थाल।

ख़्वानचा—(फ़ा०) (सं० पु०) ख़ोनचा, वह थाल जिसमें रखकर मिठाई आदि बेचते हैं।

ख़्वान-पोश—(फ़ा०) (सं० पु०) ख़्वान के ऊपर ढकने का कपड़ा। कहा०—ख़्वान-पोश पाक, खोलके देखो तो ख़ाक—ऊपरी तड़क-भड़क, ऊँची दूकान फीका पकवान के अर्थ में।

ख़्वानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पढ़ना।

ख़्वाब—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सोना, निद्रा में होना; (२) स्वप्न, सुपना; (३) ख़याल, वहम। ख़्वाब ओ ख़याल—बेअसल बातें।

ख़्वाब-आलूदा—(फ़ा०) (वि०) नींद में भरा हुआ।

ख़्वाब-ख़रगोश—(फ़ा०) (सं० पु०) बे-ख़बरी, ख़्वाब ग़फ़लत; गहरी नींद।

ख़्वाब-गाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शयना-गार, सोने का कमरा।

ख़्वाब-परेशान—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बे-आरामी की नींद।

ख़्वाबीदा—(फ़ा०) (वि०) सोया हुआ, सुप्त।

ख़्वार—(फ़ा०) (वि०) (१) खाने वाला; (२) ख़राब, ज़लील; (३) आवारा, परेशान, बेएतबार।

ख़्वारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) दुर्दशा, ख़राबी; (२) ज़िल्लत, परेशानी, तबाही, अनादर।

ख़्वास्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) इच्छा, कामना।

ख़्वास्तगार—(फ़ा०) (सं० पु०) उम्मेदवार, इच्छुक, तलब-गार।

ख़्वास्त-गारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) इच्छा, ख़्वाहिश, तमन्ना; (२) शादी का पैग़ाम।

ख़्वाह—(फ़ा०) (वि०) चाहनेवाला, कांक्षी, इच्छुक। (सं० स्त्री०) इच्छा, कामना, ख़्वाहिश। हस्ब दिल ख़्वाह—इच्छा-नुसार। ख़ातिर-ख़्वाह—संतोषजनक। (अव्यय) या, अथवा।

ख़्वाहमख़्वाह—(फ़ा०) (क्रि० वि०) (१) ज़बरदस्ती, बेकार, मजबूरी से; (२) इच्छा न रहते हुए; (३) अवश्य, ज़रूर।

ख़्वाहाँ—(फ़ा०) (वि०) इच्छुक, कांक्षी, अभिलाषी, चाहनेवाला।

ख़्वाहिश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मतलब, इच्छा, अभिलाषा।

ख़्वाहिश-मन्द—(फ़ा०) (वि०) इच्छुक, अभिलाषी।

ग

गंग—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) गंगा।

गंज—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) धन, दौलत, दफ़ीना; (२) गोदाम, संग्रह, ज़ख़ीरा; (३) ढेर, अंबार, राशि; (४) अनाज की मंडी, ग़ल्ले का बाज़ार; (५) बहुत से पटाक़े एक जगह रखकर साथ-साथ छुड़ाए जायँ; (६) वह ज़मीन जिसमें कुछ लोगों को आबाद कर दें।

गंज-बख़्श—(फ़ा०) (वि०) बहुत बड़ा उदार, बड़ा दानी।

गंजीना—(फ़ा०) (सं० पु०) ख़ज़ाना, दफ़ीना, माल, गोदाम।

गंजीफ़ा-गंजफ़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) एक खेल जो ताश की तरह खेला जाता है।

गंजीफ़ा-बाज़—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) गंजीफ़ा खेलने वाला; (२) मक्कार, चाल-बाज़, कपटी, फ़रेबी।

गंजूर—(फ़ा०) (सं० पु०) ख़ज़ानेवाला, ख़ज़ाने का मालिक।

गच—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) प्लास्तर करने का चूना; (२) पक्का फ़र्श, पक्की छत; (३) ओखली; (४) गाढ़ा, गरिष्ट, जो हज़्म न हो।

ग़च—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) तलवार या चाक़ू के मांस में घुसने की आवाज़; (२) कीचड़ में चलने की आवाज़।

ग़चा—(फ़ा०) (सं० पु०) धोखा।

गज़—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) एक नाप जो सोलह गिरह या तीन फ़ुट की होती है; (२) लोहे की सलाख़ या गोल लकड़ी जिससे बन्दूक़ की डाट लगाते हैं; (३) एक

प्रकार का तीर; (४) सारंगी या सितार बजाने का यंत्र।

ग़ज़क—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) वह चीज़ जो नशा पीने के पीछे मुँह का स्वाद बदलने के लिए खाई जाती है; (२) तिल और शकर या गुड़ से बनी हुई एक मिठाई; (३) नाश्ता, कलेवा।

ग़ज़न्द—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) दुःख, कष्ट, तकलीफ़; (२) नुक़सान, हानि; (३) आसेब का ख़लल, प्रेत-बाधा।

ग़ज़न्फ़र—(अ०) (सं० पु०) (१) सिंह, शेर; (२) बहादुर।

ग़ज़न्फ़री—(अ०) (सं० स्त्री०) बहादुरी।

ग़ज़ब—(अ०) (सं० पु०) (१) ग़ुस्सा, कोप, क्रोध, रोष; (२) मुसीबत, बला, आपत्ति, विपत्ति; (३) अंधेर, अन्याय, ज़बरदस्ती, सख़्ती, ज़ुल्म, अत्याचार; (४) बहुत बेजा बात, बहुत बुरी या अनुचित बात; (५) लानत, मार (ख़ुदा के साथ) (वि०) अत्यन्त कठिन, बहुत, अनोखा।

ग़ज़ब का—(१) अत्यन्त कठिन, बहुत अधिक; (२) विलक्षण, अपूर्व; (३) बहुत तेज़, भयानक; (४) बहुत बुरा, मुज़िर; (५) प्रभाव या असर दिखानेवाला, कारगर। ग़ज़ब टूट पड़ना—बड़ी आफ़त आना। ग़ज़ब तोड़ना—(१) फ़िसाद उठाना; (२) बहुत ग़ुस्सा होना। ग़ज़ब में जान पड़ना—झगड़े में फँसना।

ग़ज़ब-आलूदा—(फ़ा०) (वि०) ग़ुस्से में भरा हुआ।

ग़ज़ब-नाक—(अ०) (वि०) बहुत ग़ुस्से में भरा हुआ, अत्यन्त क्रुद्ध।

ग़ज़बी—(अ०) (वि०) ज़ालिम, अत्याचारी, ग़ुस्सेवर, क्रोधी।

ग़ज़र—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) गाजर।

ग़ज़ल—(अ०) (सं० स्त्री०) फ़ारसी या उर्दू के एक प्रकार के पद्य जिनमें प्रायः प्रेम का वर्णन रहता है। बहुवचन—ग़ज़लियात।

ग़ज़ल-ख़्वाँ, ग़ज़ल-गो—(अ०) (वि०) ग़ज़ल सुनानेवाला।

ग़ज़ल-परदाज़—(फ़ा०) (वि०) शायर, कवि।

ग़ज़ा—(अ०) (सं० स्त्री०) मज़हब या दीन के दुश्मन के साथ लड़ाई करना, मज़हबी जंग।

ग़ज़ाफ़—(फ़ा०) (सं० पु०) झूठ, बेहूदा बात-चीत, बकवास।

ग़ज़ाल—(अ०) (सं० पु०) हिरन।

ग़ज़ाल-चश्म—(फ़ा०) (वि०) बड़ी-बड़ी आँखों वाला।

गज़िन्दा—(फ़ा०) (वि०) डंक मारनेवाला, डसनेवाला (साँप)।

गज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) खद्दर, गाढ़ा।

ग़ट—(उ०) (सं० पु०) लोगों की भीड़, जत्था, ग़ोल। (स्त्री०) निगलने की आवाज़। ग़ट के ग़ट—बहुत से ग़ोल या झुण्ड।

ग़तर-बूद—(वि०) मिला-जुला, गड़बड़, ख़राब।

ग़दर—(अ०) (सं० पु०) (१) हलचल, खलबली, गड़बड़; (२) बग़ावत, विद्रोह, बलवा।

गदा—(फ़ा०) (सं० पु०) भिखारी, फ़क़ीर।

गदाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) फ़क़ीरी, भिखमंगी। (वि०) नीच, रज़ील।

गदा-गरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) भीख माँगने का काम, भिक्षा-वृत्ति।

ग़द्दार—(अ०) (वि०) कपटी, धोखेबाज़।

गद्दर—(हि०) (वि०) अधपका।

गद्दा—(हि०) (सं० पु०) (१) ज्वार का भुट्टा; (२) करबी की पूली; (३) रुई-दार बिछौना; (४) अटकल, क़यास; (५) धोखा, फ़रेब।

ग़द्दार—(अ०) (वि०) (१) विद्रोह करने वाला, बाग़ी; (२) बहुत बड़ा उपद्रव मचाने वाला; (३) नमक-हराम।

गद्दे-बाज़ी—(हि०) (सं० स्त्री०) अटकल लगाना, अक़्ल दौड़ाना।

ग़द्र—(अ०) (सं० पु०) देखो 'ग़दर'।

ग़नायम—(अ०) (सं० पु०) लूट का माल। 'ग़नीमत' का बहुवचन।

ग़नी—(अ०) (वि०) (१) धनी, दौलतमन्द; (२) बे-परवा, निश्चिन्त, स्वाधीन; (३) ईश्वर का नाम।

ग़नीम—(अ०) (सं० पु० लूटनेवाला, दुश्मन, शत्रु, वैरी।

ग़नीमत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) लूट का माल, वह माल जो दुश्मन से छीन लिया जाय; (२) वह माल जो बे-मेहनत मिले, मुफ़्त का माल; (३) संतोष-प्रद बात, क़द्र के क़ाबिल। **ग़नीमत है**—काफ़ी है, बहतर है। **ग़नीमत जानना**—क़द्र करना, बहतर समझना। **ग़नीमत होना**—क़द्र के क़ाबिल होना, शुक्र के क़ाबिल होना।

ग़नूदगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) नींद-देखो —'ग़ुनूदगी'।

गन्दगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) बदबू; (२) मैला-पन, ग़िलाज़त; (३) ना पाकी, अपवित्रता; (४) मल, मैला।

गन्दना—(फ़ा०) (सं० पु०) एक तरकारी, पोलिंगा, लेहसुन की तरह का पौदा।

गन्दा—(फ़ा०) (वि०) (१) ग़लीज़, मैला; (२) नापाक, अपवित्र; (३) बदबू-दार, सड़ा हुआ; (४) बुरा, बद; (५) चिड़चिड़ा बेहूदा।

गन्दा-दिमाग़—(फ़ा०) (वि०) (१) घमंडी, मग़रूर, (२) सरकश, उपद्रवी।

गन्दुम—(फ़ा०) (सं० पु०) गेहूँ।

गन्दुम-गूं—(फ़ा०) (वि०) गेहूं के रंग का।

गन्दुम-नुमा, जौ फ़रोश—(फ़ा०) (वि०) धोखेबाज़, मक्कार, धूर्त, कपटी।

गन्दुम-नुमाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) धोखा, फ़रेब, छल, दग़ाबाजी।

गन्दुमी—(फ़ा०) (वि०) गेहूँ के रंग का।

ग़प—(उ०) (सं० स्त्री०) (फ़ारसी में गप था) (१) झूठी बात, शेख़ी की बात; (२) जल्दी से गले में उतार जाने की आवाज़।

ग़प-शप—(उ०) (सं० स्त्री०) बेहूदा बातें।

ग़प्पा—(सं० पु०) धोखा।

ग़प्पी—(उ०) (वि०) झूठा, डींग मारने वाला।

ग़फ़—(फ़ा०) (वि०) मोटा, ख़ूब ठोंक कर बुना हुआ।

ग़फ़लत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) असावधानी, ला-परवाई; (२) बेहोशी, ग़शी, संज्ञा-शून्यता, बेख़बरी; (३) चूक, भूल; (४) नींद, ऊँघ।

ग़फ़लत-कार, ग़फ़लत-पेशा—(फ़ा०) (वि०) असावधान, बे-ख़बर।

ग़फ़लत-शआर—(फ़ा०) (वि०) ग़फ़लत करनेवाला, असावधान।

ग़फ़लती—(अ०) (वि०) गफ़लत करने वाला, असावधान, बेपरवा।

ग़फ़ीर—(अ०) (सं० पु०) बहुत ढाँपने-वाला, इतनी बड़ी भीड़ कि उसके पार न देख सकें।

जम्मे-ग़फ़ीर—बड़ी भारी भीड़, जहाँ तक नज़र जाय, ज़मीन न दिखाई दे।

ग़फ़ूर—(अ०) (वि०) भूल-चूक माफ़ करने वाला, क्षमा करने वाला (ईश्वर)।

ग़फ़्फ़ार—(अ०) (वि०) बड़ा क्षमा करने-वाला (ईश्वर)।

ग़फ़्स—(अ०) (वि०) गफ़, मोटा, दलदार।

ग़ब-ग़ब—(अ०) (सं० पु०) मोटे आदमी की ठोढ़ी के नीचे लटका हुआ गोश्त (जो ख़ूब-सूरती में दाख़िल है)

ग़बन—(अ०) (सं० पु०) किसी दूसरे की धरोहर मार लेना, ख़यानत, ख़ुर्द-बुर्द।

ग़बावत—(अ०) (सं० स्त्री०) कुन्द होना, कुन्द-ज़हन होना।

ग़बी—(अ०) (वि०) कुन्द-ज़हन।

गब्र—(फ़ा०) (सं० पु०) अग्नि-पूजक, आतिश-परस्त।

ग़ब्रून—(हि०) (सं० पु०) एक प्रकार का मोटा कपड़ा।

ग़म—(अ०) (सं० पु०) (१) शोक, दुःख, रंज, सोग, मातम, अफ़सोस; २) फ़िक्र, परवा।

ग़म-अंगेज़—(अ०) (वि०) ग़म पैदा करने वाला।

ग़मआलूद, ग़म-आलूदा—(फ़ा०) वि०) हर वक्त ग़म में रहनेवाला।

ग़म-कदा—(अ०) (सं० पु०) मुसीबत या ग़म का घर, शोकागार।

ग़म-कश—(फ़ा०) (वि०) शोक में डूबा हुआ, रंज बरदाश्त करनेवाला।

ग़म-ख़ोर—(अ०) (वि०) ग़म खानेवाला, दुःख सहनेवाला, सहनशील।

ग़म-ख़्वार—(अ०) (वि०) (१) हमदर्द, दुःख-दर्द का शरीक, सहानुभूति रखनेवाला; (२) सहनशील, ग़म खानेवाला, बुर्दबार।

ग़म-ख़्वारी—(अ०) (सं० स्त्री०) बरदाश्त, दर्द-मंदी, सहानुभूति।

ग़म ग़लत—(अ०) (सं० पु०) वह आदमी, चीज़ या काम जिससे ग़म बटे; शोक को कम करने वाला।

ग़म-गीन—(अ०) (वि०) दुःखी, उदास, रंजीदा।

ग़म-गुसार—(अ०) (वि०) ग़मख़्वार, हमदर्द, सहानुभूति रखनेवाला।

ग़म-ज़दा—(अ०) (वि०) दुःखी, ग़मगीन।

ग़म-ज़दगी—(अ०) (सं० स्त्री०) दुःखी होना, शोकार्त होना।

ग़मज़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) आँख या भौं का इशारा; (२) नाज़-नख़रा; (३) प्रेमिका की अदा, हाव-भाव।

ग़म-परवर, ग़म-परस्त—(फ़ा०) (वि०) जो सदा रंजीदा रहता हो।

ग़म-रसीदा—(फ़ा०) (वि०) दुःखी, शोकार्त।

ग़मी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) मृत्यु, मौत; (२) शोक की दशा; (३) मातम, मृत्यु के कारण शोक। (वि०) ग़मगीन, दुःखी। ग़मी हो जाना—मौत हो जाना।

ग़म्माज़—(अ०) (वि०) (१) आँख से इशारा करनेवाला, ताना करनेवाला; (२) चुग़ल-ख़ोर।

ग़म्माज़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) चुग़ल-ख़ोरी, निंदा, बद-गोई।

ग़यास—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) फर्याद, (२) फर्याद को पहुँचानेवाला; (३) मुक्ति, छुटकारा।

ग़यूर—(अ०) (वि०) बहुत ग़ैरत करने वाला, लज्जा करनेवाला।

गर—(फ़ा०) (प्रत्यय) शब्दों के अन्त में 'करने वाला' 'रखने वाला' का अर्थ देता है। अव्यय—अगर, यदि, जो।

ग़रक़—(अ०) (वि०) डूबा हुआ, बहुत व्यस्त, महव, मग्न।

ग़रक़े-अरक़—(वि०) पसीने में डूबा हुआ, शर्मिंदा।

ग़रक़ाब—(अ०) (वि०) (१) पानी में डूबा हुआ, नशे में चूर, नींद में मतवाला; (२) बहुत व्यस्त, निहायत मशग़ूल।

ग़रक़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) बाढ़; (२) पानी में डूबी हुई ज़मीन; (३) एक प्रकार की कम-अर्ज़ लंगोटी। ग़रक़ी आना—बाढ़ आना।

ग़रक़े फ़िक्र—(फ़ा०) (वि०) चिन्ता-ग्रस्त, फ़िक्र में डूबा हुआ।

ग़रग़रा—(अ०) (सं० पु०) ग़रारा।

गर-चे—(फ़ा०) (अव्यय) यद्यपि, अगर-चे।

ग़रज़—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) अभिप्राय, प्रयोजन, मतलब, मक़सद; (२) परवा, ज़रूरत, आवश्यकता; (३) इच्छा, चाह, इरादा; (४) उद्देश्य। (अव्यय)—(१) निदान, अन्त में; (२) संक्षिप्त में, सारांश यह कि। ग़रज़-कि—ख़ुलासा यह कि।

ग़रज़ अटकना, ग़रज़ अटकी होना—हाजत होना, किसी से काम अटकना।

ग़रज़ निकालना—मतलब पूरा करना।

ग़रज़ पड़ना—हाजत होना, इच्छा होना।

ग़रज़-आशना—(फ़ा०) (वि०) स्वार्थी, स्वार्थ-परायण।

ग़रज़-बावला—(वि०) हाजत-मंद, मतलब का ग़ुलाम। कहा०—ग़रज़-बावला अपनी गावे—ग़रज़-मंद अपनी ही बात की धुन रखता है।

ग़रज़-मन्द—(फ़ा०) (वि०) हाजत-मंद, ज़रूरत-मंद।

ग़रज़ी—(अ०) (वि०) गरज़-मन्द, स्वार्थी।

गरदन—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) देखो—'गर्दन'।

गरदनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) घोड़े की झूल; (२) एक ज़ेवर जो गरदन में पहना जाता है; (३) कुश्ती का एक दाँव।

गरदां—(फ़ा०) (वि०) फिरनेवाला, घूमनेवाला।

गरदान—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) फिराव, फेर, दौर, घूमना; (२) शब्दों का रूप-साधन; (३) कुरान-शरीफ़ दुहराना। (सं० पु०) उड़ाने का कबूतर जो इधर उधर उड़कर अपने घर वापस आता हो। (वि०) उलटा हुआ, पलटा हुआ।

गरदानना—(क्रि०) (१) शब्द के रूप कहना; (२) दुहराना, लपेटना; (३) मानना, स्वीकार करना; (४) मिलाना, फंसाना; (५) ध्यान दिलाना; (६) खुली हुई किताब बंद करना।

गरदिश—(सं० स्त्री०) देखो—'गर्दिश'।

गरदी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) घूमना, फिरना; (२) परिवर्तन, उलट-फेर; (३) बद-बख़्ती, दुर्भाग्य।

गरदूं—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) आकाश, आसमान; (२) रथ, गाड़ी। गरदूं पर कुलाह फेंकना—ख़ुशी से इतराना; घमंड करना।

ग़रब—(अ०) (सं० पु०) पश्चिम।

ग़रबी—(अ०) (वि०) पश्चिमी।

गरम—(फ़ा०) (वि०) (१) जलता हुआ; (२) तत्ता; (३) तेज़-रफ़्तार; (४) तत्पर, मुस्तैद; (५) ख़फ़ा, नाराज़, क्रुद्ध; (६) शोख़, नटखट, शरारती, चुलबुला, चंचल।

गरम-इख़्तलाती—(स्त्री०) गहरी दोस्ती।

गरम-जोशी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) शौक़, जोश, सरगरमी, तपाक; (२) कोशिश।

गरम-बाज़ारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) व्यापार की अधिकता; रौनक़, चहल-पहल।

गरमा—(फ़ा०) (सं० पु०) गर्मी का मौसम, ग्रीष्म ऋतु।

गरमाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) गरमी; (२) शरीर में गरमी पैदा करनेवाली चीज़।

गरमावा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) हमाम, नहाने का गरम मकान; (२) पानी गरम करने का बरतन।

गरमी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) उष्णता, तपिश, हरारत, ताप; (२) ग्रीष्म ऋतु; (३) सरगर्मी, तेज़ी, उमंग; (४) ग़ुस्सा, क्रोध; (५) कामेच्छा, शहवत; (६) आतशक, उपदंश, एक रोग।

गरां—(फ़ा०) (वि०) (१) भारी, वज़नी, बोझल; (२) मँहगा, अनमोल; (३) ना गवार; (४) सख़्त, कड़ा; (५) सुस्त, काहिल; (६) कठिन, मुश्किल, दुश्वार।

गरां गुज़रना—ना-गवार मालूम होना।

गरां-ख़ातिर—(फ़ा०)(वि०) (१) ना-गवार अप्रिय; (२) दूभर; (३) नाराज़, रंजीदा।

गरां-ख़्वाब—(फ़ा०) (वि०) जो बहुत सोवे, देर तक सोता रहे, ग़ाफ़िल।

गरां-जान—(फ़ा०) (वि०) (१) सुस्त, काहिल, आलसी; (२) वह जिसे ज़िंदगी दूभर हो; (३) जो मुश्किल से मरे, सख़्त-जान।

गरां-बहा—(फ़ा०) (वि०) बहुमूल्य, बेश-क़ीमत।

गरां-बार—(फ़ा०) (वि०) भारी, बोझ से दबा हुआ।

गरां-माया—(फ़ा०) (वि०) (१) बड़ा आदमी, प्रतिष्ठित; (२) नफ़ीस और क़ीमती चीज़; (३) बहु-मूल्य, श्रेष्ठ।

गरां-सर—(फ़ा०) (वि० घमंडी, अभिमानी।

ग़रायब—(अ०) (वि०) अजायब, विलक्षण।

गरानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) मंहगी, भाव का ऊँचा हो जाना; (२) तोड़ा, कमी, क़िल्लत; (३) ना-गवारी, उदासी; (४) भारी-पन, बद हज़्मी।

ग़रारा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) हलक़ में पानी डाल कर कुल्ला करना, ग़रग़र की अवाज़ निकालना; (२) ग़र-ग़रा करने की दवाएँ; (३) कपड़े की थैली। ग़रारे-दार—ढीले पायचों का पैजामा।

ग़रीक़—(अ०) (वि०) डूबा हुआ। ग़रीक़े-रहमत—ईश्वर की दया में मग्न (मृत के लिए) ग़रीक़ रहमत हो—ख़ुदा जन्नत नसीब करे।

ग़रीज़—(अ०) (सं० पु०) स्वभाव, प्रकृति, ख़सलत।

ग़रीज़ी—(अ०) (वि०) स्वाभाविक, प्राकृतिक।

ग़रीब—(अ०) (वि०) (१) मुफ़लिस, निर्धन, दरिद्री; (२) दीन, आजिज़; (३) जो विदेश में हो; (४) अनोखा, अजीब, अद्भुत; (५) सीधा-सादा। कहा०—ग़रीब की जोरू सब की भाभी—ग़रीब पर सब का बस चलता है। ग़रीबों ने रोज़े रक्खे तो दिन बड़े हो गये—अच्छे काम का संकल्प करे और दिक़्क़त पेश आवे।

ग़रीब-आज़ार—(अ०) (वि०) ग़रीब को सतानेवाला, दीन पीड़क।

ग़रीब-उल्-द्यार, ग़रीब-उल्-वतन—(अ०) (वि०) मुसाफ़िर, परदेसी, बे-घरा।

ग़रीब-उल्-वतनी—(अ०) (सं० स्त्री०) परदेश में होना, वतन से अलग होना।

ग़रीब-ख़ाना—(अ०) (सं० पु०) ग़रीब का मकान (अपने मकान के लिए बोलने वाला दीनता दिखाने के लिए कहता है)।

ग़रीब-ग़ुरबा—(अ०) (सं० पु०) मोहताज, नंगे-भूखे।

ग़रीब-ज़ादा—(फ़ा०) (सं०पु०) मुसाफ़िर-ज़ादा, हराम-ज़ादा।

ग़रीब-नवाज़, ग़रीब-परवर—(अ०) (वि०) दीन प्रतिपालक, बेकसों की परवरिश करनेवाला।

ग़रीबा—(वि०) (स्त्री०) नादिर, दुर्लभ चीज़ें, अजीब चीज़ें।

ग़रीबी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) दरिद्रता, निर्धनता, मुफ़लिसी; (२) दीनता, नम्रता सादगी।

ग़रीर—(अ०) (सं० पु०) तालाब, बरसात का पानी जमा होने की जगह।

ग़रूर—(अ०) (सं० पु०) घमंड, अभिमान।

ग़रेव—(फ़ा०) (सं० पु०) कोलाहल, हुल्लड़।

गरेबां, गरेबान—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) कपड़े या जामे का वह हिस्सा जो गले के नीचे रहता हो; (२) लिबास का वह हिस्सा जो छाती पर रहता है। गरेबान चाक करना—वहशत से कपड़े फाड़ना। गरेबान पकड़ना—सख़्त तक़ाज़ा करना। गरेबान में सर या मुंह डालना—शरमिंदा होना।

गरेबान-गीर—(फ़ा०) (वि०) रोकने वाला ।

गरेबान-दरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) गरेबान फाड़ना ।

गरेबान-दरीदा—(फ़ा०) (वि०) गरेबान फाड़े हुए ।

गरोह—(फ़ा०) (सं० पु०) झुंड, जत्था, समूह ।

गर्क़—(अ०) (वि०) डूबा हुआ—देखो 'ग़रक़' ।

गर्द—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) धूल, ख़ाक, ग़ुबार । (सं० पु०)—(१) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा; (२) रंज-मलाल । गर्द को न छू सकना, गर्द न पाना—बराबरी न कर सकना । गर्द को न लगना—बराबर न होना । गर्द होना—मात होना; बे-रौनक़ होना ।

गर्द-ओ-ग़ुबार—(फ़ा०) (सं० पु०) ख़ाक-धूल ।

गर्द-ख़ोर—(फ़ा०) (वि०) जो धूल पड़ने से जल्दी मैला न हो ।

गर्दन—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) गला; (२) सुराही, शीशा ।

गर्दन-ज़न—(फ़ा०) (सं० पु०) जल्लाद ।

गर्द-नामा—(फ़ा०) (सं० पु०) वह चौकोर काग़ज़ का टुकड़ा जिस पर दुआएँ लिख-कर किसी खंभे या पेड़ से बाँधते हैं जिससे भागा हुआ आदमी वापस आ जाय ।

गर्दिश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) फेर, दौरा, चक्कर; (२) मुसीबत, विपत्ति, बद-नसीबी, दुर्भाग्य ।

गर्दिश-ज़दा—(फ़ा०) (वि०) मुसीबत का मारा ।

गर्दिशे - अय्याम, गर्दिशे-वक़्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दिनों का फेर, बद-क़िस्मती ।

गर्दिशे-दौरान—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ज़माने की गर्दिश, समय का फेर ।

ग़र्ब—(अ०) (सं० पु०) पश्चिम ।

गर्म—(वि०) देखो—'गरम' ।

गर्मी—(सं० स्त्री०) देखो—'गरमी' ।

ग़र्रा—(अ०) (वि०) मशहूर, बड़ा, जय्यद । (सं० पु०) घमंड, ग़ुरूर ।

ग़लत—(अ०) (वि०) (१) अशुद्ध, भ्रष्ट, असत्य; झूठ, मिथ्या ।

ग़लत-अन्दाज़—(अ०) (वि०) जो निशाने पर न लगे, लक्ष्य-भ्रष्ट ।

ग़लत-उल्-अवाम—(अ०) (वि०) जो सर्व-साधारण कहते हैं और विद्वान् ठीक नहीं मानते ।

ग़लत-उल्-आम—(अ०) (वि०) वह ग़लती जिसे विद्वानों ने ठीक मान लिया हो ।

ग़लत-नामा—(अ०) (सं० पु०) अशुद्धि-पत्र, अशुद्धियों की सूची ।

ग़लत-फ़हम—(अ०) (वि०) ना-समझ ।

ग़लत-फ़हमी—(अ०) (सं० स्त्री०), ना-समझी, भ्रम में कुछ का कुछ समझना ।

ग़लत-बरदार—(उ०) (सं० पु०) (१) काग़ज़ छीलने का औज़ार जिससे ग़लत हरफ़ उड़ा कर सही करते हैं; (२) वह काग़ज़ जिस पर से हरफ़ आसानी से उड़ सके और निशान बाक़ी न रहे ।

ग़लतां—(फ़ा०) (वि०) (१) लोटता हुआ, लुढ़कता हुआ, तड़पनेवाला; (सं० पु०) (२) एक प्रकार का कपड़ा ।

ग़लतां पेचां—(वि०) फ़िक्र में परेशान, चिन्तातुर ।

ग़लता—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) एक प्रकार का मोटा कपड़ा; (२) तलवार का चमड़े का म्यान; (३) एक क़िस्म की मेहराब-दार चुनाई, जिस पर पानी न ठहरे ।

ग़लताक—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) गाड़ी की धुरी ।

ग़लती—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) भूल-चूक, भ्रम; (२) धोखा, ना-समझी।

ग़लबा—(अ०) (सं० पु०) (१) जीत, प्रधानता; (२) हमला, आक्रमण; (३) हजूम, अधिकता, ज़्यादती; (४) सबक़त, बढ़चढ़ कर होना। ग़लबा-राय—कसरत-राय ग़लबा करना—हमला करना, चढ़ाई करना। ग़लबा पाना—फ़तह पाना, जीतना।

ग़लाज़त—(सं० स्त्री०) देखो—'ग़िलाज़त'।

ग़लीज़—(अ०) (वि०) (१) मोटा, गाढ़ा, दबीज़, दलदार; (२) गन्दा, मैला, (सं० पु०) मल, विष्ठा।

गल्ला—(फ़ा० पु०) (१) झुण्ड, ग़ोल; (२) दुकान-दार की बिक्री रखने का पात्र।

ग़ल्ला—(अ०) (सं० पु०) अनाज; (२) निबोली, नीम का फल; (३) बिक्री के रखने का सन्दूक़चा; वह क़ीमत जो दिन भर के माल बिकने से वसूल हो।

ग़ल्ला-फ़रोश—(उ०) (वि०) अनाज बेचने वाला।

गल्ला-बान—(फ़ा०) (सं० पु०) चरवाहा, गड़रिया, भेड़ें चरानेवाला।

गल्ला-बानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) भेड़ चराना।

ग़ल्ली—(फ़ा०) (वि०) वह लगान जो ग़ल्ले की सूरत में दिया जाय।

ग़वामिज़—(अ०) (सं० पु०) छिपी हुई बातें, गूढ़ार्थ।

गवार—(फ़ा०) (वि०) लायक़, हज़म के लायक़, पसन्द। (यौगिक शब्दों के अन्त में)

गवाह—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सुबूत पहुँचाने वाला; (२) साक्षी, शाहिद।

गवाही—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शहादत, साक्षी, प्रमाण।

ग़व्वास—(अ०) (सं० पु०) ग़ोता लगाने वाला।

ग़व्वासी—(अ०) (सं० स्त्री०) ग़ोता लगाना।

ग़श—(अ०) (सं० पु०) (१) बेहोशी, मूर्छा; (२) (उ०) आशिक़, शेफ़्ता।

ग़शी—(अ०) (सं० स्त्री०) बेहोशी।

गश्त—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सैर, दौर, घूमना, भ्रमण, चक्कर; (२) दौरा, रूँद। गश्त करना—(१) दौरा करना, चक्कर लगाना; (२) सैर करना।

गश्ती—(फ़ा०) (वि०) घूमने वाला, फिरने वाला। (सं० पु०) पहरा लगानेवाला, गश्त लगाने वाला।

ग़सब—(अ०) (सं० पु०) (१) ज़बर-दस्ती लेना, छीन लेना; (२) किसी की धरोहर हज़म कर जाना, ख़यानत मुजरिमाना।

ग़सबन्—(अ०) (अव्यय) ज़बर-दस्ती से, बेईमानी से।

ग़सबी—(अ०) (वि०) उड़ाया हुआ या छीना हुआ माल।

ग़सियान—(अ०) (सं० पु०) मतली, जी मतलाना।

ग़स्साल—(अ०) (सं० पु०) मुरदों को ग़ुसल देने वाला, नहलानेवाला।

गह—(सं० स्त्री०) देखो—'गाह'।

गहवारा—(फ़ा०) (सं० पु०) बच्चों के झुलाने का पालना, झूला, हिंडोला।

ग़ाटियर, ग़ाटिया—(लख०) (वि०) मोटा और नाटा आदमी।

गाच—(हि०) (सं० स्त्री०) जाली की तरह का एक महीन कपड़ा।

ग़ाज़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) एक सुर्ख़ चूर्ण जो औरतें सुर्ख़ी के वास्ते गालों पर मलती हैं।

ग़ाज़ी—(अ०) (सं० पु०) (१) काफ़िरों का क़त्ल करने वाला; (२) मुसलमान बादशाहों का ख़िताब; (३) वीर, बहादुर; (४) घोड़ा।

ग़ाज़ी-मर्द—(अ०) (सं० पु०) (१) बहादुर आदमी; (२) घोड़ा।

ग़ाज़ी मियाँ—(अ०) (सं० पु०) सुलतान महमुद ग़ज़नवी के भांजे का नाम जिनको ग़ाज़ी का ख़िताब था। इनके नाम की छड़ियाँ खड़ी करते और पूजते हैं।

गाज़ुर—(फ़ा०) (वि०) धोबी।

गाड़ा—(हि०) (सं० पु०) (१) बन्दूक़ की गोली; (२) छिपने की जगह। **गाड़ा बैठना**—घात में बैठना।

गाद—(हि०) (सं० स्त्री०) तलछट।

ग़ादिर—(अ०) (वि०) बेवफ़ा, बे-मुरव्वत, झूठा, वादे का कच्चा।

गान, गाना—(फ़ा०) (प्रत्यय) यौगिक शब्दों के अन्त में 'गुणित' का अर्थ देता है।

ग़ानिमन्—(अ०) (वि०) फ़ायदा हासिल किये हुए, लाभ उठाये हुए।

गाफ़—(फ़ा०) (सं० पु०) बेहूदा, झूठी बातें।

ग़ाफ़िर—(अ०) (वि०) गुनाह बख़्शनेवाला, क्षमा करने वाला।

ग़ाफ़िल—(अ०) (वि०) बेख़बर, बे-परवा, असावधान, ग़फ़लत करने वाला।

गाम—(फ़ा०) (सं० पु०) क़दम, पाँव।

ग़ामिस—(अ०) (वि०) मुश्किल कलाम, कठिन वाक्य।

ग़ायत—(अ०) (वि०) (१) अत्यन्त, बहुत ज़्यादा; (२) चरम सीमा का, अख़ीर दर्जे का; (३) असाधारण। (सं० स्त्री०) (१) ग़रज़, मतलब; (२) इन्तहा, हद, सीमा, अन्त।

ग़ायत-दर्जा—अख़ीर दर्जा, इन्तहाई, चरम सीमा का।

ग़ायब—(अ०) (वि०) (१) अंतर्धान, ग़ैर-हाज़िर, छिपा हुआ, खोया हुआ; (२) गुप्त, पोशीदा, अदृश्य। (सं० पु०) भविष्य, अदृष्ट। **ग़ायब करना**—उड़ाना, चुराना, छुपाना। **ग़ायब करा देना**—उड़वा देना, चुरवा देना। **ग़ायब खेलना**—बे-देखे शतरंज खेलना। **ग़ायब होना**—गुप्त होना, जाता रहना, चोरी जाना, हाज़िर न होना।

ग़ायब-ग़ुल्ला—(उ०) (वि०) बिलकुल ग़ायब (जैसे ग़ुलेल से ग़ुल्ला)।

ग़ायब-बाज़—(फ़ा०) (वि०) ग़ायबाना शतरंज खेलने वाला।

ग़ायबाना—(अ०) (क्रि० वि०) पीठ पीछे, अनुपस्थिति में, ग़ैर-मौजूदगी में।

ग़ायर—(अ०) (वि०) गहरा, लंबा-चौड़ा।

गार—(फ़ा०) (प्रत्यय) यौगिक शब्दों के अन्त में—'करने वाला'।

ग़ार—(अ०) (सं० पु०) (१) गढ़ा, पहाड़ी खोह; (२) (उ०) घाव, ज़ख़्म।

ग़ारत—(अ०) (वि०) तबाह, अकारत, बरबाद, नष्ट। (सं० पु०) (१) लूट-खसोट, विनाश; (२) वह हमला जो दुश्मन पर लूट-मार के लिए किया जाय; (३) माल-ग़नीमत। **ग़ारत का मारा, ग़ारत-गया**—घृणा सूचक वाक्य।

ग़ारत-गर—(अ०) (वि०) (१) लूट-मार करने वाला, लुटेरा, बट-मार; (२) विनाश करने वाला।

ग़ारत-गरी—(अ०) (सं० स्त्री०) लूट-मार।

ग़ारत-गाह—(अ०) (सं० स्त्री०) लूट का मुक़ाम।

ग़ारत-ग़ोल—(अ०) (वि०) (१) तबाह, बरबाद; (२) छिपा हुआ, खोया हुआ।

ग़ारते-होश—(फ़ा०) (वि०) हसीन, तरह-दार।

गाला—(फ़ा०) (सं० पु०) धुनकी हुई रुई।

ग़ालिब—(अ०) (वि०) (१) बलवान्, शक्तिशाली; (२) विजयी, जीतनेवाला; (३) दमन करनेवाला, दबानेवाला; (४) संभावित, जिसकी सम्भावना हो। **ग़ालिब**

आना—जीतना, हराना। ग़ालिब है—बहुत सम्भावना है।

ग़ालिबन्—(अ०) (क्रि० वि०) सम्भावना है, क़रीब-क़रीब यक़ीन है।

ग़ाली—(अ०) (वि०) (१) हद से गुज़रने वाला; (२) एक फ़िरक़ा जो हज़रत अली को ख़ुदा जानता है।

ग़ालीचा—(फ़ा०) (सं० पु०) छोटा ऊनी क़ालीन।

गाव—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) गऊ, गाय; (२) बड़ा तकिया जो मसनद पर रखा जाता है।

गाव-कुशी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) गो-हत्या, गो-बध।

गाव-ख़रास—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) कोल्हू का बैल।

गाव-ख़ुर्द—(फ़ा०) (वि०) गया-गुज़रा, तबाह-बरबाद, नष्ट-भ्रष्ट।

गाव-ज़बान—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक बूटी का नाम, गो-जिह्वा, गोजिया।

गाव-तकिया—(फ़ा०) (सं० पु०) बड़ा तकिया जो मसनद के साथ होता है।

गावदी—(फ़ा०) (वि०) मूर्ख, कुन्द-ज़ेहन।

गाव-दुम—(फ़ा०) (वि०) बैल की दुम के समान, एक सिरे पर मोटा, दूसरे पर पतला, चढ़ाव-उतार वाला।

गाव-मेश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) भैंस।

गाव-शीर—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार का गोंद।

ग़ाशिया—(अ०) (सं० पु०) वह कपड़ा जो घोड़े के चार-जामे के ऊपर डालते हैं, ज़ीन-पोश।

ग़ाशिया-बरदार, ग़ाशिया-बरदोश—(फ़ा०) (वि०) आज्ञाकारी, साईस, नौकर।

ग़ासिब—(अ०) (वि०) ज़बरदस्ती किसी का हक़ छीन लेनेवाला।

गाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) मकान, जगह, स्थान; (२) समय, वक़्त।

गाह-गाह—(फ़ा०) (क्रि० वि०) कभी-कभी।

गाह-ब-गाह, गाह-बे-गाह—(क्रि० वि०) कभी-कभी।

गाहे—कभी।

गाहे-गाहे—(फ़ा०) (क्रि० वि०) कभी-कभी।

गाहे-ब-गाहे—(फ़ा०) (क्रि० वि०) कभी-कभी।

गाहे-माहे—बहुत कम, कभी-कभी।

गिच-पिच—(सं० स्त्री०) खचा-खच, गच-पच।

गिचली—(वि०) मैला, गन्दा, वह आदमी जो अपने बदन की सफ़ाई न रखे।

ग़िज़ा—(अ०) (सं० स्त्री०) खाना, ख़ुराक, भोजन। ग़िज़ा लगना—ग़िज़ा का बदन पर असर करना।

ग़िज़ा-ए-लतीफ़—(अ०) (सं० स्त्री०) हलकी, जल्दी पचने वाली ग़िज़ा।

ग़िज़ा-ए-सक़ील—(अ०) (सं० स्त्री०) देर में हज़म होने वाली ग़िज़ा, गरिष्ट भोजन।

ग़िज़ाफ़—(फ़ा०) (सं० पु०) डींग, शेख़ी, व्यर्थ की बात।

ग़िना—(अ०) (सं० स्त्री०) दौलत-मन्दी, बे-परवाई।

ग़िब्ता—(अ०) (सं० पु०) किसी के माल पर डाह करना।

ग़ियास—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) फ़रयाद, शिकायत; (२) फ़रयाद सुनना, शिकायत दूर करना; (३) शिकायत दूर करनेवाला।

गियाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) घास।

गिरदा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) चक्र, दायरा, हलक़ा, कुंडली, टिकिया; (२) अहाता, दौर, घेरा; (३) वह गोल कपड़ा जो औरतें पान-दान की थाली में रखती हैं; (४) एक प्रकार की ख़मीरी मोटी और छोटी रोटी; (५) वह गोल कपड़ा जिस पर हुक्क़ा रखते हैं; (६) ढोल का ख़ोल; (७) एक क़िस्म का छोटा गोल तकिया।

गिरदाब—(फ़ा०) (सं० पु०) पानी का चक्कर, भँवर।

गिरदावर—(फ़ा०) (सं० पु०) घूमनेवाला, घूम फिर कर काम देखने वाला अफ़सर।

गिरदावरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) गिरदावर का काम या पद।

गिरफ़्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) पकड़; (२) वह बात जो बतौर एतराज़ कही जाय, आपत्ति; (३) दस्ता, मूठ। **गिरफ़्त में आना**—चंगुल में आना, क़ाबू में आना।

गिरफ़्तगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) आवाज़ का भारी होना; (२) फँसा होना।

गिरफ़्ता—(फ़ा०) (वि०) (१) पकड़ा हुआ, फँसा हुआ; (२) आशिक़।

गिरफ़्तार—(फ़ा०) (वि०) (१) पकड़ा हुआ, क़ैदी; (२) फँसा हुआ, आशिक़।

गिरफ़्तारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) पकड़, क़ैद, नज़र बन्दी; (२) उलझाव, जंजाल।

गिरवी—(फ़ा०) (वि०) रहन रक्खा हुआ, बन्धक, गिरो।

गिरवीदगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) गिरवीदा होना, आसक्त होना, प्रेम करना।

गिरवीदा—(फ़ा०) (वि०) प्रेम करनेवाला, आसक्त, आशिक, फ़रेफ़्ता।

गिरह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) गाँठ, ग्रन्थि; (२) जेब, पाकट, खीसा; (३) हड्डियों का जोड़; (४) एक गज़ का सोलहवाँ हिस्सा, तीन उंगल; (५) कला-मुन्डी; (६) रंज, मलाल, शोक; (७) सुद्दा, गिलटी; (८) पास, तहवील; (९) बंद के अख़ीर का शेर, अंतिम दो चरण। **गिरह से**—पास से।

गिरह-कट—(फ़ा०) (सं० पु०) पाकट-मार, जेब-कतरा।

गिरह-गीर—(फ़ा०) (वि०) बल खाये हुए, मुड़ा हुआ।

गिरह-दार—(फ़ा०) (वि०) गँठीला, बहुत सी गाँठों वाला।

गिरह-बाज़—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार का कबूतर जो उड़ते-उड़ते कला-बाज़ियाँ खाता है।

गिरां—(वि०) देखो—'गरां'।

गिरानी—(सं० स्त्री०) देखो—'गरानी'।

गिरामी—(फ़ा०) (वि०) बहुत प्यारा, पूज्य माननीय, बुज़ुर्ग। **नामी-गिरामी**—प्रसिद्ध और माननीय।

गिरामी-नामा—(फ़ा०) (सं० पु०) बड़े का पत्र, बुज़ुर्ग का ख़त।

गिरिफ़्त—(सं० स्त्री०) देखो—'गिरफ़्त'।

गिरियां—(फ़ा०) (वि०) रोता हुआ, रोने वाला।

गिरिया—(फ़ा०) (सं० पु०) रोना, ज़ारी, विलाप। **गिरिया ओ ज़ारी**—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) रोना-पीटना, वावेला, कोह-राम। **गिरिया करना**—रोना, आँसू बहाना।

गिरिया-नाक, गिरिया-मन्द—(फ़ा०) (वि०) रोने वाला।

गिरो—(फ़ा०) (वि०) रहन किया हुआ, गिरवी।

गिरोह—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) टोली, झुण्ड; (२) ग़ोल; (३) क़िस्म, ज़ात।

गिर्द—(फ़ा०) (अव्यय) इधर-उधर, आस-पास।

गिर्द-घुम्मा—(हि०) (वि०) (१) आवारा फिरने वाला, किसी के गिर्द फिरने वाला; (२) मुफ़लिस; (३) तमाश-बीन।

गिर्द-नवाह—(फ़ा०) (सं० पु०) आस-पास का इलाक़ा या स्थान।

गिर्द-बाद—(फ़ा०) (सं० पु०) बवंडर, हवा का चक्कर।

गिर्द-बाश—(फ़ा०) (सं० पु०) गोल और छोटा तकिया।

गिर्दा-गिर्द—(फ़ा०) (सं० पु०) चारों ओर।

गिर्दाब—(फ़ा०) (सं० पु०) भँवर, पानी का चक्कर।

गिर्दावर—(फ़ा०) (सं० पु०) गश्त करने वाला ओहदे-दार।

गिर्दावरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) गिर्दावर का ओहदा; (२) दौरा, गश्त, निगरानी।

गिल—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) गारा, गीली मट्टी; (२) कीचड़, दलदल।

गिलकार—(फ़ा०) (वि०) गारा से काम करने वाला।

ग़िलज़त—(अ०) (सं० स्त्री०) गाढ़ा-पन, गन्दा-पन।

ग़िलमा—(अ०) सं० पु०) बहिश्त के सुन्दर बालक जो पुण्यात्माओं की सेवा करते हैं।

गिल-हिकमत—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) कपरौटी, मट्टी में कपड़ा सान कर उसे शीशी या हाँडी पर चढ़ाना।

गिला—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) शिकायत, शिकवा; (२) उलाहना। गिला-शिकवा (पु०) उलाहना, शिकायत।

ग़िलाज़त—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) गन्दापन, नापाकी, गाढ़ापन; (२) मल, मैला।

ग़िलाफ़—(अ०) (सं० पु०) (१) बक्स या तकिये के ऊपर का कपड़ा, ख़ोल; (२) लिहाफ़; (३) तलवार का म्यान। ग़िलाफ़ी आँख—वह बड़ी झुकी हुई आंख जो पपोटों से ढकी हुई हो। ग़िलाफ़ना, ग़लीफ़ना—(दे०, पागना, चाशनी में डालना।

गिलाबा, गिलावा—(फ़ा०) (सं० पु०) गारा, या गीली मट्टी जो दीवार बनाने के काम में आती है

गिली—(फ़ा०) (वि०) मट्टी का।

गिलीम—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) कम्बल, धुस्सा, लोई।

गिले-ख़ुरासानी—(फ़ा०) (वि०) खरिया मट्टी।

गिले-हिकमत—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) देखो —'गिल-हिकमत'।

ग़िश्श—(अ०) (सं० स्त्री०) खोटा-पन, तशवीश।

गीं—(फ़ा०) (प्रत्यय) शब्दों के अन्त में 'पूर्ण' का अर्थ देता है।

गीती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दुनिया, संसार।

गीदी—(फ़ा०) (वि०) (१) निर्लज्ज, बेहया, बेशर्म; (२) लालची; (३) कमीना, तुच्छ, नीच; (४) कायर, डरपोक; (५) निकम्मा।

गीर—(फ़ा०) (वि०) पकड़ने, लेने या रखनेवाला। (शब्द के अन्त में)।

गुंग—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) गूंगा, मूक; (२) गूंगा-पन।

गुंचा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) कली, बे खिला फूल; (२) झुरमट, कुछ लोगों का जम-घट; (३) माशूक़ का मुख। (उ०) (वि०) गुंजान। गुंजा चटकना—कली खिलना।

गुंजलक—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) शिकन, सिलवट; (२) गाँठ; (३) उलझन, झगड़ा, बखेड़ा। गुंजालक की बातें—पेचीदा बातें, गोल-गोल बातें।

गुंजाइश—(फा०) (सं० स्त्री०) (१) जगह, अवकाश, ठिकाना, समाई; (२) फ़ायदा, बचत, किफ़ायत; (३) हौसला, मक़दूर।

गुंजाइशी—(फा०) (वि०) (१) वह धरती जिसमें बढ़ने की गुंजाइश हो; (२) वह जिसमें गुंजाइश हो।

गुंजान—(फ़ा०) (वि०) पास-पास, घना, मोटा।

गुज़र—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) रास्ता, राह, सड़क; (२) घाट, दख़ल, रसाई; (३) पहुँच, आमद-रफ़्त; (४) निबाह; (५) एक हथियार का नाम जो ऊपर से गोल मोटा और नीचे से पतला होता

है और दुश्मन के सर पर मारा जाता है, गदा।

गुज़र-गाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) रास्ता, राह, सड़क।

गुज़रना—(क्रि०) (१) बीतना, कटना; (२) पहुँचना; (३) पेश होना।

गुज़र-बसर—(फ़ा०) (सं० पु०) निर्वाह, गुज़ारा।

गुज़रान—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) निर्वाह, गुज़ारा। (वि०) गुज़र जाने वाला, अस्थिर, ना-पायेदार। **गुज़रान देना**—पेश करना।

गुज़री—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) गुदड़ी, जहाँ शाम के वक्त सौदा बेचने वाले सड़क के किनारे आ बैठते हैं; (२) मुसाफ़िर। **गुज़री लगी होना**—बाज़ार लगा होना।

गुज़श्तनी—(फ़ा०) (वि०) गुज़रने वाला, ना-पायेदार।

गुज़श्ता—(फ़ा०)—पिछला, बीता हुआ, भूत।

गुज़ाफ़—(फ़ा०) (सं० स्त्री० बेहूदा बातें, बकवास। **लाफ़ ओ गुज़ाफ़**—डींग की बातें।

गुज़ार—(फ़ा०) (वि०) (१) अदा करने वाला, देने वाला; (२) करने वाला। (यौगिक शब्दों के अन्त में आता है)।

गुज़ारना—(क्रि०) (१) अदा करना, छोड़ना; (२) बिताना, काटना, निर्वाह करना; (३) पेश करना, पहुँचाना।

गुज़ारा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) निर्वाह, गुज़र; (२) एक रकम जो जीवन-निर्वाह के लिए दी जाय; (३) रसाई, पहुँच, दख़ल; (४) महसूल लेने की जगह; (५) गुंजाइश, समाई; (६) नदी पार करना, पुल से या नाव से। **गुज़ारा करना**—दिन काटना, निबाहना, काम चलाना।

गुज़ारिश—(फ़ा०) (पु० स्त्री०) प्रार्थना, दरख़्वास्त, निवेदन, बयान।

गुज़ारिश-गर—(फ़ा०) (वि०) प्रार्थी, अर्ज़ करने वाला।

गुज़ारिश-नामा—(फ़ा०) (सं० पु०) पत्र, छोटे का बड़े के नाम।

गुज़ाश्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) निकालने की क्रिया, घटाना, निकालना; (२) छोड़ी हुई या दान की हुई ज़मीन, माफ़ी।

गुज़ाश्तनी—(फ़ा०) (वि०) छोड़ देने के क़ाबिल, तर्क करने लायक़।

गुज़ीं—(फ़ा०) (वि०) (१) दिल-चस्प, पसंदीदा, (२) पसन्द करने वाला। (यौगिक शब्दों के अन्त में)।

गुज़ीदा—(फ़ा०) वि०) पसन्द किया हुआ, चुना हुआ, छाँटा हुआ।

गुज़ीर—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) इलाज, उपाय, तदबीर, साधन; (२) बचाव, छुटकारा।

ग़ुटर-ग़ुटर—(औ०) मज़े से, मज़ा लेकर। **ग़ुटर-ग़ुटर देखना**—मज़े से बेखटके देखना।

ग़ुटर-ग़ूँ—(देह०) (स्त्री०) कबूतर के बोलने की आवाज़, (लख०) ग़ुट-ग़ूँ।

ग़ुंडा—(फ़ा०) (सं० पु०) लुच्चा, शोहदा।

गुदड़ी—(सं० स्त्री०) देखो—'गुज़री'।

गुदाज़—(फ़ा०) (वि०) (१) पिघलाने वाला; (२) नरम, मुलायम; (३) मोटा।

गुदाख़्ता—(फ़ा०) (वि०) गला हुआ, पिघला हुआ।

ग़ुदूद—(अ०) (सं० पु०) गिलटी।

ग़ुनग़ुना—(वि०) नाक में बोलने वाला।

ग़ुनचा—(फ़ा०) (सं० पु०) देखो—'ग़ुंचा'।

गुनह—(फ़ा०) (सं० पु०) देखो—'गुनाह'।

गुनह-गार—(फ़ा०) (वि०) देखो—'गुनाह-गार'।

गुनाह—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) दोष, अपराध, क़सूर; (२) पाप।

गुनाह-गार—(फ़ा०) (वि०) अपराधी, गुनाह करने वाला।

गुनाह-बेलज़्ज़त—(फ़ा०) (सं० पु०) वह गुनाह जिसके करने में किसी प्रकार का फ़ायदा न हो।

गुनूदगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ऊँघ, नींद, ख़ुमार।

गुन्दा—(फ़ा०) (वि०) बारीक का उलटा, मोटा, लागर का उलटा।

ग़ुन्ना—(अ०) (सं० पु०) अनुस्वार। नाक से निकलने वाली आवाज़।

गुफ़्त-ओ शुनीद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) कहना-सुनना, ज़िक्र, बात-चीत; (२) तकरार, रद-बदल।

गुफ़्तगू—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बात-चीत, बोल-चाल, तक़रीर, भाषण। गुफ़्तगू बढ़ जाना—विवाद हो जाना।

गुफ़्तनी—(फ़ा०) (वि०) कहने के योग्य।

गुफ़्तार—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) गुफ़्तगू, बोल-चाल, बात-चीत।

ग़ुबार—(अ०) (सं० पु०) (१) गर्द, गर्द मिली हुई हवा; (२) मलाल, रंज, द्वेष, मालिन्य। ग़ुबार आना—रंज पैदा हो जाना। ग़ुबार निकालना—दिल का बुख़ार निकालना। ग़ुबार रखना—रंज रखना।

ग़ुबार-आलूद, ग़ुबार-आलूदा—(फ़ा०) (वि०) गर्द में भरा हुआ, धूल-धूसरित।

ग़ुबार-ख़ातिर—(फ़ा०) (सं० पु०) दिल का रंज।

ग़ुब्बारा—(अ०) (सं० पु०) (१) एक क़िस्म की आतिश-बाज़ी; (२) बारीक काग़ज़ का बना थैला जिसमें हवा भर कर उड़ाते हैं।

गुम—(फ़ा०) (वि०) (१) खोया हुआ, व्यर्थ, निष्फल; (२) गुप्त, छिपा हुआ; (३) अप्रसिद्ध, ना-पैद, ग़ायब; (४) हैरान, परेशान; (५) दूर; (६) अविश्वासी।

गुम-ज़दा—(फ़ा०) (वि०) खोया हुआ, भूला हुआ, गुम-राह, भटका हुआ।

गुम-नाम—(फ़ा०) (वि०) अप्रसिद्ध, बेनाम-निशान। (सं० स्त्री०)—घोड़ों की एक बीमारी का नाम।

गुम-नामी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) बे-नाम-निशान होना; (२) गुम होना, ज़ाया होना, जाता रहना, बे-ख़बर हो जाना।

गुम-राह—(फ़ा०) (वि०) (१) भटकने वाला, रास्ता भूला हुआ; (२) धर्म-पथ से डिगा हुआ, कर्तव्य-भ्रष्ट।

गुमराही—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) ज़लालत; (२) बद-दीनी, अधार्मिकता, पापाचरण; (३) सरकशी, (४) रास्ता भूलना।

गुम-शुदा—(फ़ा०) (वि०) खोया हुआ, भागा हुआ, भूला हुआ।

गुम-सुम—(वि०) गूंगा-बहरा; ख़ामोश, हैरान।

गुमान—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) शक-शुबह, आशंका, अनुमान, क़यास, कल्पना; (२) घमंड, अहंकार; (३) वहम, ख़याल, धारणा। गुमान ग़ुज़रना—शक ओ शुबहा होना।

गुमानी—(फ़ा०) (वि०) अभिमानी, घमंडी।

गुमाश्ता—(फ़ा०) (सं० पु०) वह आदमी जिसको कोई काम सुपुर्द किया गया हो, कारिन्दा।

गुम्बद—(फ़ा०) (सं० पु०) बुर्ज, गुमटी। गुम्बद की आवाज़, गुम्बद की सदा—जैसा कहना वैसा सुनना (गुम्बद वाले मकान में जो कुछ बोलो उसी की प्रतिध्वनि सुनाई पड़ती है।

गुम्बदी—(फ़ा०) (सं० पु०) एक खंभे वाला ख़ेमा।

गुरज़ी—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सेवक, ख़ादिम, नौकर; (२) कुत्ता।

गुरदा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) एक शरीर के भीतर के अंग का नाम, जिसमें पेशाब बनता है, मूत्राशय; (२) दिलेरी, हौसला, साहस; (३) एक क़िस्म की छोटी तोप।

गुरफ़ा—(अ०) (सं० पु०) खिड़की, झरोका, दरीचा। **गुरफ़ा की बात**—गुप्त बात, पोशीदा बात।

गुर-फ़िश—(सं० स्त्री०) (१) कुत्ता, बिल्ली, शेर की ग़ुस्सा-भरी आवाज़; (२) मनुष्य की तकरार, निरर्थक बातें, धमकी, ग़ुस्से की बातें। **गुर-फ़िश करना, ग़ुर-फ़िश लाना**—धमकाना, तकरार करना।

ग़ुरबत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) परदेश, विदेश; (२) मुसाफ़िरी, सफ़र; (३) नम्रता, भोला-पन; (४) ग़रीबी, मुफ़लिसी, दरिद्रता।

ग़ुरबत-ज़दा, ग़ुरबत-दीदा—(फ़ा०) (वि०) वह मनुष्य जो अपने जन्म-स्थान या शहर से दूर हो।

गुरबा—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बिल्ली।

ग़ुरबा—(अ०) (सं० पु०) ग़रीब लोग, 'ग़रीब' का बहुवचन।

गुरसंगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) भूख।

ग़ुराब—(अ०) (सं० पु०) कौआ, छोटी किश्ती।

ग़ुरूब—(अ०) (सं० पु०) सूर्य, चंद्रमा आदि का छुपना, डूबना, अस्त होना।

ग़ुर—(अ०) (सं० पु०) वह आदमी जिसके ख़ुसए बढ़ गए हों।

गुरेज़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) परहेज़, अलग रहना, बचे रहना, दूर रहना; (२) भागना; (३) एक विषय की तरफ़ से हट कर दूसरे की ओर ध्यान देना; (४) भूमिका कहकर असल विषय पर आना। **गुरेज़ करना**—भागना, परहेज़ करना।

गुरेज़-पा—(फ़ा०) (वि०) (१) भागने वाला, अस्थिर, ना-पायेदार; (२) दास या दासी जो हर वक़्त घर से निकल जाया करे।

गुर्ग—(फ़ा०) (सं० पु०) भेड़िया।

गुर्ग आशनाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ज़ाहिरी दोस्ती—भीतरी दुश्मनी।

गुर्ग-बारां-दीदा—(फ़ा०) (वि०) ख़ुर्राट, तजुर्बे-कार, घुटा-हुआ।

गुर्गा—(हि०) (सं० पु०) (देह०) चेला, शागिर्द, (लख०) शरीर, शैतान, बद-कार।

गुर्गे-बग़ल—(फ़ा०) (वि०) छिपा हुआ दुश्मन जो साथ रहकर दुश्मनी करे।

गुर्ज़—(फ़ा०) (सं० पु०) गदा।

ग़ुर्रिश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ग़ुर्राना।

ग़ुर्रा—(अ०) (सं० पु०) (१) घोड़े के माथे पर का सफ़ेद दाग़; (२) एक प्रकार का घोड़ा; (३) हर चान्द्र मास की पहली तिथि; (४) व्रत, उपवास; (५) श्रेष्ठ वस्तु, (६) जिस काम को रोज़ करते हों उसे न करना, नाग़ा। **ग़ुर्रा करना**—नित्य-कर्म में नाग़ा करना। **ग़ुर्रा देना**—नाग़ा करना, फ़ाक़ा करना। **ग़ुर्रा बताना**—टाल जाना, नाग़ा करना, फ़ाक़ा करना।

ग़ुर्रान—(फ़ा०) (वि०) ग़ुस्से से चीख़ने वाला। **ग़ुर्राना**—(क्रि०) ग़ुस्से की आवाज़ निकालना, ग़ुस्से में कुछ कहना।

गुल—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) फूल, गुलाब का फूल; (२) वह निशान या छाप जो धातु गरम कर शरीर पर देते हैं; (३) बत्ती का जला हुआ या जलता हुआ सिरा; (४) माशूक़; (५) हुक्के का जला हुआ तम्बाकू; (६) वह पर जो रंग के ख़िलाफ़ कबूतर या मोर के निकलते हैं; (७) चमड़ा जो जूते में एड़ी के मुक़ाम पर लगते हैं; (८) वह सफ़ेद धब्बा जो आँख में पड़ जाता है; (९) वह चूने का गोल निशान जो आँख दुखने पर कनपटी पर लगाते हैं; (१०) वह निशान जो आग में जलने से

शरीर पर पड़ जाता है; (११) ज़ेवर। गुल खिलना—कोई नई या अनोखी बात प्रकट होना। गुल निकालना—बातें बनाना। गुल फुलाना—(१) फ़िसाद का बीज बोना, लड़ाई करा देना; (२) अजीब बात निकालना। गुल फूलना—कोई अजीब बात होना, नई आफ़त आना। गुल बँधना—.खूब सुलग जाना। गुल होना—चिराग़ बुझना।

.गुल—(अ०) (सं० पु०) (१) शोर, ग़ौग़ा, हंगामा, हुल्लड़; (२) धूम। .गुल-ग़पाड़ा—शोर, ग़ौग़ा, हल्ला।

गुल-अब्बासी—(फ़ा०) (सं० पु०) एक फूल का नाम।

ग़िल-ओ-ग़िश—(अ०) कदूरत, द्वेष, मालिन्य।

गुल-क़न्द—(फ़ा०) (सं० पु०) शकर और गुलाब की पंखड़ियों से बनी हुई एक दवा।

गुल-कार—(फ़ा०) (वि०) (१) वह चीज़ जिस पर बेल-बूँटे हों; (२) वह चीज़ जिसमें से फूल निकलें।

गुल-कारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) नक्क़ाशी, बेल-बूटे का काम।

गुल-ख़न—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) मट्टी चूल्हा; (२) कूड़ा-करकट।

गुल-.खुर्दा—(फ़ा०) (वि०) दाग़ खाये हुए, दाग़ लगाया हुआ।

गुल-गश्त—(फ़ा०) (सं० पु०) बाग़ की सैर करना, बाग़ में घूमना।

गुल-गीर—(फ़ा०) (सं० पु०) चिराग़ की बत्ती का गुल काटने की क़ैंची या औज़ार।

.गुल-.गुला—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) शोर, ग़ौग़ा; (२) धूम; (३) मस्त होकर चिड़ियों का चहकना।

गुल-गूँ—(फ़ा०) (वि०) (१) गुलाब के रंग का, गुलाबी; (२) उम्दा और चालाक घोड़ा, घोड़ा।

गुल-गूना—(फ़ा०) (सं० पु०) वह चूर्ण जो स्त्रियाँ सुन्दरता बढ़ाने के लिए मुख पर लगाती हैं, पाउडर।

गुल-चला—(वि०) वह जिसका निशाना चूके नहीं।

गुल-चश्म—(फ़ा०) (वि०) वह जिसकी आँख में फुल्ली हो।

गुल-चह्र—(फ़ा०) (वि०) गुलाब के समान सुन्दर मुख वाला।

गुल-चीं—(फ़ा०) (वि०) (१) फूल तोड़नेवाला, माली; (२) फ़ायदा उठाने वाला, तमाशा देखनेवाला।

गुलज़ार—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) बाग़, चमन, गुलशन, फुलवारी; (२) रौनक़; शोभा; (३) एक राग का नाम। (वि०)—हरा-भरा; चहल-पहल की जगह, रौनक़ वाला, शोभा-युक्त।

गुल-दस्ता—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) फूलों का गुच्छा; (२) महराब, ताक़, जहाँ अज़ाँ कहते हैं; (३) ग़ज़लों का परचा।

गुल-दान—(फ़ा०) (सं० पु०) गुल-दस्ता रखने का पात्र।

गुल-दाम—(फ़ा०) (सं० पु०) फूलों का जाल, जाल।

गुल-दार—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) एक प्रकार का सफ़ेद कबूतर; (२) एक प्रकार का चीता; (३) एक प्रकार का कशीदा। (वि०)—फूल-दार वह चीज़ जिस पर फूल बने हों।

गुल-दुम—(फ़ा०) (सं० पु०) बुलबुल।

गुल-दोज़ (फ़ा०) (वि०) वह चीज़ जिस पर फूल-बूटे कढ़े हों।

गुल-नार—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) अनार का फूल; (२) अनार के फूल जैसा लाल रंग।

गुल-फ़ाम—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) गुलाब के रंग का-सा; (२) सुन्दर, हसीन, माशूक़।

गुल-फ़िशां—(फ़ा०) (वि०) (१) फूल बखेरने वाला; (२) (स्त्री०) छोटी शीशी जिसमें गुलाब या शराब रखते हैं; (३) .खुश-बयान, सुवक्ता; (४) चिराग़ का फूल झाड़नेवाला।

गुल-फ़िशानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) .खुश-बयानी, ऐसे बोलना जैसे फूल झड़ रहे हों।

गुल-बकावली—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक सफ़ेद रंग का .खुशबूदार फूल।

गुल-बदन—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) एक प्रकार का धारीदार रेशमी कपड़ा; (२) माशूक़। (वि०)—बहुत सुन्दर, गुलाब के फूल के समान सुन्दर।

गुल-बर्ग—(फ़ा०) (सं० पु०) गुलाब की पत्ती।

गुल-बांग—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) चहचहाना; (२) शादी की धूम-धाम; (३) नारा-जंग, युद्ध के समय की हुंकार; (४) .खुश-ख़बरी; (५) धूम, अफ़वाह; (६) आवाज़, सदा, शब्द, घोष।

गुल-बेगाना—(फ़ा०) (सं० पु०) .खुद-रौ फूल, जो अपने आप पैदा हो।

गुल-मेख़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) लोहे की कील जिसका सिरा चौड़ा होता है।

गुल-रुख़, गुल-रू—(फ़ा०) (वि०) गुलाब का-सा सुन्दर, सुन्दर।

गुल-रेज़—(फ़ा०) (सं० पु०) फुल-झड़ी, एक प्रकार की आतिश-बाज़ी।

गुल-रेज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) फूलों का झड़ना, .खुश-बयानी।

गुल-लाला—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) एक प्रकार का फूल; (१) (लख०) हिन्दुओं का मरघट।

गुल-शकर—(सं० स्त्री०) गुल-क़ंद।

गुलशन—(फ़ा०) (सं० पु०) बाग़, गुलिस्तां।

गुलशन-आरा—(फ़ा०) (सं० पु०) माली, बाग़वान।

गुलशन-ईजाद—(फ़ा०) (सं० पु०) दुनिया।

गुलशन-सरा—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वह मकान जो बाग़ में हो।

गुल-शब्बो—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक फूलदार पौदा, रजनी-गन्धा, रात की रानी।

गुलाब—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) एक पौदा जिसमें बहुत सुन्दर और सुगन्धित फूल लगते हैं; (२) इसका फूल; (३) गुलाब-जल।

गुलाब-ज़न, गुलाब-पाश—(फ़ा०) (सं० पु०) एक सुराही-नुमा पात्र जिसमें भरकर गुलाब-जल छिड़कते हैं।

गुलाब-पाशी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) गुलाब-जल छिड़कना।

गुलाबी—(फ़ा०) (वि०) (१) गुलाब के रंग का, हलका लाल; (२) शराब का गिलास; (३) गुलाब से बसाया हुआ; (४) थोड़ा, हलका। गुलाबी जाड़ा—कम कम जाड़ा जो गर्मी के बाद होता है।

.गुलाम—(अ०) (सं० पु०) (१) दास, नौकर; (२) क्रीत दास, ख़रीदा हुआ नौकर; (३) ताश का एक पत्ता; (४) गंजीफ़े के एक रंग का नाम। .गुलाम का तिलाम—.गुलाम का .गुलाम।

.गुलाम-गर्दिश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) वह दीवार जो ज़नान-ख़ाना और मर्दानी बैठक के बीच में हो, पर्दे की दीवार; (२) कोठी के चारों तरफ़ का बरामदा; (३) शागिर्द पेशा या नोकरों के रहने की जगह।

.गुलाम-बेदरम—(फ़ा०) (सं० पु०) बे दामों का .गुलाम।

ग़ुलाम-माल—(अ०) (सं० पु०) वह चीज़ जिसको निस्संकोच हर समय इस्तेमाल कर सकें, कम्बल।

ग़ुलामी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) ग़ुलाम होना, दासता; (२) सेवा, नौकरी; (३) पराधीनता, क़ैद।

गुलिस्ताँ—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) बाग़, गुलज़ार, चमन, फुलवारी; (२) (स्त्री०) शेख़ सादी की मशहूर पुस्तक।

गुली—(फ़ा०) (वि०) (१) गुल से संबंधित; (२) गुल-दार, फूल-दार; (३) एक क़िस्म का कबूतर जिसके पैरों पर गुल होते हैं।

गुलू—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) गला, हलक़, गर्दन; (२) स्वर, आवाज़।

गुलू-गीर—(फ़ा०) (वि०) (१) गर्दन पकड़नेवाला, इलज़ाम लगानेवाला; (२) लालची।

गुलू-बन्द—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) गले में बाँधने का ऊनी या रेशमी पटका; (२) एक ज़ेवर जो गले में पहना जाता है।

गुलू-बस्ता—(फ़ा०) (वि०) ख़ामोश, चुप।

ग़ुलूला—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) गोली, ग़ुल्ला; (२) कौड़ियाँ जो मज़ारों पर चढ़ाते हैं; (३) शिकार के जानवरों का झुण्ड।

गुले-ख़न्दा—(फ़ा०) (वि०) खिला हुआ फूल; हँसता हुआ फूल।

गुले-जाफ़री—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) एक पीले रंग के फूल का नाम; (२) पीला रंग।

गुले-रअ़ना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) एक क़िस्म का सुर्ख़ और ज़र्द फूल; (२) माशूक़, प्रेमिका।

ग़ुलेल—(अ०) (सं० स्त्री०) वह ताँत की कमान जिससे मिट्टी के ग़ुल्ले फेंकते हैं।

ग़ुलेलची, ग़ुलेल बाज़—(अ०) (सं० पु०) ग़ुलेल मारनेवाला, जो ग़ुलेल चलाने में अभ्यस्त हो।

ग़ुलेला—(अ०) (सं० पु०) ग़ुल्ले, मट्टी की गोली।

गुले-शमा—(फ़ा०) (सं० पु०) शमा की लौ।

गुले-सुर्ख़—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) गुलाब; (२) सूर्य।

ग़ुल्लक—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वह पात्र जिसमें आमदनी डालते हैं।

ग़ुल्ला—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) मिट्टी की गोली जो ग़ुलेल से फेंकते हैं; (२) शोर, हल्ला।

ग़ुसल—(अ०) (सं० पु०) (१) तमाम बदन का धोना, स्नान, (२) मुरदे का नहलाना।

ग़ुसल-ख़ाना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) हमाम, नहाने की जगह; स्नानागार; (२) मरे हुए को नहलाने की जगह।

ग़ुसल-सेहत—(फ़ा०) (सं० पु०) बीमार का नीरोग होने पर नहाना।

गुसार—(फ़ा०) (वि०) खाने-पीनेवाला। (यौगिक शब्दों के अन्त में)

गुसिल—(फ़ा०) (वि०) यौगिक शब्दों में—'तबाह करनेवाला'।

गुस्तर—(फ़ा०) (वि०) यौगिक शब्दों में किसी चीज़ की बहुतायत करनेवाला का अर्थ देता है।

गुस्तरी—(फ़ा०) (स्त्री०) यौगिक में—'बहुतायत करना' 'इफ़रात करना'।

गुस्ताख़—(फ़ा०) (वि०) (१) धृष्ट, ढीठ, बे-अदब, बड़ों का लिहाज़ न रखनेवाला; (२) शरीर, अक्खड़।

गुस्ताख़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) धृष्टता, ढिठाई, बेशर्मी, बे-अदबी; (२) शरारत, शोख़ी, नटखट-पन।

ग़ुस्ल—(अ०) (सं० पु०) देखो—'ग़ुसल'

ग़ुस्ल-ख़ाना—(अ०) (सं० पु०) स्नानागार—देखो—'ग़ुसलख़ाना'।

.गुस्ले-मैयत—(अ०) (सं० पु०) लाश का नहलाना।

.गुस्ले-सेह्हत—(अ०) (सं० पु०) देखो—'.गुसल-सेहत'।

.गुस्सा—(अ०) (सं० पु०) क्रोध, कोप, ख़फ़गी। .गुस्सा आना—क्रोध आना, तेहा आना। .गुस्सा उतारना—किसी पर ख़फ़ा होना और दूसरे को फटकारना; ख़फ़गी दूर करना। .गुस्से के मारे भूत हो जाना—बहुत ख़फ़ा होना। .गुस्सा थूक देना—क्रोध छोड़ना, जाने देना। .गुस्सा पी जाना—क्रोध रोकना, वेग को रोकना। .गुस्सा मारना—ख़फ़गी रोकना। .गुस्से में आग रहना—.गुस्से में भरा रहना। कहा०—.गुस्सा बहुत, ज़ोर थोड़ा, मार खाने की निशानी—कमज़ोर का .गुस्सा उसकी ज़िल्लत कराता है।

.गुस्सावर—(अ०) (वि०) क्रोधी, बद-मिज़ाज, जिसको .गुस्सा जल्दी आ जाय।

.गुस्सैल—(अ०) (वि०) बद-मिज़ाज।

गुहर—(फ़ा०) (सं० पु०) मोती।

गूं—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) रंग; (२) क़िस्म।

गून—(फ़ा०) (सं० पु०) रंग, तर्ज़, रविश (यौगिक शब्दों के अन्त में)।

गूना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) रंग, वर्ण; (२) क़िस्म, प्रकार, तरह; (३), तर्ज़ रविश, ढंग।

.गूर—(फ़ा०) (सं० पु०) एक देश का नाम।

.गूल—(अ०) (सं० पु०) जंगल में रहने वाले देव-दानव।

गेती—(फ़ा०) (स० स्त्री०) दुनिया। (देखो—'गीती')।

गेसू—(फ़ा०) (सं० पु०) .ज़ुल्फ़, लम्बे बाल जो सिर के दोनों तरफ़ होते हैं।

ग़ैब—(अ०) (सं० पु०) (१) अदृश्य लोक, आकाश; (२) परोक्ष।

ग़ैबत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) अनुपस्थिति, ग़ैर-हाज़िरी, पीछे; (२) छिपना।

ग़ैब-दाँ—(अ०) (वि०) पोशीदा हाल जाननेवाला, परोक्ष की जाननेवाला।

ग़ैब-दानी—(अ०) (सं० स्त्री०) गुप्त हाल जानना, अदृश्य जानना।

ग़ैबानी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) फ़िसाद करनेवाली स्त्री (गाली); (२) बड़ी आफ़त।

ग़ैबी—(अ०) (वि०) परोक्ष से सम्बन्धित।

ग़ैर—(अ०) (वि०) (१) अन्य, दूसरा, अपने के अलावा; (२) बेगाना, अजनबी, पराया; (३) विरुद्ध अर्थ देने को शब्द के आरंभ में लगाया जाता है। (वि०) दिगर-गूं, गड़बड़। (अव्यय)—सिवा, बजुज़, अतिरिक्त। ग़ैर की आग में जलना—दूसरे की आफ़त में पड़ना।

ग़ैर-आबाद—(अ०) (वि०) जो बसा न हो, जो जोता न गया हो।

ग़ैर-इलाक़ा—दूसरे का इलाक़ा।

ग़ैर-ज़रूरी—(अ०) (वि०) जिसकी आवश्यकता न हो।

ग़ैरत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) रश्क; (२) लज्जा, हया, शर्म। ग़ैरत का तक़ाज़ा—किसी बात को सोचकर मन में लज्जा आना।

ग़ैरत-मन्द—(अ०) (वि०) लज्जा-शील, हया-दार।

ग़ैर-फ़ानी—(अ०) (वि०) जो फ़ना न हो, नाश न हो।

ग़ैर-मज़रूआ—(अ०) (वि०) जो जोती न गई हो।

ग़ैर-मनक़ूला—(अ०) (वि०) अचल, स्थावर।

ग़ैर-मनकूहा—(अ०) (वि०) (१) अविवाहित, जिसके साथ विवाह न हुआ हो; (२) रखेली।

ग़ैर-मलफ़ूज़—(अ०) (वि०) जो लिखा तो जाय पर बोला न जाय।

ग़ैर-मसकूक—(अ०) (वि०) बिना सिक्का की हुई चाँदी या सोना।

ग़ैर-महदूद—(अ०) (वि०) बेशुमार, जिसकी हद न हो।

ग़ैर-मामूल—(अ०) (वि०) असाधारण।

ग़ैर-मामूली—(अ०) (वि०) असाधारण।

ग़ैर-मुकम्मिल—(अ०) (वि०) अधूरा, ना तमाम, नाक़िस।

ग़ैर-मुजाज़—(अ०) (वि०) जिसे किसी काम का अधिकार न हो।

ग़ैर-मुतनाही—(अ०) (वि०) बे-इन्तिहा, अनन्त।

ग़ैर-मुनासिब—(अ०) (वि०) अनुचित।

ग़ैर-मुमकिन—(अ०) (वि०) असम्भव।

ग़ैर-मौरूसी—(अ०) (वि०) (१) जो पैतृत न हो; (२) काश्तकार की एक क़िस्म।

ग़ैर-रायज—(अ०) (वि०) अप्रचलित, जो जारी न हो।

ग़ैर-वाक़ा—(अ०) (वि०) झूठ।

ग़ैर-वाजिब—(अ०) (वि०) अनुचित, अयोग्य।

ग़ैर-हाज़िर—(अ०) (वि०) अनुपस्थित, जो हाज़िर न हो।

ग़ैर-हाज़िरी—(अ०) (सं० स्त्री०) अनुपस्थिति।

ग़ैर-हालत—जाँ-कनी की हालत, दिगर-गूं हालत, अबतर हालत।

ग़ैरियत—(अ०) (सं० स्त्री०) बे-गानगी। ग़ैरियत बरतना, ग़ैरियत रखना—ग़ैर समझना, पराया समझना।

गैहान—(फ़ा०) (सं० पु०) संसार।

गो—(फ़ा०) (अव्यय) यद्यपि, हरचंद, अगरचे। गो कि—यद्यपि। (प्रत्यय)—कहनेवाला। (यौगिक के अन्त में)।

गोइन्दा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) बोलने वाला; (२) जासूस।

गोई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) कहना। (यौगिक के अन्त में)

ग़ोक—(फ़ा०) (सं० पु०) मेंढक।

गोज़—(फ़ा०) (सं० पु०) पाद, अपानवायु।

गोज़न—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) जंगली गाय, रोज़।

गोज़े-शुतर—(फ़ा०) (वि०) बेबुनियाद, बेवक़अत।

ग़ोज़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) रूई और ख़श-ख़ाश का छिलका।

ग़ोत—(अ०) (सं० पु०) (१) उड़ते हुए पतंग का ऊपर से नीचे की तरफ़ आना; (२) ग़श, बेहोशी। ग़ोत लगाना—ग़ायब रहना, गुप्त रहना।

ग़ोता—(अ०) (सं० पु०) डुबकी, डूबना, डुबाना।

ग़ोता खाना—धोखे में आ जाना।
ग़ोता मारना—ग़ायब रहना।

ग़ोता-ख़ोर, ग़ोता-ज़न—(अ०) (वि०) (१) पानी में डुबकी लगानेवाला; (२) एक पक्षी, जल-कौवा।

गोनिया—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक औज़ार जिससे इमारत की सीध देखते हैं, गुनिया।

गो-म-गो—(फ़ा०) (वि०) (१) गोल बात, अस्पष्ट; (२) जो कहने के योग्य न हो; (३) पोशीदा, गुप्त।

गोयन्दा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) कहने वाला; (२) जासूस, ख़बर देनेवाला।

गोया—(फ़ा०) (क्रि० वि०) यानी, ग़ालिबन, ज़ाहिरा, मानिंद, हूबहू। (वि०) बोलनेवाला, बोलता हुआ, ख़ुश-गुफ़्तार।

गोयाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बोल-चाल, बात-चीत, बोलने की ताक़त।

गोर—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) क़ब्र, मज़ार, तुरबत, समाधि। ज़िन्दा दर गोर—जीवित दशा में मृतक के समान। गोर झाँक आना—बीमार का मरते-मरते बचना। गोर के मुरदे उखाड़ना—

पुरानी भूली-बिसरी बातें याद करना। गोर पर चूना फेरना—मरे हुए की याद ताज़ा करना, नाम रोशन कर देना। गोर पर रोना—किसी के गुण याद कर रोना गोर बनाना—क़ब्र खोदना, किसी की बरबादी की तैयारी करना। गोर में लात मार कर खड़ा होना—मर-मर कर बचना। कहा०—गोर पर गोर नहीं होती—एक शख़्स के क़ाबिज़ होते हुए दूसरे का दख़ल नहीं होता।

ग़ोर—(फ़ा०) (सं० पु०) एक देश का नाम।

गोर-कन—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) क़ब्र खोदनेवाला; (२) बिज्जू।

गोर-ख़र—(फ़ा०) (सं० पु०) जंगली गधा।

गोर-ख़ाना—(फ़ा०) (सं० पु०) क़ब्रस्तान, मदफ़न।

गोर-परस्त—(फ़ा०) (वि०) क़ब्र की पूजा करनेवाला।

गोर-परस्ती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) क़ब्र का पूजना।

गोरस्तान—(फ़ा०) (सं० पु०) क़ब्र-स्तान।

ग़ोरी—(फ़ा०) (वि०) ग़ोर देश का रहने वाला। (सं० स्त्री०) तश्तरी, रकाबी।

गोरे-ग़रीबाँ—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) ज़मीन का वह टुकड़ा जहाँ मुसाफ़िरों को दफ़न करते हैं; (२) वह जगह जहाँ ग़रीबों की टूटी-फूटी क़ब्रें हों।

ग़ोल—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) समूह, भीड़, झुण्ड; (२) भूत-प्रेत।

ग़ोलक—(फ़ा०) (स० स्त्री०) वह सन्दूक़ जिसमें आमदनी जमा की जाय, ग़ुल्लक़।

गोलन्दाज़—(फ़ा०) (सं० पु०) तोप चलानेवाला।

गोलन्दाज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) तोप चलाना।

गोला—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) गेंद; (२) तोप का गोला।

गोलाबारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) किसी जगह बहुत से गोले बरसाना।

गोश—(फ़ा०) (सं० पु०) कान।

गोश-गुज़ार—(फ़ा०) (वि०) सुना हुआ। गोश-गुज़ार करना—सुनाना।

गोश-ज़द—(फ़ा०) (वि०) वह बात जो सुनी जाय, सुना हुआ।

गोश-बर-आवाज़, गोश-बराह—(फ़ा०) (वि०) किसी बात के सुनने का मुन्तज़िर, किसी ख़बर का उम्मेद-वार।

गोश-माली—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) कान उमेठना, आगाह करना, तम्बीह। गोश-माली देना—कान उमेठना, तम्बीह करना।

गोश-वारा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) कान का कुंडल, बाला; (२) बहुत बड़ा मोती; (३) पगड़ी का आंचल, तुर्रा, कलगी; (४) ख़ुलासा हिसाब, मीज़ान, जोड़; (५) ज़र-दोज़ी की पेटी; (६) एक प्रकार का गोंद; (७) किसी नक़शे या रजिस्टर की पेशानी।

गोशा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) कोना, कोण; (२) एकान्त, सबसे अलग; (३) तरफ़, जानिब, दिशा; (४) कमान का सिरा। गोश-ए-आफ़ियत—(फ़ा०) (सं० पु०) वह जगह जहाँ कोई झगड़ा-बखेड़ा न हो, शान्ति का स्थान।

गोशा-दार—(फ़ा०) (वि०) कोने रखने-वाला।

गोशा-नशीन—(फ़ा०) (वि०) सबसे अलग रहनेवाला, एकान्त-वासी।

गोशा-नशीनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एकांत, तनहाई।

गोशे-होश—(फ़ा०) (सं० पु०) होशयारी।

गोश्त—(फ़ा०) (सं० पु०) मांस। गोश्त का लोथड़ा—मोटा और मूर्ख मनुष्य।

गोश्त से नाखुन जुदा होना—किसी कठिनता का पैदा होना ।

गोश्त-ख़्वार—(फ़ा०) (सं० पु०) गोश्त खानेवाला, मांसाहारी ।

गोश्ते ख़र—(फ़ा०) (वि०) बेकार चीज़ ।

गोस्फंद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बकरी ।

ग़ौग़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) .गुल-ग़पाड़ा, हुल्लड़, कोलाहल ।

ग़ौग़ाई—(फ़ा०) वि०) (१) शोर करनेवाला, कोलाहल मचानेवाला; (२) व्यर्थ का, निरर्थक, झूठ-मूठ का ।

गौगिर्द—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) गन्धक ।

गौज़—(अ०) (सं० स्त्री०) ग़प, बातचीत ।

ग़ौर—(अ०) (सं० पु०) (१) फ़िक्र, सोच-विचार, चिंतन; (२) ध्यान, ख़याल, ख़बरगीरी ।

ग़ौर-तलब—(अ०) (वि०) सोचने के क़ाबिल, विचार के योग्य ।

ग़ौर-परदाख़—(अ०) (सं० स्त्री०) ख़बरगीरी, परवरिश, रख - रखाव, ग़ौर से देखना ।

ग़ौवास—(अ०) (सं० पु०) ग़ोता-ख़ोर ।

ग़ौवासी—(अ०) (सं० स्त्री०) ग़ोता लगाना ।

ग़ौस—(अ०) (सं० पु०) (१) फ़रयाद, नालिश; (२) मुसलमान महात्माओं की एक उपाधि; (३) फरयाद सुनने वाला ।

गौहर—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) मोती; (२) जवाहिरात; (३) किसी वस्तु की प्रकृति, माद्दा, नस्ल, असल, तत्व; (४) बुद्धिमत्ता; (५) बेटा, फ़रज़ंद ।

गौहर-अफ़शाँ—(फ़ा०) (वि०) .ख़ुशबयान, सुवक्ता ।

गौहर-अफ़शानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मोती बरसाना, .ख़ुश-बयानी ।

गौहर-संज—(फ़ा०) (सं० पु०) जौहरी, पारखी, परखनेवाला ।

गौहरी—(फ़ा०) (सं० पु०) जौहरी ।

घ

घंघोलना—(हि०) (क्रि०) गदला करना, मैला करना, पानी में हाथ डालकर हिलाना, घोलना; उल्टा-पल्टी करना ।

घट—(हि०) (सं० पु०) मन, शरीर; घड़ा, (वि०) कम थोड़ा ।

घटती—(हि०) (सं० स्त्री०) कमी, अवनति, गिराव । घटती का पहरा—अवनति के दिन, कमी का समय ।

घटा—(हि०) (सं० स्त्री०) बदली, बादल, मेघ; समूह । घटा-टोप—(हि०) (सं० पु०) पालकी का ग़िलाफ़ जो धूल व वर्षा से बचने के लिए उसके ऊपर डाल देते हैं; (वि०) बहुत काला ।

घट्टा—(हि०) (सं० पु० माथे का निशान जो बार-बार दंडवत करने या माथा रगड़ने से पड़ जाता है, ठेक ।

घड़ा—(हि०) (सं० पु०) पानी रखने का बर्तन, घट, मटका । घड़ों पानी पड़ जाना—बहुत लज्जित होना, बहुत शर्माना ।

घड़ोंची—(हि०) (सं० स्त्री०) लकड़ी का चौखटा जिस पर पानी के घड़े रखते हैं ।

घन—(हि०) (सं० पु०) बड़ा हथौड़ा; घटा, मेघ, बादल । (वि०) घना, मोटा ठोस, भारी । घन-चक्कर—मूर्ख, नासमझ, आवारा; विपत्ति, कष्ट । घन के रुपये—टकसाली रुपये । घन घोर घटा—बहुत काली और भारी बदली ।

घनेरा—(हि०) (वि० पु०) बहुत घना । (स्त्री०) घनेरी ।

घपला—(हि०) (सं० पु०) गड़बड़, झमेला, झंझट । घपला डालना—गड़बड़ कर देना ।

घमला—(हि०) (सं० पु०) गमला, वह पात्र जिसमें पौदा लगाया जाता है।

घमसान—(हि०) (सं० पु०) लड़ाई; ढेर, समूह, भीड़, नाश, मारकाट। घमासान पड़ना, घमसान मचना—मारकाट होना।

घर—(हि०) (सं० पु०) गृह, मकान, वास, स्थान; कुटुम्ब, घराना; शतरंज या चौसर की बिसात का ख़ाना; (घर में, घर से) स्त्री, पत्नी। घर आबाद करना—विवाह करना, गृहस्थी में प्रवेश करना। घर लुटना—स्वामी या स्त्री का मर जाना। घर बैठे मोल लेना—व्यर्थ को अपने ऊपर लेना। घर फांदना, घर में कूदना—छिपकर बदकारी या व्यभिचार के लिए किसी के घर जाना। घर फूंक तमाशा देखना—धन लुटाना, मूर्खता वश अपनी बरबादी अपने आप करना। घर तक पहुँचाना—क़ाइल कर देना (झूठे को घर तक पहुँचाना)। घरजानी मनमानी—अपनी इच्छानुसार करना स्वेच्छाचार। घर-झंकनी—वह स्त्री जो दूसरों के घरों में फिरती फिरे। घर चलाना—गृहस्थी का प्रबंध करना। घर सर पर उठाना—बहुत शोर मचाना; रोना चिल्लाना। घर से—अपने पास से, अपनी गिरह से, अपनी गाँठ से। घर का आँगन हो जाना—घर का नाश होना, घर बरबाद हो जाना। घर का उजाला या चिराग़—जिसके कारण घर में प्रकाश हो, बेटा। घर काटे खाता है, घर खाये जाता है—घर में रहना बुरा लगता है; घर में जी घबराता है। घर का रास्ता बताना—टालना। घर का रास्ता भूल जाना—ऐसा मन लगना कि घर लौट कर जाने का ध्यान तक न रहे। घर का नाम उछालना—घर की प्रतिष्ठा मिटाना; बदनामी करना। घर का हुआ न दर का—निकम्मा, निखट्टू। घर के पीरों को तेल का मलीदा—घर वालों की कम और बाहर वालों की ज़्यादा ख़ातिर। घर की मुर्ग़ी दाल बराबर—जो अपने पास है उसकी क़द्र नहीं होती। घर-घाट—चाल ढाल, रंगढंग; पता; आदत। घर के घर, घर के अंदर—बराबर, न नफ़ा न घाटा। घर गिरस्ती—घर का प्रबंध, गृहस्थी चलाना। घर घर चिराग़ जलना—सब को ख़ुशी होना। घर-घुसना—वह मनुष्य जो सदा स्त्रियों में बैठा रहे, स्त्रैण। घर घोड़ा नख़ास मोल—बिना दिखाये अपने माल की प्रशंसा करते जाना। घर में चूहे लोटते हैं या कलाबाज़ियाँ खाते हैं—बड़ी दरिद्रता है, खाने तक को नहीं है। घर में शेर बाहर भेड़—जो मनुष्य घर में तो कड़ाई करे और बाहर वालों से दबे, उसके लिए प्रयुक्त। घर न बार मियाँ मुहल्लेदार—झूठी शेख़ी बघारने वाला, डून की हाँकनेवाला।

घर्रा—(हि०) (सं० पु०) मृत्यु से पहले साँस रुक रुक कर चलने का शब्द।

घर्राटा—(हि०) (सं० पु०) ख़र्राटा, सोते समय जो शब्द होता है।

घरिया—(हि०) (सं० स्त्री०) वह कुल्हिया जिसमें सोना गलाया जाता है।

घसखुदा—(हि०) (सं० पु०) घसियारा, घास खोदनेवाला; चरकटा, बेकार मनुष्य।

घसीटा—(हि०) (सं० पु०) एक प्रकार की गाड़ी। घसीटा-घसीटी—खींचा-खाँची; ऐंचा-तानी। घसीटना, घसीट देना—जल्दी लिख देना, बुरा-सुरा लिख देना।

घाँई-माँई कर देना—(हि०) (क्रि०) इधर उधर कर देना; उड़ा देना, टाल देना।

घाई—(हि०) (सं० स्त्री०) दो उँगलियों के बीच की जगह; धोखा, छल। घाई बताना—धोखा देना, टालना।

घाग—(हि०) (सं० पु०) पुराना अनुभवी मनुष्य।

घाट—(हि०) (सं० पु०) किनारा, नदी पर उतरने, स्नान करने का स्थान; धोबियों के कपड़े धोने का स्थान; तलवार की वह जगह जहाँ से उसका मोड़ शुरू होता है; कमी; धोखा, छल। घाटवारी, घाटबारी—घाट का महसूल, घाट का कर। घाट घाट का पानी पीना—स्थान स्थान पर घूम कर अनुभव प्राप्त करना। घाट मार—जो महसूल न दे। घाट मारना—महसूल या कर न देना; महसूली माल छिपा लेना।

घाटा—(हि०) (सं० पु०) कमी, टोटा, नुक़सान।

घाटी—(हि०) (सं० स्त्री०) दो पहाड़ों के के बीच का मार्ग; पहाड़ों के बीच का स्थल; चालान।

घात—(हि०) (सं० स्त्री०) दाँव, ताक, अवसर, मौक़ा; धोखा, जाल, चाल; जादू, टोना; तलाश, खोज। घात ताकना—अवसर ढूँढना। घात चलाना—जादू करना, तंत्र करना, मूठ मारना। घात लगाना—ताक में बैठना।

घाता—(हि०) (सं० पु०) रूखन, मोल ली हुई चीज़ से कुछ अधिक लेना (घाते में)।

घाती—(हि०) (सं० पु०) हत्यारा; स्वार्थी; मौके की ताक में रहने वाला।

घान—(हि०) (सं० पु०) वह मात्रा जो कोल्हू में एक बार डाली जाय, पकवान जितना कढ़ाई में एक बार में डाला जाय, वह धन जो एक दम हाथ लगे।

घानी—(हि०) (सं० स्त्री०) एक बार कोल्हू में पिलने के लिए डाली जानेवाली मात्रा, तेल या रस निकालने का यंत्र।

घाबरा—(हि०) (वि० पु०) घबराया हुआ।

घामड़—(हि०) (वि०) कूढ़, अनुभवहीन, मंद बुद्धि; आलसी।

घास—(हि०) (सं० स्त्री०) तिनका; चारा कूड़ा; एक रेशमी कपड़े का नाम। घास काटना—बहुत जल्दी जल्दी बोलना जो सुननेवाले की समझ में न आवे; भद्देपन से काम करना; उतावली करना। घास खाना, घास खा जाना—मूर्खता करना, बुद्धि खो बैठना। घास खोदना—नासमझी का काम करना; नीचा काम करना।

घिगयाना—(हि०) (क्रि०) गिड़गिड़ाना; दीनता दिखाना।

घिचपिच—(हि०) (सं० स्त्री०) बड़ी भीड़; गुञ्जान; बहुत पास पास लिखा हुआ।

घिन—(हि०) (सं० स्त्री०) घृणा, नफ़रत। घिनौना, घिनावना—घृणास्पद, जिससे घृणा आती हो।

घिरना—(हि०) (क्रि०) छाना, उमड़ना; बंद होना।

घिस्सा—(हि०) (सं० पु०) रगड़ा, रगड़, झुल, पट्टी।

घुंगनी, घुंघनियाँ—(हि०) (सं० स्त्री०) उबाला हुआ अन्न। घुंगनियाँ मुँह में भर कर बैठना—चुप्पी साधना।

घुइयाँ—(हि०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार की तरकारी, अरवी।

घुकू—(हि०) (सं० पु०) उल्लू।

घुटना—(हि०) (क्रि०) पिसना, खरल होना; किसी दूसरी चीज़ के साथ भावना लगना; खूब मिल जाना, मूँडा जाना; (साँस का) रुकना, संकीर्ण व अंधेरे स्थान में साँस का कठिनता से आना; भरना, समाना; हृदय खोलकर बातें करना, मैत्री होना। घुट घुट के—रुक रुक के, कष्ट उठाकर। घुटन—हवा बंद होने से गर्मी।

घुटाव—(हि०) (सं० पु०) उमस, गर्मी के साथ साथ हवा बंद होना।

घुटा हुआ—(हि०) (वि०) जिसके सिर के सारे बाल मूँड दिये गये हों; अनुभवी, चतुर, चालाक।

घुट्टी—(हि०) (सं० स्त्री०) बच्चों का पेट साफ़ करने की दवा का काढ़ा। घुट्टी में पड़ना—प्रकृति में पड़ना, बचपन से आदत होना। घुट्टी में पिलाना—बचपन से आदत डालना। घुट्टी में होना—बचपन से आदत होना।

घुन्ना—(हि०) (सं० पु०) जानकर अनजान बननेवाला; द्वेष रखनेवाला; मक्कार। (स्त्री०) घुन्नी।

घुप—(हि०) (सं० पु०) बहुत अधिक अंधेरा।

घुमाना—(हि०) (क्रि०) फिराना; हैरान करना; मार्ग भुलाना, भटकाना।

घुरकना—(हि०) (क्रि०) डाँटना, घुड़की देना, झिड़कना।

घुरकी—(हि०) (सं० स्त्री०) धमकी, डाँट, झिड़की।

घुर्राना—(हि०) (क्रि०) ग़ुर्राना, चिल्लाकर पुकारना।

घुलना—(हि०) (क्रि०) पिघलना, नरम हो जाना; दुर्बल होना। घुल घुलकर—दिन पर दिन दुर्बल होकर, सूखकर। घुल जाना—चिन्ता से दुर्बल हो जाना। घुल मिल जाना—एक हो जाना, घनिष्ठ होना।

घुलाना—(हि०) (क्रि०) पिघलाना, दुबला करना; नरम करना। घुलावट—(सं० स्त्री०) नरमी, पिलपिलाहट; प्रेम। घुलावट की आँख—प्रेम-दृष्टि, आकर्षक चितवन।

घुस आना—(हि०) (क्रि०) बिना आज्ञा के भीतर चला आना, भीतर आ जाना। घुस-पिल जाना—जहाँ जगह न हो वहाँ ज़ोर लगा कर घुस जाना।

घुस पैठ—(हि०) (सं० स्त्री०) दख़ल, पहुँच, गति।

घुसेड़ना—(हि०) (क्रि०) ठूँसना, भरना।

घूंघट—(हि०) (सं० पु०) पर्दा; मुँह ढकना, लाज, शर्म। घूंघट खाना—सेना का भागने के विचार से युद्ध-स्थल से मुँह फेरना। घूंगट की दीवार—वह दीवार जो आने जाने के रास्ते की ओट करने के लिये खड़ी कर दी जाती है।

घूंट—(हि०) (सं० पु०) पीने की वस्तु की उतनी मात्रा जितनी एक बार गले से उतरे, चुस्की। घूंट पीकर रह जाना—क्रोध संयम करना, ग़ुस्सा दबा लेना।

घूंस, घूस—(हि०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार का बड़ा चूहा; रिशवत।

घूरना—(हि० (क्रि०) टकटकी लगाकर देखना। घूरघार, घूराघारी—(सं० स्त्री०) एक दूसरे को प्रेम की दृष्टि से देखना; दीदबाज़ी।

घोंपना—(हि०) (क्रि०) घुसेड़ना; भद्दी सिलाई करना।

घोआ—(हि०) (सं० पु०) फोई; आक या सेमर का गूँफा जिसमें रुई भरी रहती है।

घोटना—(हि०) (क्रि०) रगड़ना, महीन पीसना; किसी चीज़ से रगड़कर चिकना करना; रटना, घोखना; दबाना; मुँड़वाना।

घोर—(हि०) (सं० पु०) मैल, मल, विष्ठा। (वि०) भयानक, भीषण, गहरे रंग का।

घोला—(हि०) (सं० पु०) पानी में घुली हुई अफ़ीम। घोले में डालना—बखेड़े में डालना, टालमटूल करना।

च

चंग—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) एक प्रकार का कनकव्वा जिसे रात में ग़ुबारे की तरह एक गेंद रोशन करके उड़ाते हैं; (२) एक

सितार की तरह का बाजा; (३) गंजफ़े की एक बाज़ी का नाम।

चंग-नवाज़—(फ़ा०) (सं० पु०) चंग बजानेवाला।

चंगाल—(फ़ा०) (सं० पु०) शिकारी जानवरों और परन्दों का पंजा।

चंगुल—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) जानवरों या पक्षियों का टेढ़ा पंजा; (२) आदमी की पाँचों उँगलियाँ। **चंगुल में आना, चंगुल में फँसना**—गिरफ़्त में आना, क़ाबू में आना।

चंगेर—(हि०) (सं० स्त्री०) फूल रखने का बर्तन; फूलों की टोकरी।

चक—(हि०) (सं० पु०) ज़मीन का टुकड़ा; (२) झगड़ा, ज़मीन का झगड़ा; (३) (औ०) फेर, जमाव। **चक बँधना**—(औ०) फेर पड़ना, बहुत होना।

चक-तराशी—ज़मीन के अलग अलग टुकड़े करना।

चक-बन्दी—(स्त्री०) ज़मीन की हद-बन्दी।

चक़मक़, चक़माक़—(फ़ा०) (सं० पु०) (तु० स्त्री०) वह पत्थर जिससे आग निकलती है।

चकमाँ—(हि०) (सं० पु०) (१) धोखा, फ़रेब, दम; (२) नुक़सान, टोटा; (३) एक खेल। **चकमा खाना**—धोखे में आजाना, फ़रेब में आजाना। **चकमा देना**—धोखा देना, नुक़सान पहुँचाना।

चकाचक—(हि०) (वि०) तेल या घी में डूबा हुआ, तर।

चकीदा—(फ़ा०) (वि०) टपका हुआ।

चक्कान—(हि०) (वि०) गाढ़ी।

चकस—(फ़ा०) (सं० पु०) परन्दों के बैठाने की लकड़ी; बुलबुल का अड्डा।

चख़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) तकरार, फ़िसाद, झगड़ा, लड़ाई; (२) शोर, कोलाहल। (वि०) बुरा, दुष्ट। **चख़-चख़**—कहा-सुनी, लफ़्ज़ी तकरार, झिक-झिक।

चचड़ी—(हि०) एक कीड़े का नाम जो गाय, भैंस, बकरी के बदन पर चिमटा रहता है। **चचड़ी होकर चिमटना**—पीछा न छोड़ना।

चचा—(हि०) (सं० पु०) बाप का भाई। **चचा बना के छोड़ना**—ख़ूब बदला लेकर और ठीक बना कर दम लेना। **चचा बनाना**—ठीक बनाना, दुरुस्त करना।

चटा-पटी—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) मारा-मार, धड़ा-धड़ी, (बहुतायत प्रकट करने के लिए); (२) मौत पर मौत; (३) ताश का एक खेल। **चटापटी की गोट**—भिन्न रंग की गोट। **चटापटी पड़ना**—बहुत सी मौतें होना।

चट्टी—(हि०) (सं० स्त्री०) (औ०) (१) जुरमाना, दंड; (२) टोटा। **चट्टी भरना**—नुक़सान उठाना।

चट्टे-बट्टे—(हि०) (सं० पु०) (१) छोटे बच्चों के एक प्रकार के खिलौने; (२) छोटे छोटे गोले गोलियाँ जो बाज़ीगर तमाशे में दिखाकर धोखा देते हैं। **चट्टे-बट्टे लड़ाना**—(औ०) लगाई-बुझाई करना, इधर की उधर करना।

चड्डा—(हि०) (सं० पु०) मसख़रा, दिल्लगी-बाज़, ठठोल। **चड्डा गुलख़ैरू**—मसख़रा।

चतर—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सिर के छोटे-छोटे बाल; (२) छतरी जो प्रायः बादशाहों के सिर पर फिरा करती है, छत्र।

चनार—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) एक बहुत बड़ा पेड़ जिसकी पत्तियाँ लाल रंग की आदमी के पंजे की शक्ल की होती हैं। माशूक़ की हथेली की उपमा इसके पत्ते से दी जाती है; (२) मेंहदी लगाने की एक विधि।

चन्द—(फ़ा०) (वि०) थोड़े-से, कुछ, किसी क़दर।

चन्द-रोज़ा—(फ़ा०) (वि०) ना-पायदार, अस्थायी, फ़ानी, थोड़े दिन चलनेवाला।

चन्दाँ—(फ़ा०) (क्रि० वि०) (१) इस क़दर, इतना, इस मात्रा में; (२) इतनी देर। **चन्दाँ-कि**—(१) जिस क़दर, जितना; (२) कई बार, कई मर्तबा।

चन्दा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) वह रुपया जो थोड़ा थोड़ा करके कई आदमियों से जमा किया जाय; (२) किसी समाचार-पत्र या मासिक पुस्तक इत्यादि का वार्षिक मूल्य; (३) किसी सभा के हेतु मासिक या वार्षिक सहायता।

चन्दावल—(फ़ा०) (सं० पु०) फ़ौज के पीछे चलने वाली टुकड़ी।

चन्दे—(फ़ा०) (अव्यय) (१) कुछ दिन, कुछ मुद्दत, थोड़ी देर; (२) थोड़ा-सा। **चन्दे आफ़ताब चन्दे माहताब**—(औ०) (सौन्दर्य की प्रशंसा में कहा जाता है) चमक-दमक में चन्द्रमा और सूर्य से बढ़कर है।

चप—(फ़ा०) (वि०) (१) बाँई तरफ़; (२) बायाँ, वाम; (३) दो रंग का; (४) अशुभ। **चप व रास्त**—इधर-उधर, दाएँ-बाँएँ।

चपकन—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार की अचकन।

चपक़लिश—(तु०) (सं० स्त्री०) (१) लड़ाई, झगड़ा, तकरार; (२) स्थान की संकीर्णता, जगह की तंगी; (३) भीड़, हुजूम; (४) कठिनता; (५) गड़बड़।

चपड़-क़नातिया—(फ़ा०) (वि०) ख़ुशामदी, चापलूस, कमीना।

चपड़-ग़ट्टू—(वि०) गिरफ़्तार, ग़ट-पट, गुत्थम-गुत्था।

चपत—(सं० स्त्री०) धौल, थप्पड़।

चपरास—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) जो पेटी या पटके में पीतल का खुदा हुआ नाम लगाया जाता है; (२) चौड़ी धज्जी जो कुरते में मोढ़े पर डाली जाती है; (३) (लख०) चौड़ी गोट; (४) कुश्ती का एक दाँव।

चपरासी—(सं० पु०) (१) प्यादा, सिपाही; (२) आदमी जिसके चपरास पड़ी हो।

चपाती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) छोटी पतली रोटी।

चप्पा—(हि०) (सं० पु०) चार अंगुल जगह, चार बालिश्त चौड़ी जगह, ज़रा सी जगह। **चप्पा चप्पा**—ज़रा ज़रा।

चप्पी—(हि०) (सं० स्त्री०) मालिश, दबाना, धीरे-धीरे हाँथ-पाँव दबाना।

चफ़ी—(स्त्री०) पटरी, रूलर।

चमक—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) रोशनी, झलक, भड़क।

चमचा—(तु०) (सं० पु०) (१) चम्मच, छोटी कलछी; (२) डोई।

चमन—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) फुलवारी, छोटा सा बग़ीचा; (२) रौनक़ की जगह, निहायत आबाद शहर।

चमाली—(फ़ा०) (सं० पु०) साक़ी, शराब पिलानेवाला।

चमींगोइयाँ—(स्त्री०) गपशप।

चम्बर—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सर-पोश, गिर्दा घेरा; (२); आसमान का दौर; (३) चिलम के ऊपर का सुराख़-दार ढकना।

चरकटा—(हि०) (सं० पु०) (१) हाथी का चारा लानेवाला; फ़ीलवानों का सहायक; (२) नीच, अधम, कमीना।

चरख़—(देखो—चर्ख़)।

चरख़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) रुई से सूत कातने का यंत्र; (२) कुएँ से पानी निकालने का यंत्र; (३) अपूर्ण-बनी हुई गाड़ी, खड़खड़िया; (४) कठिन काम।

चरख़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (देखो—'चर्ख़ी')।

चरन्द—(पु०) (देखो—चरिन्दा)।

चरपूज़—(फ़ा०) (वि०) (१) कमीना, हल्का, नीच; (२) बेहूदा, लचर।

चरब—('देखो—'चर्ब')।

चरबा—(देखो—'चर्बा')।

चरबी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) चिकनाई; मेद, शरीर की चिकनाई, बसा। **चरबी चढ़ना**—मोटा होना। **चरबी छाना**—बहुत मोटा होना; मदांध होना। **चरबी की बातें**—चिकनी-चुपड़ी बातें।

चरागाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) चराने की जगह, घास की जगह, जंगल।

चराना—(हि०) (क्रि०) (१) जानवरों को जंगल में लेजाकर घास खिलाना, (२) धोखा देना, उल्लू बनाना।

चरिन्द-चरिन्दा—(फ़ा०) (सं० पु०) चौपाया, हैवान, घास चरनेवाला जानवर।

चर्क—(फ़ा०) (सं० पु०) पीप, मैल, ज़ंग, ग़िलाज़त।

चर्का—(हि०) (सं० पु०) (१) तलवार इत्यादि का हल्का घाव; (२) लोहे से दाग़ना; (३) टोटा, नुक़सान। **चर्का खाना**—नुक़सान सहना। **चर्का देना**—नुक़सान पहुँचाना।

चर्ख़—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) फिरनेवाला पहिया; (२) गर्दिश, चक्कर; (३) कुँओं के ऊपर की चरख़ी; (४) सूत कातने का चर्ख़ा; (५) चाक, कुम्हार का चाक; (६) एक प्रकार का बाज या शिकारी चिड़िया; (७) शिकारी जानवर, लकड़-बग्घा।

चर्ख़-ज़न—(फ़ा०) (वि०) घूमनेवाला, फिरनेवाला।

चर्ख़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सूत कातने का यंत्र; (२) एक प्रकार का नाच; (३) बहुत बुड्ढा या बुड्ढी।

चर्ख़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) रुई को बिनोले से साफ़ करने या यंत्र; (२) एक आतिश-बाज़ी; (३) पानी खींचने का पहिया, चाक; (४) फिरकी; (५) डोर या बादला लपेटने का औज़ार।

चर्ग़—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) एक जानवर का नाम, तेंदुआ; (२) एक शिकारी परंद।

चर्ब—(फ़ा०) (वि०) (१) चिकना; (२) मोटा, लहीम-शहीम, स्थूल; (३) तेज़, ग़ालिब। **चर्ब कर लेना**—थोड़े से घी में भून लेना। **चर्ब हो जाना**—(१) होशयार हो जाना; (२) भुन जाना।

चर्ब-ग़िज़ा—वह खाना जिसमें घी ज्यादा हो।

चर्ब-ज़बान—(फ़ा०) (वि०) चिकनी-चुपड़ी बातें करनेवाला, ख़ुशामदी।

चर्ब-ज़बानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) चाप-लूसी, ख़ुशामद, चिकनी चुपड़ी बातें बनाना।

चर्ब-दस्त—(फ़ा०) (वि०) चालाक, दस्तकार।

चर्बाक, चर्बाक—(फ़ा०) (वि०) चालाक, अय्यार, फ़रेबी। **चर्बाक-दीदा**—निडर औरत।

चर्बा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) ख़ाका; (२) दूध के ऊपर की मलाई।

चर्बी—(देखो—'चरबी')।

चर्म—(फ़ा०) (सं० पु०) चमड़ा, खाल। **चर्मी**—चमड़े का बना हुआ।

चश्म—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) नेत्र, आँख; (२) उम्मेद, आशा। **चश्म बद-दूर**—नज़र-बन्द दूर हो, बुरी नज़र न लगे।

चश्मक—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) चश्मा, ऐनक, (२) आँख का इशारा करना; (३) रंजिश, झगड़ा; (४) एक औषधि, चाकसू।

चश्मक-ज़न—आँख से इशारा करने वाला।

चश्म-ज़दन—पलक मारना, पलभर।

चश्म-दाश्त—(फ़ा०) (स्त्री०) आशा, उम्मेद, तवक्का।

चश्म-नुमाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) झिड़की, तम्बीह, फटकारना, धमकाना।

चश्म-पोशी—(फ़ा०) (सं० पु०) देख कर टाल जाना, दर गुज़र करना, ध्यान न देना (दोषों पर)।

चश्मा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) ऐनक, आँख में लगाने के शीशे; (२) पानी का स्रोत; (३) सुई का नाका।

चसक—(हि०) (सं० स्त्री० मीठा-मीठा दर्द, कुछ-कुछ दर्द।

चसका—(हि०) (सं० पु०) (१) चाट, मज़ा, चटोरपन; (२) आदत, लत, धत; (३) शौक़, चाव।

चस्पाँ—(फ़ा०) (वि०) (१) चिपका हुआ; (२) ठीक, मौज़ूं।

चस्पीदगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) चिपक; चिपकना।

चस्पीदा—(फ़ा०) (वि०) चिपका, चिपकाया हुआ।

चह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) कुआँ, गढ़ा; (२) वह पुल जो नदी के किनारे नाव पर सवार हो जाने के लिए बनाया जाता है; (३) छोटा हौज़ जिसमें नील पकाते हैं, चाह-बच्चा।

चहल-क़दमी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) टहलना, धीरे-धीरे घूमना, हवा खाना।

चहल-पहल—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) रौनक़, शोभा; (२) ख़ुशी, हँसी-ठट्ठा; (३) आबादी, जमघट।

चहाबच्चा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) हौज़; (२) तहख़ाना।

चहार—(फ़ा०) (वि०) चार।

चहार-दाँग—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) चारों दिशाएँ।

चहार-शम्बा—(फ़ा०) (सं० पु०) बुधवार।

चहारुम—(फ़ा०) (वि०) (१) चौथा; (२) चौथाई।

चाँगला—(हि०) (वि०) (१) भला-चंगा, तनदुरुस्त; (२) तेज़, होशयार, चालाक; (३) संपन्न, खाता-पीता; (४) घोड़े का एक रंग।

चाँटा—(हि०) (सं० पु०) थप्पड़, धौल।

चाक—(उ०) (सं० पु०) आस्तीन या दामन का खुला हुआ हिस्सा। (वि०) फटा हुआ, चिरा हुआ।

चाक़—(तु०) (वि०) तरोताज़ा, सही व तनदुरुस्त, चालाक। **चाक़-चौबन्द**—(१) ज़ोरावर, मोटा-ताज़ा; (२) तनदुरुस्त, भला-चंगा; (३) फुरतीला, चुस्त।

चाकर—(फ़ा०) (सं० पु०) नौकर, दास, सेवक।

चाकरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सेवा, नौकरी।

चाकसू—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार के काले बीज जो दवा के काम आते हैं।

चाक़ू—(फ़ा०) (सं० पु०) क़लमतराश, छुरी।

चाट—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) स्वाद, ज़ायक़ा; (२) वह चटपटी चीज़ जो ज़बान का स्वाद ठीक करने को खाई जाय; (३) आदत, लपका। **चाट देना**—लालच देना। **चाट पड़ना**—मज़ा पड़ना, चसका पड़ जाना। **चाट पर लगाना**—किसी को मज़े से आगाह करना। **चाट लगना**—मज़ा पड़ना, आदत पड़ना, चसका लगना।

चादर—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) बड़ा और चौड़ा दुपट्टा; (२) लोहे या अन्य धातु का बड़ा पत्तर; (३) पानी की चौड़ी धार; (४) फूलों की चादर जो किसी मज़ार पर चढ़ाई जाती है। **चादर उतारना**—इज़्ज़त उतारना, औरत को बे-परदा करना। **चादर तान कर सोना**

बेखटके सोना, निश्चिन्त होकर जीवन-यापन करना। कहा०—चादर थोड़ी पाँव फैलाव बहुत—आमदनी से ज़्यादा ख़र्च करना।

चादरा—(फ़ा०) (सं० पु०) बड़ा और चौड़ा दो पाट का दुपट्टा; छोटी चादर।

चाप—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) कमान; (२) पैर की आहट।

चापट—(हि०) (सं० स्त्री०) चोकर।

चापलूस—(फ़ा०) (वि०) ख़ुशामदी, चाटुकार, हाँ में हाँ मिलानेवाला।

चापलूसी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ख़ुशामद, अनुचित प्रशंसा।

चाबी—(हि०) (सं० स्त्री०) कुञ्जी, ताली।

चाबुक—(फ़ा०) (सं० पु०) कोड़ा, हंटर। (वि०) चालाक, फुरतीला।

चाबुक-दस्त—(फ़ा०) (वि०) हाथ के काम में चालाक, दक्ष।

चाबुक-दस्ती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दक्षता, होशयारी।

चाबुक-सवार—(फ़ा०) (सं० पु०) घोड़ा फेरनेवाला; घोड़े पर ख़ूब चढ़नेवाला।

चाबुक-सवारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) घोड़ा फेरने का काम; घोड़े पर चढ़ने की दक्षता।

चाबुकी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) चालाकी, जल्दी, फुरती।

चाय—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) एक पत्ती जिसे उबाल कर पिया जाता है; (२) तैयार किया हुआ पेय।

चार-आइना—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार का कवच या ज़िरह-बख़्तर।

चार-गाम, चार-गामा—(फ़ा०) (सं० पु०) तेज़ चलनेवाला घोड़ा।

चार-चाँद—(क्रि०) (लगाना के साथ) इज़्ज़त, बढ़ाना, आँखों पर बिठाना।

चार-चश्म—(फ़ा०) (वि०) बेमुरव्वत, बेवफ़ा।

चार-जाई—(औ०) फ़ाहशा औरत, बदचलन स्त्री।

चार-जामा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) ज़ीन; (२) (उ०) वह आदमी जो केवल लुंगी बाँधे हुए हो और बाक़ी शरीर पर कोई वस्त्र न हो।

चार-नाचार—(फ़ा०) (क्रि० वि०) मजबूरी से, विवश होकर, लाचार होकर।

चार-पाँच—(१) कुछ; (२) बहाना, हुज्जत, उज्र। (स्त्री०) चार-पाँच करना, चार-पाँच लाना—हीला-हुज्जत करना, शरारत करना।

चार-पाया—(फ़ा०) (सं० पु०) चौपाया, जानवर।

चार-पायी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) छोटा पलंग, खाट। चारपायी पर पड़ना—बीमार होना। चारपायी से लग जाना—बहुत बीमार होना।

चार-बन्द—(पु०) (१) ऊपर नीचे, दायें-बायें; (२) हर एक अंग, हर जोड़।

चार-बालिश, चार-बालिश्त—(फ़ा०) (सं० पु०) मसनद, बादशाह का तख़्त।

चार-सू—चारों तरफ़।

चार-हर्फ़—लानत। चार हर्फ़ भेजना—लानत भेजना।

चारा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) इलाज, उपाय, तदबीर; (२) मदद, दुरुस्ती; (३) वश, अधिकार।

चारा-जोई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) नालिश, फ़रयाद।

चारा-साज़—(फ़ा०) (सं० पु०) तबीब, वैद्य, चारा-गर।

चारा-साज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) इलाज, मदद, चारा-गरी।

चालाक—(फ़ा०) (वि०) (१) चुस्त, तेज़, चतुर, व्यवहार-कुशल; (२) धूर्त, अय्यार, मक्कार।

चालाकी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) होशयारी, चतुराई; (२) धूर्त्तता, मक्कारी, अय्यारी।

चाशनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) मिठास, ज़रा-सी शीरीनी; (२) मिठाई के अन्दर की खटास; (३) चसका, ज़ायक़ा, मज़ा; (४) सोने-चाँदी का कस, सोने की असलियत की परीक्षा जो कसौटी पर हो; (५) एक बर्तन जिसमें गन्ने का रस पकाते हैं; (६) आम के पेड़ में जो पहले-पहल फल निकलता है; (७) बख्खर, गाढ़ा शरबत।

चाश्त—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) पहर दिन चढ़े; (२) सुबह का खाना; (३) (स्त्री०) चाश्त की नमाज़।

चाश्त-ख़ोर—मुफ़्त-ख़ोर।

चाह—(फ़ा०) (सं० पु०) कुआँ, कूप। (हि०) प्रेम।

चाह-कन—(फ़ा०) (वि०) ज़ालिम, मक्कार।

चाहे-ज़नख़, चाहे-ज़नख़्दाँ—(फ़ा०) (सं० पु०) ठोढ़ी पर का गड्ढा।

चिक—(हि०) (सं० स्त्री० (१) कमर का दर्द जो पट्ठा इधर-उधर होने से हो जाता है, झटका लग जाना; (२) चिलमन, परदा। चिक आना—कमर में झटका आ जाना।

चिक़—(तु०) (सं० स्त्री०) चिलमन, सरकंडे या बाँस की तीलियों से बना परदा।

चिकन—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार का कशीदा; सुई का काम। चिकन-दोज़ (फ़ा०) (सं० पु०) कपड़े पर चिकन का काम करनेवाला।

चिकना—(हि०) (वि०) (१) चर्ब, तेलिया; (२) चर्बीदार, मोटा; (३) फिसलनेवाला; (४) साफ़-सुथरा, चमकदार; (५) बेहया, बेशर्म; (६) ख़ूबसूरत, रौनक़दार। चिकना-चुपड़ा—(वि०) अच्छे कपड़े पहननेवाला, ख़ुश-पोश। चिकनी-चुपड़ी बातें बनाना—ख़ुशामद की बातें करना। कहा०—चिकना मुँह सब चाटते हैं—ख़ुश हाल की सब जगह ख़ातिर होती है।

चिकना-घड़ा—(पु०) बेहया, बेशर्म, निर्लज्ज।

चिकारा—(हि०) (सं० पु०) (१) एक प्रकार का छोटा चालाक हिरन; (२) छोटी सारंगी।

चित—(हि०) (वि०) पीठ के बल, पट का उलटा।

चित्ती—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) धब्बा, दाग़; (२) एक प्रकार का साँप।

चिनग—(हि०) (सं० स्त्री०) पेशाब की सोज़िश; जलन।

चिरकीं—(फ़ा०) (वि०) ग़लीज़, मैला, पलीद, गन्दा।

चिरा, चरा—(फ़ा०) (अव्यय) क्यों, किसलिए।

चिराग़—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) दीपक, लंप, शमा, बत्ती; (२) बेटा, लड़का; (३) घोड़े का पिछले पैर के बल खड़ा होना; (४) रौनक़, रोशनी। चिराग़-जले—झुटपुटे के समय।

चिराग़-दान—(फ़ा०) (सं० पु०) दीवट, दिया रखने का आधार।

चिराग़-पा—(फ़ा०) (वि०) (१) औंधा; (२) वह घोड़ा जो पिछले पैरों के बल खड़ा हो जाय।

चिराग़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) नज़राना, भेंट; किसी मज़ार पर चिराग़ जलाते वक़्त जो पैसा साँईं को दिया जाता है।

चिराग़े-सहरी—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सुबह का चिराग़; जिसके बुझने का समय पास हो; (२) ना-पायदार; (३) थोड़े दिन का मेहमान।

चिर्म—(फ़ा०) (सं० पु०) चमड़ा।

चिलग़ोज़ा—(फ़ा०) (सं० पु० एक प्रकार का मेवा; सनोबर का फल।

चिल-चिल—(हि०) (सं० स्त्री०) अभ्रक, भोडल।

चिलता—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार का कवच।

चिलपासा—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) छिपकली।

चिलम—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) आग और तम्बाकू रखने का बर्तन, जिसे हुक्के पर रख कर या हाथ में लेकर दम लगाते हैं।

चिलमची—(तु०) (सं० स्त्री०) हाथ धोने का बर्तन।

चिलमन—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बाँस की तीलियों का बना परदा, चिक।

चिल्ला—(हि०) (सं० पु०) (१) कलाबतूनी सिरा जो पगड़ी के दोनों ओर होता है; (२) मैदा शकर से बनी घी में तली ख़मीरी रोटी; (३) अंडे की ज़र्दी-सफ़ेदी या पिसी हुई दाल में मसाला डालकर तल कर बनाई हुई एक चीज़; (४) कमान की तांत में लगा हुआ लकड़ी या चमड़े का छल्ला (हल्क़ा)। (फ़ा०) (सं०पु०)—(१) चालीस दिन का समय; (२) ज़च्चा का चालीस दिन का नहान; (३) चालीस दिन का जाड़ा; (४) चालीस दिन का पुरश्चरण, या एकान्तवास। **चिल्ला खींचना**—चालीस दिन का पुरश्चरण करना।

चीं—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सिलवट, झुर्री। **चीं-ब-जबीं होना**—त्यौरी पर बल डालना, ख़फा होना।

चीज़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) शय, वस्तु, असबाब, जिन्स; (२) ज़ेवर गहना-पाता; (३) गीत, राग, ठुमरी; (४) हक़ीक़त, माल; (५) मिठाई, शीरीनी; (६) अमानत, धरोहर; (७) विलक्षण वस्तु। **चीज़-वस्त**—(औ०) असबाब, असासा।

चीदा—(फ़ा०) (वि०) (१) छटा हुआ, चुना हुआ; (२) उम्दा, बढ़िया।

चीस्तां—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पहेली।

चुक़न्दर—(फ़ा०) (सं० पु०) एक जड़ का नाम जो लाल होती है, जिसकी तरकारी बनती है। **चुक़न्दर-सा**—लाल, मोटा-ताज़ा।

चुक़र—(तु०) (सं० पु०) चश्मा, जलाशय।

चुंगल—(देखो—'चंगुल')।

चुग़द—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) उल्लू; (२) मूर्ख।

चुग़ल—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) लुतरा, चुग़ल-ख़ोर; (२) (उ०) गिट्टी, वह कंकर जो चिलम में रखकर ऊपर से तंबाकू भरी जाती है।

चुग़ल-ख़ोर—(फ़ा०) (सं० पु०) चुग़ली खानेवाला, लुतरा, पीछे निन्दा करनेवाला, पिशुन।

चुग़ल-ख़ोरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ग़म्माज़ी, लुतरा-पन, चुग़ली।

चुग़ली—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) किसी की पीठ पीछे बुराई करना, चुग़ली खाना, बदी बुराई।

चुग़्गू—(वि०) उस दाढ़ी को कहते हैं जिसमें कुछ बाल ठोड़ी के नीचे ही हों।

चुनाँ—(फ़ा०) (अव्यय) इस तरह का, ऐसा। **चुनां-चुनीं**—(फ़ा०) (स्त्री०) (१) ऐसा-वैसा, इस तरह उस तरह; (२) लस्सानी; (३) मीन-मेख, नुक्स, ऐब, तकरार। **चुनाँ-चुनीं करना**—तकरार करना, बहस करना, नुक्स निकालना।

चुनांचे—(फ़ा०) (अव्यय) जैसा कि, मसलन, उदाहरण के लिए।

चुनिन्दा—(वि०) (१) चुना हुआ, छँटा हुआ; (२) उम्दा, चोटी का, अच्छे से अच्छा।

चुनीं—(फ़ा०) (अव्यय) ऐसा, ऐसी बात।

चुम्बक—(फ़ा०) (सं० पु०) मक़्नातीस।

चुरन्दम-ख़ुरन्दम—(पु०) खाने-पीने का आनन्द, खाना-पीना।

चुल—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) खुजली, ख़ारिश; (२) विषय-वासना; (३) बेचैनी।

चुल उठना—खुजली होना । चुल मिटाना—ख़्वाहिश मिटाना, आदत की पूर्ति करना ।

चुलबुला—(फ़ा०) (वि०) जिसके हाथ पैर चलते रहें, जो स्थिर न रहे; चालाक, चंचल, शोख़, निचला न बैठनेवाला ।

चुलबुलापन—(हि०) (सं० पु०) बे-क़रारी, शोख़ी, चंचल-पन, बेचैनी ।

चुल-हाई—(हि०) (औ०) मस्त औरत, मस्तानी ।

चुलाव—(फ़ा०) (सं० पु०) बेगोश्त का पुलाव ।

चुसकी—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) कश, घूंट; (२) वह अफ़ीम जो अफ़ीमी ख़िलाफ़ वक्त पी लेते हैं ।

चुस्त—(फ़ा०) (वि०) (१) खिंचा हुआ, कसा हुआ, जो ढीला न हो; (२) चालाक, फ़ुरतीला; (३) ठीक, दुरुस्त, (४) मज़बूत, दृढ़ ।

चुस्ती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) चालाकी, फ़ुरती; (२) खिंचावट, कसावट; (३) मज़बूती; (४) दिलेरी, साहस, हिम्मत ।

चूं—(फ़ा०) (क्रि० वि०) इसलिये, अगर । (वि०) समान, मानिन्द । (सं० स्त्री०) (१) तकरार, ज़िद; (२) हल्की आवाज़ जो किसी चीज़ से निकले । चूं न करना—इन्कार न करना, ज़िद न करना, ज़रा उज्र न करना । चूं व चरा—(फ़ा०) (स्त्री०) तकरार, हुज्जत, बहस ।

चूंकि—(फ़ा०) (क्रि० वि०) क्योंकि, इसलिए कि ।

चू—(फ़ा०) (अव्यय) (१) समान, मानिन्द; (२) जब, यदि ।

चूज़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) मुरग़ी का बच्चा, पट्ठा; (२) नवयुवा, जवान लड़की ।

चूड़िया—(फ़ा०) एक प्रकार का धारीदार कपड़ा ।

चूहा—(हि०) (सं० पु०) (१) मूसा, मूषक; (२) नाक का सूखा हुआ मैल । भीगकर चूहा हो जाना—इतना भीग जाना कि कपड़े बदन से चिमट जायें । चूहे का बिल ढूंढते फिरना—शान्ति की जगह तलाश करते फिरना, भागने का रास्ता न मिलना। कहा०—चूहे के हाथ हल्दी लगी वह भी पन्सारी बन बैठा—थोड़ी सी पूंजी पर इतराना ।

चे—(फ़ा०) (अव्यय) बहुत, क्योंकि, क्या । चे ख़ुश—क्या ख़ूब ।

चे-गूना—(फ़ा०) किस तरह, किस प्रकार ।

चे-मानी—क्या सबब, क्यों, किस लिए ।

चेचक—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शीतला का रोग ।

चेहरा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सूरत, मुँह; (२) सामने का रुख़, मोहरा; (३) हुलिया; (४) आगे का भाग । चेहरा उतरना—हैरानी में होना, परेशान होना । चेहरा होना—भरती होना, रजिस्टर में नाम लिखा जाना ।

चेहरा-कुशा, चेहरा-परदाज़—मुसव्विर, सूरत बनाने वाला ।

चेहल—(फ़ा०) (वि०) चालीस ।

चेहलुम—(फ़ा०) (सं० पु०) चालीसवाँ दिन, मरने के बाद का चालीसवाँ दिन ।

चोंगा—(हि०) (सं० पु०) (१) खुशामद चापलूसी; फ़रेब व चिकनी बातों से कोई चीज़ किसी से ले लेना; (२) बांस का नल, नली । चोंगे-बाज़—वह आदमी जो चिकनी-चुपड़ी बातें बनाकर चीज़ें लेले ।

चोंप—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) शौक़, दिल का चाव, कामना; (२) बढ़ावा; (३) सोने की कील जो दांतों में लगाते हैं; (४) ज़िद, हठ, वैर ।

चोग़ा—(तु०) (सं० पु०) लबादा, बड़ी अचकन ।

चोब—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) लकड़ी, छड़ी; (२) सुर्ख़ी जो किसी सदमें से आँख में हो जाती है; (३) शामियाने या डेरे की लकड़ी; (४) बाजा बजाने की लकड़ी, डंडा।

चोब-चीनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक मशहूर दवा का नाम।

चोब-दस्ती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) लाठी, लकड़ी, छड़ी।

चोबदार—(फ़ा०) (सं० पु०) नक़ीब, संतरी, द्वार-पाल।

चोबा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) एक क़िस्म का मीठा पका हुआ चावल, (२) लोहे की कील, खूंटा।

चोबी—(फ़ा०) (वि०) लकड़ी या काठ का बना हुआ।

चोली—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) अंगरखे या दामन का ऊपरी हिस्सा; (२) ऊपर के धड़ का कपड़ा, (३) अंगिया, बाडी। **चोली दामन का साथ**—ऐसा साथ कि एक दूसरे से जुदा न हो सकें।

चौकस—(हि०) (वि०) (१) ख़बरदार, चौकन्ना, होशयार, सावधान; (२) तोल में पूरा, ठीक।

चौकसी—(हि०) (सं० स्त्री०) होशयारी, ख़बरगीरी।

चौगान—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) गेंद का बल्ला, (२) गिल्ली का डंडा, वह डंडा जो सिर की तरफ़ से टेढ़ा हो, (३) एक प्रकार का गेंद का खेल, (४) खेलने का मैदान।

चौगान-बाज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) चौगान खेलना।

चौगानी—(फ़ा०) (वि०) वह घोड़ा जो चौगान-बाज़ी में ख़ूब दौड़े।

चौ-पाल—(हि०) (स्त्री०) बैठक, गाँव का पंचायती मकान जिसमें पंच बैठते हैं या मुसाफ़िर ठहरते हैं।

चौ-बग़ला—(पु०) अंगरखे या अचकन की बग़ल के नीचे का हिस्सा।

चौ-बच्चा—(देखो—'चहबच्चा') हौज़।

छ

छकाछक—(हि०) (वि०) अघाया हुआ; नशे में चूर।

छकाना—(हि०) (क्रि०) पेट भरना, अघाना।

छछूंदर—(हि०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार का जंगली चूहा; एक प्रकार की आतिश-बाज़ी; वह स्त्री जो इधर की उधर लगा कर लड़ाई कराती फिरे। **छछूंदर छोड़ना**—लड़ाई कराना। **छछूंदर के सर में चमेली का तेल**—नीच या भद्दे के लिए बढ़िया चीज़।

छटका—(हि०) (सं० पु०) पालकी का रंगा हुआ पर्दा।

छटा, छटा हुआ—(हि०) (वि०) बड़ा पाजी, बहुत बदमाश, लुच्चा।

छड़ना—(हि०) (क्रि०) नाज कूटना; छिलके उतारना।

छड़ा—(हि०) (सं० पु०) पैर का ज़ेवर; (वि०) अकेला।

छतारा—(हि०) (सं० पु०) वह पेड़ जिसमें बहुत से पत्ते और शाखा हों।

छत्ता—(हि०) (सं० पु०) दूर तक पटा हुआ रास्ता; मक्खियों का बनाया हुआ रहने का स्थान।

छत्तीसा—(हि०) (सं० पु०) मक्कार, चालाक, चलता-पुर्ज़ा।

छपका—(हि०) (सं० स्त्री०) पानी का शब्द; पानी का बड़ा छींटा; तड़ेड़ा; कबूतर पकड़ने का जाल; स्त्रियों का एक ज़ेवर।

छप्पर—(हि०) (सं० पु०) (१) फूस का सायबान या छत; (२) बोझ, भार; (३) बरसाती पानी जो गड्ढों में भर जाता है और जिसमें सिंघाड़े बो देते हैं; (४) उड़ने

वाले कबूतरों की टोली। छप्पर-बंद—छप्पर बनानेवाला। छप्पर फूस नहीं ड्योढ़ी पर नक्कारा—कंगाल होकर ठाट-बाट करना। छप्पर पर रखना, छप्पर पर रहने देना—दूर करना, अलग करना, ध्यान में न लाना। छप्पर फाड़ कर देना—अनायास प्राप्त होना; ऐसी जगह से प्राप्त होना जहाँ से आशा न हो। छप्पर टूट पड़ना—अचानक विपत्ति आ पड़ना। छप्पर रखना—एहसान रखना; बड़ा भारी एहसान करना। छपर-खट—सेज; वह पलंग जिसके ऊपर छतरी हो।

छब—(हि०) (सं० स्त्री०) सौन्दर्य, रूप, नखशिख, रंग रूप। छब गठरी में और सूरत तबाक़ में—प्रतिष्ठा अच्छे वस्त्रों से और रंग रूप पौष्टिक भोजन से होता है। (तबाक़=थाल)।

छबड़ा—(हि०) (सं० पु०) टोकरा; छैबुन्दा (एक विषैला जानवर)।

छबीला—(हि०) (सं० पु०) सुन्दर युवा; रंगीला। (स्त्री०) छबीली।

छरेरा—(हि०) (वि०) सुता हुआ, दुबला-पतला; इकहरे बदन का।

छल—(हि०) (सं० पु०) छाल, दीवार का टुकड़ा जो गिर पड़े; (पु०) धोखा, कपट, दम।

छलनी—(हि०) (सं० स्त्री०) छानने का यंत्र। छलनी में डाल छाज में उड़ाना—बात का बतंगड़ करना।

छाँट—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) कतरन; (२) पसंद, चुनाव; ३) कतर-ब्योंत।

छागल—(हि०) (सं० स्त्री०) पैर का ज़ेवर।

छाछ—(हि०) (सं० स्त्री०) मट्ठा।

छाज—(हि०) (सं० पु०) (१) सूप; (२) बग्घी का आगे का हिस्सा। छाज बोला तो बोला छलनी भी बोले जिसमें बहत्तर सौ छेद—जहाँ दोषी मनुष्य निर्दोष की बराबरी करे वहाँ ऐसा कहते हैं। छाज में डाल कर छलनी में उड़ाना—उल्टा काम करना; बात का बतंगड़ बनाना। छाजों बरसना—बहुत अधिक वर्षा होना।

छाता—(हि०) (सं० पु०) (१) बड़ी छतरी; (२) चौड़ा सीना।

छाती—(हि०) (सं० स्त्री०) सीना; कुच; हिम्मत, साहस। छाती उभार कर चलना—अकड़ कर चलना; इतरा कर चलना। छाती उमड़ आना—दिल भर आना; रंज से रुलाई आना। छाती पत्थर कर लेना—दिल सख़्त कर लेना; दिल कड़ा कर लेना। छाती पर पत्थर धर लेना—दिल कड़ा कर लेना; संतोष कर लेना। छाती पर साँप फिर जाना—ईर्षा होना; क्लेश होना। छाती पर साँप लोटना—किसी बात के याद आने पर चित्त दुःखी होना। छाती पर काला पहाड़ होना—असह्य होना। छाती पर कोदों या मूंग दलना—किसी के सामने ऐसा काम करना जो उसे असह्य और नागवार हो। छाती पर हाथ रखना या धरना ढाढ़स बँधाना। छाती पक जाना—कष्ट सहते-सहते नाक में दम आ जाना। छाती पकड़ कर रह जाना—दिल ही दिल में मसोस करके बैठ रहना। छाती फटना—चित्त में घोर कष्ट होना, ईर्षा होना, जलना। छाती ठंडी करना—सांत्वना देना, सुख देना; बैर निकाल कर प्रसन्न होना। छाती जलाना—सताना, कुढ़ाना।

छान—(हि०) (सं० स्त्री०) खोज, देख-भाल, छान बीन।

छाप—(हि०) (सं० स्त्री०) मोहर, ठप्पा, निशान, मार्का।

छापा—(हि०) (सं० पु०) ठप्पा, मोहर, निशान; छापने का प्रेस; आक्रमण, धावा;

साँचा। छापे में छप जाना—प्रसिद्ध होना।

छाला—(हि०) (सं० पु०) (१) फफोला, आबला; (२) तलवार के लोहे पर का दाग़, शीशे या मोती पर का दाग़; ठेक।

छालिया—(हि०) (सं० स्त्री०) सुपारी, डली।

छावनी—(हि०) (सं० स्त्री०) मकान, खपरैल; फ़ौज का केम्प, डेरा। छावनी डालना—मकानों की छत डालना; डेरे डालना, रह पड़ना।

छिछोरा—(हि०) (वि०) पेट का हलका, जिसे बात न पचे; कमीना।

छिटकना—(हि०) (क्रि०) फैलना, बिखरना, चमकना (तारे)।

छिड़ना—(हि०) (क्रि०) आरंभ होना; बजाना।

छिपटी—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) लकड़ी की छीलन, लकड़ी का छोटा पतला टुकड़ा; (२) (वि०) दुबला पतला।

छिपना—(हि०) (क्रि०) गुप्त हो जाना, गुम हो जाना, दुबकना लुकना; आँख से ओझल होना; लीपा जाना, थोपना।

छिपा—(हि०) (वि०) गुप्त, अप्रकट। छिपा रुस्तम—(पु०) वह मनुष्य जो अपनी योग्यता प्रकाशित न करे; चुप बदमाश, बगला भगत।

छितराना—(हि०) (क्रि०) बखेरना, तितर-बितर करना।

छीज—(हि०) (सं० स्त्री०) कमी, नुक़सान, घटती।

छीमी—(हि०) (सं० स्त्री०) फली।

छुट—(हि०) सिवा, अतिरिक्त।

छुद्दा—(हि०) (सं० पु०) अभियोग; उलाहना; अहसान का बोझ।

छूंछा—(हि०) (वि०) ख़ाली, निस्सार।

छोप—(हि०) (सं० स्त्री०) घोड़े के घाव पर लगाने का लेप। छोप-छूप—दीवार का छेद बन्द करना। छोपा—गीली मिट्टी जिससे छेद बन्द किया जाय।

छोलना—(हि०) (क्रि०) छीलना, छिलका दूर करना।

ज

जंग—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) युद्ध, लड़ाई, समर; (२) वैर, द्वेष, दुश्मनी।

ज़ंग—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) लोहे का मैल; (२) लोहे का अन्य धातु पर लगनेवाला मोरचा; (३) छोटा घंटा, घंटी; (४) अफ़्रीका के एक प्रदेश का नाम।

ज़ंग-आलूदा—(फ़ा०) (वि०) जिसमें ज़ंग लगा हो, मोरचा लगा हुआ।

जंग-ज़रगरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बनावटी लड़ाई; दूसरे को धोखे में डालने को आपस दिखावटी लड़ाई।

जंग-जू—(फ़ा०) (वि०) लड़ाका, लड़नेवाला।

जंगल—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) झाड़ी, वन; (२) मैदान, रेगिस्तान; (३) बंजर, वीरान जगह; (४) चरागाह, चर-भूमि; (५) शिकारगाह।

जंगली—(वि०) (१) वहशी, भड़कनेवाला; (२) जो अपने आप उगे, ख़ुदरौ; (३) गँवार, जाहिल, उजड्ड।

ज़ंगार—(फ़ा०) (सं० पु०) नीला थोथा, तूतिया।

ज़ंगारी—(फ़ा०) (वि०) हरे-नीले रंग का।

जंगी—(अ०) (वि०) (१) जंग या युद्ध से सम्बन्ध रखनेवाला, सामरिक; (२) बहुत बड़ा, विशाल, जैयद।

ज़ंगी—(फ़ा०) (सं० पु०) ज़ंग देश का वासी, हबशी। ज़ंगी हड़—काली हड़, छोटी हड़।

ज़ंजबील—(स्त्री०) (१) सोंठ; (२) स्वर्ग की नहर का नाम।

ज़ंजीर—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) कुंडी, सांकल; (२) बेड़ी; (३) सिलसिला; (४) एक ज़ेवर का नाम। ज़ंजीर तुड़ाना—स्वतन्त्रता के लिए बेचैन होना; अत्यन्त जोश में भरा होना।

ज़ंजीरा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) गले का ज़ेवर; (२) लहरियेदार सिलाई। ज़ंजीरा-बन्दी—एक चीज़ का दूसरी चीज़ के लिए अनिवार्य होना, (ज़ंजीर की कड़ियों की तरह)।

ज़ईफ़—(अ०) (वि०) (१) दुर्बल, कमज़ोर; (२) बुड्ढा, वृद्ध।

ज़ईफ़-उल्-अक़्ल—(अ०) (वि०) कम अक़्ल वाला, अल्पबुद्धि।

ज़ईफ़-उल्-एतक़ाद—(अ०) (वि०) ढुल-मुल यक़ीन, अस्थिर-चित्त।

ज़ईफ़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) बुढ़ापा, कम-ज़ोरी, दुर्बलता।

ज़क—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) हार, पराजय; (२) नुक़सान, घाटा; (३) लज्जा, सुबकी, ज़िल्लत।

जकड़-बन्द—(हि०) (वि०) कसा हुआ; तना हुआ, मज़बूत। (सं० पु०) गठिया, रोक।

ज़क़न—(अ०) (सं० पु०) ठोढ़ी। चाहे ज़क़न—ठोढ़ी पर का गड्ढा।

ज़कर—(अ०) (सं० पु०) पुरुषेन्द्रिय, लिंग।

ज़करिया—(अ०) (सं० पु०) एक प्रसिद्ध पैग़मबर जो आरे से चीर डाले गये थे।

ज़का—(अ०) (सं० स्त्री०) ज़हानत, बुद्धि की प्रखरता।

ज़कात—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) दान, ख़ैरात; (२) टेक्स, महसूल, कर।

ज़कावत—(अ०) (सं० स्त्री०) बुद्धि की प्रखरता, ज़ेहन की तेज़ी।

ज़की—(अ०) (वि०) (१) पाक, साफ़, (२) ज़हीन; बुद्धिमान्, चतुर।

ज़क़ूम—(अ०) (सं० पु०) थूहड़ (पेड़)।

ज़ख़ामत—(अ०) (सं० स्त्री०) लंबाई, चौड़ाई और मोटाई; स्थूलता।

ज़ख़ायर—(अ०) (सं० पु०) संग्रह, कोष। (ज़ख़ीरा का बहुवचन)

ज़ख़ीम—(अ०) (वि०) मोटा, भारी, बड़ा।

ज़ख़ीरा—(अ०) (सं० पु०) (१) कोष, ख़ज़ाना, संग्रह; (२) गोदाम; (३) ढेर, समूह; (४) जमा-पूँजी; (५) वह चीज़ जो किसी दूसरे समय काम आने के लिए रख छोड़ी जाय।

ज़.ख़ुद-रफ़्तगी—आपे से बाहर होना।

ज़ख़्ख़ार—(फ़ा०) (वि०) लहरें मारने-वाला, लहरें लेता हुआ, पानी से भरा हुआ।

ज़ख़्म—(फ़ा०) (सं० पु०) घाव, आघात, नुक़सान। ज़ख़्म पर नमक (मुश्क) छिड़कना—दुःख में दुःख देना, सताये हुए को सताना।

ज़ख़्मा—(फ़ा०) (सं० पु०) वह चीज़ जिससे कोई बाजा बजाते हैं।

ज़ख़्मी—(फ़ा०) (वि०) घायल, चोट खाया हुआ।

ज़ग़ता—(अ०) (सं० पु०) सख़्ती, तंगी, परिश्रम।

ज़ग़न—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) चील; (२) चौकड़ी, उछल कर कूदना।

ज़ग़न्द—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) चौकड़ी, कूद-फाँद; (२) चील।

जगह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) स्थान, स्थल; (२) अवसर, मौक़ा; (३) नौकरी, पद।

ज़च्चा—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वह स्त्री जिसने हाल में बच्चा जना हो; प्रसूता।

ज़च्चा-ख़ाना—वह जगह जहाँ बच्चा पैदा होता है, प्रसूति-गृह।

जज़र—(अ०) (सं० पु०) (१) वर्ग-मूल; (२) समुद्र के पानी का उतार। **जज़र ओ मद**—ज्वार-भाटा।

जज़ा—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) बदला, प्रतिकार; (२) परिणाम, फल।

जज़ाक-अल्लाह—(अ०) शाबाश, ईश्वर भला करे।

ज़ज़ाज—(अ०) (सं० पु०) काँच।

जज़ायर—(अ०) (सं० पु०) द्वीप (जज़ीरा का बहुवचन)। (फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार की बड़ी बन्दूक़।

जज़िया—(अ०) (सं० पु०) (१) ख़िराज, टेक्स, महसूल; (२) दंड; (३) टेक्स जो अन्य धर्मावलम्बियों पर लगाया जाय।

जज़ीरा—(अ०) (सं० पु०) द्वीप, टापू।

जज़ीरा-नुमा—(अ०) (सं० पु०) प्राय-द्वीप, वह स्थल जो तीन ओर जल से घिरा हो।

जज़्ब—(अ०) (सं० पु०) (१) खिंचाव, आकर्षण; (२) चूसना, सोखना।

जज़्बा—(अ०) (सं० पु०) (१ दिल का जोश, आवेश; (२) वलवला, कामना; (३) कशिश, आकर्षण; (४) (औ०) क्रोध, गुस्सा।

जज़्म—(अ०) (वि०) मज़बूत, पक्का। (अ०) (सं० पु०) अरबी लिपि का हल का चिह्न।

जज़्र—(अ०) (सं० पु०) नदी या समुद्र के पानी का उतार, भाटा।

ज़ज्र—(अ०) (सं० स्त्री०) झिड़की, धमकी।

ज़टल—(स्त्री०) बेहूदा बात, बकवाद, बड़, झक। **ज़टल-क़ाफ़ियें**—बेतुकी बातें, बेअसल बातें।

ज़टल्ला—(वि०) गप हाँकनेवाला।

जद—(अ०) (सं० पु०) (१) दादा; (२) नाना; (३) भाग्य, सम्पत्ति।

ज़द—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) मार, चोट; (२) निशाने का सामना, लक्ष्य; (३) हानि, नुक़सान, चोट। **ज़द ओ कोब**—(फ़ा०) (स्त्री०) मार पीट। **ज़द पड़ना**—नुक़सान होना। **ज़द पर चढ़ना, ज़द पर होना**—निशाने पर होना।

ज़दगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मारने या लगाने की क्रिया।

ज़दन—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) मारना, आघात करना; (२) खाना, पीना; (३) फेंकना; (४) रखना (५) करना। **चश्म-ज़दन**—पलक मारना।

जदल—(अ०) (सं० पु०) लड़ाई, जंग, बैर।

जदवार—(अ०) (सं० स्त्री०) एक विष दूर करने वाली जड़ी, निर्विषी।

ज़दा—(फ़ा०) (वि०) क्षत उठाया हुआ, जिस पर चोट पहुँची हो, व्याकुल।

जदी—(अ०) (सं० पु०) (१) एक तारे का नाम; (२) मकर राशि।

जद्द—(अ०) (सं० पु०) (१) दादा, बाप का बाप; (२) उद्योग, कोशिश।

जद्दा—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) दादी; (२) नानी; (३) अरब का प्रसिद्ध नगर।

जद्दी—(अ०) (वि०) (१) पैतृक, मौरूसी; (२) एक दादा की औलाद।

ज़न—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) स्त्री, औरत; (२) पत्नी। **ज़ने-मद ख़ूला**—घर में डाली हुई औरत। **ज़ने-मनकूहा**—वह औरत जिसके साथ विवाह हुआ हो।

ज़नख़—(फ़ा०) (सं० पु०) ठोढ़ी।

ज़नख़दाँ—(फ़ा०) (सं० पु०) ठोढ़ी, ठोढ़ी पर का गड्ढा।

ज़नख़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) हिजड़ा, नपुंसक, जिसकी बात-चीत औरतों की सी हो।

ज़न-गूला—(फ़ा०) (सं० पु०) घंटा।

ज़न-मुरीद—(फ़ा०) (वि०) पत्नी का दास, स्त्री की हर बात को मानने वाला।

ज़न-मुरीदी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) स्त्री की ग़ुलामी।

ज़नाख़—(फ़ा०) (स्त्री०) मुर्ग़ या कबूतर की छाती की हड्डी जिसकी दो शाख़ें होती हैं। ज़नाख़ तोड़ना—सहेली बनाना।

ज़नाख़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) सहेली; (२) निगोड़ी (३) वह स्त्री जिससे अप्राकृतिक ढंग से कोई स्त्री कामेच्छा पूरी करे।

ज़नाज़न—(हि०) तेज़ी से।

जनाज़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) लाश, शव, ताबूत; अर्थी या संदूक जिसमें लाश ले जाते हैं।

ज़नान-ख़ाना—(फ़ा०) (सं० पु० अंतःपुर, स्त्रियों के रहने का स्थान।

ज़नाना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) स्त्री-सम्बन्धी, स्त्रियों का; (२) हिजड़ा, वह मर्द जो औरतों की सी हरकत करे; (३) पर्दा-दार औरतें; (४) पर्दा-नशीन औरतों के रहने का मकान।

ज़नानी—(फ़ा०) (वि०) स्त्रियों की, औरतों की।

जनाब—(अ०) (सं० पु०) (१) दरगाह, मन्दिर; (२) महाशय, आदर-सूचक शब्द।

जनाबत—(अ०) (सं० स्त्री०) नापाकी, अशुद्धता।

जनीन—(अ०) (सं० पु०) गर्भ का बालक।

ज़न्द—(फ़ा०) (सं० पु०) पारसियों का धर्म ग्रंथ।

जन्दड़ी—(औ०) (स्त्री०) जान। जन्दड़ी गंवाना—जान निसार करना।

ज़न्न—(अ०) (सं० पु०) (१) विचार, ख़याल; राय; (२) गुमान, भ्रम; (३) यक़ीन। ज़न्ने-ग़ालिब—बहुत अधिक संभावना। ज़न्ने-फ़ासिद—बेहूदा ख़याल, ग़लत विचार। ज़न्ने-बद—बुरा गुमान ज़न्ने-बातिल—बेअसल गुमान, झूठी कल्पना।

जन्नत—(अ०) (सं० स्त्री०) स्वर्ग, बहिश्त का बाग़।

जन्नती—(अ०) (वि०) (१) स्वर्ग के (२) स्वर्ग जानेवाला, (३) सीधा-सादा, भोला।

ज़न्नी—(अ०) (वि०) क़यासी, कल्पित।

जन्बा—(अ०) (सं० पु०) हिमायत, पक्ष, तरफ़दारी।

जनूब—(अ०) (सं० पु०) दक्षिण। शुद्ध जुनूब।

ज़फ़र—(अ०) (सं० पु०) (१) फ़तह, विजय, कामयाबी, सफलता; (२) प्राप्ति, लाभ।

ज़फ़र-याब—(फ़ा०) (वि०) विजयी, फ़तह पानेवाला।

ज़फ़र-याबी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) विजय, फ़तह पाना।

जफ़ा—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) सितम, सख़्ती, कठोरता; (२) अत्याचार, ज़्यादती, ज़ुल्म; (३) आपत्ति, कष्ट।

जफ़ा-कफ़ा—जोर ज़ुल्म, सख़्ती मुसीबत।

जफ़ा-कश—(फ़ा०) (वि०) कष्ट सहनेवाला, मेहनती।

जफ़ा-कशी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) कष्ट-सहन, ज़ुल्म सहना।

ज़फ़ाफ़—(अ०) (सं० पु०) वर और वधू को साथ सुलाना। (शुद्ध ज़ेफ़ाफ़)

जफ़ा-शेआर—(फ़ा०) (वि०) कष्ट देनेवाला, अत्याचारी।

जफ़ा-शेआरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अत्याचार, उत्पीड़न।

ज़फ़ीरी—(अ०) (सं० स्त्री०) सीटी; सीटी की आवाज़।

ज़फ़ील—(अ०) (सं० स्त्री०) सीटी, वह आवाज़ जो कबूतर-बाज़ मुँह में उंगली रखकर निकालते हैं।

ज़बर—(अ०) (वि०) (१) ज़ोरावर, बलवान; ताक़तवर; (२) बोझल, भारी।

(३) (फ़ा०) (स० पु०) फ़ारसी लिपि का चिह्न जो प्रकार सूचित करने को अक्षर के ऊपर लगाया जाता है।

ज़बरजद—(अ०) (सं० पु०) ज़मरुंद, एक प्रकार का पन्ना (रत्न)।

ज़बरदस्त—(अ०) (वि०) (१) बलवान्, ताक़तवर; (२) ज़ालिम, अत्याचारी। कहा०—ज़बरदस्त का ठेंगा सर पर—ज़बरदस्त पर ज़ोर नहीं चलता, उसकी माननी पड़ती है। ज़बरदस्त के बीसों बिस्वे—बली हर बात में अपनी रखता है। ज़बरदस्त मारे और रोने न दे—अत्याचार करे और शिकायत न करने दे।

ज़बरदस्ती—(अ०) (सं० स्त्री०) ज़्यादती, अत्याचार, ज़ुल्म, अन्याय।

जबल—(अ०) (सं० स्त्री०) पहाड़, पर्वत।

ज़बाँ, ज़बान—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) जीभ, जिह्वा; (२) बोल-चाल, रोज़-मर्रा; (३) वह बोली जिससे विचार प्रकट किये जा सकें; (४) बद-ज़बानी; (५) वचन, इक़रार, वादा, प्रतिज्ञा; (६) भाषण का ढंग। ज़बान आना—बोली आना, बात का ढंग सीखना। ज़बान आलूदा होना—ज़बान पर किसी बात का आना। ज़बान उलझना—ज़बान लड़खड़ाना। ज़बान ओला होना—अकड़ जाना। ज़बान ख़राब होना—गाली-गलोज की आदत होना। ज़बान ख़राब करना—ज़बान से बेहूदा शब्द निकालना। ज़बान करना—बुरा भला कहना। ज़बान घिस जाना—कुछ कहते कहते थक जाना। ज़बान चलाना—बेहूदा बात कहना, अशिष्ट बात बोलना। ज़बान पर रखना, धरना—मज़ा चखना। ज़बान पर आना—बात कही जाना। ज़बान पर हर्फ़ न लाना—ज़बान से शिकायत न करना। ज़बान पर सर देना—प्राण देकर भी वचन पूरा करना। ज़बान पर मुहर होना—कुछ भी न बोलना। ज़बान पलटना, बदलना—कहे से मुकरना, वचन भंग करना। ज़बान बढ़ना। बद ज़बानी बढ़ना। ज़बान बिगाड़ना—बेहूदा बकना। ज़बान बन्द रहना—कुछ न बोलना। ज़बान बन्द करना—बात न करने देना; खामोश हो जाना। ज़बान पकड़ना—बात कहने से रोकना, बात काटना। ज़बान तले ज़बान होना, ज़बान के नीचे ज़बान होना—(औ०) एक बात पर कायम न रहना। ज़बान दाँतों तले दबाना—विस्मय करना। ज़बान देना—वादा करना। ज़बान सँभालना—चुप रहना, ज़बान को क़ाबू में रखना।

ज़बान-कश—(फ़ा०) (वि०) शोला निकालनेवाली।

ज़बान-ज़द—(फ़ा०) (वि०) प्रचलित, प्रसिद्ध।

ज़बान-दराज़—(फ़ा०) (वि०) मुँहफट, गुस्ताख़, अनुचित कहनेवाला।

ज़बान-दाँ—(फ़ा०) (वि०) किसी भाषा का ज्ञाता।

ज़बांदानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) किसी भाषा का ज्ञान, पूर्ण परिचय।

ज़बान-बन्द—(फ़ा०) (वि०) वह तावीज़ जो दुश्मनों की ज़बान रोकने के लिए लिखा जाय।

ज़बान-बन्दी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) ख़ामोशी, चुप; (२) इज़हार, गवाहों के बयान जो लिखे जायँ।

ज़बानी—(फ़ा०) (वि०) (१) मुँह की कही हुई; (२) सुनी-सुनाई; (३) बनावट की, मुँह देखे की, ज़ाहिरी; (४) कंठस्थ। ज़बानी जमा-ख़र्च—ख़ाली बातें बनाना, कुछ करके न दिखाना। ज़बानी तुक्के—ऊपरी बातें।

जबीं—(अ०) (सं० पु०) माथा, पेशानी, मस्तक। चीं-ब-जबीं—माथे पर की शिकन (ग़ुस्से की निशानी)।

जबीं-फ़रसा—(अ०) (सं० पु०) माथा रगड़ने वाला।

ज़बीहा—(अ०) (सं० पु०) (१) बलिदान का पशु, क़ुर्बानी का जानवर; (२) शरई तरीक़े पर हलाल किया हुआ जानवर।

ज़बून—(फ़ा०) (वि०) बुरा, ख़राब।

ज़बूर—(अ०) (सं० स्त्री०) आस्मानी किताब जो हज़रत दाऊद पर नाज़िल हुई।

ज़ब्त—(अ०) (सं० पु०) (१) बरदाश्त, संयम; (२) इन्तज़ाम, बंदोबस्त।

ज़ब्ती—(उ०) (सं० स्त्री०) क़ुर्क़ी, छीन लेना। ज़ब्ती में आना—जायदाद का छिन जाना।

जब्र—(अ०) (सं० पु०) दबाव, ज़ुल्म-सितम, अत्याचार। जब्र व तअद्दी—ज़बरदस्ती, ज़ुल्म सितम।

जब्रन्—(अ०) (क्रि० वि०) ज़बरदस्ती से, बलपूर्वक। जब्रन्-क़हरन्—मजबूरी से, लाचार होकर।

जब्र-ओ-मुक़ाबला—(अ०) (सं० पु०) बीजगणित, अलजब्रा।

जम—(फ़ा०) (सं० पु०) बड़ा बादशाह।

ज़म—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बुराई, हिजो। (अ०) (सं० पु०) मिलाना, शामिल करना।

ज़मज़म—(अ०) (सं० पु०) (१) काबे का कुआँ जिसे मुसल्मान पवित्र मानते हैं; (२) उस कुएँ का पानी।

ज़मज़मा—(अ०) (सं० पु०) संगीत, गान, नग़मा। ज़मज़मा ख़्वाँ, परदाज़, संज—राग गाने वाला।

ज़मज़मी—(अ०) (सं० स्त्री०) वह शख़्स जो हाजियों को पानी देता है।

जमन—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) यमुना नदी।

ज़मन—(अ०) (सं० पु०) समय, वक़्त।

ज़मरु‍र्द—(फ़ा०) (सं० पु०) पन्ना (रत्न)।

ज़मस्ताँ—(फ़ा०) (सं० पु०) जाड़े का मौसम।

जमहूर—(अ०) (सं० पु०) (१) सब, तमाम; (२) लोक; (३) राष्ट्र।

जमहूरी—(अ०) (वि०) प्रजा-तंत्र, सब लोगों से सम्बन्ध रखनेवाली। जमहूरी सल्तनत—प्रजा-तंत्र राज्य।

ज़माँ—(फ़ा०) (सं० पु०) वक़्त, समय। (ज़माना)।

जमा—(अ०) (वि०) (१) कुल, इकट्ठा, एकत्र; (२) जो मिला हो, आमदनी की मद का; (३ मूल धन, पूँजी; (४) लगान, पैदावार, मालगुज़ारी; (५) धन, दौलत; (६) जोड़, मीज़ान।

जमाअ—(अ०) (सं० पु०) संभोग।

जमाअत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) गिरोह, भीड़; (२) फ़िरक़ा, जाति; (३) स्कूल का दर्जा, कक्षा।

जमाद—(अ०) (सं० पु०) (१) निर्जीव पदार्थ; (२) मरु-स्थल; (३) कंजूस।

ज़माद—(अ०) (सं० पु०) मरहम, लेप।

जमादात—(अ०) (सं० पु०) निर्जीव पदार्थ, जो चीज़ें जानदार न हों, जड़।

जमादार—(अ०) (सं० पु०) सरदार, प्रधान सिपाही।

जमादारी—(अ०) (सं० स्त्री०) जमादार का पद।

जमादी—(अ०) (वि०) निर्जीव पदार्थों से सम्बन्ध रखनेवाला।

जमादी-उल्-अव्वल—(अ०) (सं० पु०) एक अरबी महीना; अरबी पाँचवाँ चाँद्र-मास।

ज़मानत—(अ०) (सं० स्त्री०) ज़ामिनी, ज़िम्मेदारी; उत्तर-दायित्व।

ज़मानत-दार—(अ०) (सं० पु०) ज़ामिन,

ज़मानत करनेवाला; जो अपने को किसी दूसरे के लिए उत्तरदायी बनावे।

ज़मानतन्—(अ०) (क्रि० वि०) ज़मानत के तौर पर।

ज़मानत-नामा—(अ०) (सं० पु०) वह काग़ज जिस पर ज़मानत की शर्तें लिखी जायँ।

ज़माना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) समय, काल, वक्त; (२) अर्सा, मियाद, मुद्दत, बहुत समय; (३) ऋतु, मौसम, फ़सल; (४) राज, शासन, हुकूमत; (५) दौर-दौरा, प्रभुत्व, प्रताप का समय; (६) दुनिया, संसार, आलम; (७) सृष्टि, दुनिया के लोग। ज़माना भर—तमाम दुनिया। ज़माना नाज़ुक है—ऐसा समय है कि प्रतिष्ठा क़ायम रखना कठिन है।

ज़माना साज़—(अ०) (वि०) स्वार्थी, ज़ाहिरदारी बरतनेवाला, बना हुआ।

ज़माना साज़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) ख़ुशामद, मक्कारी, बनावट, ज़ाहिर-दारी।

जमा-बन्दी—(अ०) (सं० स्त्री०) फ़र्द लगान, निकासी; पटवारी का एक काग़ज़ जिसमें काश्तकारों के लगान दर्ज होते हैं।

जमाल—(अ०) (सं० पु०) सौन्दर्य, ख़ूबसूरती, हुस्न।

जमाली—(अ०) (वि०) जमाल वाला, तेजो-राशि, रूप-पुंज, (ईश्वर का एक विशेषण)।

ज़मीं—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ज़मीन, धरती, भूमि।

ज़मींदार—(फ़ा०) (सं० पु०) ज़मीन का मालिक।

ज़मींदारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) भूमि, ताल्लुक़ा; (२) ज़मींदार का पद।

ज़मीं-गीर—(फ़ा०) (वि०) वह चीज़ जो अपनी जगह से नहीं हटे।

ज़मीं-दोज़—(फ़ा०) (वि०) (१) ज़मीन में धसा हुआ, ज़मीन में छिपा हुआ; (२) ज़मीन पर गिरा हुआ। (सं० पु०) एक प्रकार का डेरा या ख़ेमा।

ज़मीं—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) देखो 'ज़मीन'।

ज़मीन—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) पृथ्वी, भूमि, धरती; (२) ख़ाक, मिट्टी, धूल; (३) हर इत्र का माद्दा; (४) काग़ज़ या कपड़े की असल सतह; (५) ज़मीन का टुकड़ा; (६) ग़ज़ल की रदीफ़, क़ाफ़िया और वज़न। ज़मीन आसमान का फ़र्क़—बहुत बड़ा फ़र्क़। ज़मीन आसमान एक करना—छान मारना, हद की कोशिश करना। ज़मीन आसमान के क़लाबे मिलाना—(१) बहुत अत्युक्ति करना; (२) बहुत प्रयत्न करना। ज़मीन आसमान पर ठिकाना न होना—बेतुकी बात कहना। ज़मीन की पूछना, आसमान की कहना—सवाल कुछ, जवाब कुछ। ज़मीन पर पाँव रखकर न चलना—घमंड करना। ज़मीन पाँव से लग रही है—दूर का रास्ता पास मालूम होता है। ज़मीन बुलंद होना—ग़ज़ल की बहर का सख़्त होना, दुश्वार होना। ज़मीन सर पर उठा लेना—बहुत शोर करना। कहा०—ज़मीन सख़्त, आसमान दूर—बेबसी की दशा। ज़मीन का गज़—मारा मारा फिरनेवाला, हमेशा सैर-सपाटे में रहनेवाला।

ज़मीनी—(फ़ा०) (वि०) भूमि-सम्बन्धी।

ज़मीम—(अ०) (वि०) मिला हुआ, शामिल किया गया।

ज़मीमा—(अ०) (सं०पु०) तितम्मा, क्रोड़-पत्र, जो चीज़ बढ़ा कर लगाई जाय।

ज़मीर—(अ०) (सं० पु०) (१) मन, दिल; (२) राज़, भेद; (३) सर्वनाम (व्याकरण)

ज़मीर-दाँ—(फ़ा०) (वि०) गुप्त भेद जाननेवाला; दिल के हाल का जाननेवाला।

जमील—(अ०) (वि०) ख़ूबसूरत, सुन्दर। (स्त्री०) जमीला।

जमैयत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) भीड़, गिरोह, जमात; (२) संतोष, दिल-जमई, इत्मीनान; (३) सेना, फ़ौज।

जमैयत-ख़ातिर—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) तसल्ली, संतोष, दिल-जमई।

ज़म्बील—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) टोकरी, झोली, थैली।

ज़म्बूर—(अ०) (सं० पु०) (१) शहद की मक्खी, भिड़, बर्र; (२) दाँत उखाड़ने की चिमटी; (३) (स्त्री० छोटी तोप।

ज़म्बूरक—(तु०) (सं० स्त्री०) छोटी तोप।

ज़म्बूरची—(फ़ा०) (सं० पु०) तोपची, तोप चलानेवाला।

ज़म्बूरा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) छोटी तोप; (२) एक प्रकार का बाजा; (३) तीर का फल।

ज़म्बूरी—(फ़ा०) (सं० पु०) जालीदार कपड़ा।

जम्म—(अ०) (वि०) बहुत बड़ा। जम्मे ग़फ़ीर—(अ०) (पु०) बहुत बड़ी भीड़।

ज़म्म—(अ०) (सं० पु०) अरबी लिपि का चिह्न जो उकार की मात्रा का काम देता है; पेश।

ज़र—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सोना, सुवर्ण; (२) धन, माल, रुपया। कहा०—ज़र नेस्त, इश्क़ टें—ग़रीबी में कोई काम नहीं होता। न ज़र बल न ज़ोर बल—न रुपया न बदन में ताक़त।

ज़र-कश—(फ़ा०) (वि०) (१) वह मनुष्य जो सोने चाँदी के तारों से कलाबतून बनाता है; (२) वह कपड़ा जो चाँदी के तारों से बुना हो।

ज़र-कोब—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) वर्क़-साज़, सोने या चाँदी के वर्क़ बनानेवाला; (२) वह चीज़ जिस पर सोने के पत्तर लगाने गये हों।

ज़र-ख़रीद—(फ़ा०) (वि०) रुपया देकर ख़रीदा हुआ, क्रीत।

ज़र-ख़ेज़—(फ़ा०) (वि०) उपजाऊ, उर्वरा, मुनाफ़ा देनेवाली (भूमि)।

ज़र-गर—(फ़ा०) (सं० पु०) सुनार, स्वर्णकार।

ज़र-गरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सुनार का काम, सुनारी।

ज़र-ग़ल्त—(वि०) हक़ीर, नाकारा चीज़।

जरगा—(तु०) (सं० पु०) (१) भीड़, झुंड; (२) जाति, दल, फ़िरक़ा; (३) दलों की मजलिस।

ज़र-तार—(फ़ा०) (वि०) सोने के तारों से बनी हुई चीज़।

ज़रद—(फ़ा०) (वि०) पीला, पीत। (शुद्ध ज़र्द)

ज़रदा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) चावलों का एक भोज्य पदार्थ; (२) पीले रंग का घोड़ा; (३) पान में खाने की सुगंधित तम्बाकू। (शुद्ध ज़र्दा)

ज़र-दार—(फ़ा०) (वि०) अमीर, मालदार, धनी।

ज़र-दारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) धनाढ्यता, संपन्नता, अमीरी।

ज़रदालू—(फ़ा०) (सं० पु०) ख़ूबानी, एक फल।

ज़रदुश्त—(फ़ा०) (सं० पु०) पारसियों के धर्म का जन्म-दाता।

ज़र-दोज़—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) ज़री का काम करनेवाला; (२) वह चीज़ जिस पर ज़री का काम हो।

ज़र-दोस्त—(फ़ा०) (वि०) लालची, धन का दास।

ज़र-निगार—(फ़ा०) (वि०) सोने का काम किया हुआ।

ज़र-परस्त—(फ़ा०) (वि०) लालची, बख़ील, रुपये को ही सब कुछ समझनेवाला, अर्थ-पिशाच।

ज़र-परस्ती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) लालच, धन की पूजा।

ज़रब—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) आघात, चोट; २) गुण। ज़रब-ख़फ़ीफ़—हल्की चोट। ज़रब-शदीद—गहरी चोट।

ज़र-बफ़्—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वह कपड़ा जो बादला और रेशम से बनाया जाय।

ज़र-बाफ़—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) ज़र-दोज़; (२) तारों का बुना हुआ कमख़्वाब।

ज़र-बाफ़ी (फ़ा०) (सं० स्त्री०) ज़र-दोज़ी। (वि०) सुनहरा काम बना हुआ।

ज़र-बाफ़्, ज़र-बाफ़्ता—(फ़ा०) (सं० पु०) ज़री का कपड़ा, जा बफ़्त।

ज़रर—(अ०) (सं० पु०) (१) चोट, आघात; (२) नुक़सान, हानि।

ज़रर-रसां—अ०) (वि०) चोट देनेवाला, नुक़सान करनेवाला।

ज़रर-रसानी—(अ०) (सं० स्त्री० (१) चोट पहुँचाना; (२) हानि पहुँचाना।

ज़रा—(अ०) (क्रि० वि०) (१) थोड़ा, बहुत कम; (२) थोड़ा वक्त; (३) कुछ; (४) बिलकुल; (५) थोड़ी देर के लिए। ज़रा-सा—थोड़ा सा, छोटा। ज़रा-सा मुँह निकल आया—चेहरा उतर गया।

ज़राअ़त—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) खेती, खेती करना, काश्तकारी; (२) फ़सल, पैदावार।

ज़राअ़त-पेशा—अ०) (सं० पु०) जिसका पेशा काश्तकारी हो; कृषक, खेतिहर।

ज़राफ़त—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) दिल्लगी, हास्य, मज़ाक़; (२) बुद्धिमानी।

ज़राफ़त-आमेज़—(वि०) दिल्लगी की।

ज़राफ़तन्—(अ०) (क्रि० वि०) मज़ाक़ से, दिल्लगी से, हँसी में।

ज़राफ़त-पसन्द—(अ०) (वि०) जो दिल्लगी पसंद करें, हास्य-प्रिय।

ज़रायें—(अ०) (सं० पु०) साधन। ज़रिया का बहुवचन।

जरायम—(अ०) (सं० पु०) अपराध, बहुत से गुनाह। 'जुर्म' का बहुवचन।

जरायम-पेशा—(अ०) (सं० पु०) जिनका पेशा ही जुर्म करना हो।

जराहत—(अ०) (सं० स्त्री०) घाव, ज़ख़्म।

जरी—(अ०) (वि०) बहादुर, बीर।

ज़री—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) कलाबतून का बना कपड़ा; (२) गोटा किनारी; (३) चाँदी के तार जिन पर सोने का मुलम्मा हो।

ज़रीया—(अ०) (सं० पु०) (१) सम्बन्ध, वसीला, साधन; (२) सबब, कारण, तुफ़ेल।

जरीदा—(फ़ा०) (वि०) अकेला, एकाकी।

ज़रीफ़—(अ०) (सं० पु०) (१) हँसोड़, दिल्लगी-बाज़ हँसी-दिल्लगी करनेवाला; (२) अक़्लमंद, बुद्धिमान्।

ज़रीफ़-तबा, ज़रीफ़-मिज़ाज—(फ़ा०) (वि०) हास्य-प्रिय।

ज़रीफ़ाना—(फ़ा०) (वि०) हास्य की, दिल्लगी की।

जरीब—(अ०) (सं० स्त्री०) खेत या धरती नापने की जंजीर।

जरीब-कश—(अ०) (वि०) ज़मीन नापने वाला।

जरीब-कशी—(अ०) (सं० स्त्री०) पैमायश, ज़मीन नापने का काम।

ज़री-बाफ़—(फ़ा०) (सं० पु०) ज़री का काम करनेवाला; ज़री का कपड़ा बनाने वाला।

ज़री-बाफ़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सोने के तार बनानेवाला; सुनहरी लैस बनाने वाला।

जरीबी—(अ०) (सं० स्त्री०) ज़मीन नापने की मज़दूरी।

ज़रूफ़—(अ०) (सं० पु०) बरतन। 'ज़र्फ़' का बहुवचन।

ज़रूर—(अ०) (वि०) (१) आवश्यक, अपेक्षित; (२) अनिवार्य, लाज़िम, (क्रि० वि०) अवश्य। बिल-ज़रूर—अवश्य ही, निस्सन्देह।

ज़रूरत—(अ०) (सं० स्त्री०) आवश्यकता, अपेक्षा, अभिप्राय।

ज़रूरियात—(अ०) (सं० स्त्री०) आवश्यकताएँ।

ज़रूरी—(अ०) (वि०) आवश्यक, अनिवार्य।

ज़रे-अमानत—(फ़ा०) (सं० पु०) थाती, धरोहर में रखा हुआ रुपया।

ज़रे-असल—(फ़ा०) (सं० पु०) मूल-धन, जिस पर ब्याज चले।

ज़रे-कुल—(फ़ा०) (सं० पु०) मिश्रधन।

ज़रे-क़लब—(फ़ा०) (सं० पु०) खोटा सोना, खोटा रुपया।

ज़रे-गुल—(फ़ा०) (सं० पु०) फूल के भीतर का रेज़ा, फूल का ज़ीरा।

ज़रे-जाफ़री—(फ़ा०) (सं० पु०) विशुद्ध सोना।

ज़रे-ज़ामिनी—(फ़ा०) (सं० पु०) ज़मानत का रुपया।

ज़रे-तावान—(फ़ा०) (सं० पु०) नुक़सान पूरा करने को दिया हुआ रुपया।

ज़रे-नाब—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) शुद्ध सोना; (२) आफ़ताब।

ज़रे-नक़्द—(फ़ा०) (सं० पु०) सिक्का नक़्द रुपया, रोकड़ी।

ज़रे-पेशगी—(फ़ा०) (सं० पु०) ब्याना, पेशगी दिया हुआ रुपया।

ज़रे-बालाई—(फ़ा०) (सं० पु०) वह रुपया जो अलावा तनख़्वाह के मिले; ऊपरी आमदनी का रुपया, रिश्वत।

ज़रे-मुतालबा—(फ़ा०) (सं० पु०) जो रुपया किसी पर चाहिए।

ज़रे-याफ़्तनी—(फ़ा०) (सं० पु०) जो रुपया किसी को पाना हो।

ज़रे-रहन—(फ़ा०) (सं० पु०) वह रुपया जिसके बदले जायदाद रहन हो।

ज़रे-सफ़ेद—(फ़ा०) (सं० पु०) चाँदी।

ज़रे-समन—(फ़ा०) (सं० पु०) वह रुपया जो क़ीमत में मिले।

ज़रे-सुर्ख़—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सोना; (२) अशर्फ़ी।

ज़र्क़ बर्क़—(अ०) (वि०) चमकदार, शान-शौकतदार, भड़कीला।

ज़र्द—(फ़ा०) (वि०) सुनहरा, पीला, पीत।

ज़र्द आलू—(फ़ा०) (सं० पु०) ख़ूबानी।

ज़र्दचोब—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) हल्दी।

ज़र्द-रू—(फ़ा०) (वि०) (१) जिसका रंग पीला होगया हो; (२) शरमिंदा, हिरासा; (३) बेहया, शामती।

ज़र्द-रूई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शरमिंदगी, लज्जा, ख़िजालत।

ज़र्दा—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) मीठे चावल (केसरिया); (१) पीलापन; (३) अंडे के अंदर का पीला रस; (४) पीलिया रोग; (५) पीली कौड़ी; (६) पीले रंग का घोड़ा; (७) पीली आंख का कबूतर; (८) फूल के भीतर का ज़ीरा; (९) पान के साथ खाने का तम्बाकू; (१०) मोहर, स्वर्ण-मुद्रा।

ज़र्दी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पीलापन।

ज़र्फ़—(अ०) (सं० पु०) (१) बरतन, बासन; (२) समाई, गुंजायश, पात्रता; (३) अक़्लमंदी; (४) क्रिया-विशेषण। आली-ज़र्फ़—उदार हृदय, उदार चेता। कम-ज़र्फ़—ओछा, नीच।

ज़र्फ़े-आफ़ताब—(पु०) (लख०) शराब का प्याला।

ज़र्फ़े-ज़मां—(अ०) (सं० पु०) कालवाचक क्रिया-विशेषण।

ज़र्फ़े-मकां—(अ०) (सं० पु०) स्थानवाचक क्रिया-विशेषण।

ज़र्ब—(अ०) (सं० पु०) (१) मार, चोट, सदमा; (२) ठप्पा; (३) तोप का संख्या; (४) नुक़सान; (५) बयान।

ज़र्ब-उल्-मसल—(अ०) (सं० स्त्री०) कहावत, लोकोक्ति। (वि०) प्रसिद्ध।

ज़र्र—(अ०) खिंचाव, कशिश, आकर्षण। जर्रे-सक़ील—(१) वह विद्या जिससे भारी बोझ आसानी से उठालें। (२) बहुत कठिन काम।

ज़र्रा—(अ०) (सं० पु०) रेशा, रज-कण, अणु। ज़र्रा-परवर—(फ़ा० (वि०) ना चीज़ की क़द्र करनेवाला। ज़र्रा-भर—ज़रा-सा। ज़र्रे को आफ़ताब बनाना—नाचीज़ को बहुत ऊँचा उठाना।

जर्रार—(अ०) (वि०) सूरमा, बहादुर, वीर; (२) बड़ा भारी लश्कर, विशाल सेना।

जर्राह—(अ० (सं० पु०) चीर-फाड़ करने वाला, अस्त्र-चिकत्सक, सर्जन।

जर्राही—(अ०) (वि०) अस्त्र-चिकित्सा-सम्बन्धी। (सं० स्त्री०) अस्त्र-चिकित्सा, चीर फाड़।

ज़र्रीन—(फ़ा०) (सं०) सुनहरा, बेशक़ीमत, बहुमूल्य; वह चीज़ जिस पर सलमे सतारे का काम हो।

ज़लक़—(अ०) (सं० स्त्री०) हस्त क्रिया, हथरस, मुष्टि-मैथुन।

ज़ल-ज़ला—(अ०) (सं० पु०) भूकंप, भोंचाल।

जलसा—(अ०) (सं० पु०) बैठक, मजलिस, नाच-रंग।

जलापा—(हि०) (सं० पु०) (औ०) (१) रंज-ग़म, जलन, मलाल; (२) द्वेष, वैर।

ज़लाम—(अ०) (सं० पु०) अंधेरा, तारीकी।

ज़लाल—बादलों की छाया, छायादार स्थान।

जलाल—(अ०) (सं० पु०) (१) तेज, प्रकाश; (२) प्रभाव, आतंक, शान-शौकत; (३) गुस्सा।

ज़लालत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) ज़लील करना, ख्वार करना; (२) गुम-राही।

जलालिया—(अ०) (सं० पु०) (१) एक प्रकार के फ़क़ीर; (२) ईश्वर के तेजोरूप के उपासक।

जलाली—(अ०) (वि०) (१) तेज-युक्त, (२) भीषण, विकराल (ईश्वर का एक विशेषण)।

जला-वतन—(अ०) (क्रि०) देश से निकालना, शहर बदर करना।

जला-वतनी——(अ०) (सं० स्त्री०) देश-निकाला, निर्वासन।

जली—(अ०) (वि०) प्रकट, स्पष्ट, ज़ाहिर, मोटा लिखा हुआ, मोटे अक्षर।

जलील—(अ०) (वि०) बड़ा; बुज़ुर्ग। जलील-उल्-क़द्र—(अ०) (वि०) बहुत प्रतिष्ठित, मुअज़्ज़िज़।

ज़लील—(अ०) (वि०) (१) तुच्छ, नीच, सिफ़ला, पाजी; (२) अपमानित, बदनाम, बेइज़्ज़त; ख़फ़ीफ़। ज़लील करना—शर्मिंदा करना, बदनाम करना। ज़लील होना—ख़फ़ीफ़ होना, रुसवा होना।

जलीस—(अ०) (वि०) मुसाहब, साथी, पास बैठने वाला।

ज़लूम—(अ०) (सं० पु०) सख़्त ज़ुल्म करनेवाला, घोर अत्याचारी।

जलूस—(अ०) (सं० पु०) देखो—'जुलूस'।

ज़ल्क़—हथरस, हस्तक्रिया।

जल्द—(अ०) (क्रि० वि०) फ़ौरन, अवि-लम्ब, शीघ्र।

जल्द-बाज़—(अ०) (वि०) जल्दी करने वाला, उजलत करनेवाला।

जल्द-बाज़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) उजलत।

जल्दी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) शीघ्रता, फ़ुरती, उजलत, घबराहट, (क्रि०) वि०

फ़ौरन, जल्द, शीघ्र, कहा०—जल्दी काम शैतान का—जल्दी में काम बिगड़ता है।

जल्ल—(अ०) (वि०) श्रेष्ठ, महान, उच्च, बुज़ुर्ग। जल्ल जलालहू—बड़ी है महिमा।

जल्लाद—(अ०) (सं० पु०) (१) कोड़े या तलवार मारनेवाला; (२) खाल खींचने वाला; (३) वधिक, प्राण-दंड से दंडित अपराधियों को मारनेवाला; (४) फाँसी देनेवाला, (५) ज़ालिम, बेरहम, निर्दय; (६) माशूक़।

जल्लादी—(अ०) (सं० स्त्री०) बेरहमी, बेदर्दी।

जल्वत—(अ०) (सं० स्त्री०) मजमा, अपने को सामने लाना, प्रकट होना।

जल्वा—(अ०) (सं० पु०) (१) किसी विशेष ढंग से अपने को प्रकट करना, सामने आना, दीदार, दर्शन, नज़्ज़ारा; (२) नूर, तेज; (३) विदा के दिन दूल्हा-दुलहिन का आमने-सामने बैठकर देखना। जल्वागर होना—प्रकट होना, ज़ाहिर होना। जल्वा दिखाना—सजधज दिखाना, दर्शन देना।

जल्वा-गाह—(अ०) (सं० पु०) (१) दर्शन देने का स्थान; (२) संसार।

जल्सा—(अ०) (सं० पु०) (१) सभा, अधिवेशन; (२) उत्सव, नाच-रंग।

जवाँ—(फ़ा०) (वि०) (१) जवान, युवा; (२) बहादुर, वीर।

जवाँ-बख़्त—(फ़ा०) (वि०) भाग्यशाली, क़िस्मतवर।

जवाँ-मर्द—(फ़ा०) (वि०) साहसी, बहादुर, शूर।

जवाँ-मर्दी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वीरता, दिलेरी, साहस।

जवाज़—(अ०) (सं० पु०) जायज़ होना, शास्त्रानुकूल होना।

जवाद—(फ़ा०) (वि०) दानी, दाता, ईश्वर का नाम।

जवान—(फ़ा०) (वि०) (१) युवा, तरुण, बच्चा; (२) वीर, बहादुर, सिपाही; (३) मज़बूत; (४) नया, ताज़ा।

जवानां-मर्ग—(फ़ा०) (वि०) जवान मरनेवाला।

जवानिब—(अ०) (सं० पु०) तरफ़ें, दिशाएँ। 'जानिब' का बहुवचन।

जवानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) यौवन, तरुणाई।

जवाब—(अ०) (सं० पु०) (१) उत्तर; (२) बदला, एवज़; (३) जोड़, मुक़ाबिले की चीज़; (४) नौकरी से अलग होना।

जवाब-दावा—(अ०) (सं० पु०) प्रतिवादी का लिखित उत्तर, बयान तहरीरी।

जवाब-देह—(फ़ा०) (वि०) उत्तरदायी, ज़िम्मेदार।

जवाब-देही—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) उत्तर-दायित्व, ज़िम्मेदारी; (२) किसी आरोप का उत्तर देना, अपना पक्ष निवेदन करना।

ज़वाबित—(अ०) (सं० पु०) क़ायदे-क़ानून। 'ज़ाब्ता' का बहुवचन।

जवाबी—(अ०) (वि०) जिसका उत्तर माँगा गया हो।

ज़वायद—(अ०) (सं० पु०) फ़िज़ूल चीज़ें; आवश्यकता से अधिक चीज़ें।

जवार—(अ०) (सं० पु०) पड़ोस, आस-पास। क़ुर्ब ओ जवार—आस-पास के स्थान।

जवारिश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक स्वादिष्ट औषध-योग जो अवलेह के रूप में दिया जाता है और पाचन-शक्ति को बढ़ाता है।

ज़वाल—(अ०) (सं० पु०) (१) कमी, अवनति, घटाव; (२) दोपहर के बाद का वक़्त; (३) जंजाल, आफ़त। ज़वाल-

पज़ीर—(फ़ा०) (वि०) नश्वर, नाश होने वाला।

जवासीस—(अ०) (सं० पु०) 'जासूस' का बहुवचन।

जवाहिर—(अ०) (सं० पु०) रत्न, मणि। 'जौहर' का बहुवचन।

जवाहिरात—(अ०) (सं० पु०) रत्न-समुच्चय।

जश्न—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) जलसा, उत्सव, ख़ुशी की महफ़िल; (२) ईद का दिन; (३) आनन्द, आनन्द-मंगल। जश्न उड़ाना—मज़ा उड़ाना, लुत्फ़ उठाना। जश्न मनाना—ख़ुशी मनाना, नाच रंग में शामिल होना।

जसामत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) मोटाई; (२) शरीर का आकार।

जसारत—(अ०) (सं० स्त्री०) दिलेरी, शूरता।

जसीम—(अ०) (वि०) भारी शरीरवाला, मोटा, स्थूल।

ज़ह—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) प्रसव, बच्चा जनना; (२) सन्तान, बाल-बच्चे।

जहद—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) उद्योग, प्रयत्न, कोशिश; (२) मेहनत, परिश्रम। जद्-ओ-जहद—मेहनत और कोशिश, श्रम और उद्योग।

ज़हन—(अ०) (सं० पु०) बुद्धि, समझ, समझने की शक्ति (शुद्ध ज़ेहन)। ज़हन खुलना—बुद्धि विकसित होना। ज़ेहन-नशीन होना—समझ में आ जाना। ज़ेहन लड़ाना—समझने की कोशिश करना।

जहन्नम—(अ०) (सं० पु०) (१) नरक, दोज़ख़; (२) गहरा कुआँ।

जहन्नमी—(अ०) (वि०) नारकीय, दोज़ख़ी दोज़ख़ के काम करनेवाला।

ज़हमत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) दुःख, कष्ट, मुसीबत, तकलीफ़; (२) झंझट, मेहनत-मशक़्क़त।

ज़हर—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) विष, गरल; (२) अप्रिय, असह्य बात। (वि०) कड़वा, बुरा, ना-गवार, घातक। ज़हर उगलना—दुश्मनी निकालना, जली-कटी बातें करना। ज़हर उतारना—ज़हर का असर दूर करना। ज़हर के घूँट पीना—लाचारी से क्रोध दबाना, दिल ही दिल में कुढ़ना। ज़हर घोलना—ज़हर मिलाना, बद-ज़बानी या फ़िसाद की बातों से। ज़हर बोना—बुराई करना, फ़िसाद की जड़ डालना। ज़हर मार करना—मजबूरन खाना। ज़हर लगना—बुरा लगना, असह्य होना।

ज़हर-आलूद, ज़हर-आलूदा—(फ़ा०) (वि०) ज़हरीला, ज़हर का बुझा हुआ, विषाक्त।

ज़हर-क़ातिल—(फ़ा०) (सं० पु०) घातक विष।

ज़हर-दार—(फ़ा०) (वि०) ज़हरीला, विषाक्त।

ज़हर-बाद—(फ़ा०) (सं० पु०) एक रोग का नाम; एक फोड़ा जिसका ज़हर बदन भर में फैलता है।

ज़हर-मार—(फ़ा०) (वि०) ज़हर का प्रभाव नष्ट करनेवाली वस्तु, विषघ्न। (सं० पु०) विषघ्न, तिरयाक़, ज़हर मोहरा।

ज़हर-मोहरा—(फ़ा०) (सं० पु०) एक पत्थर जो विष को सोख लेता है।

ज़हर-मोहरा-ख़ताई—(फ़ा०) (सं० पु०) एक पत्थर जो दिल की बीमारी में लाभ करता है।

ज़हर-हलाहल—(फ़ा०) (सं० पु०) घातक विष।

ज़हरा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) पित्ता, पित्ताशय; (२) दिलेरी, साहस। ज़हरा आब होना, ज़हरा पानी होना—भयातुर होना, हौसला पस्त होना। ज़हरा फटना—जी धड़कना, ईर्ष्या से जलना।

ज़हराब—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) ज़हर से बुझा पानी; (२) ग़म व ग़ुस्सा, शोक व क्रोध।

ज़हरीला—(फ़ा०) (वि०) विषाक्त, फ़ितना-अंगेज़।

जहल—(अ०) (सं० पु०) अज्ञान, नादानी, ना-वाक़फ़ियत।

जहली—(अ०) (वि०) झगड़ालू, उजड्ड, झक्की।

जहाँ—(फ़ा०) (सं० पु०) जहान, संसार, दुनिया।

जहाँ-दीदा—(फ़ा०) (वि०) संसार का अनुभव रखनेवाला।

जहाँ-पनाह—(फ़ा०) (वि०) संसार को शरण देनेवाला, राजा का विशेषण।

ज़हाक—(अ०) (सं० पु०) (१) बहुत हँसनेवाला; (२) ईरान का एक अत्याचारी बादशाह (शुद्ध ज़ह्हाक)।

जहाज़—(अ०) (सं० पु०) बड़ी नाव, समुद्र में चलनेवाला पोत।

जहाज़ी—(अ०) (वि०) जहाज़ से सम्बन्ध रखनेवाला। (सं० पु०) नाविक, जहाज़ चलानेवाला।

जहाद—(अ०) (सं० पु०) धार्मिक युद्ध, जो मुसल्मान काफ़िरों के साथ करते हैं। (शुद्ध जेहाद)

जहादी—(अ०) (वि०) काफ़िरों से युद्ध करनेवाला।

जहान—(फ़ा०) (सं० पु०) संसार, दुनिया, विश्व।

ज़हानत—(अ०) (सं० स्त्री०) ज़हन की तेज़ी, बुद्धि की प्रखरता। (शुद्ध ज़ेहानत)

ज़हाब—(अ०) (सं० पु०) प्रस्थान।

जहालत—(अ०) (सं० स्त्री०) अज्ञानता, मूर्खता। (शुद्ध जेहालत)

ज़हीन—(अ०) (वि०) बुद्धिमान्, मेधावी।

जहीम—(अ०) (सं० पु०) नरक, दोज़ख़।

ज़हीर—(अ०) (सं० पु०) दोस्त, मित्र, सहायक।

ज़हूर—(अ०) (सं० पु०) (१) प्राकट्य, प्रकट होना, ज़ाहिर होना; (२) उत्पन्न होना, (३) विजय पाना। ज़हूर में आना—प्रकट होना।

ज़हूरा—(हि०) (सं० पु०) प्रताप, रौनक़, प्रकाश, विभूति।

ज़हूल—(अ०) (सं० पु०) भूल जाना, ग़फ़लत।

जहेज़—(अ०) (सं० पु०) दहेज़; वह धन या माल जो विवाह में दिया जाता है।

ज़ह—(अ०) (सं० पु०) (१) पिछला भाग, पीठ; (२) ऊपरी या बाहरी भाग।

जाँकन—(फ़ा०) (वि०) प्राणों पर संकट लानेवाला, प्राण-घातक, जान घुलाने-वाला।

जाँ-कनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मौत के समय साँस का उखड़ना; दम तोड़ने की दशा; जान घुलानेवाली आपत्ति।

जाँ-काह—(फ़ा०) (वि०) भीषण, विकट, बड़ा कष्ट देने वाला।

जाँ-काही—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मेहनत, मशक़्क़त।

जाँगलू—(हि०) (वि०) गँवार, जंगली, मूर्ख।

जाँ-गुज़ा—(फ़ा०) (वि०) जान घटानेवाला।

जाँ-गुदाज़—(फ़ा०) (वि०) जान घुलाने-वाला।

जाँ-नवाज़—(फ़ा०) (वि०) कृपालु, दयालु; माशूक़।

जाँ-निसार—(फ़ा०) (वि०) जान फ़िदा करनेवाला, जाँ-बाज़।

जाँ-फ़िज़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) जान का बढ़ानेवाला, जान को खुश करनेवाला, अमृत।

जाँ-फ़िशानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बड़ी मेहनत, बड़ी कोशिश।

जाँ-बख़्श—(फ़ा०) (वि०) जान को ताज़गी देने-वाला।

जाँ-बख़्शी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) माफ़ी, दर-गुज़र, क्षमा।

जाँ-ब-लब—(फ़ा०) (वि०) मरने के समीप, मरणासन्न ।

जाँ-बाज़—(फ़ा०) (वि०) जान पर खेलनेवाला, बड़ा मेहनती, बड़ा बहादुर ।

जाँ-बाज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) हिम्मत, दिलेरी, जान-जोखों ।

जाँ-सोज़—(फ़ा०) (वि०) जान जलानेवाला ।

जा—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) स्थान, जगह; (२) मौक़ा, प्रसंग (फ़ा०) (वि०) उचित; मुनासिब, ठीक । जा-ब-जा—जगह जगह, हरजगह । जा-बेजा—(फ़ा०) (वि०) मौक़े बे मौक़े, बुरा भला । जा से—सच, मुनासिब, मौक़े की बात ।

ज़ा—(फ़ा०) (प्रत्यय)—शब्द के अन्त में मिलकर कभी कर्ता का बोध कराता है । फ़ितना-ज़ा—फसाद पैदा करनेवाला ।

ज़ाइक़ा—(अ०) (सं० पु०) चखने की शक्ति, स्वाद; मज़ा, लज्जत, लुत्फ़, चसका । ज़ाइक़ा चखाना—सज़ा देना । ज़ाइक़ादार—स्वादिष्ट, लज़ीज, ख़ुश-मज़ा । (शुद्ध ज़ायक़ा)

ज़ाइचा— (फ़ा०) (सं० पु०) जन्म-कुंडली ।

ज़ाईदा—(फ़ा०) (वि०) पैदा किया हुआ, जना हुआ ।

ज़ाएद—(अ०) (वि०) ज़्यादा, अधिक, फ़िज़ूल, बचा हुआ, बढ़ा हुआ ।

ज़ाएर—(अ०) (वि०) ज़ियारत करनेवाला, यात्री, तीर्थ-यात्री ।

ज़ाइल—(अ०) (वि०) दूर होनेवाला ।

जाकड़—(हि०) (सं० पु०) किसी माल का इस शर्तपर लेना कि पसंद आने पर ख़रीदा जाय वर्ना वापस ।

ज़ाकिर—(अ०) (वि०) ज़िक्र करनेवाला, याद करनेवाला ।

जाखन—(हि०) (सं० स्त्री०) लकड़ी का ढांचा जिसके ऊपर कुएँ में ईंटों की बुनियाद रखते हैं ।

ज़ाग—(फ़ा०) (सं० पु०) कौआ । ज़ागे-कमान—कमान के कोने की नोक ।

जागी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बंदूक का फ़तीला ।

जागीर—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) माफ़ी, राज्य की ओर से मिली हुई भूमि ।

जागीर-दार—(अ०) (सं० पु०) तालुक़-दार, जागीर-भोगी ।

ज़ाज—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सज्जी । ज़ाज-सफ़ेद—फिटकरी ।

जाजम, जाज़म—(तु०) (सं० स्त्री०) छपा हुआ फ़र्श; बिछाने की बेल-बूटेदार चादर ।

जा-ज़रूर—(फ़ा०) (सं० पु०) पैख़ाना, टट्टी । जा-ज़रूर ख़ता होना—बेख़बरी में पैख़ाना निकलना । जा-ज़रूर फ़िरना—पैख़ाना फिरना । जा-ज़रूर बंद होना—क़ब्ज़ होना ।

जाज़िब—(अ०) (वि०) जज़्ब करनेवाला, सोखनेवाला । जाज़िब-काग़ज़—ब्लाटिंग पेपर ।

जाज़िबा—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) जज़्ब करनेवाली ताक़त; (२) तासीर, कशिश, आकर्षण-शक्ति ।

ज़ाजिर—(अ०) (वि०) झिड़कनेवाला ।

ज़ात—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) देह, दम; (२) क़ौम, बिरादरी; (३) हैसियत; वक़त, प्रतिष्ठा; (४) हक़ीक़त । ज़ात पर जाना—कमीनी हरकत करना, नीचता करना ।

ज़ाती—(अ०) (वि०) (१) असली, हक़ीक़ी; (२) व्यक्तिगत, अपना, निजका ।

ज़ाते - शरीफ़—बड़ा उस्ताद, चालाक, पाजी ।

ज़ाद्—(फ़ा०) (प्रत्यय) उत्पन्न, जन्मा हुआ पैदा। आदम-ज़ाद्—आदम से उत्पन्न, आदमी।

ज़ादबूम—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वतन, जन्म-भूमि।

जादा—(फ़ा०) (सं० पु०) पग-डंडी, सीधी राह।

ज़ादा—(फ़ा०) (वि०) जना हुआ, जन्मा हुआ।

जादू—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) टोना, मंत्र; (२) दूसरे को मोहित करने की शक्ति, मोहिनी; (३) इन्द्रजाल, वह अद्भुत कार्य जो देखनेवाले को आश्चर्य में डाल देते हैं। जादू उतारना—जादू का असर दूर करना। जादू उलट जाना—जादू का प्रभाव उलटा होना। जादू जगाना—जादू या मंत्र के प्रभाव के प्रयोग करना। कहा०—जादू वह जो सर पर चढ़ कर बोले—युक्ति वही जिसे विरोधी भी मान जाय।

जादूगर—(फ़ा०) (सं० पु०) स्याना, टोना करनेवाला।

जादू-नज़र, जादू-नफ़्स—माशूक़।

जादू-बयान—(फ़ा०) (वि०) जिसकी बात मन पर प्रभाव डाले।

जादू-भरी—(हि०) (वि०) मन पर प्रभाव डालनेवाली, दिल तड़पा देनेवाली।

ज़ादे-उक़बा—(अ०) (सं० पु०) वह पुण्य-कार्य जो अन्त समय काम आवे।

ज़ादे-राह, ज़ादे-सफ़र—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) राह का ख़र्च, मार्ग का खाना।

जान—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) प्राण, जीवन, रूह, आत्मा; (२) बल, ज़ोर, शक्ति; (३) हिम्मत, सामर्थ्य, मजाल, बूता; (४) सार, तत्व, असल, लुब-लुबाब; (५) शोभा बढ़ानेवाली वस्तु; (६) आदर या प्रेमसूचक संबोधन। (७) माशूक़। जान आजाना, जान आना—ताक़त आजाना, पनप जाना, तसल्ली होना। जान उड़ी होना—बहुत चिन्ता होना। जान चुराना—काम से भागना। जान छिपाना—बहाना करना। जान को रोना—कलपना, बद-दुआ देना। जान के लाले पड़ना—प्राण बचना कठिन होना। जान पर आ बनना—जान पर विपत्ति होना। जान पर खेलना—ऐसा काम करना जिसमें जान जाने का डर हो। जान बचाना—(१) किसी को मुसीबत से छुड़ाना; (२) पीछा छुड़ाना, भाग जाना। जान-ब-लब होना—मृत्यु निकट होना। जान सूखना—बुरा लगना, दिल कुढ़ना। जान से हाथ उठाना, जान से हाथ धोना—निराश होना। जान हलकान करना—थका मारना, बहुत काम लेना। कहा०—जान है तो जहान है—जीते जी के सब सुख हैं।

जान-जोखों, जान-जोख़म—(स्त्री०) ख़तरा अन्देशा, भय।

जान-दार—(फ़ा०) (वि०) (१) जिसमें जीवन हो, सजीव; (२) सबल; ज़ोरावर, मज़बूत; तेज़, फुर्तीला; (३) धनी, माल-दार।

जान-बख़्शी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) प्राण-दान, प्राण-दंड क्षमा करना।

जा-नमाज़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) नमाज़ पढ़ने का फ़र्श, मुसल्ला।

जानवर—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) जानदार; प्राणी, जीव; (२) पशु, चौपाया, कीड़ा-मकोड़ा।

जा नशीन—(फ़ा०) (पु०) क़ायम-मुक़ाम, उत्तराधिकारी।

जान-हार—(हि०) (वि०) (१) जान देने वाला, जान पर खेलनेवाला; (२) जाने वाला।

जानाँ—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) प्यारा, प्रिय, माशूक़ ।

जानानाँ—(फ़ा०) (सं० पु०) प्यारा, माशूक़ ।

जानिब—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) तरफ़, ओर, रुख़; (२) पक्ष । (क्रि० वि०) ओर, तरफ़ । ई-जानिब—हम ।

जानिब-दार—(फ़ा०) (वि०) पक्षपाती, हिमायती ।

जानिब-दारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पक्षपात, तरफ़दारी ।

जानिबैन—(फ़ा०) (सं० पु०) दोनों पक्ष ।

ज़ानिया—(अ०) (सं० स्त्री०) व्यभिचारिणी, दुश्चरित्रा ।

जानी—(फ़ा०) (वि०) (१) जान से सम्बन्ध रखनेवाला; जान का; (२) प्राणप्रिया । जानी दुश्मन—जान का दुश्मन । जानी दोस्त—परम प्रिय मित्र ।

ज़ानी—(अ०) (वि०) व्यभिचारी, ज़िना करनेवाला ।

ज़ानू—(फ़ा०) (सं० पु०) रान, जाँघ, घुटना, पहलू । ज़ानू-ब-ज़ानू—ज़ानू से ज़ानू मिलाकर बैठना । दोज़ानू, दुज़ानू—घुटने के बल बैठना ।

ज़ानू-पोश—वह कपड़ा जो खाना खाते वक्त घुटनों पर डाल लेते हैं ।

जानेजाँ—बहुत प्यारा ।

जाने-मन—(फ़ा०) (सं० पु० स्त्री०) मेरे प्राण, मेरी जान ।

जाफ़र—(अ०) (सं० पु०) नद, बड़ी नदी ।

ज़ाफ़रान—(अ०) (सं० स्त्री०) केसर ।

ज़ाफ़रानी—(अ०) (वि०) (१) केसरिया, केसर के रंग का; (२) केसर से सम्बन्धित ।

जाफ़री—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) ठाठर, टट्टी; लकड़ी या बाँस का जाल; (२) एक प्रकार के पीले गेंदे का फूल; (३) खरा सोना; (४) एक प्रकार का हुक्का ।

ज़ाबित—(अ०) (वि०) (१) ज़ब्त करने वाला, संयमी; (२) सहनशील ।

जाबिर—(फ़ा०) (वि०) ज़ालिम, अत्याचारी

ज़ाबिह—(अ०) (सं० पु०) हलाल करने वाला, ज़िबह करनेवाला, कसाई ।

ज़ाब्तगी—(अ०) (सं० स्त्री०) नियमानुकूलता, नियमानुसार होना ।

ज़ाब्ता—(अ०) (सं० पु०) व्यवस्था, क़ानून, क़ायदा, दस्तूर-अमल । ज़ाब्ता बरतना—क़ानून पर चलना, नियम के अनुसार काम करना ।

ज़ाब्ता-दीवानी—(फ़ा०) (सं० पु०) दीवानी अदालत के क़ानून-क़ायदे ।

ज़ाब्ता-फ़ौजदारी—(फ़ा०) (सं० पु०) फ़ौजदारी-अदालत के क़ानून-क़ायदे ।

जाम—(फ़ा०) (सं० पु०) प्याला, मदिरा पीने का पात्र, साग़र । जाम चलना—शराब का दौर चलना । जाम लबरेज़ होना—मृत्यु के निकट होना ।

जामदानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) एक प्रकार का कढ़ा हुआ फूलदार कपड़ा; (२) कपड़ों की पेटी, चमड़े का सन्दूक़; (३) चौखूंटा ज़री का बटुआ ।

जामा—(अ०) (वि०) (१) सब, कुल, शामिल; (सं०) (२) बड़ी मसजिद; (३) लिबास, पोशाक; (४) दूल्हा का पहनावा । जामाज़ेब—वह मनुष्य जिस पर सब तरह की पोशाक फबे । जामा पहन लेना—किसी का तरफ़दार होना । जामे से बाहर हो जाना—आपे से बाहर हो जाना, (ख़ुशी या ग़ुस्से से); बहुत इतराना । जामे में रहना—अपने हवास में रहना ।

जामा मसजिद—(अ०) (सं० स्त्री०) वह बड़ी मसजिद जिसमें बहुत से मनुष्य इकट्ठे होकर जुमा की नमाज़ पढ़ते हैं ।

जामिद्—(अ०) (वि०) (१) जमा हुआ, पत्थर; (२) वह शब्द जिससे न तो कोई शब्द निकले और न वह किसी से निकला हो। (जैसे हाथी, ढाल)

ज़ामिन—(अ०) (सं० पु०) ज़िम्मेदार, बीच में पड़नेवाला, ज़मानत करनेवाला; (२) (उ०) वह चीज़ जिससे दूध जम जाता है; (३) वह चीज़ जिसके बिना दूसरी चीज़ न रुके; (४) वह लकड़ी की पच्चड़ जो मज़बूती के लिए हुक्के की दोनों तरफ़ की नै के बीच में बाँध देते हैं। फ़ेल ज़ामिन—वह मनुष्य जो दूसरे के कार्यों की ज़मानत करे। माल ज़ामिन—वह मनुष्य जो किसी दूसरे के ऋण चुकाने की ज़मानत करे।

ज़ामिन-दार—वह मनुष्य जो ज़ामिन पेश करे।

ज़ामिनी—(अ०) (सं० स्त्री०) ज़िम्मेदारी, किफ़ालत, ज़मानत।

जामूश—(फ़ा०) (सं० पु०) भैंसा।

जामे-जम, जामे-जमशेद, जामे-जहाँनुमा—वह प्याला जो यूनान के बादशाह जमशेद ने बनवाया था जिसमें भविष्य का हाल मालूम हो जाता था।

जाय—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) जगह, स्थान, गुंजायश। ज़ाये-ज़रूर—पैखाना। जाये-दम ज़दन—दम मारने का मौक़ा।

ज़ायक़ा—(अ०) (सं० पु०) स्वाद। देखो—'ज़ाइक़ा'।

ज़ायचा—(फ़ा०) (सं० पु०) जन्म-कुण्डली, जन्म-पत्री।

जायज़—(अ०) (वि०) उचित, नियमानुकूल, दुरुस्त, ठीक। जायज़ रखना—मानना, स्वीकार करना।

जायज़ा—(अ०) (सं० पु०) मुक़ाबिला, हाज़िरी, गिनती। जायज़ा देख लेना—जाँच लेना, परीक्षा कर लेना। जायज़ा देना—हिसाब देना, जाँच कराना, सँभलवाना। जायज़ा लेना—परतालना, जाँचना, हाज़िरी लेना।

ज़ायद—(अ०) (वि०) (१) ज़्यादा, अधिक; (२) बढ़ा हुआ, अतिरिक्त; (३) निरर्थक, फ़ालतू, व्यर्थ का।

जायदाद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) माल-असबाब, जागीर, पूँजी, चीज़-वस्तु। जायदाद-मनक़ूला—चल सम्पत्ति, जंगम। जायदाद-ग़ैर-मनक़ूला—अचल सम्पत्ति, स्थावर।

ज़ायर—(अ०) (सं० पु०) यात्री।

ज़ायल—(अ०) (वि०) विनष्ट।

ज़ाया—(अ०) (वि०) ग़ारत, नष्ट, बरबाद, व्यर्थ। ज़ाया करना—बरबाद करना। ज़ाया जाना—मर जाना, नष्ट हो जाना।

जार—(अ०) (सं० पु०) पड़ोसी।

ज़ार—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) स्थान, स्थल; (२) किसी चीज़ की बहुतायत। (वि०) (१) ज़ईफ़, दुर्बल; (२) पूर्ण कामिल; (३) रंज, ग़म; (४) अनुरक्त, फ़रेफ़्ता; (५) बहुत-बहुत। ज़ार-ज़ार रोना, ज़ार व निज़ार रोना—बहुत रोना। ज़ार व क़तार रोना—इस तरह रोना कि आँसुओं की क़तार बँध जाय।

ज़ार व निज़ार—(फ़ा०) (वि०) दुर्बल, ज़ईफ़, कमज़ोर।

ज़ार-नाली—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) फ़रयाद, शिकायत।

ज़ारिब—(अ०) (वि०) मारनेवाला।

ज़ारिया—(अ०) (सं० स्त्री०) लौंडी, बाँदी, दासी।

जारी—(अ०) (वि०) (१) बहता हुआ, प्रवाहित; (२) प्रचलित।

ज़ारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) रोना-पीटना, दीनता प्रकट करना। आह-व-ज़ारी—रोना-चिल्लाना।

जारोब—(फ़ा०) (सं० पु०) झाड़ू, बुहारी।

जारोब-कश—(फ़ा०) (सं० पु०) मेहतर, झाड़ू देनेवाला।

जाल—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) फंदा, फ़रेब, धोखा; (२) छल्लेदार, सुराख़दार चीज़; (३) पीलू का पेड़। जाल तानना—धोखे का ढंग डालना।

जाल—(फ़ा०) (वि०) बूढ़ा, सफ़ेद बालों वाला। (सं०) रुस्तम के बाप का नाम। ज़ाले-दुनिया—दुनिया जिसकी उम्र किसी को नहीं मालूम।

जाल-साज़—(अ०) (वि०) मक्कार, धोखे-बाज़।

जाल-साज़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) मकर, फ़रेब, धोखेबाज़ी।

ज़ालिम—(अ०) (वि०) सतानेवाला, संग-दिल, क्रूर, माशूक़।

ज़ालिमाना—(अ०) (वि०) क्रूर, निर्दय।

ज़ालिमे - मज़लूमनुमा—अन्दर सख़्त, बाहर नरम।

जालिया—(हि०) (सं० पु०) धोखे-बाज़।

जाली—(अ०) (वि०) (१) नक़ली, बनावटी; (२) फ़रेबी, मक्कार, दग़ाबाज़।

जाविद, जाविदाँ—(फ़ा०) (वि०) सदा रहनेवाला, स्थायी, अमर (क्रि० वि०) सदा, हमेशा।

जाविदानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) हमेशगी, सदा बना रहना, स्थायित्व।

ज़ाविया—(अ०) (सं० पु०) कोना, गोशा, कोण।

जावेद—(फ़ा०) (वि०) स्थायी, सदा बना रहनेवाला, अमर।

जासूस—(अ०) (सं० पु०) भेदी, भेदिया, मुख़बिर, ख़ुफ़िया पुलिस।

जासूसी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) जासूस का काम; (२) भेद का पता लगाना, गुप्त ख़बरें देना। जासूसी लेना—सुन गुन लेना, छिप कर सुनना।

जाह—(अ०) (सं० पु०) (१) प्रतिष्ठा, इज़्ज़त, रुतबा; (२) क़द्र, शान, बुज़ुर्गी, शौकत। जाह ओ जलाल, जाह ओ हश्म—ठाठ, शान-शौकत, दबदबा। जाह ओ मनसब, जाह ओ मंज़लत—रुतबा, बुज़ुर्गी, शान।

जाहलियत—(अ०) (सं० स्त्री०) मूर्खता, अज्ञान।

ज़ाहिक—(अ०) (वि०) हँसनेवाला।

ज़ाहिद—(अ०) (सं० पु०) संसार से विरक्त, जो माया-मोह न रक्खे, धर्मात्मा। ज़ाहिदे-ख़ुश्क—(फ़ा०) (पु०) ऐसा धर्मात्मा जिससे कोई लाभ न उठा सके।

ज़ाहिर—(अ०) (वि०) (१) प्रकट, साफ़, स्पष्ट; (२) विदित, प्रकाशित। (सं०) (१) सूरत, ऊपरी हाल, नुमायश, दिखावा; (२) महतरों का पीर। ज़ाहिर - ज़हूर—(लख०) खुल्लम-खुल्ला, साफ़-साफ़।

ज़ाहिर-दार—(अ०) (वि०) दिखावे का बर्ताव करनेवाला, बनावटी।

ज़ाहिर-दारी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) दिखावटी बातें, ऊपरी बातें; (२) बनावटी व्यवहार। ज़ाहिर - दारी बरतना—दिखावे की बातें करना।

ज़ाहिर-परस्त—(अ०) (वि०) दुनिया-दार, ज़ाहिरी हालत पर नज़र रखनेवाला।

ज़ाहिर-परस्ती—(अ०) (सं० स्त्री०) जो कुछ दीखे उस पर बेसमझे-सोचे विश्वास करना।

ज़ाहिरा—(अ०) (क्रि० वि०) ज़ाहिर में, देखने में।

ज़ाहिरी—(अ०) (वि०) (१) खुला हुआ; (२) दिखावे का।

जाहिल—(अ०) (वि०) मूर्ख, नासमझ, अनपढ़।

ज़िक्र—(अ०) (सं० पु०) चर्चा, प्रसंग; ज़बान से याद करना, बयान, बात-चीत। ज़िक्र-मज़कूर—बात-चीत, चर्चा। ज़िक्रे-

ख़ैर—(१) शुभ चर्चा; (२) धर्म-पुस्तक का पाठ ।

जिगर—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) कलेजा, यकृत; (२) चित्त, मन; (३) जान, जी; (४) साहस, हौसला; (५) सत्त, सार, जौहर; (६) बेटा, प्यारा; दुलारा । जिगर-कावी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मेहनत, जाँ फ़िशानी । जिगर-दोज़—(फ़ा०) (वि०) दिल में असर करनेवाला । जिगर-सोज़—(फ़ा०) (वि०) जिगर जलानेवाला, हम-दर्द ।

जिगरा—(औ०) (पु०) हिम्मत, हौसला ।

ज़िगरी—(फ़ा०) (वि०) (१) अन्दूनी, दिली, भीतरी; (२) सच्चा, गहरा ।

ज़िच—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) बेबसी, तंगी, लाचारी; (२) शतरंज के खेल की वह अवस्था जब बादशाह के चलने को कोई घर ही न रहे । (वि०) आजिज़, तंग, दिक़ ।

ज़िजक—(अ०) (सं० स्त्री०) खिलखिलाकर हँसना ।

जिड़—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) पागलों जैसी बातें, वाही-तवाही बकना, बड़; (२) रट ।

जिड़ी—(हि०) (वि०) बकवादी ।

ज़िद—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) विरोधी, मुख़ालिफ़, बरअक्स; (२) द्वेष, वैर; (३) हठ, सीना-ज़ोरी । ज़िद्दा-बिद्दी होना—(औ०) झगड़ा होना ।

जिदाल—(अ०) (सं० पु०) लड़ाई, युद्ध, जंग । जंग ओ जिदाल—लड़ाई, युद्ध ।

जिद्द—(अ०) (सं० स्त्री०) कोशिश, दौड़-धूप । जिद्द ओ जहद—कोशिश, मेहनत-मशक़्क़त ।

जिद्दत—(अ०) (सं० स्त्री०) नयापन, ताज़गी, ताज़ा-पन ।

जिन—(अ०) (सं० पु०) भूत-प्रेत ।

ज़िनहार—(फ़ा०) (क्रि० वि०) हरगिज़, कदापि ।

जिनाँ—(अ०) (सं० पु०) बहिश्त, स्वर्ग । (जन्नत का बहुवचन) ।

ज़िना—(अ०) (सं० पु०) व्यभिचार, बदकारी ।

ज़िनाकार—(अ०) (वि०) व्यभिचारी, बदकार ।

ज़िना-बिल्-जब्र—(अ०) (सं० पु०) ज़बर दस्ती हराम करना; किसी स्त्री से उसकी इच्छा के विरुद्ध और ज़बरदस्ती संभोग करना ।

ज़िन्दगानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) जीवन, उम्र ।

ज़िन्दगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) जीवन, उम्र ।

ज़िन्दाँ—(फ़ा०) (सं० पु०) कैद-ख़ाना, बन्दी-गृह ।

जिन्दाँ-ख़ाना—(फ़ा०) (सं० पु०) क़ैद-ख़ाना ।

ज़िन्दा—(फ़ा०) (वि०) जीवित, जीता । ज़िन्दा दर गोर—बेहद कष्ट में ग्रसा हुआ, जीते जी क़ब्र में ।

ज़िन्दा-दिल—(फ़ा०) (वि०) हँस-मुख, हँसोड़ (२) ख़ुश-मिज़ाज, सहृदय; (३) रसिक, शौक़ीन ।

ज़िन्दा-दिली—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) ख़ुश-मिज़ाजी; (२) रसिकता ।

ज़िन्दा-पीर—वह मनुष्य जो जीवन में आदर का अधिकारी हो ।

ज़िन्दा-बाद, ज़िन्दा-बाश—(दुआ) सलामत रहो, शाबाश ।

जिन्दीक़—(वि०) काफ़िर, बेदीन ।

जिन्नात—(अ०) (सं० पु०) भूत-प्रेत । (जिन का बहुवचन) ।

जिन्नी—(अ०) (सं० पु०) भूत-प्रेत वश में करनेवाला, भूतों को सिद्ध करनेवाला ।

जिन्स—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) चीज़, वस्तु, द्रव्य; (२) प्रकार, भाँति, क़िस्म; (३) सामान, सामग्री; (४) नाज, अन्न, रसद।

जिन्स-ख़ाना—(अ०) (सं० पु०) भंडार।

जिन्स-वार—(अ०) (वि०) हर एक चीज़ के विचार से अलग अलग।

जिबस—(फ़ा०) (क्रि० वि०) पूर्णतया, पूरी तरह।

जिबाल—(फ़ा०) (सं० पु०) पहाड़। जबल का बहुवचन।

जिब्राईल—(फ़ा०) (सं० पु०) एक फ़रिश्ता।

जिबीं—(अ०) (सं० स्त्री०) माथा, पेशानी।

ज़िमन—(अ०) (सं० पु०) (१) विभाग, खंड; (२) अंदर, भीतर, अन्दरून; (३) दफ़ा, धारा।

ज़िमनन—(अ०) इशारतन, दर परदा।

ज़िमाद—(अ०) (सं० पु०) मरहम, लेप।

जिमाम। (अ०) (सं० स्त्री०) बाग़, नकेल।

जिमार—(अ०) (सं० पु०) पत्थर के रेज़े।

ज़िम्मा—(अ०) (सं० पु०) (१) अहद, प्रतिज्ञा; (२) अमानत, सुपुर्दगी; (३) ज़मानत, उत्तर-दायित्व; (४) जवाब-दिही, ज़िम्मेदारी।

ज़िम्मी—(अ०) (सं० पु०) वह अन्य-मतावलम्बी मनुष्य जो इस्लामी राज के अधीन रहता हो और ख़िराज देता हो।

ज़िम्मेदार—(अ०) (वि०) जवाब-देह; उत्तर-दायी, ज़ामिन।

ज़िम्मेदारी—(अ०) (सं० स्त्री०) उत्तर-दायित्व।

ज़िम्मेवार—(अ०) (वि०) (औ०) ज़िम्मे-दार, जवाब-देह; ज़ामिन, उत्तर-दायी।

ज़ियाँ—(फ़ा०) (सं० पु०) हानि, नुक़सान, घाटा।

ज़िया—(अ०) (सं० स्त्री०) सूर्य का प्रकाश रौनक़, रोशनी।

ज़िया-पास—(अ०) (वि०) रोशनी फैलाने वाला।

ज़ियाफ़त—(अ०) (सं० स्त्री०) मेहमानी, दावत, ज्यौनार।

ज़ियाबार—(वि०) रोशनी फैलानेवाला।

ज़िया-बारी—(सं० स्त्री०) रोशनी फैलाना।

ज़ियारत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) दर्शन; (२) तीर्थ-दर्शन।

ज़ियारत-गाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दरगाह, पवित्र-स्थान, तीर्थ।

ज़ियारती—(अ०) (वि०) यात्री, यात्रार्थी।

जिरगा—(देखो 'जरगा')।

जिरह—(सं० पु०) (१) ज़ख्म, घाव; (२) वह सवाल जो प्रतिपक्षी वा उसके गवाहों से सच की जाँच के लिए पूछे जायँ।

ज़िरह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) कवच; फ़ौलाद का कुर्ता जो लड़ाई के समय पहना जाता है।

ज़िरह-पोश—(फ़ा०) (सं० पु०) जो ज़िरह पहने हो, कवच-धारी।

जिरियान—(अ०) (सं० पु०) (१) बहना; (२) प्रमेह, सुज़ाक रोग।

जिरीद—(अ०) (वि०) अकेला, (शुद्ध जरीद)।

जिर्म—(अ०) (सं० पु०) शरीर, बदन।

जिला—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) रोशनी, सफ़ाई, चमक; (२) चमकाने की क्रिया। जिला देना—रौनक़ देना; उजालना।

ज़िला—(अ०) (सं० पु०) (१) लकीर, रेखा; (२) प्रान्त का भाग; (३) ज़ूमानी बात, दो अर्थ की बात, श्लेष; (४) पहलू। ज़िला-जुगत—पहलूदार बात।

ज़िलेदार—(अ०) (सं० पु०) (१) ज़िले का सरबराहकार; (२) गाँव का कारिन्दा; (३) नहर के महकमे का अफ़सर।

ज़िलेदारी—(अ०) (सं० स्त्री०) ज़िलेदार का काम या पद।

ज़िलक़अद—(अ०) (सं० पु०) अरबी वर्ष का ग्यारहवां चान्द्रमास।

जिल्द—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) खाल, चमड़ी, चमड़ा; (२) पुट्ठा जो पुस्तक के ऊपर उसकी रक्षा के लिए लगाया जाता है; (३) पुस्तक की एक प्रति या भाग।

जिल्द-बन्द, जिल्द-साज़—(अ०) (वि०) जिल्द बाँधनेवाला।

जिल्दी—(अ०) (वि०) जिल्द के सम्बन्ध का।

ज़िल्ल—(अ०) (१) साया, छाया, शरण, पनाह; (२) विचार, ख़्याल; (३) रात का अंधेरा। ज़िल्ले ख़ुदा—ईश्वर की छाया (राजा)। ज़िल्ले ज़लील—हमेशा रहने वाला साया, घनी छाया। ज़िल्ले-हुमा—हुमा का साया (हुमा एक पक्षी है जिसकी छाया जिस पर पड़ती है वह राजा हो जाता है)।

ज़िल्लत—(अ०) (सं० स्त्री०) अनादर, तिरस्कार, ख़्वारी, हतक, अपमान, रुस-वाई, दुर्गति। ज़िल्लत उठाना—शर-मिंदा होना, ख़्वार होना। ज़िल्लत देना—शरमिंदा करना, ख़फ़ीफ़ करना। ज़िल्लत होना—निरादर होना, शर-मिंदगी होना।

ज़िलहिज्ज—(अ०) (सं० पु०) अरबी वर्ष का बारहवाँ चान्द्रमास।

ज़िश्त—(फ़ा०) (वि०) बुरा, बदशकल।

ज़िश्त-ख़ू—(फ़ा०) (वि०) बुरी प्रकृति का।

ज़िश्त-ख़ूई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) स्वभाव का बुरा होना।

ज़िश्त-रू—(फ़ा०) (वि०) बदसूरत, भद्दा।

ज़िश्त-रूई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बदसूरती, शक्ल ख़राब होना।

जिस्म—(अ०) (सं० पु०) शरीर, देह, तन, बदन।

जिस्मानी—(अ०) (वि०) शरीर-सम्बन्धी, शारीरिक।

जिस्मी—(अ०) (वि०) व्यक्ति-गत।

ज़िह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) जनना; (२) डोरी, फ़ीता, कमान का चिल्ला।

ज़िहन—(अ०) (सं० पु०) दानाई, समझ, बुद्धि, मेधा, समझने की शक्ति। ज़िहन से उतरना—ध्यान से उतरना, भूल जाना। ज़िहन खुलना—अक़्ल का तेज़ हो जाना। ज़िहननशीं करना—समझाना, ध्यान में बैठाना। ज़िहन में बैठना—किसी बात का समझ में समझ आना। ज़िहन लड़ाना—ग़ौर करना, विचारना।

जिहाद—(अ०) (सं० पु०) काफ़िरों से युद्ध करना।

ज़िहे—(फ़ा०) (सं० पु०) शाबाश, बहुत अच्छा, ज़िहे नसीब—अच्छे भाग्य।

ज़ी—(अ०) (प्रत्यय) रखनेवाला, साहब। (जैसे—ज़ी-इज़्ज़त—इज़्ज़तवाला—साहबे इज़्ज़त)।

ज़ी-आबरू—(अ०) (वि०) आबरूवाला, इज़्ज़तदार, प्रतिष्ठित।

ज़ी-इख़्तियार—(अ०) (वि०) अधिकार-वाला, हुकूमतवाला।

ज़ी-इस्तेदाद—(वि०) लायक़, क़ाबिल, मालदार।

ज़ीक़—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) दिक़्क़त, तंगी, संकीर्णता; (२) चिन्ता, मानसिक क्लेश; (३) कठिनता, अड़चन। ज़ीक़ में आना, ज़ीक़ में पड़ना—दिक़्क़त में पड़ना। ज़ीक़ में जान होना, ज़ीक़ में होना—घबराना, बहुत तंग होना, परेशान होना।

ज़ौक़-उल्-नफ़्स—(अ०) (सं० पु०) दमा, साँस का तंगी से आना जाना ।

ज़ीक़ाद—(अ०) (सं० पु०) अरबी वर्ष का ग्यारहवाँ चाँद्रमास ।

ज़ीट—(स्त्री०) दून की हाँकना, यावागोई ।

ज़ीटक—(वि०) (लख०) बे-हिम्मत; कोता-क़द ।

ज़ीन—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) चारजामा, काठी, घोड़े की पीठ पर चढ़ने की गद्दी; (२) एक प्रकार का मोटा सूती कपड़ा; (स्त्री०) (३) सजावट ।

ज़ीन-ज़पट—(स्त्री०) ज़ीट, दून की हाँकना, यावागोई ।

ज़ीनत—(अ०) (सं० स्त्री०) शोभा, ज़ेब ।

ज़ीन-पोश—(फ़ा०) (सं० पु०) ज़ीन के ऊपर डालने का कपड़ा ।

ज़ीन सवारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) घोड़े की पीठ पर सवार होना ।

ज़ीन-साज़—(फ़ा०) (वि०) घोड़े की ज़ीन बनानेवाला, चारजामा बनानेवाला ।

ज़ीनहार—(फ़ा०) (क्रि० वि०) हरगिज़, कदापि ।

ज़ीना—(फ़ा०) (सं० पु०) सीढ़ी, ज़ीने के डंडे ।

ज़ीर—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) धीमी आवाज़, नीचा स्वर । ज़ीर ओ बम—नीचा ऊँचा स्वर ।

ज़ीरक—(फ़ा०) (वि०) समझदार, बुद्धिमान् ।

ज़ीरा—(१) एक ख़ुशबूदार बारीक बीज का नाम; (२) फूल का रेज़ा ।

ज़ी-रुतबा—(अ०) (वि०) ओहदे-दार, रुतबेवाला ।

ज़ी-रूह—(अ०) (वि०) जानदार, सजीव ।

ज़ी-विक़ार—(अ०) (वि०) मुअज़्ज़िज़, वैभवशाली ।

ज़ील—(स्त्री०) वह आवाज़ जो लड़कों की आवाज़ से मिलती हो ।

ज़ी-हक़—(अ०) (वि०) हक़दार अधिकारी ।

ज़ी-हयात—(अ०) (वि०) जानदार; जीवित ।

ज़ी-हुरमत—(अ०) (वि०) इज़्ज़तदार ।

ज़ी-होश—(अ०) (वि०) समझदार, होशयार ।

ज़ुंग—(हि०) (सं० पु०) (१) मुट्ठा, पुश्तारा, बड़ी कापी; (२) एक जिल्द जिसमें कई पुस्तकें हों; (३) (स्त्री०) धुन, मौज ।

ज़ुकाम—(अ०) (सं० पु०) प्रतिश्याय; सरदी, एक बीमारी ।

ज़ुग़रात—(फ़ा०) (सं० पु०) दही ।

ज़ुग़राफ़िया—(यू०) (सं० पु०) भूगोल-शास्त्र ।

ज़ुगादरी—(हि०) (वि०) (१) पुराना घाग; (२) बहुत पुराना और भीमकाय ।

ज़ुज़—(अ०) (सं० पु०) (१) टुकड़ा, खंड, (२) अवयव, अंग; (३) फ़ार्म, काग़ज़ का ताव जिस पर ८ या १६ पृष्ठ छपते हैं । (अव्यय) बग़ैर, बिदून, सिवा ।

ज़ुज़दान—(अ०) (सं० पु०) बस्ता, पुस्तकें बाँधने का कपड़ा ।

ज़ुज़बन्दी—(अ०) (सं० स्त्री०) पुस्तकों के प्रत्येक फ़ार्म का अलग अलग सीया जाना, जिससे जिल्द मज़बूत बंध सके ।

ज़ुज़बियात—(अ०) (सं० स्त्री०) विवरण की बातें, अंग, हिस्से, अवयव ।

ज़ुज़वी—(अ०) (वि०) अल्प, आंशिक, तुच्छ ।

ज़ुज़ाम—(अ०) (सं० पु०) कोढ़, कुष्ट ।

ज़ुज़ामी—(अ०) (सं० पु०) कोढ़ी ।

ज़ुज़ियात—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) छोटे छोटे टुकड़े; (२) ब्यौरे की बातें ।

ज़ुज़्व—(फ़ा०) (सं० पु०) रेज़ा, टुकड़ा । (देखो, ज़ुज़) ।

ज़ुज़्व-रस—(वि०) कंजूस ।

जुज़्व-रसी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) कंजूसी।
जुदा—(फ़ा०) (वि०) (१) पृथक्, अलग; (२) भिन्न, और, अन्य।
जुदाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वियोग, विरह, अलग होना।
जुदागाना—(अ०) (क्रि० वि०) अलग अलग, स्वतंत्र रूप से।
जुनून—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) ख़ब्त, पागलपन; (२) असीम प्रेम, धुन, लगन; (३) ग़ुस्सा, तैश, क्रोध; (४) इश्क़, प्रेम।
जुनूनी—(फ़ा०) (वि०) पागल, क्रोधी।
ज़ुन्नार—(अ०) (सं० पु० यज्ञोपवीत, जनेऊ।
ज़ुन्नार-दार, ज़ुन्नार-बन्द—ब्राह्मण।
ज़ुफ़ाफ़—(अ०) (सं० पु०) वर-वधू का प्रथम समागम। शबे-ज़ुफ़ाफ़—सुहाग रात।
जुफ़्त—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) जोड़ा, (२) जूती का जोड़ा।
जुफ़्ता—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) चूतड़; (२) कुंआ, गड्ढा; (३) छेद; (४) जानवर का लात मारना।
जुफ़्ती—(अ०) (सं० स्त्री०) पशु पक्षियों की संभोग-क्रिया।
जुब्बा—(अ०) (सं० पु०) फ़क़ीरों का लंबा लबादा।
जुमरा—(अ०) (सं० पु०) (१) भीड़, समूह; (२) सेना, फ़ौज।
जुमल—(अ०) सं० पु०) सुन्दर।
जुमलगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) कुल या सब (का भाव)।
जुमला—(अ०) (सं० पु०) (१) वाक्य, फ़िकरा; (२) कुल जोड़। (वि०) कुल, सब मिलकर। मिन जुमला—सब में से।
जुमा—(अ०) (सं० पु०) शुक्रवार।
जुमेरात—(अ०) (सं० स्त्री०) बृहस्पति-वार।
जुम्बिश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) गति, चाल, गर्दिश, हरकत; (२) काँपना।
जुरअत—(अ०) (सं० स्त्री०) साहस, हिम्मत, हौसला।
ज़ुरफ़ा—(अ०) (सं० पु०) दिल्लगीबाज़। (ज़रीफ़ का बहुवचन)।
ज़ुराफ़, ज़ुराफ़ा—(अ०) (सं० पु०) जिराफ़, एफ़्रीका का एक जंगली पशु।
ज़ुरूफ़—(अ०) (सं० पु०) बरतन, बासन। (ज़र्फ़ का बहुवचन)।
जुर्म—(सं० पु०) अपराध, दंडनीय कार्य।
जुर्माना—(फ़ा०) (सं० पु०) दंड, तावान जो धन रूप में देना पड़े।
जुर्रा—(फ़ा०) (सं० पु०) एक पक्षी।
जुर्रात—(अ०) (सं० स्त्री०) दिलेरी, साहस, हिम्मत, चालाकी, (शुद्ध ज़ुरअत)।
जुर्राब—(अ०) (सं० स्त्री०) मोज़ा।
ज़ुर्रेत—(अ०) (सं० स्त्री०) आल-औलाद, बाल-बच्चे, (शुद्ध ज़ुररियात)।
जुल—(हि०) (सं० पु०) फ़रेब, धोखा, दम, झाँसा।
ज़ुलक़अदा—(अ०) (सं० पु०) अरबी वर्ष का ग्यारहवाँ चान्द्रमास।
जुल-बाज़—(हि०) (वि०) फ़रेबी, दमबाज़।
जुलाब—(अ०) (सं० पु०) (१) रेचक औषधि, दस्त की दवा; (२) दस्त, (शुद्ध ज़ुल्लाब)।
ज़ुलाल—(अ०) (सं० पु०) साफ़ पानी, मीठा पानी, ठंडा पानी। (वि०) निथरा हुआ, साफ़, स्वच्छ।
ज़ुलाल-नोश—(फ़ा०) (वि०) साफ़ पानी पीनेवाला।
जुलाहा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) कपड़ा बुननेवाला; (२) पानी के एक कीड़े का नाम; (वि०) मूर्ख।
जुलूस—(अ०) (सं० पु०) (१) राज्या-भिषेक, ताज-पोशी, तख़्त-नशीनी; (२) समारोह, सवारी।
जुलूसी—(अ०) (वि०) जुलूस से संबंधित;

जिसका आरंभ किसी राजा के सिंहासनासीन होने से हो (संवत्)।

.ज़ुलैख़ा—(अ०) (सं० स्त्री०) हज़रत यूसुफ़ से प्रेम करनेवाली।

.ज़ुल्क़र-नैन—(अ०) (सं० पु०) सिकन्दर की एक उपाधि।

.ज़ुल्फ़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) काकुल, गेसू, गुँधे हुए सर के बाल। हम-.ज़ुल्फ़—साढ़ू, प्रेमिका का दूसरा प्रेमी, रक़ीब।

.ज़ुल्फ़िक़ार—(अ०) (सं० स्त्री०) हज़रत अली की तलवार।

.ज़ुल्म—(अ०) (सं० पु०) अत्याचार, ज़बरदस्ती, आफ़त, मुसीबत। .ज़ुल्म श्रो सितम, .ज़ुल्म श्रो तग्रद्दी—अत्याचार, अन्याय। .ज़ुल्म तोड़ना—सख़्ती करना, आफ़त ढाना।

.ज़ुल्मत—(अ०) (स्त्री०) अंधेरा।

.ज़ुल्म-तीनत—(फ़ा०) (वि०) जिसका स्वभाव ही अत्याचार करने का हो।

.ज़ुल्म-दोस्त—(फ़ा०) (वि०) .ज़ुल्म का पसन्द करनेवाला, अन्यायी।

.ज़ुल्म-परवर—(फ़ा०) (वि०) .ज़ुल्म को रौनक़ देनेवाला।

.ज़ुल्म-पेशा—(फ़ा०) (वि०) जिसका काम .ज़ुल्म हो और दिल दुखाने का आदी हो।

.ज़ुल्म-रसीदा—(फ़ा०) (वि०) पीड़ित, जिस पर अत्याचार हुआ हो।

.ज़ुल्म-शग्रार—(फ़ा०) (वि०) .ज़ुल्म-पेशा।

.ज़ुल्मात—(अ०) (सं० स्त्री०) एक विशेष अंधकार जो सिकन्दर को मिला था, (२) अँधेरे, तारीकियाँ। (.ज़ुल्मत का बहुवचन)

.ज़ुल्मानी—(फ़ा०) (वि०) अँधेरे से सम्बन्ध रखनेवाला।

.ज़ुल्मी—(अ०) (वि०) शरीर, ज़ालिम, अत्याचारी।

.ज़ुव्वार—(अ०) (वि०) अधिक ज़ियारत करनेवाला, यात्री, (शुद्ध ज़ुव्वार)।

जुस्तजू—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) तलाश, खोज।

जुस्सा—(अ०) (सं० पु०) बदन, तन. शरीर।

.ज़ुहद—(अ०) (सं० पु०) सांसारिक बातों से विरक्ति।

.ज़ुहल—(अ०) (सं० पु०) शनीचर, शनि ग्रह।

.ज़ुहा—(अ०) (सं० पु०) जल-पान का समय, दिन चढ़े।

.ज़ुहूर—(अ०) (सं० पु०) ज़ाहिर, नुमायश, दिखावा।

.ज़ुह्र—(अ०) (सं० पु०) (१) दो पहर ढलने का समय, तीसरा पहर; (२) मुसल्मानों की दूसरी नमाज़।

जू—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) नदी, नहर; (२) जलाशय।

.ज़ू—(अ०) (प्रत्यय) रखनेवाला। (क्रि० वि०) जल्दी, शीघ्र। (सं०) .ख़ुदावंद, साहब (यौगिक में व्यवहृत)।

.ज़ू-उल्-जलाल—(अ०) (वि०) इज़्ज़तवाला, दबदबेवाला, (शुद्ध उच्चारण .ज़ुल जलाल।

.ज़ू-उल्-फ़िक़ार—(अ०) (सं० स्त्री०) तलवार, (शुद्ध उच्चारण .ज़ुलफ़िक़ार)।

जूए—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) नदी, नहर, जलाशय।

जूक—(तु०) (सं० पु०) गिरोह।

.ज़ूद—(फ़ा०) (क्रि० वि०) शीघ्र, जल्दी। कहा०—.ज़ूद फ़रबा .ज़ूद लाग़र—वह मनुष्य जो अपनी राय जल्द-जल्द बदले।

.ज़ूद-आशना—(फ़ा०) (वि०) जल्द-यार, बहुत जल्द घुल-मिल जानेवाला।

.ज़ूद-नवीस—(फ़ा०) (वि०) जल्द लिखनेवाला।

.ज़ूद-पशेमान—(फ़ा०) (वि०) बहुत जल्द पछतानेवाला।

ज़ूद-फ़हम—(फ़ा०) (वि०) जल्दी समझने वाला।

ज़ूद-रंज—(फ़ा०) (वि०) जल्दी ख़फ़ा हो जानेवाला।

ज़ूद-रंजी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ज़रा सी बात पर बिगड़ जाना।

ज़ूफ़—(फ़ा०) (अव्यय) लानत, धिक्कार।

ज़ूफ़-ज़ाफ़ करना—(क्रि०) लानत मलामत करना।

ज़ू-फ़नून—(अ०) (वि०) बहुत से हुनर जाननेवाला।

ज़ू-बहरीं—(अ०) (वि०) जो पद्य दो बहरों में पढ़ा जाय।

ज़ू-मानी—(अ०) (वि०) दो अर्थ रखनेवाला, श्लेष, पहलूदार बात।

ज़ूर—(अ०) (सं० पु०) दग़ा, फ़रेब, मकर, झूठ, दंभ।

जेब—(अ०) (सं० स्त्री०) पाकट, खीसा।

ज़ेब—(फ़ा०) (वि०) (१) उपयुक्त, अनुरूप; (२) शोभा बढ़ानेवाला, फबनेवाला। (सं०) रौनक़, शोभा, आरायश। ज़ेब श्रो ज़ीनत—बनाव-सिंगार।

ज़ेबा—(फ़ा०) (वि०) (१) उपयुक्त, मौज़ूं; (२) शोभा बढ़ानेवाला, ख़ुशनुमा।

ज़ेबाइश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) सजावट, शृंगार; (२) शोभा, ज़ीनत।

ज़ेबाइशी—(फ़ा०) (वि०) शोभा-वर्द्धक, सौन्दर्य बढ़ानेवाला।

ज़ेबाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ख़ूबी, शोभा, ख़ुशनुमाई।

जेबी—(अ०) (वि०) (१) जो जेब में रखा जा सके; (२) बहुत छोटा।

ज़ेर—(फ़ा०) (वि०) कमज़ोर, दुर्बल, अल्पशक्ति। (क्रि० वि०) नीचे। (सं० पु०) फ़ारसी लिपि का एक चिह्न।

ज़ेर-अन्दाज़—(फ़ा०) (सं० पु०) वह कपड़ा या चमड़ा जो हुक़्क़े के नीचे हिफ़ाज़त के लिए बिछा देते हैं।

ज़ेर-जामा—(फ़ा०) (सं० पु०) वह कपड़ा जो घोड़े की पीठ पर डालते हैं और जिस पर चारजामा रखते हैं।

ज़ेर-तजवीज़—(फ़ा०) (वि०) किसी मामले का विचाराधीन होना।

ज़ेर-दस्त—(फ़ा०) (वि०) (१) पराजित, विजित; (२) अधीन।

ज़ेर-नगीं—(फ़ा०) (वि०) विजित, हुकूमत में, अधीन।

ज़ेर-पाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार का हल्का जूता, स्लिपर।

ज़ेर-बन्द—(फ़ा०) (सं० पु०) घोड़े का तंग, वह तस्मा जो घोड़े की पीठ के नीचे बाँधा जाता है।

ज़ेर-बार—(फ़ा०) (वि०) बोझ में दबा हुआ, ऋणी, मदीऊन; देनदार।

ज़ेर-बारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) क़र्ज़ में फँसा होना; परेशानी।

ज़ेर-मश्क़—(फ़ा०) (सं० पु०) वह चमड़ा या वसली जिसे लिखने का अभ्यास करते समय काग़ज़ के नीचे रख लेते हैं। (वि०) हाथ पर चढ़ा हुआ, रवाँ।

ज़ेर-लब—(फ़ा०) (क्रि० वि०) आहिस्ता, धीरे से।

ज़ेर-व-ज़बर—(फ़ा०) (सं० पु०) ज़माने का उलट-फेर। (वि०) उलट-पलट, तबाह, अस्त व्यस्त।

ज़ेर-साया—(फ़ा०) (क्रि० वि०) हिमायत में, पनाह में, शरण में, पास।

ज़ेर-हिरासत—(फ़ा०) (वि०) जो हवालात में हो।

ज़ेरीं—(फ़ा०) (वि०) नीचे का, पाईं।

ज़ेवर—(फ़ा०) (सं० पु०) आभूषण, गहना, शोभा, अलंकार।

जेहाद—(अ०) (सं० पु०) धार्मिक युद्ध जो मुसलमान काफ़िरों से करते हैं।

जेहादी—(अ०) (वि०) काफिरों से युद्ध करनेवाला।

ज़ेहालत—(अ०) (सं० स्त्री०) अज्ञानता, मूर्खता।

ज़ेह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) प्रत्यंचा, धनुष की डोरी; (२) किनारा, सिरा।

ज़ेहानत—(अ०) (सं० स्त्री०) ज़ेहन की तेज़ी, बुद्धि की प्रखरता।

ज़ैतून—(अ०) (सं० पु०) एक प्रसिद्ध पेड़ जिसका तेल बहुत कामों में आता है।

ज़ैयद—(अ०) (वि०) (१) बलवान्, ताक़तवर; (२) ज़बरदस्त, भारी, विशाल; (३) खरा, नेक, उम्दा।

ज़ैल—(अ०) (सं० पु०) (१) नीचे दर्ज किये गये (तफ़सील); (२) दामन, पल्ला; (३) इलाक़ा, हलक़ा। ज़ैल-में—नीचे, आगे, तहत में।

ज़ैल-दार—(देह०)(पु०) वह सरकारी अफ़सर जिसके मातहत कुछ गाँव व क़स्बे हों।

जोइन्दा—(फ़ा०) (वि०) ढूँढनेवाला, तलाश करनेवाला।

जोई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) ढूँढ़ना; (२) सांत्वना, तसल्ली।

ज़ोफ़—(अ०) (सं० पु०) (१) सुस्ती, दुर्बलता, कमज़ोरी; (२) बेहोशी, मूर्छा, ग़श।

ज़ोफ़-उल्-अक़्ल—(अ०) (सं० पु०) मानसिक दुर्बलता।

ज़ोफ़े दिमाग़—(अ०) (सं० पु०) मस्तिष्क की दुर्बलता।

ज़ोफ़े-बसारत—(अ०) (सं० पु०) आँख की रोशनी कम होना।

ज़ोफ़े-मेदा—(अ०) (सं० पु०) पेट की कमज़ोरी, पाचन-शक्ति कमज़ोर होना।

जोया—(फ़ा०) (वि०) तलाश करनेवाला।

ज़ोर—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) बल, शक्ति, ताक़त; (२) क़ाबू, अधिकार, वश; (३) बहुत; (४) बेढब, अजीब, अनोखा; (५) बहुत अच्छा, उम्दा; (६) ज़बरदस्ती; (७) कोशिश, प्रयत्न; (८) सहारा, हिमायत। ज़ोर चलाना—ज़बरदस्ती कोई काम लेना। ज़ोर जताना—दबाव डालना, हुकूमत दिखाना। ज़ोर देना—आग्रह करना। ज़ोर पड़ना—दबाव पड़ना, बोझ पड़ना। ज़ोर पहुँचना—मदद पहुँचना। ज़ोर बाँधना—प्रबल होना।

ज़ोर-आज़माई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बल-परीक्षा।

ज़ोरक—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) छोटी नाव; (२) किश्ती-नुमा टोपी।

ज़ोर-दार—(फ़ा०) (वि०) जोश से भरा हुआ, शक्ति-शाली।

ज़ोर-बाज़ू—(फ़ा०) (सं० पु०) बाहु-बल, अपनी ज़ाती ताक़त।

ज़ोर-शोर—(फ़ा०) (सं० पु०) तेज़ी-तुंदी, चढ़ाव, शान-शौकत।

ज़ोरा-ज़ोरी—(औ०) ज़बरदस्ती।

ज़ोरावर—(फ़ा०) (वि०) बलवान्।

जोश—(फ़ा०) (सं०पु०) (१) उफान, (२) वलवला, मनोवेग; (३) ज़्यादती ज़ोर; (४) विषय-वासना; (५) क्रोध। जश ओ ख़रोश—गुल-शोर; गुल-ग़पाड़ा, गुस्सा, तैश।

जोशन—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) बाँह पर पहनने का ज़ेवर; (२) कवच।

जशांदा—(फ़ा०) (सं० पु०) काढ़ा, क्वाथ, ज़ुकाम की दवा।

ज़ोहरा—(अ०) (सं० पु०) बृहस्पति नक्षत्र।

जौ—(अ०) (सं० पु०) (१) एक प्रकार का नाज; (२) ज़रा-सा; (३) इंच का तीसरा हिस्सा; (४) आसमान ज़मीन के बीच का फ़ासला या दूरी। जौ भर—कुछ भी। जौ-कोब—दरदरा, मोटा-मोटा कुटा हुआ, यव कुट।

जौक़—(तु०) (सं० पु०) (१) फ़ौज, सेना; (२) भीड़, समूह।

ज़ौक़—(अ०) (सं० पु०) चखने की शक्ति, चाशनी, लुत्फ़, शौक़, चाव। ज़ौक़ से—शौक़ से, मज़े से। कहा०—ज़ौक़ में शौक़, दस्तूरी में वधा—मुफ़्त की आमदनी।

ज़ौक़-अफ़ज़ा—(फ़ा०) (वि०) ज़ौक़ या शौक़ बढ़ानेवाला।

ज़ौक़-चश—(फ़ा०) (वि०) आनन्द लेनेवाला।

जौज़—(अ०) (सं० पु०) (१) अख़रोट; (२) जायफल; (३) नारियल।

ज़ौज—(अ०) (सं० पु०) (१) जोड़ा; (२) पति; ख़ाविन्द।

जौज़ा—(अ०) (सं० पु०) मिथुन राशि।

ज़ौजा—(अ०) (सं० स्त्री०) ब्याही हुई स्त्री, पत्नी। (शुद्ध ज़ौजह)

ज़ौजियत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) शौहर या पति बनना; (२) जोरू या पत्नी बनना। **ज़ौजियत में लाना**—विवाह करना।

ज़ौदत—(अ०) (सं० स्त्री०) ज़ेहन की तेज़ी, बुद्धि की प्रखरता।

जौफ़—(अ०) (सं० पु०) (१) उदर, पेट; (२) ख़ाली जगह, आकाश; (३) गड्ढा।

जौर—(अ०) (सं० पु०) ज़ुल्म, अत्याचार, सितम।

जौलां—(फ़ा०) (सं० पु०) बेड़ी।

जौलानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) घोड़े की दौड़; (२) तेज़ी, फ़ुरती; (३) उमंग, वलवला। **जौलानियों पर आना, जौलानियों पर होना**—ज़ोरों पर आना, जोश में आना, तेज़ी पर आना।

जौहर—(अ०) (सं० पु०) (१) रत्न; (२) सार-वस्तु, सत्त; (३) हथियार की आबताब; (४) हुनर, कमाल, दक्षता; (५) भेद, रहस्य; (६) पर्दा, चालाकी, कारस्तानी।

जौहरी—(अ०) (सं० पु०) रत्न का व्यवसायी; रत्न परखनेवाला, पारखी।

झ

झंकाड़—(हि०) (सं० पु०) ठूंठ, बेपत्तों का पेड़ (झाड़झंकाड़)।

झंजोटी—(हि०) (सं० स्त्री०) एक प्रसिद्ध रागनी का नाम।

झंजोड़ना, झंझोड़ना—(हि०) (क्रि०) हिलाना; हाथ पाँव पकड़कर हिलाना; तंग करना; खसोटना, नोचना; जगाना, होशयार करना।

झंझट—(हि०) (सं० पु०) झगड़ा, बखेड़ा, वितंडा, तकरार।

झंझरी—(हि०) (सं० स्त्री०) अंगीठी के ऊपर की लोहे की जाली; दीवार जिसमें छेद हों।

झंझिया—(हि०) (सं० स्त्री०) लड़कियों का खेल, एक छेददार हाँडी में दिया जलाकर लड़कियाँ घर घर जाकर गीत गाती हैं और पैसे माँगती हैं।

झंझी—(हि०) (सं० स्त्री०) फूटी कौड़ी; टूटी हुई कौड़ी।

झंडा—(हि०) (सं० पु०) निशान, ध्वजा। **झंडे पर चढ़ाना**—अपमानित करना। **झंडे पर चढ़ना**—अपमानित होना। **झंडे तले की दोस्ती**—थोड़े दिन की मित्रता।

झक—(हि०) (वि०) साफ़, उजला। (सं० स्त्री०) बकबक, क्रोध, आवेश। **झक मारना**—बकबक करना, व्यर्थ बात करना, मूर्खता करना। **झक्की**—बहुत बकनेवाला।

झकाझक—(हि०) (वि०) चमकदार, ख़ूब उजला।

झकाना—(हि०) (क्रि०) धोखा देना; दिखाना।

झकोड़ा—(हि०) (सं० पु०) हवा का तेज़ झोंका; पानी की तेज़ लहर।

झकोर—(हि०) (सं० पु०) हानि, टोटा; कष्ट।

झकोला—(हि०) (सं० पु०) लहर, तरंग; डुबकी, धक्का। **झकोलना**—पानी डालना, धोना। **झकोले देना**—हिलाना डुलाना; इधर उधर फिराना।

झज्जर—(हि०) (सं० पु०) बड़ी सुराही।
झट—(हि०) तुरंत, फ़ौरन। झटपट—बहुत शीघ्र।
झटक, झटका—(हि०) (सं० पु०) धक्का, टक्कर; आपत्ति, कष्ट; पशु के मारने की हिन्दू तथा सिख रीति।
झटकना—(हि०) (क्रि०) हिलाना, ज़ोर से अलग करना। झटक जाना—दुबला हो जाना। झटक लेना—छीन लेना, झाड़ना।
झड़—(हि०) (सं० स्त्री०) ताले का खटका; लगातार वर्षा; बिना रुके हुए बोलना। झड़पकना—पककर झड़ जाना, बुड्ढा होकर निकम्मा हो जाना।
झड़झड़ाना—(हि०) (क्रि०) झंझोड़ना, हिलाना; आड़े हाथों लेना, फटकारना।
झड़न—(हि०) (सं० स्त्री०) खुरचन, कूड़ा करकट।
झड़प—(हि०) (सं० स्त्री०) कहासुनी; थोड़ी लड़ाई; झगड़ा, क्रोध, रोष; धमक।
झड़ा—(हि०) बिलकुल, सब का सब।
झड़ाझड़—(हि०) जल्दी जल्दी; लगातार।
झड़ी—(हि०) (सं० स्त्री०) लगातार वर्षा।
झनक—(हि०) (सं० पु० स्त्री०) झंकार; घुंघरू का शब्द; घोड़े के पैर की एक बीमारी।
झनकार—(हि०) (सं० स्त्री०) शीशा या चीनी के टूटने की आवाज़, तलवार व काँसे के बर्तन की आवाज़।
झनझनाना—(हि०) (क्रि०) सनसनाना। झनझनाहट, झनझनी—(सं० स्त्री०) सनसनाहट, जलन।
झप—(हि०) शीघ्र, तुरंत, झपाझप। झपझप—झटपट, जल्दी जल्दी।
झपक—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) लज्जा, संकोच; (२) आँख मारना; (३) नींद; (४) चुस्ती, चालाकी।
झपट—(हि०) (सं० स्त्री०) पकड़; कुछ छीनने के लिये भागना; शीघ्रता से दौड़ना।
झपटना—(हि०) (क्रि०) आक्रमण करना; किसी पर दौड़ना; छीनना।
झपटाना—(हि०) (क्रि०) जल्दी से दौड़ाना; लपकाना।
झपाक—(हि०) जल्दी, शीघ्र।
झपेट—(हि०) (सं० स्त्री०) दौड़; धक्का; परछाँवा। झपेट खाना—धक्का खाना; थोड़ी चोट खाना।
झप्पान—(हि०) (सं० पु०) पालकी।
झबड़ा—(हि०) (सं० पु०) बड़े बालों वाला (कुत्ता)।
झब्बा—(हि०) (सं० पु०) फुंदना, गुच्छा।
झमकड़ा—(हि०) (सं० पु०) सौन्दर्य, शोभा, आभा, रूप।
झमकना—(हि०) (क्रि०) चमकना, झलकना।
झमझम—(हि०) मेंह बरसने का शब्द। झमझमाना—चमकना, जगमग होना।
झमाका—(हि०) (सं० पु०) धड़ाका, धमाका; मेंह का भारी छींटा।
झमाझम—(हि०) (सं० स्त्री०) मेंह बरसने की आवाज़; गोटा किनारी की चमक दमक, चमकीली पोशाक।
झमूरा—(हि०) (सं० पु०) रीछ; बहुत बालोंवाला जानवर; ढीले ढीले कपड़ेवाला बच्चा।
झमेल—(हि०) (सं० स्त्री०) देर, विलम्ब, बखेड़ा।
झमेला—(हि०) (सं० पु०) झगड़ा, बखेड़ा। झमेलिया—(सं० पु०) झगड़ालू, बखेड़िया, देर में देर लगानेवाला।
झर—(हि०) (सं० स्त्री०) कपड़ा या काग़ज़ फाड़ने की आवाज़।

झरबेरी—(हि०) (सं० स्त्री०) जंगली बेर का झाड़। झरबेरी का काँटा (औ०) उलझनेवाल आदमी, झाड़ होकर लिपटनेवाला आदमी; पीछे पड़ जाने वाला। झरबेरी के काँटे की तरह लिपटना—पीछे पड़ जाना, जान को आजाना।

झरोका—(हि०) (सं० पु०) खिड़की।

झलंगा—टूटी ढीली चारपाई।

झलक—(हि०) (सं० स्त्री०) चमक; दरस; झाँकी; सूरत।

झलकना—(हि०) (क्रि०) कुछ कुछ चमकना।

झलका—(हि०) (सं० पु०) आबला; छाला।

झलझलाहट—(हि०) (सं० स्त्री०) चमक; तर्राहट जो घाव पर नमक छिड़कने से होती है। झलझलाना—जलना; चड़चड़ाना। झलझली—हलका ज्वर।

झलना—(हि०) (क्रि०) पंखा डुलाना; टाँका लगाना (टूटे हुए बर्तन या ज़ेवर में) ठंडा करना।

झल्लाना—(हि०) (क्रि०) ग़ुस्सा होना; जलना।

झव्वा—(हि०) (सं० पु०) बड़ा टोकरा; झोपड़ा।

झाँई—(हि०) (सं० स्त्री०) छाया, अक्स; चेहरे पर के स्याह धब्बे; चंद्रमा के धब्बे।

झाँक—(हि०) (सं० स्त्री०) ताक; दृष्टि।

झाँकी—(हि०) (सं० स्त्री०) दर्शन, तमाशा; छेद।

झाँजी—(हि०) (सं० स्त्री०) लड़कियों का एक खेल; गीत जो इस खेल में गाया जाता है।

झाँझ—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) एक प्रकार का बाजा; क्रोध; झुंझलाहट।

झाँझन—(हि०) (सं० स्त्री०) पैर का एक ज़ेवर; पायल।

झाँप—(हि०) (सं० स्त्री०) ओट; बाँस का टोकरा।

झाँपना—(हि०) (क्रि०) ढाँकना; छुपाना।

झाँयझाँयँ—(हि०) (सं० स्त्री०) तकरार, झगड़ा, कहासुनी।

झाँवली—(हि०) (सं० स्त्री०) आँख का इशारा, सैन; चितवन।

झाँवाँ—(हि०) (सं० पु०) खुरदरी ईंट, जिससे पैर का मैल घिस कर निकालते हैं।

झाँसा—(हि०) (सं० पु०) धोखा; छल, दम।

झाड़—(हि०) (सं० पु०) (१) झंकार; (२) छोटा सा पेड़, काँटेदार पेड़; (३) फ़ानूस; (४) एक प्रकार की आतिशबाज़ी; (५) लड़ीबन्द बातें, तार; (६) उग्र गंध, जिससे छींके आने लगें, धाँस; (७) सब, एकोएक। झाड़-पोंछ—सफ़ाई। झाड़-पोंछ बराबर करना—खा डालना; उड़ा डालना। झाड़बाकी—बचा खुचा; रहा सहा। झाड़ बाँधना—तार बाँधना, लगातार बोले जाना; मेंह का लगातार बरसना। झाड़ होकर लिपटना—इस तरह लिपटना कि पीछा छुड़ाना कठिन हो जाय।

झाड़न—(हि०) (सं० पु०) झाड़ने का कपड़ा; कूड़ा।

झाड़ा—(हि०) (सं० पु०) तलाशी; पैख़ाना।

झाड़ी—(हि०) (सं० स्त्री०) छोटे काँटेदार पेड़; झड़बेरी के पेड़; जंगल।

झाबड़—(हि०) (सं० स्त्री०) दलदल; जहाँ पानी इकट्ठा हो। झाबड़ झल्ला—ढीला ढाला।

झाबा—(हि०) (सं० पु०) (१) घी तेल रखने का टोंटीदार बर्तन; (२) झाड़; (३) टोकरी, छोटे मुँह की डलिया।

झाम—(हि०) (सं० पु०) बड़ा फावड़ा।

झामर—(हि०) (सं० पु०) सूई तकुवे पर सान रखने की सिल्ली।

झाल—(हि०) (सं० स्त्री०) तेज़ी; जलन (जैसे मिर्च की झाल); धातु का जोड़, टाँका, बड़ी डलिया; तरंग; क्रोध।

झालना—(हि०) (क्रि०) टाँका लगाना; बर्तन जोड़ना; पानी या शराब को बर्फ से ठंडा करना।

झालरा—(हि०) (सं० पु०) एक बड़ी बावड़ी।

झाला—(हि०) (सं० पु०) मूसलाधार वर्षा जो शीघ्र बंद होजाय; स्त्रियों के कान का एक ज़ेवर।

झिंगार—(हि०) (सं० स्त्री०) मोर या झींगुर की आवाज़।

झिकझिक—(हि०) (सं० स्त्री०) झगड़ा, बकबक।

झिकाँना—(हि०) (क्रि०) सताना; हैरान करना; रुलाना।

झिजक—(हि०) (सं० स्त्री०) भय; संकोच; चकाचौंध। झिझकना—डरना, शर्माना, संकोच करना।

झिड़क—(हि०) (सं० स्त्री०) घुरकी; धमकी।

झिरझिरा—(हि०) बहुत बारीक कपड़ा, जिसके तार दूर दूर हों।

झिरझिरी—(हि०) (वि०) अस्पष्ट (झिरझिरी आवाज़)।

झिरना—(हि०) (क्रि०) टपकना; रिसना।

झिरी—(हि०) (सं० स्त्री०) दर्ज़, दरार।

झिलमिल—(हि०) (सं० स्त्री०) जगमगाहट, थोड़ी चमक। झिलमिली—चिक; कान का एक ज़ेवर, धीमी धीमी रोशनी।

झिल्ली—(हि०) (सं० स्त्री०) पेट के भीतर का पतला चमड़ा; आँख का जाला। (वि०) पतला, बारीक।

झींगा—(हि०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार की छोटी मछली।

झील—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) बड़ा तालाब; (२) नीची ज़मीन; (३) गीत का भाग जो (ऊँचे) मध्यम स्वर से गाया जाय।

झुंड—(हि०) (सं० पु०) भीड़, समूह।

झुंडी—(हि०) (सं० स्त्री०) गन्ने की जड़; ठूंठ।

झुंझलाना—(हि०) (क्रि०) चिड़चिड़ाना; ग़ुस्सा होना। झुंझलाहट (स्त्री०) ग़ुस्सा।

झुकाना—(हि०) (क्रि०) नीचा करना; हठ दूर करना; झुकाव—रुझान।

झुटपुटा—(हि०) (सं० पु०) संध्या, शाम।

झुटाल देना—(हि०) (क्रि०) थोड़ा सा खा लेना; चख लेना। झुटालना—झूठा बनाना।

झुटैल—(हि०) (सं० स्त्री०) चरित्रहीन स्त्री।

झुनझुना—(हि०) (सं० पु०) बच्चों का एक खिलौना।

झुनझुनी—(हि०) (सं० स्त्री०) बेड़ी; छोटे घुँघरू।

झुन्ना—(हि०) कपड़ा जिसके तार दूर दूर बुने हुए हों।

झुमका—(हि०) (सं० पु०) गुच्छा; कानों का एक ज़ेवर; सात तारे जो आकाश में साथ साथ दिखलाई पड़ते हैं—सप्त ऋषि।

झुमा देना—(हि०) (क्रि०) तन्मय कर देना; तल्लीन कर देना।

झुरमुट—(हि०) (सं० पु०) भीड़; समूह; चद्दर में पूरा बदन छिपाना। झुरमट मारना—संपूर्ण शरीर कपड़े से ढक लेना।

झुर्री—(हि०) (सं० स्त्री०) सिलवट, शिकन जो बुढ़ापे में शरीर में पड़ जाती है।

झुलसा—(हि०) जला हुआ; लू लगा हुआ, निगोड़ा। झुलसना—जलना।

झुलसा देना, झुलसाना—जलाना, आग लगाना।

झुलाना—(हि०) (क्रि०) (१) हिलाना डुलाना; (२) झूले में बैठा कर झुलाना; (३) टालमटूल करना, काम अटकाये रखना।

झूट—(हि०) (सं० पु०) मिथ्या, कपट, छल, धोखा, असत्य। झूट का पुतला—बहुत झूठ बोलनेवाला। झूट के बादल बाँधना, झूट का पुल बाँधना—बहुत झूठ बोलना। झूट मूट—योंहीं, हँसी में, हँसी से; असत्य।

झूटा—(हि०) (१) मिथ्याभाषी, बेईमान, कपटी, धोखे बाज़; (२) नक़ली, बनावटी; (३) निकम्मा, बेकार (हाथ पैर का झूटा हो जाना); (४) बरता हुआ, एक बार पहले काम में लाया हुआ; किसी का खाया पिया हुआ; (५) जाली। झूटा खाते हैं मीठे के लालच—लाभ के लिए अनुचित भी करना पड़ता है। झूटा लपाटी—(सं० पु०) लपाड़िया, गप्पी। झूटी ज़बान देना—झूठा वादा करना। झूटे को घर पहुँचा देना—क़ाइल कर देना। झूटों मुँह न छूना, झूटों न पूछना—नाम को भी न पूछना; ऊपरी मन से भी बात न करना। झूटे के आगे सच्चा रो मरे—झूठा क़ाइल नहीं होता।

झूम झूमकर—(हि०) घिर घिर कर; ख़ूब ज़ोर से; चारों ओर से इकट्ठा होकर।

झूमना—(हि०) (क्रि०) हिलाना; सिर को ऊपर नीचे उठाना; लटकना; ऊँघना; अकड़ना; बादलों का जमा होना; डगमगाना; हाथी की तरह मस्ताना चाल चलना।

झूमर—(हि०) (सं० पु०) माथे का एक ज़ेवर; एक प्रकार का नृत्य; समूह; एक प्रकार का गीत।

झूल—(हि०) (सं० स्त्री०) हाथी या अन्य पशु पर डालने का कपड़ा; ढीली ढीली पोशाक।

झेप—(हि०) (सं० स्त्री०) लज्जा, शर्म। झेपना—शर्माना, संकुचित होना।

झेलना—(हि०) (क्रि०) संभालना; सहना।

झोंक, झोक—(हि०) धक्का, रेला, झुकाव, लचक; असावधानी; भारी चीज़ का बोझ। झोंक देना—ख़र्च कर डालना। झोंक मारना, झोक मारना—कम तोलना, डंडी मारना। झोक संभालना—बरदाश्त करना, सहना।

झोंज—(हि०) (सं० पु०) घोंसला।

झोंटा—(हि०) (सं० पु०) पैंग (झूलेका); स्त्री के सिर के बाल; भैंस का बच्चा।

झोंतड़े—(हि०) रेशे, फूसड़े।

झोकना—(हि०) (क्रि०) डालना, फेंकना; गरम करना (भाड़); ख़र्च करना, उड़ाना; ख़तरे में डालना।

झोका—(हि०) (सं० पु०) हवा का धक्का, हवा का रेला; नींद का हचकोला; बोझ।

झोझा—(हि०) (सं० पु०) मुसल्मानों की एक छोटी जाति जो खाना बहुत खाती है।

झोड़—(हि०) (सं० स्त्री०) लड़ाई झगड़ा।

झोल—(हि०) (सं० पु०) ढीलापन; मुलम्मा, गिलट; एक बार में कई बच्चे जनना। झोल आई—भैंस या गाय बच्चा देने को हुई। झोलझाल—ढील ढाल। झोलदार बातें—चालाकी, छलपूर्ण बातें। झोल डालना—बच्चा जनना।

झोला—(हि०) (सं० पु०) थैला; हाथ का संकेत; बंदूक का ग़िलाफ़; अर्द्धांग; पक्षाघात; गेहूँ की फ़सल को हानि पहुँचाने वाली ठंडी हवा।

झोली—(हि०) (सं० स्त्री०) छोटी थैली।

ट

टंच—(हि०) (वि०) (१) उद्यत, मुस्तैद, प्रस्तुत, तैयार, लैस; (२) क्रूर।

टकटकी—(हि०) (सं० स्त्री०) ताक, घूरना, एक ओर देखते रहना, नज़र।

टकसाल—(हि०) (सं० स्त्री०) वह कारखाना जहाँ रुपया पैसा बनाया जाता है, सिक्के बनाने की जगह। **टकसाल का खोटा**—(वि०) नीच, कमीना, शरीर। **टकसाल चढ़ना**—(१) खरा खोटा परखा जाना; (२) बदनाम होना; (३) किसी हुनर में कामिल माना जाना, प्रमाण होना। **टकसाल-बाहर**—(वि०) (१) वह सिक्का जो असली न हो, बना हुआ, नक़ली; (२) वह आदमी जो किसी माने हुए गुरु का सिखाया हुआ न हो; (३) वह शब्द या मुहावरा जो भाषा में प्रमाण न माना जाता हो।

टकसाली—(हि०) (वि०) (१) विशुद्ध, खरा, परीक्षित, असल; (२) माना हुआ, प्रचलित। **टकसाली दुकान**—सच्ची नामी दुकान। **टकसाली बात**—पक्की बात, खरी बात। **टकसाली बोली, टकसाली ज़बान**—प्रामाणिक भाषा।

टक्कर—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) धक्का, ठोकर; (२) माथे पर माथा मारना; (३) बराबर, प्रतिस्पर्द्धा; (४) टोटा, नुक़सान। **टकराता फिरना**—तलाश करते फिरना; ढूँढते फिरना, डाँवाडोल फिरना।

टकहाई—(हि०) (सं० स्त्री०) नीचे दर्जे की वेश्या।

टका—(हि०) (सं० पु०) (१) दो पैसे; (२) रुपया, धन। **टका-सा जवाब देना**—साफ़ जवाब देना, बिलकुल इन्कार कर देना। **टका सा दम, टका सी जान**—बिलकुल अकेला आदमी। **टका गाँठ में होना**—धनी, मालदार होना। **टके से गिनना**—(१) हुक्के का ख़ूब आवाज़ के साथ बोलने लगना; (२) बहुत ठंड लगना, दाँत से दाँत बजने लगना; (३) फ़र्राटे से पढ़ना। **टके सीधे करना**—कुछ वसूल करना, रुपया कमाना। **टके सेर मारे मारे फिरना**—कुछ क़द्र न होना। **टके गज़ की चाल चलना**—(१) किफ़ायत करना; (२) कमीनों की सी चालाकी करना। **टके के वास्ते मसजिद ढाना**—थोड़े से लाभ के लिए कोई अनुचित काम करना। कहा०—**टके की बुढ़िया नौ टके सर मुंड़ाई**—थोड़े लाभ के लिए बहुत ख़र्च पड़ना।

टकोर—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) चोट, हलका धक्का, ठेस; (२) पोटली में रेत या या भूसी गरम कर के सेंकना; (३) नौबत की आवाज़। **टकोरना**—सेंकना, पोटली से सेंकना।

टकोरा—(हि०) (सं० पु०) (१) नौबत या ढोल की आवाज़; (२) छोटा कच्चा आम, (३) छोटी कुल्हाड़ी; (४) चुटकी।

टख़ना—(हि०) (सं० पु०) गट्टा, वह उठी हुई हड्डी जो एड़ी से ऊपर होती है।

टट-पुंजिया—(हि०) (वि०) थोड़ी पूँजी वाला।

टन—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) घंटे का शब्द झंकार, नाद; (२) (लख०) शेख़ी, ख़ुद, पसंदी, बद मिज़ाजी।

टर—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) मेंढक की आवाज़; (२) बेहूदा बात; (३) हठ, ज़िद; (४) शेख़ी।

टर-ख़ल—(हि०) (सं० स्त्री०) ज़लील और बेहूदा औरत; हरामज़ादी।

टर-टर—(हि०) (सं० स्त्री०) बक-बक, झक-झक। **टरटराना**—बक-बक करना।

टर-बास—(हि०) (सं० स्त्री०) (लख०) बेहूदा बात।

टर-बासिन—(हि०) (वि०) (स्त्री०) बेहूदा बकनेवाली स्त्री।

टर-बासी—(हि०) (सं० पु०) बेहूदा बकना, शेख़ी बघारना।

टर्रा—(हि०) (वि०) बदमिज़ाज, सरकश, कटु-भाषी। **टर्राना**—बड़बड़ाना।

टर्लें मारना—(हि०) (क्रि०) झूठी बातें बनाना।

टल्ले-नवीसी—(हि०) (सं० स्त्री०) बेकार फिरना, निरर्थक काम करना।

टसना—(हि०) (क्रि०) ज़ोर या दबाव पड़ने से कपड़ा फट जाना।

टसर—(हि०) (सं० स्त्री०) कच्चा रेशम।

टहनी—(हि०) (सं० स्त्री०) डाली, छोटी शाख़।

टहोका—(हि०) (सं० पु०) इशारा।

टाट—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) सन का बुना हुआ कपड़ा; (२) साहूकार के बैठने की गद्दी। **टाट उलटना**—दिवाला निकलना।

टाट-बाफ़—(हि०) (सं० पु०) ज़र दोज़, कपड़े पर सोने-चाँदी के तार टाँकनेवाला। **टाट-बाफ़ी जूता**—कामदार जूता।

टाप—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) घोड़े के सुम का हलक़ा; (२) वह शब्द जो घोड़े के सुम ज़मीन पर पड़ने से होते हैं; (३) मछली पकड़ने का जाल; (४) पलंग के पाये का गिर्दा; (५) फ़र्शी हुक्क़े का अन्तिम भाग जो चौड़ा होता है; (६) मुग्दर का आख़िरी नीचेवाला मोटा हिस्सा। **टाप-दार**—(वि०) मोटे सिरे का, आगे से चौड़ा, पीछे से पतला।

टापना—(हि०) (क्रि०) (१) घोड़े का दाने के वक़्त पाँव ज़मीन में मारना; (२) किसी की तलाश में हैरान होना। **टापता फिरना**—भटकता फिरना, हैरान फिरना। **टापता रह जाना**—(१) अफ़सोस करना; (२) हैरान रह जाना।

टापा—(हि०) (सं० पु०) (१) मुर्ग़ों के बन्द करने का लकड़ी का झाबा; (२) एक प्रकार की नाव। **टापा तोड़ निकल जाना**—साफ़ निकल जाना, बेलाग चल देना।

टापा-टोहिया—(हि०) (सं० स्त्री०) (औ०) खोज, तलाश। **टापा-टोई करना**—(१) ढूँढना, छान मारना; (२) टपकते मकान की मरम्मत करना।

टारा—(हि०) (सं० पु०) (लख०) उड़ने में मज़बूत कबूतर।

टारा-टूक—(हि०) (वि०) (औ०) चौकस, तोल में कम न ज़्यादा।

टिकाऊ—(हि०) (वि०) मज़बूत, देर-पा, चलनेवाला।

टिकिया—(हि०) (सं० स्त्री०) छोटी रोटी, चकती; लुगदी, बचे हुए आटे की रोटी।

टिकिया-चोट्टा—(स्त्री०) (औ०) ज़लील, नीच।

टिक्की—(हि०) (सं० स्त्री०) टिकिया, छोटी रोटी। **टिक्की लगना**—लाभ होना, दाल गलना, सफल होना, मनचाही होना।

टिटकारी—(स्त्री०) झूठ-मूठ की कार-गुज़ारी, ज़बानी जमा-ख़र्च। (जैसे—बैल सरकारी और यारों की टिटकारी)।

टिड्डा—(हि०) (सं० पु०) एक प्रकार का परदार कीड़ा; (२) दुबला-पतला आदमी।

टिड्डी—(स्त्री०) **टिड्डी-दल**—बहुत भीड़-भाड़।

टिमक-टिमाख़—(हि०) (सं० स्त्री०) घमंड, ठस्सा, बनाव-सिंगार।

टिम्मा—(हि०) (सं० पु०) ठिंगना, दुबला-पतला, कमज़ोर।

टिरबंगा—(हि०) (वि०) टेढ़ा, बाँका, तिरछा।

टिरफ़स—(हि०) (सं० स्त्री०) शरारत, अक्खड़-पन ।

टिलटिलाना—(हि०) (क्रि०) (१) आवाज़ के साथ दस्त आना; (२) बकबक करना ।

टिल्लम—(हि०) (वि० ठाली, बेकार मर्द ।

टिसुए बहाना—(हि०) (क्रि०) (औ०) झूठमूठ का रोना, दिखावे का रोना ।

टीप—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) चपत, धौल; (२) तमस्सुक, रुक्क़ा; (३) ऊँचा स्वर, आलाप; (४) फ़ौज का दस्ता; (५) माथे का एक ज़ेवर; (६) चोटी का, उम्दा । टीट-टाप—सजावट ।

टीस—(हि०) (सं० स्त्री०) दर्द । टीसना —दर्द करना, मीठा-मीठा दर्द होना ।

टुंगार—(हि०) (सं० स्त्री०) थोड़ा-थोड़ा खाना ।

टुंडी—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) नाभि, नाफ़; (२) बाज़ू, डंड । (वि०) वह स्त्री जिसका एक हाथ हो । टुंडियाँ कसना, टुडियाँ बाँधना—मुश्कें बाँधना; हाथ बाज़ू जकड़ना । टुंडियाँ खिंचना—मुश्कें बँधना, पकड़ा जाना, गिरफ़्तार होना ।

टुकड़-गदा—(हि०) (सं० पु०) वह फ़क़ीर जो घर-घर भीख माँगता फिरे ।

टुकड़ा—(हि०) (सं० पु०) (१) हिस्सा, भाग; (२) रोटी का कौर; (३) रोटी, जीविका । टुकड़ा-तोड़ जवाब देना, टुकड़ा-सा जवाब देना—साफ़ जवाब देना, दो टूक जवाब देना । टुकड़ों पर पड़ना—दूसरे के सहारे रहना, मुफ़्त की रोटियाँ खाना, दूसरे के सिर रहना ।

टुकड़ी—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) शीशे का टुकड़ा; (२) कबूतरों का ग़ोल; (३) गिरोह, जत्था ।

टुच्चा—(हि०) (वि०) (१) ओछा, छछोरा; (२) लुच्चा, नीच ।

टुटरूँ-टूँ—(हि०) (वि०) अकेला, एकाकी, तनहा ।

टुनहाई—(हि०) (सं० स्त्री०) जादू टोना करनेवाली स्त्री ।

टुर्रा—(हि०) (सं० पु०) छोटा टुकड़ा, दाना ।

टुसकना—(हि०) (क्रि०) रोना, बिसूरना ।

टूम—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) गहना-पाता, ज़ेवर, सिंगार; (२) सुन्दरी, सुन्दर स्त्री; (३) सोने की चिड़िया, मालदार औरत ।

टूरा—(हि०) (वि०) (१) ठिंगना, बौना; (२) भद्दा ।

टैनो—(हि०) (वि०) दोग़ला मुर्ग़ा, दोग़ली मुर्ग़ी ।

टैंया—(हि०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार की छोटी कौड़ी । टैंया-सी जान—(औ०) अकेला ।

टोटका—(हि०) (सं० पु०) जादू, टोना, जंत्र-मंत्र । टोटका करने आना—(औ०) आकर जल्दी चला जाना; खड़े-खड़े आना । कहा०—टोटकों से गाजें नहीं टलती हैं—सरल उपायों से बड़े काम पूरे नहीं होते ।

टोह—(हि०) (सं० स्त्री०) खोज, तलाश ।

ठ

ठकठक—(हि०) (सं० स्त्री०) झगड़ा, झक-झक ।

ठग—(हि०) (सं० पु०) धोखा देनेवाला, छली; फुसला कर छीननेवाला । (स्त्री०) ठगनी । ठगी—ठग का काम ।

ठट, ठठ—(हि०) (सं० पु०) भीड़ ।

ठटरी—(हि०) (सं० स्त्री०) ढाँचा, बाँस का बना फ्रेम ।

ठट्ठा, ठट्ठा—(हि०) (सं० पु०) हँसी, मज़ाक़ ।

ठठेरा—(हि०) (सं० पु०) (१) कसेरा, पीतल ताँबे के बर्तन बनानेवाला; (२)

ज्वार बाजरे की लकड़ी। ठटेरे ठटेरे बद-लाई—जब एक ही पेशे या एक ही तरह के दो चालाक आदमी लड़ें तब कहा जाता है।

ठठोल—(हि०) (सं० पु०) हँसमुख, मसख़रा। (स्त्री०) हँसी, ठठोली।

ठड्डा—(हि०) (सं० पु०) पतंग या कनकव्वे की बीच की तीली; रीढ़ की हड्डी। ठड्डा टूटी—कमर टूटी, कुबड़ी।

ठनठन—(हि०) (सं० स्त्री०) घंटे घड़ियाल का शब्द, टनटन।

ठनाका—(हि०) (सं० पु०) खटका, शब्द, आवाज़।

ठप्पा—(हि०) (सं० पु०) साँचा, सिक्का, मोहर।

ठर्रा—(हि०) (सं० पु०) देशी शराब; चोली के बन्द, (लख०) अधपकी ईंट; एक प्रकार का गँवारू जूता।

ठलुवा—(हि०) (वि०) बेकार, फ़ालतू।

ठस—(हि०) (१) ठोस; (२) निकम्मा, कूढ़; (३) रुपया जिसमें झंकार न हो।

ठसक—(हि०) (सं० स्त्री०) अकड़, धूम-धाम; नाज़ व अंदाज़; ठसका।

ठसका—(हि०) (सं० स्त्री०) सूखी खाँसी।

ठसना—(हि०) (क्रि०) ठूँस ठूँस कर भरना।

ठस्सा—(हि०) (सं० पु०) घमंड, गर्व, अभिमान; ठप्पा, साँचा।

ठसाठस—(हि०) खचाखच; पूर्णतया भरा हुआ।

ठाँस—(हि०) (सं० स्त्री०) खाँसी।

ठाँय-ठाँय—(हि०) (सं० स्त्री०) तकरार, झगड़ा।

ठा—(हि०) (सं० स्त्री०) स्थान, जगह; मध्यम ध्वनि; गवय्ये दून से आधी आवाज़ को ठा कहते हैं।

ठाट, ठाठ—(हि०) (सं० पु०) ढाँचा; ढंग, सजावट, धूमधाम; साज-सरंजाम; सितार की खूंटी व तार ठीक करना। ठाट बाट से रहना—तड़क-भड़क के साथ रहना। ठाट बाँधना—शान दिखाना।

ठाटर—(हि०) (सं० पु०) टट्टी, जाफ़री; कबूतरों के रहने का जाल, कबूतर-ख़ाना, दड़बा।

ठानना—(हि०) (क्रि०) संकल्प करना; निश्चय करना, तै करना।

ठाला—(हि०) (वि०) बेकार, निकम्मा, बेरोज़गार।

ठिंगना—(हि०) (वि०) बौना, नाटा।

ठिकाना—(हि०) (सं० पु०) पता, घर, भरोसा; सम्बन्ध, हद। ठिकाने से लगाना—उचित स्थान पर पहुँचना या पहुँचाना। ठिकाने का आदमी—भला मानस, विश्वास-योग्य। ठिकाने की बात—समझ की बात, ठीक बात। ठिकाने लगाना—सफल करना, मार डालना; उड़ा देना, व्यय कर डालना; काम से लगाना।

ठिटक—(हि०) (सं० स्त्री०) रुकना, चलते-चलते ठहर जाना।

ठिटर, ठिठर—(हि०) (सं० स्त्री०) ठंड।

ठिया—(हि०) (सं० पु०) हद, सीमा; जगह, गद्दी।

ठिर—(हि०) (सं० स्त्री०) ठंड, घोर सर्दी।

ठिलिया—(हि०) (सं० स्त्री०) मिट्टी का छोटा घड़ा।

ठुंठ—(हि०) (सं० पु०) सूखा हुआ पेड़; कटा हुआ हाथ।

ठुकना—(हि०) (क्रि०) गड़ना; पिटना, हार जाना, नुकसान उठाना, ख़र्च हो जाना, सज़ा होना।

ठुकराना—(हि०) (क्रि०) ठोकर मारना; छोड़ देना, त्याग देना।

ठुड्डी—(हि०) (सं० स्त्री०) ठोढ़ी; भुने हुए अन्न का दाना जो खिला और ख़स्ता न हो। ठुड्डी पकड़ना, ठुड्डी में हाथ देना—ख़ुशामद करना।

ठुमक—(हि०) (सं० स्त्री०) नाचने की चाल, मटक-मटक कर चलना।

ठुमकी—(हि०) (सं० स्त्री०) झटका; पतंग की डोर को हल्का सा झटका देना।

ठुमरी—(हि०) (सं० स्त्री०) छोटा सा गीत जो प्रायः तीन ताल में गाया जाता है।

ठुसकना—(हि०) (क्रि०) बिना आवाज़ किये रोना।

ठुसा देना—(हि०) (क्रि०) ठुंसा देना; परिमाण से अधिक खिला देना।

ठूंठ—(हि०) (सं० पु०) बिना पत्ते और शाखा का पेड़।

ठूठ—(हि०) मूर्ख, निस्सार।

ठेंगा—(हि०) (सं० पु०) अंगूठा; लाठी। ठेंगा दिखाना—चिढ़ाना; मुकर जाना। ठेंगे से—बला से; कुछ परवा नहीं।

ठेकी—(हि०) (सं० स्त्री०) नाज या लकड़ी का ढेर; वह जगह जिसके सहारे बोझ रख कर कुली सुस्ताते हैं। ठेकी लगाना—बोझ सिर से उतार कर दम लेना, थक कर सुस्ताना।

ठेट, ठेठ—(हि०) शुद्ध, बेमेल।

ठेंट, ठेंटी, ठेंठी—कान का जमा हुआ मैल।

ठेला—(हि०) (सं० पु०) धक्का; ढकेल, एक प्रकार की छोटी गाड़ी जिससे माल ढोते हैं।

ठेस—(हि०) (सं० स्त्री०) टक्कर, चोट।

ठोंकना, ठोकना—(हि० क्रि०) गाड़ना, कूटना; मारना, लात घूँसे से पीटना; बजाना (तबला), थपथपाना (पीठ)।

ठोड़ी—(हि०) (सं० स्त्री०) ठुड्डी। ठोड़ी तारा—ठोड़ी पर का तिल।

ठोस—(हि०) (वि०) भारी; जो पोला न हो; ठस।

ठोसा—(हि०) (सं० पु०) हाथ का अंगूठा; ठेंगा।

ड

डंकनी—(हि०) (सं० स्त्री०) डायन, एक प्रकार की स्त्री, लड़ाका स्त्री।

डंका—(हि०) (सं० पु०) नक़ारा जो सवारी के आगे रहता है।

डंड—(हि०) (सं० पु०) (१) बाज़ू, भुजा; (२) एक प्रकार की कसरत; (३) जुर्माना, तावान।

डकैत—(हि०) (सं० पु०) डाकू, लुटेरा।

डकोसना—(हि०) (क्रि०) (ग्रा०) पीना, निगलना।

डगमगाना—(हि०) (क्रि०) कांपना, हिलना, लड़खड़ाना।

डगा—(हि०) (वि०) दुबले और लम्बे पांव का घोड़ा।

डप्पू—(हि०) (वि०) बहुत बड़ा, बहुत मोटा।

डब—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) जेब; (२) गर्दन; (३) (पु०) क़ाबू, अधिकार, क़ब्ज़ा।

डबका—(हि०) (सं० पु०) (१) कुएँ का ताज़ा पानी; (२) भय।

डबरा—(हि०) (सं० पु०) पानी या ख़ून जमा होने का स्थान।

डब्बा—(हि०) (सं० पु०) (१) बड़ी डिबिया; (२) बच्चों की पसली की बीमारी।

डबी—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) छोटी डिबिया; (२) रोशनी करने की छोटी कुप्पी।

डब्बू—(हि०) (सं० पु०) लोहे की बड़ी कलछी।

डबोना—(हि०) (क्रि०) (१) भिगोना, पानी में डालना; (२) बिगाड़ना, ख़राब करना, मिट्टी में मिलाना।

डल—(हि०) (सं० पु०) (१) दस्ता, झुंड;

(२) बहुत रुपया, धन; (३) कश्मीर की एक प्रसिद्ध नहर का नाम।

डलक—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) चमक-दमक; (२) साफ़ चीज़ में निचाई-उंचाई।

डला—(हि०) (सं० पु०) बड़ा टुकड़ा, ढेला।

डलाव—(हि०) (सं० पु०) मैला डालने की जगह।

डली—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) सुपारी, छालिया; (२) छोटा टुकड़ा।

डहकाना—(हि०) (क्रि०) तरसाना, ललचाना।

डहरा—(हि०) (सं० पु०) नाव का वह स्थान जहाँ तख़्तों की दर्ज़ों से आकर पानी जमा हो।

डाँक—(हि०) (सं० स्त्री०) सुनहरा या रुपहला वर्क़ जो नगीने के नीचे चमक बढ़ाने के लिए रख देते हैं।

डाँग—(हि०) (सं० स्त्री०) पहाड़ की ऊँची चोटी, सबसे ऊँची पहाड़ी।

डाँट—(हि०) (सं० स्त्री०) धमकी, झिड़की। डाँट बताना—घुरकना। डाँट-डपट—धमकी।

डाँड—(हि०) (सं० पु०) (१) दंड, जुर्माना; (२) नाव चलाने का बाँस; (३) बिना चमड़े का गदका; (४) रीढ़ की हड्डी; (५) खेत की हद; (६) धरती, ज़मीन; (७) ऊँचा खेत।

डाँडा—(हि०) (सं० पु०) देश की सीमा, सरहद। डाँडा दबाना—कब्ज़ा करना। डाँडना—(औ०) बदला लेना।

डाँडी—(हि०) (सं० पु०) मल्लाह, खेवट; (स्त्री०) पहाड़ी डोली।

डाँवाडोल—(हि०) (वि०) आवारा, डगमगाता हुआ। डाँवाडोली—परेशानी।

डाँस—(हि०) (सं० पु०) एक प्रकार का बड़ा मच्छर।

डाकन—(हि०) (सं० स्त्री०) (देह०) बहुत सा खानेवाली।

डाका—(हि०) (सं० पु०) लूट; ज़बरदस्ती छीनना।

डाका-ज़नी—(हि०) (सं० स्त्री०) लूट लेना, डाका मारना।

डाढ़—(हि०) (सं० स्त्री०) पीछे के दांत जिससे भोजन चबाते हैं, द्रंष्ट्रा। डाढ़ झड़ जाना—डाढ़ गिर जाना। डाढ़ गरम करना—(१) कुछ खाना; (२) रिशवत लेना। डाढ़ें मारकर रोना, डाढ़ें मारना—ज़ोर ज़ोर से रोना।

डाब—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) एक प्रकार की घास; (२) चमड़े का कमरबंद जिससे तलवार लटकाते हैं; परतला; (३) (पु०) कच्चा नारियल।

डाबक—(हि०) (सं० पु०) कुएँ का ताज़ा पानी।

डाबी—(हि०) (सं० पु०) फ़सल का बीसवाँ हिस्सा जो कटाई करनेवालों को दिया जाता है।

डामचा—(हि०) (सं० पु०) मचान जो खेतों की रखवाली करने के लिये बनाया जाता है।

डायन—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) जादूगरनी, डाकन; (२) कुरूप स्त्री, जो बच्चों को खा जाय।

डार—(हि०) (सं० स्त्री०) जानवरों का झुंड; परन्दों का परा।

डाली—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) पेड़ की छोटी शाखा; (२) वह टोकरी जिसमें फल-फूल रखकर उपहार या भेंट देते हैं।

डिगना—(हि०) (क्रि०) हिलना, सरकना, हटना।

डींग—(हि०) (सं० स्त्री०) शेख़ी। डींग मारना, उड़ाना, लेना, हाँकना—घमंड करना, इतराना। डींगिया—शेख़ी मारनेवाला, शेख़ीबाज़।

डीमड़ा—(हि०) (सं० पु०) (औ०) (लख०) अंदरूनी फोड़ा ।

डील—(हि०) (सं० पु०) (१) जिस्म, काठी, शरीर; (२) टेक ।

डीह—(हि०) (सं० पु०) टीला, ऊँची जगह ।

डेढ़—(हि०) (सं० पु०) एक और आधा, १½ । डेढ़ अंक्षर—जादू मंत्र । डेढ़ ईंट की मसजिद बनाना—अलग हो जाना, सबसे अलग राय क़ायम करना; सब से अलग होकर छोटा-सा काम करके दिल की हविस निकालना । डेढ़ गज़ की ज़ुबान—ज़र्बां-दराज, धृष्ट । कहा०—डेढ़ बकायन मियाँ बाग़ में—थोड़ी पूंजी पर इतराना ।

डेरा—(हि०) (सं० पु०) (१) खेमा; (२) अस्थायी वास; (३) ठहरने की जगह; (४) घर, मकान; (५) ठहरना । डेरा होना—ठहरना । डेरेदार—संपत्तिशाली वेश्या ।

डुंड—(हि०) (सं० पु०) पेड़ का तना; बिना शाखाओं का वृक्ष ।

डुक—(हि०) (सं० पु०) मुक्का, घूंसा । डुक्रियाना—घूंसे मारना ।

डुग्गी—(हि०) (सं० स्त्री०) ढिंढोरा, ऐलान ।

डुबाव—(हि०) (वि०) डुबा देनेवाला, आदमी की उँचाई से अधिक ।

डूंड—(हि०) (सं० पु०) एक सींग का बैल; वह बैल जिसके सींग टूटे या मुड़े हों । (वि०) डूंडा; (स्त्री०) डूंडी ।

डोंगर—(हि०) (सं० पु०) डूंगर, पहाड़, पहाड़ी प्रदेश ।

डोंगा—(हि०) (सं० पु०) (१) पानी निकालने का डंडीदार बर्तन; (२) छोटी नाव; (३) एक विशेष प्रकार की रक़ाबी ।

डोंफ—(हि०) (सं० स्त्री०) एक फेंफड़े की बीमारी ।

डोकना—(हि०) (क्रि०) (१) वमन करना; कै करना; (२) चूसना, बहुत सा पीना ।

डोब—(हि०) (सं० पु०) (१) कपड़े का रंग या पानी में डबोना; (२) बदन से लगातार पसीना आना; (३) एक बार क़लम का स्याही में तर करना ।

डोम—(हि०) (सं० पु०) (१) गाने का पेशा करनेवाला, मीरासी; (२) एक नीच जाति । डोमनी—(स्त्री०) डोम की स्त्री ।

ड्योढ़ी—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) पटा हुआ दरवाज़ा, बरोठा, दहलीज़; (२) अमीरों या रईसों के यहाँ का आना-जाना । ड्योढ़ी-दार—दरबान ।

डोर—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) धागा, बटा हुआ धागा; (२) लकीर, रेखा, ख़त; (३) आँख की रगें; (४) आँखों की रगों की सुर्ख़ी; (५) तलवार की बाढ़; (६) कटोरा जिसमें डंडी लगी रहती है जिससे घी डालते हैं या पानी निकालते हैं; (७) जाल, फ़रेब । डोरा डालना—रिझाना, प्रेम पाश में फंसाना । डोरे छूटना—आँखों की रगों का गुलाबी होना (नशे से या सोकर उठने पर) ।

डोरिया—(हि०) (सं० पु०) (१) एक प्रकार का धारीदार महीन कपड़ा, (२) शिकारी कुत्तों का रखनेवाला ।

डोरी—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) पतली रस्सी; (२) नापने की रस्सी; (३) मलाई उतारने या दूध डालने का कटोरा । डोरी ढीली छोड़ना—(औ०) किसी की ओर से ग़ाफ़िल हो जाना, निगरानी छोड़ देना, दबाव न रखना ।

डोला—(हि०) (सं० पु०) एक प्रकार की ज़नानी सवारी । डोला उछलना—(औ०) (लख०) किसी स्त्री का एक पति रहते दूसरे से शादी करना ।

डोली—(हि०) (सं० स्त्री०) एक ज़नानी

सवारी जिसे दो कहार उठाते हैं। कह०—डोली में बैठकर उपले चुनने जाना—कोई काम नियम-विरुद्ध करना। डोली न कहार बीबी बैठी तैयार—न साज न सामान, मनसूबे बड़े बड़े।

डौल—(हि०) (सं० पु०) (१) ढंग, सूरत, प्रकृति; (२) ढाँचा; (३) तरह। डौल पर लाना—राह पर लाना, ढब पर लाना।

ढ

ढंकना—(हि०) (क्रि०) बंद करना; बंद होना।

ढंग—(हि०) (सं० पु०) चाल, चाल-ढाल; रीति, हुनर, आदत। ढंग उड़ाना—नक़ल करना; सीखना। ढंग डालना—आरम्भ करना। ढंग निकालना—रीति निकालना।

ढंगड़ा—(लख०) (औ०) जवान; तगड़ा।

ढंडार, ढंढार—(हि०) (सं० पु०) बहुत बड़ा और सुनसान घर।

ढंडोरची, ढंडोरिया—(हि०) (सं० पु०) मुनादी करनेवाला; ढिंडोरा पीटनेवाला।

ढंडोरा—(हि०) (सं० पु०) मुनादी, डुगडुगी, ऐलान। ढंडोरा शहर में, लड़का बग़ल में—चीज़ तो पास है और ढूंढते फिरते हैं दूर-दूर।

ढई—(हि०) एक जगह जम कर बैठ जाना। ढई देना—किसी जगह बैठ कर वहाँ से न उठना।

ढकेलना—(हि०) (क्रि०) हटाना; पीछे से धक्का देना या रेलना।

ढकोसना—(हि०) (क्रि०) बहुत खाना।

ढकोसला—(हि०) (सं० पु०) बेतुकी बात; चोचला।

ढग्गा—(हि०) (सं० पु०) दुबले लम्बे पैर का घोड़ा।

ढचर—(हि०) (सं० पु०) ढाँचा; किसी चीज़ के तैयार करने का सामान।

ढट—(हि०) (लख०) कड़ा, मज़बूत।

ढड्ढो—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) एक प्रकार का पक्षी; (२) बुढ़िया; (३) निर्लज्ज स्त्री।

ढपढपाना—(हि०) (क्रि०) ढोल पर हाथ मारना।

ढपना—(हि०) (क्रि०) ढकना; छिपाना; (सं०) ढक्कन।

ढप्पू—(हि०) भद्दा, कुरूप और मोटा।

ढब—(हि०) (सं० पु०) ढंग, प्रकार, गति; आदत, रुचि, पसंद। ढब बनना—अवसर हाथ आना। ढब पर चढ़ाना, ढब पर लगाना—दम में लाना, अपने क़ाबू में लाना। ढब पर चढ़ना—क़ाबू में आना।

ढबढबाना—(लख०) पैरने में हाथ मारना।

ढब्बस—(लख०) भद्दा।

ढमढमी—(लख०) (सं० स्त्री०) ख़ंजरी, डफ़ली।

ढलकना—(हि०) (क्रि०) बहना, टपकना; नीचे सरकना; लुढ़कना, झुक जाना।

ढलका—(हि०) (सं० पु०) आँखों से पानी बहने का रोग; मृत्यु से पहले आँखों से पानी जारी होना। ढलका लगना—आँखों से पानी निकलना।

ढलकाना—(हि०) (क्रि०) बहाना, फैलाना, लुढ़काना।

ढलना—(हि०) (क्रि०) (१) साँचे में ढलना; (२) बीत जाना, गुज़र जाना; (३) गल जाना, पिलपिला हो जाना; (४) बहना; (५) घटना, उतरना; (६) शराब या ताड़ी का पिया जाना; (७) समाप्त होने पर आना (दिन, रात, उम्र)।

ढलवाँ—(हि०) (वि०) तिरछा; फिसलनेवाला; एक ओर नीचा, ढालू।

ढलाव-खिंचाव—उतार चढ़ाव, (सितार या कमान का)।

ढला हुआ—(१) साँचे में ढला हुआ। (२) पिल-पिला, घुला हुआ (जैसे आम)।

ढलैया, ढलैत—(हि०) (सं० पु०) ढालनेवाला।

ढहना—(हि०) (क्रि०) दीवार या मकान का गिरना।

ढांकना—(हि०) (क्रि०) छुपाना; ओढ़ाना, ढकना।

ढांच, ढाँच—(हि०) (सं० पु०) बिना बुना हुआ पलंग या कुरसी; अधबनी चीज़।

ढांडना—(लख०) जवान कबूतर।

ढाँडा—(हि०) (सं० पु०) बूढ़ा बैल।

ढाँपना—(हि०) (क्रि०) ढकना, छिपाना।

ढाई—(हि०) अढ़ाई, २½; बच्चों का एक खेल। **ढाई दिन की बादशाहत करना**—विवाह के समय वर बनना; थोड़े दिन का शासन।

ढाई—(हि०) (सं० स्त्री०) बेल चढ़ाने के लिए लकड़ियों का ठाठर।

ढाक—(हि०) एक वृक्ष का नाम, पलाश। **ढाक के तीन पात**—निर्धन या हठी के लिए कहते हैं जो अपनी बात पर अड़ा रहे।

ढाका—(हि०) (सं० पु०) पूर्वी बंगाल का प्रसिद्ध नगर जहाँ की मलमल प्रसिद्ध थी; ढाका की मलमल। **ढाका पाटन**—ढाका में बना हुआ एक प्रकार का कपड़ा।

ढाटा—(हि०) (सं० पु०) कपड़े की पट्टी जिसे डाढ़ी चढ़ाने के लिए मुँह पर बाँधते हैं; मुर्दे के मुँह बाँधने का कपड़ा।

ढाटी—(हि०) (सं० स्त्री०) वह कपड़ा जो घोड़े के मुँह में लगाम की जगह देते हैं।

ढाड़ी—(हि०) (सं० पु०) डोम, मिरयासी।

ढा देना, ढाना—(हि०) (क्रि०) गिरा देना, ढेर कर देना; डाल देना, मिटाना, नाश करना।

ढापना—(हि०) (क्रि०) ढकना; छुपाना।

ढाबा—(हि०) (सं० पु०) जाल, मुर्गों के बन्द करने का झाबा, ढाबली।

ढा बैठना—(हि०) (क्रि०) ढा डालना; खोद फेंकना, खोद के गिरा देना।

ढारस—(हि०) (सं० स्त्री०) हिम्मत, साहस, सहारा।

ढाल—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) निचाई; (२) तलवार के वार को रोकनेवाला अस्त्र; (३) ढालू। **ढाल का फूल सूँघना**—मारा जाना।

ढालना—(हि०) (क्रि०) किसी धातु को पिघला कर साँचे में बनाना; बेचना (लख०); किसी पर व्यंग्य कसना; लागू करना।

ढिग—(हि०) पास, समीप।

ढिटबंदी—(हि०) (सं० स्त्री०) दृष्टि बाँधना, नज़रबन्दी।

ढिटाई—(हि०) (सं० स्त्री०) धृष्टता, निर्लज्जता, बेअदबी।

ढिबरी—(हि०) (सं० स्त्री०) लोहे के पेच के ऊपर का हिस्सा जिसे कसते हैं।

ढिलमिलाना—(हि०) (क्रि०) लड़खड़ाना, डगमगाना। **ढिलमिल-यक़ीन**—अस्थिर चित्त।

ढिल्लर—(हि०) (वि०) ढीला-ढाला, ढिल्लड़।

ढींगर—(हि०) (वि०) दुबला, कमज़ोर।

ढी—(हि०) (सं० पु०) नदी का ऊँचा किनारा, डीह; खँडहर।

ढीट, ढीठ—(हि०) (वि०) निर्लज्ज, बेहया, बेशर्म; जो किसी का कहा न माने।

ढीम—(हि०) (सं० पु०) बड़े-बड़े ढेले।

ढील—(हि०) (सं० स्त्री०) देर, अबेर; सुस्ती, काहिली; झोल, पतंग की डोर छोड़ कर खूब बढ़ाना। **ढील करना**—टालमटूल करना। **ढील देना**—बेपरवाई करना, रोक-टोक न करना।

ढीला—(हि०) (वि०) सुस्त, काहिल, आलस्यी। **ढीली डालना, ढीली छोड़ना**—ध्यान न देना, स्वतन्त्र कर

देना। ढीला पड़ जाना—कमज़ोर हो जाना।

ढुंडना—(हि० क्रि०) खोजना, तलाश करना।

ढुक्की—(हि०) इस तरह छुप कर बैठना कि कोई देख न सके।

ढुड़—(हि०) (सं० पु०) कूल्हा।

ढुलना—(हि०) (क्रि०) ढोया जाना; एक स्थान से उठाकर दूसरे स्थान पर ले जाना; झुकना; किसी ओर रुझान होना।

ढुवाई—(हि०) (सं० स्त्री०) ढोने की मज़दूरी, ढोने का काम।

ढूंड—(हि०) (सं० स्त्री०) तलाश, खोज। ढूंड ढांढ़—तलाश, खोज-बीन। ढूंड़ निकालना—तलाश कर लेना, खोज लगा लेना। ढूँड़ मारना—बहुत तलाश करना, छान-बीन करना।

ढूला—(हि०) (सं० पु०) खेतों या ज़मीन की हद बतानेवाला निशान; ठिया, मेहराब बनाने का ढाँचा, मूर्ख।

ढूसर—(हि०) (सं० पु०) बनियों की एक जाति।

ढेंकली—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) धान कूटने का यन्त्र; (२) कला मुन्डी, कलाबाज़ी; (३) पानी निकालने की लम्बी लकड़ी जिसके एक सिरे पर डोल की रस्सी और दूसरे सिरे पर पत्थर बाँधते हैं।

ढेंका—(हि०) (सं० पु०) (१) कोल्हू की लकड़ी; (२) सारस। ढेंका-ढेंकी—किसी की ज़िद से कोई काम करना।

ढेंकी—(हि०) (सं० स्त्री०) धनकुट्टी, धान कूटने की लकड़ी जिसके सिरे पर मूसल लगा रहता है।

ढेंडा—(हि०) (सं० पु०) तोंद, बड़ा पेट; गर्भ।

ढेकली—(हि०) (सं० स्त्री०) लोहा जिस पर नाज कूटा जाता है।

ढेर—(हि०) (सं० पु०) (१) बहुतायत, जमाव; (२) क़ब्र। ढेर करना—जमा करना, मार डालना। ढेर सा—बहुत सा। ढेर हो जाना—थक जाना, मकान का टूटकर गिर जाना; मर जाना।

ढेरा—(हि०) (सं० पु०) (लख०) जिसकी आँख में कज हो।

ढेरी—(हि०) (सं० स्त्री०) छोटा सा ढेर।

ढेला—(हि०) (सं० पु०) मिट्टी का बड़ा टुकड़ा; आँख। ढेला फेंकना—आने के लिए गुप्त संकेत करना।

ढै पड़ना—(हि०) (क्रि०) गिर पड़ना; ज़बरदस्ती उतर पड़ना।

ढोंग—(हि०) (सं० पु०) छल कपट, फ़रेब, बनावटी बातें। ढोंग बाँधना—टीप-टाप बनाना।

ढोंड—(हि०) (सं० पु० टूटा-फूटा मकान; बुड्ढा, कमज़ोर।

ढोई—(लख०) (स्त्री०) ईंटों का बोझ जो एक बार में लाया जाय।

ढोकना—(हि०) (क्रि०) छिपकर शिकार करना।

ढोका—(हि०) पाँच कंडों की गिनती (कंडे पाँच-पाँच करके गिने जाते हैं)।

ढोना—(हि०) (क्रि०) बोझ उठाना; एक जगह से दूसरी जगह ले जाना।

ढोर—(हि०) मवेशी, गाय-भैंस।

ढोल—(हि०) (सं० पु०) एक प्रसिद्ध बाजा। ढोल बजाना—प्रसिद्ध करना, प्रकाशित करना। ढोल ढमका—धूम-धाम, गाजा-बाजा। ढोल के अन्दर पोल—दिखावा बहुत, असली बात कुछ नहीं।

ढोलक—(हि०) (सं० पु०) छोटा ढोल। (स्त्री०) ढोलकी।

ढोलना—(हि०) (सं० पु०) एक प्रकार का ज़ेवर।

ढोली—(हि०) (सं० स्त्री०) प्रायः दो सौ पान की गड्डी।

ढौड़ा—(हि०) (सं० पु०) ढाँचा, दिखावा, टीप-टाप; ढंग।

त

तंग—(फ़ा०) (सं० पु०) घोड़े की ज़ीन कसने का तसमा। (वि०) (१) दीन, दुःखी, निर्धन; (२) संकीर्ण संकुचित, अनुदार; (३) कम। **तंग आना**—परेशान होना, थक जाना। **तंग रहना**—परेशान रहना, चिंतित रहना।

तंग-चश्म—(फ़ा०) (वि०) कमीना, नीच, कम हिम्मत।

तंग-तलबी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सख़्त तक़ाज़ा।

तंग-दस्त—(फ़ा०) (वि०) ग़रीब, मुफ़लिस धनहीन।

तंग-दस्ती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ग़रीबी, दरिद्रता।

तंग-दहन—(फ़ा०) (वि०) छोटे मुँह का; माशूक़।

तंग-दिल—(फ़ा०) (वि०) (१) ओछा, संकीर्ण हृदय का; (२) कंजूस, कृपण।

तंग-दिली—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ओछापन, कंजूसी।

तंग-बख़्त—(फ़ा०) (वि०) कम क़िस्मत, ओछा, मुफ़लिस, कंगाल।

तंग-साल—(अ०) (सं० पु०) सूखा साल, वह साल जिसमें पानी न बरसे।

तंग-हाल—(फ़ा०) (वि०) ग़रीब, मुफ़लिस; जिसकी दशा अच्छी न हो।

तंग-हौसला—(फ़ा०) (वि०) पस्त हिम्मत, कमीना, संकीर्ण-हृदय।

तंगा—(फ़ा०) (सं० पु०) चलन बाज़ार सिक्का; प्रचलित मुद्रा।

तंगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) संकीर्णता, संकोच; (२) दुःख, कष्ट; (३) ग़रीबी, दरिद्रता; (४) कमी।

तंज़—(अ०) (सं० पु०) ताना, व्यंग्य, आवाज़ा-तवाज़ा।

तअक़्क़ुब—(अ०) (सं० पु०) किसी का पीछा करना।

तअज्जुब—(अ०) (सं० पु०) आश्चर्य, विस्मय, अचंभा।

तअज़्ज़ुर—(अ०) (सं० पु०) उज़्र करना; हुज्जत करना।

तअद्दी—(अ०) (सं० स्त्री०) ज़ियादती, अत्याचार; ज़बरदस्ती, बल-प्रयोग।

तअन—(अ०) (सं० पु०) ताना, व्यंग्य, अवाज़ा-तवाज़ा।

तअफ़्फ़ुन—(अ०) (सं० पु०) दुर्गंध, बदबू, सड़ांद।

तअफ़्फ़ुफ़—(अ०) (सं० पु०) परहेज़गारी, साधुता, धार्मिकता।

तअबीर, ताबीर—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) बयान करना, वर्णन; (२) फल, नतीजा।

तअय्युन—(अ०) (सं० पु०) नियुक्ति, मुक़र्रर होना, पदारूढ़ होना।

तअय्युनात—(अ०) (सं० पु०) (१) नियुक्तियाँ; (२) पहरा देनेवाली फ़ौज।

तअल्लुक़—(अ०) (सं० पु०) सम्बन्ध, लगाव, रिश्ता।

तअल्लुक़ा—(अ०) (सं० पु०) बड़ी ज़मींदारी; बड़ा इलाक़ा।

तअल्लुक़ादार—(अ०) (सं० पु०) बड़ा जमींदार।

तअल्लुक़ा-दारी—(अ०) (सं० स्त्री०) बड़े इलाक़े का मालिक होना; बड़ा इलाक़ा।

तआक़ुब—(अ०) (सं० पु०) पीछे दौड़ना, पीछा करना।

तआम—(अ०) (सं० पु०) स्वाद, ज़ायक़ा; भोजन।

तआला—(अ०) (वि०) सर्वोपरि, सर्वश्रेष्ठ। (ईश्वर के लिए प्रयुक्त)।

तआवुन—(अ०) (सं० पु०) परस्पर सहायक होना; एक दूसरे की मदद करना।

तआरुफ़—(अ०) (सं० पु०) परिचय, जान-पहचान।

तक़तीअ—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) टुकड़े-टुकड़े करना; (२) परिमाण, साइज़; (३) छंदों की मात्रा गिनना; (४) सजावट।

तक़दमा—(अ०) (सं० पु०) तख़मीना, अन्दाज़ा, मोटा हिसाब।

तक़दीर—(अ०) (सं० स्त्री०) भाग्य, क़िसमत, प्रारब्ध, नसीब।

तक़द्दुम—(अ०) (सं० पु०) आगे बढ़ना; प्रधानता; किसी से बढ़ा हुआ होना।

तक़द्दुस—(अ०) (सं० पु०) पवित्रता; पाकीज़गी।

तकफ़ीर—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) किसी को काफ़िर (धर्म-च्युत) कहना; (२) प्रायश्चित।

तकबीर—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) मान्यता, बड़ा मानना; (२) ईश्वर की स्तुति; (३) ईश्वर का नाम लेना।

तकब्बुर—(अ०) (सं० पु०) अभिमान, घमंड, शेख़ी।

तकमील—(अ०) (सं० स्त्री०) पूरा करना; सम्पूर्ण करना; पूर्णता।

तकरार—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) झगड़ा, टंटा, विवाद; (२) किसी बात को बार बार कहना।

तकरारी—(हि०) (वि०) झगड़ालू, बखेड़िया।

तक़रीज़—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) आलोचना; (२) प्रशंसात्मक उल्लेख।

तक़रीब—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) पास होना, समीपता, (२) शुभ-मिलन, शुभ अवसर; (३) साधना।

तक़रीबन्—(अ०) (क्रि० वि०) लगभग, क़रीब क़रीब; प्रायः।

तकरीम—(अ०) (सं० स्त्री०) प्रतिष्ठा, सम्मान, आदर।

तक़रीर—(अ०) (सं० स्त्री०) बातचीत, वक्तृता, भाषण, अभिवचन।

तक़रीरन्—(अ०) (क्रि० वि०) मौखिक; ज़बानी; कह कर।

तक़रीरी—(अ०) (वि०) (१) मौखिक, ज़बानी, अलिखित; (२) विवादास्पद।

तक़र्रुर—(अ०) (सं० पु०) नियुक्ति, मुक़र्रर करना या होना।

तक़र्रुरी—(अ०) (सं० स्त्री०) नियुक्ति, मुक़र्रर होना।

तक़लीद—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) नक़ल, अनुकरण; (२) पीछे पीछे चलना, अनुसरण।

तक़लीदी—(अ०) (वि०) नक़ल किया हुआ; बनावटी, जाली।

तकलीफ़—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) कष्ट, दुःख, क्लेश; (२) विपत्ति, आफ़त, संकट।

तक़लीब—(अ०) (सं० स्त्री०) उलट-पलट, इधर का उधर होना।

तकल्लुफ़—(अ०) (सं० पु०) (१) अपने ऊपर तकलीफ़ या कष्ट उठाना; (२) दिखावट, बनावट, ज़ाहिरदारी; (३) संकोच, हिचकिचाहट।

तक़वा—(अ०) (सं० पु०) परहेज़गारी; संयम नियम का पालन करना, सदाचार।

तक़वियत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) बल देना, पुष्टि करना; (२) समर्थन, उत्साह।

तक़वीम—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) जंत्री, पंचांग; (२) सीधा करना, स्पष्ट करना।

तक़सीम—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) बाँट, बाँटना, विभाजन; (२) भाग, बटवारा।

तक़सीम-नामा—(अ०) (सं० पु०) बटवारे का काग़ज; विभाग-पत्र।

तक़सीमी—(हि०) (वि०) जिसका बटवारा होना हो।

तक़सीर—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) कसर, कमी, त्रुटि; (२) भूल, ग़लती, अपराध, गुनाह, क़सूर; (३) ज़्यादती।

तक़सीर-मंद—(अ०) (वि०) अपराधी, दोषी, क़ुसूरवार।

तक़सीर-वार—(अ०) (वि०) अपराधी, दोषी, क़ुसूरवार।

तक़ाज़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) माँग, तलब; (२) जिसके पाने का अधिकार प्राप्त हो वह वस्तु माँगना।

तक़ादीर—(अ०) (सं० स्त्री०) भाग्य, नसीब (तक़दीर का बहुवचन)।

तकान—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) थकान, थकावट; माँदगी, सुस्ती; काहिली, शैथल्य।

तकालीफ़—(अ०) (सं० स्त्री०) कष्ट, दु,ख, विपत्ति (तकलीफ़ का बहुवचन)।

तक़ावी—(अ०) (सं० स्त्री०) वह रुपया जो किसानों या ज़मीदारों को खेती के सुधार के लिए क़र्ज़ दिया जाय।

तकिया—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) कपड़े का रुई-भरा थैला जो सोते समय सिर के नीचे रखते हैं; (२) पत्थर या काठ जो रोक के लिए लगाया जाता है; (३) आश्रय, विश्राम का स्थान; (४) वह स्थान जहाँ कोई साँई या फ़क़ीर रहता हो।

तकिया-कलाम—(फ़ा०) (सं० पु०) वह शब्द या वाक्य जो बोलनेवाला बार बार बीच बीच में मुँह से निकालता है।

तकिया-दार—(फ़ा०) (सं० पु०) वह साँई या फ़क़ीर जो तकिये पर रहता हो।

तक़ी—(अ०) (वि०) ईश्वर से डरनेवाला, धर्म-भीरु, धर्मनिष्ठ।

तख़फ़ीफ़—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) कमी, घटना; (२) आराम।

तख़मीनन्—(अ०) (क्रि० वि०) लगभग, अनुमानतः।

तख़मीना—(अ०) (सं० पु०) अटकल, अन्दाज़, अनुमान।

तख़रीज—(अ०) (सं० स्त्री०) निकालना, ख़ारिज कर देना, अलग कर देना।

तख़लिया—(अ०) (सं० पु०) (१) एकान्त स्थान, जहाँ हर कोई न आ सके; (२) ख़ाली करना।

तख़ल्लुफ़—(अ०) (सं० पु०) वायदा ख़िलाफ़ी करना, वचन-भंग।

तख़ल्लुस—(अ०) (सं० पु०) कवियों का उपनाम।

तख़वीफ़—(अ०) (सं० स्त्री०) भय दिखाना, डर, धमकी।

तख़सीस—(अ०) (सं० स्त्री०) विशेष बात, ख़ास बात, विशेषता।

तख़्त—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) राज्य-सिंहासन, (२) तख़्तों की बनी हुई बैठने की बड़ी चौकी; (३) बादशाही, राज्य। तख़्त की रात—विवाह की रात। तख़्त का तख़्ता हो जाना—राज टूट जाना।

तख़्त-आबनूसी—(फ़ा०) (सं० पु०) रात।

तख़्त-गाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) राज-धानी।

तख़्त-ताऊस—(फ़ा०) (सं० पु०) शाह-जहाँ बादशाह का बनवाया हुआ मोर के आकार का प्रसिद्ध राज्य-सिंहासन।

तख़्त-नशीन—(अ०) (वि०) जो राज्य-सिंहासन पर आरूढ़ हो, राजा।

तख़्त-पोश—(फ़ा०) (सं० पु०) तख़्त का फ़र्श, तख़्त पर का बिछौना।

तख़्त-बख़्त—(पु०) (औ०) राज, सुहाग, ऐश-आराम।

तख़्त-बन्दी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) तख़्तों की बनी हुई रोक या दीवार।

तख़्त-रवाँ—(फ़ा०) (सं० पु०) हवादार, वह तख़्त जिसको मज़दूर कंधों पर उठाकर चलते हैं।

तख़्ता—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) लकड़ी का टुकड़ा; (२) चिरा हुआ पल्ला; (३) काग़ज़ का ताव; (४) चौकी; (५) ज़मीन

का टुकड़ा; (६) चमन, छोटा सा बाग़। तख़्ता उलटना—शहर उजड़ना, दिवाला निकलना। तख़्ता हो जाना—बदन का अकड़ जाना। तख़्त-ए-मश्क़—(फ़ा०) वह चीज़ जो बहुत इस्तेमाल में आवे।

तख़्ती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) छोटा तख़्ता; (२) पट्टी, पटरी; (३) तावीज़; (४) (औ०) सोना, कमर और बाज़ू, छवि।

तग—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दौड़-धूप, कोशिश।

तग़य्युर—(अ०) (सं० पु०) बहुत बड़ा परिवर्तन, फेरफार।

तग़ाफ़ुल—(अ०) (सं० पु०) ग़फ़लत, उपेक्षा, उदासीन भाव, ध्यान न देना।

तग़ार—(अ०) (सं० पु०) (१) मट्टी का कूँड़ा, नाँद; गढ़ा जिसमें गारा बनाया जाता है।

तज़कीर—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) याद दिलाना; (२) मर्द होना, पुल्लिंग होना।

तज़किरा—(अ०) (सं० पु०) चर्चा, ज़िक्र, याददाश्त।

तजनीस—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) हम जिन्स करना, समानता, (२) दो या कई शब्दों का उच्चारण एक और अर्थ भिन्न होना।

तज़बज़ुब—(अ०) (सं० पु०) (१) असमंजस, सोच-विचार; (२) लटकी हुई चीज़ का हवा के रुख़ के साथ उड़ना।

तजम्मुल—(अ०) (सं० पु०) ठाठ, शान-शौकत; शोभा, श्रृंगार।

तजरबा—(अ०) (सं० पु०) अनुभव, प्रयोग, जाँच। (शुद्ध तज़रुबा)

तज़रबा-कार—(अ०) (सं० पु०) अनुभवी।

तजरीद—(अ०) (सं० स्त्री०) एकान्त, तनहाई, निर्जनता, नंगा करना।

तजरुबा—(अ०) (सं० पु०) आज़मायश, जाँच, परीक्षा, अनुभव।

तजर्रुद—(अ०) (सं० पु०) एकान्त, निर्जनता।

तज़लील—(अ०) (सं० स्त्री०) किसी को ज़लील करना।

तजल्ला, तजल्ली—(अ०) (सं० पु०) प्रकाश, चमक, रोशनी, नूर।

तज़ल्लुल—(अ०) (सं० पु०) अपने आप को घृणित समझना।

तजवीज़—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) सम्मति, राय; (२) निर्णय, फ़ैसला; (३) प्रबन्ध, बन्दोबस्त; (४) फ़िक्र, चिन्ता, ग़ौर।

तजवीज़-सानी—(अ०) (सं० स्त्री०) फ़ैसले की परताल; निर्णय का पुनर्विचार।

तजस्सुस—(अ०) (सं० पु०) तलाश, खोज, ढूँढना।

तजहीज़—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) विवाह में जहेज़ का प्रबन्ध; (२) कफ़न का सामान जुटाना।

तजावुज़—(अ०) (सं० पु०) (१) हद से गुज़र जाना; सीमा का उल्लंघन करना; (२) फ़र्क़, अन्तर।

तजाहुल—(अ०) (सं० पु०) जान-बूझकर नादान बनना, टालना। तजाहुल-आरिफ़ाना—जान-बूझ कर अनजान बनना।

तज्जार—(अ०) (सं० पु०) सौदागर, व्यापारी। (ताजिर का बहुवचन)। (शुद्ध तज्जार)

तड़ाक़—(फ़ा०) (स्त्री०) (१) किसी सख़्त चीज़ के टूटने की आवाज़, (२) जल्दी, फ़ौरन।

तत्ता—(सं०) (वि०) (१) जलता हुआ, बहुत गरम; (२) तेज़-मिज़ाज, क्रोधी; (३) साहसी, बहादुर। तत्ता-तवा—(वि०) लड़ाका, झगड़ालू, जो बात बात पर लड़े। तत्ता-ताव—(औ०) फ़ौरन, जल्द। तत्ता-तावला—(हि०) जल्द-बाज़, तेज़-मिज़ाज। तत्ता होना—गरम होना, क्रोधित होना, लाल-पीला होना। तत्ते पड़ना—(औ०) बदनामी होना, अपमान

होना। कहा०—तत्ते तवे की बूँद—बढ़े हुए ख़र्च में थोड़ी आमदनी से कुछ नहीं होता।

ततिम्मा—(अ०) (सं० पु०) परिशिष्ट, जो पीछे से जोड़ा जाय।

तत्तो-थंबो—(हि०) (स्त्री०) (औ०) रोक-थाम; दम-दिलासा, बीच-बचाव।

तथा—(हि०) (सं० स्त्री०) ताक़त, बूता।

तदबीर—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) कोशिश, तजवीज़; (२) उपाय, युक्ति; (३) फ़िक्र, अन्देशा; (४) इलाज, चारा, ख़याल, मनसूबा।

तदरीज—(अ०) (सं० स्त्री०) थोड़ा-थोड़ा, धीरे-धीरे बढ़ना या घटना।

तदरीस—(अ०) (सं० स्त्री०) शिक्षा।

तदाबीर—(अ०) (सं० स्त्री०) उपाय, कोशिश, प्रयत्न। (तदबीर का बहुवचन)।

तदारुक—(अ०) (सं० पु०) (१) पेशबन्दी, पहले से इन्तज़ाम करना; (२) दंड, सज़ा; जाँच-पड़ताल।

तन—(फ़ा०) (सं० पु०) शरीर, बदन।

तनक़ीह—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) जाँच, खोज; (२) पाक करना, साफ़ करना; (३) वह सवाल जो अदालत दो आदमियों का झगड़ा सुलझाने के लिए निश्चित कर लेती है और जिन पर शहादत-सबूत लिया जाता है।

तनक्कुल—(अ०) (सं० पु०) थोड़ा-थोड़ा टूँगना।

तनख़्वाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वेतन, तलब।

तनख़्वाह-दार—(फ़ा०) (वि०) वेतन-भोगी, वैतनिक।

तनज़—(अ०) (सं० पु०) ताना, व्यंग्य, आवाज़ा-तवाज़ा, नाज़ोअदा, राज़ोन्याज़।

तनज़न—(अ०) (क्रि० वि०) व्यंग्य में, ताने से।

तनज़ीम—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) तागे में मोती पिरोना; (२) इन्तज़ाम करना; (३) संघटन।

तनज़्ज़ुल—(अ०) (सं० पु०) (१) कमी; (२) दर्जा टूटना; (३) उतरना।

तनज़्ज़ुली—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) कमी, ह्रास; (२) पद से गिरना, दरजा टूट जाना।

तनज़ेब—(स्त्री०) एक बहुत बारीक कपड़ा।

तन-तनहा—(फ़ा०) (क्रि० वि०) अकेला, बिना साथी के।

तनतना—(अ०) (सं० पु०) (१) दबदबा, रौब-दोब; (२) अभिमान, शान-शौकत, आन-बान; (३) ग़ुस्सा, क्रोध, बद-मिज़ाजी।

तन-देह—(फ़ा०) (वि०) मनस्वी, पूरे मन से काम करनेवाला।

तन-देही (तन-दिही)—(फ़ा०) (सं० स्त्री०—(१) पूर्ण योग, परिश्रम; (२) हार्दिक प्रयत्न; (३) ताकीद।

तन-परवर—(फ़ा०) (वि०) स्वार्थी, मत-लबी, शरीर-सेवी।

तनफ़्फ़ुर—(अ०) (सं० पु०) भागना, नफ़रत, घृणा, बेज़ारी।

तनफ़्फ़ुस—(अ०) (सं० पु०) साँस लेना, हाँफना, श्वास-प्रश्वास।

तनवीन—(अ०) (सं० स्त्री०) उर्दू लिपि में किसी अक्षर पर दो ज़बर ज़ेर या पेश लगाना जिससे 'न' की आवाज़ निकले।

तनवीर—(अ०) (सं० स्त्री०) रोशनी, चमक।

तनसीख़—(अ०) (सं० स्त्री०) मनसूख़ करना, रद करना।

तनसीफ़—(अ०) (सं० स्त्री०) बराबर के टुकड़े करना; दो बराबर भागों में बाँटना।

तनहा—(फ़ा०) (वि०) अकेला, एकाकी, जुदा।

तनहाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एकान्त, अकेला होना।

तना—(फ़ा०) (सं० पु०) पेड़ का धड़; ज़मीन से ऊपर का और शाखाओं से नीचे का हिस्सा।

तनाज़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) दंगा, झगड़ा; (२) द्वेष, शत्रुता, वैर।

तनाब—(अ०) (सं० स्त्री०) ख़ेमा बाँधने की रस्सी।

तनारीरी—(स्त्री०) खट-राग; झगड़ा, बे-वक्त या बे-लुत्फ़ का राग।

तनावर—(फ़ा०) (वि०) हृष्ट-पुष्ट, बलवान्, ताक़तवर।

तनावुल—(अ०) (सं० पु०) (१) लेना; (२) खाना खाना, भोजन करना।

तनासुख़—(अ०) (सं० पु०) (१) विनाश; (२) आवा-गमन।

तनासुब—(अ०) (सं० पु०) सब अंगों का उचित रूप में होना; शरीर-गठन का सुन्दर होना; उपयुक्तता।

तनासुल—(अ०) (सं० पु०) औलाद पैदा करना; नस्ल बढ़ाना, सन्तान उत्पन्न करना। एज़ाए-तनासुल—लिंग, पुरुष-इन्द्रिय।

तनूमन्द—(फ़ा०) (वि०) (१) हृष्ट-पुष्ट, हट्टा-कट्टा, मोटा-ताज़ा; (२) बलिष्ट, ताक़तवर; (३) धनी।

तनूर—(अ०) (सं० स्त्री०) तन्दूर; भट्टी।

तन्ज़—(अ०) (सं० स्त्री०) ताना, व्यंग्य, आवाज़ा-तवाज़ा।

तन्दुरुस्त—(फ़ा०) (वि०) नीरोग, स्वस्थ।

तन्दुरुस्ती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) स्वास्थ्य, नीरोगता।

तन्दूर—(फ़ा०) (सं० पु०) भट्टी; रोटी पकाने का बड़ा चूल्हा।

तन्दूरी—(हि०) (वि०) तन्दूर में पकी हुई रोटी, ख़मीरी रोटी।

तन्नाज़—(अ०) (वि०) व्यंग्य में बोलने वाला; शोख़, बेबाक।

तन्बीह—(अ०) (सं० स्त्री०) झिड़की, नसीहत, चेतावनी। (शुद्ध तम्बीह)

तप—(फ़ा०) (सं० पु०) गरमी, हरारत, ज्वर।

तपक—(हि०, (सं० स्त्री०) (लख०) जलन, फोड़े का दर्द, टीस, लपक।

तपकना—(हि०) (क्रि०) ज़ख्म में टीस होना, लपक।

तपांचा—(पु०) थप्पड़, तमाचा।

तपाक—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) प्रीति, इश्क़, मुहब्बत; (२) आव-भगत, आदर-सत्कार; (३) जोश, उत्साह।

तपान—(फ़ा०) (वि०) तड़पनेवाला। (शुद्ध तपा)

तपाना—(सं०) (क्रि०) (१) गरम करना, ताव देना; (२) दुःख देना, चिढ़ाना।

तपिश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) गरमी, शिद्दत की गरमी; (२) बेचैनी, बेक़रारी।

तपे-दिक़—(फ़ा०) (सं० पु०) क्षय रोग, राजयक्ष्मा।

तफ़ज़ील—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) श्रेष्ठ समझना; (२) तुलना करना।

तफ़ज़्ज़ुल—(अ०) (सं० पु०) श्रेष्ठता, बड़ाई।

तफ़तीश—(अ०) (सं० स्त्री०) तहक़ीक़ात, जाँच-पड़ताल।

तफ़रक़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) अन्तर, फ़र्क़; (२) दूरी; (३) जुदाई, वियोग।

तफ़रीक़—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) बटवारा, बाँटना; (२) जुदाई, अलग करना; (३) अन्तर, घटाना, फ़र्क़।

तफ़रीह—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) सैर, मन-बहलाव; (२) दिल्लगी, हँसी; (३) प्रसन्नता, हर्ष।

तफ़वीज़—(अ०) (सं० स्त्री०) सौंपना, सुपुर्द करना।

तफ़सीर—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) व्याख्या, टीका; (२) वर्णन।

तफ़सील—(अ०) (सं० स्त्री०) ब्यौरा, विस्तार के साथ उल्लेख, कैफ़ियत।

तफ़सील-वार—(अ०) (वि०) ब्यौरेवार; विस्तार-पूर्वक।

तफ़ावत—(अ०) (सं० पु०) (१) अन्तर, विषमता, भेद; (२) दूरी, फ़ासला।

तफ़ासीर—(अ०) (सं० स्त्री०) व्याख्या, टीका। (तफ़सीर का बहुवचन)

तफ़ूलियत—(अ०) (सं० स्त्री०) लड़कपन, बाल्यावस्था। (शुद्ध तिफलियत)

तब—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बुख़ार, हरारत।

तबअ—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) तबीयत, मिज़ाज, प्रकृति; (२) मुद्रण, छापना; (३) मोहर लगाना।

तबअ-आज़माई—(अ०) (सं० स्त्री०) बुद्धि-बल की परीक्षा, बुद्धि परीक्षा।

तबअ-रसा—(अ०) (सं० स्त्री०) तेज़ तबीयत, तेज़ ज़हन, तीव्र-बुद्धि।

तबई—(अ०) (वि०) प्रकृति से सम्बन्ध रखनेवाला, प्राकृतिक, स्वाभाविक, सहज।

तबक़—(अ०) (सं० पु०) (१) तह, परत, परदा; (२) पृथ्वी और आकाश, लोक; (३) सोने चाँदी का वरक़; (४) थाली, बड़ी रक़ाबी।

तबक़गर—(अ०) (सं० पु०) सोने चाँदी के वर्क़ बनानेवाल

तबक़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) दरजा, मंजिल, विभाग; (२) स्तर, तह, परत; (३) लोक, तख़्ता; (४) संप्रदाय, समूह।

तबदील—(अ०) (सं० स्त्री०) एक चीज़ को दूसरी की जगह करना, बदलना, पलटना।

तबद्दुल—(अ०) (सं० पु०) बदला, परिवर्तन।

तबन्नियत—(अ०) (सं० स्त्री०) गोद लेना, लड़का बनाना।

तबर—(फ़ा०) (सं० पु०) कुल्हाड़ी।

तबरीद—(अ०) (सं० स्त्री०) ठंडी दवा; जुलाब के बाद पीने की ठंडाई।

तबर्रुअ—(अ०) (सं० पु०) दान; दान-पुण्य।

तबर्रा—(अ०) (सं० पु०) घृणा, नफ़रत, बेज़ारी।

तबर्रुक—(अ०) (१) मुबारक समझना; (२) वह चीज़ जिससे बरकत ली जाय, प्रसादी, प्रसाद; (३) थोड़ा-सा, किंचित मात्र।

तबल—(अ०) (सं० पु०) बड़ा ढोल, नक्क़ारा।

तबलक़—(तु०) (सं० स्त्री०) क़ैदक; दो रुख़ से खुला हुआ लिफ़ाफ़ा; वह कागज़ जो काग़ज़ों के मुट्ठे पर उसे बंद रखने के लिए लगाया जाय।

तबलची—(अ०) (सं० पु०) तबला बजाने वाला।

तबला—(अ०) (सं० पु०) (१) डब्बा, सन्दूक़चा; (२) ताल देने का बाजा, (मृदंग की तरह)।

तबलीग़—(अ०) (सं० पु०) (१) ईश्वर की आज्ञा पहचानना; (२) धर्म का प्रचार करना; अपना मत बढ़ाना।

तबस्सुम—(अ०) (सं० पु०) ऐसी हँसी जिसमें होंठ न खुलें, मंद हास; मुस्कराहट; कलियों का खुलना।

तबाक़—(अ०) (सं० पु०) तसला, रक़ाबी।

तबादला—(अ०) (सं० पु०) (१) बदली, बदला जाना; (२) एवज़, बदल।

तबार—(फ़ा०) (सं० पु०) ख़ान-दान, घराना, औलाद।

तबाशीर—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) वंश-लोचन; (२) उषा।

तबाह—(फ़ा०) (वि०) नष्ट, उजड़ा हुआ, वीराना; बरबाद।
तबाही—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) नाश, बरबादी।
तबीअत—(अ०) (सं० स्त्री०) मिज़ाज, चित्त, मन, समझ, ज्ञान।
तबीब—(अ०) (सं० पु०) हकीम, वैद्य।
तबीयत—(अ०) (सं० स्त्री०) चित्त, मन, मिज़ाज, समझ, ज्ञान। तबीयत आना—मन में चाह होना। तबीयत उभरना—दिल में उमंग होना। तबीयत फड़कना—चित्त प्रसन्न होना। तबीयत रुंधना—उदास होना।
तबीयत-दार—(फ़ा०) (वि०) (१) समझदार, बुद्धिमान; (२) रसिक, भावुक।
तब्दील—(अ०) (वि०) (१) बदला हुआ; (२) जो एक जगह से हटा कर दूसरी जगह रख दिया गया हो, (३) परिवर्तन, बदलना।
तब्दीली—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) परिवर्त्तन, बदलना।
तब्बाख़—(अ०) (सं० पु०) बावर्ची, रसोइया।
तमंचा—(तु०) (सं० पु०) (१) छोटा पिस्तौल; (२) छोटा-सा माशूक़।
तमकनत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) दबदबा, ज़ोर, हुकूमत; (२) शान-शौकत, टीप-टाप; (३) अभिमान, इज़्ज़त जताना।
तमग़ा—(तु०) (सं० पु०) पदक, मोहर।
तमद्दुद—(अ०) (सं० पु०) खिंचाव, कशीदगी।
तमद्दुन—(अ०) (सं० पु०) (१) रहने-सहने का ढंग, सभ्यता, संस्कृति; (२) नागरिकता।
तमन्ना—(अ०) (सं० स्त्री०) कामना, अभिलाषा, इच्छा।
तमर—(अ०) (सं० स्त्री०) खजूर।
तमर-हिन्दी—इमली।
तमरुंद—(अ०) (सं० पु०) सरकशी, ढिठाई, विद्रोह, क़ानून तोड़ना।
तमलीक—(अ०) (सं० स्त्री०) किसी को किसी चीज़ का मालिक कर देना।
तमल्लुक़—(अ०) (सं० पु०) ख़ुशामद, चापलूसी।
तमसील—(अ०) (सं० स्त्री०) उपमा, उदाहरण।
तमस्ख़ुर—(अ०) (सं० पु०) दिल्लगी, हँसी।
तमस्सुक—(अ०) (सं० पु०) दस्तावेज़, इक़रारनामा।
तमहीद—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) बिछौना; (२) भूमिका, उठान, प्रस्तावना।
तमाँचा—(उ०) (सं० पु०) थप्पड़, तमाचा, थपेड़ा।
तमा—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) लालच, लोभ; (२) इच्छा, चाह।
तमाचा—(तु०) (सं० पु०) थप्पड़, थपेड़ा।
तमाज़त—(अ०) (सं० स्त्री०) बहुत सख़्त गरमी।
तमादी—(अ०) (सं० स्त्री०) किसी बात या नालिश का नियत समय निकल जाना।
तमानियत—(अ०) (सं० स्त्री०) तसल्ली, संतोष, धैर्य।
तमाम—(अ०) (वि०) (१) कुल, पूरा, संपूर्ण, (२) समाप्त।
तमामी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा।
तमाशबीन—(अ०) (सं० पु०) (१) तमाशा देखनेवाला, सैलानी; (२) वेश्यागामी, कामुक, विषयी, ऐयाश।
तमाशा—(अ०) (सं० पु०) (१) खेल स्वांग मनोरंजक दृश्य; (२) हंगामा. (३) हँसी; (४) अनोखी बा[त] वस्तु।

तमाशाई—(अ०) (सं० पु०) तमाशा देखने वाला, दर्शक।

तमाशा-गाह—(अ०) (सं० स्त्री०) रंगमंच, वह स्थान जहाँ तमाशा हो।

तमीज़—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) भले बुरे को पहचानने की शक्ति, विवेक; (२) पहचान, जाँच, समझ; (३) बुद्धि, ज्ञान; (४) शिष्टाचार, शील।

तम्बान—(फ़ा०) (सं० पु०) ढीला पैजामा।

तम्बीह—(अ०) (सं० स्त्री०) शिक्षा, झिड़की नसीहत।

तम्बूर, तम्बूरा—(सं० पु०) तंबूरा, तारवाला बाजा, तानपूरा।

तम्बूल, तम्बोल—(फ़ा०) (सं० पु०) पान, तमाल का पत्ता, जिसे स्त्रियाँ चबाती हैं।

तम्माअ—(अ०) (वि०) बड़ा लालची।

तयम्मुम—(अ०) (सं० पु०) मट्टी से हाथ-मुँह साफ़ करना।

तयूर—(अ०) (सं० पु०) परिन्द, पक्षीगण।

तरंग—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वह आवाज़ जो तीर छूटने के समय होती है।

तरंज—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार का बड़ा नीबू, बड़ा बूटा।

तरंजबीन—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार की शक्कर जो ऊँटकटारे के काँटों पर ओस की तरह गिर कर जम जाती है।

तर—(फ़ा०) (वि०) (१) नम, गीला, आर्द्र; (२) हरा, रसीला; (३) ठंढा।

तरक़्क़ब—(अ०) (सं० पु०) उम्मेद, आशा।

तरकश—(फ़ा०) (सं० पु०) तीर-दान, तीर रखने का चोंगा।

तरका—(अ०) (सं० पु०) वह जायदाद जो वारिस को मिले, मृत व्यक्ति का छोड़ा हुआ द्रव्य।

तरकारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) साग-पात, सब्ज़ी, साग।

तरकीब—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) कई को मिलाकर बनाना, मिश्रण; (२) बनावट, रचना, प्रस्तुत करने की विधि; (३) उपाय, युक्ति, गुर।

तरक़्क़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) उन्नति, वृद्धि, संवर्द्धन।

तरग़ीब—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) शौक़; (२) लालच दिलाना, उकसाना, (३) समझा बुझाकर बना लेना।

तरजीअ—(अ०) (सं० स्त्री०) फिरना, किसी की ओर ध्यान देना।

तरजीअ-बन्द—(फ़ा०) (सं० पु०) वह कविता जिसमें कोई ख़ास मिसरा बार-बार आवे।

तरजीह—(अ०) (सं० स्त्री०) प्रधानता देना, अधिक अच्छा समझना।

तरजुमा—(अ०) (सं० पु०) अनुवाद, उल्था।

तरजुमान—(अ०) (सं० पु०) अनुवादक, वक्ता।

तरतीब—(अ०) (सं० स्त्री०) क्रम, सिलसिला।

तरतीब-वार—क्रम से, सिलसिलेवार।

तर-दामन—(फ़ा०) (वि०) अपराधी, पापी।

तर-दामनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पाप, अपराध, पातक।

तरदीद—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) रद्द करना, काटना; (२) खंडन, प्रत्युत्तर।

तरद्दुद—(अ०) (सं० पु०) उधेड़बुन, फ़िक्र, सोच, चिन्ता।

तरन्नुम—(अ०) (सं० पु०) गाना, राग।

तरफ़—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) ओर, दिशा; (२) अलग; (३) किनारा, बग़ल; (४) रुख़, पक्ष, लिहाज़।

तरफ़-दार—(अ०) (वि०) हिमायती, पक्ष लेनेवाला।

तरफ़-अव्वल—मुद्दई, वादी।

तरफ़-सानी—मुद्दालेह, प्रतिवादी।

तरफ़ैन—(अ०) (सं० पु०) दोनों पक्ष, मुद्दई-मुद्दालेह।

तरब—(अ०) (सं० पु०) प्रसन्नता, हर्ष।

तरबियत—(अ०) (सं० स्त्री०) शिक्षा-दीक्षा, परवरिश।

तरबियत-पज़ीर—शिक्षा के योग्य, पात्र।

तरबुज़, तरबूज़—(फ़ा०) (सं० पु०) एक खाने का बड़ा फल, जिसमें लाल गूदा निकलता है और पानी बहुत होता है।

तरमीम—(अ०) (सं० स्त्री०) संशोधन, दुरुस्ती, सुधार।

तरश्शुह—(अ०) (सं० पु०) छोटी-छोटी बूंदे, फुआर।

तरस—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) दया, अनुकंपा, रहम, (२) भय, डर। **तरस खाना**—दया करना, द्रवित होना।

तरह—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) प्रकार, क़िस्म, भाँति; (२) नमूना, नई बनावट, रचना, ढंग, तर्ज़; (३) ढब, अन्दाज़, वज़ा; (४) उपाय, युक्ति; (५) हाल, दशा, शारीरिक व मानसिक अवस्था; (६) समस्या, कविता का अंतिम चरण; (७) जड़, बुनियाद। **तरह दे जाना**—टालना।

तरह-दार—.ख़ूब-सूरत, बाँका, चटकीला।

तरह-दारी—.ख़ूब-सूरती, नाज़-अन्दाज़, अदा।

तराज़—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) कपड़े के नक़्श; (२) सजावट।

तराज़ू—(फ़ा०) (सं० पु०) तुला, काँटा, तोलने का यंत्र।

तराना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) गीत, गाना, राग; (२) एक विशेष प्रकार का गान।

तराना-ज़न, तराना-संज—तराना गानेवाला।

तरावत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) नमी, तरावट, आर्द्रता, ठंडक, .ख़ुनकी, तरी; (२) ताज़ा-पन, ताज़गी।

तराविश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) टपकना।

तरावीह—(अ०) (सं० स्त्री०) एक ख़ास नमाज़ जो रमज़ान में रात में पढ़ी जाती है।

तराश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) ईजाद; (२) ढंग, बनाव-सिंगार; (३) काट, ब्यौंत, काट-छाँट, बनावट; (४) तरबूज़ या ख़रबूज़े की फाँक।

तराशना—(फ़ा०) (क्रि०) काटना, कतरना, छाँटना।

तरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) नमी, गीलापन, आर्द्रता; (२) ठंडक, शीतलता; (३) कछार, तराई, जहाँ पानी इकट्ठा रहे और सील हो।

तरीक़—(अ०) (सं० पु०) (१) ढंग, दस्तूर, रीति, विधि; (२) मज़हब, आचरण, व्यवहार; (३) उपाय, युक्ति।

तरीक़त—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) मार्ग, राह; (२) शुद्ध आचरण।

तर्क—(अ०) (सं० पु०) परित्याग, त्याग, छोड़ना।

तर्कम-तर्का—(स्त्री०) (औ०) अन-बन, जुदाई, मिलना-जुलना बन्द होना।

तर्ज़—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) रीति, शैली, ढंग, अन्दाज़; (२) प्रकार, क़िस्म; (३) बनावट, रचना।

तर्जुमा—(सं० पु०) अनुवाद, उल्था।

तर्रा—(फ़ा०) (सं० पु०) तरकारी, साग-भाजी, सब्ज़ी। (शुद्ध तर्रह)

तर्रार—(अ०) (वि०) (१) तेज़, चालाक. चपल; (२) बहुत बोलनेवाला (३) बहानेबाज़, हीलागर।

तर्रारा—(अ०) (सं० पु०) (१) तेज़ी, चपलता; (२) चौकड़ी, कुलांच। तर्रारा भरना—कुलांच मारना।

तर्स—(अ०) (सं० पु०) दया, रहम।

तलक़ीन—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) नसीहत, उपदेश; (२) समझाना।

तलपेट—(हि०) (वि०) गुम, ग़ायब, तबाह, ख़राब।

तलफ़—(अ०) (वि०) नष्ट, बरबाद; गुम, ज़ाया, ख़राब।

तलफ़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) विनाश, बरबादी।

तलफ़्फ़ुज़—(अ०) (सं० पु०) उच्चारण।

तलब—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) खोज, तलाश; (२) ज़रूरत, आवश्यकता, माँग; (३) चाह, इच्छा, कामना; (४) बुलावा, बुलाना; (५) वेतन, तनख़्वाह।

तलबगार—(फ़ा०) (वि०) चाहनेवाला, ज़रूरत-मन्द।

तलब-नामा—(अ०) (सं० पु०) समन, बुलाने का आज्ञा-पत्र।

तलबाना—(अ०) (सं० पु०) बुलाने या तलब करने का ख़र्च।

तलबी—(अ०) (सं० स्त्री०) बुलाहट, माँग।

तलबीस—(अ०) (सं० स्त्री०) धोखा, मकर, फ़रेब, दग़ा।

तलमीह—(अ०) (सं० स्त्री०) लेख में किसी प्रसंग का उद्धरण करना।

तलव्वुन—(अ०) (सं० पु०) (१) रंग बदलना; (२) अस्थिरता, डाँवा-डोल चित्त। तलव्वुन-मिज़ाज—डाँवा-डोल मन या स्वभाव का।

तलाक़—(अ०) (सं० पु०) विवाह-विच्छेद; पति पत्नी का अलग होना।

तलाक़त—(अ०) (सं० स्त्री०) तेज़-ज़ुबानी; बहुत जीभ चलाना।

तलातुम—(अ०) (सं० पु०) (१) लहर, तरंग; (२) जोश, वलवला।

तलाफ़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) दोष का परिहार।

तलाबेली—(स्त्री०) (औ०) बेक़रारी, बेचैनी।

तलामली—(हि०) (स्त्री०) (औ०) बेचैनी, बे-कली; घबराहट, जल्दी।

तलाया—(अ०) (सं० पु०) फ़ौज का वह हिस्सा जो रात में नगर या फौज की रक्षा करे, रूंद।

तलावत—(अ०) (सं० स्त्री०) क़ुरान शरीफ़ का पाठ। (शुद्ध तिलावत)

तलाश—(तु०) (सं० स्त्री०) (१) खोज, ढूँढ; (२) आवश्यकता, चाहना।

तलाशी—(तु०) (सं० स्त्री०) (१) जाँच-पड़ताल, देख-भाल; (२) किसी वस्तु के लिए घर या किसी स्थान को उलट-पलट कर देखना; (३) खोज।

तलेदानी—(पु०) (औ०) क़ैंची, सुई, पेचक इत्यादि सिलाई के सामान रखने की थैली।

तल्क़—(अ०) (सं० पु०) अभ्रक।

तल्ख़—(फ़ा०) (वि०) (१) कटु, कड़वा; (२) अप्रिय, नापसंद, बदमज़ा।

तल्ख़-मिज़ाज—(फ़ा०) (वि०) कड़वे स्वभाव का; तीखी प्रकृति वाला।

तल्ख़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) पित्त, पित्ताशय; (२) चावल का सत्तू।

तल्ख़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) कटुता, कड़वापन; (२) स्वभाव का तीखापन।

तवंगर—(फ़ा०) (वि०) धनी, मालदार।

तवंगरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) धनाढ्यता, संपन्नता।

तवक़्क़ा—(अ०) (सं० स्त्री०) आशा, उम्मेद, भरोसा, आसरा।

तवक़्क़ुफ़—(अ०) (सं० पु०) देर, विलंब।

तवक्कुल—(अ०) (सं० पु०) संतोष, ईश्वर पर भरोसा रखना; आत्म-तुष्टि।

तवज्जह—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) ध्यान, रुख़, ग़ौर; (२) कृपा-दृष्टि, दया-भाव।

तवल्लुद—(अ०) (सं० पु०) जन्म, उत्पत्ति, पैदायश, प्राकट्य। तवल्लुद होना—पैदा होना, प्रकट होना।

तवस्सुल—(अ०) (सं० पु०) (१) सिफ़ारिश, ज़रिया; (२) ढूंढना।

तवांगर—(फ़ा०) (वि०) मालदार, धनी।

तवांगरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मालदारी, संपन्नता, धनी होना।

तवाज़ा—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) आदर-सत्कार, आव-भगत, ख़ातिर।

तवान-गर—(फ़ा०) (वि०) धनवान्।

तवाना—(फ़ा०) (वि०) बलवान्, शक्ति-सम्पन्न।

तवाफ़—(अ०) (सं० पु०) प्रदक्षिणा, किसी चीज़ के चारों तरफ़ फिरना।

तवायफ़—(उ०) (सं० स्त्री०) वेश्या, रंडी, नर्तकी।

तवारीख़—(अ०) (सं० स्त्री०) इतिहास, इतिवृत्ति।

तवारीख़ी—(अ०) (वि०) ऐतिहासिक, प्रसिद्ध।

तवारुद—(अ०) (सं० पु०) (१) साथ-साथ एक जगह उतरना; (२) एक ही विषय दो मनुष्यों के दिमाग़ में आना; (३) एक ही कविता का चरण दो कवियों को सूझना।

तवालत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) लंबाई, लम्बा होना; (२) बखेड़ा, झंझट; (३) अधिकता, खींच।

तवालुद—(अ०) (सं० पु०) औलाद पैदा करना।

तवील—(अ०) (वि०) लम्बा, बढ़ा हुआ। तूल-तवील—लम्बा-चौड़ा।

तवेला—(अ०) (सं० पु०) घुड़साल, जानवरों का बाड़ा। कहा०—तवेले की बला बन्दर के सर—किसी का क़सूर और सज़ा मिले दूसरे को।

तशकीक—(अ०) (सं० स्त्री०) शक, सन्देह।

तशख़ीस—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) निदान, रोग की पहचान; (२) निश्चय।

तशत्तुत—(अ०) (सं० पु०) परेशानी, घबराहट।

तशदीद—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) कठोर बनना, कड़ा करना; (२) एक चिह्न जिससे अक्षर को उर्दू-लिपि में द्वित्व करते हैं।

तशद्दुद—(अ०) (सं० पु०) कड़ाई, सख़्ती, ज़्यादती।

तशन्नुज—(अ०) (सं० पु०) जकड़ जाना, शरीर के अंगों का ऐंठ जाना।

तशफ़्फ़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) दिल-जमई, तसल्ली, ढारस, संतोष।

तशबीह—(अ०) (सं० स्त्री०) उपमा।

तशरीफ़—(अ०) (सं० स्त्री०) महत्त्व, आदर, इज़्ज़त से रखना। तशरीफ़ लाना—पधारना। तशरीफ़ रखना—बिराजना।

तशरीह—(अ०) (सं० स्त्री० (१) व्याख्या, टीका; (२) शरीर-शास्त्र।

तशवीश—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) फ़िक्र, चिन्ता; (२) घबराहट, परेशानी।

तशहीर—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) प्रसिद्ध करना, ढिंढोरा पीटना; (२) अपमानित करके सब को दिखाना।

तश्त—(फ़ा०) (सं० पु०) तसला, परात। तश्त-अज़-बाम होना—मशहूर होना, बदनाम होना, भेद खुलना, भांडा फूटना।

तश्तरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) थाली, छोटी रकाबी।

तसकीन—(अ०) (सं० स्त्री०) तसल्ली, तुष्टि, संतोष।

तसख़ीर—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) जादू;

(२) अपने अधिकार में करना, वशीभूत करना ।

तसग़ीर—(अ०) (सं० स्त्री०) संक्षिप्त करना, संक्षेप, छोटाई ।

तसदीग्र—(सं० स्त्री०) (१) कष्ट, पीड़ा, दुःख; (२) कठिनता, कठिनाई ।

तसदीक़—(अ०) (सं० स्त्री०) सच करना, सत्य होने का समर्थन करना; यक़ीन करना ।

तसद्दुक—(अ०) (सं० पु०) (१) .क़ुर्बानी, बलि; (२) वारना, निछावर करना; (३) दान, .ख़ैरात ।

तसनिया—(अ०) (सं० पु०) द्विवचन ।

तसनीफ़—(अ०) (सं० स्त्री०) कृति, लेख, पुस्तक, रचना ।

तसन्ना—(अ०) (सं० पु०) (१) नक़ली चीज़ बनाना; (२) बनाव, बनावट; (३) कारीगरी; (४) साज-सिंगार, श्रृङ्गार-पिटार । (शुद्ध तसन्नुअ)

तसफ़िया—(अ०) (सं० पु०) निर्णय, फ़ैसला, निश्चय ।

तसबीह—(अ०) (सं० स्त्री०) माला, सुमिरनी ।

तसमीम—(अ०) (सं० स्त्री०) मज़बूत करना, पक्का करना, पुष्टि ।

तसरीह—(अ०) (सं० स्त्री०) साफ़ साफ़ कहना, विस्तार पूर्वक वर्णन करना ।

तसर्रुफ़—(अ०) (सं० पु०) (१) ख़र्च, व्यय; (२) लगा देना, उपयोग; (३) चमत्कार, करामात; (४) अधिकार, कब्ज़ा, उपभोग ।

तसलसुल—(अ०) (सं० पु०) क्रम, सिल-सिला, श्रेणी ।

तसलीम—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) प्रणाम, बंदगी; (२) स्वीकार, क़बूल, मंज़ूर; (३) सौंपना, सुपुर्द करना ।

तसलीस—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) तीन हिस्सों में बाँटना; (२) त्रिगुट, तीन चीज़ों का समूह ।

तसल्ली—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) दिलासा, सांत्वना, आश्वासन; (२) संतोष, धैर्य ।

तसल्लुत—(अ०) (सं० पु०) हकूमत, शासन, क़ब्ज़ा, दख़ल ।

तसवीर—(अ०) (सं० स्त्री०) चित्र, सुन्दर छबि ।

तसव्वुफ़—(अ०) (सं० पु०) मुँह फेरना, तल्लीन होना, तन्मयता ।

तसव्वुर—(अ०) (सं० पु०) ध्यान, ख़याल, चिन्ता, फ़िक्र, सूझ ।

तसहील—(अ०) (सं० स्त्री०) सहज करना, आसान बनाना ।

तसहीह—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) संशोधन, सही करना; (२) मिलान, तुलना ।

तसानीफ़—(अ०) (सं० स्त्री०) कृति, रचना, (तसनीफ़ का बहुवचन) ।

तसावीर—(अ०) (सं० स्त्री०) चित्र, (तसवीर का बहुवचन) ।

तसाहुल—(अ०) (सं० पु०) (१) काहिली, आलस्य, सुस्ती; (२) ला-परवाही, उदासीनता, उपेक्षा ।

तस्कीन—(अ०) (स० स्त्री०) (१) तसल्ली, दिलासा, संतोष ।

तस्ख़ीर—(अ०) (सं० स्त्री०) वशीभूत करना, अधिकार में लाना; जादू-टोना ।

तस्नीफ़—(अ०) (सं० स्त्री०) कृति, रचना ।

तस्फ़ीया—(अ०) (सं० पु०) फ़ैसला, निर्णय, निबटारा, समझौता ।

तस्बीह—(अ०) (सं० स्त्री०) माला, सुमिरनी, ईश्वर का नाम लेना, नाम-जाप ।

तस्मा—(फ़ा०) (सं० पु०) फ़ीता, चमड़े का फ़ीता ।

तस्मिया—(अ०) (सं० पु०) नाम रखना, नाम रक्खी हुई ।

तस्लीम—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) प्रणाम, बंदगी; (२) क़बूल, मंजूर करना, स्वीकार करना; (३) सौंपना।

तस्लीस—(अ०) (सं० स्त्री०) तीन हिस्सों में बाँटना।

तस्वीर—(अ०) (सं० स्त्री०) चित्र; सुन्दर।

तह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) परत; (२) नीचे; (३) तला, पेंदा; (४) थाह, इन्तहा; (५) सूक्ष्मता; (६) तलछट, गाद; (७) फ़र्श, सतह, ज़मीन; (८) झलक; (९) बारीक और पतला वर्क़। तह ओ बाला—उलट-पलट। तह की बात—असली बात, गुर की बात। तह दर्ज़—नया कपड़ा। तहदार—मुश्किल, पेचदार, ज़ाहिर में कुछ, भीतर कुछ। तह-दिली—इत्मीनान, धैर्य। तहे दिल से—सच्चे दिल से। तह को पहुँचना—असली बात को पहचानना। तह जमाना—खाये हुए पर और खाना। तह टूटना—दिवाला निकलना। तह तोड़ना—कुछ बाक़ी न रखना, ख़ूब खाना। तह पाना—असल बात जान लेना।

तहक़ीक़—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) जाँच-पड़ताल, अनुसंधान; (२) प्रमाणित, जो जाँच से साबित हुआ हो। (वि०) प्रमाणित, ठीक।

तहक़ीक़ात—(अ०) (सं० स्त्री०) जाँच अनुसन्धान, पूछ-गछ।

तहक़ीर—(अ०) (सं० स्त्री०) ज़लील करना, अपमान, बेइज़्ज़ती।

तहक्कुम—(अ०) (सं० पु०) (१) ज़बरदस्ती की हुकूमत, ज़ोरावरी; (२) शासन, आधिपत्य।

तहख़ाना—(फ़ा०) (सं० पु०) घर के नीचे बना हुआ कमरा।

तह ज़र्द—(अ०) (वि०) नया कपड़ा।

तहज़ीब—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) सभ्यता, शिष्टाचार; (२) संस्कृति।

तहज़ीब-याफ़्ता—(अ०) (वि०) सभ्य, शिष्ट।

तहज्जी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) निन्दा करना, (२) हिज्जे।

तहज्जुद—(अ०) (सं० पु०) आधी रात के बाद की नमाज़।

तहज्जुर—(अ०) (सं० पु०) पत्थर की तरह सख़्त होना; कठिनता।

तहत—(अ०) (सं० पु०) (१) अधिकार, क़ब्ज़ा, क़ाबू; (२) नीचे का हिस्सा। तहत व तसर्रुफ़ में लाना—क़ब्जे में लाना, काम में लाना।

तहत-उल्-सरा—(अ०) (सं० स्त्री०) पाताल, पृथ्वी का सब से नीचे का परत।

तहत्तुक—(अ०) (सं० पु०) अपमान, बेइज़्ज़ती।

तह-देगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) देग की खुरचन, खुरचन।

तह-नशीन—(फ़ा०) (वि०) नीचे बैठा हुआ, पैंदे में बैठा हुआ। (सं० पु०) तलछट, गाद।

तहनियत—(अ०) (सं० स्त्री०) बधाई, मुबारकबादी।

तह-निशान—(फ़ा०) (सं० पु०) तलवार के दस्ते पर बने हुए बेल-बूटे।

तह-पेच—(फ़ा०) (सं० पु०) पगड़ी के नीचे पहनने की टोपी या कपड़ा।

तह-पोशी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पेटीकोट; साड़ी के नीचे पहनने का कपड़ा।

तह-बन्द—(फ़ा०) (सं० पु०) तहमद, लुंगी।

तह-बन्दी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) पुस्तकों की जुज़-बन्दी, हर फ़र्मे का अलग-अलग सीना; (२) कपड़े को किसी रंग का रंगने के पहले उस पर दूसरे रंग की ज़मीन चढ़ाना।

तह-बाज़ारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बाज़ारों की पटरी या सड़क पर बैठनेवाले दूकानदारों से वसूल किया जानेवाला टेक्स या किराया।

तहमद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) लुंगी, तहबन्द।

तहमीद—(अ०) (सं० स्त्री०) प्रशंसा, तारीफ़।

तहम्मुल—(अ०) (सं० पु०) सहन-शीलता, बरदाश्त।

तहरीक—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) आन्दोलन, प्रस्ताव, प्रगति; (२) हवा का चलना, हिलाना-डुलाना; (३) उत्तेजित करना, भड़काना, छेड़; (४) नज़ले की शिकायत।

तहरीफ़—(अ०) (सं० स्त्री०) बदल कर कुछ का कुछ कर देना।

तहरीर—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) लेख, लिखने का ढंग; (२) दस्तावेज़, तमस्सुक; (३) इबारत, मज़मून; (४) ख़त, चिट्ठी, रुक्क़ा; (५) गाने की आवाज़, गिटकरी; (६) लिखाई, लिखने की उजरत; (७) सुरमे की लकीर जो आँख के अन्दर खींचते हैं।

तहरीस—(अ०) लालच दिखाना, वरग़लाना।

तहरुक—(अ०) (सं० पु०) हिलना डुलना, गति।

तहलका—(अ०) (सं० पु०) (१) मृत्यु, मौत; (२) बरबादी, नाश; (३) गड़बड़, खलबली, धूम।

तहलील—(अ०) (सं० स्त्री०) गलना, घुलना; पचना।

तहवील—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) अमानत, धरोहर; (२) सुपुर्दगी; (३) ख़ज़ाना, कोश; जमा पूंजी।

तहवीलदार—(अ०) (सं० पु०) कोषाध्यक्ष, ख़ज़ांची।

तहसीन—(अ०) (सं० स्त्री०) प्रशंसा, तारीफ़, वाहवाह।

तहसील—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) लगान, ख़िराज, महसूल; (२) नफ़ा, फ़ायदा; (३) इकट्ठा करना; (४) विद्या सीखना, विद्योपार्जन; (५) तहसीलदार की कचहरी।

तहसील-दार—(अ०) (सं० पु०) वह अफ़सर जो ज़मींदारों से मालगुज़ारी व टेक्स वसूल करता है।

तहायफ़—(अ०) (सं० पु०) भेंट, नज़र। तुहफ़ा का बहुवचन।

तहारत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) नमाज़ से पहले हाथ-मुँह धोकर शरीर शुद्ध करना; (२) शुद्धता, पवित्रता।

तहाशी—(अ०) (सं० स्त्री०) घृणा, नफ़रत।

तही—(फ़ा०) (वि०) ख़ाली, रिक्त। (शुद्ध तिही)

तही-दस्त—(फ़ा०) (वि०) जिसका हाथ ख़ाली हो, धनहीन।

तही-मग़ज़—(फ़ा०) (वि०) मूर्ख, बेवकूफ़।

तहूर—(अ०) (वि०) पवित्र, पाक, पाक करनेवाला।

तहैया—(अ०) (सं० पु०) (१) सलाम करना, सलाम; (२) तैयारी, तत्परता।

तहैयुर—(अ०) (सं० पु०) अचंभा, आश्चर्य, विस्मय।

तहो-बाला—(फ़ा०) (वि०) (१) नष्ट, बरबाद, अस्त-व्यस्त; (२) ऊपर का नीचे, नीचे का ऊपर।

ता—(फ़ा०) (अव्यय) (१) एक के अन्त में आने से 'अनुपम' अर्थ होता है, जैसे—यकता; (२) तह, पेच, बल, जैसे दोता कमर, ज़ुल्फ़); (३) जब, जिस समय, यदि; (४) तक, पर्यन्त; (५) इस लिए, ताकि।

ताअत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) आज्ञा-पालन, सेवा; (२) ईश्वराराधन, उपासना।

ताअत-गाह—(अ०) (सं० स्त्री०) मसजिद।

ताईद—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) समर्थन, अनुमोदन; (२) हिमायत, रिआयत, पक्षपात, तरफ़दारी।

ताऊन—(अ०) (सं० पु०) महामारी, प्लेग, एक भीषण रोग।

ताऊस—(अ०) (सं० पु०) (१) मोर, मयूर; (२) एक पहुँचे हुए फ़क़ीर का नाम। तख़्ते-ताऊस—शाहजहाँ बादशाह का प्रसिद्ध रत्न-जटित मयूर-सिंहासन।

ताक—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अंगूर की बेल।

ताक़—(अ०) (सं० पु०) (१) मेहराबदार डाट जो दीवार में बनाते हैं, आला; (२) एक कपड़े का नाम; (३) विषम; (४) फ़र्द, अद्वितीय। ताक़ करना—यकता करना; दक्ष करना। ताक़ पर रखना—अलग रखना, भूल जाना, ख़याल छोड़ देना। ताक़ पर रखा रहना—बेकार होना, बे-असर होना। ताक़ भरना—मसजिद या मज़ार के ताक़ों में दीपक, फूल, बताशे रखना (अभीष्ट सिद्ध होने पर)।

ताक़चा—(फ़ा०) छोटा सा ताक़।

ताक़त—(अ०) (सं० स्त्री०) बल, शक्ति, सामर्थ्य, मजाल, हौसला।

ताक़त-वर—(अ०) (वि०) बलवान्, शक्ति-शाली, सामर्थ्यवान्, बलिष्ठ।

ताक़ा—(अ०) (सं० पु०) कपड़े का थान; ऊनी या रेशमी कपड़े का एक पीस।

ता-कि—(फ़ा०) (अव्यय) जिसमें, जिससे।

ताक़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) एक लम्बी टोपी। (वि०) घोड़ा, जिसकी एक आँख छोटी, एक बड़ी हो। (अ०) (वि०) भैंगा, कंजा।

ताकीद—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) हठ, ज़िद, आग्रह, अनुरोध; (२) बार-बार कही हुई या ज़ोर देकर कही हुई बात, चेतावनी।

ताकीदन्—(अ०) (क्रि० वि०) ज़ोर डाल कर, आग्रह-पूर्वक।

ताकीदी—(अ०) (वि०) ज़रूरी, सख़्त।

ताख़ीर—(अ०) (सं० स्त्री०) ढील, देर, विलंब।

ताख़्त—(फ़ा०) (सं० पु०) धावा, दौड़, लूट, आक्रमण, चढ़ाई।।

ताग़ी—(अ०) (वि०) सरकश, विद्रोही, आज्ञा उल्लंघन करनेवाला।

ताज—(अ०) (सं० पु०) (१) राज-मुकुट; (२) फ़क़ीरों की ख़ास टोपी; (३) कलंगी, तुर्रा; (४) पक्षियों के सिर की टोपी या कलंगी; (५) मकान का छत्ता, दीवार की कंगनी; (६) मकान का गुम्मट; (७) गंजफ़े का एक रंग; (८) ताज-महल।

ताज़—(फ़ा०) (सं० पु०) हमला, दौड़; (२) माशूक़, कमीना। ताज़-ो तक—दौड़-धूप, महनत।

ताज़गी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) हरापन, सरसब्ज़ी, नयापन, रौनक़।

ताज-दार—(अ०) (सं० पु०) बादशाह, सम्राट्।

ताज-दारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मुल्क, राज, सल्तनत।

ताज़ा—(फ़ा०) (वि०) (१) हरा, नया, (२) स्वस्थ; (३) जो थका या श्रमित न हो; (४) नया जारी किया हुआ।

ताज़ियत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) मातमपुरसी, समवेदना प्रकट करना; (२) शोक करना।

ताज़ियत-नामा—(अ०) (सं० पु०) शोक-सूचक पत्र।

ताज़िया—(अ०) (सं० पु०) बाँस और काग़ज़ से क़ब्र की शक्ल बनाते हैं, जिसके सामने इमाम हुसेन की मौत का मातम किया जाता है।

ताज़िया-दारी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) ताज़िया बनाना, (२) मातम करना।

ताज़ियाना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) कोड़ा, क़मची, चाबुक; (२) कोड़े लगाने की सज़ा।

ताजिर—(अ०) (सं० पु०) व्यापारी, सौदागर।

ताज़ी—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) अरब का; (२) अरब देश का घोड़ा; (३) शिकारी कुत्ता। (सं० स्त्री०) अरबी भाषा। (वि०) नई, बासी नहीं। कहा०—ताज़ी मारा, तुरकी काँपा—एक को सज़ा देने से दूसरे को भी नसीहत हो जाती है।

ताज़ी-ख़ाना—(फ़ा०) (सं० पु०) कुत्तों का तवेला।

ताज़ीम—(अ०) (सं० स्त्री०) सम्मान करना, सम्मानार्थ खड़े होकर प्रणाम करना।

ताज़्ज़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) आज़ुर्दा होना, पस्त होना।

ताजू—(वि०) (औ०) बेरहम औरत, वह औरत जो भाई के साथ दुर्व्यवहार करे।

तातील—(अ०) (सं० स्त्री०) छुट्टी।

तादाद—(अ०) (सं० स्त्री०) संख्या, गिनती।

तादीब—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) सुधारना; (२) भाषा और साहित्य की शिक्षा।

तादीब-ख़ाना—(अ०) (सं० पु०) सुधार-गृह।

ताना—(अ०) (सं० पु०) व्यंग्य, आवाज़ा-तवाज़ा।

ताना-तिश्ना—बुरा-भला, लानत-मलामत।

तानीस—(अ०) (सं० स्त्री०) स्त्री लिंग।

ताफ़ां—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार की मुलायम मोटी ख़ुरदरी रोटी।

ताफ़्ता—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) एक चमकदार रेशमी कपड़ा; (२) एक ख़ास रंग का घोड़ा; (३) (वि०) गरम, पेचीदा, रोशन।

ताब—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) हरारत, गरमी; (२) रौनक़, रोशनी, चमक; (३) मजाल, शक्ति, सामर्थ्य; (४) सब्र, धैर्य, संयम; (५) पेचदगी, बल।

ताबअ—(अ०) (वि०) आज्ञाकारी, नौकर, आश्रित, पाबंद।

ताबईन—(अ०) (सं० पु०) (१) आज्ञानुवर्ती; (२) वे मुसलमान जिन्होंने मोहम्मद साहब के साथियों से भेट की हो।

ताब-ख़ाना—(फ़ा०) (सं० पु०) गरम कमरा, रोटी पकाने का तन्दूर।

ताबड़-तोड़—(हि०) (औ०) लगातार, ऊपर-तले।

ताब-दान—(फ़ा०) (सं० पु०) खिड़की, रोशन-दान।

ताब-दार—(फ़ा०) (वि०) (१) चमकदार; (२) पेचदार, ख़मदार।

ताबह—(फ़ा०) (सं० पु०) तवा।

ताबान—(फ़ा०) (वि०) (१) रोशन, चमकदार, (२) बल खाये हुए।

ताबिश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) गरमी, हरारत; (२) चमक, धूप की चमक।

ताबीर—(अ०) (सं० स्त्री०) फल, स्वप्न का फल।

ताबूत—(अ०) (सं० पु०) (१) मुर्दे की संदूक़, जनाज़ा, लाश; (२) एक प्रकार का ताज़िया।

ताबे—(अ०) (वि०) वशीभूत, अधीन, मातहत, पाबंद।

ताबेदार—(अ०) (वि०) आज्ञाकारी।

ताबेदारी—(अ०) (सं० स्त्री०) आज्ञा पालन करना।

ताम—(अ०) (वि०) पूरा, तमाम, कुल।

तामअ—(अ०) (वि०) लालची, लोभी।

ताम-जान, ताम-दान, तान-जान—(लख०) हवादार, एक प्रकार की पालकी।

ताम-झाम—(पु०) (देह०) हवादार, पालकी।

तामीर—(अ०) (सं० स्त्री०) मकान बनाने का काम, मकान बनवाना।

तामील—(अ०) (सं० स्त्री०) आज्ञा-पालन, पूरा करना।

ताम्मुल—(अ०) (सं० पु०) (१) असमंजस, आगा-पीछा; (२) दुबधा, संदेह, संकोच।

तायफ़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) गिरोह, फ़िरक़ा, क़ौम; (२) वेश्या और उसके साथी; (३) यात्रियों की मंडली।

तायब—(अ०) (वि०) तोबा करनेवाला।

तायर—(अ०) (सं० पु०) पक्षी, चिड़िया, उड़नेवाला।

तार—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सूत, धागा; (२) (औ०) छल्ला, अँगूठी, ज़ेवर का हिस्सा; ३) धातु को पीट कर खींचा हुआ पतला तागा; (४) चाशनी का चेप; (५) सिलसिला, क़तार; (६) टुकड़े, रेज़ा; (७) अँधेरा। तार-तिड़ंगा—(औ०) झिर-झिरा, बहुत पतला। तार-तोड़—कार-चोबी, एक प्रकार का सुई का काम जो कपड़े पर होता है। तार बँधना—किसी काम का लगातार होना। तार-बाँधना—कोई काम लगातार किये जाना।

तार-कश—(फ़ा०) (सं० पु०) सोने-चाँदी का तार खींचनेवाला।

तार-कशी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) धातु के तार खींचने का काम।

तार-बरक़ी—(फ़ा०) (सं० पु०) ख़ास इशारों से ख़बर पहुँचाने का यन्त्र।

तारम—(सं० पु०) लकड़ी का घर, कोठा।

तारा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सितारा, नक्षत्र; (२) आँखों की पुतली। (वि०) बहुत ऊँचा। तारे गिनना—परेशानी में रात काटना। तारे दिखाई देना—मुसी-बत पड़ना।

ताराज—(फ़ा०) (सं० पु०) लूट, बरबादी।

तारिक—(अ०) (वि०) त्यागी, छोड़ने-वाला। तारिक-उद्-दुनिया—संसार-त्यागी।

तारी—(अ०) (वि०) (१) छा जाने वाला, ग़ालिब हो जाने वाला, घेरनेवाला।

तारीक—(फ़ा०) (वि०) धुंधला, काला, अँधेरा, अंधकार पूर्ण।

तारीकी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अन्धेरा, अन्धकार, धुंधलापन।

तारीख़—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) दिन, तिथि; (२) विशेष घटना का दिन; निश्चित दिन। तारीख़वार—तारीख़ों के क्रम से।

तारीफ़—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) प्रशंसा; (२) लक्षण, परिभाषा; (३) वर्णन, विव-रण; (४) गुण, विशेषता।

तालअ—(अ०) (सं० पु०) भाग्य, क़िस-मत, नसीबा।

तालए-बेदार—(फ़ा०) (सं० पु०) ख़ुश-क़िस्मती; (२) माशूक़।

तालअ-वरी—(स्त्री०) ख़ुशनसीबी, भाग्य।

तालाब—(हि०) (सं० पु०) जलाशय, सरोवर।

तालिब—(अ०) (वि०) (१) तलाश करने-वाला, चाहनेवाला।

तालिब-इल्म—(अ०) (सं० पु०) विद्यार्थी।

तालीक़ा—(अ०) (सं० पु०) सूची, फह-रिस्त।

तालीफ़—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) संग्रह, संकलन; (२) परस्पर प्रेम करना।

तालीम—(अ०) (सं० स्त्री०) उपदेश, शिक्षा।

तालीम-याफ़्ता—(वि०) शिक्षित।

तालील—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) युक्ति देना; (२) शब्द के स्वरों का परिवर्तन।

ताले-वर—(अ०) (वि०) धनी, मालदार।

ताल्लुक़—(अ०) (सं० पु०) सम्बन्ध, लगाव।

ताल्लुफ़—(अ०) (सं० पु०) दोस्ती, उलफ़त।

ता-वक्तेकि—उस वक्त तक, जब तक।

तावान—(फ़ा०) (सं० पु०) जुर्माना, दंड, बदला, डांड़।

तावीज़—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) जंतर, यंत्र; (२) कवच।

तावील—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) व्याख्या; (२) ज़ाहिरी मतलब से किसी बात को फेर देना; (३) बहाना, बचाव की दलील।

ताश—(अ०) (सं० पु०) (१) रेशमी ज़री का कपड़ा, बादला, ज़रबफ़्त; (२) खेलने के लिए काग़ज़ के बने चित्र-दार पत्ते; (३) काग़ज़ का टुकड़ा जिस पर तागा लपेटा रहता है। कहा०—ताश पर मूंज का बखिया—बे-जोड़ बात।

ताशा—(अ०) (सं० पु०) चमड़ा मढ़ा हुआ ढाल की तरह का बाजा।

तास—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) बड़ा थाल; (२) (उ०) एक रेशमी कपड़ा।

तासा—(अ०) (सं० पु०) एक बाजे का नाम।

तासीर—(अ०) (सं० स्त्री०) प्रभाव, फल, नतीजा, असर।

तास्सुफ़—(अ०) (सं० पु०) अफ़सोस, दुःख, रंज-मलाल।

तास्सुब—(अ०) (सं० पु०) पक्षपात, तरफ़दारी।

ताहम—(फ़ा०) (अव्यय) तो भी, तिस पर भी, तद्यपि।

ताहिर—(अ०) (वि०) पाक साफ़।

ताहिरी—(अ०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार की खिचड़ी।

तिक-ओ-दौ—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) चिन्ता, फ़िक्र; (२) दौड़-धूप, उधेड़बुन। (शुद्ध तगोदौ)

तिक्का—(फ़ा०) (सं० पु०) मांस का टुकड़ा, (अ०) इज़ारबन्द।

तिजारत—(अ०) (सं० स्त्री०) व्यापार।

तिजारती—(अ०) (वि०) व्यापार-सम्बन्धी।

तितमा—(अ०) (सं० पु०) बचा हुआ, बाक़ी, शेष। (शुद्ध ततिम्मा)

तितर-बितर—(हि०) (वि०) परेशान, अलग-अलग, अस्त-व्यस्त।

तिफ़्ल—(अ०) (सं० पु०) बालक, बच्चा, लड़का।

तिफ़्ली—(अ०) (सं० स्त्री०) बचपन, नादानी।

तिब—(अ०) (सं० स्त्री०) यूनानी चिकित्सा-पद्धति।

तिबाबत—(अ०) (सं० स्त्री०) वैद्यक, हिकमत, हकीम का पेशा।

तिब्बी—(अ०) (वि०) यूनानी चिकित्सा-सम्बन्धी।

तिरयाक़—(अ०) (सं० पु०) ज़हर की दवा; अफ़ीम।

तिलवास—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (औ०) बेचैनी, बेक़रारी।

तिलस्म—(यू०) (सं० पु०) (१) जादू का तमाशा, भानमती का तमाशा; (२) इन्द्रजाल, करामात।

तिलस्मात—(सं० पु०) तिलस्म का बहुवचन; अचंभे में डालनेवाला।

तिलस्मी—(यू०) (वि०) तिलस्म-सम्बन्धी।

तिला—(फ़ा०) (सं० पु०) मालिश का तेल। (अ०) (सं० पु०) सोना, स्वर्ण।

तिला—(फ़ा०) (सं० पु०) सोना।

तिलाई—(अ०) (वि०) (१) सोने का, सुनहरा, (२) एक रंग का नाम।

तिलाकारी—(अ०) (सं० स्त्री०) सोने का मुलम्मा करने का काम।

तिला-कोब—(वि०) सोने के वरक़ बनाने वाला।

तिलादानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सूई, तागा, कैंची रखने की थैली।

तिलाम—(अ०) (सं० पु०) नौकर, ख़ादिम।

तिलावत—(अ०) (सं० स्त्री०) क़ुरान शरीफ़ का पाठ।

तिश्ना—(अ०) (सं० पु०) व्यंग्य, ताना; लानत, धिक्कार।

तिहाल—(अ०) (सं० स्त्री०) तिल्ली, प्लीहा।

तीनत—(अ०) (सं० स्त्री०) प्रकृति, स्वभाव, आदत।

तीमार—(फ़ा०) (सं० पु०) इलाज, चिकित्सा।

तीमार-दार—(फ़ा०) (वि०) रोगी की सेवा-सुश्रूषा करनेवाला।

तीर—(फ़ा०) (सं० पु०) बाण, शर।

तीर-अन्दाज़—(फ़ा०) (वि०) तीर चलाने वाला।

तीर-ब-हदफ़—निशाने पर ठीक बैठनेवाला तीर।

तीर-गर—(फ़ा०) (वि०) तीर बनानेवाला।

तुंग—(फ़ा०) (सं० पु०) अन्न रखने का बोरा।

तुकमा—(तु०) (सं० पु०) हलक़ा; घुंडी फसाने का फंदा।

तुक्का—(फ़ा०) (सं० पु०) तीर, बान; वह तीर जिसमें नोक की जगह घुंडी हो।

तुख़्म—(फ़ा०) (सं० पु०) बीज; औलाद; अंडा, गुठली।

तुख़्मा—(अ०) (सं० पु०) अपच, बद-हज़मी; औलाद।

तुग़यान—(अ०) (सं० पु०) ज़्यादती, जुल्म।

तुग़यानी—(अ०) (सं० स्त्री०) नदी की बाढ़, बहिया।

तुग़रल—(तु०) (सं० पु०) एक शिकारी पक्षी।

तुग़लक़—(अ०) (सं० पु०) सरदार, नेता।

तुज़ुक—(तु०) (सं० पु०) (१) शोभा, शान शौकत, जलूस; (२) क़ानून, नियम; (३) वह घटना जिसे ख़ुद बादशाह ने लिखा हो।

तुतुक—(फ़ा०) (सं० पु०) परदा, ख़ेमा

तुनक—(फ़ा०) (वि०) (१) दुर्बल, कमज़ोर; (२) नाज़ुक, सुकुमार; (३) हलका, सूक्ष्म।

तुनक-ज़रफ़—(फ़ा०) (वि०) ओछा, पेट का हलका, जिससे बात न पचे।

तुनक-मिज़ाज—(फ़ा०) (वि०) चिड़चिड़ा, बात-बात पर चिढ़ने वाला।

तुनक-हवास—(फ़ा०) (वि०) जिसका मन बहुत जल्दी प्रभावित हो जाय।

तुन्द—(फ़ा०) (वि०) (१) तेज़, उग्र; (२) भीषण, विकट; (३) कड़वा, कटु; (४) झल्ला, क्रोधी।

तुन्द-ख़ू—(फ़ा०) (वि०) कड़े मिज़ाज का तेज़-मिज़ाज।

तुन्दबाद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) आँधी।

तुन्द-राय—अदूरदर्शी।

तुन्दी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) बद-मिज़ाजी, उग्रता; (२) तेज़ी, तीक्ष्णता।

तुपक—(तु०) (सं० स्त्री०) तोप।

तुपकची—(अ०) (सं० पु०) तोपची, तोप चलानेवाला।

तुफ़ंग—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बंदूक़।

तुफ़ंगची—(फ़ा०) (सं० पु०) बंदूक़ चलानेवाला।

तुफ़—(अव्यय) धिक्कार।

तुफ़ैल—(अ०) (सं० पु०) वास्ता, ज़रिया, साधन।

तुफ़ैलिया—(उ०) (सं० पु०) ख़ुशामदी, तुफ़ैली, पिट्ठू।

तुफ़ैली—(अ०) (वि०) बे-बुलाये किसी के साथ दावत में चला जानेवाला।

तुम-तराक—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) तड़क-भड़क, शान-शौकत, (२) ठसक।

तुरंगबीन—एक प्रकार की शक्कर, तुरंज-बीन।

तुरंज—(फ़ा०) (सं० पु०) बड़ा नीबू; बड़ा बूटा।

तुरंजबीन—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार की शक्कर जो ऊँट कटारे के कांटों पर जम जाती है।

तुरफ़त्-उल् ऐन—(अ०) (सं० पु०) पल, पलक मारने का समय।

तुरफ़ा—(अ०) (वि०) अनोखा, अजीब।

तुरब—(अ०) (सं० स्त्री०) .खुशी, हर्ष।

तुरबत—(अ०) (सं० स्त्री०) क़ब्र, मज़ार।

तुरबुद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक दवा का नाम।

तुराब—(अ०) (सं० पु०) (१) ज़मीन, पृथ्वी, धरती; (२) मट्टी, ख़ाक।

तुर्क—(तु०) (सं० पु०) (१) तुर्किस्तान का रहनेवाला; (२) सिपाही; (३) माशूक़।

तुर्कमान—(फ़ा०) (सं० पु०) एक जाति का नाम।

तुर्कसवार—(तु०) (सं० पु०) घुड़-सवार।

तुर्की—(तु०) (सं० स्त्री०) (१) तुर्किस्तान की भाषा; (२) तुर्किस्तान का घोड़ा, एक प्रकार का घोड़ा; (३) मर्दानगी, सिपाहीपन; (४) अभिमान। तुर्की-ब-तुर्की जवाब देना—कोई कहे वैसा ही उत्तर देना, कड़ा जवाब देना। तुर्की तमाम होना—घमंड निकालना, सारी बहादुरी निकल जाना।

तुर्फ़ा—(अ०) (वि०) नया, अनोखा, अजीब।

तुर्फा-तमाशा—आश्चर्य-कारी तमाशा, कौतुक।

तुर्रा—(अ०) (सं० पु०) (१) .जुल्फ़, बल खाये हुए बाल, सिर के बालों की लट; (२) सोने के तारों का गुच्छा; (३) फुँदना, फूलों की लड़ियों का बना गुच्छा; (४) जानवर के सिर की चोटी; (५) भंग, चुसकी; (६) अनोखी बात; (७) भलाई, .खूबी।

तुश—(फ़ा०) (वि०) खट्टा, कठोर, ना-.खुश।

तुश-रू—(फ़ा०) (वि०) बद-मिज़ाज, चिड़चिड़ा।

तुर्श-रूई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) चिड़चिड़ा-पन, कड़ी बातें कहना।

तुर्शी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) खट्टापन, सख़्ती, कठोरता।

तुलूअ—(अ०) (सं० पु०) उदय होना, निकलना।

तुहफ़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) सौग़ात, नज़र, भेंट, इनाम। (वि०) अच्छा, बढ़िया, नफ़ीस।

तूग़—(तु०) (सं० पु०) सेना का झंडा और निशान।

तूत—(सं० पु०) शहतूत।

तूतिया—(अ०) (सं० पु०) नीला थोथा, तुत्थ।

तूती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) छोटा तोता; (२) एक प्रकार की छोटी चिड़िया; (३) मुँह से बजाने का छोटा सा बाजा। किसी की तूती बोलना—प्रसिद्ध होना, धाक होना। नक़्क़ार-ख़ाने में तूती की आवाज़—बड़ों के सामने छोटों की कोई नहीं सुनता।

तूदा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) टीला; (२) खेत की सीमा, ठिया; (३) अम्बार, ढेर; (४) मट्टी का टीला जिस पर निशाना लगाने का अभ्यास करते हैं; (५) तीर।

तूदा-बन्दी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) खेतों की ठिया-बन्दी करना, हद-बन्दी।

तूफ़ान—(अ०) (सं० पु०) (१) अंधड़; (२) बाढ़, बहिया; (३) आफ़त; (४) गुल-शोर; (५) झगड़ा, बखेड़ा; (६) (औ०) झूठा आरोप, तोहमत।

तूफ़ानी—(अ०) (वि०) (१) बखेड़िया, उपद्रवी, शैतान; (२) उग्र, प्रचंड।

तूमार—(अ०) (सं० पु०) (१) काग़ज़ों का मुट्ठा; (२) ढेर, अटाला; (३ झूठी बातें। तूमार बाँधना—छोटी बात बढ़ा कर कहना, झूठ का पुल बाँधना।

तूर—(अ०) (सं० पु०) एक पर्वत का नाम।

तूल—(अ०) (सं० पु०) लम्बाई, विस्तार, फैलाव। तूल-तवील—लम्बा-चौड़ा। तूल पकड़ना—बात का बढ़ जाना।

तूल-बलद—(अ०) (सं० पु०) (भूगोल) देशान्तर।

तूस—(अ०) (सं० पु०) एक प्रकार का मुलायम दलदार ऊनी कपड़ा।

तूसी—(अ०) (वि०) एक प्रकार का रंग।

तेग़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) तलवार, खड्ग।

तेग़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) तलवार; (२) कुश्ती लड़ने का एक दाव; (३) मेह-राब, डाट।

तेज़—(फ़ा०) (वि०) (१) तीव्र बुद्धिवाला, ज़हीन; (२) महँगा; (३) जल्दी चलने-वाला; (४) पैना; (५) फ़ुरतीला; (६) उत्कट, तीक्ष्ण।

तेज़-दस्त—(फ़ा०) (वि०) जल्दी काम करनेवाला, फ़ुरतीला।

तेज़-मिज़ाज—(फ़ा०) (वि०) क्रोधी, जल्दी नाराज़ हो जानेवाला।

तेज़-रफ़्तार—(फ़ा०) (वि०) जल्दी चलने-वाला।

तेज़ाब—(फ़ा०) (सं० पु०) अम्ल-सार, एसिड।

तेज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) तीव्रता, तीक्ष्णता; (२) शीघ्रता, जल्दी; (३) महँगी, भाव का ऊँचा हो जाना; (४) बुद्धि की प्रखरता।

तेशा—(फ़ा०) (सं० पु०) एक औज़ार, बसूला।

तै—(अ०) (सं० पु०) (१) निबटारा, फ़ैसला, पूर्ति। (वि०) जिसका फ़ैसला हो चुका हो; निश्चित, स्वीकृत।

तैनात—(अ०) (वि०) नियुक्त, नियत, मुक़र्रर।

तैनाती—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) नियुक्ति, तक़र्रुर; (२) विशिष्ट पहरा।

तैयार—(अ०) (वि०) (१) बहुत उड़ने-वाला; (२) मुस्तैद, आमादा, प्रस्तुत; (३) उद्यत, तत्पर; (४) पूर्ण, ठीक, दुरुस्त; (५) काम के लिए उपयुक्त, लैस; (६) उपस्थित, मौजूद; (७) हृष्ट-पुष्ट।

तैयारा—(अ०) (सं० पु०) एक प्रकार का फ़ौजी गुब्बारा; हवाई जहाज़।

तैयारी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) दुरुस्ती; (२) मुस्तैदी; (३) पुष्टता; (४) सजावट; (५) धूम-धाम।

तैर—(अ०) (सं० पु०) पक्षी, परंद।

तैश—(अ०) (सं० पु०) झुँझलाना, गुस्सा, जोश, क्रोध, आवेश।

तोग़—(तु०) (सं० पु०) फ़ौज का निशान।

तोदरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक दवा का नाम।

तोप—(तु०) (सं० स्त्री०) (१) एक बड़ा अस्त्र, जिससे बड़े बड़े गोले बारूद की मदद से छोड़े जाते हैं।

तोपख़ाना—(तु०) (सं० पु०) तोप रखने की जगह; तोपों की फ़ौज।

तोपची—(तु०) (सं० पु०) तोप चलाने-वाला।

तोबड़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) घोड़े को दाना चढ़ाने का टाट या चमड़े का थैला; (२) मुँह।

तोबा—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) प्रायश्चित, आगे किसी काम को न करने का प्रण।

तोरा—(तु०) (सं० पु०) (१) कई प्रकार की खाद्य सामग्री से सज्जित थाल; (२) (औ०) इज़्ज़त, रुतबा, अभिमान; (३) क़ायदा, चंगेज़ ख़ाँ का क़ानून।

तोश—(तु०) (सं० पु०) (१) छाती, सीना; (२) ताक़त, शक्ति, साहस।

तोशक—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) रुईदार बिस्तर।

तोशक-ख़ाना—(फ़ा०) (सं० पु०) वह मकान जिसमें अमीरों की पोशाक रहती है।

तोश-दान—(फ़ा०) (सं० पु०) वह बर्तन जिसमें सफ़र के लिए खाना रखते हैं।

तोशा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) भोजन, खाद्य-सामग्री; (२) वह खाना जो यात्री रास्ते के लिए अपने साथ रखता है, पाथेय।

तोशा-ख़ाना—(तु० फ़ा०) (सं० पु०) वह मकान जहाँ अमीरों की पोशाक रहती है।

तोहफ़गी—(अ०) (सं० स्त्री०) उत्तमता, नफ़ासत, अच्छापन।

तोहफ़ा—(अ०) (सं० पु०) सौगात, भेंट, नज़र, उपहार। (वि०) बढ़िया, नफ़ीस, उम्दा।

तोहमत—(अ०) (सं० स्त्री०) झूठा कलंक, झूठा आरोप।

तोहमती—(अ०) (वि०) कलंक लगाने-वाला।

तौ—(फ़ा०) (सं० पु०) परत, तह।

तौअम—(अ०) (सं० पु०) यमज, जुड़वाँ, मिथुन राशि।

तौक़—(अ०) (सं० पु०) (१) गले में डालने का हलक़ा; (२) गले में पहनने का एक ज़ेवर; (३) पक्षी या जानवरों के गले का वृत्ताकार जन्मजात निशान; (४) चपरास।

तौक़ीर—(अ०) (सं० स्त्री०) प्रतिष्ठा, आदर, इज़्ज़त।

तौज़ीह—(अ०) (सं० स्त्री०) हिसाब की तफ़सील, चिट्ठा।

तौफ़ीक़—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) हौसला, ताक़त; शक्ति, सामर्थ्य; (२) श्रद्धा, भक्ति; (३) ईश्वर की कृपा, पुष्टि।

तौफ़ीर—(अ०) (सं० स्त्री०) मुनाफ़ा, ज़्यादती।

तौर—(अ०) (सं० पु०) (१) तर्ज़, ढंग, चाल-ढाल; (२) दशा, अवस्था; (३) तरह, प्रकार। तौर बे तौर होना—(औ०) हालत बिगड़ना, मरने के समीप होना।

तौर तरीक़ा—(अ०) (सं० पु०) रंग-ढंग, व्यवहार।

तौरेत—(सं० पु०) वह आसमानी किताब जो हज़रत मूसा पर उतरी थी।

तौसीअ—(अ०) (सं० स्त्री०) कुशादगी, फैलाव, विस्तार।

तौसीफ़—(अ०) (सं० स्त्री०) गुण बतलाना, परिभाषा।

तौहीद—(अ०) (सं० स्त्री०) एक ही ईश्वर को मानना, एकेश्वरवाद।

तौहीन—(अ०) (सं० स्त्री०) अपमान, बे-इज़्ज़ती, हतक।

तौहीनी—(अ०) (सं० स्त्री०) हतक, अप्रतिष्ठा, मान-हानि।

थ

थई—(हि०) (सं० स्त्री०) एक के ऊपर एक रक्खे हुए पान, या कपड़े या रोटियाँ।

थक्का—(हि०) (सं० पु०) लोंदा।

थत्थी, थर्थी—(हि०) (सं० स्त्री०) ढेर, ढेरी।

थपक—(हि०) थपकी देना। थपक थपक कर रखना—थाम थाम कर रखना; सांत्वना देकर रोकना।

थपकी—(हि०) (सं० स्त्री०) हथेली से धीरे धीरे चोट लगाना।

थप्पड़—(हि०) (सं० पु०) लप्पड़, तमाँचा; तेज़ हवा का झोंका। थपड़ी—ताली, दोनों हथेलियाँ बजाना। थपड़ी बजाना—अपमान करना। थपड़ी बजना—बदनामी होना।

थपेड़ा—(हि०) (सं० पु०) तमाँचा, तेज़ हवा का झोंका।

थमना—(हि०) (क्रि०) रुकना, बंद होना, ठहरना।

थमाना—(हि०) (क्रि०) हवाले करना, पकड़ाना। थमा रहना—रुका रहना।

थरथर—(हि०) (वि०) काँपता हुआ। थरथराना—काँपना। थरथरी—कँपकँपी; जूड़ी, ज्वर जिसमें शरीर काँपता है।

थर्राना—(हि०) (क्रि०) काँपना, भय से काँपना। थर्राहट—कँपकँपी, काँपना।

थल—(हि०) (सं० पु०) जगह, धरती, स्थल; शेर के रहने का स्थान, ठहरने की जगह।

थलथल—(हि०) (वि०) ढीला, बेकसा।

थाँग—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) पता, खोज, भेद; (२) चोरों का स्थान। थाँग लगाना—चोरी का पता लगाना। थाँगी—चोरों को पता देनेवाला, सहायक।

थाँवला—(हि०) (सं० पु०) थाला, वह गड्ढा जो पेड़ के चारों ओर पानी के लिए बना दिया जाता है।

थाप—(हि०) (सं० स्त्री०) थप्पड़; तबले या ढोलक की आवाज़; पूरे हाथ का निशान; मिट्टी या सफ़ेदी का निशान जो ईंटों इत्यादि के ढेर पर इसलिए लगाते हैं कि यदि कोई ले तो मालूम हो जाय।

थापना—(हि०) (क्रि०) गोबर पाथना, उपले पाथना; मूर्ति स्थापित करना। (सं० स्त्री०) देवी की पूजा जो वर्ष में दो बार होती है।

थापी—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) कुम्हार का बर्तन बनाने का औज़ार; (२) थपकी; (३) चूना या मिट्टी कूटने का काठ का औज़ार।

थान—(हि०) (सं० पु०) (१) तबेला, घोड़ा बाँधने का स्थान; (२) देव-स्थान; (३) कपड़े का पूरा टुकड़ा जो बुना जाय; (४) सिक्के की संख्या; (५) खेत, वंश। थान का टर्रा—जो अपने घर पर नटखटपन करे। थान में आना—थकावट मिटाने को घोड़े का धूल में लोटना।

थाना—(हि०) (सं० पु०) (१) पुलिस की चौकी, कोतवाली; (२) ग्राम में ज़मींदारी का मकान। थाना बिठाना—पहरा बैठाना।

थामना—(हि०) (क्रि०) रोकना, पकड़ना, सहारा देना।

थाल—(हि०) (सं० पु०) बड़ी थाली; भोजन विशेष।

थाला—(हि०) (सं० पु०) वह गड्ढा जो पेड़ के नीचे पानी के लिए बनाते हैं, थाँवला; थाली, छोटी रक़ाबी, तश्तरी।

थाली—(हि०) (सं० स्त्री०) तश्तरी, छोटा थाल। थाली बजना—साँप के विष उतारने को मंत्र पढ़कर थाली बजाते हैं। थाली फिरना—इतनी भीड़ होना कि यदि थाली फेंकी जाय तो लोगों के सिरों पर ही फिरती रहे, ज़मीन पर न गिरे। थाली का बैंगन—वह मनुष्य जो स्थिर बुद्धि न हो, कभी इधर ढुलके कभी उधर। थाली फूटी तो फूटी, झंकार तो सुनी—मतलब पूरा करने के लिए नुक़सान का ख़याल न करने के मौक़े पर कहा जाता है।

थाह—(हि०) (सं० स्त्री०) नदी या कुँवे की ओंड़ाई, गहराई; पता, परिणाम; अभिप्राय।

थिगली—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) पेवन्द, जोड़; (२) झोंपड़ा।

थिरकना—(हि०) (क्रि०) ठिठकना, रुकजाना।

थिरकना—(हि०) (क्रि०) नाचना, फुदकना, फड़कना।
थिरना—(हि०) (क्रि०) धूल मिट्टी का पानी की तह में बैठ जाना; पानी का निर्मल हो जाना।
थिराना—(हि०) (क्रि०) स्थिर हो जाना, तह बैठ जाना।
थुक्कम-थुक्का—(हि०) (सं० स्त्री०) लड़ाई-झगड़ा।
थुक्का-फ़ज़ीहत—(हि०) (सं० स्त्री०) कहासुनी, तकरार, झगड़ा।
थुथना—(हि०) क्रोध के समय मुँह बनाना—थुथना चढ़ना।
थुड़-जिया, थुड़ दिला—(हि०) (वि०) डरपोक, कायर, कम हिम्मत।
थुतकारना—(हि०) (क्रि०) थू थू करना, घृणा करना।
थूथन—(हि०) (सं० पु०) मुँह, क्रोध पूर्ण मुख।
थू-थू होना—(हि०) (क्रि०) बदनामी होना।
थूली—(हि०) (सं० स्त्री०) दलिया।
थोपथाप कर देना—(हि०) (क्रि०) दबा देना; लीपा पोती कर देना।
थोतरा—(हि०) (वि०) काटा हुआ; कुतरा हुआ।
थोतला—(हि०) (वि०) कुंद।
थोथा—(हि०) (वि०) निष्फल, भीतर से पोला या ख़ाली; बेकार; निस्सार।
थोबड़ा—(हि०) (सं० पु०) तोबड़ा, मुँह, थूथना।

द

दंग—(फ़ा०) (वि०) हैरान, विस्मित, स्तब्ध; हक्का-बक्का, बेचैन।
दंगल—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) कुश्ती करने का स्थान, अखाड़ा; (२) समूह, जमाव; (३) कुश्ती की प्रतियोगिता; (४) लोक-गीत बनानेवालों का सम्मेलन; (५) बड़ी कुरसी जिस पर कई आदमी बैठ सकें; (६) मोटा गद्दा।
दंगा—(फ़ा०) (सं० पु०) उपद्रव, झगड़ा, हंगामा, शोर-गुल, मार-पीट।
दक़ियानूस—(अ०) (सं० पु०) (१) एक प्राचीन बादशाह का नाम जो बड़ा ज़ालिम और अत्याचारी था। (वि०) पुराना, प्राचीन, बुड्ढा।
दक़ियानूसी—(अ०) (वि०) बहुत पुराना, अत्यन्त प्राचीन।
दक़ीक़—(अ०) (वि०) (१) बारीक, सूक्ष्म, महीन; (२) कष्ट-प्रद, कठिन; (३) सुकुमार, कोमल।
दक़ीक़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) कष्ट, कठिनाई, विपत्ति; (२) बारीकी, सूक्ष्मता; (३) क्षण, पल। कोई दक़ीक़ा बाक़ी न रखना—पूर्ण रीति से प्रयत्न करना।
दक़ीक़ा-रस, दक़ीक़ा-शनास—(अ०) (वि०) सूक्ष्म-दर्शी, विवेचक, बारीकी देखनेवाला।
दख़ल—(अ०) (सं० पु०) (१) अधिकार, क़ब्ज़ा, गति; (२) हस्त-क्षेप, दस्तन्दाज़ी; (३) प्रवेश, पहुँच; (४) अभ्यास।
दख़ल-दर-माक़ूलात—(पु०) बीच में बोलना; बातों में दख़ल देना।
दख़ल-नामा—(अ०) (सं० पु०) अदालत का परवाना, जिसमें लिखा हो कि दख़ल दे दिया या दिला दिया।
दख़ल-याबी—(अ०) (सं० स्त्री०) दख़ल पा लेना, अधिकार प्राप्त कर लेना।
दख़ील—(अ०) (वि०) क़ब्ज़ा रखनेवाला, क़ाबिज़, अधिकार-प्राप्त।
दख़ील-कार—(अ०) (सं० पु०) (१) कार-बार में दख़ल देनेवाला; सरबराहकार, मुसाहब; (२) एक प्रकार का काश्तकार

जिसे अधिक काल तक किसी खेत पर क़ब्ज़ा रहने से विशेष अधिकार मिल जाते हैं।

दख़ील-कारी—(अ०) (सं० स्त्री०) दख़ील-कार होना; काफ़ी समय तक काश्त करने से कुछ विशेष अधिकार प्राप्त होना।

दख़ूल—(अ०) (सं० पु०) भीतर जाना, प्रवेश।

दख़्ल—(अ०) (सं० पु०) दख़ल।

दग़दग़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) अन्देशा, धड़का, डर, सन्देह; (२) छोटी कंदील, कँवल।

दग़ल—(अ०) (सं० पु०) (१) धोखा, छल, कपट; (२) बहाना, हीला; (३) खोटा सोना-चाँदी। दग़ल-फ़सल—चालाकी; फ़रेब, (वि०) फ़रेबी। चाल-बाज़, कपटी।

दग़ा—(अ०) (सं० स्त्री०) धोखा, फ़रेब, छल।

दग़ा-दार, दग़ा-बाज़—(फ़ा०) (वि०) धोखेबाज़, छली, कपटी।

दग़ाबाज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) छल, कपट, धोखा।

दज्जाल—(अ०) (सं० पु०) (१) काना, एक आँख वाला; (२) ऐबी, दुष्ट।

ददा—(तु०) (सं० स्त्री०) दाई, आया, खिलाई।

दन्दाँ—(फ़ा०) (सं० पु०) दाँत, दन्त।

दन्दाँ-शिकन—(फ़ा०) (वि०) (१) दाँत तोड़नेवाला; (२) बहुत कड़ा। दन्दाँ-शिकन जवाब—ऐसा जवाब जिसका जवाब न बन पड़े।

दन्दाना—(फ़ा०) (सं० पु०) दाँता।

दफ़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) डफली, एक प्रकार का बाजा। (सं० पु०) (१) विष, ज़हर; (२) क्रोध, गुस्सा; (३) जोश, चढ़ाव, आवेग; (४) तेज़ी, तीव्रता।

दफ़अतन्—(अ०) (क्रि० वि०) अचानक, यकायक।

दफ़ती—(अ०) (सं० स्त्री०), मोटा काग़ज़, वसली, ग़त्ता।

दफ़न—(अ०) (सं० पु०) मुर्दे को ज़मीन में गाड़ना; किसी चीज़ को ज़मीन के भीतर गाड़ना।

दफ़ा—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) बार; (२) धारा, क़ानून का एक नियम। दफ़ा करना—हटाना, दूर करना। दफ़ा लगाना—क़ानून का कोई नियम लगा-कर अभियुक्त बनाना।

दफ़ातन—(अ०) अचानक, यकायक।

दफ़ादार—(अ०) (सं० पु०) फ़ौज का एक गौण अफ़सर।

दफ़ान—(अ०) (सं० पु०) हटना, दूर होना।

दफ़ाली—(फ़ा०) (सं० पु०) ताशा, ढोल बजानेवाला।

दफ़ीना—(अ०) (सं० पु०) गड़ा हुआ धन या ख़ज़ाना, गुप्त धन।

दफ़ैया—(अ०) (सं० पु०) (१) दूर करना, (२) हटाने की क्रिया; (३) दूर करनेवाली वस्तु।

दफ़्तर—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) आफ़िस, कार्यालय; (२) लम्बा-चौड़ा लेख या पत्र; (३) विस्तार-पूर्ण विवरण। दफ़ातर—दफ़्तर का बहुवचन।

दफ़्तरी—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) जिल्द चढ़ानेवाला, जिल्द-साज़; (२) रजिस्टर और काग़ज़ ठीक रखनेवाला कर्मचारी।

दफ़्ती, दफ़्तीन—(अ०) (सं० स्त्री०) दफ़ती, ग़त्ता, वसली।

दबदबा—(अ०) (सं० पु०) शान-शौकत, रौब-दाब।

दबाज़त—वि० (फ़ा० स्त्री०) मोटा या डलदार होना।

दबिस्ताँ—(फ़ा०) (सं० पु०) पाठशाला, विद्यालय, मदरसा, मकतब।

दबीज़—(फ़ा०) (वि०) मोटा, दलदार, गाढ़ा।

दबीर—(फ़ा०) (सं० पु०) लेखक, लिखने-वाला।

दब्बाग़—(अ०) (सं० पु०) चमड़ा रंगने-वाला, चमड़ा पकानेवाला।

दम—(अ० फ़ा०) (सं० पु०) (१) साँस, श्वास; (२) धोखा, फ़रेब; (३) शेख़ी; (४) वक़्त, पल; समय; (५) रक्त, लहू; (६) जीवन, प्राण; (७) तलवार की धार; (८) रूह, जान, आत्मा; (९) प्राणी, व्यक्तित्व; (१०) हुक़्के का कश; (११) ताक़त, शक्ति। दम आख़िर हो जाना—मर जाना। दम उलझना—जी घबराना, उकताना। दम उलटना—तंग आना। दम ख़ुश्क होना—डर जाना। दम ग़लत कर देना—(औ०) घबरा देना, परेशान कर देना। दम ज़ीक़ में करना—तंग करना, ज़िच करना। दम देना—बहकाना, धोखा देना, जान निकालना। दम नाक में करना—तंग करना, सताना। दम पर चढ़ाना—धोखा में लाना। दम पर बनना, दम पर बन जाना—जान पर आ बनना। दम फूलना—साँस चढ़ना, साँस न समाना। दम बन्द करना—चुप करना, बात न करने देना। दम साधना—साँस रोकना। दम के दम—पल भर में, थोड़ी देर में। दम पर दम—थोड़ी थोड़ी देर में।

दम-क़दम—(फ़ा०) (सं० पु०) जीवन; अस्तित्व। दम-क़दम से लगा रहना—साथ न छोड़ना।

दम-कश—(फ़ा०) (वि०) वह जो गाने-बजाने में दूसरे की आवाज़ में आवाज़ मिलावे।

दम-ख़म—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) होश, औसान, हवास; (२) जीवनी-शक्ति, प्राण; (३) तलवार की धार और लचक।

दम-ग़नीमत—क़द्र के क़ाबिल, प्रतिष्ठा के योग्य, मानने के योग्य।

दम-झाँसा—धोखा, चाल।

दम-दमा—(फ़ा०) (सं० पु०) मोरचा; थैलों में बालू भर कर क़िला बनाना।

दमदार—(फ़ा०) (वि०) (१) शक्तिमान्, बलिष्ठ; (२) दृढ़, मज़बूत; (३) जो देर तक परिश्रम कर सके, जो शीघ्र न थके; (४) बाढ़-दार, धार-दार।

दम-दिलासा—(फ़ा०) (सं० पु०) चिकनी-चुपड़ी बातें, तसल्ली की ऊपरी बातें।

दम-पुख़्त—(फ़ा०) (वि०) जो बर्तन की भाप रोक कर पकाया जाय।

दम-ब-ख़ुद—(फ़ा०) (वि०) ख़ामोश, चुप।

दम-ब-दम—(फ़ा०) (क्रि० वि०) घड़ी-घड़ी, बराबर।

दम-बाज़—(फ़ा०) (वि०) मक्कार, धोखा देनेवाला, फुसलानेवाला।

दमवी—(फ़ा०) (वि०) ख़ूनी, रक्त-सम्बन्धी।

दम-साज़—(फ़ा०) (वि०) घनिष्ठ मित्र, जिगरी दोस्त।

दम-होश—(औ०) जान व दिल से।

दमा—(फ़ा०) (सं० पु०) श्वास; एक रोग।

दमा-दम—(फ़ा०) (क्रि० वि०) पै दर पै, लगातार।

दमामा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) नगाड़ा, डंका, (२) रौनक़, चहल-पहल।

दमी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) छोटी सी गुड़-गुड़ी (हुक्का)

दमे-नक़्द—(फ़ा०) (क्रि० वि०) अकेले दम, अकेले।

दम्दमा—(फ़ा०) (सं० पु०) मोरचा, नक़ली क़िला, वह क़िला जो युद्ध के समय थैलियों में रेत भर कर बनाते हैं।

दयानत—(अ०) (सं० स्त्री०) ईमानदारी।

दयानत-दार—(अ०) (वि०) ईमानदार, सत्य-निष्ठ।

दयानत-दारी—(अ०) (सं० स्त्री०) ईमानदारी।

दयार—(अ०) (सं० पु०) मुल्क, शहर।

दय्यूस—(अ०) (सं० पु०) बेहया, निर्लज्ज, बेहिम्मत।

दरंग—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) देर, विलम्ब।

दर—(फ़ा०) (सं० पु०) दरवाज़ा, द्वार (अव्यय) में, अन्दर, भीतर। दर-दर मारा फिरना—आवारा होना।

दर-अन्दाज़—(फ़ा०) (सं० पु०) दो में झगड़ा करानेवाला।

दर-अन्दाज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दो में झगड़ा या लड़ाई कराना, विग्रह।

दर-आमद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) आगमन; (२) आयात, विदेश से माल का आना।

दरकार—(फ़ा०) (वि०) ज़रूरी, आवश्यक। (सं० स्त्री०) आवश्यकता।

दरकिनार—(फ़ा०) (क्रि० वि०) दूर, एक तरफ़, अलग।

दर-ख़शाँ—(फ़ा०) (वि०) चमकता हुआ, चमकीला।

दरख़ास्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) प्रार्थना-पत्र, अर्ज़ी; (२) प्रार्थना, निवेदन।

दरख़्त—(फ़ा०) (सं० पु०) पेड़, वृक्ष।

दरख़्वास्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दरख़ास्त, प्रार्थना।

दरगाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) चौखट; (२) शाही दरबार, कचहरी; (३) मज़ार, किसी पहुँचे हुए मनुष्य की समाधि, रौज़ा।

दर-गुज़र—(फ़ा०) (वि०) (१) वंचित, अलग; (२) माफ़। दर-गुज़र करना—बाज़ आना, तरह देना।

दर-गुज़रे—छोड़ दिया, बाज़ आये।

दर-गोर—(फ़ा०) (वि०) क़ब्र में।

दरजा—(अ०) (सं० पु०) (१) मर्तबा, रुतबा; (२) सीढ़ी, सीढ़ी का पायदान; (३) ओहदा, पद; (४) मंज़िल; (५) कमरा, कोठरी; (६) कक्षा, क्लास; (७) (औ०) हालत, दशा, कैफ़ियत; (८) इज़्ज़त। दरजा-ब-दरजा—धीरे धीरे, क्रमशः।

दरद—(फ़ा०) (सं० पु०) दुःख, तकलीफ़, अफ़सोस, हूक, टीस, चमक, रहम, तरस।

दर-दामन—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) हाशिया, अचकन; (२) बेल-बूटे जो पहनने के कपड़े पर बनाये जाते हैं।

दर-परदा—(फ़ा०) (वि०) (१) परदे में; (२) छिपकर, पीछे-पीछे; इशारे से।

दर-पेश—(फ़ा०) (क्रि० वि०) मौजूद, सामने, आगे, उपस्थित।

दर-पै—(फ़ा०) (क्रि० वि०) किसी की घात में, किसी के पीछे। दर-पै-होना—तंग करने की घात में रहना।

दर-ब-दर—(फ़ा०) एक दरवाजे से दूसरे दरवाजे पर जाना, आवारा।

दरबस्त—(फ़ा०) बिलकुल, तमाम, सब का सब।

दर-बहिश्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक स्वादिष्ट मिठाई का नाम।

दरबान—(फ़ा०) (सं० पु०) चौकीदार, संतरी, द्वार-रक्षक।

दरबानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) चौकीदारी।

दर-बाब—(फ़ा०) (अव्यय) बारे में, सम्बन्ध में।

दरबार—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) राज-सभा; (२) वह स्थान जहाँ राजा अपने मंत्री मुसाहबों के साथ बैठता है; (३) राज का मालिक, राजा; (४) दरवाज़ा, द्वार।

दरबार-आम—(फ़ा०) (सं० पु०) वह दरबार जिसमें सर्व साधारण सम्मिलित हो सकें।

दरबार-ख़ास—(फ़ा०) (सं० पु०) वह

दरबार जिसमें ख़ास-ख़ास लोग ही शामिल हों।

दरबार-दारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) रोज़ हाज़िरी देना, ख़ुशामद करना।

दरबारी—(फ़ा०) (सं० पु०) दरबार में शामिल होने वाला। (वि०) दरबार में जाने योग्य, दरबार के उपयुक्त।

दर-मांदगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) मजबूरी, लाचारी; विवशता; (२) विपत्ति, कष्ट।

दर-माँदा—(फ़ा०) (वि०) (१) थका हुआ, शिथिल; (२) साधन-हीन, निरुपाय।

दरमान—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) चिकित्सा, इलाज; (२) दवा, औषध।

दर-माहा—(फ़ा०) (सं० पु०) मासिक वेतन, माहवारी तनख़्वाह।

दर-मियान—(फ़ा०) (सं० पु०) बीच, मध्य, में।

दर-मियानी—(फ़ा०) (वि०) बीच का, मध्यवर्ती। (सं० पु०) मध्यवर्ती, बीच में पड़ कर झगड़ा तय करानेवाला।

दरवाज़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) द्वार, प्रवेश-मार्ग; (२) किवाड़।

दरवेश—(फ़ा०) (सं० पु०) साधु, भिखारी, ग़रीब।

दरवेश-मिज़ाज—(वि०) साधु-स्वभाव, सीधा।

दरवेशाना—(फ़ा०) (वि०) साधुओं के समान, फ़क़ीरों जैसा।

दरवेशी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) साधुता, फ़क़ीरी।

दर-सूरत—(फ़ा०) (क्रि० वि०) सूरत में, दशा में।

दर-हक़ीक़त—(फ़ा०) (क्रि० वि०) वास्तव में, सचमुच, असल में।

दरहम—(फ़ा०) (वि०) गड़बड़, उलट-पुलट, तितर-बितर, अस्त-व्यस्त। दरहम-बरहम—तितर-बितर; क्रुद्ध।

दरहमी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बेतरतीबी, अस्त-व्यस्तता।

दर-हालेकि—यह लिहाज़ करके।

दरा—(अ०) (सं० पु०) कवच जो युद्ध के समय पहना जाता है।

दराज़—(फ़ा०) (वि०) लंबा, विस्तृत।

दराज़-दस्त—(फ़ा०) (वि०) अत्याचारी, ज़ुल्म करनेवाला।

दराज़-दस्ती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अत्याचार, ज़ुल्म।

दराज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) लंबाई।

दरायत—(अ०) (सं० स्त्री०) अक़्ल, समझ, बुद्धिमानी।

दरिन्दा—(फ़ा०) (सं० पु०) हिंसक जन्तु; फाड़ खानेवाला जानवर।

दरिया—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) नदी; (२) समुद्र।

दरियाई—(फ़ा०) (वि०) (१) नदी या समुद्र से सम्बन्ध रखनेवाला। (सं०) (स्त्री०) (१) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा; (२) पतंग को उड़ाने के लिए दूर भेज कर किसी के द्वारा हवा में छुड़वाना।

दरियाई घोड़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) पानी में रहनेवाला एक जानवर।

दरियाई नारियल—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार का नारियल जिसको ओषधि रूप में प्रयोग करते हैं, और जिससे कमंडल बनाते हैं।

दरियाए शोर—(फ़ा०) (सं० पु०) समुद्र, काला पानी।

दरिया-दिल—(फ़ा०) (वि०) उदार, फ़ैयाज़, ख़ूब देनेवाला दाता।

दरिया-दिली—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) उदारता, दानशीलता।

दरियाफ़्त—(फ़ा०) (वि०) ज्ञात, जाना हुआ, मालूम, पता।

दरिया-बरामद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वह

ज़मीन जो नदी के हट जाने से निकल आई हो।

दरिया-बुर्द—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वह ज़मीन जो नदी के बढ़ आने से कम हो गई हो।

दरी-ख़ाना—(फ़ा०) (सं० पु०) बारहदरी, बहुत से दरवाज़ों का घर; दरबार।

दरीचा—(फ़ा०) (सं० पु०) खिड़की, झरोखा।

दरीज—(सं० स्त्री०) एक प्रकार की महीन छींट जिसके दुपट्टे बनते हैं।

दरीदा—(फ़ा०) (वि०) फटा हुआ। दरीदा-दहन—बदज़बान, मुँह-फट।

दरूँ—(फ़ा०) (सं० पु०) दिल, अन्तस।

दरूना—(फ़ा०) (वि०) वह ज़ख़्म या फोड़ा जिसका मुँह अन्दर हो।

दरेग़—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) अफ़सोस, दुःख, रंज; (२) पश्चात्ताप, पछतावा; (३) कंजूसी, कमी।

दरेस—(वि०) लैस, तैयार, होशयार, चौकस। (सं० स्त्री०) एक बारीक छींट।

दरेसी करना—(क्रि०) ज़मीन को हमवार करना, बराबर करना।

दरोग़—(फ़ा०) (सं० पु०) झूठ, मिथ्या।

दरोग़-गो—(फ़ा०) (वि०) झूठ बोलनेवाला, झूठा।

दरोग़-गोई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) झूठ बोलना, मिथ्या-भाषण।

दरोग़-हलफ़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) झूठी क़सम खाना; क़सम खाकर भी झूठ बोलना।

दरो-बस्त—(फ़ा०) (वि०) कुल, पूरा, सम्पूर्ण।

दर्क—(अ०) (सं० पु०) (१ पाना, मालूम करना; (२) रूमाल, तौलिया। दर्क-देना—बीच में बोलना, हस्तक्षेप करना।

दर्कात—(अ०) (सं० पु०) नरक की मंज़िलें।

दर्गाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) चौखट; (२) ख़ुदा का दरबार; (३) मज़ार, रौज़ा।

दर्ज—(फ़ा०) (वि०) लिखित, अंकित।

दर्ज़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) झिरी, दरार।

दर्ज़न—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दर्ज़ी की स्त्री; कपड़ा सीने वाली स्त्री।

दर्जा—(अ०) (सं० पु०) देखो 'दरजा'।

दर्जावार—(फ़ा०) (क्रि० वि०) क्रम से, सिलसिलेवार।

दर्ज़ी—(फ़ा०) (सं० पु०) कपड़ा सीनेवाला। कहा०—दर्ज़ी का क्या कूच क्या मुक़ाम—उस मनुष्य पर घटाकर कहा जाता है जिसे एक स्थान से दूसरे स्थान जाने में असबाब और सामान ले जाने की दिक़्क़त न हो, जब चाहे उठ खड़ा हो। दर्ज़ी की सुई कभी टाट में कभी कमख़्वाब में—मनुष्य की दशा सदा एक सी नहीं रहती।

दर्द—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) कष्ट, पीड़ा, शूल; (२) दया, करुणा। दर्द आना—रहम आना, तरस आना। दर्द जानना—सहानुभूति करना, किसी का कष्ट कम करना। दर्द पूछने वाला—दुःख कम करनेवाला, दुःख में समवेदना प्रकट करनेवाला। दर्द बटाना—सहानुभूति करना, दुःख-दर्द में शरीक होना।

दर्द-अंगेज़, दर्द-आमेज़, दर्द - नाक—(वि०) रंज देनेवाला, करुणोत्पादक।

दर्द-भरी—(फ़ा०) (वि०) ऐसी बात जिसमें दर्द भरा हो, दुःख-पूर्ण; करुण।

दर्द-मंद—(फ़ा०) (वि०) (१) दुःखी, खिन्न; (२) सहानुभूति करनेवाला; (३ रहमदिल, दयालु।

दर्द-मंदी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सहानुभूति, समवेदना।

दर्द-शरीक—(फ़ा०) (वि०) हमदर्द, ग़मख़्वार, मूनिस; विपत्ति में साथ देनेवाला।

दर्द-ज़ह—(फ़ा०) (सं० पु०) प्रसव-पीड़ा, बच्चा जनने के समय के दर्द।

दर्द-सर—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सिर की पीड़ा, शिरःशूल; (२) रंज, महनत, कठिन काम। **दर्द-सर करना**,—मेहनत करना, परिश्रम करना। **दर्द-सर ख़रीदना, दर्द सर मोल लेना**—झगड़े में पड़ना, किसी काम को अपने ऊपर लेना। **दर्द सर जाना**—झगड़ा मिट जाना। **दर्द-सर देना**—दिक़ करना, कष्ट देना। **दर्द-सरी करना**—(औ०) जान खपाना।

दर्द-सरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दिक़्क़त, कठिनता।

दर्रा—(फ़ा०) (सं० पु०) घाटी, पहाड़ों के बीच का मार्ग।

दर्स—(अ०) (सं० पु०) पढ़ना, अध्ययन। **दर्स व तदरीस**—पढ़ना-पढ़ाना, पठन-पाठन, उपदेश।

दलायल—(अ०) (सं० स्त्री०) युक्ति, विवाद, हुज्जत। (दलील का बहुवचन)।

दलाल—(अ०) (सं० पु०) देखो—दल्लाल।

दलालत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) निशान, पता; (२) सबूत, दलील; (३) शान-शौकत, शोभा।

दलाली—(अ०) (सं० स्त्री०) देखो—दल्लाली।

दलील—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) युक्ति, तर्क; (२) बहस, हुज्जत, वाद-विवाद।

दल्क़—(अ०) (सं० स्त्री०) फ़क़ीरों की गुदड़ी।

दल्क़-पोश—(अ० फ़ा०) (वि०) गुदड़ी पहननेवाला; फ़क़ीर।

दल्लाक—(अ०) (सं० पु०) हम्माम में बदन की मालिश करनेवाला।

दल्लाल—(अ०) (सं० पु०) (१) सौदा करानेवाला, आढ़तिया; (२) कुटना, भड़वा।

दल्लाला—(अ०) (सं० स्त्री०) कुटनी, दूती।

दल्लाली—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) आढ़त, दूसरे का माल बिकवा देने का कमीशन; (२) दल्लाल का पेशा।

दल्लू का दस सेरा—बेजा दख़ल देनेवाला, दाल-भात में मूसल।

दल्व—(अ०) (सं० पु०) कुम्भ राशि।

दवा—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) औषध; (२) उपचार, चिकित्सा; (३) रोग निवारण की युक्ति, नीरोग बनाने का उपाय।

दवा-ख़ाना—(अ०) (सं० पु०) औषधालय, दवा मिलने की जगह।

दवात—(अ०) (सं० स्त्री०) मसि-पात्र, स्याही रखने का पात्र।

दवाम—(अ०) (सं० पु०) हमेशा रहना, सदा स्थायी रहना। (क्रि० वि०) सदा, हमेशा।

दवामी—(अ०) (वि०) स्थायी, सदा के लिए।

दवामी बन्दोबस्त—(अ०) (सं० पु०) ज़मीन पर माल-गुज़ारी हमेशा के लिए एक ही बार तय कर दी जाय।

दवायर—(अ०) (सं० पु०) वृत्त। (दायरा का बहुवचन)।

दव्वार—(अ०) (वि०) बहुत फिरनेवाला, दौरा करनेवाला।

दश्त—(फ़ा०) (सं० पु०) जंगल, मैदान, बयाबान।

दश्त-गरद—(फ़ा०) (वि०) जंगल में फिरनेवाला।

दश्त-गरदी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) आवारा फिरना।

दश्त-नवर्दी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) जंगलों में मारा-मारा फिरना।

दशना—(फ़ा०) (सं० पु०) कटारी।

दस्त—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) हाथ, कर; (२) पाख़ाना, विरेचन।

दस्त आमेज़—(फ़ा०) (वि०) पालतू।

दस्तक—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) ताली, हाथ खटखटाना; (२) दरवाजा खुलवाने के के लिए हाथ मारना; (३) परवाना, माल-गुज़ारी या निकासी वसूल करने की चिट्ठी; (४) क़ुरक़ी; (५) परवाना राहदारी; (६) महसूल, कर। दस्तक लगाना—टैक्स लगाना, महसूल लगाना।

दस्तकार—(फ़ा०) (सं० पु०) कारीगर, हाथ से काम करनेवाला।

दस्त-कारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) कारीगरी, शिल्प।

दस्तकी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) याद-दाश्त, नोट-बुक; (२) शिकारी पक्षी पालनेवालों का हाथ में पहनने का दस्ताना।

दस्तख़त—(फ़ा०) (सं० पु०) हस्ताक्षर; हाथ का लिखा हुआ।

दस्तख़ती—(फ़ा०) (वि०) हस्ताक्षर किया हुआ, हाथ का लिखा हुआ।

दस्त-गरदां—(फ़ा०) (वि०) (१) हथ-उधार, उधार लिया हुआ; (२) फेरीवाले से ख़रीदा हुआ।

दस्त-गाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) ताक़त, शक्ति; (२) सम्पत्ति, माल, बूता।

दस्त-गीर—(फ़ा०) (वि०) सहायक, रक्षक, हाथ पकड़नेवाला।

दस्त-गीरी—(फ़ा०) (सं० पु०) सहायता, आश्रय, मदद।

दस्त-दराज़—(फ़ा०) (वि०) (१) हथ-छुट, ज़रा सी बात पर हाथ चला देनेवाला; (२) उचक्का, हाथ-चालाक।

दस्त-निगर—(फ़ा०) (वि०) दरिद्र, मोह-ताज, भिक्षार्थी।

दस्तन्दाज़—(फ़ा०) (वि०) हस्त-क्षेप करने-वाला, बीच में दख़ल देनेवाला।

दस्तन्दाज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) हस्त-क्षेप, दख़ल-अन्दाज़ी।

दस्त-पनाह—(फ़ा०) (सं० पु०) चिमटा।

दस्त-पाक—(फ़ा०) (सं० पु०) रूमाल, हाथ पोंछने का कपड़ा।

दस्त-बख़ैर—(फ़ा० अ०) हाथ रखने का फल शुभ हो 'ईश्वर करे हाथ रखना मुबारक हो'।

दस्त-बदस्त—(फ़ा०) (क्रि० वि०) हाथों हाथ।

दस्त-बन्द—(फ़ा०) (सं० पु०) हाथ में पहनने का एक ज़ेवर।

दस्त-बरदार—(फ़ा०) (वि०) जो अपना अधिकार हटाले, जो त्याग दे।

दस्त-बरदारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) किसी चीज़ पर से अधिकार उठा लेना, फ़ारिग़-ख़ती दे देना, अलग हो जाना।

दस्त-बुर्द—(फ़ा०) (वि०) अनुचित साधन से प्राप्त (माल)।

दस्त-बस्ता—(फ़ा०) (क्रि० वि०) हाथ जोड़कर, हाथ बाँधे हुए।

दस्त-बोस—(फ़ा०) (वि०) हाथ को चूमने-वाला; अभिवादन करनेवाला।

दस्त-बोसी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) किसी आदरणीय व्यक्ति का हाथ चूमकर अभि-वादन करना।

दस्तमाल—(फ़ा०) (सं० पु०) रूमाल।

दस्त-याब—(फ़ा०) (वि०) प्राप्त, हस्त-गत।

दस्तरख़्वान—(फ़ा०) (सं० पु०) चादर जिस पर खाने की तश्तरियाँ सजाते हैं।

दस्तरस, दस्तरसी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) रसाई, पहुँच; (२) शक्ति, सामर्थ्य।

दस्ता—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) आदमियों का एक गिरोह, फ़ौज का हिस्सा; (२) हाशिया; (३) खरल का मूसल; (४) मूठ, बेंटा; (५) फूलों का गुच्छा; (६) एक प्रकार का तुकमा; (७) काग़ज़ की २५ तावों की गड्डी, रीम का बीसवाँ हिस्सा।

दस्ताना—(फ़ा०) (सं० पु०) हाथ में पहनने का मोज़ा या गिलाफ़।

दस्तार—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पगड़ी, अम्मामा।

दस्तार-बन्द—(फ़ा०) (सं० पु०) पगड़ी बनानेवाला।

दस्तावर—(फ़ा०) (वि०) रेचक, जिसके खाने से दस्त आवें।

दस्तावेज़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) तमस्सुक, इक़रार-नामा; जिस पर हस्ताक्षर हों।

दस्ती—(फ़ा०) (वि०) हाथ का, हाथ में दिया हुआ। (सं० स्त्री०) (१) फ़लीता, मशाल, हाथ में लेकर चलने की बत्ती; (२) छोटा दस्ता, छोटी मूँठ; (३) छोटा क़लम-दान जो साथ रहता हो; (४) कुश्ती लड़ने का एक दाँव।

दस्तूर—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) रीति, विधि, चाल, रस्म; (२) नियम, क़ायदा; (३) पारसियों का पुरोहित।

दस्तूर-उल्-अमल—(फ़ा०) (सं० पु०) नियम, क़ायदा, व्यवहार-पद्धति, शासन विधि।

दस्तूरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) कमीशन, एक प्रकार की दल्लाली।

दस्ते-क़ुदरत—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) प्रकृति का हाथ; (२) शक्ति, सामर्थ्य।

दस्ते-शफ़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) आरोग्य करनेवाला हाथ; यशस्वी, जिसकी चिकित्सा शीघ्र लाभ पहुँचावे।

दह—(फ़ा०) (वि०) दस।

दहक़ान—(अ०) (सं० पु०) गँवार, देहाती, ग्रामीण।

दहक़ानियत—(अ०) (सं० स्त्री०) ग्रामीणता, गँवार-पन।

दहक़ानी—(अ०) (वि०) गँवारू। (सं० पु०) गँवार, देहाती, ग्रामीण।

दहन—(फ़ा०) (सं० पु०) मुँह।

दहर—(फ़ा०) (सं० पु०) युग, समय, ज़माना।

दहरिया—(अ०) (सं० पु०) नास्तिक, प्रकृति-वादी, जड़-वादी।

दहलीज़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) देहली।

दहशत—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) डर, भय, ख़ौफ़।

दहशत-अंगेज़—(फ़ा०) (वि०) भय उत्पन्न करनेवाला, भयानक, डरावना।

दहशत-ज़दा—(फ़ा०) (वि०) डरा हुआ, भयातुर, भयभीत।

दहशत-नाक—(फ़ा०) (वि०) भयानक, भीषण, भय उत्पन्न करनेवाला।

दहा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) ताज़िया; (२) मोहर्रम के दस दिन।

दहान—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) मुँह; (२) छेद, सुराख़; (३) घाव।

दहाना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) द्वार, मुँह; (२) मुहाना, जहाँ एक नदी दूसरी नदी या समुद्र से मिले; (३) मोरी।

दहुम—(फ़ा०) (वि०) दसवाँ, दशम।

दहे—(फ़ा०) (सं० पु०) दहा, मोहर्रम की दस तारीख़ें जिनमें ताज़िये-दारी और मातम होते हैं।

दहेज़—(सं० पु०) जहेज़, जो विवाह के समय दिया जाय।

दां—(फ़ा०) (वि०) जाननेवाला।

दांग—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) किसी चीज़ का छठा हिस्सा; (२) छै रत्ती का वज़न; (३) दिशा, तरफ़; (४) टुकड़ा, हिस्सा।

दाइन—(अ०) (सं० पु०) क़र्ज़ या ऋण देनेवाला।

दाइया—(अ०) (सं० स्त्री०) (औ०) दावा करनेवाली स्त्री। (सं० पु०) दावा, इजारा, ज़ोर।

दाई—(अ०) (वि०) बुलानेवाला, दुआ करनेवाला।

दाख़िल—(अ०) (वि०) अन्दर आनेवाला, पहुँचनेवाला, शामिल।

दाख़िल-कुनिन्दा—(अ०) (सं० पु०) दाख़िल करनेवाला।

दाख़िल-ख़ारिज—(अ०) (सं० पु०) एक नाम काटना और उसकी जगह दूसरा दर्ज करना।

दाख़िल-दफ़्तर—(अ०) (वि०) शामिल मिसल, नामंजूर।

दाख़िला—(अ०) (सं० पु०) (१) प्रवेश; (२) सुपुर्दगी; (३) रुपये की रसीद, दाख़िल करने की फ़ीस।

दाग़—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) धब्बा, निशान; (२) फल आदि के गलने पर पड़ा हुआ निशान; (३ जलने का निशान; (४) किसी प्यारे के मरने का रंज; (५) कलंक, ऐब, दोष; (६) ईर्षा, द्वेष। दाग़ उठाना—रंज उठाना, सहना। दाग़ उभरना—शोक का हरा होना।

दाग़-दार—(फ़ा०) (वि०) ऐब-दार, दाग़ी, जलाया हुआ।

दाग़ना—(फ़ा०) (क्रि०) निशाना लगाना, अंकित करना, जलाना।

दाग़-बेल—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ज़मीन पर फावड़े से खोद कर निशान बनाना, जिन पर सड़क या बुनियाद बनानी हो।

दाग़ी—(फ़ा०) (वि०) (१) जिस पर धब्बा हो; (२) गला हुआ, सड़ा हुआ; (३) सज़ा-याफ़्ता; (४) कलंकित, लांछित।

दाता—(हि०) (सं० पु०) (१) देनेवाला, उदार, दानी; (२) ईश्वर; (३) दरवेश, फ़क़ीर।

दाद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) न्याय, इन्साफ़; (२) प्रशंसा, तारीफ़। दाद देना—प्रशंसा करना, वाह-वाह करना। (वि०) दिया हुआ, प्रदत्त।

दाद-ख़्वाह—(फ़ा०) (वि०) फ़रियादी, वादी, न्याय चाहनेवाला।

दाद-दहिश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दान, उदारता।

दाद-दिही—इन्साफ़ करना, फ़रियाद सुनना।

दादनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) क़र्ज़, ऋण, पेशगी, वह चीज़ जो देने के लायक़ हो।

दादनी-दार—(फ़ा०) (वि०) दादनी देनेवाला; पेशगी देनेवाला।

दाद-फ़रियाद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दुहाई देना, न्याय के लिए प्रार्थना करना। दाद न फ़रियाद—अजब अंधेर।

दाद-रस—(फ़ा०) (वि०) फ़रियाद सुनने वाला।

दाद-रसी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) न्याय, इन्साफ़।

दाद-सितद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) लेन-देन; महाजनी का व्यापार।

दान—(फ़ा०) (वि०) (१) जाननेवाला, ज्ञाता; (२) घर, जगह, मकान।

दानह—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) नाज; (२) बीज; (३) मनका, (४) छोटी फुन्सी। दानह बदलना—परंदों का एक दूसरे को अपने मुँह का दाना खिलाना। दानह-बदली—बहुत ही प्रेम दर्शाना। दानह-बंदी—खड़ी खेती आँकना, कूतना। कहा०—दाना न घास, खुरैरा तीन तीन बार—कोरी दिखाने की ख़ातिर। दाना न घास, घोड़े तेरी आस—देना न लेना, मुफ़्त में काम लेना।

दाना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) ज्ञाता, जाननेवाला; (२) बुद्धिमान्, अक्लमंद, होशयार।

दानाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बुद्धिमानी, होशयारी, अक़्लमंदी।

दानिश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) समझ-बूझ, बुद्धि, अक़्ल।

दानिशमन्द—(फ़ा०) (वि०) समझदार, होशयार, बुद्धिमान्।

दानिशमन्दी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) समझदारी, होशयारी, बुद्धिमानी।

दानिस्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) राय, समझ, ज्ञान।

दानिस्ता—(फ़ा०) (क्रि० वि०) समझ-बूझ कर। दीदा-ओ-दानिस्ता—देख और जान-समझ कर।

दाफा—(फ़ा०) (वि०) दूर करनेवाला, शामक, नाशक।

दाब—(अ०) (सं० पु०) (१) तर्ज़, ढंग; (२) रौब, दब-दबा। दाब बैठाना—रौब बैठाना, बेजा हुकूमत करना।

दाम—(अ०) उर्दू में यौगिक में लगाया जाता है—जैसे दाम इक़बाल हू—इक़बाल 'हमेशा बरक़रार रहे।'

दाम—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) जाल, फंदा; (२) एक पुराना सिक्का जो रुपये का चालीसवाँ हिस्सा होता था; (३) एक तौल जो कच्ची १२ माशे और पक्की १८ या २१ माशे की होती है।

दामन—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) आंचल; (२) कोट, कुरते का नीचे का हिस्सा; (३) किनारा, पहाड़ों के नीचे की भूमि। दामन उलझना—किसी झगड़े में फँस जाना। दामन छुटना—अलग होना। दामन छुड़ाना—पीछा छुड़ाना। दामन झाड़ना—सम्बन्ध तोड़ना। दामन तर होना—गुनाहगार होना। दामन तले छिपाना—परवरिश करना। दामन पकड़ना—मांगना, तक़ाज़ा करना। दामन पर धब्बा रहना—किसी के सर इलज़ाम रहना। दामन फैलाना—मांगना, प्रार्थना करना। दामन बचाना—अलग रहना, बेलौस रहना। दामन समेटना—दूर होना, पृथक् होना। दामन से बँधा—किसी का हो रहना। दामन से लगा रहना—किसी पर निर्भर होना।

दामन-गीर—(फ़ा० (सं० पु०) (१) हिमायत चाहनेवाला, शरणार्थी; (२) विरोध करनेवाला; (३) दावेदार।

दामन-शब—रात का आख़िरी हिस्सा।

दामनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) ज़ीनपोश; (२) एक पाट की बारीक चादर जो औरत के जनाज़े पर डालते हैं; (३) ओढ़नी।

दामाद—(फ़ा०) (सं० पु०) जामाता, जमाई।

दायन—(अ०) (सं० पु०) क़र्ज़ देनेवाला।

दायम—(अ०) (क्रि० वि०) हमेशा, सदा।

दायम-उल्-मरीज़, दायम-उल्-मर्ज़—(अ०) (वि०) जनम का रोगी, मरीज़।

दायम-उल्-हब्स—(अ०) (सं० पु०) जनम-मियाद क़ैद।

दायमी—(अ०) (वि०) हमेशा का, स्थायी।

दायर—(अ०) (वि०) (१) फिरनेवाला, दौरा करनेवाला, (२) जारी, दरपेश। दायर करना—पेश करना, चलाना।

दायरा—(अ०) (सं० पु०) (१) हलक़ा, चक्कर; (२) वृत्त, गोल घेरा; (३) कचा, मजलिस; (४) देश, मुहल्ला।

दाया—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) धाय, दाई।

दार—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सूली, फाँसी। (सं० पु०) स्थान, जगह, घर, मोहल्ला, मकान। (फ़ा०) (वि०) रखनेवाला करनेवाला।

दारचीनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) तज, एक वृक्ष का नाम; (२) उक्त वृक्ष की छाल जो औषध के काम आती है।

दार-मदार—(फ़ा०) (सं० पु०) आश्रय, अवलम्ब, सहारा।

दाराई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) दरियाई, एक प्रकार का रेशमी कपड़ा; (२) ईश्वर का शासन।

दाराबी—(सं० स्त्री०) रस्सी जिससे तोप खींचते हैं।

दारी—(हि०) (सं० स्त्री०) बाँदी, लौंडी, दासी।

दारीजार—(हि०) (सं० पु०) दासी-पुत्र, हराम-ज़ादा।

दारुल-अमन—(सं० पु०) सुख पूर्वक रहने का स्थान।

दारुल-अमल—(अ०) (सं० स्त्री०) दुनिया, संसार।

दारुल-अमान—(अ०) (सं० पु०) सुख-पूर्ण स्थान, शान्ति-पूर्ण स्थल।

दारुल-अमारत—(अ०) (सं० पु०) राजधानी।

दारुल-आख़िर—(अ०) (सं० पु०) परलोक।

दारुल-इल्म—(अ०) (सं० पु०) विद्यालय, शिक्षालय।

दारुल-क़रार—(अ०) (सं० पु०) बहिश्त, स्वर्ग।

दारुल-ख़िलाफ़त—(अ०) (सं० पु०) राजधानी, ख़लीफ़ा के रहने की जगह।

दारुल ज़र्ब—(अ०) (सं० पु०) टकसाल।

दारुल-फ़ना—(अ०) (सं० पु०) वह जगह जहाँ सब कुछ नष्ट हो जाता है, लोक।

दारुल-बक़ा—(अ०) (सं० पु०) वह जगह जहाँ सब अमर होते हैं, उक़बा, परलोक।

दारुल-महन—(अ०) (सं० पु०) ग़म का घर, शोक का स्थान, दुनिया, लोक।

दारुल-मुकाफ़ात—(अ०) (सं० पु०) (१) संसार; (२) वह स्थान जहाँ कर्मों के फल मिलते हैं, बदला मिलने का घर।

दारुल-शफ़ा—(अ०) (सं० पु०) शफ़ाख़ाना, चिकित्सालय। शुद्ध उच्चारण दारुश-शफा।

दारुल-सल्तनत—(अ०) (सं० पु०) राजधानी।

दारुल-सलाम—(अ०) (सं० पु०) स्वर्ग, सुखपूर्वक रहने का स्थान।

दारुल-हुकूमत—(अ०) (सं० पु०) राजधानी। शुद्ध रूप दारुस-सल्तनत।

दारुल-हरब—(अ०) (सं० पु०) अधर्मियों का देश जिस पर आक्रमण करना धर्म है।

दारू—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) औषध, इलाज; (२) शराब, मदिरा; (३ बारूद।

दारोग़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) देखभाल करनेवाला, रक्षा करनेवाला, निगराँ।

दालान—(फ़ा०) (१) बड़ा और लम्बा बरामदा जिसमें तीन दरवाज़े हों, (२) मेहराबदार बरामदा; (३) बरामदा। दालान दर दालान—दुहरा दालान, दालान के अंदर दालान।

दाव—(फ़ा०) (सं० पु०) चाल, फ़रेब धोखा।

दावत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) बुलावा, निमंत्रण; (२) भोज, ज्योनार, (३) पुत्र के समान मानना।

दावर—(फ़ा०) (सं० पु०) न्याय-कर्ता, हाकिम। दावरे-महशर—क़यामत के दिन न्याय करनेवाला; ईश्वर।

दावरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) न्याय, इन्साफ़, हुकूमत।

दावा—(अ०) (सं० पु०) (१) अधिकार, हक़; (२) किसी वस्तु पर अधिकार प्रकट करना, किसी चीज़ को अपनी बतलाना; (३) मुक़दमा; (४) नालिश, अभियोग; (५) ज़ोर देकर कहना।

दावागीर—(अ०) (सं० पु०) दावा करनेवाला, अपना हक़ बतानेवाला।

दावात—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) स्याही रखने का पात्र; (२) दुआ, आशीर्वाद।

दावादार—(अ०) (सं० पु०) दावा करनेवाला, अपना हक़ बतानेवाला।

दाश्त—(सं० स्त्री०) निगरानी, ख़बरगीरी। कहा०—दाश्ता (श्+ता) आयद बकार—किसी चीज़ को होशियारी से रखने के मौक़े पर कहते हैं।

दासा—(हि०) (सं० पु०) वह लकड़ी या

पत्थर का टुकड़ा जिसे दीवार पर रखकर ऊपर से कड़ियाँ डालते हैं।

दास्तान—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) वृत्तान्त, हाल; (२) कथा, क़िस्सा-कहानी।

दास्तान-गो—(फ़ा०) (सं० पु०) कहानी कहनेवाला।

दास्ताना—(फ़ा०) (सं० पु०) हाथ की पोशिश, दस्ताना।

दिक़—(अ०) (वि०) (१) हैरान, सताया हुआ, तंग; (२) बीमार, रोगी (सं० पु०) राज-यक्ष्मा, क्षयी।

दिक़-दारी—(अ०) (सं० स्त्री०) कठिनता; तकलीफ़, कष्ट।

दिक़्क़त—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) परेशानी, कष्ट, तकलीफ़; (२) कठिनता, मुश्किल, तरद्दुद।

दिगर—(फ़ा०) (वि०) दूसरा, अन्य, और।

दिगर-गूँ—(फ़ा०) (वि०) उलटा, उलट-पलट, जिसका रंग बदल गया हो।

दिनायत—(अ०) (सं० स्त्री०) कमीनापन, नीचता।

दिमाग़—(अ०) (सं० पु०) (१) मस्तिष्क, सिर का गूदा, भेजा; (२) अभिमान, घमंड; (३) अक़्ल, समझ, बुद्धि; (४) ताब, बरदाश्त, (५) होश, औसान। दिमाग़ करना—घमंड करना, मग़रूर होना। दिमाग़ की गरमी उतारना—घमंड मिटाना। दिमाग़ की लेना—घमंड करना। दिमाग़ के कीड़े झाड़ना—(औ०) बकते बकते परेशान हो जाना। दिमाग़ का गरमी चढ़ना—बहुत घमंड होना। दिमाग़ खा लेना—बक बक कर के परेशान कर देना। दिमाग़ चाटना—बकना। दिमाग़ झड़ना—घमंड दूर होना। दिमाग़ निकल जाना—घमंड न रहना। दिमाग़ न मिलना—बड़ा घमंड होना। दिमाग़ फिर जाना—सिड़ी हो जाना। दिमाग़ में बू समाना—कोई धुन होना। दिमाग़ रखना—इतराना, घमंडी होना। दिमाग़ लड़ाना—सोचना, ग़ौर करना।

दिमाग़-चट—बक्की, बकबादी।

दिमाग़-दार—(अ०) (वि०) (१) बुद्धि-मान्, ज़हीन; (२) अभिमानी।

दिमाग़-रौशन—(अ०) (सं० स्त्री०) नस्य, हुलास।

दिमाग़ी—(अ०) (वि०) दिमाग़ से संबंध रखनेवाला, अभिमानी, घमंडी।

दिरम—(फ़ा०) (सं० पु०) चाँदी का सिक्का; तौल, दो माशे १½ रत्ती।

दिरहम—(अ०) (सं० पु०) दिरम, चाँदी का सिक्का।

दिरा—(अ०) (सं० पु०) कपड़ा या ज़मीन नापने का गज़।

दिर्म—(सं० पु०) दिरम।

दिल—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) हृदय, जी, कलेजा; (२) मन, चित्त; (३) हिम्मत, दम, साहस; (४) इच्छा, रुझान, तबीयत। दिल अटकना—दिल का आना, मुहब्बत होना। दिल अटकाना—दिल फँसाना, दिल लगाना। दिल उचट जाना—दिल घबरा जाना। दिल उचाट करना—किसी काम में दिल न लगना। दिल उचाट होना—जी उकताना, जी न लगना। दिल उछलना—दिल धड़कना। दिल उठाना—सम्बन्ध तोड़ना। दिल उड़ जाना, दिल उड़ चलना—दिल का बेक़ाबू हो जाना। दिल उलट देना—परेशान कर देना। दिल उलटना—पागल होना। दिल उलझना—आशिक़ हो जाना। दिल उमंड आना—दिल भर आना। दिल एक होना—हार्दिक एकता होना। दिल टटोलना—इच्छा जानने की कोशिश करना। दिल थोड़ा होना—हिम्मत टूट जाना। दिल दरिया

होना—उदार होना। दिल परचना—दिल का माइल होना। दिल पत्थर कर लेना—दिल को सख़्त करना, बेरुख़ी करना। दिल पर साँप लोटना—रंज होना। दिल फट जाना—तबीयत हट जाना। दिल फड़कना—दिल का खुश हो जाना। दिल फीका हो जाना—किसी चीज़ से दिल हट जाना, ख़याल जाता रहना। दिल भारी करना—रंज करना। दिल बढ़ाना—हिम्मत बढ़ाना। दिल बुझना—उमंग जाती रहना। दिल बरमाना—(औ०) रंज देना। दिल बाग़ बाग़ होना—दिल का ख़ूब ख़ुश होना। दिल बिठा देना—हिम्मत तोड़ देना। दिल मुरमुराना—लालच आना, शौक़ पैदा होना। दिल मसोसना—दिल ही दिल में रंज करना। दिल रुंधना—रंजीदा होना।

दिल-आरा—(फ़ा०) (वि०) माशूक़, दिल को आरास्ता करनेवाला।

दिल-आराम—(फ़ा०) (वि०) दिल को आराम देनेवाला।

दिल-आवेज़—दिल लुभाने वाली चीज़, सुन्दर, चित्ताकर्षक।

दिल-कश—(फ़ा०) (वि०) दिल को लुभाने वाला, मनोमोहक।

दिल-कशी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) आकर्षण-कारी, लुभानेवाली।

दिल-कुशा—(फ़ा०) (वि०) मनोहर, दिल खिलानेवाला।

दिल-ख़राश—(फ़ा०) (वि०) दिल तोड़ने वाला, कष्टदायक।

दिल-ख़स्ता—(फ़ा०) (वि०) रंजीदा, आपत्ति-ग्रस्त।

दिल-ख़्वाह—(फ़ा०) (वि०) दिल-पसंद, मन-भावन।

दिलगीर—(फ़ा०) (वि०) उदास, रंजीदा।

दिल-गुदाज़—(फ़ा०) (वि०) दिल को नरम करनेवाला।

दिल-चला—(फ़ा०) (वि०) (१) दीवाना, पागल; (२) निडर, उदार; (३) साहसी, वीर।

दिल-चस्प—(फ़ा०) (वि०) मनोरंजक, चित्ताकर्षक।

दिल-चस्पी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मनोरंजन, रस, आनन्द।

दिल-ज़दा—(फ़ा०) (वि०) दुःखी, मन-मलीन, व्यथित।

दिल-जमई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) इत्मीनान, बेफ़िक्री, ढारस।

दिल-जान—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सहेली।

दिल-जोई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) तसल्ली, धीरज।

दिल-जला—(फ़ा०) (वि०) भग्न-हृदय; जिसके मन को बड़ी व्यथा पहुँची हो।

दिल-दादा—(फ़ा०) (वि०) प्रेमी, जिसने हृदय समर्पित कर दिया हो।

दिल-दार—(फ़ा०) (वि०) (१) प्रेमी, प्यारा; (२) उदार, जी-दार, दाता।

दिल-दिही—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ढारस, संतोष, तसल्ली।

दिल नशीन—(फ़ा०) (वि०) मन में प्रतिष्ठित; हृदयंगम; मन में समाया हुआ।

दिल-पज़ीर—(फ़ा०) (वि०) दिल-पसंद, मनोहर, सुन्दर।

दिल-पसन्द—(फ़ा०) (वि०) मन को पसन्द आनेवाला, रुचिकर, सुन्दर, प्रिय।

दिल-फ़रेब—(फ़ा०) (वि०) मनमोहक, आकर्षक, मनोहर।

दिल-फ़रोश—(फ़ा०) (वि०) आशिक़, प्रेमी।

दिल-फ़िरोज़—(फ़ा०) (वि०) दिल को रोशन करनेवाला।

दिल-बर—(फ़ा०) (वि०) प्रिय, प्यारा।

दिल-बस्तगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मनो-रंजन, जी बहलाना।

दिल-बस्ता—(फ़ा०) (वि०) आशिक़, प्रेमी, जिसका मन किसी में लिप्त हो।

दिल-मिला—(फ़ा०) (सं० पु०) सहेली, सखी का सम्बन्ध।

दिल-रुबा—(फ़ा०) (सं० पु०) प्यारा, प्रिय।

दिल-रुबाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) प्रणय, प्रेम, इश्क़; (२) मन हरता, खूबसूरती।

दिल-शाद—(फ़ा०) (वि०) प्रसन्न मन, खुश, आनन्द मग्न।

दिल-शिकनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दिल तोड़ना, जी को बहुत दुःखी करना।

दिल-शिकस्ता—(फ़ा०) (वि०) दुःखी, जिसका दिल टूट गया हो, निराश।

दिल-सोज़—(फ़ा०) (वि०) (१) सहानुभूति रखनेवाला, दयालु हमदर्द; (२) करुण, मन में करुणा उत्पन्न करनेवाला।

दिल-सोज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दर्द मंदी, हम-दर्दी, सहानुभूति।

दिला—(फ़ा०) (सं० पु०) ऐ दिल, (सम्बोधन)।

दिलागा—(फ़ा०) (वि०) माशूक़, प्रिय, प्यारा।

दिलाराम—(फ़ा०) (वि०) दिल-आराम, प्यारा, दिल को आराम देनेवाला।

दिलावर—(फ़ा०) (वि० (१) बहादुर, वीर; (२) साहसी, मनस्वी, उत्साही।

दिलावरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बहादुरी, साहस।

दिलावेज़—(फ़ा०) (वि०) सुन्दर, मन को लुभानेवाला, मनोहर।

दिलावेज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मनोहरता, आकर्षण।

दिलासा—(फ़ा०) (सं० पु०) तसल्ली, धैर्य, संतोष।

दिली—(फ़ा०) (वि०) हार्दिक, मनोगत।

दिलेर—(फ़ा०) (वि०) बहादुर, वीर, साहसी।

दिलेराना—(फ़ा०) (वि०) वीरोचित।

दिलेरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बहादुरी, वीरता, साहस।

दिल्लगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) हँसी, मज़ाक़, हास्य-विनोद; (२) दिल लगाने की क्रिया या भाव।

दिल्लगी-बाज़—(फ़ा०) (सं० पु०) हँसोड़, मसख़रा, ठठोल।

दी—(फ़ा०) (सं० पु०) कल, जो बीत चुका (एक दिन पहले)।

दीगर—(फ़ा०) (वि०) दूसरा, अन्य, और।

दीद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) निगाह, नज़र, दर्शन, दृष्टि। दीद न शुनीद—(स्त्री०) देखा न सुना। दीदा न शुनीदा—(वि०) अजब, देखी न सुनी।

दीदनी—(फ़ा०) (वि०) दर्शनीय, देखने योग्य।

दीद-बान—(फ़ा०) (सं० पु०) वह छेद जिससे निशाना ताकते हैं।

दीदा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) दृष्टि नज़र; (२) आँख, नेत्र, (३) हिम्मत, बेबाकी, ढिठाई। दीदा-ओ-दानिस्ता—जान-बूझ कर, क़स्दन। दीदा फटा होना—निडर होना, बेबाक होना। दीदा बैठ जाना—रोशनी जाती रहना, अंधा हो जाना।

दीदा-दलेल—(वि० बेशर्म, निडर।

दीदा-धोई—(वि०) बेहया, दिलेर।

दीदार—(फ़ा०) (सं० पु०) दर्शन, सूरत, चहरा। दीदार करना—देखना।

दीदार-बाज़—(फ़ा०) (वि०) आँखें लड़ानेवाला; देखने का लोभी, घूरनेवाला।

दीदार-बाज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) आँखें लड़ाना, ताक-झाँक, सूरत देखना।

दीदारू—(फ़ा०) (वि०) शकील, सुन्दर, दर्शनीय।

दीदा रेज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बारीक और महीन काम, जिससे आँखों पर बहुत ज़ोर पड़े।

दीन—(अ०) (सं० पु०) मज़हब, मत, अक़ीदा।

दीन-दार—(अ०) (वि०) धर्म-रत, मज़हब में विश्वास रखनेवाला, धर्मात्मा, धर्म-परायण।

दीन-दारी—(अ०) (सं० स्त्री०) धार्मिकता, धर्माचरण; मज़हब की पाबंदी।

दीन-दुनिया—(अ०) (सं० स्त्री०) लोक और परलोक; स्वार्थ और परमार्थ।

दीन-पनाह—(अ०) (सं० पु०) धर्म-रक्षक; दीन का हामी, हिमायत करनेवाला।

दीन-परस्त—(अ०) (वि०) दीन-दार, धर्म-परायण।

दीनार—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सोने का सिक्का, मोहर; (२, सोने का ज़ेवर; (३) एक तौल, वज़न।

दीनी—(अ०) (वि०) मज़हबी, धार्मिक, धर्म-सम्बन्धी।

दीबाचा, दीबाजा—(फ़ा०) (सं० पु०) भूमिका, प्रस्तावना।

दीमक—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक सफ़ेद सा छोटा कीड़ा जो काठ, काग़ज़ इत्यादि को खा जाता है।

दीयत—(अ०) (सं० स्त्री०) वह धन जो क़त्ल करनेवाले से मार-डाले हुए के कुटुंब को क्षति-पूर्ति के रूप में दिलाया जाय।

दीवान—(अ०) (सं० पु०) (१) दरबार, कचहरी, बादशाह के बैठने की जगह; (२) मंत्री, वज़ीर; मदारुल-मुहाम, अमात्य; (३) काव्य-संग्रह, किसी कवि की रचनाओं का संग्रह।

दीवान-आम—(अ०) (सं० पु०) (१) दरबार आम, राज-सभा, जिसमें सब लोग जा सकते हों; (२) वह जगह जहाँ बादशाह बैठकर दरबार-आम करते हों।

दीवान-ख़ाना—(अ०) (सं० पु०) मुलाक़ात करने का कमरा, बैठक, घर का वह मर्दाना भाग जहाँ बाहर के लोग आकर बैठते हैं।

दीवान-ख़ास—(अ०) (सं० पु०) (१) दरबार-ख़ास, जहाँ बादशाह अपने वज़ीरों और गिने चुने लोगों के साथ बैठता है; (२) दफ़्तर की जगह; (३) वह जगह जहाँ दरबार-ख़ास होता है।

दीवाना—(फ़ा०) (वि०) पागल, सिड़ी, बावला, विक्षिप्त।

दीवाना-पन—(फ़ा०) (सं० पु०) पागल-पन, सिड़ीपन, उन्माद।

दीवानी—(फ़ा०) (वि०) पगली, सिड़न, बावली। (सं०) (स्त्री०) (१) दीवन का पद, दीवान का कार्य, मंत्रित्व; (२) वह न्यायालय या कचहरी जहाँ जायदाद या संपत्ति सम्बन्धी झगड़ों का निर्णय होता है।

दीवार—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ओट, परदा, टट्टी; ईंटों और चूने या मट्टी का परदा जिससे घेर कर रहने का मकान बनाते हैं।

दीवार-क़हक़हा—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) चीन की प्रसिद्ध बहुत बड़ी दीवार; (२) सिकन्दर बादशाह की बनवाई हुई दीवार, जिस पर चढ़ कर आदमी ख़ूब हँसता था और बाद को मर जाता था।

दीवारगीर—(फ़ा०) (सं० पु०) दीवार में लगाया हुआ ताक़, जिस पर दीपक या अन्य वस्तु रखते हैं।

दीवार-गारा—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) दीवार में लगा हुआ पत्थर या काठ का ताक़; (२) परदा जो शोभा के लिए दीवार के आगे टाँग देते हैं; (३) पलस्तर।

दु—(वि०) दो का छोटा रूप जो प्रायः यौगिक शब्दों में लगा देते हैं।

दुई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) 'दो' का भाव, अलग समझना, भिन्नत्व; जीव और ब्रह्म को अलग-अलग मानना; द्वैत-भाव।

दुआ—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) प्रार्थना, विनती, विनय; (२) दरख़्वास्त, माँग; (३) आशीर्वाद, शुभ-कामना। **दुआ उलटना**—प्रार्थना का उलटा फल होना। **दुआ चलना, दुआ लगना**—प्रार्थना का सफल होना। **दुआ माँगना**—प्रार्थना करना।

दुआइया—(अ०) (वि०) दुआ-सम्बन्धी।

दुआए-ख़ैर—(अ०) (सं० स्त्री०) आशीर्वाद, शुभ-कामना, मंगल-कामना।

दुआए-दौलत—(अ०) (सं० स्त्री०) धन सम्पत्ति के हितार्थ प्रार्थना।

दुआ-गो—(अ०) (वि०) शुभचिन्तक, हितैषी; किसी के मंगल के लिए प्रार्थना करनेवाला।

दुआल—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) चमड़ा; (२) तसमा।

दुआली—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ख़राद घुमाने का चमड़े का तसमा, माल।

दुकान—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) सौदा बेचने का स्थान, व्यापार करने की जगह, गद्दी; (२) भिन्न-भिन्न प्रकार की वस्तुओं का अस्त-व्यस्त फैलाना।

दुकान-दार—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) दुकान का मालिक; (२) दुकान पर माल बेचनेवाला, व्यापारी; (३) ढोंगी, जिसने रुपया पैदा करने के लिए ढोंग रच रखा हो।

दुकान-दारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) दुकान करने का काम; (२) बेचना और ख़रीदना; (३) ढोंग रच कर रुपया पैदा करना।

दुख़ान—(अ०) (सं० पु०) धुआँ, धूम्र, भाप।

दुख़ानी—(अ०) (वि०) भाप के ज़ोर से चलनेवाला।

दुख़्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) लड़की, पुत्री, बेटी।

दुख़्तर—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पुत्री, लड़की, बेटी।

दुख़्तरे-रज़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अंगूर की बेटी यानी शराब, सुरा, मदिरा।

दुज़्द—(फ़ा०) (सं० पु०) चोर, चुरानेवाला।

दुज़्दी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) चोरी।

दुज़्दीदा—(फ़ा०) (वि०) चोरी का, चुराया हुआ।

दुड़ंगे लगाना—(मु०, कूदना, आवारा फिरना।

दुनबल—(फ़ा०) (सं० पु०) फोड़ा, दल दार फोड़ा। शुद्ध उच्चारण दुम्बाल।

दुनबाल, दुनबाला—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) आँख का कोया; (२) सुरमे की लकीर; (३) जहाज़ या नाव का पिछला हिस्सा।

दुनियवी—(अ०) (वि०) सांसारिक, दुनिया से सम्बन्ध रखनेवाला, लौकिक।

दुनिया—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) संसार, जहान, विश्व, (२) दुनिया के लोग; (३) प्रपंच। **दीन-दुनिया**—लोक-परलोक। **दुनिया इधर की उधर हो गई**—बड़ा परिवर्तन हो गया। **दुनिया की हवा लगना**—साधारण सांसारिक व्यवहार करना। **दुनिया देखना**—अनुभव प्राप्त करना। **दुनिया भर की ख़ाक छानना**—बहुत खोज करना, किसी वस्तु की खोज में परीशान होना। **दुनिया भर को आख़ोर**—बहुत निकम्मी और रद्दी चीज़ें। कहा०—**दुनिया और मतलब और मतलब सो अपना**—संसार स्वार्थी है और अपना स्वार्थ ही मुख्य समझता है।

दुनियाई—(अ०) (वि०) सांसारिक। (सं० स्त्री०) संसार, जगत।

दुनिया-दार—(अ०) (वि०) (१) घर-गृहस्थ, दुनिया में फँसा हुआ; (२) मिलनसार, व्यवहार-कुशल, नीति-निपुण; (३) चालाक।

दुनियादारी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) सांसारिक काम, गृहस्थी का जंजाल; (२) कुनबा, रिश्ता; (३) स्वार्थ-साधन, बनावटी व्यवहार, ज़ाहिरदारी।

दुनिया-साज़—(अ०) (वि०) (१) ऊपरी मन से कुछ करनेवाला, स्वार्थ-साधक, ज़ाहिरदारी करनेवाला; मतलब निकालने-वाला, (२) ख़ुशामदी।

दुनिया-साज़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) बनावट, दिखावा, नुमायश; (२) मतलब निकालने का ढंग, स्वार्थ-साधन।

दुब्ब—(अ०) (सं० पु०) रीछ।

दुम—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) पूछ, पुच्छ; (२) पिछला हिस्सा; (३) पिछ-लग्गू, (४) पुछल्ला। दुम में घुसना—ख़ुशामद में लगा रहना। दुम दबा कर भागना—दबकर या डरकर भागना। दुम हिलाना—ख़ुशामद करना।

दुम-गज़ा—पुछल्ला, जो हर समय साथ लगा रहे।

दुमची—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) घोड़े के साज़ का वह तसमा जो दुम के नीचे रहता है।

दुम-दार—(फ़ा०) (वि०) पूँछवाला, पुच्छल।

दुम्बल—(फ़ा०) (सं० पु०) बड़ा फोड़ा।

दुम्बा—(फ़ा०) (सं० पु०) मैढ़ा।

दुम्बाला—(फ़ा०) (सं० पु०) पूछ (२) पिछला भाग; (३) पतवार, (४) सुरमे की लकीर जो ख़ूबसूरती के लिए आँख से बाहर तक लेजाते हैं।

दुर—(अ०) (सं० पु०) मोती, मुक्ता।

दुर-अफ़शानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) मोती बखेरना; (२) सुन्दर उत्तम बातें कहना, सदुपेश देना।

दुरद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) तलछट, गाद। शुद्ध उच्चारण दुर्द।

दुरफ़िशे-कावियानी—(फ़ा०) (सं० पु०) रेशमी-ज़रदोज़ी कपड़ा जो झंडे के सिरे पर लगाते हैं।

दुरुस्त—(फ़ा०) (वि०) (१) ठीक, सही, सालिम (२) निर्दोष, दोषहीन; (३) उचित, यथार्थ।

दुरुस्ती—(फ़ा०) (सं० स्त्री० संशोधन, सुधार।

दुरूद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दुआ, प्रार्थना, स्तुति।

दुरे-शहवार—(फ़ा०) (सं० पु०) राजाओं के योग्य बड़ा मोती।

दुर्र—(अ०) (सं० पु०) मोती, मुक्ता, मोती का लटकन।

दुर्रह—(फ़ा०) (सं० पु०) चमड़े का चाबुक, कोड़ा।

दुर्राज—(फ़ा०) (सं० पु०) तीतर।

दुर्रानी—(फ़ा०) (सं० पु०) पठानों का एक फ़िरका (जो कान में मोती पहनता है)।

दुलदुल—(अ०) (सं० पु०) (१) वह सफ़ेद स्याही-मायल ख़च्चरी जो मिस्र के हाकिम ने मोहम्मद साहब को भेंट में दी और आपने उसे हज़रत अली को उपहार में दे दिया था; (२) घोड़े की शकल का ताज़िया।

दुलदुल-सवार—हज़रत अली का लक़ब।

दुलाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) रूईदार दोहर।

दुशनाम—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) गाली-गलौज।

दुशवार—(फ़ा०) (वि०) कठिन, मुश्किल, दूभर, दुःसह।

दुशवार-गुज़ार—(फ़ा०) (वि०) वह जगह जहाँ पर गुज़रना कठिन हो।

दुशवारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दिक़्क़त, सख़्ती, कठिनता, मुश्किल।

दुशाला—(फ़ा०) (सं० पु०) पशमीने का बना हुआ ओढ़ने का चादर जिसपर रेशमी या ऊनी हाशिया कढ़ा रहता है। दुशाले में लपेट कर लगाना—पर्दे से ज़लील करना; अच्छे शब्दों में निंदा करना।

दुश्त—(फ़ा०) (वि०) बुरा, ख़राब, खोटा, चांडाल, दुश्मन।

दुश्नाम—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) गाली, दुर्वचन।

दुश्मन—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) शत्रु, (२) वैरी; प्रेम का प्रतिद्वंदी, रक़ीब; (३) सखियों का प्यार का संबोधन।

दुश्मनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वैर, शत्रुता।

दूकान—(सं० स्त्री०) देखो—दुकान।

दूद—(फ़ा०) (सं० पु०) भाप, धुआँ।

दूदा—(फ़ा०) (सं० पु०) काजल।

दून—(अ०) (वि०) तुच्छ, कमीना, नीच। (अव्यय) सिवा, अतिरिक्त। (सं० स्त्री०) (१) शेख़ी, डींग; (२) घाटी, पहाड़ की तलहटी।

दू-ब-दू—(फ़ा०) आमने-सामने, रूबरू। दू-ब-दू करना—बहसा-बहसी करना, तकरार करना।

दूर—(फ़ा०) (क्रि० वि०) जुदा, अलग, अंतर पर, फ़ासले पर। दूर करना—हटाना, मिटाना। दूर भागना, दूर रहना—बचते रहना, पास न फटकना। दूर की बात—दूर-अंदेशी की बात, बारीक बात।

दूर-अन्देश—(फ़ा०) (वि०) दूर दर्शी, आगे की सोचनेवाला।

दूर-अन्देशी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दूर-दर्शिता, बहुत आगे की सोचना।

दूर-दराज़—(फ़ा०) (वि०) बहुत दूर, बहुत फ़ासले पर।

दूर-दस्त—(फ़ा०) (वि०) पहुँच से परे, दुर्गम।

दूर-पार—फ़ा०) दूर हटाओ, ईश्वर करे, दूर ही रहे।

दूर-बीन—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक यंत्र जिससे दूर की चीज़ें पास दिखलाई पड़ती हैं।

दूरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अंतर, फ़ासला, फ़र्क़।

देग—(फ़ा०) (सं० पु०) खाना पकाने का बड़ा बर्तन।

देगचा—(फ़ा०) (सं० पु०) छोटा देग, पतीला।

देर—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) विलम्ब, उचित से अधिक समय; (२) समय, अर्सा, मुद्दत, वक़्त। कहा०—देर आयद दुरुस्त आयद—जो काम देर में सोच-समझ कर किया जाता है, वही ठीक ठीक होता है।

देर-आशना—(फ़ा०) (वि०) वह आदमी जो देर में संकोच दूर करे, देर में बे-तकल्लुफ़ हो।

देर-गाह—(फ़ा०) मुद्दत तक, अर्से तक।

देर-पा—(फ़ा०) (वि०) पायदार, मज़बूत, देर तक टिकनेवाला।

देर-सवेर—(सं० स्त्री०) देर।

देरी—(सं० स्त्री०) (औ०) देर।

देरीना—(फ़ा०) (वि०) (१) पुराना, प्राचीन; (२) वृद्ध, बुड्ढा।

देव—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) राक्षस, दैत्य, असुर; (२) लंबा चौड़ा और बलिष्ठ आदमी भीम-काय।

देव-ज़ाद—(फ़ा०) (वि०) देव से पैदा, बहुत डील वाला और ताक़त-वर।

देह—(फ़ा०) (सं० पु०) ग्राम, गाँव, (वि०) देनेवाला—(आराम-देह, तकलीफ़-देह)।

देह-बन्दी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) गाँवों का हलक़ों में बाँटना।

देहात—(फ़ा०) (सं० पु०) गाँव। (देह का बहुवचन)।

देहाती—(फ़ा०) (वि०) (१) गँवार, ग्रामीण; (२) गाँव का।

दैन—(अ०) (सं० पु०) क़र्ज़, ऋण।

दैन-दार—(अ०) (सं० पु०) क़र्ज़दार, ऋणी।

दैजूर—(अ०) (सं० स्त्री०) अंधेरी रात।
दैर—(अ०) (सं० पु०) मन्दिर, मूर्ति का स्थान।
दो—(फ़ा०) (वि०) (१) दो की संख्या जो एक और एक मिलकर होती है; (२) जोड़ा; (३); अलग, भिन्न, जुदा। दो-एक, दो-चार—कुछ, थोड़े। कहा०—दो मुल्ला में मुर्गी हराम—दो ऐसे मनुष्यों में, जिनका पेशा एक हो, काम बिगड़ जाता है; दो आदमियों की बहस में मतलब बिगड़ता है। दो म्यानों में एक छुरी—(औ०) दो औरतों में एक मर्द। दो में तीसरा, आँखों में ठीकरा—तीसरे आदमी के होने से गड़बड़ होती है।
दो-अमला—(फ़ा०) (वि०) (१) दो आदमियों का शासन; (२) वह चीज़ या मकान जिस पर दो आदमियों का अधिकार हो।
दो-अमली—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) द्वैध शासन, दो हुकूमत; (२) बद-इन्तज़ामी, अव्यवस्था, कुप्रबंध।
दो-अस्पा—(फ़ा०) (सं० पु०) दो घोड़े वाला, बहुत तेज़ी से जाना।
दो-आतशा—(फ़ा०) (वि०) (१) शराब या अर्क़ जो दूसरी बार आग पर चढ़ा कर भबके में खींचा गया हो; (२) तुन्द, तेज़। दो आतशा पिलाना—भर्रे पर चढ़ाना।
दो-आब, दो-आबा—(फ़ा०) (सं० पु०) दो नदियों के बीच की ज़मीन।
दो-आशियाना—(फ़ा०) (सं० पु०) दो कमरों वाला डेरा।
दो-क़दम—थोड़ी दूर।
दोग़—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) मक्खन निकाला हुआ दूध; (२) रायता।
दोग़ला—(फ़ा०) (वि०) वर्ण-संकर, कम-असल, कमीना।
दो-गाना—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) साथ मिली हुई दो चीज़ें; (२) सखी, सहेली।
दो-गूना—दो तरह का, दो क़िस्म का।
दो-चन्द—(फ़ा०) (वि०) दुगना, दूना, द्विगुण।
दो-चोबा—(फ़ा०) (सं० पु०) वह डेरा जिसमें दो चोबें लगती हैं।
दोज़—(फ़ा०) (वि०) (१) सीनेवाला, दर्ज़ी; (२) मिला हुआ, लगा हुआ, सटा हुआ।
दोज़ख़—(फ़ा०) (सं० पु०) नरक, जहन्नुम।
दोज़ख़ी—(फ़ा०) (वि०) (१) दोज़ख़ का, नरक का, नारकीय; (२) बहुत बड़ा अपराधी, पापी।
दो-ज़रबा—(फ़ा०) (वि०) दो बार खिंचा हुआ, दो आतशा।
दो-ज़ानू—(फ़ा०) (क्रि० वि०) घुटनों के बल (बैठना)।
दोज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सीने का काम, सिलाई।
दो टुकड़े बात, दो टूक बात—साफ़-साफ़ बात; वह बात जिसमें लगी लिपटी न हो।
दो-तरफ़ा—(फ़ा०) (वि०) दोनों ओर का; दो तरफ़वाला।
दोतार—एक छोटी सारंगी जिसमें दो तार होते हैं।
दो-दस्ता—दोनों तरफ़।
दो-दिन—थोड़ा समय।
दो दिन का—अस्थायी, क्षण-भंगुर, नापायदार।
दो-दिला—शक्की, वहमी।
दो-दिली—शक, वहम।
दो दाने को फिरना—भीख माँगते फिरना।
दो-पट्टा—दो पाट का चादरा; औरतों की एक प्रकार की ओढ़नी। दो-पट्टा तान कर सोना—बेफ़िक्री से सोना, घोड़ा

बेच कर सोना। दो-पट्टा बदलना—औरतें दुपट्टा बदल कर बहनापा जोड़ती हैं।

दो-पाया—(फ़ा०) (वि०) दो पैरोंवाला।

दो-पारा—(फ़ा०) (वि०) दो टुकड़े किया हुआ, दो भागों में बँटा हुआ।

दो-प्याज़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) वह मांस जिसके बनाने में दो बार प्याज़ से काम लिया जाता है।

दो-फ़स्ला—(फ़ा०) (वि०) (१) वह पेड़ जो वर्ष में दो बार फल दे; (२) वह खेत जिसमें साल में दो फ़सलें हों; (३) दो अर्थ देनेवाला, ज़ाहिर में कुछ, बातिन में कुछ।

दो-बाज़ू—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) एक प्रकार का कबूतर; (२) गिद्ध।

दो-बारा—(फ़ा०) (क्रि० वि०) दूसरी बार।

दो-बाला—(फ़ा०) (वि०) दूना, दुगना।

दो-बोल—बहुत संक्षेप में, बहुत संक्षिप्त।

दो-मंज़िला—(फ़ा०) (वि०) वह मकान जिसमें दो मंजिल या खंड हों।

दोमट—(हि०) (सं० स्त्री०) वह ज़मीन जिसमें रेत और मट्टी मिली हो।

दोयम—(फ़ा०) (वि०) दूसरा, द्वितीय; दूसरे।

दोरुख़ा—(फ़ा०) (वि०) दो-रूया, दो-रंगा, वह मनुष्य जो दोनों तरफ़ हो।

दोलाब—(फ़ा०) (सं० पु०) चरख़, रहट।

दोश—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) कंधा; (२) मूंढा; (३) गत रात्रि, गुज़री हुई रात। दोश-ब-दोश—कंधे से कंधा मिला कर।

दोश-माल—(फ़ा०) (सं० पु०) गमछा, कंधे पर रखने का कपड़ा या रूमाल।

दोशम्बा—(फ़ा०) (सं० पु०) सोमवार।

दो-शाख़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) दो बत्तियों का शमादान।

दोशीज़गी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) कुँआरापने का ज़माना।

दोशीज़ा—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अविवाहित, कुमारी।

दो-साला—(फ़ा०) (वि०) दो वर्ष का, दो साल पुराना।

दोस्त—(फ़ा०) (सं० पु०) मित्र, बंधु, सुहृद।

दोस्त-दार—(फ़ा०) (वि०) मित्र, मित्र-भाव रखनेवाला।

दोस्त-दारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दोस्ती, मित्रता।

दोस्ताना—(फ़ा०) (सं० पु०) मैत्री, बंधुत्व, मित्रता।

दोस्ती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मित्रता, प्रीति, बंधुत्व।

दौर—(अ०) (सं० पु०) (१) चक्कर, फेरा; (२) गरदिश, दिनों का फेर; (३) शासन-काल, प्रभुत्व; (४) चाल, रफ़्तार; (५) अर्सा, ज़माना, मुद्दत; (६) परिवर्तन, उलट-पलट; (७) बारी, पारी; (८) फैलाव।

दौरा—(अ०) (सं० पु०) (१) चक्कर, गरदिश, भ्रमण; (२) फेरा, गश्त; (३) बारी, नौबत; (४) रोग का आक्रमण।

दौरान—(फ़ा०) (सं० पु० (१) चक्कर, गर्दिश, दौरा; (२) परिवर्तन; (३) ज़माना, वक़्त, उम्र।

दौलत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) धन, माल; (२) नसीबा, भाग्य; (३) सल्तनत, राज; (४) ताक़त, शक्ति; (५) (औ०) औलाद, बेटा-बेटी।

दौलत-ख़ाना—(अ०) (सं० पु०) निवास-स्थान, घर।

दौलत-मन्द—(अ०) (वि०) धनी, धनाढ्य, मालदार, संपन्न।

दौलत-मन्दी—(अ०) (सं० स्त्री०) धनाढ्यता, संपन्नता।

दौला-मौला—(वि०) (१) बड़ी हिम्मत वाला, साहसी; (२) उदार, दिल-वाला; (३) (औ०) नेक, सीधा, भोला।

ध

धंद्ले—(हि०) (सं० पु०) मक्कारी, धोखे, बहाने; झूठा शोक।

धंदा—(हि०) (सं० पु०) काम, कार-बार; हुनर, रोज़ी; व्यवसाय।

धक—(हि०) (सं० स्त्री०) लीख, छोटी जूँ। (वि०) चकित, विस्मित, हैरान।

धगड़—(हि०) (सं० पु०) पति; यार।

धचका—(हि०) (सं० पु०) धक्का, झटका, चोट, हानि, टोटा।

धज—(हि०) (सं० स्त्री०) ढंग, फ़ैशन, रीति; बनाव।

धज्जी—(हि०) (सं० स्त्री०) काग़ज़ या कपड़े की कतरन; पट्टी। धज्जियां उड़ाना—टुकड़े-टुकड़े करना, बुराई करना।

धज़ीर—(हि०) (सं० स्त्री०) धज्जी, टुकड़ा।

धड़क—(हि०) (सं० स्त्री०) डर, धड़ाका, तड़प।

धड़ल्ला—(हि०) (सं० पु०) भीड़, भीड़-भाड़; ठाट। धड़ल्ले से—खुले ख़ज़ाने, निर्भय होकर।

धड़ाका—(हि०) (सं० पु०) धमाका; तोप या बंदूक़ की आवाज़। धड़ाके से तुरन्त, फ़ुर्ती से।

धड़ी—(हि०) (सं० स्त्री०) दस सेर का बाँट; मिस्सी की तह जो स्त्रियाँ होटों पर जमाती हैं। धड़ी-धड़ी करके लूटना—सब माल लूट लेना, कुछ भी न छोड़ना। धड़ियों—बहुत अधिक।

धत—(हि०) (सं० स्त्री०) आदत, बुरी बान, लत।

धता—(हि०) (सं० स्त्री०) धुत्कार, लानत, टालमटूल। धता बताना—टाल देना; टालमटूल करना, अलग कर देना, छोड़ना, निकाल देना।

धनत्तर—(हि०) (सं० पु०) (न्वतरि); धनी, बलवान्। धनत्तरी निकल जाना—शेख़ी निकल जाना, अकड़ निकल जाना।

धन्नी—(हि०) (सं० स्त्री०) [illegible]ोट, बड़ी कड़ी या शहतीर।

धप—(हि०) (सं० स्त्री०) थप्पड़, धौल।

धपाड़—(हि०) (सं० स्त्री०) लंबी दौड़; लगातार एक साँस में दौड़।

धमक—(हि०) (सं० स्त्री०) आहट, सिर का हल्का दर्द।

धमाल—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) कूद-फाँद, उछलकूद; (२) एक राग। धमा-चौकड़ी—उछलकूद, शोर गुल।

धरना—(हि०) (क्रि०) रखना, टिकाना। धरा जाना—पकड़ा जाना। धरा रहना—बेकार होना, काम न आना। धरी जाय न उठाई जाय—पेचदार, जो समझ में न आवे।

धरती—(हि०) (सं० स्त्री०) ज़मीन, पृथ्वी, संसार।

धरती का फूल—कुकुरमुत्ता, ककरौंदा; मेंढक।

धांदल—(हि०) (सं० स्त्री०) बहाना, झगड़ा, टंटा; छल, धोखा।

धांस—(हि०) (सं० स्त्री०) उग्र गंध। धांसी—घोड़े की खाँसी।

धाक—(हि०) (सं० स्त्री०) डर, भय; धूम, प्रसिद्धि; आतंक, दबदबा। धाक बँधना, धाक जमना, धाक बैठ जाना—रोब जमना, आतंक बैठना।

धागा—(हि०) (सं० पु०) तागा, डोरा; (लख०) दम, झाँसा, धोखा।

धाड़—(हि०) (सं० पु०) झुंड, समूह।

धान—(हि०) (सं० पु०) चावल, छिलके-दार चावल। धान पान—(वि०) दुबला पतला, सुकुमार।

धावली—(हि०) (सं० स्त्री०) कबूतरों के रहने का दड़बा।

धामन—(हि०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार का लंबा साँप; कमान बनाने का बाँस।

धायँ—(हि०) तोप की आवाज़। धायँ धायँ करना—शोर करना, अपनी बके जाना।

धार—(हि०) (सं० स्त्री०) लकीर; सबसे पैना हिस्सा; नदी के बीच का भाग जहाँ पानी का बहाव सब से तेज़ होता है; बाढ़ (तलवार की) धार बैठ जाना—धार कुन्द हो जाना।

धारना—(हि०) (क्रि०) धार डालना, गरम पानी डालना।

धारा—(हि०) (सं० स्त्री०) नदी का बहता हुआ पानी। धारमधार रोना, धारों रोना—बहुत रोना, ऐसे रोना कि आँसू न रुकें।

धारी—(हि०) (सं० स्त्री०) लकीर, बार्डर।

धावा—(हि०) (सं० पु०) चढ़ाई, आक्रमण। धावा बोलना या बोल देना—हमला करना। धावा मारना—लंबी यात्रा करना; दूर तक चलना।

धींग—(हि०) बलिष्ट, मुस्टंडा। धींगा धींगी—ज़बरदस्ती, बदमाशी। धींगा मुश्ती—हाथा-पाई, घूँसं-घासा।

धी—(हि०) (सं० स्त्री०) बेटी, पुत्री, लड़की।

धुन—(हि०) (सं० स्त्री०) ध्वनि, ध्यान, ख़याल, लौ; शौक़, लत, गाने की रीति।

धुनकना—(हि०) (क्रि०) रुई धुनना; पीटना।

धुनना—(हि०) (क्रि०) रुई साफ़ करना, धुनकना, मारना, पीटना।

धुना—(हि०) (सं० पु०) रुई धुननेवाला। धुने जुलाहे—कमीने, नीच।

धुवला—(हि०) (सं० पु०) स्त्रियों का लँहगा।

धुर—(हि०) (सं० पु०) गंतव्य स्थान, अंत। धुराधुर—आरंभ से अंत तक, धुर से धुर तक। धुर का—चोटी का, सर्वोपरि।

धुरपत, धुरपद—(हि०) (सं० स्त्री०) गान की एक ताल; गीत विशेष।

धूल—(हि०) (सं० स्त्री०) गर्द, ख़ाक, राख। धूल की रस्सियाँ बटना, धूल से रस्सियाँ बटना—असंभव के लिए उद्योग करना। धूल के लठ लगाना—झूठ बोलना।

धोतर—(हि०) (सं० स्त्री०) मोटा कपड़ा, गाढ़ा।

धौंताल—(हि०) (सं० स्त्री०) (औ०) जल्दी काम करनेवाली; काम में चतुर चालाक।

धौंकन, धौंकन—(हि०) प्यास, तृषा।

धौल—(हि०) (सं० स्त्री०) थप्पड़, चाँटा, धप; टोटा, नुक़सान।

धौंस—(हि०) (सं० स्त्री०) धमकी, दम, झाँसा, धोखा। धौंस-पट्टी—झाँसा; पट्टी।

धौंसा—(हि०) (सं० पु०) बड़ा नक्क़ारा। धौंसा खाना—सिर फिरना, शामत आना।

न

नंग—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) मान, प्रतिष्ठा; इज़्ज़त; (२) लज्जा, शर्म, हया; (३) ऐब, कलंक। नंगे ख़ानदान—कुटुंब को बदनाम करनेवाला। नंगो-नाम—(फ़ा०) (पु०) मान-प्रतिष्ठा, लिहाज़, शर्म।

न—(फ़ा०) (अव्यय) नहीं, निषेध-वाचक।

नअ़त—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) स्तुति, प्रशंसा, तारीफ़; (२) मोहम्मद साहब की स्तुति।

नईम—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) नेमत; (२) बहिश्त, स्वर्ग; (३) पहुँच, गति, रसाई; (४) लाड़-प्यार; (५) उपहार; (६) नेमत-वाला।

नऊज़ (अ०) (सं० पु०) ईश्वर रक्षा करे।

नक़द—(अ०) (सं० पु०) (१) सिक्का, चाँदी या सोने का; (२) पूंजी। (वि०) रुपया जो तुरंत दिया जाय, उधार का उलटा; ख़ास।

नक़द-ए-जान—(अ०) (सं० स्त्री०) आत्मा; जीव।

नक़द-ए-दम—(अ०) (वि०) अकेला, एक-अकेला, तन-तनहा।

नक़द-ए-माल—(अ०) (सं० पु०) बढ़िया माल।

नक़द-ए-ख़ाँ—(अ०) (सं० पु०) चलन बाज़ार सिक्का, बढ़ियामाल।

नक़दी—(सं० स्त्री०) रुपया, माल, दौलत।

नक़ब—(अ०) (सं० स्त्री०) सेंध, सुरंग।

नक़ब-ज़न—(अ०) (सं० पु०) नक़ब या सेंध लगानेवाला, चोर।

नक़ब-ज़नी—(अ०) (सं० स्त्री०) सेंध लगाना।

नकरा—(अ०) (सं० पु०) अज्ञात दशा, परिचय का अभाव।

नक़ल—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) प्रतिलिपि, कापी; (२) अनुसरण, अनुकरण; (३) स्वाँग; (४) चुटकला, हास्य की छोटी कहानी; (५) हास्योत्पादक रूप।

नक़ल-नवीस—(अ०) (वि०) जो दूसरों के लेख नक़ल करे; कचहरी का वह मुहर्रिर जो नक़लें उतारता हो।

नक़ली—(अ०) (वि०) (१) बनावटी, जाली, खोटा; (२) जो नक़ल करके बनाया गया हो, जो असली न हो।

नक़ले-परवाना—(अ०) (सं० पु०) हँसी में साले के लिए कहते हैं।

नक़ले-मज़हब—(अ०) (स० पु०) पर-धर्म, धर्म-परिवर्तन।

नकहत—(अ०) (सं० स्त्री०) सुगंधि, महक ख़ुशबू।

नक़ाब—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) वह परदा जो मुँह पर डालते हैं; (२) घूंघट। नक़ाब उठाना—घूंघट खोलना, मुँह पर से परदा उठाना।

नक़ाब-दार—(फ़ा०) (वि०) परदा-पोश; नक़ाब पहननेवाला।

नक़ाब-पोश—(अ०) (वि०) वह शख़्स जिसने मुँह पर नक़ाब डाली हो।

नक़ाब-पोशी—(अ०) (सं० स्त्री०) मुँह पर नक़ाब डालने की क्रिया; मुँह ढाँपना।

नक़ायस—(अ०) (सं० पु०) बुराइयाँ, खोट, ऐब, त्रुटियाँ।

नक़ाहत—(अ०) (सं० स्त्री०) रोग के कारण हुई निर्बलता, कमज़ोरी।

नक़ी—(अ०) (वि०) पाक, शुद्ध, पवित्र। (सं० पु०) बारह इमामों में से दसवें इमाम का नाम।

नक़्ज़—(अ०) (वि०) (१) तोड़ने या गिरानेवाला; (२) विपरीत, विरुद्ध, उलटा। (सं० स्त्री०) (१) विरोध, उलटना, उलटापन; (२) अदावत, वैर, दुश्मनी। ताँछ करते हैं।

नक़ीब—(अ०) (स० पु०) (१) प्रसिद्ध करनेवाला, भाट, बंदी जन, चारण; (२) कड़खैत।

नकीर—(अ०) (सं० स्त्री०) एक फ़रिश्ता जो मुरदे से क़ब्र में प्रश्न करता है।

नकीरैन—(अ०) (सं० पु०) मुनकिर व नकीर दो फ़रिश्ते जो मुरदे से क़ब्र में पूछ-

नक़ीह—(अ०) (वि०) दुबला, दुर्बल, कमज़ोर।

नक्क़ाद—(अ०) (वि०) पारखी, खरा खोटा परखनेवाला, आलोचक।

नक्क़ार-ख़ाना—(फ़ा०) (सं० पु०) नौबत-ख़ाना, वह स्थान जहाँ पर नक़ारा बजता है। कहा०—नक्क़ार-ख़ाने में तूती की आवाज़ कौन सुनता है—बड़े आदमियों की राय में छोटे आदमी दख़ल नहीं पा

सकते; बड़े के कानों में छोटों की सुनवाई नहीं होती।

नक्क़ार-ची—(फ़ा०) (सं० पु०) नौबत बजानेवाला।

नक्क़ारा—(फ़ा०) (सं० पु०) नौबत, नगाड़ा, डंका। **नक्क़ारा बजाके**—खुल्लम-खुल्ला, डंके की चोट।

नक्क़ाल—(अ०) (सं० पु०) (१) बहु-रूपिया, नक़लें करनेवाला; (२) मसख़रा, (३) भाँड़।

नक्क़ाली—(अ०) (सं० स्त्री०) भाँड़पन, भड़ैती।

नक्क़ाश—(अ०) (सं० पु०) रंग-साज़, मुसव्विर, नक़्श बनानेवाला।

नक्क़ाशी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) नक़्श करने का काम, नक़्श बनाने का पेशा; (२) मुसव्विरी, गुलकारी, बेल-बूँटे।

नक्कू—(हि०) (वि०) (१) बड़ी नाकवाला, (२) बदनाम। **नक्कू बनाना**—बदनाम करना।

नक्ज़—(अ०) (सं० पु०) बिगाड़ना, टूट-फूट, तोड़ना।

नक्ज़े-अहद—(फ़ा०) (सं० पु०) वायदा-ख़िलाफ़ी, वचन-भंग।

नक्द—(सं० पु०) नक़द, सिक्का। **नक्द आ-नक्द**—हाथों हाथ, फ़ौरन। **कहा०** —**नक्दहू हुरमतहू**—नक़्द रुपया, नक़्द देने में बड़ी इज़्जत है।

नक्श—(अ०) (सं० पु०) (१) बेल-बूटे या फूल-पत्ती का काम; (२) खुदा हुआ या कढ़ा हुआ काम; (३) निशान जो उभरा हुआ हो; (४) चित्र, तसवीर; (५) छाप, मोहर; (६) तावीज़, कवच; (७) जादू-टोना, यंत्र-तंत्र; (८) असर, प्रभाव। (वि०) लिखा हुआ, खुदा हुआ, अंकित किया हुआ।

नक्श-आब, नक्श-बर-आब—(फ़ा०) (पु०) पानी पर का नक़्श, जल्दी मिट जानेवाला।

नक्श-पा—(फ़ा०) (पु०) पैर का निशान, खोज।

नक्श-ब-दीवार नक्शा-बर-दीवार—(१) दीवार पर खिंचे चित्र की तरह (२) हैरान, हक्का-बक्का, चकित।

नक्श-बन्द—(फ़ा०) (सं० पु०) नक़्क़ाश, मुसव्विर, चित्र उतारनेवाला।

नक्शा—(अ०) (सं० पु०) (१) सूरत, शकल, चहरा; (२) नमूना, मिसाल; (३) ख़ाका, साँचा, क़ालिब, ढाँचा; (४) हाल, दशा, अवस्था; (५) बुरा हाल, बुरी दशा; (६) ढंग, हुलिया, तौर-तरीक़ा; (७) लिस्ट, सूची, फ़हरिस्त; (८) चालान; (९) भूगोल में देश इत्यादि दिखलानेवाला चित्र।

नक्शा-नवीस—(फ़ा०) (वि०) नक्शा बनानेवाला या खींचनेवाला।

नक्शा-नवीसी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) नक़्शा बनाने का काम।

नक्शी—(अ०) (वि०) जिस पर बेल-बूटे बने हों, नक़्श-दार।

नक्शीन—(फ़ा०) (वि०) नक्क़ाशीदार, जिस पर बेल-बूटे बने हों।

नक्शे-आब—(अ०) (सं० पु०) (१) पानी पर का निशान; (२) जल्दी मिट जाने-वाला।

नख़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) डोर, पतंग उड़ाने का तागा।

नख़चीर—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) मारा हुआ शिकार, शिकार किया हुआ जानवर; (२) शिकार।

नख़चीर-गाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शिकार-गाह।

नख़रा—(फ़ा०) (सं० पु०) हाव-भाव; चोचला; माशूक़ की चेष्टाएँ; चुलबुला-पन रिझाने के लिए की गई अदाएँ। **नख़रा करना**—चोचला दिखाना, नाज़ और

लाड़ करना। नख़रा निकालना—लाड़ निकालना, हीला हवाला करना। नख़रे में आजाना—घमंड में आजाना, मग़रूर हो जाना।

नख़रा-तिल्ला—(फ़ा०) (सं० पु०) नख़रा, लाड-प्यार, चोचला।

नख़रे पीटी—(वि०) (स्त्री०) नख़रे-बाज़; वह स्त्री जो अपने घमंड में आप ही मरी जाय।

नख़रे-बाज़—(फ़ा०) (वि०) चोचला दिखाने वाला, नख़रा करनेवाला।

नख़ल—(अ०) (सं० पु०) खजूर का पेड़; पेड़। (शुद्ध रूप नख़्ल)

नख़वत—(अ०) (सं० स्त्री०) घमंड, अभिमान, शेख़ी।

नख़ूद—(फ़ा०) (सं० पु०) चना, चणक।

नख़्ख़ास—(अ०) (सं० पु०) (१) ग़ुलाम बिकने का बाज़ार; (२) चौपायों की हाट। नख़्ख़ास की घोड़ी—रंडी, वेश्या। नख़्ख़ासवाली—रंडी, बाज़ारी औरत।

नख़्ल—(अ०) (सं० पु०) (१) खजूर का पेड़; (२) पेड़।

नख़्ल-बंद—(अ०) (सं० पु०) (१ माली, बाग़बान; (२) मोम के पेड़ व फूल-पत्ते बनानेवाला।

नख़्लस्तान—(अ०) (सं० पु०) (१) वह मैदान जिसमें हरे-भरे वृक्ष लहलहाते हों; (२) खजूर के वृक्षों का बन; (३) बाग़।

नख़्ले-ताबूत—(अ०) (सं० पु०) ताबूता या अर्थी की सजावट।

नख़्ले-तूर—(फ़ा०) (सं० पु०) तूर नामक पहाड़ का वह वृक्ष जहाँ हज़रत मूसा ने ईश्वर का प्रकाश देखा था।

नख़्ले मरियम—(अ०) (सं० पु०) खजूर का वह सूखा पेड़ जिसके नीचे ईसा मसीह के जन्म के समय उनकी मा मरियम बैठी थीं और उनके पुण्य प्रताप से वह सूखा पेड़ हरा-भरा हो गया था।

नख़्ले मातम—(फ़ा०) (सं० पु०) बेरी; नख़्ले ताबूत।

नख़्ले मोमी—(अ०) (सं० पु०) मोम से बनाया हुआ वृक्ष और फूल-पत्ते।

नग—(अ०) (सं० पु०) नगीना, अँगूठी के बीच में जड़ा जानेवाला बहु-मूल्य पत्थर या रत्न।

नगीं—(फ़ा०) (सं० पु०) नगीना, नग।

नगीना—(फ़ा०) (सं० पु०) रत्न, मणि। (वि०) ठीक बैठाया हुआ, जड़ा हुआ।

नगीना-साज़—(फ़ा०) (वि०) जड़िया; नगीना बनाने या जड़नेवाला।

नगून—(फ़ा०) (वि०) औंधा, लटका हुआ, उलटा, (शुद्ध रूप नगूं)।

नगून-बख़्त—(फ़ा०) (वि०) बद क़िसमत, भाग्य हीन।

नगून-सार—(फ़ा०) (वि०) औंधा, उलटा।

नग़ज़—(अ०) (वि०) अच्छा, श्रेष्ठ, उत्तम।

नग़ज़-गुफ़्तार—(अ०) (वि०) सुवक्ता।

नग़ज़क—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) उत्तम वस्तु; बढ़िया चीज़; (२) आम, आम्र।

नग़्म—(अ०) (सं० पु०) गीत, राग।

नग़्मा—(अ०) (सं० पु०) (१) गीत, राग; (२ मधुर स्वर, सुरीलापन।

नग़्मात—(अ०) (सं० स्त्री०) गीत, राग, (नग़्मा का बहुवचन)।

नग़्मा तर—(फ़ा०) (वि०) दिलचस्प, मनोरंजक।

नग़्मा-परदाज़—अच्छा गानेवाला।

नग़्मा-संज, नग़्मा-सरा—अच्छा गानेवाला, सुरीला गानेवाला।

नग़्मा संजी, नग़्मा सराई—गान।

नज़अ—(अ०) (सं० पु०) दम टूटना, जान खिंचना, मृत्यु काल में साँस टूटना। (शुद्ध रूप नज़्अ)

नज़द—(फ़ा०) (वि०) क़रीब, समीप, पास, नज़दीक। (शुद्ध रूप निज़्द)

नज़दात—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बाक़ी पावना।

नज़दीक—(फ़ा०) (वि०) (१) निकट, समीप, पास; (२) राय में, समझ में।

नज़दीक-बीन—(फ़ा०) (वि०) पास की चीज़ दिखानेवाला; पास की चीज़ देखने वाला।

नज़दीकी—(फ़ा०) (वि०) पास का, समीपस्थ। (सं० स्त्री०) निकटता, सामीप्य।

नजफ़—(अ०) (सं० पु०) अरब का एक प्रसिद्ध नगर जहाँ हज़रत अली का मज़ार है; ऊँचा टीला।

नज़म—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) लड़ी; (पु०) (२) बंदोबस्त, इन्तज़ाम; (३) शेर, पद्य। (शुद्ध रूप नज़्म)

नज़र—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) मिन्नत, चढ़ावा, नियाज़; (२) भेंट, उपहार; (३) देखना; (४) दृष्टि, निगाह; (५) चिन्ता, ध्यान; (६) देख-भाल, निगरानी; (७) सम्बन्ध, ताल्लुक़, निसबत; (८) जाँच, परख, पहचान; (९) अन्दाज़ा, तख़मीना, क़यास; (१०) आशा; (११) कुदृष्टि, आसेब। **नज़र अन्दाज़ करना**—नापसंद करना, नामंज़ूर करना। **नज़र अल्लाह पर होना**—ईश्वर पर भरोसा होना, निराश न होना। **नज़र आना**—सूझना, कोई चीज़ दिखाई देना, ध्यान में आना। **नज़र आया जाना**—नज़र लग जाना। **नज़र उतारना**—टोटका करके बुरी नज़र का असर दूर करना। **नज़र से उतारना**—ज़लील कर देना। **नज़र में खटकना**—निगाह को बुरा मालूम होना। **नज़र चुराना**—आँख चुराना, छिपना। **नज़र से टपकना**—निगाह से ज़ाहिर होना। **नज़र पर चढ़ना**—दिल को भाना। **नज़र में तोलना**—निगाह से जाँच लेना, अन्दाज़ा कर लेना। **नज़र फिर जाना**—नाराज़ हो जाना, बेमुरव्वत हो जाना। **नज़र फिसलना**—किसी चीज़ का बहुत साफ़ शफ़्फ़ाफ़ होना। **नज़र फेर लेना**—बे-मुरव्वती करना। **नज़र दो चार होना**—आँखें लड़ना; निगाह का निगाह के सामने होना। **नज़र दौड़ाना**—तलाश करना। **नज़र रखना**—मुहब्बत रखना। **नज़र बाँधना**—नज़र-बंदी करना; जादू के खेल दिखाना। **नज़र बचाना**—टालना, आँख चुराना, कतराना, बचकर निकलना। **नज़र सीधी होना**—कृपालु होना। **नज़र में समाना**—प्यारा लगना। **नज़र लगना** बुरी दृष्टि का प्रभाव होना।

नज़र-अन्दाज़—(फ़ा०) (वि०) नज़र से अलग, गिरा हुआ।

नज़र-अन्दाज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) नज़र से गिराना, जाँच।

नज़र-कश—(फ़ा०) (वि०) लुभानेवाला।

नज़र-गाह—(अ०) (सं० स्त्री०) सैर करने की जगह, तमाशे की जगह।

नज़र-गुज़र—(अ०) (सं० स्त्री०) चश्म बद का असर, बुरी नज़र, कुदृष्टि। **नज़र-गुज़र का**—वह चीज़ जो नज़र लग जाने के डर से थोड़ी सी अलग कर दी जाय या ज़मीन पर फेंक दी जाय।

नज़रे-बद—(फ़ा०) (सं० पु०) बुरी नज़र, बुरी नज़र का असर।

नज़र-बन्द—(अ०) (वि०) (१) क़ैदी; (२) वह क़ैदी जिसकी निगरानी की जाय। (सं० पु०) जादू का वह खेल जिसमें कुछ का कुछ और नज़र आवे।

नज़र-बन्दी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) हिरासत; किसी को किसी नियत स्थान के भीतर रखना; (२) जादूगरी, शोबदेबाज़ी, बाज़ीगरी।

नज़र-बाग़—(अ०) (सं० पु०) मकानों या महलों के सामने या चारों ओर का बाग़।

नज़र-बाज़—(अ०) (वि०) (१) नेक व बद का पहचाननेवाला, भले बुरे को समझनेवाला; (२) भाँपनेवाला, ताड़नेवाला; (३) वह जो सिर्फ़ देखने का आनन्द उठावे, हुस्न-परस्त, सौन्दर्योपासक; (४) आँखें लड़ानेवाला।

नज़र-बाज़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) भले बुरे की पहचान; (२) हुस्न-परस्ती, सौन्दर्य को देखना और सराहना।

नज़र-सानी—(अ०) (सं० स्त्री०) फिर से देखना; फिर से जाँचना; दुबारा ग़ौर करना।

नज़र-हाया—(अ०) (वि०) नज़र लगानेवाला, जिसकी नज़र बद हो, नदीदा। **नज़र-हाई**—(स्त्री०)

नज़राना—(अ०) (सं० पु०) भेंट, उपहार।

नज़री—(अ०) (सं० स्त्री०) दर्शन-शास्त्र का एक भेद।

नज़ला—(अ०) (सं० पु०) ज़ुकाम, प्रतिश्याय; एक रोग जिसमें कंठ से पानी गिरता है या आँखों में उतरता है। **नज़ला गिरना**—(१) किसी विशेष अंग पर नज़ला का प्रकोप होना; (२) शामत आना, आफ़त आना।

नज़ला-बन्द—(अ०) (सं० पु०) (१) स्त्रियों का एक ज़ेवर, (२) औषध में तर किया हुआ कपड़ा जो नज़ला रोकने के लिए कनपटी पर लगाया जाता है।

नज़ाकत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) नाज़ुक होना, सुकुमारता, कोमलता; (२) बारीकी, लाघवता, ख़ूबी, नफ़ासत; (३) कमज़ोरी, दुर्बलता; (४) नाज़ुक-मिज़ाजी, छोटी से छोटी बात का भी तबीयत पर असर हो जाना।

नजात—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) मुक्ति, मोक्ष, निर्वाण; (२) रिहाई, छुटकारा।

नजाबत—(अ०) (सं० स्त्री०) शराफ़त, कुलीनता, सज्जनता।

नज़ामत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) व्यवस्था, प्रबन्ध; (२) नाज़िम का कार्य या दफ़्तर।

नज़ायर—(अ०) (सं० स्त्री०) मिसालें, हाई-कोर्ट के फ़ैसले। नज़ीर का बहुवचन।

नज़ार—(फ़ा०) (वि०) (१) दुबला, कमज़ोर, नाज़ुक; (२) ग़रीब, मुफ़लिस।

नज़ारत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) निगहबानी, देख-भाल, रक्षा; (२) नाज़िर का का पद, काम या दफ़्तर; (३) ताज़गी, आबदारी।

नज़ारा—(अ०) (सं० पु०) (१) दृश्य, तमाशा, सैर; (२) दृष्टि, नज़र, निगाह; (३) लुत्फ़। **नज़ारा करना**—देखना।

नज़ारा-बाज़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) नज़र-बाज़ी, घूरा-बारी। **नज़ारा-फ़रेब**, **नज़ारा-संज**—(फ़ा०) (वि०) नज़र को लुभानेवाला।

नजासत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) गन्दगी, मैलापन; (२) अशुद्धता।

नजिस—(अ०) (वि०) (१) मैला, नापाक, गन्दा; (२) अशुद्ध, अपवित्र।

नजिस-उल्-ऐन—(अ०) (वि०) वह चीज़ जिसका हर एक अंश मैला हो; जिसका खाना, पीना, छूना, लगना बुरा समझा जाता हो।

नजिस-पानी—(औ०) शराब, मदिरा।

नज़ीफ़—(अ०) (वि०) पाक, पवित्र, शुद्ध।

नजीब—(अ०) (सं० पु०) (१) शरीफ़, कुलीन, भला-मानस; (२) सिपाही, सैनिक। **नजीब-उल्-तरफ़ैन**—जो माता और पिता दोनों ओर से कुलीन हो।

नज़ीर—(अ०) (सं० स्त्री०) मिसाल, उदाहरण, दृष्टान्त, फ़ैसला, हाई-कोर्ट का फ़ैसला; मानिन्द, समान, उपमा।

नज़ील—(अ०) (वि०) मुसाफ़िर, यात्री, परदेसी, महमान।

नजूम—(अ०) (सं० पु०) (१) ज्योतिष; (२) तारे, सितारे, नक्षत्र। (नज्म का बहुवचन)।

नजूमी—(अ०) (वि०) ज्योतिषी।

नज़ूल—(अ०) (सं० पु०) (१) उतरना, गिरना; (२) क़ुरान शरीफ़ का नाज़िल होना; (३) आँखों की बीमारी का नाम, वह पानी जो आँखों में आजाता है और जिससे दृष्टि जाती रहती है, मोतिया-बिंद; (४) पानी उतर आने का रोग; (५) ज़ब्त की हुई ज़मीन, वह ज़मीन जिसकी मालिक सरकार हो।

नज़ूली—(अ०) (वि०) (१) नज़ूल का महकमा; (२) वह चीज़ जो ज़ब्त होजाय।

नज्जार—(अ०) (सं० पु०) बढ़ई, लकड़ी का सामान बनानेवाला, खाती।

नज्ज़ारगी—(अ०) (सं० स्त्री०) दीदार-बाज़ी, आँखें लड़ाना, घूरा घारी।

नज़्ज़ारा—(अ०) (सं० पु०) नज़ारा।

नज्जारी—(अ०) (सं० स्त्री०) बढ़ई का काम या पेशा, बढ़ई-गीरी।

नज्द—(अ०) (सं० पु०) (१) अरब का एक प्रसिद्ध शहर, (२) ऊँची ज़मीन।

नज्दी—(अ०) (सं० पु०) नज्द का रहनेवाला।

नज्म—(अ०) (सं० स्त्री०) तारा, सितारा। नज्म-उल्-हिंद—हिंदुस्तान का सितारा, एक उपाधि।

नज़्म—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) कविता, पद्य; २) प्रबन्ध, इन्तज़ाम, बंदोबस्त, व्यवस्था (३) पिरोना, मोती को तागे में पिरोना। नज़्म व नस्क़—(पु०) प्रबन्ध व व्यवस्था।

नज़्म-गुस्तर—(फ़ा०) (वि०) शायर, कवि।

नज़्म-गुस्तरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शायरी।

नता—(अ०) (सं० पु०) चमड़े का दस्तरख़्वान जो कपड़े के दस्तरख़्वान के नीचे बिछाया जाता है।

नतायज—(अ०) (सं० पु०) परिणाम, फल, नतीजा का बहुवचन।

नतीजा—(अ०) (सं० पु०) (१) परिणाम, फल; (२) ग़रज़, मतलब। नतीजा देखना—फल पाना, किये का दंड भुगतना।

नतूल—(अ०) (सं० पु०) पानी गरम करके बदन पर डालना।

नदामत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) शरमिन्दगी, पशेमानी, लज्जा; (२) पश्चात्ताप, पछतावा।

नदामत-ज़दा—(फ़ा०) (वि०) पशेमान, लजाया हुआ, लज्जित।

नदारद—(फ़ा०) (वि०) ग़ैर-हाज़िर, ग़ायब लुप्त, कोरा, नहीं।

नदीदा—(फ़ा०) (वि०) (१) लालची; (२) वह मनुष्य जिसने बढ़िया खाना या कोई चीज़ न खाई हो और किसी को खाते देखकर घूरे; (३) जिसने देखा न हो।

नदीम—(अ०) (सं० पु०) दोस्त, साथी।

नद्दाफ़—(अ०) (सं० पु०) धुनिया, रुई धुननेवाला।

नद्दाफ़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) धुनिए का पेशा, रुई धुनने का काम।

नफ़क़ा—(अ०) (सं० पु०) बाल-बच्चों का ख़र्च, बीबी का रोटी कपड़ा। नान-नफ़क़ा—रोटी कपड़ा, रोटी कपड़े के लिए ख़र्च।

नफ़ख़—(अ०) (सं० पु०) पेट का फूलना; अफ़रा।

नफ़र—(अ०) (सं० पु०) (१) दास, नौकर सेवक; (२) व्यक्ति, एक आदमी; (३) मज़दूर।

नफ़रत—(अ०) (सं० स्त्री०) घृणा, बेज़ारी।

नफ़रत अंगेज़—(अ०) (वि०) नफ़रत देनेवाला, नफ़रत बढ़ानेवाला।

नफ़रत-आमेज़—(अ०) (वि०) घृणोत्पादक, घृणा पैदा करनेवाला।

नफ़रत-ज़दा—(अ०) वह शख़्स जिससे लोग नफ़रत करें।

नफ़रीं—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) कोसना, फटकार, धिक्कार, शाप। नफ़रीं उठाना—फटकार को बरदाश्त करना। नफ़रीं करना—फटकारना।

नफ़री—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) एक दिन की उजरत या मज़दूरी; (२) मज़दूरी का दिन। कहा०—नफ़री में नख़रा क्या—वाजबी हक़ देने में अहसान नहीं होता।

नफ़्ल—(अ०) (सं० स्त्री०) नित्य-कर्म में विहित ईश्वर-प्रार्थना के अतिरिक्त प्रार्थना। (नफ़ल देहली में पुंलिंग है)।

नफ़स—(अ०) (सं० पु०) (१) श्वास-प्रश्वास, साँस; (२) दम, पल, घड़ी, सायत।

नफ़स-परवर—(अ०) (वि०) मनोहर।

नफ़से-वापसीं—(अ०) (सं० पु०) मरने के समय का अन्तिम श्वास जो जाकर फिर न आए।

नफ़ा—(अ०) (सं० पु०) फ़ायदा, फल, लाभ, मुनाफ़ा, सूद।

नफ़ाज़—(अ०) (सं० पु०) जारी होना; एक चीज़ का दूसरी चीज़ में से निकलना।

नफ़ायस—(अ०) (सं० स्त्री०) नफ़ीज़ चीज़ें, उत्तम वस्तुएँ।

नफ़ा-रसां—(वि०) लाभ-दायक, फ़ायदा पहुँचानेवाला।

नफ़ा-रसानी—उदारता, लोकोपकार।

नफ़ास—(अ०) (सं० पु०) (१) प्रवृत्ति, दमान; (२) वह रक्त जो बच्चा होने के बाद चालीस दिन तक स्त्रियों के टपकता रहता है; (३) नाल।

नफ़ासत—(अ०) (सं० स्त्री०) उत्तमता, उम्दगी, सफ़ाई, स्वच्छता, ख़ूबी।

नफ़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) किसी वस्तु के अस्तित्व को न मानना; (२) दूर करना; अलग करना; (३) अस्वीकृति, इन्कार। नफ़ी करना—इन्कार करना, दूर करना। नफ़ी में जवाब देना—नामंज़ूर करना, मना करना।

नफ़ीर—(अ०) (वि०) घृणा करनेवाला, नफ़रत करनेवाला। (सं० स्त्री०) (१) आवाज़ जो सोने की दशा में निकलती है; (२) नफ़ीरी, शहनाई; (३) पुकार, चिल्लाना।

नफ़ीरची—(फ़ा०) (वि०) नफ़ीरी बजानेवाला।

नफ़ीरी—(अ०) (सं० स्त्री०) अलग़ोज़ा, तुरही, एक बाजे का नाम।

नफ़ूज़—(अ०) (सं० पु०) अन्दर घुसना, भीतर पैठना।

नफ़्फ़ार—(अ०) (वि०) घृणा करनेवाला, नफ़रत करनेवाला।

नफ़्स—(अ०) (सं० पु०) (१) जीव, जान, आत्मा, प्राण; (२) हस्ती, अस्तित्व, वजूद; (३) तत्व, तथ्य, असली हक़ीक़त, लुब-लुबाब; (४) पुरुष की इंद्रिय, स्त्री का बदन; (५) विषय-वासना; (६) पुस्तक का मुख्य विषय। नफ़्स मारना—तबीयत मारना, इच्छा का दमन करना।

नफ़्स-उल्-अमर—(अ०) (सं० पु०) तत्व, असली मुद्दा या बात।

नफ़्स-कुश—(अ०) (वि०) इंद्रियों का दमन करनेवाला, इच्छाओं को मारनेवाला जितेन्द्रिय, संयमी।

नफ़्सकुशी—(अ०) (सं० स्त्री०) पारसाई, जितेन्द्रियता, पवित्रता।

नफ़स-नातक़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) मनुष्य की आत्मा, इन्सानी रूह; (२) वह पुरुष जो किसी दूसरे की नाक का बाल हो।

नफ़्स-परवर—(अ०) (वि०) स्वार्थी, कामुक, अय्याश, विषयी।

नफ़्स-परवरी—(अ०) (सं० स्त्री०) कामुकता, विषय-वासना।

नफ़्स-परस्त—(अ०) (वि०) कामुक, विषयी, इन्द्रियों का दास।

नफ़्स-परस्ती—(अ०) (सं० स्त्री०) कामुकता, विषय-वासना।

नफ़्स-मतलब—असल मतलब, मुद्दआ, मंशा।

नफ़्सा-नफ़्सी—(अ०) (सं० स्त्री०) स्वार्थ-परता, आपा-धापी।

नफ़्सानियत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) स्वार्थ-परता, शरीर-सेवा करना; (२) अभिमान, घमंड।

नफ़्सानी—(अ०) (वि०) नफ़्स से संबंध रखनेवाला।

नफ़्सी—(अ०) (वि०) (१) अपना, व्यक्तिगत; (२) नफ़्स-सम्बन्धी।

नफ़्सी-नफ़्सी—(अ०) स्वार्थ-परता, आपा-धापी।

नफ़्सी-नफ़्सी का दिन—क़यामत का दिन जब हर आदमी को अपनी ही फ़िक्र होगी।

नफ़्से अम्मारा—(अ०) (सं० पु०) भोग-वासना; विषय-वासना की ओर रुझान।

नफ़्से-नफ़ीस—(अ०) (सं० पु०) सुन्दर व्यक्तित्व।

नफ़्से-नबाती—(अ०) (सं० पु०) वनस्पति में रहनेवाला प्राण, वनस्पति का आत्मा।

नफ़्से-नातिक़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) आत्मा, प्राण, रूह; (२) बहुत घनिष्ठ या प्रिय, नाक का बाल।

नफ़्से-बहीमी—(अ०) (सं० पु०) भोग-वासना, काम-लिप्सा।

नफ़्से-वापसीं—(अ०) (सं० पु०) अन्तिम साँस; मरने के समय का अन्तिम साँस जो वापस न आए।

नबवी—(अ०) (वि०) नबी से सम्बन्ध रखनेवाला।

नबर्द—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) जंग, लड़ाई, युद्ध।

नबर्द-आज़मा—(फ़ा०) (वि०) बहादुर, योद्धा, जंगी आदमी, वीर।

नबर्द-गाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) युद्ध-क्षेत्र, लड़ाई का मैदान।

नबात—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) बूटी, घास, तरकारी, साग-भाजी; (२) मिसरी, कंद।

नबातात—(अ०) (सं० स्त्री०) घास-पात, जड़ी बूटी। (नबात का बहुवचन)।

नबाती—(अ०) (वि०) घास-पात का, जड़ी-बूटी का। (सं० पु०) एक प्रकार का रंग।

नबी—(अ०) (सं० पु०) पैग़म्बर, ख़बर पहुँचानेवाला, ईश्वर का दूत।

नबी-तरस्सुल—(फ़ा०) (सं० पु०) वह नबी जिस पर कोई किताब नाज़िल हुई हो।

नबूअत, नबूवत—(अ०) (सं० स्त्री०) नबी-पन, ईश्वर की आज्ञा का पहुँचाना, पैग़ंबरी।

नब्ज़—(अ०) (सं० स्त्री०) नाड़ी; वह रग जिसमें गति होती है और जिससे रोग पहचाना जाता है; धमनी। **नब्ज़ देखना**—परीक्षा करना। **नब्ज़ चलना**—नब्ज़ का हरकत करना। **नब्ज़ छूटना**—नाड़ी की गति बंद हो जाना, घबराना। **नब्ज़ पहचान लेना**—ताड़ लेना, हाल जान लेना।

नब्बाज़—(अ०) (सं० पु०) वैद्य, नाड़ी देखनेवाला।

नब्बाज़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) नाड़ी देखना, नाड़ी परीक्षा ।

नब्बाश—(अ०) कफ़न-चोर ।

नम—(फ़ा०) (वि०) तर, गीला, भीगा हुआ, आर्द्र ।

नमक—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) नोन, लवण; (२) खारीपन; (३) साँवलापन; (४) काव्य का रस; (५) लावण्य, सुन्दरता । नमक खाकर नमक-दान तोड़ना—कृतघ्न होना । नमक की मार पड़ना—कृतघ्नता का दंड मिलना । नमक फूट-फूट कर निकलना—नमक-हरामी की सज़ा मिलना । नमक मिर्च लगाना—बात बढ़ाकर कहना; छेड़ना, भड़काना, उकसाना ।

नमक-अफ़शाँ—(फ़ा०) (वि०) नमक छिड़कनेवाला ।

नमक-ख़्वार—(फ़ा०) (वि०) नौकर जिसका पालन पोषण किया जाय ।

नमक-चश—(फ़ा०) (वि०) नमक चखनेवाला ।

नमक-चशो—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) ज़ायक़ा, स्वाद, लज़्ज़त; (२) बच्चे को पहले-पहल नमक खिलाने की रस्म; (३) मँगनी के बाद की एक रस्म ।

नमक-दान—(फ़ा०) (सं० पु०) नमक रखने का पात्र ।

नमक-परवरदा—(फ़ा०) (वि०) पोष्य, किसी का नमक खाकर पला हुआ ।

नमक-पाश—(फ़ा०) (सं० पु०) नमक छिड़कने का आला; दुःख देनेवाला ।

नमक-पाशी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) नमक छिड़कना; दुःख देना ।

नमक-सार—(फ़ा०) (सं० पु०) वह स्थान जहाँ से नमक निकलता हो या जहाँ नमक बनाया जाता हो ।

नमक-हराम—(फ़ा०) (वि०) कृतघ्न, दग़ा-बाज़, बेमुरव्वत ।

नमक-हरामी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) कृतघ्नता, धोखेबाज़ी ।

नमक-हलाल—(फ़ा०) (वि०) कृतज्ञ, जो मालिक का काम ईमानदारी से करे ।

नमक-हलाली—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) कृतज्ञता, सत्य-निष्ठा ।

नमकीन—(फ़ा०) (वि०) (१) जिसमें नमक पड़ा हो; (२) खारी, जिसमें नमक का स्वाद हो; सुन्दर, चित्ताकर्षक । (सं०) वह पकवान जिसमें नमक पड़ा हो ।

नमगीरा—(फ़ा०) (सं० पु०) शामियाना, ओस रोकने का तिरपाल ।

नमदा—(फ़ा०) (सं० पु०) जमाया हुआ ऊनी कपड़ा । नमदा बँध जाना—दिवाला निकल जाना, ग़रीब कर देना, सब कुछ छिन जाना ।

नम-नाक—(फ़ा०) (वि०) गीला, तर, आर्द्र ।

नमरूद—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) एक काफ़िर बादशाह का नाम, जिसने हज़रत इब्राहीम को आग में डाल दिया था, पर पर वह आग फूल बन गई थी; (२) ज़ालिम, अत्याचारी, पापी ।

नमश, नमश्क—(अ०) (सं० स्त्री०) दूध का फेन, झाग ।

नमाज़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मुसलमानों की ईश्वरोपासना ।

नमाज़ी—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) नमाज़ पढ़नेवाला; (२) वह कपड़ा जिस पर खड़े होकर नमाज़ पढ़ते हैं; (३) नमाज़ का पाबंद ।

नमाज़े-इस्तस्क़ा—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वह नमाज़ जो मेंह बरसने के लिए हो ।

नमाज़े-कुसूफ़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सूर्य-ग्रहण के समय पढ़ी जानेवाली नमाज़ ।

नमाज़े-खुसूफ़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) चंद्र-ग्रहण के समय पढ़ी जानेवाली नमाज़ ।

नमाज़े-जनाज़ा—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वह नमाज़ जो मुरदे के पास पढ़ी जाय।

नमाज़े-पंजगाना—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पाँचों समय की नमाज़

नमाज़े-पेशी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सुबह की पहली नमाज़।

नमाज़े मैयत—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मुरदे के पास पढ़ी जानेवाली नमाज़।

नमिश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दूध का फेन, झाग।

नमी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) गीलापन, आर्द्रता।

नमूद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) ज़ाहिर होना, प्रकट होना; (२) नुमायश प्रदर्शन, धूम धाम, भड़क; (३) ज़हूर, प्राकट्य; (४) प्रसिद्धि, नाम, शोहरत; (५) सूरत, शकल हस्ती; (६) रौनक़, शान शौकत; (७) शेख़ी, घमंड। **नमूद की लेना**—डून की हाँकना। **नमूदें बाँधना**—किसी की बेजा तारीफ़ करके रोब जमाना।

नमूदार—(फ़ा०) (वि०) (१) प्रकट, दिखलाई देनेवाला, आशकार; (२) उदित; निकला हुआ, अफ़सर, सरदार।

नमूदी—(फ़ा०) (वि०) नामी, नमूदवाला।

नमूना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) बानगी; (२) साँचा, खाका, ढाँचा (३) थोड़ा अंश जिससे संपूर्ण की पहचान होती है।

नम्माम—(अ०) (वि०) चुग़ल-ख़ोर, इधर की उधर कहनेवाला।

नम्मामी—(अ०) (सं० स्त्री०) चुग़ली।

नयस्तां—(फ़ा०) (सं० पु०) नरसल का जंगल।

नयाम—(फ़ा०) (सं० पु० तलवार इत्यादि की म्यान।

नर—(फ़ा०) (वि०) पुरुष।

नरगा—(थू०) (सं० पु०) (१) दिक़्क़त, कठिनाई, मुश्किल; (२) भीड़, समूह, ढेर; (३) आदमियों का घेरा जो पशुओं का शिकार करने के लिए बनाया जाय। **नरगा करना**—घेर लेना, चारों ओर से घेरना। **नरगे में आ जाना**—चारों तरफ़ से घिर जाना, मुसीबत में फँस जाना। **नरगे में डालना**—मुसीबत में फँसाना।

नरगाव—(फ़ा०) (सं० पु०, साँड़, बैल।

नरगिस—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) एक प्रकार का पेड़; उक्त पेड़ का फूल, जिसकी आँख से उपमा दी जाती है।

नरगिसी—(फ़ा०) (वि०) नरगिस का, नरगिस कैसा। (सं० पु०) (१) एक प्रकार का कपड़ा; (२) तले हुए अंडे से बना एक पदार्थ।

नरगिसे-शहला—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) नरगिस का वह फूल जिसकी कटोरी स्याह हो और इसलिए आँखों से और अधिक मिलता हो।

नरम—(फ़ा०) (वि०) (१) मुलायम, कोमल; (२) गुदगुदा; (३) पिलपिला; (४) लोचदार, मुड़ जानेवाला; (५) ढीला, सुस्त, काहिल, धीमा; (६) सहल, आसान (७) हलका; (८) नम्र; (९) नाज़ुक, सुकुमार; (१०) क्रोध कम हो जाना।

नरमा—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) कपास; (२) सेमल की रुई; (३) कान की लौ (नीचे का हिस्सा); (४) एक प्रकार का रंगीन कपड़ा।

नरमाहट—(हि०) (सं० स्त्री०) नरमी, मुलामियत, कोमलता।

नरमी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) नरम होना; (देखो नरम)।

नरमेश—(फ़ा०) (सं० पु०) मेंढ़ा।

नरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बकरी का चमड़ा जो कमाया जाकर जूते बनाने के काम में आता है।

नरीना—(फ़ा०) (वि०) पुरुष-सम्बन्धी।

नर्गिस—(सं० स्त्री०) देखो 'नरगिस'।

नर्द—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) गोट, मोहरा; एक खेल।

नर्दबान—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सीढ़ी, ज़ीना।

नर्म—(फ़ा०) (वि०) देखो—'नरम'।

नर्म-गोश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) कान की लौ।

नर्म-गर्म—(फ़ा०) (वि०) बुरा भला, सख्त-सुस्त। **नर्म-गर्म उठाना**—बुरी भली बात बरदाश्त करना; तजुर्बेकार होना।

नर्म-दिल—(फ़ा०) (वि०) कोमल-हृदय, उदार, दयालु।

नर्मी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) नर्म होना; (देखो—'नरम')।

नवा—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) गाना; (२) माल, दौलत; (३) शब्द, आवाज़; (४) समान; (५) जीविका; (६) उपहार; (७) सेना।

नवाज़—(फ़ा०) (वि०) (१) बचानेवाला, रक्षक; (२) आदर-सत्कार करनेवाला।

नवाज़ना—(क्रि०) मेहरबानी करना।

नवाज़िश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) कृपा, दया, महरबानी।

नवाफ़िज़—(अ०) (सं० पु०) प्रत्येक छिद्र (मनुष्य-देह का) जिससे प्राण को सुख या दुःख हो (जैसे, नाक, कान, मुख)।

नवाब—(अ०) (सं० पु०) (१) राजा, सम्राट् का अनुवर्ती; (२) रियासत का मालिक; (३) एक उपाधि, जो प्रायः बड़े ज़मींदारों को दी जाती है; (४) ठाठ का आदमी।

नवाबी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) नवाब का पद; (२) नवाबों का शासन-काल; (३) नवाबों की हुकूमत या शासन; (४) बहुत ठाट-बाट।

नवाल—(अ०) (सं० स्त्री०) उपहार, कृपा, एहसान।

नवाला—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) लुक़मा, ग्रास, कौर; (२) आसान, सहल काम; (३) ज़रा-सी चीज़। **नवाला तोड़ना**—किसी काम का आरंभ करना।

नवासा—(फ़ा०) (सं० पु०) धेवता, दौहित्र, बेटी का पुत्र।

नवासी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) धेवती, बेटी की पुत्री।

नवासीर—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) वह ज़ख्म जो अच्छा न हो, वह घाव जो पुरे नहीं; (२) भगंदर। (नासूर का बहुवचन)।

नवाह—(अ०) (सं० स्त्री०) आस-पास के प्रदेश, समीपवर्ती स्थान।

नविश्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) तमस्सुक, रुक्क़ा दस्तावेज़; (२) लिखा हुआ।

नविश्ता—(फ़ा०) (वि०) लिखा हुआ, लिखित। (सं० पु०) (१) दस्तावेज़, तमस्सुक; (२) भाग्य, कर्म-रेख, कर्म-लेख।

नवीस—(फ़ा०) (वि०) लिखनेवाला; लेखक।

नवीसिन्दा—(फ़ा०) (वि०) लिखनेवाला, लेखक।

नवीसी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) लिखने की क्रिया, लिखने का काम या पेशा।

नवेद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शुभ समाचार। (स० पु०) निमंत्रण-पत्र।

नशर—(अ०) (वि०) (१) बिखरा हुआ, अस्त-व्यस्त; (२) दुर्दशा-ग्रस्त।

नशा—(अ०) (सं० पु०) (१) पैदा करना; उत्पन्न करना; (२) दुनिया, संसार; (३) वह दशा जो मादक द्रव्य खाने या पीने से होती है; (४) मादक द्रव्य; (५) घमंड, अभिमान, मद। **नशा उतारना**—घमंड मिटाना। **नशा चढ़ना**—बेहोशी छाना, मस्त होना। **नशा किरकिरा करना, नशा मट्टी करना**—रंग में भंग करना, मज़ा बिगाड़ना। **नशा जमना**—नशा

पैदा होना। नशा जवान होना—नशे का तेज़ी पर आना। नशा से बहकना—बदहवास होना। नशे में ग़रकाब होना, नशे में ग़र्क़ होना—नशे की ज़्यादती से बद-हवास होना। नशे में चूर करना—बहुत पिला कर बदमस्त कर देना। नशा हिरन कर देना—नशा दूर कर देना। नशा हिरन होना—ग़फ़लत दूर होना, घमंड दूर होना। नशे का डोरा—वह सुर्ख़ी जो नशे में आँखों की रगों में प्रकट होती है। नशा पानी—नशे की चीज़ें खाना-पीना।

नशा-ख़ोर—(अ०) (सं० पु०) नशा खाने वाला, नशेबाज़।

नशा-ख़ोरी—(अ०) (सं० स्त्री०) नशा पीना; नशा पीने की आदत।

नशात—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) उल्लास, आनन्द; (२) प्रसन्नता, ख़ुशी।

नशिस्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) बैठने की जगह, बैठक; (२) कुरसी; (३) सहवास, संग-साथ, संगति। नशिस्त-बरख़ास्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) उठना-बैठना, उठने-बैठने की तमीज़।

नशिस्त-गाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बैठक, बैठने की जगह।

नशीं, नशीन—(फ़ा०) (वि०) बैठनेवाला, आसीन।

नशीनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बैठने की क्रिया।

नशीला—(अ०) (वि०) (१) नशे में भरा हुआ, मस्त, मतवाला; (२) नशा उत्पन्न करनेवाला, मादक।

नशेब—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) निचाई, पस्ती; (२) नीची भूमि। नशेब फ़राज़—ऊँच-नीच; उतार-चढ़ाव।

नशे-बाज़—(अ०) (वि०) नशा पीने वाला, जिसकी आदत नशा पीने की हो।

नशे-बाज़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) नशा करना, नशा करने की आदत।

नशेमन—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) मकान, घर; (२) घौंसला; (३) विश्राम करने का स्थान, आराम करने की जगह।

नशेमन गाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) विश्राम का स्थान।

नशो—(अ०) (सं० पु०) (१) पैदावार, बढ़ना, पैदा होना, आना; (२) रौनक़, तरक़्क़ी (शुद्ध रूप नश्व)। नश्व-नुमा—बढ़ना और उगना, परवरिश पाना; तरक़्क़ी।

नश्तर—(फ़ा०) (सं० पु०) फ़स्द खोलने या ज़ख़्म चीरने का औज़ार। नश्तर खाना—तकलीफ़ उठाना।

नश्र—(अ०) (सं० पु०) (१) ज़िन्दा करना, ज़िन्दा होना; (२) फैलाव; (३) जीवन; (४) आवारा, परागंदा, परेशान होना; (५) सुगंधि।

नश्रा—(अ०) (सं० पु०) (१) बच्चे के क़ुरान-शरीफ़ समाप्त करने की ख़ुशी; (२) आरम्भ के अक्षर जो गुरु पट्टी पर केसरिया रंग से लिख देता है।

नस—(हि०) (सं० स्त्री०) रग, नाड़ी। नस भड़क जाना—किसी नस पर चोट पहुँच जाना।

नस-कटा—(हि०) (वि०) हिजड़ा, ज़नखा, ज़नाना।

नसतालीक़—(अ०) (सं० पु०) (१) ख़ूब साफ़ और सुन्दर अक्षरों में लिखना; ख़ुश-ख़त लिखना (२) सभ्य, सुशील।

नसनास—(अ०) (सं० पु०) एक प्रकार का कल्पित बन-मानस।

नसब—(अ०) (सं० पु०) (१) नसल, वंश, कुल, सिलसिला-ख़ानदान; (२) वंशावली; (३) लगाना, क़ायम करना, खड़ा करना। नसब मिलना—शिजरा मिलना, एक ही वंश का होना।

नसब-नामा—(अ०) (सं० पु०) कुर्सीनामा, ख़ानदानी शिजरा वंशावली।

नसबी—(अ०) (वि०) ख़ानदानी, वंश-सम्बन्धी।

नसरत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) मैत्री, सहायता, हिमायत; (२) विजय, जीत। (शुद्ध रूप नुसरत)

नसरानी—(अ०) (सं० पु०) (१) ईसाई; (२) ईसाई मज़हब।

नसरीन—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सेवती का वृक्ष; सफ़ेद फूल।

नसल—देखो—'नस्ल'।

नसाजाल—(सं० पु०) (१) वह जगह जहाँ बहुत सी नसें जमा हों; रगों का जमाव; (२) बड़ा जाल जिससे निकलना कठिन हो।

नसायम—(सं० स्त्री०) ठंडी हवा। (नसीम का बहुवचन)।

नसायह—(अ०) (सं० स्त्री०) उपदेश। (नसीहत का बहुवचन)।

नसारा—(अ०) (सं० पु०) ईसाई।

नसीब—(अ०) (सं० पु०) (१) तक़दीर; भाग्य, प्रारब्ध; (२) हासिल, हिस्से के। नसीब जागना—क़िसमत खुलना। नसीब फूट जाना—भाग्य बिगड़ना। नसीब की शामत—बद-क़िसमती, दुर्भाग्य।

नसीब-वर—(अ०) (वि०) भाग्यवान्, ख़ुश-क़िस्मत।

नसीबा—(सं० पु०) (औ०) नसीब, क़िस्मत, भाग्य। नसीब सिकन्दर होना—भाग्य का अच्छा होना। नसीबों की शामत—क़िसमत की बुराई। नसीबों की गिरह खुलना—बद-क़िसमती दूर होना। नसीबों-जला—कमबख़्त, भाग्य-हीन।

नसीबे-आदा, नसीबेदुश्मनाँ—दुश्मनों का नसीब।

नसीम—(अ०) (सं० स्त्री०) ठंडी हवा, शीतल वायु। नसीमे-सहर, नसीमे-सहरी—पिछली रात की हवा, प्रातः काल की वायु।

नसीर—(अ०) (सं० पु०) (१) मदद करने वाला, मित्र; (२) ईश्वर का नाम।

नसीहत—(अ०) (सं० स्त्री०) अच्छी सलाह, उपदेश, शिक्षा।

नसीहत-आमेज़—(अ०) (वि०) वह बात जिसमें नेक सलाह शामिल हो; उपदेश-पूर्ण।

नसीहत-गुज़ार, नसीहत-गो—(अ०) (सं० पु०) नसीहत या उपदेश देनेवाला; उपदेशक।

नसीहत-पज़ीर—(फ़ा०) (वि०) नसीहत माननेवाला।

नसूह—(अ०) (सं० पु०) क़ुरान की वह आयत जिसके अर्थ स्पष्ट हों। (वि०) ख़ालिस, शुद्ध, साफ़। नसूह की तौबा—तौबा जो हमेशा के लिए हो।

नस्क़—(अ०) (सं० पु०) (१) प्रणाली, विधि, पद्धति; (२) बंदोबस्त, व्यवस्था। नज़्म व नस्क़—प्रबंध और व्यवस्था।

नस्ख़—(अ०) (सं० पु०) (१) नक़ल, प्रतिलिपि; (२) पुरानी चीज़ से बहतर मिलने पर उसे रद करना; (३) अरबी लिपि का एक पुराना रूप।

नस्तालीक़—(सं० पु०) (देखो—नसतालीक़)।

नस्ब—(अ०) (सं० पु०) स्थापित करना, खड़ा करना।

नस्र—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) यारी, मदद, सहायता; (२) हिमायत; (३) गद्य। (सं० पु०) गिद्ध, मुरदे खानेवाला एक चील की तरह का पक्षी।

नस्ल—(अ०) (सं० स्त्री०) ख़ानदान, बाल-बच्चे, वंश, कुल। नस्लन् बाद नस्लन्—पुश्त दर पुश्त।

नस्ल-दार—(अ०) (वि०) असील, क़ौम-दार, कुलीन।

नस्ल-दारी—(अ०) (सं० स्त्री०) अच्छे वंश का होना, असील होना।

नस्ली—(अ०) (वि०) नस्ल से सम्बन्ध रखनेवाला; नस्ल-दार।

नस्वार—(हि०) (सं० स्त्री०) हुलास, सुंघनी।

नस्साज—(अ०) (सं० पु०) झूठी बात बनानेवाला, बातून।

नस्सार—(अ०) (सं० पु०) गद्य-लेखक।

नह्ज—(अ०) (सं० पु०) (१) क़ायदा, ढंग, तौर-तरीक़ा; (२) सीधा रास्ता।

नहज़त—(अ०) (सं० स्त्री०) कूच, रवाना होना, रवानगी। (शुद्ध रूप नुहज़त)

नहर—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) नदी की शाखा; (२) मनुष्य के बनाये नदी के पानी के बहाव के रास्ते।

नहरी—(फ़ा०) (वि०) नहर का, नहर से सम्बन्ध रखनेवाला। (सं० स्त्री०) वह भूमि जिसमें पानी नहर से लिया जाता हो।

नह्ल—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) शहद की मक्खी, मधु-मक्खी। सेराब होना, प्यासा होना।

नहस—(अ०) (वि०) अशुभ, कमबख़्त, मनहूस।

नहस-क़दम—(अ०) (वि०) वह जिसका आना अशुभ हो।

नहार—(अ०) (सं० पु०) दिन, रोज़। (फ़ा०) थोड़ा-सा खाना जिससे नाश्ता हो, जल-पान। (वि०) सुबह से कुछ न खाये हुए, भूखा। नहार-मुँह—नाश्ते के बग़ैर। नहार तोड़ना—नाश्ता करना। नहार रहना—सुबह से बिना खाये रहना, भूखा रहना। लैलो-नहार—रात-दिन।

नहारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) खाना जो सुबह खाते हैं; (२) एक प्रकार का गोश्त (पैर के निचले हिस्से का गोश्त) जो प्रातःकाल खाया जाता है।

नही—(अ०) (सं० स्त्री०) रोक, मनाही, निषेध।

नहीफ़—(अ०) (वि०) कमज़ोर, दुर्बल।

नहीब—(अ०) (सं० पु०) (१) दहशत, डर, भय, (२) लूट-पाट।

नहूसत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) बद-नसीबी, कमबख़्ती, मनहूस होना; (२) अशुभ होना।

नहो—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) ढंग, राह, रास्ता; (२) व्याकरण। (शुद्ध उच्चारण नह)

नह्व—(देखो 'नहो')।

ना—(फ़ा०) (प्रत्यय) शब्दों के आगे लगा कर अभाव सूचित करता है, जैसे नालायक़।

ना-अहल—(फ़ा०) (वि०) (१) कमीना, ना-लायक़, अयोग्य; (२) असभ्य।

ना-अहली—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ना-लायक़ी।

ना-आक़बत-अन्देश—(फ़ा०) (वि०) बात का परिणाम न सोचनेवाला।

ना-आगाह—(फ़ा०) (वि०) अपरिचित, नावाक़िफ़।

ना-आज़मूदा—(फ़ा०) (वि०) (१) अनाड़ी, अनुभव-हीन; (२) बिना देखा भाला, अपरीक्षित।

ना-आज़मूदा कार—नातजुर्बेकार, अनुभव-हीन, अनाड़ी।

ना-आशना—(फ़ा०) (वि०) अनजान, अपरिचित, जिससे जान-पहचान न हो, नावाक़िफ़, बे-मुरव्वत; बद-मिज़ाज।

ना-आशनाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बे मुरव्वती, बेवफ़ाई, रूखापन, उदासीनता।

ना-इत्तफ़ाक़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) फूट, अनबन, अनैक्य, बिगाड़, रंजीदगी।

ना-इन्साफ़—(फ़ा०) (वि०) जो इन्साफ़ न करे, अन्यायी।

ना-इन्साफ़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बे-इन्साफ़ी, अन्याय, अंधेर, ज़ुल्म।

ना-उम्मेद—(फ़ा०) (वि०) निराश, नाकाम, मायूस।

ना-उम्मेदी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) निराशा, नाकामी, मायूसी।

नाओ-नोश—(नाय ओ नोश) (फ़ा०) गाना सुनना और शराब पीना, रंग-रलियाँ।

नाक—(फ़ा०) (वि०) भरा हुआ, पूर्ण (शब्दों के अन्त में लगता है)।

ना-कत ख़ुदा—(फ़ा०) (वि०) बिन-ब्याहा, अविवाहित, कुमार।

ना-कत ख़ुदाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अविवाहित अवस्था, कुँआरापन।

ना-क़दर—(फ़ा०) (वि०) क़द्र न करनेवाला, गुण न माननेवाला।

ना-क़दरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बेक़दरी, बेवक़ती, गुणों का आदर न होना।

ना-क़द्रा—(फ़ा०) (वि०) (१) गुणों का आदर न करनेवाला; (२) गुन न माननेवाला, कृतघ्न।

ना-कन्द—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) कम उम्र, बच्चा, कमसिन; (२) नासमझ, मूर्ख; (३) एक साल तक का घोड़ा, बछेड़ा; (४) जिसके अभी तक दूध के दाँत हों।

ना-क़बूल—(फ़ा०) (वि०) नापसंद, अस्वीकृत।

ना-करदनी—(फ़ा०) (वि०) न करने योग्य, अनुचित। (स्त्री०)

ना-करदा—(फ़ा०) (वि०) जो किया न हो, बिन किया।

ना-करदाकार—(फ़ा०) (वि०) अनजान, अनाड़ी, अनुभव-हीन।

ना-करदा - गुनाह, ना-करदा - जुर्म—(फ़ा०) (वि०) बेक़सूर, बेगुनाह, निर्दोष।

ना-कस—(फ़ा०) (वि०) नीच, कमीना, नालायक़, पाजी।

ना-कसी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) नालायक़ी, नीचता।

नाक़ा—(अ०) (सं० स्त्री०) ऊँटनी, साँड़नी।

ना-क़ाबिल—(फ़ा०) (वि०) अयोग्य, जाहिल, अनपढ़, अशिक्षित।

ना-क़ाबलीयत—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अयोग्यता, जहालत।

ना-क़ाबिल-बरदाश्त—(फ़ा०) (वि०) असहनीय, जो बरदाश्त न हो सके।

ना-काम—(फ़ा०) (वि०) (१) निराश, ना-उम्मेद; (२) नामुराद, विफल-मनोरथ।

ना-कामी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) निराशा, ना-उम्मेदी, असफलता।

नाकारा—(फ़ा०) (वि०) (१) बेकार चीज़, निरर्थक; (२) निकम्मा, जो काम का न हो; (३) नालायक़, अयोग्य; (४) सुस्त, अपाहिज।

नाक़ा-सवार—(अ०) (सं० पु०) साँड़नी-सवार; जो ऊँटनी पर सवार हो, हरकारा।

नाक़िल—(अ०) (वि०) नक़ल करनेवाला, वर्णन करनेवाला।

नाक़िस—(अ०) (वि०) (१) जिसमें कमी हो, ऐब-दार, ऐबी; (२) अधूरा, अपूर्ण; (३) बुरा, खोटा।

नाक़िस-उल्-अक़्ल—(अ०) (वि०) कम-अक़्ल; कुंद-ज़हन, मंद-बुद्धि।

नाक़िस - ख़िलक़त, नाक़िस-तीनत—(अ०) (वि०) जिसमें कोई बुराई जन्म-जात हो।

नाक़ूस—(अ०) (सं० पु०) शंख।

ना-ख़लफ़—(फ़ा०) (वि०) नालायक़, अयोग्य, बद-चलन, असभ्य। (पुत्र के लिए)।

ना-ख़लफ़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अयोग्यता, ना-लायक़ी।

नाखुदा—(फ़ा०) (सं० पु०) केवट, नाविक, मल्लाह ।

ना.खुदातरस—(फ़ा०) (वि०) ईश्वर का भय न माननेवाला, सख़्त-दिल, संग-दिल ।

ना.खुन—(फ़ा०) (सं० पु०) नख, ना.खून । **नाखुन का जिगर खोदना**—जिगर पर सदमा पहुँचाना, उमंग पैदा करना । **नाखुन लेना**—(१) ना.खून तराशना; (२) घोड़े का ठोकर खेना, ठोकर लेकर गिर पड़ना ।

ना.खुन-गीर—(फ़ा०) (सं० पु०) नुहरनी, नाख़ून काटने का औज़ार ।

नाखुना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सितार बजाने का मिज़राब; (२) आँख का एक रोग जिसमें आँख के कोये में एक ना.खून की शकल का सफ़ेद सा गोश्त पैदा हो जाता है ।

ना-.खुश—(फ़ा०) (वि०) अप्रसन्न, नाराज़ बेज़ार, मरीज़, बीमार ।

ना-.खुशी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अप्रसन्नता, नाराज़ी, ख़फ़गी; रंजिश ।

ना.खून—(सं० पु०) देखो—'ना.खुन' ।

ना-ख़्वांदा—(फ़ा०) (वि०) (१) अशिक्षित अनपढ़, जाहिल; (२) बिना बुलाया हुआ ।

ना-ख़्वास्त—(फ़ा०) (वि०) बेतलाश, बेतलब ।

ना-गवार, ना गवारा—(फ़ा०) (वि०) (१) अप्रिय, जो अच्छा न लगे; (२) बद-मज़ा; बे-ज़ायक़ा, अरुचिकर, बुरा; (३) जो हज़्म न हो, जो न पचे ।

ना-गहां—(फ़ा०) (क्रि० वि०) अचानक, यकायक, बेवक़्त, बे-मौक़े, बे-ख़बरी में ।

ना-गहानी—(फ़ा०) (वि०) अचानक, बेवक़्त, बे मौक़े । (सं० स्त्री०) बेख़बरी में या बे-मौक़े होना; अनायास होना ।

नागा—(अ०) (सं० पु०) गैर-हाज़िरी, तातील, छुट्टी, ख़ाली दिन; अन्तर ।

नागाह—(फ़ा०) (क्रि० वि०) सहसा, अचानक, यकायक ।

नागुनी—(हि०) (वि० स्त्री०) नाशुक्री, गुन न माननेवाली ।

ना गुफ़्तनी—(फ़ा०) (वि०) शर्म-नाक बात, जो कहने के योग्य न हो ।

ना-गुफ़्ताबेह—(फ़ा०) (वि०) शर्म-नाक, लज्जास्पद, जिसका न कहना ही बहतर है ।

नाचाक़—(फ़ा०) (वि०) (१) बद-मज़ा, आनन्द-रहित; (२) अस्वस्थ, बीमार ।

नाचाक़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) बद-मज़गी, अनबन, बिगाड़, मन-मुटाव; (२) बीमारी, अस्वस्थता ।

ना-चार—(फ़ा०) (वि०) बेबस, नादार, लाचार; ग़रीब बेकस । (क्रि० वि०) लाचार होकर, विवश होकर ।

ना-चारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) लाचारी, विवशता, बेकसी ।

ना-चीज़—(फ़ा०) (वि०) तुच्छ, निकम्मा, हेच, नाकारा, नालायक़, जो कुछ न हो ।

नाज़—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) नख़रा, अदा, चोचला, लाड़-प्यार; (२) घमंड, गर्व, अभिमान; (३) बड़ाई, इज़्ज़त । **नाज़ का पाला**—लाड़ में पला हुआ । **नाज़ उठाना**—नख़रे और चोचले झेलना । **नाज़ करना, नाज़ में आना**—इतराना, घमंड करना ।

नाज़नीं—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सुन्दरी, कोमलांगी ।

नाज़-परवर—लाड़ में पला हुआ ।

नाज़-बरदार—नाज़ उठानेवाला, आशिक़ ।

नाज़-बरदारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) लाड़, चोचले की बरदाश्त ।

नाज़-बालिश—(फ़ा०) (सं० पु०) नरम तकिया; पहलू का मुलायम तकिया ।

नाज़-बू—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार का सुगंधित फूल ।

नाज़ व नियाज़—(फ़ा०) (सं० पु०) चोचला, नख़रा, वह हरकत जो आशिक़ व माशूक़ की तरफ़ से हो।

नाज़ाँ—(फ़ा०) (वि०) अभिमानी, घमंडी, अभिमान करनेवाला।

ना-जायज़—(फ़ा०) (वि०) नियम-विरुद्ध, अनुचित; ना-दुरुस्त, ना-रवा।

ना-जायज़ माल—वह माल जिसका लेना वर्जित हो।

नाज़िम—(अ०) (सं० पु०) (१) पुरवा, जो पिरौने का काम करता हो; (२) मुन्सरिम, कारकुन, सरबराह-कार, व्यवस्थापक; (३) शायर, कवि; (४) किसी प्रदेश की शासन-व्यवस्था करनेवाला।

नाज़िर—(अ०) (सं० पु०) (१) मीर-सामान, देखनेवाला, निगरानी करनेवाला; (२) वह अफ़सर जो मातहतों के काम की देख-भाल करे; (३) ख्वाजा-सरा, महल-सरा; (४) वेश्याओं का दलाल।

नाज़िरा—(क्रि० वि०) पुस्तक देख कर पढ़ना (याद से नहीं)। (स० पु०) देखने की शक्ति।

नाज़िरः-ख्वाँ—(अ०) (वि०) पुस्तक देख कर पढ़नेवाला, या पाठ करनेवाला।

नाज़िरा-ख्वानी—(अ०) (सं० स्त्री०) पुस्तक में से पढ़कर पाठ करने की क्रिया।

नाज़िरीन—(अ०) (सं० पु०) (१) देखनेवाले, दर्शक; (२) पाठक, पढ़नेवाले। (नाज़िर का बहुवचन)।

नाज़िल—(फ़ा०) (वि०) वारिद होनेवाला, गुज़रनेवाला, उतरनेवाला। **नाज़िल होना**—उतरना, आसमान से आना।

नाज़िला—(अ०) (सं० पु०) आपत्ति, संकट, मुसीबत।

नाज़िश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) घमंड करना, इतराना; (२) बेपरवाई, बेदिमाग़ी।

ना-जिन्स—(फ़ा०) (वि०) (१) ग़ैर-जिन्स, दूसरी जाति का, भिन्न-वर्ग; (२) कम-असल; (३) अयोग्य, कमीना, नीच; (४) असभ्य, बेअदब, अशिक्षित।

नाज़ुक—(फ़ा०) (वि०) (१) नरम, कोमल, सुकुमार; (२) हलका, दुबला-पतला; (३) महीन, बारीक, सूक्ष्म; (४) कमज़ोर, बोदा; (५) दिक्क़त-तलब, ख़तर-नाक, जोखों का।

नाज़ुक-अन्दाम—(फ़ा०) (वि०) सुकुमार बदन वाला।

नाज़ुक-कलाम—(फ़ा०) (वि०) बारीक बातें कहनेवाला, अच्छी बातें कहनेवाला।

नाज़ुक-ख़याल—(फ़ा०) (वि०) उम्दा विचार रखनेवाला, आली-ख़याल।

नाज़ुक-जगह—वह जगह जहाँ जान का अन्देशा हो; वह अंग जिसकी चोट से आदमी मर जाय, मर्म-स्थल।

नाज़ुक-ज़माना—भयानक समय, परीक्षा-काल; जान-जोखों का वक़्त, बुरा वक़्त, आपत्ति-काल।

नाज़ुक-तबा, नाज़ुक-दिमाग़—(फ़ा०) (वि०) (१) तेज़-मिज़ाज, चिड़चिड़ा; (२) माशूक़।

नाज़ुक-बदन—पतले बदन का, माशूक़।

नाज़ुक-बात—नाज़ुक मामला, लतीफ़ बात।

नाज़ुक-मिज़ाज—(फ़ा०) (वि०) (१) तुनक-मिज़ाज, चिड़चिड़ा, जल्दी ख़फ़ा हो जानेवाला; (२) जो थोड़ा कष्ट भी न सह सके, (३) घमंडी।

नाज़ुक मुआमला—ख़तरनाक मामला, टेढ़ी बात, कठिन समस्या।

नाज़ुकी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) नज़ा-कत, सुकुमारता; (२) नरमी, मुलामियत, (३) उम्दगी, ख़ूबी, उत्तमता; (४) घमंड, तुनक-मिज़ाजी, ख़ुद-पसंदी।

नाज़ूरा—(अ०) (सं० पु०) अफ़सर, सर-दार; बाग़ की मालिनों की सरदार।

ना-ज़ेब—(फ़ा०) (वि०) भद्दा, बद-शकल, जो देखने में ठीक न जान पड़े।

ना-ज़ेबा—(फ़ा०) (वि०) (१) बद-नुमा, भद्दा; (२) अनुचित, अयोग्य, ना-मुनासिब।

नातक़ा—(अ०) (सं० पु०) बोलने की शक्ति, वाचा। नातक़ा बंद करना—दम बंद करना, बोलती बंद करना। नातक़ा बंद होना—बोलने की हिम्मत न होना।

ना-तजुरबेकार—(फ़ा०) (वि०) अनुभव हीन, अनाड़ी।

ना-तमाम—(फ़ा०) (वि०) नाक़िस, अधूरा, अपूर्ण।

ना-तरबियत-यफ़्ता—(फ़ा०) (वि०) असभ्य, अशिष्ट।

ना-तरस—(फ़ा०) (वि०) (१) बेख़ौफ़, बेधड़क; (२) दया-हीन, क्रूर।

ना-तराश, ना-तराशीदा—(फ़ा०) (वि०) (१) अनगढ़, जो तराशा या छीला न गया हो, ना-हस्वार; (२) उजड्ड, बे-अदब, अशिष्ट।

ना-तवाँ—(फ़ा०) (वि०) कमज़ोर, बोदा, दुर्बल, लाग़र।

ना-तवानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) कमज़ोरी, दुर्बलता, अशक्तता, बोदा-पन।

ना-ताक़त—(फ़ा०) (वि०) दुर्बल, अशक्त, कमज़ोर।

ना-ताक़ती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) कमज़ोरी, अशक्तता, दुर्बलता।

नातिक़—(अ०) (सं० पु०) (१) दूसरे को चुप कर देनेवाला; (२) बोलनेवाला; (३) बुद्धिमान्; (वि०) क़तई, पक्का, दृढ़।

नातिक़ा—(अ०) (सं० पु०) बोलने की शक्ति, वाचा। (देखो—नातक़ा)।

नाद-ए-अली—(अ०) (सं० स्त्री०) तावीज़ या कवच जो बच्चों के गले में डाला जाता है।

नादान—(फ़ा०) (वि०) (१) अनजान, नासमझ, जाहिल, मूर्ख; (२) छोटा बच्चा, कम-सिन। कहा०—नादान की दोस्ती, बालू की भीत—मूर्ख की मित्रता में कुछ स्थिरता नहीं होती। नादान की दोस्ती जी का ज़्यान—मूर्ख की मित्रता में सरासर ख़तरा है। नादान दोस्त से दाना दुश्मन भला—अक़्लमंद दुश्मन इतनी हानि नहीं पहुँचाता जितनी मूर्ख मित्र अपनी मूर्खता से। नादान बात करे, दाना क़यास करे—बुद्धिमान् हर बात को परखता है।

ना-दानिस्तगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अज्ञान, नादानी, बेख़बरी, अनजान-पन।

ना-दानिस्ता—(फ़ा०) (क्रि० वि०) अनजान में, बे क़स्द, बेजाने-बूझे।

नादानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) नासमझी, बेवक़ूफ़ी, मूर्खता।

नादार—(फ़ा०) (वि०) दरिद्र, कंगाल, मोहताज, ग़रीब।

नादारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ग़रीबी, दरिद्रता।

नादिम—(अ०) (वि०) शरमिन्दा, लज्जित।

नादिर—(अ०) (वि०) (१) अनोखा, अद्भुत; (२) कमयाब, दुष्प्राप्य; (३) उम्दा, बढ़िया। (सं० पु०) फ़ारस के एक बादशाह का नाम जिसने भारत पर आक्रमण किया था और देहली में क़त्ल-आम कराया था।

नादिर-गर्दी—(सं० स्त्री०) अंधेर और अत्याचार (नादिर शाह की तरह का)।

नादिर-पाट—(लख०) (पु०) एक प्रकार का कपड़ा जो बड़े अर्ज़ का होता है।

नादिर-शाही—(सं० स्त्री०) अंधेर और अत्याचार।

नादिरा—(अ०) (वि०) अजीब, बढ़िया, कमयाब।

नादिरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) नादिर-शाही; (२) एक तरह की पहनने की सदरी; (३) ताश के पत्तों में बड़ा पत्ता (इक्का, बादशाह, इत्यादि)।

ना-दिहन्द—(फ़ा०) (वि०) क़र्ज़ लेकर न देनेवाला, लैलोट, लीचड़, जो रुपया चुकाने में बखेड़ा करे।

ना-दिहन्दी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) क़र्ज़ लेकर न चुकाने की आदत, लैलोट-पन, लीचड़-पन।

ना-दीदनी—(फ़ा०) (वि०) वह चीज़ जो देखने योग्य न हो।

नादीदा—(फ़ा०) (वि०) (१) बे-देखा, जो देखा न हो; (२) नदीदा।

ना-दुरुस्त—(फ़ा०) (वि०) (१) ग़लत, बेठीक; (२) अनुचित, बेजा।

ना-दुरुस्ती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ग़लती।

नान—(सं० स्त्री०) रोटी, तन्दूर की बड़ी और मोटी रोटी।

नान-कार—(स्त्री०) वह ज़मीन जो बादशाह की ओर से ज़मीदारों को गुज़र-बसर के लिए दी जाती है।

नान-ख़ताई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई।

नानख़्वाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अजवायन।

नान-पाव—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मोटी ख़मीरी रोटी, पाव-रोटी।

नान-बाई—(फ़ा०) (सं० पु०) रोटी बनाने-वाला।

नान व नफ़क़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) रोटी कपड़ा, बाल-बच्चों का ख़र्च।

नाना—(अ०) (सं० पु०) पोदीना।

नाने-जवीं—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) जौ की रोटी; (२) रूखा-सूखा भोजन।

ना-परवा—(फ़ा०) (वि०) ना-समझ, बेबाक, बे-मुरव्वत।

ना-परहेज़गार—(फ़ा०) (वि०) कुकर्मी, बदकार, भ्रष्ट।

उ० हि० को०—३३

नापसन्द—(फ़ा०) (वि०) (१) जो अच्छा न लगे, जो भावे नहीं; (२) बे-तमीज़ आदमी; ऐब।

नापसन्दीदा—(फ़ा०) (वि०) ना-गवार, अप्रिय।

ना-पाक—(फ़ा०) (वि०) (१) अपवित्र, अशुद्ध, पलीद; (२) गंदा, मैला।

ना-पाकी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अपवित्रता, गंदापन।

ना-पायदार—(फ़ा०) (वि०) बोदा, अस्थिर, कमज़ोर।

ना-पायदारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बोदापन, कमज़ोरी।

ना-पुरसां—(फ़ा०) (वि०) बे-परवा।

ना-पुरसांनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बेपरवाई।

ना-पैद—(फ़ा०) (वि०) (१) छिपा हुआ, ग़ायब; (२) बरबाद, अप्राप्य।

ना-पैदा—(फ़ा०) (वि०) गुप्त, छिपा हुआ, गायब, नेस्त-नाबूद।

नापैदा-किनार—ऐसा बड़ा हुआ समुद्र या नदी जिसका किनारा दिखाई न दे।

नाफ़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) नाभि; ढुंडी; (२) मध्य, दरमियान, बीचो-बीच।

नाफ़रजाम—(फ़ा०) (वि०) (१) बद-अंजाम, जिसका अन्त बुरा हो; (२) निकम्मा।

ना-फ़रमान—(फ़ा०) (वि०) उद्दंड, सर-कश, आज्ञा न माननेवाला। (सं० पु०) एक ऊदे रंग के फूल का नाम।

ना-फ़रमानी—(फ़ा०) (सं० पु०) ऊदा रंग। (सं० स्त्री०) आज्ञा न मानना, हुक्म-उदूली।

ना-फ़हम—(फ़ा०) (वि०) नादान, ना-समझ, मूर्ख।

ना-फ़हमी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) नादानी, मूर्खता।

नाफ़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) थैली; कस्तूरी की थैली जो मृग की नाभि से निकलती है।

नाफ़िअ (नाफ़अ)—(वि०) फ़ायदेमंद, लाभ-दायक।

नाफ़िज़—(अ०) (वि०) जारी होनेवाला, प्रचलित, जारी।

नाफ़िज़ा—(अ०) (सं० स्त्री०) जारी होने वाला।

नाफ़िर—(अ०) (वि०) घिन खानेवाला, घृणा करनेवाला।

नाब—(फ़ा०) (वि०) साफ़, स्वच्छ, शुद्ध, पवित्र। (हि०) (सं० स्त्री०) तलवार पर की नाली, जो नोक से कब्ज़े तक दोनों तरफ़ होती है।

ना-बकार—(फ़ा०) (वि०) (१) निरर्थक, व्यर्थ; (२) बद-ज़ात, शरीर, नालायक़; (३) दुष्ट, पाजी; (४) अनुचित, अयोग्य।

नाब-दान—(फ़ा०) (सं० पु०) वह मोरी जिससे गंदा पानी निकले, परनाला।

ना-बलद (ना-बल्द)—(फ़ा०) (वि०) (१) ना-वाक़िफ़, अनजान, अपरिचित; (२) मूर्ख, अनाड़ी।

ना-बलदी (ना-बल्दी)—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ना-वाक़फ़ियत, अज्ञान, मूर्खता।

ना-बायस्ता—(फ़ा०) (वि०) ना-मुनासिब, अनुचित, अशिष्ट, ना शायस्ता।

ना-बालिग़—(फ़ा०) (वि०) जो जवान न न हुआ हो, कमसिन, अप्राप्त-वयस्क।

ना-बालिग़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) कमसिनी, पूरी समझदारी की उम्र न होना।

ना-बीना—(फ़ा०) (वि०) अंधा, दृष्टि हीन, कोर, नेत्र-हीन।

ना-बूद—(फ़ा०) (वि०) (१) नेस्त, जो नेस्त हो जाय, जिसका अस्तित्व मिट गया हो; (२) ना-पैद, नश्वर, फ़ानी, नष्ट होने-वाला।

ना-मंज़ूर—(फ़ा०) (वि०) अस्वीकृत, ना-पसंद, इन्कार किया गया।

ना-मंज़ूरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) इनकार, अस्वीकृति।

नाम—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) इज़्ज़त, आबरू, साख; (२) यश, प्रसिद्धि; (३) याद, स्मृति, याद-गार; (४) औलाद, वंश, ख़ानदान; (५) तुहमत, इलज़ाम; (६) बराये नाम, सिर्फ़ कहने को; (७) ज़िम्मे; (८) संज्ञा, बोध-वाचक शब्द।

नाम-आवर—(फ़ा०) (वि०) नामवर, प्रसिद्ध।

नाम ए-ऐमाल—(फ़ा०) (सं० पु०) ऐमाल नामा, किसी के सब कर्मों का उल्लेख (जो फ़रिश्ते लिखते हैं)।

नाम-ज़द—(फ़ा०) (वि०) (१) जिसका नाम लिया गया हो, जिसका नाम चुना गया हो; (२) प्रसिद्ध; (३) फ़ौज जो मुक़र्रर हो चुकी हो।

नाम-जू—(फ़ा०) (वि०) नामवरी चाहने-वाला, प्रसिद्धि-लोलुप।

नाम-दार—(फ़ा०) (वि०) प्रसिद्ध, नामवर; नामी।

ना-मर्द—(फ़ा०) (वि०) (१) नपुंसक, क्लीव; (२) हिजड़ा, ज़नख़ा, ज़नाना; (३) बोदा, कायर, डरपोक।

ना-मर्दी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) नपुंसकता, क्लैब्य; (२) कायर-पन, बोदा-पन।

नाम-व-निशान—(फ़ा०) (सं० पु०) पता, पता व चिह्न।

नाम-वर—(फ़ा०) (वि०) मशहूर, प्रसिद्ध।

नाम-वरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) प्रसिद्धि, ख्याति, नाम।

ना-महदूद—(फ़ा०) (वि०) असीम, बेहद, अपरिमित।

ना-मेहरबान—(फ़ा०) (वि०) (१) निर्दय, बे-रहम, बे-दर्द, बे-मुरव्वत; (२) दुश्मन, वैरी, अशुभ-चिन्तक।

ना-मेहरबानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) निर्दयता, बेरहमी, बे-मुरव्वती, जफ़ा।

ना-महरम—(फ़ा०) (वि०) अनजान, अपरिचित। (सं० पु०) ऐसा पुरुष जो घर के भीतर न जा सकता हो और जिससे लड़की का विवाह होना वर्जित न हो।

नामा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) पत्र, चिट्ठी; (२) लेख, ग्रंथ, पुस्तक; (३) (हिं०) रुपया। **नामा खुला आना**—मरने की ख़बर देनेवाला पत्र; (जब मरने का समाचार भेजते हैं तो पत्र बन्द नहीं करते)।

ना-माक़ूल—(फ़ा०) (वि०) (१) अयोग्य, नालायक़, ना-शायस्ता; (२) अनुचित, बेजा, मूर्खता-पूर्ण।

ना-माक़ूलियत—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बेवक़ूफ़ी की बात, अनुचित बात, ना-लायक़ी।

नामा-निगार—(फ़ा०) (वि०) संवाद-दाता, समाचार-लिखनेवाला, ख़बर देनेवाला।

ना-मानूस—(फ़ा०) (वि०) ना-आशना, बे-मुरव्वत।

नामाबर, नामा-रसा—(फ़ा०) (सं० पु०) पत्र ले जानेवाला, पत्र-वाहक, चिट्ठी रसा।

ना-मालूम—(फ़ा०) (वि०) (१) बेख़बर, अनजान; (२) अपरिचित, अज्ञात; (३) अप्रसिद्ध।

नामी—(फ़ा०) (वि०) (१) नामक, नामवाला, नामधारी; (२) प्रसिद्ध, मशहूर, विख्यात। **नामी गरामी**—बहुत मशहूर।

ना-मुअतबर—(फ़ा०) (वि०) जिसका ऐतबार न हो, अविश्वसनीय।

ना-मुआफ़िक़—(फ़ा०) (वि०) (१) जो अनुकूल न हो, प्रतिकूल; (२) अनुपयुक्त; (३) ना-गवार, अप्रिय।

ना-मुक़िर—(फ़ा०) (वि०) इन्कारी, इक़रार न करनेवाला; जो स्वीकार न करे।

ना-मुनासिब—(फ़ा०) (वि०) अनुचित, बेजा।

ना-मुबारक—(फ़ा०) (वि०) अशुभ, मनहूस।

ना-मुमकिन—(फ़ा०) (वि०) असंभव, अनहोनी, न होनेवाली बात।

ना-मुराद—(फ़ा०) (वि०) (१) अभागा, बे-नसीब; (२) नाकाम, असफल, विफल-मनोरथ।

ना-मुलायम—(फ़ा०) (वि०) (१) कठोर, कठिन, कड़ा; (२) सख़्त, अनुचित।

नामूस—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) आबरू, इज़्ज़त, प्रतिष्ठा; (२) लाज, शर्म, ग़ैरत; (३) स्त्री-धर्म, पातिव्रत। **नामूस बिगाड़ना**—आबरू लेना।

नामूसी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) बे-ग़ैरती; (२) बे-इज़्ज़ती, बदनामी, अप्रतिष्ठा।

नामूसे-अकबर—(फ़ा०) (सं० पु०) बड़ों का क़ायदा व दस्तूर।

नामे-ख़ुदा—(फ़ा०) ईश्वर कुदृष्टि से बचावे; चश्म-बद्दूर।

ना-मौज़ूं—(फ़ा०) (वि०) (१) अनुपयुक्त, बेजोड़; (२) अनुचित; (३) बे-ताला, बे-सुरा।

नायज़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) लिंग, पुरुष की इंद्रिय।

नायब—(अ०) (सं० पु०) (१) मुख़्तार; (२) सहायक, मदद-गार; (३) मातहत, सहकारी।

नायबत—(अ०) (सं० स्त्री०) नायब का काम या पद।

नायबी—(अ०) (सं० स्त्री०) नायब का काम या पद।

नायम—(अ०) (वि०) सोनेवाला, सोता हुआ।

नायाब—(फ़ा०) (वि०) (१) नादिर, अप्राप्य; (२) श्रेष्ठ, उत्तम।

नारंगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) एक फल; (२) एक रंग, लाल-पीला। (वि०) लाल-पीले रंग का।

नारंज—(फ़ा०) (सं० पु०) नारंगी, संतरा।

नारंजी—(फ़ा०) (वि०) नारंगी के रंग का।

नार—(अ०) (सं० पु०) आग, अग्नि। (फ़ा०) अनार का संक्षिप्त रूप।

नारजील—(फ़ा०) (सं० पु०) नारियल, खोपड़ा, गिरी।

ना-रवा—(फ़ा०) (वि०) (१) बेजा, अनुचित; (२) वर्जित, नियम-विरुद्ध, खिलाफ़ मज़हब; (३) ना-पसंद; (४) विफल-मनोरथ, असफल।

ना-रसा—(फ़ा०) (वि०) (१) न पहुँचनेवाला; (२) प्रभाव-हीन; (३) ना-मुराद।

ना-रसाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पहुँच न होना।

ना-रसीदगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ख़ामी, कमी, आज़मूदा-कार न होना।

ना-रसीदा—(फ़ा०) (वि०) कच्चा (फल), ना-बालिग़।

नारा—(अ०) (सं० पु०) (१) दर्द की आवाज़, आह-हाय; (२) ललकार, घोष, ज़ोर की आवाज़; (३) युद्ध का विजय-घोष।

ना-राज़—(फ़ा०) (वि०) अप्रसन्न, नाख़ुश, ख़फ़ा, रंजीदा, रुष्ट।

ना-राज़गी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अप्रसन्नता, ख़फ़गी।

नारा-ज़न—(अ०) (वि०) (१) ललकारनेवाला, पुकारनेवाला; (२) शिकायत करनेवाला।

ना-राज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अप्रसन्नता, नाख़ुशी, ख़फ़गी, रंजीदगी।

ना-रास्त—(फ़ा०) (वि०) (१) टेढ़ा, जो सीधा न हो; (२) जो ठीक न हो, झूठ; (३) खोटा (आदमी)।

नारी—(अ०) (वि०) (१) अग्नि-सम्बन्धी, अग्नि का, (२) नारकीय, दोज़ख़ी।

नाल—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सूत की तरह का रेशा जो नरसल की क़लम को तराशते वक़्त निकलता है; (२) नरसल, नल; (३) (अ०) जूता, पा-पोश; (४) घोड़े या बैल के पैरों में लगाने का लोहे का हलक़ा; (५) वह लोहा जो जूते की खुरी में मज़बूती के लिए लगाते हैं; (६) वह रक़म जो जुआ खेलनेवाले मकान-दार को जीत के समय देते हैं; (७) एक कसरत करने का घेरा जिसे पहलवान सिर और गर्दन पर फिराते हैं।

नाल-चोबी—(फ़ा०) (सं० पु०) खड़ाऊँ।

नाल-दर-आतिश—(फ़ा०) (वि०) बेक़रार, घबराया हुआ।

नाल-बन्द—(फ़ा०) (वि०) नाल बाँधनेवाला।

नाल-बहा—(फ़ा०) (सं० पु०) ख़िराज, वह टेक्स जो बतौर नज़राना दिया जाय।

नालाँ—(फ़ा०) (वि०) (१) रोता हुआ, रोनेवाला; (२) तंग, शिकायत या फ़रियाद करनेवाला।

नाला—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) रोकर प्रार्थना करना, हाय-हाय, वावैला; (२) ऊधम, शोर, गुल-ग़पाड़ा।

नाला-कश, नाला-गर—(फ़ा०) (वि०) नाला करनेवाला, आह-हाय करनेवाला।

ना-लायक़—(फ़ा०) (वि०) अयोग्य, निकम्मा, कमीना; अनुचित, बेजा।

ना-लायक़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अयोग्यता, कमीना-पन, नीचता।

नालिश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) फ़रियाद, दावा, न्यायालय में न्याय की प्रार्थना करना।

नालिशी—(फ़ा०) (वि०) (१) नालिश करनेवाला, दावेदार, मुद्दई; (२) नालिश-सम्बन्धी।

नालैन—(अ०) (सं० पु०) जूतों का जोड़ा।

नाव—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) नौका, किश्ती, डोंगी।

नावक—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) तीर, बाण; (२) मधु-मक्खी का डंक। नावक बैठना—तीर का निशाने पर लगना।

नावक-अन्दाज़—(फ़ा०) (वि०) तीर चलानेवाला।

नावक-फ़िगान—(फ़ा०) (वि०) तीर चलानेवाला।

नावक-ज़न—(फ़ा०) (वि०) तीर चलानेवाला।

नावक-दिलदोज़—(फ़ा०) दिल में घुस जानेवाला तीर।

ना-वक़्—(फ़ा०) (वि०) बे-वक़्, कुसमय। (क्रि० वि०) बे-मौक़े, अनुचित अवसर पर। (सं० पु०) देर, विलम्ब।

ना-वाक़फ़ीयत—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अनजान-पन।

ना-वाक़िफ़—(फ़ा०) (वि०) अपरिचित, नातजुर्बेकार; जाहिल।

ना-वाजिब—(फ़ा०) (वि०) अनुचित, ग़ैर-मुनासिब, बेजा।

नाश—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) ताबूत, जनाज़ा, अर्थी; (२) लाश, शव।

नाशपाती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार का फल।

ना-शाइस्ता—(फ़ा०) (वि०) (१) अनुचित, ना-मुनासिब; (२) ना-लायक़, ना-हम्वार; (३) उजड्ड, असभ्य, अशिष्ट।

ना-शाइस्तगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) नालायक़ी, उजड्डपन, अशिष्टता; (२) अनौचित्य।

ना-शाद—(फ़ा०) (वि०) (१) दुःखी, रंजीदा, नाख़ुश, अप्रसन्न; (२) अभागा, बद-क़िसमत।

ना-शिकेब—(फ़ा०) (वि०) अधीर, बे-क़रार, बेचैन।

नाशिता—(फ़ा०) (सं० पु०) नाश्ता, जल-पान।

नाशी—(अ०) (वि०) उठनेवाला, पैदा होनेवाला।

ना-शुकरा—(फ़ा०) (वि०) कृतघ्न, नमक-हराम।

ना-शुकरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) कृतघ्नता।

ना-शुक्र—(फ़ा०) (वि०) कृतघ्न, नमक-हराम।

ना-शुदनी—(फ़ा०) (वि०) (१) असंभव, नामुमकिन; (२) (औ०) बद-नसीब, अभागा, कमबख़्त।

नाश्ता—(फ़ा०) (स० पु०) जल-पान, निहारी।

नास—(हि०) (सं० स्त्री०) हुलास, सुँघनी।

नास-दान, नास-दानी—(हि०) हुलास रखने की डिबिया।

ना-सज़ा—(फ़ा०) (वि०) (१) बेजा, ना-मुनासिब, अनुचित; (२) सिफ़ला, नीच, कमीना।

ना-सज़ावार—(फ़ा०) (वि०) (१) ना-मुबारक, मनहूस; (२) अनुचित, ना-मुनासिब, बेजा; (३) कमीना, असभ्य, गँवार।

ना-सबूर—(फ़ा०) (वि०) (१) बेसब्र, अधीर; (२) बेचैन, विकल।

ना-समझ—(फ़ा०) (वि०) बच्चा, कम-उम्र, निर्बुद्धि, नादान, मूर्ख।

ना-समझी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) नादानी, बेवक़ूफ़ी, मूर्खता।

ना-सवाब—(फ़ा०) (वि०) बुरी बात।

नासह—(अ०) (वि०) उपदेश देनेवाला, नसीहत देनेवाला।

ना-साज़—(फ़ा०) (वि०) (१) विरोधी; (२) ना-माफ़िक, अनुपयुक्त; (३) अस्वस्थ, बीमार।

ना-साज़गार—(फ़ा०) (वि०) विरोधी, मुख़ालिफ़, मनहूस।

ना-साज़गारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) विरोध, बदनसीबी, दुर्भाग्य ।

ना-साज़ी—(फ़ा०) (सं०स्त्री०) मुख़ालफ़त, विरोध, बीमारी।

ना-साफ़—(फ़ा०) (वि०) जो पाक साफ न हो।

नासिक—(अ०) (वि०) इबादत करनेवाला, उपासक ।

नासिख़—(अ०) (सं० पु०) (१) लेखक, कातिब; (२) मनसूख़ करनेवाला, रद करनेवाला ।

ना-सिपास—(फ़ा०) (वि०) कृतघ्न, नमकहराम ।

ना-सिपासी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) कृतघ्नता, नमक-हरामी ।

नासिया—(फ़ा०) (सं० पु०) पेशानी, माथा, मस्तक। नासिया-साई—ज़मीन पर माथा रगड़ना, अति की दीनता दर्शाना ।

नासिया-फ़रसा—(फ़ा०) (वि०) माथा रगड़नेवाला ।

नासिर—(अ०) (वि०) (१) गद्य-लेखक; (२) रक्षक, सहायक, हिमायत-करनेवाला ।

नासुफ़्ता—(फ़ा०) (वि०) (१) जिसमें सुराख़ न हुआ हो, अन-बिंधा; (२) क्वारी स्त्री ।

नासूर—(अ०) (सं० पु०) नाड़ी व्रण, ऐसा घाव जो हमेशा रिसता रहे और कभी अच्छा न हो। नासूर पड़ना—(१) ऐसा ज़ख्म होना जो कभी अच्छा न हो; (२) बहुत सख्त चोट पहुँचना ।

ना-हंजार—(फ़ा०) (वि०) (१) बद-चलन, भ्रष्ट; (२) बद-ज़ात, कमीना, नालायक़ ।

ना-हक़—(फ़ा०) (क्रि० वि०) वृथा, व्यर्थ; बेफ़ायदा; बेजा, बे-इन्साफ़ी से । ना-हक़ करना—हक़ के ख़िलाफ करना, बेजा करना। ना-हक़ को—(औ०) ना-हक़, बे-सबब ।

ना-हक़-कोश—ना-हक़ बात की कोशिश करनेवाला ।

नाहक़-शनास—(फ़ा०) (वि०) अन्यायी, बेवफ़ा, जो न्याय का ध्यान न करे ।

नाहक़-शनासी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बे-इन्साफी, अन्याय, ज़ुल्म, अत्याचार ।

ना-हमवार—(फ़ा०) (वि०) (१) ना-बराबर, ऊँचा-नीचा, जो समतल न हो; (२) ना माफ़िक़, प्रतिकूल; (३) बेहूदा, नालायक़, अयोग्य ।

ना-हमवारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ऊँच-नीच, खुरदरा-पन, नालायक़ी ।

नाहीद—(फ़ा०) (सं० पु०) शुक्र का तारा, सूक ।

निक़रिस—(अ०) (सं० पु०) अँगूठे का दर्द, एक प्रकार का गठिया का दर्द ।

निकहत—(अ०) (सं० स्त्री०) फूल की सुगंधि, ख़ुशबू, महक ।

निकाह—(अ०) (सं० पु०) विवाह, शादी, मुसलमानी पद्धति के अनुसार किया हुआ विवाह ।

निकाह-नामा—(अ०) (सं० पु०) वह काग़ज़ जिस पर निकाह की शर्तों का इक़रार होता है ।

निकाही—(अ०) (वि०) जिसके साथ विवाह हुआ हो।

निकोई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) नेकी, भलाई, उपकार; (२) उत्तमता, श्रेय; (३) सद्व्यवहार, शालीनता ।

निकोहिश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) लानत, धिक्कार; (२) धमकी, डाँट ।

निख़ालिस—(हि०) (वि०) जिसमें मिलावट न हो, शुद्ध, ख़ालिस।

निगन्दा—(फ़ा०) (सं० पु०) लिहाफ़ या रज़ाई की दूर दूर की जानेवाली सिलाई कि सीवन न निकले । निगन्दे डालना—रूई-दार चीज़ में लंबे लंबे टाँके भरना ।

निगरां—(फ़ा०) (वि०) (१) रक्षक, देख-भाल रखनेवाला; (२) प्रतीक्षा करनेवाला।

निगरानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) देख-भाल रखना, निगाह रखना, रक्षा।

निगह-बान—(फ़ा०) (सं० पु०) रक्षक, देख-रेख करनेवाला चौकीदार।

निगह-बानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) देख-रेख, रक्षा, हिफ़ाज़त।

निगार—(फ़ा०) (वि०) लिखनेवाला, चित्र-बनानेवाला। (सं० पु०) (१) चित्र, तसवीर, (२) मूर्ति; (३) प्यारा, प्रिय; (४) शोभा के लिए बनाये हुए बेल बूटे।

निगार-ख़ाना—(फ़ा०) (सं० पु०) चित्र-शाला।

निगारिश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) लिखना; (२) बेल-बूटे बनाना; (३) लेख, चित्र।

निगारीं—(फ़ा०) (वि०) (१) जिसने हाथ-पैरों में मेंहदी लगाई हो; (२) प्रिय, प्यारा।

निगारे-आलम—(फ़ा०) (सं० पु०) संसार में सबसे सुन्दर।

निगाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) आँख, दृष्टि; (२) देखने का ढंग, चितवन; (३) कृपा, मेहरबानी, ध्यान; (४) रखवाली, ख़बरदारी, चौकसी; (५) उम्मेद, भरोसा, ख़याल; (६) परख, पहचान।

निगाह-बान—(सं० पु०) चौकीदार, रखवाला।

निगाह-बानी—(सं० स्त्री०) निगरानी, हिफ़ाज़त, रखवाली, चौकसी।

निगूं—(फ़ा०) (वि०) (१) टेढ़ा, वक्र, झुका हुआ; (२) हीन, रहित।

निगूं-बख़्त—(फ़ा०) (वि०) भाग्यहीन, कमबख़्त, अभागा।

निगूं-हिम्मत—(फ़ा०) (वि०) साहस-हीन, डरपोक, कायर।

निज़दात—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) धरोहर, अमानत।

निज़ाअ—(अ०) (सं० पु०) (१) फ़िसाद, झगड़ा, अनबन, लड़ाई; (२) वैर, दुश्मनी, शत्रुता।

निज़ाअ-लफ़्ज़ी—शब्दों का झगड़ा, ज़बानी बहस व तकरार।

निज़ाई—(अ०) (वि०) (१) जिसके बारे में झगड़ा हो; (२) झगड़े का।

निज़ाम—(अ०) (सं० पु०) (१) रविश, तरीक़ा; (२) प्रबन्ध, इन्तज़ाम, बंदोबस्त, व्यवस्था; (३) क्रम, सिलसिला, सजावट; (४) जड़, बुनियाद; (५) मोतियों की लड़ी; (६) हैदराबाद (दक्षिण) के शासकों की उपाधि।

निज़ामत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) प्रबंध, व्यवस्था; (२) नाज़िम का कार्य, पद या दफ़्तर।

निज़ामे-शम्सी—(अ०) (सं० पु०) सूर्य और अन्य ग्रहों की व्यवस्था।

निज़ार—(फ़ा०) (वि०) (१) कमज़ोर, निर्बल, दुर्बल; (२) दरिद्र, ग़रीब; (३) असमर्थ, अशक्त।

निज़्द—(फ़ा०) (क्रि० वि०) निकट, पास, समीप, सामने, आगे।

निढाल—(हि०) (वि०) सुस्त, थका-माँदा, शिथिल।

निदा—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) आवाज़, सदा; (२) पुकार, हाँक, सम्बोधन का शब्द।

निदाइया—वह वाक्य जिसमें निदा का अक्षर हो—(ओ, ऐ, हे इत्यादि)।

निफ़ाक़—(अ०) (सं० पु०) (१) फूट, अनबन, बिगाड़; (२) दुश्मनी, वैर, विरोध। निफ़ाक़ डालना—फूट कराना। निफ़ाक़ पड़ना—आपस में बिगाड़ होना।

निफ़ाक़ता—(अ०) (वि०) (औ०) कपटी, छल करनेवाला, दोग़ला।

निफ़ाख़्ती—(वि०) (औ०) अश्लील, तुच्छ।

निफ़ास—(अ०) (सं० पु०) वह ख़ून जो औरत को बच्चा जनने से चालीस दिन तक टपके।

नि-बख़्ता—(हि०) (वि०) अभागा, बे-नसीब।

नियाज़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) कामना, इच्छा; (२) दीनता; (३) कृपा, प्रेम; (४) फ़ातहा, ग़रीबों का खिलाना; (५) प्रसाद, उपहार। नियाज़ हासिल करना—किसी बड़े से मिलना, दर्शन करना।

नियाज़-मन्द—(फ़ा०) (वि०) (१) सेवक, दास, कृपा-पात्र; (२) कृपाऽभिलाषी, इच्छुक।

नियाबत—(अ०) (सं० स्त्री०) नायब होना, सहकारिता, प्रतिनिधित्व।

नियाम—(फ़ा०) (सं० पु०) तलवार की म्यान।

नियामत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) नेमत, दुर्लभ पदार्थ; (२) स्वादिष्ट भोजन; (३) धन-वैभव।

नियामत ग़ैर-मुतरक़्क़िबा—(अ०) अना-यास प्राप्त धन।

नियामत - परवरदा—(अ०) (वि०) लाडला, लाड़-प्यार से पाला हुआ।

निर्ख़—(फ़ा०) (सं० पु०) भाव, दर।

निर्ख़-नामा—(फ़ा०) (सं० पु०) भावों की सूची, मूल्य की फ़हरिस्त।

निर्ख़-बन्दी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) भाव निश्चित करना, दर तय करना।

निवाला—(फ़ा०) (सं० पु०) लुक़्मा, ग्रास, कौर।

निशस्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बैठक, बैठने का ढंग। निशस्त - बरख़ास्त—उठने बैठने का ढंग।

निशस्त-गाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बैठक।

निशा-ख़ातिर—(अ०) (सं० स्त्री०) इत्मी-नान, संतोष, तसल्ली, धैर्य।

निशात—(अ०) (सं० स्त्री०) मज़ा, ख़ुशी, हर्ष।

निशात-अफ़ज़ा—(फ़ा०) (वि०) हर्ष बढ़ानेवाला।

निशात-कार—(फ़ा०) (सं० पु०) काम करने की उमंग, उत्साह।

निशात-परस्त—(फ़ा०) (वि०) ख़ुश रहनेवाला।

निशान—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) लक्षण, चिह्न, जिससे कोई चीज़ पहचानी जाय; (२) आसार, अलामत; (३) पता, याद-गार, स्मृति; (४) झंडा, अलम; (५) लक्ष्य; (६) खोज, सुराग़। निशान चढ़ाना—मंगनी के दिन अँगूठी-छल्ला दुलहिन को पहनाना। निशान पाना—पता पाना, सुराग़ पाना। निशान बाक़ी न रहना—यादगार न रहना। निशान रह जाना—स्मृति बाक़ी रह जाना। निशान से गुज़र जाना—नामवरी पाने की इच्छा न रहना।

निशान-ची—(फ़ा०) (सं० पु०) झंडा लेकर चलनेवाला।

निशान-देही—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ठिकाना बताना, पता बताना, पहचानना, सही करना, तसदीक़ करना।

निशान-बरदार—(फ़ा०) (सं० पु०) झंडा लेकर चलनेवाला।

निशाना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) लक्ष्य, हदफ़; (२) शिस्त; (३) जिस पर कोई बात कही जाय, जिस पर कटाक्ष किया जाय। निशाना उड़ा देना, निशाना उड़ाना—ठीक निशाना लगाना। निशाना चूकना—तीर का लक्ष्य पर न पड़ना। निशाना पट पड़ना—निशाना चूक जाना। निशाना पर तीर

पड़ना—उद्देश्य सफल होना। निशाना बाँधना—निशाना ताकना। निशाना बैठना—निशाना मौक़े पर पड़ना। निशाना होना—तीर या गोली से मारा जाना, शिकार होना।

निशाना-अन्दाज़—(फ़ा०) (सं० पु०) ठीक निशाना लगानेवाला।

निशाना-अन्दाज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ठीक निशाना लगाना।

निशानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) अंगूठी, छल्ला जो मंगनी के दिन देते हैं; (२) यादगार, स्मृति-चिह्न; (३) पहचान; (४) औलाद, नस्ल।

निशास्ता—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) गेहूँ का सत्त; (२) माँड़ी, कलफ़।

निशीद—(फ़ा०) (सं० पु०) गाने की आवाज़, संगीत।

निसबत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) सम्बन्ध, वास्ता, इलाक़ा, लगाव; (२) मंगनी, सगाई, पयाम; (३) मुक़ाबिला; (४) बाबत, बारे में। शुद्ध उच्चारण निस्बत

निसबत-नाता—शादी-ब्याह, रिश्तेदारी।

निसबती—(अ०) (वि०) रिश्तेदार, संबंधी। निसबती भाई—(१) बहनोई, दूल्हा-भाई; (२) साला।

निसवाँ—(अ०) (सं० स्त्री०) स्त्रियाँ, औरतें।

निसवानी—स्त्रियों से सम्बन्ध रखनेवाला।

निसा—(अ०) (सं० स्त्री०) औरतें, बीबियाँ।

निसाब—(अ०) (सं० पु०) (१) पूंजी; (२ धन-दौलत, सम्पति।

निसार—(अ०) (सं० पु०) निछावर, सदक़ा, क़ुरबान। (वि०) निछावर किया हुआ।

निसियाँ, निसियान—(अ०) (सं० पु०) (१) भूल जाना, भूल, चूक, ग़लती, (२) स्मृति का अभाव।

निसूड़िया—(हि०) (वि०) मनहूस, अशुभ।

निसोत—(हि०) (वि०) साफ़, निथरा हुआ, विशुद्ध, ख़ालिस। (सं०) पतला शोरबा।

निस्फ़—(अ०) (वि०) आधा, अर्द्ध।

निस्फ़-उल्-नहार—(अ०) (सं० पु०) दोपहर का वक्त; एक ध्रुव से दूसरे तक की रेखा। शुद्ध उच्चारण निस्फ़ु-उन-नहार

निस्फ़ा-निस्फ़—(अ०) (वि०) आधों-आध, ठीक आधा आधा।

निस्बत—(सं० स्त्री०) देखो—'निसबत'।

निहंग—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) मगर-मच्छ, घड़ियाल; (२) तलवार। (वि०) अकेला, बिना साथी के। निहंगे-अजल—यम-दूत।

निहंग—(हि०) (वि०) नंगा, बेहया, बेशर्म।

निहंग-लाड़ला—(हि०) (वि०) लाड़-दुलार के कारण बिगड़ा हुआ।

निहाँ—(फ़ा०) (वि०) छिपा हुआ, गुप्त, पोशीदा।

निहाद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) मन, स्वभाव, आदत; (२) मूल, जड़। नेक-निहाद—सुशील, अच्छा। बद-निहाद—दुष्ट, बुरा।

निहानी—(फ़ा०) (वि०) पोशीदा, गुप्त, छिपा हुआ।

निहायत—(अ०) (वि०) बहुत, अत्यन्त, अतीव। (सं० स्त्री०) सीमा, हद।

निहाल—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) ताज़ा लगाया हुआ पेड़, पेड़; (२) तोशक, गद्दा; (३) शिकार। (वि०) माला-माल, संपन्न, सफल-काम।

निहालचा—(फ़ा०) (सं० पु०) तोशक, गद्दा, बच्चों का बिछौना।

निहाली—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) तोशक, गद्दा; (२) रुईदार बिस्तर।

नीको—(फ़ा०) (वि०) (१) अच्छा, उत्तम; (२) सुन्दर, मनोहर।

नीकोई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) उत्तमता, सुन्दरता; (२) भलाई।

नीको-कार—(फ़ा०) (वि०) अच्छे काम करनेवाला, भला आदमी।

नीज़—(फ़ा०) (अव्यय) भी, और।

नीम—(फ़ा०) (वि०) आधा। (सं० पु०) मध्य, बीच।

नीम-आस्तीन—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) आधी बाहों की कुरती।

नीम-कश (फ़ा०) (वि०) आधा अन्दर आधा बाहर (तीर, तलवार आदि)।

नीम-कुश्ता—(फ़ा०) (वि०) अधमरा, घायल, ज़ख़्मी।

नीम-ख़्वाब—(फ़ा०) (वि०) उस तरह की आँख जो कच्ची नींद सोकर उठने से मतवाला-पन लिए होती है।

नीमचा—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार की कटार।

नीम-जाँ—(फ़ा०) (वि०) (१) अधमरा, जिसमें आधी जान बाक़ी हो, (२) आशिक़।

नीम-जोश—(फ़ा०) (वि०) आधा पका हुआ; हल्का उबाला हुआ।

नीम-निगाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) आधी नज़र, कन-अखी।

नीम-बाज़—(फ़ा०) (वि०) आधा खुला आधा बन्द; नशीला।

नीम-बिस्मिल—(फ़ा०) (वि०) (१) अधमरा; (२) घायल, ज़ख़्मी।

नीम-रंग—(फ़ा०) (वि०) जिसका रंग उड़ गया हो।

नीम-रज़ा—(फ़ा०) (वि०) कुछ कुछ राज़ी, कुछ अंश में सन्तुष्ट।

नीम-राज़ी—(फ़ा०) (वि०) आधा राज़ी।

नीम-रोज़—(फ़ा०) (सं० पु०) दो-पहर।

नीम-सोख़्ता—(फ़ा०) (वि०) आधा जला हुआ।

नीम-हकीम—(फ़ा०) (वि०) नातजुर्बेकार हकीम, अताई। कहा०—नीम हकीम ख़तरे-जान, नीम मुल्ला ख़तरे-ईमान—नातजुर्बेकारों से काम बिगड़ता है।

नीमा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) एक प्रकार का ऊँचा जामा; (२) बुरक़ा। (वि०) आधा।

नीमास्तीन—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) आधी आस्तीन की कुरती।

नीयत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) दिली इरादा, आन्तरिक इच्छा, दिली मंशा, असली मतलब; (२) उद्देश्य, आशय, मतलब। नीयत डिगना—बुरा विचार आना, लालच आना। नीयत में फ़र्क़ आना—बेईमानी करने लगना।

नील—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) नील का पौदा और पत्ती; (२) रंग जो उक्त पेड़ से निकलता है; (३) चोट का निशान (जिसका रंग नीला होता है)। नील बिगड़ना—कमबख़्ती आना, शामत आना, झूठी बातें बनाना। नील ढलना—बेशर्म होना, मौत आने के आसार पैदा होना। नील का माट बिगड़ना—किसी झूठी ख़बर का मशहूर होना। नील घोटना—शोर मचाना, लड़ाई डालना। नीला-पीला होना, नीली-नीली आँखें दिखाना—ग़ुस्सा होना, ख़फ़ा होना। नील का टीका—कलंक का टीका, लांछन।

नील-गर—(फ़ा०) (सं० पु०) नील बनानेवाला।

नील-गूँ—(फ़ा०) (वि०) नीले रंग का।

नील बरी—निकृष्ट प्रकार का नीला।

नीलम—(फ़ा०) (सं० पु०) नील-मणि, एक बहु-मूल्य रत्न।

नीलाम—(पुर्त०) (सं० पु०) बोलियाँ बोल कर बेचना।

नीलोफ़र—(फ़ा०) (सं० पु०) नील कमल; एक प्रकार का फूल।

नुकता—(अ०) (सं० पु०) (१) सूक्ष्म बात, बारीक ख़याल; (२) चुटकला, लतीफ़ा; (३) घोड़े के मुँह पर बाँधा जानेवाला चमड़ा; (४) ऐब, दोष, त्रुटि।

नुक़्ता—(अ०) (सं० पु०) बिन्दु, बिंदी।

नुकता-गीर, नुकता-चीं—(अ०) (वि०) ऐब निकालनेवाला, मीन-मेख निकालनेवाला।

नुकता-चीनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ऐब निकालना, छिद्रान्वेषण।

नुकता-दाँ—(वि०) बारीक बात जाननेवाला।

नुकता-नवाज़—कृपा रखनेवाला, ईश्वर।

नुकता-परवर, नुकता-परदाज़—(अ०) (वि०) गूढ़ बातें समझानेवाला।

नुकता-बीं—(अ०) (वि०) ऐब ढूँढनेवाला।

नुकता-रस—(अ०) (वि०) बुद्धिमान्, बारीक बातें समझनेवाला।

नुकबत—(अ०) (सं० स्त्री०) ग़रीबी।

नुक़रई—(अ०) (वि०) (१) चाँदी का, रुपहला; (२) सफ़ेद, श्वेत।

नुकता-शनास—(अ०) (वि०) गूढ़ बातें समझनेवाला, बारीकी जाननेवाला, मर्मज्ञ।

नुकता-शनासी—(अ०) (सं० स्त्री०) गूढ़ बातें समझना, बुद्धिमानी।

नुकता-संज—(अ०) (वि०) कवि, गूढ़ भाव कहनेवाला, मर्मज्ञ; सुवक्ता।

नुक़रा—(अ०) (सं० पु०) (१) चाँदी; (२) सफ़ेद रंग की चीज़; (३) सफ़ेद रंग का घोड़ा। (वि०) सफ़ेद रंग का।

नुक़्ल—(अ०) (सं० पु०) (१) वह चीज़, जो किसी नशे के बाद मुख का स्वाद बदलने को खाई जाय, गज़क; (२) एक प्रकार की मिठाई; (३) हँसाने की बात।

नुक़्ल मजलिस, नुक़्ल महफ़िल—(फ़ा०) (सं० पु०) मसख़रा, ठठोल।

नुक़सान—(अ०) (सं० पु०) (१) हानि, टोटा, घाटा; (२) कमी, घटती; (३) विकार, दोष, अवगुण, कुप्रभाव। नुक़सान उठाना—हानि सहना, टोटा उठाना। नुक़सान पहुँचाना—हानि करना। नुक़सान भरना—घाटा पूरा करना। नुक़सान करना—बुरा असर करना।

नुक़सान-देह—(अ०) (वि०) हानिकर; नुक़सान पहुँचानेवाला।

नुक़सान-रसानी—(अ०) (सं० स्त्री०) नुक़सान पहुँचाना। शुद्ध उच्चारण नुक़सान-रसाँ

नुकीला—(फ़ा०) (वि०) नोक-दार, पैना।

नुक़ूल—(अ०) (सं० स्त्री०) 'नक़ल' का बहुवचन।

नुक़ूश—(अ०) (सं० पु०) 'नक़्श' का बहुवचन।

नुक़त—(अ०) (सं० पु०) 'नुक़्ता' का बहुवचन। बे-नुक़त सुनाना—ख़ूब कड़ी बातें कहना।

नुक़्ता—(देखो—'नुक़्ता')।

नुक़्ल—(देखो—'नुक़्ल')।

नुक़्स—(अ०) (सं० पु०) (१) खोट, ऐब, दोष, ख़राबी, अवगुण, बुराई; (२) कसर, कोताही, कमी त्रुटि।

नुक़सान—(देखो—'नुक़सान')।

नुज़हत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) प्रसन्नता, संतोष; (२) बे-ऐब होना, तरो-ताज़ा होना, सैर, आनंद।

नुज़हत-ख़ातिर—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ख़ुशदिली, हृदय में उल्लास होना।

नुज़हत-गाह—(अ०) (सं० स्त्री०) सैर की जगह, तमाशे की जगह।

नुजूम—(अ०) (सं० पु०) (१) तारे, सितारे; (२) ज्योतिष। 'नज्म' का बहुवचन।

नुजूमी—(अ०) (सं० पु०) ज्योतिषी।

नुतफ़ा—(देखो—'नुत्फ़ा')।

नुत्क़—(अ०) (सं० पु०) बोलने की शक्ति, वाचा, बात।

नुत्फ़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) वीर्य, शुक्र; (२) सन्तान, औलाद। नुत्फ़ए-बेतहक़ीक़—जिसके पिता के बारे में निश्चित न हो; दोग़ला, हरामी; बद-ज़ात।

नुद्बा—(अ०) (सं० पु०) मातम, शोक, रोना-पीटना; शोक सूचक शब्द, मातमी शब्द।

नुदमाअ—(अ०) (सं० पु०) मुसाहिब लोग। ('नदीम' का बहुवचन)।

नुद्रत—(अ०) (सं० स्त्री०) अनोखापन, कमी, उत्कृष्टता, उत्तमता।

नुफ़ूज़—(अ०) (सं० पु०) (१) जारी होना, प्रचलित होना; (२) घुसना, पैठना।

नुफ़ूर—(अ०) (वि०) (१) नफ़रत करनेवाला; (२) भागने या दूर रहनेवाला। (सं० पु०) (१) भागना; (२) नफ़रत करना।

नुफ़ूस—(अ०) (सं० पु०) रूह, आत्मा। ('नफ़्स' का बहुवचन)।

नुमा—(फ़ा०) (वि०) (१) दिखानेवाला, ज़ाहिर करनेवाला; (२) दिखाई पड़नेवाला; (३) सदृश, समान, मानिंद।

नुमायश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) वह मेला जो अनोखी और अजीब चीज़ें दिखलाने को किया जाय, प्रदर्शिनी; (२) दिखावा, प्रदर्शन, (३) ठाठ, तड़क-भड़क, सज-धज।

नुमायश-गाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) प्रदर्शिनी का स्थान।

नुमायशी—(फ़ा०) (वि०) दिखाऊ; ज़ाहिर में अच्छा; कोरा देखने का।

नुमाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) प्रदर्शन, न।

नुमायाँ—(फ़ा०) (वि०) प्रकट, आशकार, ज़ाहिर, बड़ा।

नुशूर—(अ०) (सं० पु०) मुरदे का क़यामत के दिन उठना।

नुसरत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) मदद, सहायता; (२) हिमायत, समर्थन; (३) विजय, फ़तह, जीत।

नुसार—(अ०) (सं० पु०) न्यौछावर, वह धन जो किसी पर निसार कर दिया जाय।

नुसैरी—(अ०) (सं० पु०) (१) वह मुसल्मान जो हज़रत अली को ख़ुदा मानते हैं, (२) अंध-भक्त, जाँ-निसार।

नुस्ख़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) पुस्तक, किताब, जिल्द, रिसाला; (२) तरकीब, ढंग; (३) चुटकला, लटका, (४) वह परचा जिस पर हकीम औषध लिखते हैं; (५) नीचे और छोटे दरजे का आदमी।

नूर—(अ०) (सं० पु०) (१) रोशनी, प्रकाश, उजाला; (२) कान्ति, आभा, चमक-दमक, रूप। नूर का तड़का—प्रातःकाल। नूर बरसना—चहरे पर रौनक़ होना।

नूर-उल्-ऐन—(अ०) (सं० पु०) (१) नेत्रों की ज्योति, आँखों की रोशनी; (२) पुत्र, बेटा।

नूर-ज़ुहूर—उषा-काल, पौ फटने का समय।

नूर-फ़िशाँ—(अ०) (वि०) नूर छिड़कने वाला।

नूर-बाफ़—(अ०) (वि०) जुलाहा, कपड़ा बुननेवाला, बुन-कर।

नूर-बाफ़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) कपड़ा बुनने का काम।

नूरा—(अ०) (सं० पु०) बाल उड़ाने की दवा (चूना और हरताल मिली हुई)।

नूरानी—(अ०) (वि०) (१) प्रकाश-मान्, चमक-दार; (२) सुन्दर, रूप-वान्।

नूरे-ऐन—(अ०) (सं० पु०) (१) आँखों की रोशनी, (२) पुत्र ।

नूरे-चश्म—(अ०) (सं० पु०) (१) आँखों की रोशनी; (२) पुत्र, बेटा ।

नूरे-जहाँ—(अ०) (सं० पु०) संसार को प्रकाशित करनेवाला । (सं० स्त्री०) जहाँगीर बादशाह की प्रसिद्ध बेगम ।

नूरे-दीदा—(अ०) (सं० पु०) आँखों की रोशनी ।

नूह—(अ०) (सं० पु०) (१) मातम करने वाला, रोनेवाला; (२) एक प्रसिद्ध पैग़म्बर का नाम जिनकी किश्ती मशहूर है ।

नेअ्म—(अ०) (सं० स्त्री० 'नेमत' का बहुवचन ।

नेअ्म-उल्-बदल—(अ०) (सं० पु०) बदले में मिलनेवाली उत्तम वस्तु ।

नेअ्मत—(सं० स्त्री०) नेमत, (देखो—'नेमत') ।

नेक—(फ़ा०) (वि०) (१) भला, उत्तम; (२) सज्जन, सुशील । (क्रि० वि०) थोड़ा, ज़रा-सा ।

नेक-अख़्तर—(फ़ा०) (वि०) नेक-बख़्त, भला, अच्छा ।

नेक-अन्देश—(फ़ा०) (वि०) भलाई सोचने वाला, शुभ-चिन्तक ।

नेक-क़दम—(फ़ा०) (वि०) जिसका आना मुबारक हो, जिसके चरण शुभ हों, सुलक्षण ।

नेक-ख़सलत—(फ़ा०) (वि०) अच्छे स्वभाव का, अच्छी प्रकृति का ।

नेक-ख़्वाह—(फ़ा०) (वि०) शुभ-चिन्तक, हितैषी ।

नेक-चलन—(फ़ा०) (वि०) सदाचारी, सच्चरित्र ।

नेक-चलनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सदाचार, सच्चरित्रता ।

नेक-नाम—(फ़ा०) (वि०) अच्छी ख्याति वाला, सुप्रसिद्ध, यशस्वी ।

नेक-नामी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अच्छी ख्याति, यश ।

नेक-निहाद—(फ़ा०) (वि०) सुशील, पवित्र, सदाचारी ।

नेक-नीयत—(फ़ा०) (वि०) (१) अच्छे भावों वाला, उत्तम विचार का; (२) ईमानदार, सच्चा ।

नेक-बख़्त—(फ़ा०) (वि०) (१) भोला-भाला, सीधा सच्चा; (२) भाग्यशाली, अच्छी क़िस्मतवाला; (३) योग्य ।

नेक-मंज़र—(अ०) (वि०) सुन्दर, रूपवान् ।

नेकी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) भलाई, हित; (२) सज्जनता, शालीनता; (३) परोपकार ।

नेको—(वि०) (देखो—'नीको') ।

नेज़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) भाला, बरछी; (२) क़लम की छड़; (३) पैजामे का वह हिस्सा जो इज़ार-बंद का ग़िलाफ़ होता है ।

नेज़ा-दार, नेज़ा-बरदार—(फ़ा०) (वि०) भाला रखनेवाला ।

नेज़ा-बाज़—(फ़ा०) (वि०) भाले के करतब जाननेवाला, भाला चलानेवाला ।

नेफ़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) पैजामे के ऊपर का मुड़ा हुआ हिस्सा जिसमें कमरबंद डाला जाता है ।

नेमत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) माल, दौलत; (२) उपहार, बख़शिश; (३) मज़ेदार खाना, स्वादिष्ट भोजन; (४) आसायश, संपन्नता ।

नेमत-कदा—(सं० पु०) बहिश्त, नेमत का घर ।

नेमत-ख़ाना—(१) वह मकान जिसमें दावत का सामान रखा हो; (२) वह घर जहाँ बड़े आदमी खाना खाते हैं; (३) वह लकड़ी का बर्तन जिसमें जाली लगा कर खाना रखते हैं । नेमते-उज़्मा—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बड़ी नेमत ।

नेश—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) नोक, अनी; (२) डंक; (३) काँटा, शूल।

नेश-कर—(फ़ा०) (सं० पु०) ईख, गन्ना।

नेश-ज़न—(फ़ा०) (वि०) किसी के हक़ में बुराई करनेवाला, अपकार करनेवाला।

नेश-ज़नी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) डंक मारना; (२) अपकार; किसी के हक़ में बुराई करना।

नेश्तर—(फ़ा०) (सं० पु०) नश्तर, फ़स्द खोलने का चाक़ू।

नेस्त—(फ़ा०) (वि०) जो न हो, फ़ना।

नेस्त-नाबूद—नष्ट-भ्रष्ट, ख़ाक में मिलना।

नेस्तां—(सं० पु०) (देखो—नयस्तां)।

नेस्ती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) ना-पैद होना, न होना (२) आलस्य, काहिली; (३), दरिद्रता, नादारी; (४) बद-नसीबी, भाग्य-हीनता, नहूसत।

नै—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) नरकुल, नर-सल; (२) बांसरी; (३) हुक्के की निगाली।

नैचा—(फ़ा०) (सं० पु०) नै, हुक्के की निगाली, वह नली जिससे अर्क़ खींचते हैं। (वि०) (लख०) बहुत दुबला।

नैचा-बन्द—(फ़ा०) (वि०) हुक्के का नैचा बाँधनेवाला।

नैचा-बन्दी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) नैचा बनाना; नैचा बनाने का काम या पेशा।

नै-नवाज़—(फ़ा०) (वि०) बांसरी बजाने-वाला।

नैयर—(अ०) (सं० पु०) सूर्य, बहुत चमकनेवाला सितारा। **नैयरे-आज़म**—सूर्य। **नैयरे-असग़र**—चंद्रमा।

नैरंग—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) कपट, माया, छल, धोखा; (२) जादूगरी, शोबदे-बाज़ी; (३) विलक्षण बात, अनोखी चीज़; (४) चित्र की रूप-रेखा, ख़ाक़ा।

नैरंग-साज़—(फ़ा०) (वि०) बाज़ीगर, शोबदेबाज़, चालाक़, धूर्त।

नैरंगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) धोखे बाज़ी, चालबाज़ी, माया; (२) जादूगरी।

नैरंज—नैरंग।

नैस्तां—(सं० पु०) (देखो—'नयस्तां')।

नोक—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) हर चीज़ का तेज़ सिरा, अनी, डंक; (२) बाँक-पन, वज़ेदारी; (३) शेख़ी, डून, डींग, छेड़; (४) इज़्ज़त, आबरू, आन, अन्दाज़। **नोक से दुरुस्त**—(वि०) सब तरह ठीक। **नोक की लेना**—डींग मारना, उस्तादी का काम करना। **नोक रह जाना**—बात रह जाना।

नोक-झोक—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) आन-बान, ठाठ-बाट, साज-सिंगार; (२) आतंक, तपाक, तेज; (३) व्यंग, ताना, आवाज़ा-तवाज़ा, फबती; (४) छेड़ छाड़, चुभनेवाली बात।

नोकदार—(फ़ा०) (वि०) (१) पैना, चुभनेवाला; (२) शानदार, आन-बान वाला; (३) जिसमें नोक हो।

नोक-पलक—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) आँख नाक की सुगठन, सुन्दरता। **नोक पलक से दुरुस्त**—सब तरह ठीक।

नोके-ज़बां—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) जिह्वाग्र, जीभ का अगला भाग। (वि०) कंठाग्र, कंठस्थ।

नोश—(फ़ा०) (वि०) (१) पीनेवाला; (२) ज़ायकेदार, स्वादिष्ट, प्रिय। (सं० पु०) (१) पीना, (२) स्वादिष्ट वस्तु, अमृत; (३) मधु, शहद; (४) ज़हर-मोहरा; (५) जीवन, ज़िंदगी। **नोश करना, नोश फ़रमाना**—खाना। **नोश-जाँ-होना**—खाया पिया जाना। **नोशा-नोश**—लगा-तार पीना, पै दर पै पीना।

नोश-दारू—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) विष का प्रभाव दूर करनेवाली दवा, ज़हर-मोहरा; (२) शराब, मद्य; (३) एक पौष्टिक अवलेह।

नोशादर—(फ़ा०) एक प्रकार का क्षार, नौसादर।

नोशीं—(फ़ा०) (वि०) ख़ुश-मज़ा, स्वादिष्ट।

नोशी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पीने की क्रिया, पीना।

नौ—(फ़ा०) (वि०) नया, ताज़ा, नवीन।

नौअ—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) भाँति प्रकार, क़िस्म; (२) जाति, वर्ग; (३) रंग-ढंग, सूरत-शकल।

नौ-आबाद—(फ़ा०) (वि०) हाल का बसा हुआ, नया बसा हुआ।

नौ-आमोज़—(फ़ा०) (वि०) कच्चा, अनाड़ी नौ-सिखुआ।

नौ-उम्मेद—(फ़ा०) (वि०) निराश।

नौ-उम्र—(वि०) नया जवान।

नौए-दिगर—(वि०) दूसरी तरह का, बदला हुआ, बिगड़ा हुआ, ख़राब।

नौकरी—(फ़ा०) (सं० पु०) चाकर, सेवक, दास, ख़िदमत करनेवाला, कर्मचारी।

नौकर-शाही—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वह शासन-प्रणाली जिसमें सब शासन का काम नौकरों या अफ़सरों के हाथ में हो।

नौकरानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दासी, मज़दूरनी।

नौकरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) सेवा, चाकरी, नौकर का काम; (२) जीविका, वेतन।

नौकरी-पेशा—(फ़ा०) (सं० पु०) वह लोग जिनका काम नौकरी करना हो।

नौ-ख़ेत—(फ़ा०) (वि०) जिसकी दाढ़ी हाल में निकली हो।

नौ-ख़ास्ता—(फ़ा०) (वि०) नव युवा।

नौ-ख़ेज़—(फ़ा०) (वि०) नव युवा।

नौ-चन्दा—(फ़ा०) (सं० पु०) शुक्ल पक्ष की द्वितीया।

नौज—(अ०) ईश्वर न करे, ऐसा न हो।

नौ-जवान—(फ़ा०) (वि०) नव युवा, नया जवान।

नौ-जवानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) नव यौवन।

नौ-तोड़—(हि०) (सं० स्त्री०) वह ज़मीन जो हाल में खेती के योग्य की गई हो।

नौ-दौलत—(फ़ा०) (वि०) नया धनी, जिसके पास हाल ही में धन आया हो।

नौ-नियाज़—(फ़ा०) (वि०) (१) नौ-सिखुआ; (२) नया आशिक़।

नौ-निहाल—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) नया पौदा; (२) नौ-जवान, नव युवा।

नौबत—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) बारी, पारी, किसी चीज़ या काम का वक़्त; (२) हालत, दरजा, कैफ़ियत, दशा; (३) नक़्क़ारा, डंका; (४) मुहलत, अवकाश, अवसर, योग; (५) मंगल-सूचक बाजा या नक़्क़ारा। **नौबत का धौंसा**—बड़ा नक़्क़ारा, बहुत मोटा आदमी। **नौबत बजना**—उत्सव मनाया जाना।

नौबत-ख़ाना—(फ़ा०) (सं० पु०) नक़्क़ार-ख़ाना।

नौबत-ज़न, नौबत-नवाज़—(फ़ा०) (वि०) नक़्क़ारची।

नौबत-ब-नौबत—(अ०) (क्रि० वि०) एक के बाद एक, क्रम क्रम से।

नौबती—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) नौबत बजानेवाला, नक़्क़ार-ची; (२) पहरेदार; (३) सजा हुआ घोड़ा, जिसे बिना सवार हुए जलूस में निकालते हैं; (४) बड़ा डेरा या तम्बू।

नौ-ब-नौ—(फ़ा०) (वि०) नया नवीन, नव।

नौ-बहार—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वसन्त, नव वसन्त।

नौ-मश्क़—(फ़ा०) (वि०) अनाड़ी, नौ-सिखुआ।

नौ-मुस्लिम—(फ़ा०) (वि०) जो हाल में मुसल्मान हुआ हो।

नौ-रोज़—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) त्यौहार का दिन; (२) पारसियों के नये वर्ष का पहला दिन।

नौ-रोज़ी—(फ़ा०) (वि०) नौ-रोज़ का।

नौ-वारिद—(फ़ा०) (वि०) जो हाल में आया हो, नवागन्तुक।

नौशाहाना—(फ़ा०) (वि०) दूल्हा के अनुरूप, वर की तरह का।

नौशा—(फ़ा०) (सं० पु०) दूल्हा, वर।

नौशादर—(फ़ा०) (सं० पु०) नौसादर, नवसार।

नौहा—(अ०) (सं० पु०) मातम, रुदन, रोना-पीटना।

नौहा-गर—(अ०) (वि०) मातम करनेवाला, शोक मनानेवाला; रोने-पीटने वाला।

प

पंज—(फ़ा०) सात बरस का घोड़ा।

पंज़गाना—(फ़ा०) (वि०) पाँचों समय की (नमाज़); पाँच बार की जानेवाली।

पंज-तन पाक—(फ़ा०) (सं० पु०) पाँच पवित्र आत्माएँ। मुसलमान लोग इन पाँचों को पवित्र मानते हैं:—मोहम्मद साहब, अली, फ़ातिमा, हसन, हुसैन।

पंजवक्ती—पाँचों समय की।

पंज-शंबा—(फ़ा०) (सं० पु०) बृहस्पतिवार।

पंजा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) पाँच चीज़ों का समूह; (२) हाथ या पैर की पाँचों उँगलियाँ; (३) धातु का टुकड़ा जिसका आकार पंजे जैसा होता है और जिसे लकड़ी में बाँध कर ताज़ियों के साथ निकालते हैं; (४) चंगुल; (५) ताश का एक पत्ता; (६) क़ाबू, अधिकार। पंजे में फँसना—चंगुल में फसना, क़ाबू में आ जाना, हत्थे चढ़ना।

पंजी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पंजशाख़ा, पाँच बत्ती वाली मशाल।

पतंग-छुरी—(हि०) (औ०) लड़ाई करा देनेवाली; लगाई-बुझाई करनेवाली; (लख०) लुतरी।

पंद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) नेक सलाह, नसीहत, उपदेश।

पख़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) रोक अड़चन; (२) ऐब, त्रुटि, छिद्रान्वेषण; (३) शोर, गुल, हो-हल्ला; (४) झगड़ा, दिक़्क़त, कठिनाई, ख़राबी; (५) विष्टा, मल।

पख़िया—(फ़ा०) (वि०) पख़ निकालने वाला; रोड़ा अटकानेवाला; व्यर्थ की टीका-टिप्पनी करनेवाला।

पख़्तरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अच्छा और स्वादिष्ट भोजन।

पच्च—(हि०) (सं० स्त्री०) पक्ष, तरफ़दारी, पक्षपात, रुझान। पच्च लेना—हिमायत करना; तरफ़दारी करना।

पच्च-कल्यान—(हि०) (सं० पु०) वह घोड़ा जिसकी टाँगें सफ़ेद और माथे पर सफ़ेद दाग़ हों; दोग़ला, वर्ण-संकर। (ऐरे-ग़ैरे-पचकल्यान)।

पज़-मुर्दा—(फ़ा०) (वि०) कान्तिहीन; कुम्हलाया हुआ, मुरझाया हुआ, रंजीदा।

पज़ावा—(फ़ा०) (सं० पु०) भट्टा; वह भट्टा जिसमें ईंटें या मट्टी के खिलौने पकाये जाते हैं; आवा। पज़ावे का पज़ावा खंगड़ हो जाना—सबका ख़राब हो जाना, हर एक का बिगड़ जाना।

पज़ीर—(फ़ा०) (वि०) माननेवाला, पालन करनेवाला।

पज़ीराई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मानना, स्वीकार करना।

पटपड़—(हि०) वीरान जगह, जिसमें पानी व घास न हो, बंजर।

पटाख़—(हि०) (स्त्री०) (लख०) तड़ाक़; तेज़ी से बोलना, जो मुँह में आवे कह देना, तड़ाक़ पड़ाक़ बोलना।

पत—(हि०) (सं० स्त्री०) आबरू; लाज, लज्जा।

पतीला—(फ़ा०) (सं० पु०) बड़े मुँह का देगचा, छोटी देग।

पतीली—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) छोटी देगची।

पनदार—(फ़ा०) (सं० पु०) अहंकार, अभिमान, घमंड, ख़याल।

पनाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) हिमायत, सहारा, आश्रय; (२) शरण, रक्षा; (३) शांति का स्थान, बचाव की जगह। पनाह माँगना—रक्षा की प्रार्थना करना; शरण की प्रार्थना करना।

पनीर—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) खाने की एक नमकीन चीज़ जिसमें निचोड़ा हुआ दही पड़ता है; (२) निचोड़ा हुआ दही।

पपोटा—(हि०) (सं० पु०) वह खाल जो आँख के ऊपर होती है और उसे गिलाफ़ की तरह ढँके रहती है।

पफ़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) फूँक, श्वास।

पयाम—(फ़ा०) (सं० पु०) संदेश, ज़बानी सवाल, मँगनी।

पयामी—(फ़ा०) (सं० पु०) संदेश ले जानेवाला, दूत।

पर—(फ़ा०) (सं० पु०) चिड़ियों का डैना, पंख, पक्ष। पर कटना—जी छूटना, हिम्मत न रहना। पर कटी उड़ाना—झूठ बोलना, गपबाज़ी करना। पर का कबूतर उड़ाना—लड़कों का खेल। पर जमना—पर पैदा होना। पर जलते हैं—पहुँच न होना। पर झड़ना—बेबस हो जाना। पर टूटना—शक्ति कम हो जाना। पर न मारना—पास न फटकना, पहुँच न होना। पर निकालना—हैसियत से बढ़कर हौसला करना; शरारत करना। पर-पुरज़ों से दुरुस्त होना—सामान से लैस होना, तैयार होना। पर-पुरज़े निकालना—चालाक हो जाना; शरारत सीख जाना। पर बाँधना—बेबस करना, स्वाधीनता छीनना।

परकार—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वृत्त खींचने का औज़ार, गोलाई खींचने का आला।

परकाला—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) हिस्सा, टुकड़ा, खंड; (२) शीशे का टुकड़ा; (३) चिनगारी, पतंगा। आतिश का परकाला—आग का टुकड़ा; ऐय्यार, चालाक, निहायत तेज़।

परख़चे—(पु०) पुरज़े। परख़चे उड़ाना—(औ०) पुरज़े पुरज़े करना, ख़ूब मारना-कूटना।

परख़ाश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) लड़ाई, द्वेष, झगड़ा।

परगना—(फ़ा०) (सं० पु०) बहुत से ग्रामों का समूह।

परचख़—(उ०) (सं० पु०) पुरज़े, टुकड़े। परचख़ उड़ जाना—पुरज़े पुरज़े हो जाना।

परचम—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) झंडे का कपड़ा; (२) ज़ुल्फ़।

परचा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) चिथड़ा, टुकड़ा, खंड, (२) पुरज़ा, काग़ज़ का टुकड़ा; (३) पत्र, रुक्का; (४) अख़बार; (५) हुंडी। परचा लगाना—गुप्त समाचार देना, जासूसी करना।

परचा-नवीस—जासूस, ख़बर देनेवाला।

परचा-नवीसी—(१) जासूसी, मुख़बरी; (२) अख़बार-नवीसी।

परतौ—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) रोशनी, आभा; (२) किरण, रश्मि; (३) झलक, अक्स।

परदा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) ओट, आड़; (२) घूंघट; (३) आड़ करनेवाला कपड़ा,

धिक; (४) मनुष्यों के सामने न निकलना; (५) रहस्य, गुप्त बात; (६) दुराव, छिपाव; (७) बादाम के ऊपर का सख़्त छिलका; (८) वह दीवार जो ओट करने को उठाई जाय; (९) आँख या कान की झिल्ली; (१०) तह, परत; (११) अंगरखे का वह हिस्सा जो सीने पर रहता है। (१२) बाजे का पुरज़ा, सितार का पुरज़ा।

परदाख़्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) दुरुस्ती, (२) संरक्षण, ख़बर-गीरी, परवरिश।

परदाख़्ता—(फ़ा०) (वि०) सजाया हुआ; संवारा हुआ।

परदाज़—(फ़ा०) (सं० पु०) सजावट, बेल बूटे बनाना।

परदाज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सजाने या बेल-बूटे बनाने की क्रिया।

परदा-दार—(फ़ा०) (वि०) जिसमें परदा लगा हो; खुला हुआ न हो, परदा नशीन।

परदा-दारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) परदे में रहना; परदा-नशीनी।

परदा-नशीन—(फ़ा०) (वि०) परदे में रहने वाली; जो मनुष्यों के सामने न निकले।

परदा-पोशी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) भेद छिपाना; ऐब छिपाना।

परदा-बीनी—नाक की हड्डी; बाँसा।

परदार—(फ़ा०) (वि०) जिसके पर हो; सपक्ष।

परन—(हि०) (सं० स्त्री०) तबले की गत।

परन्द—(फ़ा०) (सं० पु०) उड़नेवाला; पक्षी (शुद्ध परिन्द)। **परन्दा पर नहीं मार सकता**—किसी की गति न होना; कोई पहुँच ही नहीं सकता।

पर-व-बाल—(फ़ा०) (सं० पु०) पंख और रोएँ, जिनके कारण पक्षी उड़ सकता है।

परवर—(फ़ा०) (वि०) पालन करनेवाला, पालक (ग़रीब-परवर)।

परवरदा—(फ़ा०) (वि०) पाला हुआ; पोष्य।

परवरदिगार—(फ़ा०) (सं० पु०) पालन करनेवाला, पालक; ईश्वर।

परवरिश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पालन-पोषण; शिक्षा-दीक्षा।

परवा—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) हाजत, ख़्वाहिश; (२) चिन्ता, आशंका; (३) ध्यान, ख़याल, लिहाज़।

परवाज़—(फ़ा०) (लख० पु०; देह० स्त्री०) (१) ढंग; (२) आदत, प्रकृति; (३) सजावट, पालिश, चमक-दमक; (४) आरंभ, उठान। **परवाज़ करना**—चमकाना, नक़्श बनाना।

परवानगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) हुक्म; आज्ञा, इजाज़त, अनुमति।

परवाना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) वह जानवर जो शेर के आगे आगे चलता है; (२) प्रेमी; (३) पतंगा; (४) फ़रमान, आज्ञा-पत्र।

परवीन—(फ़ा०) (सं० पु०) झुमका; एक नक्षत्र।

परवेज़—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) विजयी; (२) एक प्रसिद्ध बादशाह का नाम।

परस्त—(फ़ा०) (वि०) (१) पूजा करने वाला, उपासक; (२) माननेवाला।

परस्तान—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) परियों के रहने की जगह; (२) सुन्दर स्त्रियों का का झुंड।

परस्तार—(फ़ा०) (सं० पु०) नौकर, दास।

परस्तिश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पूजा, सेवा, आराधना।

परस्तिश-गाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मन्दिर; पूजा करने का स्थान।

परहेज़—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) निषिद्ध वस्तुओं से बचना; (२) पथ्य पालन करना, (३) दोषों से बचना।

परहेज़-गार—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) परहेज़ करनेवाला; (२) धर्म-निष्ठ; (३) संयमी।

पर-हुमा—(फ़ा०) (सं० पु०) कलगी।

परा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) किनार; (२) क़तार, पंक्ति; (३) नाक का नथना।

परागंदा—(फ़ा०) (वि०) (१) परेशान, तितर-बितर, बिखरा हुआ; (२) चिन्ता-ग्रस्त।

परिंदा—(फ़ा०) (सं० पु०) पत्ती, चिड़िया, परन्द।

परिस्तान—(फ़ा०) (सं० पु०) परियों के रहने का स्थान; सुन्दरियों का झुंड।

परी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) हूर; (२) अत्यन्त सुन्दर स्त्री। (फ़ारसी में परी को कोह क़ाफ़ पर रहनेवाली और परदार कहा गया है, जिसमें अनेक अलौकिक शक्तियाँ भी थीं)।

परी-ख़्वान—(फ़ा०) (सं० पु०) जो परियों और देवों को वश में करना जानता हो।

परीज़ाद—(फ़ा०) (वि०) परी से पैदा, अत्यन्त सुन्दर और रूपवान्।

परी-पैकर—(फ़ा०) (वि०) जिसका परी के समान मुख हो।

परी-रू—(फ़ा०) (वि०) परी के समान सुन्दर रूप वाली।

परी-वश—(फ़ा०) (वि०) परी के समान सुन्दर।

परेशान—(फ़ा०) (वि०) (१) बेताब, हैरान, व्याकुल, उद्विग्न, (२) तितर-बितर, बिखरा हुआ। **परेशान-ख़ातिर**—उदास, चिन्तित; जिसका दिल परेशान हो।

परेशानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) चिन्ता, व्याकुलता, दुःख, तरद्दुद।

पलंग—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) एक मशहूर जानवर का नाम; (२) बड़ी चारपाई। **पलंग-तोड़**—वह आदमी जो कुछ काम न करे; निकम्मा, काहिल। **पलंग पोश**—बिस्तर की रक्षा के लिए ऊपर से डाल दिया जानेवाला कपड़ा। **पलंग पर बिठाकर रोटी देना**—(औ०) बिना काम लिये रोटी कपड़ा देना।

पलंगड़ी—छोटा पंलग, खाट।

पलक—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) आँख के उपर का ग़िलाफ़ या परदा। **पलक लगना**—नींद आजाना; झपकी आजाना।

पलास—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) मोटा कपड़ा, टाट; (२) ढाक का पेड़।

पलीत—(फ़ा०) (वि०) (१) गंदा; नापाक; (२) कंजूस; (३) प्रेत, दुष्टात्मा।

पलीता—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) बटा हुआ काग़ज़ या कपड़ा जिस पर कोई यंत्र लिखा हो; (२) मरोड़ी हुई रुई या कपड़े की बड़ी बत्ती; (३) बारूद से भरी बत्ती जिससे बंदूक में आग लगाते हैं।

पलीद—(फ़ा०) (वि०) (१) गंदा, अपवित्र; (२) दुष्ट, कंजूस, नीच। (सं०) भूत, प्रेत, दुष्ट-आत्मा।

पल्ला—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) कपड़े का सिरा; आँचल, दामन; (२) आश्रय, सहारा। **पल्ला छूटना**—छुटकारा होना। **पल्ला-पकड़ना**—आश्रय लेना, सहारा लेना। **पल्ले पड़ना**—सिर पर आ पड़ना, पीछे पड़ना, साथ हो जाना; मिलना। **पल्ला पसारना**—माँगना, दीनता दिखाना।

पशेमान—(फ़ा०) (वि०) अफ़सोस करनेवाला; क्षुब्ध, लज्जित, पछतानेवाला।

पशेमानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) पश्चात्ताप, पछतावा; (२) लज्जा, शरमिंदगी।

पश्तो—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अफ़ग़ानों की भाषा।

पश्म—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) ऊन, मुलायम ऊन जिससे शाल बनते हैं, रूआँ; (२) बहुत ही तुच्छ वस्तु; (३) ज़लील बेकार आदमी।

पश्मीना—(फ़ा०) (सं० पु०) ऊनी कपड़ा।

पश्शा—(फ़ा०) (सं० पु०) मच्छर।

पसंद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) अभिरुचि; (२) अच्छा लगना, प्रिय होना।

पसंदा—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार का कबाब।

पसंदीदा—(फ़ा०) (वि०) पसंद किया हुआ, प्रिय लगनेवाला; अच्छा, चुना हुआ।

पस—(फ़ा०) (क्रि० वि०) (१) बाद, पीछे; (२) अन्त में; (३) इसलिए; (४) लेकिन।

पस-अंदाज़—(फ़ा०) (सं० पु०) बचा हुआ, बाक़ी; बचाया हुआ, संचित।

पस-ख़ुरदा—(फ़ा०) (सं० पु०) जूठन, खाने के बाद बचा हुआ अंश; जूठन खानेवाला।

पस-पा—(फ़ा०) (वि०) हार जानेवाला, पीछे हटनेवाला।

पस-मांदा—वारिस, उत्तराधिकारी।

पस-ए-मुर्दन—मरने के बाद, मृत्यु के अनन्तर।

पसादस्त—(फ़ा०) (वि०) उधार।

पसोपेश—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) फ़िक्र, चिन्ता, अंदेशा; (२) आगा-पीछा, हीला-हवाला।

पस्त—(फ़ा०) (वि०) नीचा, हारा हुआ, निरुत्साह, कमीना।

पस्ती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) हीनता, नीचता; (२) साहस का अभाव।

पहलवान—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) बलिष्ट पुरुष; (२) कुश्ती लड़नेवाला।

पहलवी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक प्राचीन भाषा।

पहलू—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) बदन का एक तरफ़ का हिस्सा, दायाँ अथवा बायाँ भाग; (२) बग़ल; (३) करवट; (४) दिशा, तरफ़; (५) दृष्टि, दृष्टि-कोण।

पहलू-तिही—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) उपेक्षा, उदासीनता, ध्यान न देना, कमी करना।

पहलू-दार—(फ़ा०) (वि०) जिसमें कई पहलू हों, पहलदार, जिसमें कई तरफ़ें हों।

पा—(फ़ा०) (सं० पु०) पैर, क़दम, पावँ। (पाअन्दह का संक्षिप्त रूप; स्थायी या देर तक ठहरनेवाला—जैसे, देर पा)।

पा-अन्दाज़—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) पैर पोंछने का बिछौना, जो दरवाज़े की चौखट से लगाकर बिछा दिया जाता है; (२) गाड़ी में पाँव रखने की जगह।

पाँई—(फ़ा०) (सं० पु०) नीचे। पाइँती—सिरहाने के मुक़ाबिल, सिरहाने का उलटा, पैरों की तरफ़। पाँई-बाग—(फ़ा०) (सं० पु०) वह बग़ीचा जो मकान के नीचे हो।

पाक—(फ़ा०) (वि०) (१) स्वच्छ, साफ़, निर्मल, सुथरा; (२) पवित्र, शुद्ध; (३) बेमेल, ख़ालिस; (४) निर्दोष, निरपराध; (५) जिस पर कोई क़र्ज़ का बोझ न हो।

पाक-दामन—(फ़ा०) (वि०) सच्चरित्र, सदाचारी; पतिव्रता, पवित्र।

पाक-बाज़—(फ़ा०) (वि०) सदाचारी, सच्चरित्र।

पाकी—(सं० स्त्री०) (१) पवित्रता, शुद्धता; (२) सर मूँडने का उस्तरा।

पाकीज़ा—(फ़ा०) (वि०) (१) पवित्र, शुद्ध; (२) नेक, निर्दोष।

पाख़ाना—(फ़ा०) (सं० पु०) टट्टी, जा-ज़रूर।

पाचक—(फ़ा०) (सं० पु०) गोबर; उपला।

पा-चराग़—एक पाँव पर खड़ा होना।

पाजामा—(फ़ा०) (सं० पु०) इज़ार, पैरों में पहनने का वस्त्र। पाजामे से निकल पड़ना, पाजामे से बाहर हो जाना—मारे क्रोध के आपे से बाहर हो जाना।

पाजी—(फ़ा०) (सं० पु०) दुष्ट, ज़लील, लुच्चा, शरीर, बदमाश; छोटे दरजे का नौकर।

पाजी-परस्त—(सं० पु०) पाजी की ख़ातिर करनेवाला, कमीनों को मान देनेवाला।

पाज़ेब—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पैरों में पहनने का स्त्रियों का एक ज़ेवर, पायल।

पाट—(हि०) (सं० पु०) (१) नदी की चौड़ाई; (२) कपड़े का अर्ज़; (३) चक्की का पत्थर; (४) धोबियों के कपड़े धोने का पत्थर; (५) कोल्हू का वह भाग जिस पर बैल हाँकनेवाला बैठता है; (६) तख़्त, गद्दी (राज-पाट); (७) लकड़ी का वह लट्ठा जो कुओं पर पानी खींचने को रखते हैं; (८) ऊँचा स्वर; (९) हिस्सा। पाटदार आवाज़—दूर तक पहुँचनेवाली आवाज़।

पाताबा—(फ़ा०) (सं० पु०) जुर्राब, मोज़ा।

पा-तुराब—(फ़ा०) (सं० पु०) प्रस्थान, एक मकान से दूसरे तक जाना, यात्रा।

पादशाह—(फ़ा०) (सं० पु०) बादशाह।

पादारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मज़बूती, स्थिरता।

पादाश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) परिणाम; फल।

पाना—(फ़ा०) (सं० पु०) वह लकड़ी जिसको लकड़ी चीरनेवाला दर्ज़ में रख देता है।

पाप—(हि०) (सं० पु०) गुनाह, मुसीबत। पाप काटना—झगड़ा तय करना। पापी कुआँ—वह कुआँ जिसमें अकसर आदमी डूब कर मर जायँ।

पापा—(हि०) (सं० पु०) घुन।

पा-पियादह—(क्रि० वि०) पैदल, पाँव पाँव।

पा-पोश—(फ़ा०) (सं० पु०) जूता। पा-पोश भी न मारना—कुछ भी ख़याल न करना।

पा-पोश कारी—जूतियाँ पड़ना, जूतों से मरम्मत होना।

पा-बंद—(फ़ा०) (वि०) (१) बँधा हुआ, गिरफ़्तार, पराधीन, बंदी; (२) आदत रखनेवाला, नियम पालनेवाला, नियम पालने में विवश। (सं०) बेड़ी, पिछाड़ी, वह रस्सी जिससे घोड़े के पिछले पाँव बाँधे जाते हैं।

पा-बंदी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) आज्ञा-पालन, आदत, ख़याल, लिहाज़।

पा-ब-जौलाँ—(फ़ा०) (वि०) बंदी, क़ैदी, बेड़ी पहने हुए।

पा-ब-रकाब—(फ़ा०) चलने को तैयार, रकाब पर पैर रक्खे हुए।

पा-बोस—(फ़ा०) (वि०) पैर चूमनेवाला, ख़ुशामदी।

पा-बोसी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पैर चूमना; ख़ुशामद करना।

पा-मर्द—(फ़ा०) (वि०) स्थिर बुद्धि, दृढ़-व्रत।

पा-मर्दी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बहादुरी, मज़बूती, साहस, हिम्मत।

पा-माल—(फ़ा०) (वि०) पैरों से कुचला हुआ, बरबाद, तबाह, ख़राब।

पा-मोज़—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) एक प्रकार का कबूतर जिसके पंजे परों से छिपे रहते हैं; (२) मुर्ग़ी जिसके पंजों पर पर होते हैं।

पाँयचा—(फ़ा०) (सं० पु०) पाजामें का एक तरफ़ का हिस्सा जिसमें एक पैर रहता है। पायँचा भारी करना—(औ०) एक जगह जम कर बैठना; आना-जाना छोड़ देना। पायँचे से निकली पड़ती है—(औ०) क्रोध के मारे आपे से बाहर होना।

पाय—(फ़ा०) (सं० पु०) पैर, पावँ, आधार। पाय रफ़्तन न जाय माँदन—न जाने की शक्ति, न ठहरने की ताक़त; न जाते बने न ठहरते, दोनों तरह ख़राबी।

पायक—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) संदेश-वाहक, दूत; (२) चौकीदार, पैदल सिपाही, हरकारा; (३) कर उगाहनेवाला कर्मचारी।

पाय-गाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) प्रतिष्ठा, क़द्र; (२) कचहरी, इजलास।

पायज़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) .कुलाबा, लोहे का हल्क़ा जो किवाड़ों में लगाते हैं।

पायजामा—(फ़ा०) (सं० पु०) पैरों में पहनने का वस्त्र।

पाय-तख़्त—(फ़ा०) (सं० पु०) राजधानी।

पाय-ताबा—(फ़ा०) (सं० पु०) मोज़ा, जुर्राब।

पाय-तुराब—(फ़ा०) (सं० पु०) प्रस्थान; यात्रा के शुभ मुहूर्त साधने के लिए चलना।

पाय-दान—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) जूते उतारने की जगह; (२) घूरा; (३) गाड़ी में पैर रखने की जगह।

पाय-दार—(फ़ा०) (वि०) पक्का, दृढ़, मज़बूत, स्थायी।

पाय-दारी—(फ़ा०) (पु० स्त्री०) दृढ़ता, मज़बूती।

पाय-माल—(फ़ा०) (वि०) ख़राब-ख़्वार, पावँ से रौंदा हुआ, तबाह, ख़राब।

पायाँ—(फ़ा०) (सं० पु०) हद, सीमा।

पाया—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) पलंग चौकी आदि का वह डंडा जिसके सहारे वह खड़े रहते हैं; (२) खंभा; (३) इमारत की नींव; (४) सीढ़ी, ज़ीना; (५) प्रतिष्ठा, ओहदा, क़द्र, स्थान। पाये सबूत को पहुँचना—साबित होना, प्रमाणित होना।

पायाब—(फ़ा०) (वि०) छिछला, थिथला, इतना कम गहरा जल जो पैदल चल कर पार किया जा सके।

पा-रकाब—(फ़ा०) (सं० पु०) सहगामी, साथ चलनेवाले, साथी, सहचर। (क्रि० वि०) चलने को तैयार।

पारचा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) कपड़ा, वस्त्र; (२) धज्जी, चिथड़ा।

पारस—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) फ़ारस देश; (२) पारस-पत्थर, जिसके छूने से लोहा सोना हो जाता है।

पारसा—(फ़ा०) (वि०) परहेज़गार, ईश्वर-सेवी; दुष्कर्मों से बचनेवाला, सदाचारी।

पारसाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सदाचरण, नेकी, धर्म निष्ठा।

पारसाल—(फ़ा०) (सं० पु०) पिछला साल, गत वर्ष।

पारा (पारह)—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) हिस्सा, टुकड़ा, पुरज़ा; (२) भेंट, उपहार। पारह जिगर—जिगर का टुकड़ा, अत्यन्त प्यारा।

पारा-दोज़—(फ़ा०) (सं० पु०) मोची; ख़ेमा सीनेवाला।

पारी—(हि०) (सं० स्त्री०) भेली, गुड़ का टुकड़ा।

पारीना—(फ़ा०) (वि०) प्राचीन, पुराना।

पालायश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सफ़ाई करना।

पालान—(फ़ा०) (सं० पु०) घोड़े को उढ़ाने का कपड़ा।

पाश—(फ़ा०) (सं० पु०) टुकड़ा, खंड, पुरज़ा। (वि०) परेशान, तित्तर-बित्तर। (यौ० में छिड़कनेवाला-जैसे गुलाब-पाश)। पाश-पाश करना—टुकड़े टुकड़े करना।

पाशा—(तु०) (सं० पु०) एक ऊँची उपाधि; वज़ीर।

पाश्ना—(फ़ा०) (सं० पु०) एड़ी।

पासंग—(फ़ा०) (सं० पु०) तराज़ू के पल्ले बराबर रखने के लिए एक हलका वज़न, जिसे उठे हुए पल्ले पर रखते हैं; बराबर।

पास—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) मुरव्वत, लिहाज़, रिआयत, ख़याल; (२) तरफ़दारी, पक्षपात, रू-रिआयत; (३) पहर, जो तीन घंटे का होता है, (४) हक़। पासे-आबरू—इज़्ज़त का ख़याल। पास-नमक—

खाने का लिहाज़। पास करना—रिआयत करना, लिहाज़ करना।

पासदार—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) पक्षलेनेवाला; (२) रक्षक, सहायक।

पास-दारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) रिआयत, हिमायत, रक्षा; (२) तरफ़दारी, पक्षपात।

पासबान—(फ़ा०) (सं० पु०) दरबान, चौकीदार, रक्षक। (सं०) (स्त्री०) रखेली; बिना विवाह के रखी हुई स्त्री।

पासबानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) चौकीदारी, पहरेदारी, रक्षा।

पासुख़—(फ़ा०) (सं० पु०) जवाब, उत्तर।

पित्ता—(हि०) (सं० पु०) (१) शक्ति, ताब ताक़त, हिम्मत; (२) ग़ुस्सा, क्रोध, तेज़ी, जोश; (३) आवेश, उमंग। पित्ता खींचना, पित्ता निकालना—जान से मारना; मृत्यु-दंड देना। पित्ता पानी होना—क्रोध शान्त होना। पित्ता मारना—ग़ुस्सा रोकना, उमंग को दबाना; कष्ट सहना; सब्र करना। पित्ता लगाना—(औ०) किसी काम में जी लगाना। पित्तें निकालना—(औ०) जान निकालना, ख़ूब सज़ा देना। पित्तें ले डालना—(औ०) सताना, तंग करना।

पिद्ड़ी—(हि०) (स्त्री०) फुदकी, एक छोटी सी चिड़िया, बहुत दुर्बल (आदमी)

पिद्र—(फ़ा०) (सं० पु०) पिता, बाप।

पिद्राना—(फ़ा०) (वि०) बाप का सा, पितोचित।

पिद्री—(फ़ा०) (वि०) पैतृक, पिता का।

पिनहाँ—(फ़ा०) (वि०) छिपा हुआ, गुप्त।

पियाज़—(सं०) (स्त्री०) एक मूल, जड़।

पियादा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) पैदल लड़नेवाला सिपाही; (२) पैदल चलनेवाला नौकर; (३) शतरंज का एक मोहरा।

पियाला—(सं० पु०) कटोरा, कटोर।

पिशवाज़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) घेरे-दार पोशाक जो नर्तकी नाचने के समय पहनती है।

पिसर—(फ़ा०) (सं० पु०) पुत्र, बेटा, लड़का, सुत।

पिस्ताँ—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) स्तन, कुच, छाती।

पिस्ता—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) एक मेवा; (२) एक प्रकार का छोटा कुत्ता जिसे अकसर लेडियाँ गोद में रखती हैं।

पी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) चरबी।

पीर—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) वृद्ध, बूढ़ा; (२) सिद्ध, महात्मा।

पीर-ज़ादा—(फ़ा०) (सं० पु०) पीर का वंशज।

पीर-भुचड़ी—(सं० पु०) हिजड़ों का पीर।

पीराई—(फ़ा०) (सं० पु०) पीरों के गीत गानेवाले।

पीरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) वृद्धावस्था; (२) गुरुआई; (३) उस्तादी, चालाकी, ऐय्यारी; (४) इजारा, आज्ञा, दावा; (५) हुकूमत, प्रभुता; (६) करामात, चमत्कार।

पील—(फ़ा०) (सं० पु०) हाथी।

पील-पाया—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) हाथी का पैर; (२) बड़ा खंभा।

पीला—(हि०) (सं० पु०) ज़र्द।

पुख़्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पकना, खाना पकना। पुख़्त ओ पज़—ठीक ठीक।

पुख़्तगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मज़बूती, पक्कापन, अनुभव।

पुख़्ता—(फ़ा०) (वि०) पक्का, मज़बूत, पका हुआ, पायदार, निश्चित।

पुख़्ता-कार—(फ़ा०) (वि०) काम में होशयार, दक्ष, अनुभवी।

पुचारा—(हि०) (सं० पु०) (१) दम, धोखा, छल; (२) कूची, ब्रुश, जिससे पोतते हैं; (३) किसी दूसरे रंग की पतली

तह; (४) हलकी रंगत। पुचारा फेरना—बहकाना, दम देना।

पुटकी—(हिं०) (सं० स्त्री०) (औ०) (१) आफ़त, विपत्ति; (२) दाग़, धब्बा। पुटकी पड़ना—विपत्ति आना; मौत आना, नष्ट हो जाना।

पुदीना—(सं० पु०) एक बूटी का नाम।

पुर—(फ़ा०) (वि०) पूर्ण, भरा हुआ, कामिल।

पुर-कार—(फ़ा०) (वि०) (१) मोटा, दबीज़, दल-दार; (२) होशयार, दक्ष, ऐय्यार।

पुर-नम—(फ़ा०) (वि०) तर, गीला।

पुरज़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) टुकड़ा, खंड; (२) काग़ज़ का टुकड़ा, धज्जी, कतरन; (३) अवयव, अंग; (४) अंश, भाग; (५) परंदों का रोग। पुरज़े उड़ाना—टुकड़े टुकड़े करना, ख़ूब पीटना, फाड़ना।

पुरसाँ—(फ़ा०) (वि०) बात पूँछनेवाला, हाल पूँछनेवाला।

पुरसा—(फ़ा०) (सं० पु०) मातम पुर्सी, समवेदना प्रकट करना।

पुरसिश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पूछ-गछ, ख़बर लेना, बाज़पुर्स।

पुरसी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पूछने की क्रिया। (मिज़ाज-पुरसी)।

पुरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पूर्णता, पूरा होने की दशा; भरना।

पुल—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सेतु, नदी के पार जाने का मार्ग; (२) बहुतायत, कसरत, बाहुल्य। पुल बाँधना—ढेर लगा देना, लगातार कोई काम करना। पुल टूटना—ढेर लग जाना।

पुल-सरात—(फ़ा०) (सं० पु०) मुसलमानी मतानुसार वह पुल जिस पर होकर आक़बत के दिन स्वर्ग जायँगे।

पुलाव—(फ़ा०) (सं० पु०) मांस और चावल से बना हुआ एक खाना।

पुश्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) पीठ, पिछवाड़ा, पृष्ठ भाग; (२) सहारा, मदद, आश्रय, (३) पीढ़ी, नस्ल। पुश्त-ब-दीवार—हैरान। पुश्त पर होना—मदद पर होना।

पुश्तक—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) घोड़े की दुलत्ती।

पुश्त-ख़ार—(फ़ा०) (सं० पु०) पीठ खुजाने का दस्ता।

पुश्त-पनाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) रक्षक; (२) हिमायती, मददगार; (३) आश्रय की जगह।

पुश्ता—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) छोटी दीवार या मट्टी का ढलवाँ ढेर जो दीवार की मज़बूती या पानी भरने की रोक के लिए बनाते हैं; (२) बाँध, पानी रोकने के लिए ऊँची मेड़; (३) किताब का पुट्ठा।

पुश्तारा—(फ़ा०) (सं० पु०) गठरी, गट्ठा।

पुश्ती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) हिमायत, मदद, सहारा।

पुश्तैनी—(फ़ा०) (वि०) (१) परंपरा-गत, जो बाप-दादाओं के समय से चला आता हो, ख़ानदानी।

पूच—(फ़ा०) (वि०) (१) खोखला, ख़ाली, बेमग़ज़; (२) निरर्थक, वाहियात; (३) तुच्छ, मूर्ख।

पूच-लचर—निहायत सुस्त, काहिल।

पेच—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) लपेट, बल, घुमाव; (२) फंदा, दाँव; (३) झंझट, बखेड़ा; (४) चालाकी, धोखा, चालबाज़ी; (५) मशीन, कल; (६) कील, जिसमें चूड़ियाँ कटी हों, (७) कुश्ती के दाँव, हथकंडे; (८) एक ज़ेवर।

पेचक—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) रील, पक्के सूत की कुकड़ी; (२) छोटा तपंचा।

पेच-दर-पेच—(फ़ा०) (वि०) जिसमें पेच के अंदर और पेच हों।

पेच-दार—(फ़ा०) (वि०) (१) टेढ़ा; (२) मुश्किल, कठिन।

पेचिश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पेट का एक रोग, मरोड़, आमशूल।

पेचीदगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बल, उलझन, दिक़्क़त, मुश्किल।

पेचीदा—(फ़ा०) (वि०) लिपटा हुआ, उलझा हुआ, कठिन।

पेश—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) अगला हिस्सा, अग्र भाग; (२) उर्दू लिपि में उकार का चिह्न जो अक्षरों के ऊपर लगाया जाता है। (क्रि० वि०) आगे, सामने, पहले।

पेश-पेश—आगे आगे। पेश करना—हाज़िर करना, आगे रखना। पेश पाना—बाज़ी जीतना। पेश ले जाना—क़ाबू चलना, सफल होना। कहा०—पेश अज़ मर्ग वावैला—मुसीबत आने से पहिले फ़िक्र करना।

पेश-इमाम—पेश नमाज़, इमाम, नमाज़ पढ़ाने वाला।

पेश-क़दमी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) आगे चलना, किसी काम में अगुआ बनना; (२) सबक़त; (३) आक्रमण।

पेश-क़ब्ज़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) कटार; एक हथियार, (२) कुश्ती का एक पेच।

पेश-कश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) महसूल; (२) भेंट, उपहार।

पेशकार—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) मददगार, नाइब; (२) हाकिम के सामने काग़ज़ पेश करनेवाला।

पेश-कारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पेशकार का काम या पद।

पेश-ख़िदमत—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अमीरों की बेगमों की नौकरनी।

पेश-ख़ेमा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) वह ख़ेमा जो अमीरों के सफ़र में आगे आगे चलता है; (२) हरकारा, प्यादा, नौकर; (३) फ़ौज का अगला हिस्सा; (४) किसी काम या घटना के होने के आसार।

पेश-गाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सामने; इजलास, दरबार; बादशाह, हाकिम।

पेशगी—(फ़ा०) (वि०) (१) जो काम करने से पहले दे दिया जाय, एड्वान्स।

पेश-गोई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पहले से कहना या बताना; भविष्य वाणी।

पेश-दस्त—(फ़ा०) (सं० पु०) नाइब, पेशकार।

पेश-दस्ती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पेशबंदी, सबक़त।

पेश-पा-उफ़्तादह्—बहुत ही मामूली।

पेश-बंद—(फ़ा०) (सं० पु०) ज़ेर-बंद, वह तस्मा जो घोड़े की गरदन झुकी रखने के लिए बाँधा जाता है।

पेश-बंदी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दूर-अंदेशी; पहले से किसी बात की तदबीर करना, पहले से की हुई बचाव की युक्ति।

पेश-बीं—(फ़ा०) (वि०) दूर-दर्शी, दूर-अंदेश; पहले से देख लेनेवाला।

पेश-बीनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दूर-दर्शिता, दानाई।

पेश-रौ—(फ़ा०) (सं० पु०) आगे आगे चलनेवाला, पथ-प्रदर्शक।

पेशवा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) नेता, सरदार, अगुआ; (२) मरहटों के प्रधान मंत्री की उपाधि।

पेशवाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) अगवानी, स्वागत; (२) पेशवाओं का शासन; (३) मार्ग-प्रदर्शन, रहबरी।

पेशवाज़—(सं० स्त्री०) घेरेदार पोशाक जो नर्तकियाँ नाचते समय पहनती हैं।

पेशा—(फ़ा०) (सं० पु०) कार्य, काम-काज, धंधा, उद्यम।

पेशानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) मस्तक, माथा; (२) तक़दीर, भाग्य; (३) ऊपरी भाग; (४) सरनामा, शीर्षक। पेशानी

पर शिकन पड़ना—चेहरे से रंज प्रकट होना। पेशानी रगड़ना—अधिक ख़ुशामद करना।

पेशाब—(फ़ा०) (सं० पु०) मूत्र।

पेशाब-ख़ाना—(फ़ा०) (सं० पु०) मूत्र करने का स्थान, मोरी।

पेशावर—(फ़ा०) (सं० पु०) व्यवसायी, धंधा करनेवाला।

पेशीं-गोई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) भविष्य बतलाना; आगे का हाल कहना।

पेशी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) मुक़दमे की सुनवाई, (२) मामले का फ़ैसला करने के लिये सामने होना।

पेशीन-गोई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) भविष्य-वाणी।

पेश्तर—(फ़ा०) (क्रि० वि०) पहले, पूर्व।

पैक—(फ़ा०) (सं० पु०) हरकारा, समाचार ले जानेवाला।

पैकर—(फ़ा०) चेहरा, शक्ल, सूरत।

पैकान—(फ़ा०) (सं० पु०) भाल, तीर की अनी; तलवार की नोक।

पैकार—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) फेरी फिर कर सौदा बेचनेवाला, (२) लड़ाई, युद्ध।

पैख़ाना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) टट्टी, जा-ज़रूर; (२) मल, मैला।

पैग़ंबर—(फ़ा०) (सं० पु०) एलची, नबी, ईश्वर का संदेश-वाहक।

पैग़ाम—(फ़ा०) (सं० पु०) संदेश, ज़बानी बात। पैग़ाम डालना—विवाह की बात चलाना।

पैज़ार—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) जूता, जूती।

पै—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) तांत, जो कमान पर लपेटी जाती है; (२) पट्ठा; (३) निशान, लक्षण।

पै-दर-पै—(फ़ा०) (क्रि० वि०) लगातार, सिलसिलेवार।

पैदा—(फ़ा०) (वि०) प्रकट, उत्पन्न; अर्जित, कमाया हुआ; मयस्सर।

पैदाइश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) उत्पत्ति, सृष्टि, (उ०) नफ़ा, आमदनी।

पैदाइशी—(फ़ा०) (वि०) असली, जन्म-जात।

पैदावार, पैदावारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) उपज, फ़सल; (२) खेती, व्यापार की आमदनी, नफ़ा।

पै-ब-पै—लगातार, सिलसिलेवार।

पैमाइश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) माप, नाप, नाप-जोख।

पैमान—(फ़ा०) (सं० पु०) क़ौल-क़रार, अहद, वचन। पैमान-शिकन—वचन तोड़नेवाला, वादा खिलाफ़।

पैमाना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) नापने का साधन; (२) गिलास।

पैरवी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) आज्ञा-पालन; (२) कोशिश; (३) मदद, सहारा।

पैरहन, पैराहन—(फ़ा०) (सं० पु०) कपड़े, लिबास, पोशाक।

पैराया—(फ़ा०) (सं० पु०) ढंग, तर्ज़।

पैरो—(फ़ा०) (वि०) अनुयायी, चेला, पीछे चलनेवाला।

पैरो-कार—(फ़ा०) (सं० पु०) पैरवी करने-वाला, सहायक, पक्ष-समर्थक।

पैवंद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) थिगली, जोड़; (२) पेड़ की क़लम, किसी पेड़ की टहनी काटकर दूसरे में बाँधना।

पैवंदी—(फ़ा०) (वि०) क़लम या पैवंद लगा कर पैदा किया हुआ, (फल या पेड़)।

पैवस्ता—(फ़ा०) (वि०) (१) मिला हुआ; (२) साथ में जोड़ा हुआ।

पैहम—(फ़ा०) पै-दर-पै, लगातार।

पोइया—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) क़दम, घोड़े की चाल विशेष।

पोतादार—(फ़ा०) (सं० पु०) ख़ज़ांची, कोषाध्यक्ष।

पोदीना—(फ़ा०) (सं० पु०) एक मशहूर बूटी, जिसकी पत्ती औषध तथा चटनी अचार में काम आती है।

पोश—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) ढक्कन, जिससे कोई चीज़ ढकी जाय; (२) हट जाओ, आगे से हटाने का संकेत; (३) पहननेवाला।

पोशाक—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) लिबास; वस्त्र।

पोशिश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पहनावा, पोशाक, ग़िलाफ़।

पोशीदगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) परदा, छिपाव, दुराव।

पोशीदा—(फ़ा०) (वि०) छिपा हुआ, गुप्त, ख़ुफ़िया, पीठ-पीछे।

पोस्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) छिलका; (२) खाल, चमड़ा; (३) अफ़ीम का डोंड़ा; (४) अफ़ीम का पौदा।

पोस्त-कंदा—(फ़ा०) (वि०) (१) छिला हुआ, जिसका छिलका उतार दिया गया हो; (२) स्पष्ट, बेलाग, साफ़-साफ़, अलानिया।

पोस्ती—(फ़ा०) (सं० पु०) अफ़ीमी, आलसी।

पोस्तीन—(फ़ा०) (सं० पु०) बालदार कोट, चमड़े का कुरता।

पौलाद—(फ़ा०) (सं० पु०) फ़ौलाद, मज़बूत और साफ़ लोहा।

प्याज—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक प्रसिद्ध तेज़ बू वाला कंद जो तरकारी आदि में पड़ता है।

प्याज़ी—(फ़ा०) (वि०) प्याज़ के रंग का, गुलाबी।

प्यादा—(फ़ा०) (सं० पु०) हरकारा, पैदल।

प्याला—(फ़ा०) (सं० पु०) कटोरा, पात्र, शराब पीने का पात्र; तोप बंदूक का वह छेद जिसमें बारूद रखते हैं।

फ

फ़क़—(अ०) (वि०) (१) आश्चर्य, विस्मय या भय से चेहरे का रंग बदल जाना; (२) हैरान, परेशान।

फ़क़त—(अ०) (क्रिया० वि०) सिर्फ़, बस, केवल; किसी लेख या पत्र के समाप्त होने पर लिखते हैं।

फ़क़ीर—(अ०) (सं० पु०) (१) साधु, संन्यासी; (२) संसार से विरक्त, त्यागी; (३) मंगता, भिक्षुक, भिखमंगा; (४) धनहीन; धन से वंचित।

फ़क़ीराना—(अ०) (वि०) फ़क़ीरों की तरह; फ़क़ीरों कैसे ढंग (सं०) वह भूमि या आमदनी जो किसी फ़क़ीर को निर्वाह के लिये दी जाय।

फ़क़ीरी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) संन्यास, विराग; (२) निर्धनता; (३) भीख माँगने का पेशा।

फ़क्—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) दो मिली हुई चीज़ों को अलग अलग करना; (२) छुटकारा।

फ़क्-उल-रेहन—(अ०) (सं० पु०) रहन रखी हुई चीज़ को छुड़ाना; गिरो का रुपये देकर छुड़ा लेना, इनफ़िक़ाक़ कराना। (शुद्ध उच्चारण फक्कु-उरू-रेहन)।

फ़क्र—(अ०) (सं० पु०) (१) फ़क़ीरी, साधुता, (२) दीनता, निर्धनता; (३) संतोष।

फ़ख़—(अ०) (सं० पु०) (१) अभिमान, घमंड, शेख़ी; (२) बुज़ुर्गी, अभिमान की वस्तु। फ़ख़ जानना—बुज़ुर्गी और बड़ाई का कारण समझना।

फ़ख़न—शेख़ी से, घमंड से।

फ़ख़िया—(क्रि० वि०) अभिमान से, घमंड से।

फ़ग़फ़ूर—(फ़ा०) (सं० पु०) चीन के राजाओं की उपाधि।

फ़जर—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) सुबह, गजरदम, प्रभात, तड़का, प्रातःकाल, सबेरा; (२) प्रातःकाल की नमाज़।

फ़ज़ा—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) खुला मैदान; (२) बहार, रौनक़, शोभा; (३) भय

फ़रबा-अन्दाम—भारी शरीर का, दोहरे बदन का।

फ़रमाँ-बरदार—(फ़ा०) (वि०) आज्ञा पालनेवाला, आज्ञाकारी।

फ़रमाँ-रवा—(फ़ा०) (सं० पु०) आज्ञा देनेवाला, हुक्म जारी करनेवाला; राजा।

फ़रमाँ-रवाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) आज्ञा देना, हुक्म जारी करना; शासन।

फ़रमान—(फ़ा०) (सं० पु०) बादशाह का हुक्म, परवाना, राजाज्ञा।

फ़रमाना—(फ़ा०) (क्रि०) आज्ञा देना, कहना, करना।

फ़रमायश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) आज्ञा, आज्ञा देकर काम लेना या माँगना।

फ़रमायशी—(फ़ा०) (वि०) (१) आज्ञानुकूल; (२) कहकर माँगी हुई; (३) हुक्म के मुताबिक़ बनवाई; (४) उम्दा, बढ़िया; (५) बहुतायत या तीव्रता ज़ाहिर करने को (जैसे फ़रमायशी गरमी); (६) जूतों की मार; (७) गंदी गालियाँ। फ़रमायशी सुनाना—गंदी गालियाँ देना।

फ़रयाद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) दुहाई, पुकार, मदद माँगने के लिए शोर करना; (२) अत्याचार की शिकायत; (३) नालिश, दावा।

फ़रयाद-रसी—(स्त्री०) सुनवाई।

फ़रयादी—(फ़ा०) (वि०) मुद्दई, वादी, जो शिकायत करे।

फ़रश—(अ०) (सं० पु०) (१) बिछौना; (२) पृथ्वी, समतल भूमि; (३) पक्की बनी हुई ज़मीन। (शुद्ध उच्चारण फ़र्श)

फ़रशी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बड़ा हुक्का।

फ़रसंग—(फ़ा०) (सं० पु०) कोस या तीन मील की दूरी।

फ़रस—(अ०) (सं० पु० व स्त्री०) घोड़ा, घोड़ी।

फ़रसख़—(फ़ा०) (सं० पु०) कोस, दूरी की नाप जो लगभग तीन मील होती है।

फ़रसूदा—(फ़ा०) (वि०) (१) घिसा हुआ, गया-गुज़रा; (२) थका हुआ, शिथिल; (३) निकम्मा, दुर्दशा-ग्रस्त।

फ़रहंग—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) समझ, बुद्धि; (२) शब्द-कोष।

फ़रह—(अ०) (सं० स्त्री०) आनन्द, ख़ुशी, उमंग।

फ़रहत—(अ०) (सं० स्त्री०) प्रसन्नता, आनन्द, उमंग।

फ़रहत-अफ़ज़ा—(फ़ा०) (वि०) सुखदायी; उल्लास-दायी; आनन्द-वर्धक।

फ़रहत-बख़्श—(फ़ा०) (वि०) सुख देनेवाला, प्रसन्न करनेवाला।

फ़रहाँ—(फ़ा०) (वि०) प्रसन्न, हर्षित।

फ़रहाद—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) संगतराश, पत्थर बनानेवाला; (२) फ़ारस का एक प्रसिद्ध प्रेमी जिसकी प्रेम-कथा विख्यात है।

फ़राख़—(फ़ा०) (वि०) (१) कुशादा, फैला हुआ; (२) विशाल, बड़ा।

फ़राख़-आस्तीन—जवाँ-मर्द, उदार, दरिया-दिल।

फ़राख़-अबरू—हंसमुख।

फ़राख़-दस्त, फ़राख़-दामन—मालदार, धनी।

फ़राख़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) कुशादगी, फैलाव; (२) संपन्नता, ख़ुशहाली; (३) घोड़े का तंग।

फ़राग़—(अ०) (सं० पु०) मुक्ति, छुटकारा; (२) ख़ातिर, तसल्ली, बेफ़िक्री।

फ़राग़त—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) छुटकारा, मुक्ति; (२) बेफ़िक्री, निश्चिंतता; (३) मल-त्याग। फ़राग़त से—आराम से, दिल-जमई से।

फ़राग़-बाली—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सुख की ज़िंदगी बसर करना; जीवन व्यतीत करना।

फ़राज़—(फ़ा०) (वि०) ऊँचाई, बुलंदी। नशेब-फ़राज़—ऊँच-नीच, भला-बुरा।

फ़राज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ऊँचाई, बुलन्दी।

फ़रामीन—(फ़ा०) (सं० पु०) राजकीय आज्ञा, परवाने। (फ़रमान का बहुवचन)।

फ़रामोश—(फ़ा०) (वि०) भूला हुआ, विस्मृत।

फ़रायज़—(अ०) (सं० पु०) (१) कर्तव्य; (२) इस्लाम के पाँच नियमों का पालन।

फ़रायज़-मनसबी—वे कर्तव्य जिनका पूर्ण करना संकल्पानुसार आवश्यक है।

फ़रार—(अ०) (सं० पु०) भागना, छिपाना। (वि०) भागा हुआ। फ़रार होना—ग़ायब होना, छिप जाना।

फ़रारी—(अ०) (वि०) भागनेवाला, छिपनेवाला; वह अपराधी जो गिरफ़्तार हो जाने के डर से छिपजाय, मफ़रूर, भागा हुआ।

फ़राहम—(फ़ा०) (वि०) इकट्ठा, एकत्रित।

फ़राहमी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) संचय; इकट्ठा करना, संग्रह।

फ़रियाद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दुहाई, पुकार, नालिश, दावा।

फ़रियाद-रस—(फ़ा०) (वि०) सुनवाई करनेवाला।

फ़रियादी—(फ़ा०) (वि०) मुद्दई, दावेदार, वादी।

फ़रिश्ता—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) ईश्वर का दूत; (२) पाक, भोला भाला; (३) गुरु, उस्ताद।

फ़रिश्ता-ख़ू—(फ़ा०) (वि०) पाक, पवित्र, भोला-भाला।

फ़रिश्ता-ख़्वाँ—(फ़ा०) (सं० पु०) जो मंत्रों से फ़रिश्तों को वश में करता हो।

फ़रिश्ते-ख़ाँ—निहायत रौब-दौब वाला आदमी; गुरु, उस्ताद।

फ़रिस्तादा—(फ़ा०) (वि०) भेजा हुआ, प्रेषित।

फ़रीक़—(अ०) (सं० पु०) (१) समूह, गिरोह; (२) झगड़ा करनेवालों में का एक पक्ष; (३) भेद समझनेवाला।

फ़रीक़-अव्वल—(अ०) (सं० पु०) पहला पक्ष, मुद्दई, वादी।

फ़रीक़-सानी—(अ०) (सं० पु०) दूसरा पक्ष, मुद्दआलह, प्रतिवादी।

फ़रीक़ैन—(अ०) (सं० पु०) दोनों पक्ष; वादी-प्रतिवादी; मुद्दई-मुद्दआलह।

फ़रीद—(अ०) (वि०) अनुपम, एकता। फ़रीद बूटी—एक बूटी जिसमें पानी जम जाता है।

फ़रूग़—(फ़ा०) (सं० पु०) ज्योति, चमक, प्रकाश। (शुद्ध उच्चारण फ़रोग़)

फ़रेफ़्ता—(फ़ा०) (वि०) आसक्त, आशिक़, मोहित होनेवाला।

फ़रेब—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) छल, कपट; (२) चालाकी, बहानेबाज़ी।

फ़रेब-दिही—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) धोखा देना।

फ़रेबी—(फ़ा०) (सं० पु०) कपटी, धोखेबाज़।

फ़रो—(फ़ा०) (क्रि० वि०) नीचे। (वि०) (१) नीच, तुच्छ; (२) दबा हुआ।

फ़रोकश—(फ़ा०) (वि०) उतरनेवाला, ठहरनेवाला।

फ़रोख़्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बिक्री; बेचना।

फ़रो-गुज़ाश्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) छोड़ना, ध्यान न देना; (२) भूल, चूक; (३) टालमटूल।

फ़रो-तन—(फ़ा०) (वि०) दीन, ग़रीब।

फ़रोतना—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ग़रीबी।

फ़रोद—(फ़ा०) (क्रि० वि०) नीचे। (सं० पु०) ठहरना, टिकना।

फ़रोद-गाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ठहरने की जगह।

फ़रोमांदा—(फ़ा०) (वि०) (१) थका हुआ, शिथिल; (२) दीन, ग़रीब; (३) लाचार।

फ़रो-माँदगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दीनता, मुफ़लिसी; शिथिलता।

फ़रोमाया—(फ़ा०) (वि०) बेअक़्ल, ओछा, कमीना, नीच।

फ़रोश—(फ़ा०) (सं० पु०) बेचनेवाला, विक्रेता। (फ़रोशिन्दा)।

फ़रोशी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बेचने का काम।

फ़र्क़—(अ०) (सं० पु०) (१) जुदाई, दूरी; (२) असहमत होना, विरोध; (३) सिर के बालों की माँग, सिर; (४) तमीज़, पहिचान, विवेक; (५) दुई, एक न समझना, (६) ख़लल, गड़बड़; (७) कमी, नुक़सान।

फ़र्ज़—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) कर्तव्य; (२) ज़िम्मेदारी; (३) माना हुआ; (४) दर्ज़, दरार।

फ़र्ज़-किफ़ाया—(अ०) (सं० पु०) वह कर्तव्य जो एक व्यक्ति सारे परिवार या समाज की ओर से पूरा कर सके।

फ़र्ज़न्—(अ०) (क्रि० वि०) मानते हुए; मान कर, फ़र्ज़ करके।

फ़र्ज़न्द—(फ़ा०) (सं० पु०) पुत्र, बेटा, लड़का। फ़र्ज़न्द की आग—बेटे की मुहब्बत।

फ़र्जन्द-अरजमंद—होनहार बेटा, लायक़ बेटा, सुयोग्य पुत्र।

फ़र्ज़न्द-नाख़लफ़—नालायक़ बेटा।

फ़र्ज़न्दी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पुत्रत्व। फ़र्ज़न्दी में लेना—लड़का बनाना, गोद लेना।

फ़र्ज़ानगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) समझदारी, बुद्धिमानी, गुण, योग्यता।

फ़र्ज़ाना—(फ़ा०) (वि०) (१) बुद्धिमान्, समझदार; (२) विद्वान्, ज्ञानवान्।

फ़र्ज़ी—(फ़ा०) (वि०) (१) कल्पित, मान लिया गया हुआ; (२) नाम-मात्र का।

फ़र्त—(अ०) (सं० स्त्री०) अधिकता, अति, ज़्यादती।

फ़र्द—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) लिस्ट, सूची; (२) काग़ज़ पर लिखा हुआ हिसाब; चिट्ठा; (३) चादर, शाल; (४) एक शेर या पद्य का टुकड़ा; (५) एक व्यक्ति; (६) एक सुरीला पक्षी; (७) एक प्रकार का कबूतर। (वि०) (१) अकेला, एकाकी, अविवाहित; (२) अनुपम, यकता, अद्वितीय।

फ़र्दन्-फ़र्दन्—(अ०) (क्रि० वि०) एक-एक करके, अलग-अलग।

फ़र्द-बशर—(अ०) (सं० पु०) एक व्यक्ति, आदमी, प्राणी।

फ़र्द-बातिल—(अ०) (वि०) निरर्थक, व्यर्थ, अयोग्य, निकम्मा।

फ़र्राटा—(१) हवा में उड़ने की आवाज़; (२) जल्दी से बोलना या दौड़ना; (३) हवा का तेज़ झोंका। फ़र्राटे लेना या भरना—तेज़ बोलना या पढ़ना।

फ़र्रार—(अ०) (वि०) बहुत शीघ्र भागने वाला; तेज़ दौड़नेवाला।

फ़र्राश—(अ०) (सं० पु०) (१) फ़र्श बिछानेवाला नौकर; (२) रोशनी का प्रबंध करनेवाला; (३) ख़ेमा गाड़नेवाला; (४) नौकर; (५) एक प्रकार का वृक्ष।

फ़र्राश-ख़ाना—(अ०) (सं० पु०) वह स्थान जहाँ डेरा, ख़ेमा, फ़र्श का सामान रहता है।

फ़र्राशी—(अ०) (वि०) फ़र्श या फ़र्राश से सम्बन्ध रखनेवाला। फ़र्राशी-पंखा—बड़ा पंखा जो मकान की छत से लटकाया जाता है जिससे पूरे फ़र्श पर हवा पहुँचे। फ़र्राशी-सलाम—(पु०) वह सलाम जिसमें झुकते में सिर फ़र्श तक पहुँच जाय; बहुत ही अदब का सलाम।

फ़रुख़—(फ़ा०) (वि०) (१) मुबारक, शुभ; (२) सुन्दर, उत्तम।

फ़रुख़-क़दम—(फ़ा०) (वि०) जिसका आना मुबारक हो।

फ़र्श—(अ०) (सं० पु०) (१) बिछौना; (२) ईंटें या चूना बिछाकर एक सी बनी हुई जगह; (३) स्थल। फ़र्श से अर्श तक—ज़मीन से आसमान तक।

फ़र्श-फ़रूश—बिछौना इत्यादि। फ़र्श-रह—ज़मीन पर बिछा हुआ, (बड़ी दीनता का द्योतक)।

फ़र्शी—(अ०) (सं० स्त्री०) बड़ा चौड़े पेंदे का हुक़्क़ा। (वि०) फ़र्श से सम्बन्ध रखनेवाला। फ़र्शी-सलाम—ज़मीन तक झुक कर सलाम।

फ़लक—(अ०) (सं० पु०) आसमान, आकाश, नभ।

फ़लक-सैर—(अ०) (सं० स्त्री०) बहुत तेज़ चलने वाला।

फ़लकी—(अ०) (वि०) आकाश सम्बन्धी।

फ़लाँ—(अ०) (सं० पु०) अमुक।

फ़लाकत—(अ०) (सं० स्त्री०) ग़रीबी, दारिद्र्य, विपत्ति।

फ़लाकत-ज़दा—(अ०) (वि०) आफ़त का मारा; विपत्ति-ग्रस्त।

फ़लाख़न—(फ़ा०) (सं० पु०) रस्सी का बना हुआ ग़ुलेल जिसमें रखकर पत्थर या ढेला फेंकते हैं, ढेलवांस।

फ़लातूं—(यू०) अफ़लातूं नामक यूनानी दार्शनिक; दार्शनिक।

फ़लान—(उ०) (सं० स्त्री०) स्त्री की जननेंद्रिय। फ़लान उगटना—अश्लील गालियाँ देना।

फ़लाना—(अ०) (वि०) अमुक, कोई एक।

फ़लालेन—(अंग०) एक तरह का रूईदार ऊनी कपड़ा।

फ़लासिफ़ा—(यू०) (स० पु०) दर्शन-शास्त्र; दर्शन, विज्ञान।

फ़लाह—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) मुक्ति; (२) सफलता; (३) सुख, आराम, सलामती; (४) भलाई।

फ़लाहत—(अ०) (सं० स्त्री०) खेती करना, किसानी।

फ़लीता—(अ०) (सं० पु०) पलीता, मोटी बटी हुई रस्सी, जिससे आग लगाने का काम लेते हैं।

फ़लूस—(अ०) (सं० पु०) ताँबे का सिक्का, पैसा।

फ़लसफ़ा—(यू०) (सं० पु०) दर्शन, विज्ञान।

फ़लसफ़ी—(यू०) (वि०) दार्शनिक, विज्ञानी।

फ़वायद—(अ०) (सं० पु०) लाभ; (फ़ायदा का बहुवचन)।

फ़सली सन्—(फ़ा०) (सं० पु०) अकबर के काल से चला हुआ एक संवत् जिसका प्रचार ज़मीन के बंदोबस्त या माल लगान सम्बन्धी कामों में होता है।

फ़साद—(अ०) (सं० पु०) (१) ख़लल, बलवा; (२) विकार, बिगाड़, उपद्रव; (३) झगड़ा, लड़ाई, दंगा, विद्रोह, उपद्रव, ऊधम।

फ़सादी—(अ०) (वि०) फ़साद या झगड़ा-टंटा करनेवाला; झगड़ालू।

फ़साना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) कहानी, गल्प; (२) उपन्यास; (३) क़िस्सा, हाल।

फ़साहत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) ख़ुश-बयानी, सुन्दर वर्णन; (२) उत्तम व्याख्यान देने की शक्ति; (३) बोलने या लिखने का प्रवाह।

फ़सील—(अ०) (सं० स्त्री०) शहर की चारदीवारी, शहर-पनाह, परकोटा।

फ़सीह—(अ०) (वि०) सुवक्ता; प्रवाह-संपन्न; शीरीं-कलाम, जिसके बोलने में मिठास हो।

फ़सूं—(अ०) (सं० पु०) जादू-टोना; तंत्र-मंत्र, टोटका।

फ़सूं-गर—(फ़ा०) (वि०) जादूगर; तांत्रिक; टोना करनेवाला।

फ़सूं-साज—(वि०) जादू-टोना करनेवाला।

फ़स्ख़—(अ०) (सं० पु०) (१) इरादा बदल देना; (२) रद कर देना, तोड़ना।

फ़स्द—(अ०) (सं० स्त्री०) नस छेद कर रक्त निकलवाना। फ़स्द खुलवाना—दूषित रक्त निकलवाना, होश में आना।

फ़स्ल—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) ऋतु, मौसम; (२) काल, समय; (३) उपज, पैदावार; (४) ग्रंथ का अध्याय या भाग; (५) जुदाई, फ़र्क़, फ़ासला; (६) (औ०) धोखा, छल, दग़ा, फ़रेब।

फ़स्ली—(अ०) (वि०) फ़स्ल पर फैलनेवाला; मौसम पर पैदा होनेवाला।

फ़स्ले-गुल—(अ०) (सं० स्त्री०) फूलने का समय, वसन्त ऋतु।

फ़स्ले-बहार—वसंत ऋतु।

फ़स्साद—(अ०) (सं० पु०) जर्राह, नश्तर लगानेवाला, फ़स्द खोलनेवाला।

फ़हम—(अ०) (सं० स्त्री०) समझ, ख़्याल, बुद्धि।

फ़हमाइश—(अ०) (सं० स्त्री०) चेतावनी, सावधान करना, समझाना।

फ़हमीद—(अ०) (सं० स्त्री०) बुद्धि, समझ, अक़्ल।

फ़हमीदा—(अ०) (वि०) समझदार, बुद्धिमान्।

फ़हरिस्त—(सं० स्त्री०) लिस्ट, सूची। (शुद्ध उच्चारण फिहरिस्त)

फ़हवा—(अ०) (सं० पु०) ढंग, अंदाज़, तर्ज़।

फ़हश—(अ०) (वि०) अश्लील, गंदा। (शुद्ध उच्चारण फोहश)

फ़हीम—(अ०) (वि०) समझदार, प्रतिष्ठित।

फांक—(हि०) (सं० स्त्री०) काश, तराशा हुआ टुकड़ा; एक भाग।

फांस—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) लकड़ी का रेशा; बाँस या बान का काँटा; (२) अन्दरूनी चोट, आन्तरिक व्यथा; (३) चिन्ता, खटका।

फ़ाक़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) उपवास, निराहार रहना; (२) दरिद्रता, ग़रीबी।

फ़ाक़ा-कश—(अ०) (वि०) भूखा रहनेवाला; भूखों मरनेवाला; दरिद्र।

फ़ाक़ा-कशी—(अ०) (सं० स्त्री०) भूखा रहना; फ़ाक़े की सख़्तियाँ झेलना।

फ़ाक़ा-ज़दा—(अ०) (वि०) कंगला; भूख का मारा।

फ़ाक़ा-मस्त—(अ० फ़ा०) (वि०) जो भूखा रहकर भी प्रसन्न रहता हो; जो खाने को न होने पर भी निश्चिन्त रहे।

फ़ाक़ा-मस्ती—(सं० स्त्री०) ग़रीबी में भी प्रसन्न चित्त रहना।

फ़ाक़े-मस्त—(वि०) पेट भर न मिले तो भी आनन्द-मग्न रहे।

फ़ाक़ों का टूटा—जो फ़ाक़े करते करते दुबला हो गया हो; बहुत ही भूखा। फ़ाक़ों मरना—भूखों मरना।

फ़ाख़िर—(अ०) (वि०) क़ीमती, बहुमूल्य।

फ़ाख़िरा—(अ०) (वि०) बेश-क़ीमत, बहुमूल्य।

फ़ाख़ई—(अ०) (सं० पु०) एक प्रकार का रंग; ख़ाकी।

फ़ाख़्ता—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) एक पक्षी; (२) आशिक़, प्रेमी। फ़ाख़्ता उड़ाना—निरर्थक काम करना।

फ़ाजिर—(अ०) (सं० पु०) व्यभिचारी, पापी, बदचलन।

फ़ाजिरा—(अ०) (सं० स्त्री०) व्यभिचारिणी, बदचलन, भ्रष्ट।

फ़ाज़िल—(अ०) (वि०) बेकार, फ़िज़ूल, व्यर्थ। (सं० पु०) विद्वान्।

फ़ाज़िल बाक़ी—(अ०) (वि०) बाक़ी बचा हुआ, बाकी निकलता हुआ।

फाट—(हि०) (सं० पु०) अर्ज़, चौड़ाई।

फ़ातिमा—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) मोहम्मद साहब की पुत्री जो हज़रत अली से विवाहित हुई; (२) जो बच्चे को दूध पिलाना बंद कर दे।

फ़ातिर—(अ०) (वि०) सुस्त, काहिल, कुंद।

फ़ातिह—(अ०) (सं० पु०) विजयी; खोलने वाला; मरनेवाला।

फ़ातिहा—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) किसी मरे हुए की रूह (आत्मा) को शान्ति पहुँचाने के लिए क़ुरान-शरीफ़ के एक विशिष्ट अंश का पाठ; (२) मरे हुए के नाम पर दिया हुआ नियाज़।

फ़ानी—(अ०) (वि०) (१) नश्वर, नाश हो जानेवाला; मरनेवाला; (२) बहुत बूढ़ा।

फ़ानूस—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) एक बड़ी कंदील, जिसमें बहुत सी बत्तियाँ एक साथ जलाई जा सकती हैं।

फ़ानूसे-ख़याल—(फ़ा०) (सं० पु०) काग़ज की बनी हुई कंदील या लालटेन जिसके भीतर बहुत से चित्र (हाथी, घोड़े इत्यादि) एक गोल चक्कर में लगे रहते हैं, जो हवा लगने से फिरता रहता है।

फानूसे-ख़याली—(सं० पु०) फ़ानूस-ख़याल।

फापा-कुटनी, फाफा-कुटनी—(हि०) (सं० स्त्री०) चालाक कुटनी।

फ़ाम—(फ़ा०) (सं० पु०) रंग, समान।

फ़ायक़—(अ०) (वि०) सबसे बढ़कर, श्रेष्ठ, उच्च, प्रतिष्ठित।

फ़ायज़—(अ०) (वि०) (१) पहुँचनेवाला, सफल होनेवाला; (२) विजयी।

फ़ायदा—(अ०) (सं० पु०) (१) आमदनी, लाभ, नफ़ा, बचत; (२) वास्ता, मतलब, स्वार्थ; (३) ख़ूबी, असर, अच्छा प्रभाव; (४) आराम।

फ़ायदा-मंद—(उ०) (वि०) कारगर, लाभदायक, लाभ-प्रद।

फ़ायल—(अ०) (वि०) (१) काम करने-वाला, कर्ता; (२) अप्राकृतिक व्यभि-चारी।

फ़ायले-हक़ीक़ी—(अ०) (सं० पु०) ईश्वर।

फ़ार—(अ०) (सं० पु०) चूहा।

फ़ार-ख़ती—(अ०) (सं० स्त्री०) चुकती की रसीद, बेबाकी का इक़रार, वह लेख जिससे यह इक़रार किया जाय कि लिखने-वाले का कुछ हक़ बाक़ी नहीं है।

फ़ारस—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) ईरान या फ़ारस देश; (२) घुड़सवार।

फ़ारसी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) फ़ारस देश की भाषा; फ़ारस-निवासी, ईरानी। **फ़ारसी बघारना**—बे मौके फ़ारसी बोलना, अपनी योग्यता दर्शाने को ऐसी भाषा बोलना जो औरों की समझ में न आवे। **फ़ारसी की टाँग तोड़ना**—ग़लत-सलत फ़ारसी बोलना।

फ़ारसी-दाँ—(फ़ा०) (वि०) फ़ारसी जानने वाला।

फ़ारिग़—(अ०) (वि०) (१) स्वतंत्र, संपन्न; (२) ख़ाली, निश्चिन्त; (३) जो कोई काम करके निश्चिन्त हो गया हो।

फ़ारिग़-उल्-बाल—(अ०) (वि०) जो सब प्रकार से स्वाधीन और निश्चित हो।

फ़ारिग़-उल्-बाली—(अ०) (सं० स्त्री०) निश्चिन्तता, संपन्नता, आसूदगी।

फ़ारिग़-ख़ती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बेबाकी की रसीद।

फ़ारूक़—(अ०) (वि०) (१) दूसरे ख़लीफ़ा उमर साहब की उपाधि; (२) भले बुरे का फ़र्क़ या अन्तर जाननेवाला; (३) एक क़िस्म के तेज़ाब का नाम।

फ़ारूक़ी—(अ०) (वि०) फ़ारूक़ से सम्बन्धित।

फ़ाल—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) तीर की नोक, (२) हल में लगाने का लोहे का

काँटा, जिससे ज़मीन खोदते हैं; (३) सुपारी का बड़ा टुकड़ा।

फ़ाल—(अ०) (सं० स्त्री०) शकुन; पाँसा फेंककर या पुस्तक का कोई स्थल अनायास खोल कर शकुन लेना। फ़ाल खुलवाना —किसी धार्मिक पवित्र पुस्तक या रमल से शकुन देखना। फ़ाल देखना या लेना—शकुन लेना, शुभाशुभ देखना।

फ़ाल-गीर, फ़ाल-गो—फाल देखनेवाला, शकुन विचारक।

फ़ालतू—(उ०) (वि०) फ़िज़ूल, ज़रूरत से ज़्यादह, बेकार, निकम्मा।

फ़ाल-नामा—(अ०) (सं० पु०) वह पुस्तक जिसे देखकर शकुन विचारते हैं।

फ़ालसई—(फ़ा०) (वि०) फ़ालसे के रंग का; हल्का ऊदा।

फ़ालसा—(फ़ा०) (सं० पु०) एक छोटा ऊदे रंग का फल। खट्टे को शरबती और मीठे को शकरी कहते हैं।

फ़ालिज—(अ०) (सं० पु०) अर्धाङ्गवात, पक्षाघात, लकवा। फ़ालिज गिरना— पक्षाघात रोग होना।

फ़ालीज़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ख़रबूज़ों का खेत, खीरे ककड़ी का खेत।

फ़ालूदा—(फ़ा०) (सं० पु०) पका हुआ और जमा हुआ निशास्ता (गेहूँ का सत) कहा०—फ़ालूदा खाते दाँत टूटें तो बला से—भलाई करते बुराई हो तो होने दो।

फ़ाश—(फ़ा०) (वि०) खुला हुआ, प्रकट, स्पष्ट, साफ़ दिखलाई पड़नेवाला। फ़ाश ग़लती—खुली ग़लती।

फ़ासला—(अ०) (सं० पु०) दूरी, अन्तर।

फ़ासिक़—(अ०) (वि०) व्यभिचारी, पापी।

फ़ासिख़—(अ०) (वि०) पलट देनेवाला, तबाह कर देनेवाला।

फ़ासिद—(अ०) (वि०) (१) ख़राब करनेवाला, बिगड़ा हुआ; (२) दुष्ट, पाजी।

फ़ासिल—(अ०) (वि०) फ़र्क़ करनेवाला, अलग करनेवाला।

फ़ासिला—(अ०) (सं० पु०) दूरी, अन्तर, मैदान।

फ़ाहिश—(अ०) (वि०) (१) दुष्ट, दुश्चरित्र; (२) गंदी बातें करनेवाला, अश्लील गाली बकनेवाला; (३) लज्जाजनक, भारी।

फ़ाहिशा—(अ०) (सं० स्त्री०) दुश्चरित्रा, बदचलन, व्यभिचारिणी।

फ़िक़रा—(अ०) (सं० पु०) (१) फ़रेब की बात, धोखा; (२) फबती, व्यंग्य; (३) वाक्य।

फ़िक़रे-बाज़—(फ़ा०) (वि०) चालिया, धोखेबाज़, दम-बाज़।

फ़िक़रे - बाज़ी—चालाकी, धोखे बाज़ी, ऐय्यारी।

फ़िक़्क़ा—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) मुसलमानी धर्म-शास्त्र। (शुद्ध उच्चारण फ़िक़्ह)

फ़िक्र—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) चिन्ता, सोच; (२) ध्यान, विचार, ख़याल; (३) उपाय, यत्न, तैयारी।

फ़िक्र-मन्द—(फ़ा०) (वि०) चिंतित, उदास।

फ़िगार—(फ़ा०) (वि०) घायल, ज़ख़्मी।

फ़िज़ा—बढ़ानेवाला, ज़्यादा करनेवाला—(यौगिक में, जैसे रौनक़-फ़िज़ा)।

फ़ितन-ए - आलम, फ़ितन-ए - जहाँ—संसार भर में उपद्रव मचानेवाला; (प्रेमिका का विशेषण)।

फ़ितनत—(अ०) (सं० स्त्री०) शरारत, चालाकी।

फ़ितना—(अ०) (सं० पु०) (१) हंगामा, फसाद, झगड़ा, (२) विद्रोह; (३) एक प्रकार का इत्र; (४) निहायत शरीर, शोख़, उपद्रव करनेवाला; (५) प्रेमिका। फ़ितना उठाना—फ़साद डालना; झगड़ा कराना। फ़ितना जगाना—जो ठंडा पड़ गया हो

उस झगड़े को फिर उभाड़ना। फ़ितना बनना—फ़िसाद का कारण बनना।

फ़ितना-अंगेज़—(अ०) (वि०) (१) उपद्रवी, झगड़ा खड़ा करानेवाला; (२) माशूक़।

फ़ितना-अन्दाज़—(सं० पु०) फ़सादी, झगड़ा खड़ा कर देनेवाला; माशूक़।

फ़ितना-परदाज़—(अ०) (वि०) उपद्रव, खड़ा करनेवाला; माशूक़।

फ़ितर—(अ०) (सं० पु०) दिन भर के उपवास के बाद शाम को कुछ खाकर रोज़ा खोलना। (शुद्ध उच्चारण फ़ित्र)

फ़ितरत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) प्रकृति, स्वभाव, आदत; (२) होशयारी, बुद्धिमानी; (३) शरारत, धूर्तता।

फ़ितरती—(अ०) (वि०) प्रकृति से, स्वभाव से; धूर्त।

फ़ितरा—(अ०) (सं० पु०) मनसा हुआ अन्न; ईद के दिन जो अन्न ख़ैरात में देते हैं।

फितराक—(फ़ा०) (सं० पु०) चमड़े के तस्मे जो घोड़े की ज़ीन के दोनों तरफ़ शिकार या सामान बाँधने के लिए लगे होते हैं।

फ़ितीर—(अ०) (सं० पु०) ताज़ा गुंधा हुआ आटा; (ख़मीर का उलटा)।

फ़ितूर—(सं० पु० ख़ुल्स, विकार।

फ़िद्वी—(अ०) (वि०) आज्ञा-कारी, दास।

फ़िदा—(अ०) (वि०) (१) आसक्त, अनुरक्त; (२) प्राण निछावर करनेवाला, प्राण देनेवाला; प्राणों के समान प्रेम करनेवाला।

फ़िदाई—(अ०) (सं० पु०) जाँनिसार, प्राण निछावर करनेवाला, प्राण अर्पण करनेवाला।

फ़िदिया—(अ०) (सं० पु०) (१)-माल या रुपया जो किसी क़ैदी के छुड़ाने को दिया जाय, (२) जान के बदले में दिया हुआ; (३) राजा का कर जो अन्य धर्मवालों से वसूल किया जाय।

फ़िन्नार—(अ०) (क्रि० वि०) नरक, नरकाग्नि।

फ़िरंग—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) फ्रान्स, यूरुप का एक प्रसिद्ध देश; (२) उपदंश, गरमी।

फ़िरंगिस्तान—(फ़ा०) (सं० पु०) यूरुप।

फ़िरंगी—(फ़ा०) (सं० पु०) फ्रान्स का निवासी, फ्रेंच।

फ़िरक़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) गिरोह, जाति, जन समूह; (२) संप्रदाय, पंथ, मत।

फ़िरदौस—(अ०) (सं० पु०) (१) स्वर्ग, बहिश्त; (२) बाग़, वाटिका।

फ़िरदौस-मकानी—(अ०) (वि०) स्वर्ग-निवासी; वैकुंठ-वासी।

फिरनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) चावलों की खीर।

फ़िराक़—(अ०) (सं० पु०) (१) चिन्ता, फ़िक्र, सोच (२) खोज, तलाश (३) वियोग, विरह, बिछोह।

फ़िराग़—(अ०) (सं० पु०) (१) छुटकारा, मुक्ति, रिहाई; (२) आनन्द, हर्ष; (३) संतोष, तुष्टि; (४) अवकाश, सुबिधा; (५) अधिकता।

फ़िरार—(सं० पु०) भागना।

फ़िरावाँ—(फ़ा०) (वि०) बहुत, अधिक।

फ़िरावानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अधिकता, बहुतायत।

फ़िरासत—(अ०) (सं० स्त्री० दानाई, बुद्धिमानी, समझदारी।

फ़िल-जुमला—(अ०) (क्रि० वि०) एक वाक्य में, संक्षेप में, मतलब यह कि।

फ़िलफ़िल—(अ०) (सं० स्त्री०) काली मिर्च ।

फ़िल-फ़ौर—(अ०) (क्रि० वि०) फ़ौरन, तत्काल, तुरन्त, एक दम ।

फ़िल-बदीह—(अ०) (क्रि० वि०) सहसा, एकदम, बिना पहले से सोचे हुए ।

फ़िल-मसल—(अ०) (क्रि० वि०) जैसे, उदाहरण के लिए ।

फ़िल-वाक़ा—(अ०) (क्रि० वि०) वस्तुतः; असल में, दरहक़ीक़त, वास्तव में ।

फ़िल-हाल—(अ०) क्रि० वि०) इस समय, अभी तो ।

फ़िशार—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) क़ब्र का मुरदे को भींचना; (२) बकवाद, गाली, बेहूदा बात ।

फिसड्डी—(हि०) (वि०) हारा हुआ, घटियल, पीछे रह जानेवाला ।

फ़िसाद—(सं० पु०) झगड़ा; टंटा, लड़ाई । (शुद्ध उच्चारण फ़साद)

फ़िसाना—(सं० पु०) उपन्यास, कहानी, क़िस्सा, गल्प ।

फ़िस्क़—(अ०) (सं० पु०) (१) उल्लंघन, रद करना; (२) बदकारी, अपराध; (३) पाप, गुनाह; (४) बिगड़ जाना, गिरजाना ।

फ़िस्क़-ओ-फ़ुजूर—बदकारी, बदचलनी, चरित्र-भ्रष्टता ।

फ़ी—(अ०) (अव्यय) (१) प्रति, हर एक, प्रत्येक; (२) ग़लती, ऐब, खोट ।

फ़ी-अमान-अल्लाह—(अ०) ईश्वर तुम्हारी रक्षा करे ।

फ़ी-ज़माना—(अ०) (क्रि० वि०) आजकल, इनदिनों, सम्प्रति ।

फ़ीता—(पु०) (सं० पु०) (१) पतली पट्टी या सूत जो बाँधने या लपेटने के काम आता है; (२) नापने की डोरी ।

फ़ी-माबैन—(अ०) (क्रि० वि०) दोनों फ़रीक़ों के बीच में ।

फ़ीरनी—(सं० स्त्री०) चावलों की खीर ।

फ़ीरोज़—(अ०) (वि०) मुबारक, कामयाब, सफल ।

फ़ीरोज़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) नीला-हरा पत्थर, एक रत्न ।

फ़ीरोज़ी—(फ़ा०) (वि०) नीले-हरे रंग का ।

फ़ील—(फ़ा०) (सं० पु०) हाथी ।

फ़ील-ख़ाना—(फ़ा०) (सं० पु०) हाथी-शाला ।

फ़ील-पा—(फ़ा०) (सं० पु०) एक रोग जिसमें पैर फूल कर हाथी के पैर के समान मोटा हो जाता है ।

फ़ील-पाया—(फ़ा०) (सं० पु०) खंभा, स्तम्भ ।

फ़ील-बान—(फ़ा०) (सं० पु०) हाथीवान, महावत ।

फ़ील-मुर्ग़—(फ़ा०) (सं० पु०) एक पक्षी ।

फ़ीलसूफ़—(यू०) (सं० पु०) (१) दाना; बुद्धिमान; (२) फ़रेबी, चाल-बाज़ ।

फ़ील-सूफ़ी—(उ०) (सं० स्त्री०) मक्कारी, ऐय्यारी, चालाकी, शरारत ।

फ़ील—(फ़ा०) (सं० पु०) शतरंज का एक मोहरा, हाथी ।

फ़ी-सदी—(अ०) (क्रि० वि०) फ़ी सैकड़ा प्रतिशत ।

फ़ी-सबील-अल्लाह—(अ०) (क्रि० वि०) ईश्वर के लिए ।

.फ़ुक़रा—(अ०) (सं० पु०) फ़क़ीर का बहुवचन ।

.फ़ुग़ाँ—(फ़ा०) (सं० पु०) रोना, चिल्लाना, रुदन ।

.फ़ुज़ला—(अ०) (सं० पु०) (१) फ़ाज़िल (विद्वान्) का बहुवचन; (२) फोक, झूठन, बचा हुआ; (३) शरीर के मल ।

.फ़ुज़ूँ—(फ़ा०) (वि०) ज़्यादा, अधिक ।

.फ़ुज़ूनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ज़्यादती, अधिकता ।

फ़ुज़ूर—(अ०) (सं० पु०) पाप, अपराध, दुराचार।

फ़ुज़ूल—(वि०) व्यर्थ, फालतू, निकम्मा, बेकार।

फ़ुज़ूल-गो—(सं० पु०) बक्की; बात बढ़ाकर कहनेवाला।

फुटकर—(हि०) (वि०) अकेला।

फुटकल—(हि०) (वि०) (१) अकेला, जुदा; मुख़्तलिफ; (२) रेज़गारी।

फ़ुतूह—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) फतह (विजय) का बहुवचन; (२) ऊपर से होनेवाला लाभ; छाँदा; (३) लूट का माल।

फ़ुतूहात—(अ०) (सं० स्त्री०) फ़ुतूह का बहुवचन।

फ़ुफ़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) फूँक, श्वास।

फ़ुनून—(अ०) (सं० पु०) फ़न (गुण, कला) का बहुवचन।

फ़ुरक़त—(अ०) (सं० स्त्री०) वियोग, विरह, जुदाई, विछोह।

फ़ुरक़ान—(अ०) (सं० स्त्री०) क़ुरान शरीफ।

फुरती—(सं० स्त्री०) जल्दी, चुस्ती, चालाकी।

फ़ुरसत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) मौक़ा, अवसर; (२) मुहलत, अवकाश, (३) छुटकारा, मुक्ति; (४) संतोष, तसल्ली।

फ़ुरादा—(अ०) (वि०) अकेले, एक एक, एकाकी। (फरद का बहुवचन)।

फुरैरी—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) फुरफुरी, शरीर पर रोमांच होना; (२) सींक में रुई लपेटी हुई. इत्र का फोया; (३) उमंग, जोश, उत्साह।

फ़ुरोग़—(अ०) (सं० पु०) रौनक़, रोशनी, चमक।

फुलका—(हि०) (सं० पु०) छाला, फफोला, आबला।

फुलझड़ी—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) एक प्रकार की आतिशबाज़ी; (२) फ़िसाद या झगड़े की बात; (३) लड़ाई-झगड़ा करानेवाली औरत।

फुलहट्टी—(हि०) (सं० स्त्री०) फूलों की हाट, फूलों का बाज़ार।

फुलेल—(हि०) (सं० पु०) खुशबूदार तेल, तेल जो फूलों में बसा कर बनाया गया हो।

फ़ुसूँ—(अ०) (सं० पु०) जादू।

फ़ुहश—(अ०) (सं० पु०) बेहूदा बात, बेहयाई की बातें, अश्लील बातें।

फूल—(हि०) (सं० पु०) (१) पुष्प, सुमन, गुल; (२) बेल-बूटे जो वस्त्रों की बाहों पर बनाये जाते है; (३) मुसल्मानों में मरने के तीसरे और पाँचवे दिन की क्रिया, जिसमें फूल उठाये जाते हैं; (४) शराब; (५) पतंगा; (६) एक सफ़ेद धातु का नाम जिसके बर्तन बनते हैं; (७) हल्की चीज़; (८) नक़्श, बेल-बूटे; (९) हिन्दुओं में जले हुए मुरदे की हड्डियाँ, जो चुनकर गंगा में बहाई जाती हैं (१०) हैज़, रज के दिन, फूल के दिन; (११) कोढ़ के सफेद दाग़; (१२) बत्ती का जला हुआ हिस्सा। फूल बैठना—अकड़ जाना; तन जाना, रूठ जाना।

फूहड़—(हि०) (वि०) बेसलीक़ा, बेहुनर, बेतमीज़। कहा०—फूहड़ का माल, हंस हंस खाय—बेवकूफ का माल खुशामदी ख़ूब उड़ाता है। फूहड़ की झाड़ू सुघड़ का लीपा दोनों छिपते नहीं—बद सलीका और ख़ुश सलीक़ा का काम खुद बोल उठते हैं।

फूहड़पन—बेवक़ूफ़ी, मूर्खता।

फ़ेल—(अ०) (सं० पु०) (१) काम, कार्य, कर्म; (२) दुष्कर्म; (३) विषय-भोग; (४) क्रिया (व्याकरण में)।

फ़ेल-ज़ामनी—(अ०) (सं० स्त्री०) नेकचलनी की ज़मानत।

फ़ेलन्—(अ०) (क्रि० वि०) कार्य-रूप में, कार्य की दृष्टि से।

फ़ेल-मुतअद्दी—(अ०) (सं० पु०) सकर्मक क्रिया।

फ़ेल-लाज़मी—(अ० (सं० पु०) अकर्मक क्रिया।

फ़ेलिया, फ़ेली—(हि०) (वि०) (१) धूर्त, चालाक, करू; (२) बदचलन, कुकर्मी।

फ़ेहरिस्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सूची, लिस्ट।

फ़ैज़—(अ०) (सं० पु०) (१) हित, उपकार भलाई; (२) फायदा, लाभ; (३) तुर्की टोपी।

फ़ैज़-रसाँ—(अ०) (वि०) लाभदायी; लाभ पहुँचानेवाला।

फ़ैज़-आम—(अ०) (सं० पु०) लोकोपकार, जनता का लाभ।

फ़ैयाज़—(अ०) (वि०) दाता, दानी, उदार।

फ़ैयाज़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) उदारता, दानशीलता, परोपकार।

फ़ैल—(उ०) (१) मचलना; (२) मकर, फ़रेब, धोखा। फ़ैल करना—मचलना, बहाना करना। फ़ैल भरना—मक्कारी करना। फ़ैल मचाना—हठ करना, ज़िद करना। फ़ैल लाना—लड़ना, झगड़ना।

फ़ैलसूफ़—(यू०) (सं० पु०) (१) विद्वान्, दार्शनिक; (२) धोखेबाज़, मक्कार; (३) फ़िज़ूल-ख़र्च, अपव्ययी।

फ़ैल-सूफ़ी—(यू०) (सं० स्त्री०) (१) धूर्तता, चालाकी, धोखेबाज़ी; (२) अपव्ययिता, फ़िज़ूल ख़र्ची।

फ़ैलहाई—(उ०) (सं० स्त्री०) (औ०) मक्कार, ज़िद्दन स्त्री।

फ़ैसल—(अ०) (सं० पु०) न्याय, फ़ैसला चुकाना।

फ़ैसला—(अ०) (सं० पु०) तजवीज़, हुक्म, निश्चय, सम्मति, निर्णय।

फोकट—(हि०) (स० स्त्री०) मुफ़्त। फोकट का—मुफ़्त का, बेदाम का। फोकट में—ख़ाली-ख़ूली, बिना ख़र्च के।

फोता—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) थैली, कोष, ख़ज़ाना; (२) भूमिकर, लगान; (३) अंड कोष।

फ़ोता-ख़ाना—(फ़ा०) (सं० पु०) ख़ज़ाना, कोश।

फ़ोतेदार—(फ़ा०) (सं० पु०) ख़ज़ांची, कोषाध्यक्ष।

फ़ौक़—(अ०) (वि०) उच्च, श्रेष्ठ, उत्तम, उत्कृष्ट। (सं० पु०) उच्चता, श्रेष्ठता, बड़प्पन। फ़ौक़ ले जाना—बढ़ जाना।

फ़ौक़-उल्-भड़क—(अ०) (वि०) भड़कीला, चमकीला।

फ़ौक़ानी—(अ०) (वि०) ऊपर का, ऊपरी।

फ़ौक़ियत—(अ०) (सं० स्त्री०) श्रेष्ठता, उत्कृष्टता, बढ़कर होना।

फ़ौज—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) सेना, लश्कर; (२) झुंड।

फ़ौज-कशी—(अ०) (सं० स्त्री०) चढ़ाई, आक्रमण, धावा।

फ़ौजदार—(अ०) (सं० पु०) सेना-नायक।

फ़ौजदारी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) लड़ाई झगड़ा, मारपीट; (२) अपराधी को दंड देनेवाली अदालत।

फ़ौजी—(अ०) (वि०) सैनिक, सेना-सम्बन्धी।

फ़ौत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) मृत्यु, मौत; (२) मिट जाना, नष्ट हो जाना। (वि०) मृत, मरा हुआ।

फ़ौती—(अ०) (सं० स्त्री०) मृत्यु; मरा हुआ।

फ़ौती-नामा—(अ०) (सं० पु०) मृत्यु का सूचना-पत्र।

फ़ौती-पैदायश—(अ०) (सं० पु०) मृत्यु और जन्म। फ़ौती-पैदाइश का दफ़्तर—जहाँ मरे हुए और पैदा हुओं के नाम लिखे जायँ।

फ़ौर—(अ०) (सं० पु०) (१) वक्त, साअत, घड़ी; (२) शीघ्रता।

फ़ौरन—(अ०) (क्रि० वि०) जल्दी, झटपट, तुरन्त।

फ़ौलाद—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार का बहुत साफ़, कड़ा और जौहरदार लोहा।

फ़ौलादी—(फ़ा०) (वि०) फ़ौलाद का बना हुआ, बहुत कड़ा और मज़बूत। (सं० स्त्री०) भाले या बल्लम का दस्ता।

फ़ौव्वारा—(अ०) (सं० पु०) (१) पानी की छोटी-छोटी बूँदें, फुहार; (२) जहाँ पानी ऊपर की तरफ़ चढ़कर चारों ओर महीन महीन धारों में गिरे।

ब

बंग—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) भंग।

बंगी—(फ़ा०) (वि०) भंग पीनेवाला।

बअस—(अ०) (सं० पु०) (१) उठाना; (२) जगाना; (३) ज़िन्दा करना, पुनर्जीवित करना; (४) रवाना करना; (५) सेना जो रवाना की जाय; (६) क़यामत। बअस ओ नश्र—क़यामत का दिन क्योंकि उस दिन मुर्दे क़ब्रों से ज़िन्दा होकर निकलेंगे।

बईद—(अ०) (क्रि० वि०) दूर, फ़ासले पर, अलहदा। बईद-उल्-क़यास—(अ०) (वि०) क़यास से दूर, जो सोचा जाय उससे परे।

बईर—(अ०) (सं० पु०) ऊँट।

बऊस—(अ०) (सं० पु०) 'बअस' का बहुवचन।

ब-ऐनहू—(अ०) (क्रि० वि०) बिलकुल वैसा, ठीक उसी तरह।

ब-क़द्र—(फ़ा०) (क्रि० वि०) (१) इतना; (२) अनुसार।

बक़र—(अ०) (सं० स्त्री०) गाय।

बक़ल, बक़ला—(अ०) (सं० स्त्री०) तरकारी, सब्ज़ी, साग।

बक़ा—(अ०) (सं० स्त्री०) जीवन, ज़िंदगी; अस्तित्व, वजूद, क़याम, स्थिरता।

बक़ाया—(अ०) (सं० पु०) वह जो बाक़ी बचा हो, बचा-खुचा, शेष।

बकारत—(अ०) (सं० स्त्री०) कुँआरा-पन, कुमारावस्था, कौमार्य।

बक़ाल—(अ०) (सं० पु०) बनिया, दाल बेचनेवाला, नाज बेचनेवाला।

बकावल—(फ़ा०) (सं० पु०) ख़ानसामा, बावर्ची, बावर्ची-ख़ाने का दारोग़ा।

बकावली—(अ०) (सं० स्त्री०) एक क़िस्म की तश्तरी।

बक़ीया—(अ०) (वि०) बचा-बचाया; बचा-खुचा।

ब-क़ौल—(अ०) (क्रि० वि०) किसी के कथनानुसार, किसी की उक्ति के अनुसार।

बक़्क़ाल—(अ०) (सं० पु०) देखो 'बक़ाल'।

बक्तर—(फ़ा०) (सं० पु०) एक क़िस्म का लोहे की कड़ियों का बना हुआ जामा जो लड़ाई के वक्त पहनते हैं, कवच।

बक़र-ईद—(अ०) (सं० स्त्री०) मुसलमानों का एक मुख्य त्यौहार जिसमें जानवरों की बलिदान (क़ुर्बानी) होता है।

बख़रा—(फ़ा०) (सं० पु०) हिस्सा।

बख़िया—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) दुहरा टाँका, एक प्रकार की मज़बूत सिलाई जो पास-पास होती है; (२) जमा, पूँजी, हौसला, बिसात। बख़िया उधड़ना, बख़िया खुलना—(१) टाँके खुलना;

(२) क़लई खुलना, ऐब ज़ाहिर होना; ताक़त ख़तम हो जाना, पौरुष जाता रहना।

बख़िया-गर, बख़िया ज़न—(फ़ा०) (वि०) बख़िया करनेवाला।

बख़ील—(अ०) (सं० पु०) कंजूस, कृपण, तंग-दिल, संकीर्ण-हृदय।

बख़ीली—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) कंजूसी, कृपणता, संकीर्ण-हृदयता।

ब-ख़ूबी—(फ़ा०) (क्रि० वि०) अच्छी तरह से।

ब-ख़ैर—(फ़ा०) (क्रि० वि०) कुशल-पूर्वक, सकुशल, अच्छी तरह।

बख़ोर—(अ०) (सं० पु०) धूप, वह चीज़ें जिनके जलाने से सुगंध निकलती है।

बख़ोर-दान—(अ०) (सं० पु०) धूप-दानी।

बख़्त—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) भाग्य, नसीब, तक़दीर, क़िस्मत, प्रारब्ध; (२) सौभाग्य, ख़ुश-क़िस्मती। कहा०—बख़्त उड़ गये बुलंदी रह गई—ग़रीबी में अमीरों के ठाठ; दरिद्रता में डींग मारना।

बख़्त-बरगश्ता—(फ़ा०) (वि०) बद-नसीबी, भाग्य-हीनता।

बख़्तर—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार का ज़िरह (लोहे के तारों का कपड़ा) जो सिपाही लड़ाई के समय पहनते हैं, कवच।

बख़्तावर—(फ़ा०) (वि०) भाग्यवान्, ख़ुश-नसीब, ख़ुश-क़िस्मत।

बख़्तावरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सौभाग्यता, ख़ुश-क़िस्मती।

बख़्ती—(फ़ा०) (सं० पु०) ऊँट, बड़ा ऊँट, तेज़ रफ़्तार ऊँट। (शुद्ध रूप बुख़्ती)

बख़्श—(फ़ा०) (सं० पु० हिस्सा, भाग।

बख़्शना—(फ़ा०) (क्रि०) (१) देना, सवाब पहुँचाना; (२) क्षमा करना, छोड़ना; (३) मंत्र सिद्ध कराना। बख़्शो—माफ़ करो।

बख़्शवाना—(फ़ा०) (क्रि०) सवाब पहुँचवाना, माफ़ कराना, क्षमा कराना।

बख़्शायन्दा—(फ़ा०) (वि०) बख़्शिश करनेवाला, दाता।

बख़्शायश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पाप की क्षमा, निजात, गुनाह की माफ़ी।

बख़्शायश-गर—(फ़ा०) (वि०) क्षमा करनेवाला, ईश्वर।

बख़्शिश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) माफ़ी, (२) दान, भेंट, उपहार; इनाम।

बख़्शिश-नामा—(फ़ा०) (सं० पु०) दान-पत्र, हिबा-नामा।

बख़्शी—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) शाही ज़माने के फ़ौजी ओहदे का एक ख़िताब; सिपह-सालार; (२) वह कर्मचारी जो वेतन बाँटे और हिसाब रक्खे।

बख़्शी-ख़ाना—(फ़ा०) (सं० पु०) फ़ौज की तनख़्वाह बाँटने का दफ़्तर।

बख़्शी-गरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) सिपह-सालारी का पद; (२) वेतन बाँटने-वाले का पद।

बग-टुट—(हि०) (वि०) (१) सरपट, बे-तहाशा; (२) निहायत तेज़, बहुत तेज़।

बग़दी—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार का बढ़िया ऊँट।

बग़-बग़ा—(सं० पु०) (१) मनुष्य की ठोढ़ी के नीचे की तरफ़ जो बहुत-सा गोश्त होता है, ग़ब-ग़ब; (२) गर्दन के नीचे के वह बल जो प्रायः मोटाई के कारण पड़ जाते हैं।

बग़रा—(अ०) (सं० पु०) एक प्रकार का खाना जो चावल गोश्त से तैयार होता है। इस खाने का मूजिद बग़रा ख़ाँ बादशाह ख़्वारज़म था।

बग़ल—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) शाने के नीचे का हिस्सा, काँख; (२) पहलू, बाज़ू; (३) एक ओर, एक तरफ़, एक किनारे, अलहदा; (४) पास, क़रीब।

बग़ल गरम करना—पहलू में लेना, साथ सोना। बग़ल-गीर होना—लिपटना, मिलना। बग़लें झाँकना—जवाब न बन पड़ना, मुँह तकते रह जाना, हैरान होना, शरमिंदा होना। बग़ल बजाना—ख़ुशी मनाना, हँसी उड़ाना। बग़ल में ईमान दाबना—बे-ईमानी करना, ईमान छोड़कर कुछ कहना। बग़ल में दबाना—किसी चीज़ को लेकर छिपाना, क़ाबू में लेना। बग़ल में पालना—हिमायत में परवरिश करना। बग़ल में मुँह डालना—सिर नीचा करना। बग़ल में सोना—लिपट कर साथ सोना। बग़ल लगाना—किनारे करना, अलहदा करना। बग़ल हो जाना—रास्ते से हट जाना, किनारे हो जाना। कहा०—बग़ल में लड़का शहर में ढिंढोरा—चीज़ पास है और दुनिया भर में तलाश की जाती है।

बग़ल-गीर—(फ़ा०) (वि०) (१) लिपटना; (२) गले लगना।

बग़ल-बिलाई—(सं० स्त्री०) बग़ल का फोड़ा।

बग़ली—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) दर्ज़ी की की थैली, जिसमें सुई तागा होता है; (२) कुरते का वह हिस्सा जो बग़ल के आस-पास रहता है; (३) कुश्ती का एक दाँव; (४) एक डंडों का खेल। (वि०) बग़ल का। बग़ली घूँसा—पड़ौसी दुश्मन, आस्तीन का साँप। बग़ली दुश्मन—वह शख़्स जो पास रह कर दुश्मनी करे; दग़ा-बाज़ दोस्त; वह चुग़ल-ख़ोर जो हर वक़्त साथ रहे।

बग़ावत—(अ०) (सं० स्त्री०) सरकशी, विद्रोह, बलवा, ग़दर।

बग़ीचा—(फ़ा०) (सं० पु०) बाग़, वाटिका।

बग़ैर—(अ०) (क्रि० वि०) बिना, छोड़कर।

बज़ल—(अ०) (सं० पु०) बख़्शिश।

बज़्ला—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मीठी बातें।

बज़िर-क़तूना—(फ़ा०) (सं० पु०) ईसब गोल, अस्प-ग़ोल।

बजा—(फ़ा०) (वि०) सच, ठीक, दुरुस्त। बजा लाना—तामील करना, पूरा करना, अंजाम को पहुँचना।

बजा-आवरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) आज्ञा-पालन, तामीले हुक्म, कर्तव्य-पालन।

बज़ाज़—(अ०) (सं० पु०) कपड़ा बेचने-वाला। (शुद्ध रूप बज़्ज़ाज़)

बजाय—(फ़ा०) (क्रि० वि०) किसी की एवज़, बदले में, क़ायम-मुक़ाम। ब-जाय-ख़ुद—बिना किसी की मदद के, अपनी समझ में।

ब-जिन्स—(फ़ा०) (क्रि० वि०) ठीक वैसा ही, बिलकुल इसी तरह।

ब-जुज़—(फ़ा०) (अव्यय०) सिवा, अति-रिक्त, इसे छोड़कर।

ब-ज़ोर—(फ़ा०) (क्रि० वि०) ज़बरदस्ती, बल-पूर्वक।

बज़्ज़—(अ०) (सं० पु०) वस्त्र, कपड़े, सामान।

बज़्ज़ाज़—(अ०) (सं० पु०) कपड़ा बेचने-वाला।

बज़्ज़ाज़ा—(अ०) (सं० पु०) कपड़े का बाज़ार, वह बाज़ार जहाँ कपड़े की दूकानें हों।

बज़्ज़ाज़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) कपड़ा बेचने का पेशा या काम।

बज़्म—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) शराब की मजलिस, जश्न महफ़िल, सम्मिलन, सभा; (२) ख़ुशी की महफ़िल।

बज़्म-गाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वह जगह जहाँ मजलिस हो।

बज़्मे-सख़ुन—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मुशायरा, कवि-सम्मेलन।

बड़—(हि०) (सं० स्त्री०) झक, बकवास,

पागल का प्रलाप। बड़ मारना—डींग हाँकना, पागलों की तरह बकना।

बढ़ावा—(हि०) (सं० पु०) दम, फ़रेब, लालच, ख़ुशामद, झूठी तारीफ़। बढ़ावा देना—उकसाना, लालच देना, तारीफ़ करके किसी काम पर तत्पर करना।

बतंग—(फ़ा०) (वि०) बेज़ार, नाख़ुश; तंग।

बतंगड़—(हि०) (सं० पु०) व्यर्थ की लंबी-चौड़ी बात। बात का बतंगड़।

बत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) बतख़, राज हंस, एक पक्षी; (२) शराब रखने की सुराही जो बतख़ की शक्ल की होती है।

बतख़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) छोटी बतख़।

बतन—(अ०) (सं० पु०) (१) पेट, शिकम; (२) अन्दर, भीतर।

बताल—(अ०) (वि०) बड़ा मक्कार, झूठा।

बतोला—(सं० पु०) धोखा, फ़रेब, हँसी की बात। बतोले बनाना—चिकनी-चुपड़ी बातें बनाना, झाँसा देना।

बत्तख़—(अ०) (सं० स्त्री०) बतख़, देखो 'बत'।

बतर—(फ़ा०) (वि०) (बद-तर का रूप) निहायत बुरा, निकम्मा।

बत्ती—(अ०) (वि०) देर करनेवाला। बत्ती-उल्-हरकत—जिसकी गति मंद हो, मंद-गति।

बत्न—(अ०) (सं० पु०) पेट, गर्भ, (देखो 'बतन')।

बद—(फ़ा०) (वि०) बुरा, ख़राब, फसादी, निकम्मा।

बद-अंदेश—(फ़ा०) (वि०) बुरा चाहने वाला, बद-ख़्वाह, दुश्मन, विरोधी।

बद-अख़्तर—(फ़ा०) (वि०) बद-बख़्त, अभागा।

बद-अतवार—(फ़ा०) (वि०) बद-चलन, ख़राब ढंग का।

बद-अमली—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अंधेर; कु-प्रबन्ध, अराजकता।

बद-असल—(फ़ा०) (वि०) कमीना, पाजी, नीच।

बद-असलूब—(फ़ा०) (वि०) बे-ढंगा, बद-नुमा, भद्दा।

बद-अह्द—(फ़ा०) (वि०) दग़ा-बाज़, वचन भंग करनेवाला।

बद-आईन—(फ़ा०) (वि०) सिद्धान्तहीन, जो किसी उसूल का पाबंद न हो।

बद-आग़ाज़—(फ़ा०) (वि०) बद-असल, कमीना, नीच।

बद-आमाल—(फ़ा०) (वि०) बद-चलन, दुराचारी।

बद-आमाली—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बद-चलनी, सरकशी।

बद-आमोज़—(फ़ा०) (वि०) कुशिक्षित, जिसने ख़राब तालीम पाई हो।

बद-इख़लाक़—(फ़ा०) (वि०) अशिष्ट, असभ्य, बुरी आदतोंवाला।

बद-इख़लाक़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ना-शायस्तगी, असभ्यता।

बद-इन्तज़ामी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) कु-व्यवस्था, इन्तज़ाम की ख़राबी।

बद-एतक़ाद—(फ़ा०) (वि०) अविश्वासी, न माननेवाला।

बद-औसान—(फ़ा०) (वि०) बद हवास।

बद-क़दम—(फ़ा०) (वि०) मनहूस, जिसका आना मनहूस हो।

बद-किरदार—(फ़ा०) (वि०) बदकार, दुराचारी।

बद-कार—(फ़ा०) (वि०) दुराचारी, व्यभिचारी, बद-चलन।

बद-ख़त—(फ़ा०) (वि०) जिसका लिखना बुरा हो।

बद-ख़ुल्क़—(फ़ा०) (वि०) बुरे मिज़ाज का, बुरे-स्वभाव का।

बद्-ख़सलत बद्-ख़िसाल—(फ़ा०) (वि०) बद्-आदत वाला।

बद्-ख़ू—(फ़ा०) (वि०) बुरी आदत वाला, शरीर, रूखा।

बद्-ख़्वाबी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) भयानक स्वप्न; (२) वह बेचैनी जो नींद न आने से होती है।

बद्-ख़्वाह—(फ़ा०) (वि०) दुश्मन, बुरा चाहनेवाला।

बद्-ख़्वाही—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वैर, अदावत।

बद्-गुमान—(फ़ा०) (वि०) बुरा गुमान रखनेवाला, बद्-ज़न, सन्देह करनेवाला, शक्की।

बद् गो—(फ़ा०) (वि०) (१) बुरा कहने-वाला, बुरी बात कहनेवाला; (२) बुराई करनेवाला; चुग़ल ख़ोर।

बद्-गोश्त—(फ़ा०) (सं० पु०) वह फ़ाज़िल गोश्त जो किसी विकार के कारण उत्पन्न हो जाता है।

बद्-चलन—(फ़ा०) (वि०) दुराचारी।

बद्-चश्म – (फ़ा०) (वि०) बुरी नीयत से देखनेवाला; वह जो दूसरे का माल ताके।

बद्-ज़न—(फ़ा०) (वि०) बद्-गुमान, शक्की।

बद्-ज़नी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शुबहा, शक, सन्देह, बद्-गुमानी।

बद्-ज़बान—(फ़ा०) (वि०) गाली-गलौज बकनेवाला, गुस्ताख़। (सं० स्त्री०)—गाली-गलौज।

बद्-ज़ेहन—(फ़ा०) (वि०) कूढ़ मग़ज़, कुंद-ज़ेहन।

बद्ज़ात—(फ़ा०) (वि०) (१) ख़राब, शरीर, बुचा; (२) पाजी, दुष्ट, नीच, सिफ़ला।

बद्-ज़ाती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शरारत, नीचता।

बद्-जानवर—(फ़ा०) (सं० पु०) सूअर।

बद्-ज़ेब—(फ़ा०) (वि०) भद्दा, बद्नुमा, जो देखने में अच्छा न लगे।

बद्-तर—(फ़ा०) (वि०) अधिक बुरा, अदना दर्जे का।

बद्-तरीक़—(फ़ा०) (वि०) गुम-राह, पथ-भ्रष्ट।

बद्-तीनत—(फ़ा०) (वि०) बद्-मिज़ाज, बुरे स्वभाव का।

बद्-दयानत—(फ़ा०) (वि०) फ़रेबी, दग़ा-बाज़, बेईमान।

बद्-दिमाग़—(फ़ा०) (वि०) चिड़चिड़ा, बद्-मिज़ाज, ना-ख़ुश।

बद्-दिल—(फ़ा०) (वि०) नाराज़; अप्रसन्न, ना,ख़ुश, डरनेवाला।

बद्-दुआ—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शाप, श्राप।

बदन—(अ०) (सं० पु०) (१) शरीर, तन; (२) गुप्त अंग।

बद्-नज़र—(फ़ा०) (वि०) बुरी निगाह से देखनेवाला, बुरे इरादे से देखनेवाला।

बद्-नफ़्सी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बद्-ज़ाती, बुरी निगाह से देखना, कामेच्छा से देखना।

बद्-नसीब—(फ़ा०) (वि०) अभागा, कम-बख़्त, बद्-क़िस्मत।

बद्-नाम—(फ़ा०) (वि०) निंदित, रुसवा।

बद्-नामी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) निन्दा, अपवाद, बुराई। बद्-नामी का टोकरा—बदनामी का इलज़ाम।

बद्-नीयत—(फ़ा०) (वि०) लालची; नदीदा, नीयत का ख़राब।

बद्-नुमा—(फ़ा०) (वि०) बद् सूरत, भद्दा, कुरूप।

बद्-परहेज़—(फ़ा०) (वि०) बे-परवा, जो संयम-नियम से न रहे, असंयमी जो पथ्य पालन न करे।

बद्-परहेज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) असंयम, बेएहतयाती।

बद्-फ़ेल—(फ़ा०) (वि०) बदकार, ऐय्याश, बुरे काम करनेवाला, दुराचारी।

बद्फ़ेली—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बद-कारी, दुराचार।

बद्-बख़्त—(अ०) (वि०) अभागा, कमबख्त, दुखिया।

बद्-बर—(फ़ा०) (वि०) बद-ज़न, शक्की। बद्बर करना—बदज़न करना, शक में डालना।

बद्-बातिन—(फ़ा०) (वि०) नीयत का खराब, कीना रखने वाला, मन में द्वेष रखनेवाला।

बद्-बू—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दुर्गन्ध, बुरी बास।

बद्-मआश—(फ़ा०) (वि०) (१) बद-चलन, शरीर, लुच्चा, फिसादी, उठाईगीर; (२) वह जिसकी जीविका बुरे कामों की आमदनी से हो।

बद्-मज़गी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) बुरा स्वाद; (२) अन-बन, मन-मुटाव, बिगाड़; (३) बीमारी।

बद्-मज़ा—(फ़ा०) (वि०) (१) बद-ज़ायक़ा बुरे स्वादवाला; (२) बीमार, रुग्ण; (३) रंजीदा, नाराज़, क्रुद्ध।

बद्-मस्त—(फ़ा०) (वि०) मत्त, नशे में चूर, शरीर, कामुक।

बद्-माश—(फ़ा०) (वि०) देखो—'बद-मआश'।

बद्-मिज़ाज—(फ़ा०) (वि०) चिड़चिड़ा, झल्ला, गुस्सेवर।

बद्-मुआमिलगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) खोटापन; लेन-देन की सफ़ाई न रखना।

बद्-मुआमिला—(फ़ा०) (वि०) बेईमान, चालाक, खोटा, जिसका लेन-देन ठीक न हो।

बद्-रंग—(फ़ा०) (वि०) (१) रंग उड़ा हुआ; (२) ख़राब रंग का; (३) खोटा, नाक़िस।

बद्र—(फ़ा०) (वि०) बाहर, बाहर निकला हुआ। बद्र निकालना—हिसाब में ग़लती निकालना।

बरद्क़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) रहनुमा, मार्ग-दर्शक, क़ाफ़िले का निगहबान; (२) सह-यात्री, हम-सफ़र; (३) माल का बीजक।

बद्र-रौ—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मोरी, पर-नाला, पानी बाहर जाने का रास्ता।

बद्-राह—(फ़ा०) (वि०) बद-चलन, खोटा, कुमार्ग-गामी।

बद्-रिकाब—(फ़ा०) (सं० पु०) शरीर घोड़ा, वह घोड़ा जो सवार होते वक़्त शरारत करे।

बद्-रू—(फ़ा०) (वि०) भद्दा, बुरी शकल का।

बद्ल—(अ०) (सं० पु०) (१) एवज़, तबादला; एक के स्थान पर दूसरा रखना; (२) मुआवज़ा, बदले में देना; (३) परिवर्तन। बद्लना—(क्रि०) (१) पलटना, फिरना; (२) तबदील होना; (३) हटा कर दूसरी जगह रखना; (४) सूरत बद्लना; (५) पहले कहे के विरुद्ध कहना; (६) परिवर्तन होना; (७) गड-मड करना; (८) (आँख या रुख़ के साथ) बे-मुरव्वती करना।

बद्-लगाम—(फ़ा०) (वि०) (१) मुह-ज़ोर घोड़ा; (२) बद-ज़बान, मुँह-फट।

बद्ला—(अ०) (सं० पु०) (१) एवज़, मुआवज़ा; (२) इनाम, सिला, फल, उपहार, (३) बख़्शिश; (४) उजरत, महनताना, पुरस्कार; (५) हर्जा; दंड; (६) परिणाम; फल, प्रतीकार। बद्ले—एवज़, बिल-एवज़। बद्ला उतरना—बदला पाना, एवज़ पाना। बद्ला लेना—एवज़ लेना; बदी के एवज़ बदी करना।

बद्लाई—(सं० स्त्री०) तबादले की क़ीमत; वह रुपया जो मुआवज़े में मिले।

बद्-लिहाज़—(फ़ा०) (वि०) बे-शर्म, गुस्ताख़, अशिष्ट।

बद्ली—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) तबदला, एक के स्थान पर दूसरा रखना; (२) एक स्थान से दूसरे स्थान पर नियुक्त होना।

बद्-सरिश्त—(अ०) (वि०) ख़राब तबीयत का, बद्-नीयत।

बद्-सलूकी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ख़राब बर्ताव, अनुचित व्यवहार।

बद्-सीरत—(फ़ा०) (वि०) बुरे स्वभाव का, ख़राब आदत का।

बद्-सूरत—(फ़ा०) (वि०) कुरूप, ख़राब सूरतवाला; बद्-शक्ल।

ब-दस्त—(फ़ा०) (क्रि० वि०) मारफ़त, हस्ते, हाथ से।

ब-दस्तूर—(फ़ा०) (क्रि० वि०) नियमानुसार, क्रम से, क़ायदे के मुताबिक़।

बद्-हज़मी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) हज़म न होना, अपच, अनपच।

बद्-हवास—(फ़ा०) (वि०) परेशान, व्याकुल, घबराया हुआ, विकल।

बद्-हाल—(फ़ा०) (वि०) बद्-बख़्त, दुर्दशा-ग्रस्त।

बदायूँ के लल्ल—बदायूँ उत्तर प्रदेश का एक शहर है, जहाँ के आदमी भोले-भाले होते हैं; अहमक़, मूर्ख, भोला।

बदी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) बुराई, दोष, ख़राबी; (२) अहित, बद्-ख़्वाही, पीठ पीछे बुरा कहना। बदी करना—बुराई करना, नुक़सान पहुँचाना, चुग़ली खाना। बदी लाना—ऐब करना, शरारत करना।

बदीअ—(अ०) (वि०) अनोखा, आश्चर्य-जनक, नया, नव-निर्मित।

बदीह—(अ०) (वि०) ज़ाहिर, ठीक, स्पष्ट।

बदीह-गोई—(अ०) (सं० स्त्री०) बग़ैर फ़िक्र के कहना।

बदीही—(अ०) (वि०) (१) ज़ाहिर, स्पष्ट, निश्चयात्मक, प्रकट; (२) वह बात जो साफ़ अक़्ल में आवे, जिसमें ग़ौर और फ़िक्र की ज़रूरत न हो; जिसमें प्रमाण की आवश्यकता न हो।

बदू—(अ०) (सं० पु०) ज़ाहिर होना, प्रकट होना। (शुद्ध रूप बदूव)

ब-दौलत—(फ़ा०) (क्रि० वि०) कृपा से, कारण से।

बद्दू—(फ़ा०) (सं० पु०) अरब का देहाती, गँवार। (वि०)—बद्-नाम, बद्-चलन। बद्दू करना—बदनाम करना, नक्कू बनाना।

बद्र—(अ०) (सं० पु०) (१) एक कुँए का नाम; (२) पूर्ण चन्द्र।

बद्रका—(फ़ा०) (सं० पु०) मार्ग-दर्शक, रक्षक।

बनफ़शा—(फ़ा०) (सं० पु०) एक बूटी का नाम जो दवा के काम में आती है।

बनात—(अ०) (सं० स्त्री०) बेटियाँ, गुड़ियाँ (बिन्त का बहुवचन)।

बनान—(फ़ा०) (सं० पु०) उँगलियों के सिरे। (शुद्ध रूप बुनान)

बनाम—(फ़ा०) (क्रि० वि०) मुक़ाबिले में, विरुद्ध, नाम से।

ब-निस्बत—(फ़ा०) (क्रि० वि०) मुक़ाबिले में, अपेक्षा।

बनो—(अ०) (सं० पु०) लड़के।

बन्द—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) बाँधने की चीज़; (२) बन्दिश, कपड़े की धज्जी, पट्टी; (३) डोरा, सिला हुआ फ़ीता; (४) पुश्ता, बांध, मेंड़; (५) जोड़, बदन का जोड़, अंग (६) क़ैद, हवालात; (७) फ़र्द, फ़हरिस्त; (८) ज़ंजीर का हलक़ा; (९) गिरह, ज़ंजीर; (१०) काग़ज़ का टुकड़ा, पुर्ज़ा, ताव, वर्क़; (११) जादू। (वि०) (१) रुका हुआ, बँधा हुआ (पानी); (२) चुप, गिरा हुआ

तंग; (३) मौक़ूफ़; (४) भिड़ा हुआ, कुंडी लगी हुई।

बन्द-ए-ज़र—(फ़ा०) (वि०) रुपये का ग़ुलाम, लालची।

बन्द-ए-दरगाह—(फ़ा०) (सं० पु०) ख़ाकसार, दास (बोलनेवाला अपने लिए दीनता से कहता है)।

बन्द-ए-मुख़लिस—(फ़ा०) (सं० पु०) सच्चा बन्दा।

बन्द-ख़ाना—(फ़ा०) (सं० पु०) क़ैद-ख़ाना।

बन्द-गान—(फ़ा०) (सं० पु०) 'बन्दा' का बहुवचन। **बन्दगान-आली**—हुज़ूर।

बन्दगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) पूजा, ईश्वर-भजन; (२) ग़ुलामी, सेवा; (३) प्रणाम, सलाम। **बन्दगी बजा लाना**—ताबेदारी करना, ख़िदमत करना।

बन्दर—(फ़ा०) (सं० पु०) बन्दर-गाह; गुज़र-गाह; वह शहर या तिजारत की मंडी जो समुद्र के किनारे हो।

बन्दर-गाह—(फ़ा०) (सं० पु०) वह स्थान जो समुद्र-तट पर जहाज़ों के ठहरने के वास्ते होता है।

बन्दा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) ग़ुलाम, नौकर, दास; (२) इनसान; मनुष्य।

बन्दा-ज़ादा—(फ़ा०) (सं० पु०) ग़ुलाम का बेटा (दीनता से अपने बेटे के लिए कहते हैं)।

बन्दा-नवाज़—(फ़ा०) (सं० पु०) मालिक, हाकिम, ग़ुलामों को इज़्ज़त देनेवाला; बन्दा-परवर।

बन्दा-नवाज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मेहरबानी, कृपा, इनायत।

बन्दा-परवर—(फ़ा०) (वि०) (१) ग़ुलामों का पालनेवाला; (२) जनाब, हज़रत (सम्बोधन)।

बन्दिश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) बांधना, बंधन; गाँठ; गिरह; (२) इबारत की तरकीब, वाक्य की रचना; (३) उपाय, तदबीर, पेश-बन्दी, तरकीब; (४) इलज़ाम, तुहमत; (५) साज़िश, पालिसी; (६) रोक-टोक, मनाही; (७) ख़याल, फ़िक्र; (८) बनावट, साख़्त, गढ़त।

बन्दी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) क़ैद, हिरासत मुमानियत, रोक-टोक; (२) दासी, लौंडी, चेरी; (३) बाँधे जाने की क्रिया (यौगिक शब्दों के अन्त में)।

बन्दी-ख़ाना—(फ़ा०) (सं० पु०) जेल, कारागार।

बन्दूक़—(अ०) (सं० स्त्री०) एक प्रसिद्ध अस्त्र।

बन्दूक़ची—(अ०) (वि०) बंदूक़ चलानेवाला।

बन्दोबस्त—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) प्रबंध, इन्तज़ाम, व्यवस्था; (२) ज़मीन की हद-बन्दी, माल-गुज़ारी और उसके देने की ज़िम्मेदारी का इन्तज़ाम जो गवर्नमेन्ट करती है।

बन्दोबस्त-इस्तमरारी—स्थायी या दायमी बंदोबस्त जिसमें मियाद गुज़रने पर माल-गुज़ारी बढ़ाई नहीं जाती।

बपा—(फ़ा०) (वि०) क़ायम, छाई हुई।

बबर—(अ०) (सं० पु०) शेर, सिंह।

बर्बाद—(फ़ा०) (वि०) बरबाद, वीरान।

ब-मंज़िला—(फ़ा०) (क्रि० वि०) पद पर, स्थान पर।

ब-मूजिब—(फ़ा०) (क्रि० वि०) अनुसार, मुताबिक।

बयाज़—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) सफ़ेदी; (२) सादा किताब या कापी जिसमें कुछ निबन्ध या चुने हुए पद्य लिखे रहते हैं; (३) रमल की सोलह शक्लों में से एक का नाम; (४) वह किताब जिसमें याद-दाश्त हिसाब वग़ैरह लिखते हैं, पाकट-बुक।

बयान—(अ०) (सं० पु०) (१) वर्णन, चर्चा, ज़िक्र; (२) भाषण, बात, गुफ़्तगू;

(३) गवाहों का इज़हार, शहादत, गवाही, विवरण; (४) विषय, मज़मून; (५) अध्याय; (६) मामला, मुक़दमा, भूमिका; (७) कैफ़ियत, हालत, ख़बर।

बयान-तहरीरी—(१) लिखा हुआ बयान; (२) वह लिखित बयान जो मुद्दालह अर्ज़ी-दावे के जवाब में दाख़िल करता है, जवाब-दावा।

बयाना—(अ०) (सं० पु०) साई, पेशगी। (शुद्ध रूप बैयाना)।

बयावान—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) ऊसर, वीरान, या उजाड़ जगह; (२) जंगल, सहरा।

बर—(फ़ा०) (अव्यय) ऊपर, फल, बाहर (सं० पु०) (१) जिस्म, तन, बदन, सीना; (२) बग़ल, किनार; (३) पहलू, (४) चौड़ा-पन; (५) जवान औरत।

बर-अंगेख़्ता—(फ़ा०) (वि०) ग़ुस्से में भरा हुआ, क्रुद्ध।

बर-अक्स—(फ़ा०) (क्रि० वि०) ख़िलाफ़, विपरीत, उलटा।

बर-आमद—(फ़ा०) (वि०) ऊपर आया हुआ, निकला हुआ।

बर-आवुर्द—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) गोशवारा, बिल, तनख़्वाह का काग़ज़; (२) तख़मीने की फ़र्द, जाँच। बर-आवुर्द करना—निकालना, बर-आमद करना। बर-आवुर्द बनाना—तख़मीना बनाना।

बर-आवुर्दन—(फ़ा०) (सं० पु०) बाहर निकालना, पूरा करना।

बर-आवुर्दा—(फ़ा०) (वि०) वह रक़म जो एक मद से निकाल कर दूसरी मद में डाली जाय।

बरकंदाज़—(अ०) (सं० पु०) बंदूक़ची, तोड़ेदार बन्दूक़ रखनेवाला, अर्दली, संतरी।

बरक—(फ़ा०) (सं० पु०) एक क़िस्म का ऊनी कपड़ा जो ऊँट के बालों से बुना जाता है, (२) पहिनने का एक कपड़ा।

बरकत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) बहुतायत, ज़्यादती, बाहुल्य; (२) सौभाग्य, उन्नति, रौनक़, वैभव; (३) लाभ, फ़ायदा; (४) समाप्त हो जाना, ख़तम हो जाना, सर्फ़ हो गया; (५) एक की संख्या; (६) धन-दौलत; (७) प्रसाद, कृपा, अनुग्रह। बरकत होना—(१) दराज़ होना, अधिक होना, (२) तमाम होना, ख़तम होना।

बर-क़रार—(फ़ा०) (वि०) (१) मौजूद, ज़िन्दा, उपस्थित, सही-सालिम, वर्तमान; (२) मुस्तक़िल, स्थायी, क़ायम, दृढ़।

बरकात—(अ०) (सं० स्त्री०) 'बरकत' का बहुवचन।

बरख़ास्त—(फ़ा०) (वि०) बंद, ख़तम, बरतरफ़, नौकरी से अलग।

बरख़ास्तगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मौक़ूफ़ी, बरतरफ़ी, रुख़सत, बिदाई।

बरख़ास्ता—(फ़ा०) (वि०) मौक़ूफ़, रंजीदा, उदास।

बरख़ास्ता-ख़ातिर—(फ़ा०) (वि०) रंजीदा, खिन्न-मन।

बरख़ास्ता-ख़ातिरी, बरख़ास्तादिली—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दिल की रंजिश, मन की खिन्नता।

बरख़िलाफ़—(फ़ा०) बर-अक्स, उलटा, विरुद्ध, नामाफ़िक़।

बरख़ुरदार—(फ़ा०) (वि०) (१) भाग्य-वान्, सर्व-संपन्न, (२) जीते रहो (आशीर्वाद) (सं० पु०) बेटा, बेटी।

बर-गश्तगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बग़ावत, फिरना।

बर-गश्ता—(फ़ा०) (वि०) (१) फिरा हुआ, बिलटा हुआ; (२) सरकश, विद्रोही, बाग़ी।

बर-गुज़ीदा—(फ़ा०) (वि०) पसंद किया हुआ, चुना हुआ, स्वीकृत किया हुआ।

बरज़ख़—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) उस दशा का नाम जिसमें रूहें (जीव) मरने के बाद से क़यामत होने तक रहेंगी; मरने से क़यामत तक का ज़माना; (२) धज, अनोखी सूरत; (३) ख़याली सूरत, चेष्टा।

बर-ज़बान—(फ़ा०) (वि०) हिफ़्ज़, कंठस्थ, ख़ूब याद।

बर-जस्ता—(फ़ा०) (वि०) (१) बे सोचे कहा हुआ, बे-साख़्ता या बे फ़िक्र किये हुए कहा हुआ; (२) बुलंद, पसंद, समुचित, ठीक, उपयुक्त।

बर-जा—(फ़ा०) (वि०) बजा, साबित, ठीक।

बर-ज़िद—(फ़ा०) (वि०) ज़िद्दी, विरोधी।

बर-ज़िदी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ज़िद, हठ, तकरार, अड़।

बर-तक़दीर—बिल फ़र्ज़, मान लिया जाय।

बर-तबक़—(फ़ा०) अनुसार, मुताबिक़, बमूजिब।

बर-तर—(फ़ा०) (वि०) (१) ज़्यादा बुलंद, बाला, अत्युच्च, श्रेष्ठ; (२) बढ़कर।

बर-तरफ़—(फ़ा०) (वि०) (१) बरख़ास्त, मौक़ूफ़; (२) दूर, अलहदा, बे-ताल्लुक़; (३) बाला-ए-ताक़, नाम न लो।

बर-तरफ़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मौक़ूफ़ी, अलहदगी।

बर-तरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बुज़ुर्गी, बड़ाई, श्रेष्ठता।

बरद—(अ०) (सं० पु०) (१) जाड़े का मौसम, सर्दी; (२) (वि०) सर्द, ठंडा।

बरदे-इतराफ़—मौत से पहले हाथ-पावँ ठंडे पड़ जाना।

बरदा—(तु०) (सं० पु०) बन्दा, दास, ग़ुलाम।

बरदा-फ़रोश—(फ़ा०) (वि०) लौंडी-ग़ुलाम बेचनेवाला।

बरदा-फ़रोशी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) लौंडी ग़ुलाम बेचना।

बरदार—(फ़ा०) (वि०) (१) उठाकर ले चलनेवाला; (२) बुलंद, ऊँची; (३) चौड़ा कपड़ा।

बरदाश्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) सब्र, ताब, धैर्य, सहनशीलता; (२) जानवरों की ख़बर-गीरी, निगरानी; (३) उचापत, उधार सौदा लेना, सौदा उधार देना, लेना।

बरदाश्त-ख़ाना—(फ़ा०) (सं० पु०) गोदाम, वह मकान जिसमें माल-असबाब रखें।

बरदाश्ता-ख़ातिर, बरदाश्ता-दिल—(फ़ा०) (वि०) घबराया हुआ, उदास, उचाट, बेदिल, दुःखी, रंजीदा।

बर-पा—(फ़ा०) (वि०) क़ायम, दृढ़। **बरपा करना**—(१) क़ायम करना, उठाना, मचाना, फैलाना, खड़ा करना; (२) आबाद करना, ख़ुश करना। **बरपा रहना, बरपा होना**—(१) उठना, पैदा होना, मचना; (२) फलना-फूलना।

बरबाद—(फ़ा०) (वि०) उजाड़, तबाह, नष्ट।

बरबादी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) नाश, तबाही, ख़राबी।

बर-मला—(फ़ा०) (क्रि० वि०) खुल्लम-खुल्ला, दिन-दहाड़े, अलानिया, सब के सामने, खुले-ख़ज़ाने। **बर-मला सुनाना**—साफ़-साफ़ कहना, अलानिया गालियाँ देना। **बर-मला होना**—तकरार होना, अलानिया लड़ाई होना।

बर-महल—(फ़ा०) (वि०) उचित, उपयुक्त, मुनासिब, ठीक समय पर।

बरस—(अ०) (सं० पु०) बदन पर सफ़ेद दाग़ होना, सफ़ेद कोढ़, श्वित्र।

बरसरेकार—(फ़ा०) काम में, नौकरी में।

बर-सरेख़ता—ख़तावार, दोषी, मुलज़िम। **बर-सरे हिसाब**—सख़्ती करने पर आमादा।

बरसाम—(फ़ा०) (सं० पु०) सीने (छाती) के रोग का नाम।

बर-हक़—(फ़ा०) (वि०) (१) सच, ठीक, दुरुस्त, बजा, बेशक; (२) अनिवार्य, लाज़मी, होतव्य, भवितव्य।

बरहनगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) नंगा-पन, लुच्चा-पन।

बरहना—(फ़ा०) (वि०) नंगा, खुला, वस्त्र हीन, उघाड़ा। **बरहना पीर का बालका**—वह मनुष्य जो नंगा-धड़ंगा फिरता हो।

बरहना-पा—(फ़ा०) (वि०) नंगे पावँ, बग़ैर जूता पहने।

बरहना-सर—(फ़ा०) (वि०) बग़ैर टोपी दिये, नंगे सर।

बरहम—(फ़ा०) (वि०) परेशान, नाराज़, क्रुद्ध, ख़फ़ा, तित्तर-बित्तर। **बरहम-ओ-दरहम**—तित्तर-बित्तर, परेशान, ख़राब।

बरहमी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अबतरी, परेशानी, क्रोध की दशा।

बराइत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) छुटकारा, बचाव, सफ़ाई; (२) जुर्म से बरी होना, छूटना।

बराज़—(अ०) (सं० पु०) पाख़ाना, मैला (देखो—'बिराज़') (शुद्ध रूप बिराज़)।

बरात—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) फ़रमान, आज्ञा-पत्र; (२) वेतन, तनख़्वाह, (३) हिस्सा।

बरादर—(फ़ा०) (सं० पु०) भाई, रिश्तेदार, स्वजाति, बिरादर।

बरादराना—(फ़ा०) (वि०) आपस का, भाई के समान।

बराबर—(फ़ा०) (वि०) (१) समान-शील, समकक्ष; (२) समान, मानिन्द; (३) समतल, हमवार, सीधा; (४) एकसा; (५) बे-रोक-टोक; (६) होशयार; (७) तत्काल, फ़ौरन; (८) पास, समीप; (९) साथ-साथ; (१०) सिलसिलेवार, क्रमानुगत; (११) बरबाद, नष्ट, समाप्त, ख़तम, (१२) भरा हुआ, लबरेज़; (१३) भूखा हुआ, निष्फल; (१४) सदा, हमेशा; (१५) बे-बाक़; (१६) लगातार, निरन्तर, सरासर; (१७) तरह, प्रकार; (१८) बेशक, ज़रूर, अवश्य।

बराबरी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) समानता, बराबर होना; (२) मुक़ाबिला, सामना, विरोध।

बरामद—(फ़ा०) (वि०) ऊपर, सामने से आया हुआ, ढूँढ कर बाहर निकाला हुआ। (सं० स्त्री०) नदी के हट जाने से निकली हुई ज़मीन।

बरामदा—(फ़ा०) (सं० पु०) दालान, बिना किवाड़ों का कमरा।

बराय—(फ़ा०) (अव्यय) वास्ते, लिए।

बराय-ख़ुदा—(फ़ा०) ख़ुदा के वास्ते, ईश्वर के लिये।

बराय-नाम—(फ़ा०) नाम के लिए, नाम मात्र को, फ़र्ज़ी; सिर्फ़ दिखाने के लिए।

बराया—(अ०) (सं० स्त्री०) सृष्टि, प्राणी-मात्र।

बरार—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) कर, महसूल; (२) ऊपर या सामने लाने की क्रिया, पूरा करना। (वि०) लानेवाला, लाया हुआ।

बरारी—(अ०) (सं० पु०) जंगल।

बरिन्दा—(फ़ा०) (सं० पु०) लानेवाला, वाहक।

बरीं—(फ़ा०) (वि०) आला, बुलंद, ऊपर का।

बरी—(अ०) (वि०) (१) मुक्त, छुटकारा पाया हुआ, आज़ाद, बे-जुर्म, सुबुक-दोश; (२) बे-ऐब, बे-क़सूर।

बरी-उल्-ज़िम्मा—(अ०) (वि०) ज़िम्मेदारी से अलग, ग़ैर-ज़िम्मेदार।

बरीद—(अ०) (सं० पु०) पत्र-वाहक, दूत।

बरीयत—(अ०) (सं० स्त्री०) छुटकारा, रिहाई।

बरुमंद— फ़ा०) (वि०) लाभ उठानेवाला, फल खानेवाला, फल लानेवाला।

बरेशम—(फ़ा०) (सं० पु०) आब रेशम, रेशम का कोया।

बरैय्यत—(अ०) (सं० स्त्री०) रिहाई, छुटकारा, माफ़ी, आज़ादी, सफ़ाई, पाक होना।

बर्क़—(अ०) (सं० स्त्री०) बिजली, दामिनी। (वि०) (१) चतुर, चालाक, होशयार, तेज़; (२) साफ़, चमकीला।

बर्क़-दम—(फ़ा०) (वि०) (१) धारवाली चीज़ की तेज़ी; (२) तेज़ तलवार; (३) पैना, बहुत तेज़, चालाक।

बर्क़-निगाह—(फ़ा०) (वि०) चंचल, शोख़, तेज़।

बर्क़-वश—(फ़ा०) (वि०) चंचल, शोख़, चमकीला।

बर्ग—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) पत्ता, पत्र, पत्ती; (२) सामान, सामग्री। बर्ग-ओ-नवा—सामान, खाने का सामान।

बर्फ़—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) पाला; (२) जमा हुआ दूध, शरबत या पानी। (वि०) —बहुत ठंडा, बहुत सफ़ेद।

बर्फ़-ज़दी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वह नुक़सान जो बर्फ़ गिरने से खेती को पहुँचता है।

बर्फ़-परवरदा—(फ़ा०) (वि०) बर्फ़ में सर्द या ठंडा किया हुआ।

बर्फ़ानी—(फ़ा०) (वि०) बर्फ़ का, जिसमें बर्फ़ हो, बहुत ठंडा।

बर्फ़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई।

बर्र—(अ०) (सं० पु०) (१) ख़ुश्की, स्थल, ज़मीन; (२) जंगल; (३) ख़ुदा, ईश्वर; (४) बहुत भला, बड़ा नेक, कृपालु; (५) माता पिता का आज्ञाकारी।

बर्र-ए-आज़म—(अ०) (सं० पु०) ज़मीन का वह बहुत बड़ा भाग जो पानी से अलग है और जिसमें बहुत से देश शामिल हैं।

बर्रह—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) बकरी या भेड़ का छोटा बच्चा; (२) मेष राशि।

बर्राक़—(अ०) (वि०) (१) चमकीला; (२) चालाक, होशयार; (३) बहुत सफ़ेद; (४) तेज़-रफ़्तार, शीघ्र-गामी।

बर्राक़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) चमक-दमक।

बर्री—(अ०) (वि०) (१) जंगली; (२) स्थल का, ख़ुश्की का।

बर्स—(अ०) (सं० पु०) सफ़ेद कोढ़, श्वित्र।

बलग़म—(अ०) (सं० पु०) कफ़, खकार।

बलन्द—(फ़ा०) (वि०) ऊँचा, उच्च, श्रेष्ठ। (देखो-'बुलन्द')।

बलन्दी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ऊँचाई, उच्चता, श्रेष्ठता, अभिमान।

बलवा—(अ०) (सं० पु०) (१) बग़ावत, विद्रोह, ग़दर; (२) भीड़, हुजूम, जमघट; (३) शोर, हल्ला, झगड़ा, (४) हलचल, खलबली।

बलवाई—(अ०) (सं० पु०) विद्रोह करनेवाला, बाग़ी।

बलसां, बलसान—(अ०) (सं० पु०) मिस्र के एक प्रसिद्ध पेड़ का नाम जिसके पत्तों में तेल निकलता है।

बला—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) आफ़त, मुसीबत, विपत्ति; (२) दुःख, कष्ट; (३) सख्ती, संकट; (४) डायन, चुड़ैल; (५) रोग, व्याधि, आसेब; (६) जूता, पा-पोश। (वि०)—(१) चुस्त, चालाक, तेज़; (२) भयानक, भीषण, ख़ौफ़नाक। बला का—हद से ज़्यादा, ग़ज़ब का।

बला-ए-नागहानी—(फ़ा०) (वि०) अचानक आजानेवाली मुसीबत।

बलाग़—(अ०) (सं० पु०) हद पर पहुँचाना, पराकाष्ठा।

बलाग़त—(अ०) (सं० स्त्री०) ख़ुश गुफ़्तारी, भाषण-चातुर्य।

बला-गरदां—(फ़ा०) (वि०) (१) वह शख्स जो दूसरे की बला अपने सर ले; (२) सदक़े होनेवाला, क़ुर्बान होनेवाला।

बला-गरदी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) क़ुर्बान होना।

बलादत—(अ०) (सं० स्त्री०) कुन्द-ज़हनी, मूढ़ता, बेवक़ूफ़ी।

बला-नसीब—(फ़ा०) (वि०) बद-क़िस्मत, भाग्य-हीन।

बला-नोश—(फ़ा०) (वि०) (१) जो मिले वह खा-पी जाने वाला; (२) बहुत शराब पीनेवाला।

बलीग़—(अ०) (सं० पु०) (१) कामिल, पहुँचा हुआ; (२) तेज़-ज़बान, वाचाल; (३) ख़ुश-बयान, सुवक्ता।

बलीद—(अ०) (वि०) कुन्दज़हन, कूढ़, कम-समझ, बुरा।

बलूत—(अ०) (सं० पु०) एक प्रकार का वृक्ष जो पहाड़ों में पाया जाता है और जिसकी छाल चमड़ा रंगने में काम आती है।

बले—(फ़ा०) (अव्यय) हाँ, ठीक है, दुरुस्त है।

बल्कि, बल्के—(फ़ा० (अव्यय) फिर भी, अलावा, सिवा, शायद।

बल्ग़म—(अ०) (सं० स्त्री०) कफ़—(देखो 'बलग़म')।

बल्ग़मी—(अ०) (वि०) जिसकी कफ़ प्रकृति हो।

बल्दा—(अ०) (सं० पु०) क़स्बा, बस्ती।

बल्लिया—(अ०) (सं० स्त्री०) बला, दुःख, आज़माइश, परीक्षा।

बवासीर—(अ०) (सं० स्त्री०) एक रोग का नाम, अर्श, मस्से।

बशर—(अ०) (सं० पु०) मनुष्य, आदमी, इनसान।

बशरा—(अ०) (सं० पु०) (१) चेहरा-मुहरा, मुख; (२) रंग-रूप, आकृति।

ब-शर्ते कि—(फ़ा०) (क्रि० वि०) शर्त यह है कि, अगर ऐसा हुआ तो।

बशारत—(अ०) (सं० पु०) शुभ-सन्देश, ख़ुश-ख़बरी।

बशाशत—(अ०) (सं० स्त्री०) प्रसन्नता, हर्ष, ख़ुशी, फ़रहत।

बशीर—(अ०) (वि०) (१) ख़ुश-ख़बरी सुनानेवाला, शुभ-सन्देह लानेवाला; (२) सुन्दर, ख़ूबसूरत; (३) (सं० पु०) मोहम्मद साहब का नाम।

बश्शाश—(अ०) (वि०) हँस मुख, प्रसन्न, ख़ुश।

बस—(फ़ा०) (वि०) काफ़ी, पर्याप्त, भरपूर। (अव्यय) काफ़ी, अलम्, सिर्फ़, केवल, फ़क़त।

बसबासा—(अ०) (सं० स्त्री०) जावित्री।

बसर—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) गुज़र, जीवन-यापन। बसर आना—ग़ालिब आना। बसर होना—गुज़र होना, तमाम होना, अन्त को पहुँचाना।

बसर-औक़ात—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) गुज़र-बसर, गुज़र-औक़ात।

बसा—(फ़ा०) (वि०) बहुत।

बसा-औक़ात—(फ़ा०) बहुत, प्रायः, बारहा।

बसल—(अ०) (सं० पु०) पियाज़।

बसारत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) आँख की रोशनी, बीनाई, देखने की शक्ति; (२) नज़र, पहचान, शनाख़्त, समझ।

बसालत—(अ०) (सं० स्त्री०) दिलेरी,

बसीत—(अ०) (वि०) (१) बिछा हुआ, फैला हुआ; (२) लंबा-चौड़ा।

बसीरत—(अ०) (सं० स्त्री०) दानाई, समझ, ख़याल, होशयारी।

बस्त—(अ०) (सं० पु०) फैलाव, कुशादगी, विस्तार।

बस्तगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) क़ब्ज़; (२) बंद होना; (३) (दिल के साथ) जी लगना, मनोरंजन होना, तफ़रीह।

बस्तनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) ग़िलाफ़, सारंगी की पोशिश; (२) वह कपड़ा जिसमें कोई चीज़ बाँध कर रक्खें।

बस्ता—(फ़ा०) (सं० पु०) वह कपड़ा जिसमें काग़ज़-पत्र बाँधते हैं। (वि०)—जमा हुआ, बंद, बंधा हुआ। दस्त-बस्ता हाथ जोड़कर।

बहबूद, बहबूदी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) भलाई, हित, बहतरी; उपकार, किसी के हक़ में अच्छी बात होना।

बहम—(फ़ा०) (क्रि० वि०) आपस में, साथ, एक दूसरे के साथ। बहम पहुँचाना—हासिल होना, प्राप्त होना, मुहैया होना।

बहमन—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) फ़ारसी ग्यारहवें महीने का नाम; (२) एक बूटी का नाम।

बहर—(फ़ा०) (क्रि० वि०) वास्ते, लिए। (सं० स्त्री०) शैर का वज़न। (सं० पु०) समुद्र, बड़ा दरिया। बहरे ख़ुदा—ख़ुदा के वास्ते, ईश्वर के लिए। बहर-ओ बर—तरी व ख़ुश्की। बहर-कैफ़—चाहे जिस तरह, किसी हालत में।

बहर-रवाँ—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) किश्ती, नाव।

बहर-हाल—(फ़ा०) (क्रि० वि०) हर हालत में, हर सूरत में।

बहरा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) लाभ, फ़ायदा; (२) भाग्य, क़िस्मत, नसीब, हौसला।

बहरा-मंद—(फ़ा०) (वि०) फ़ायदा उठानेवाला, भाग्यवान्, ख़ुश-नसीब, प्रसन्न।

बहराम—(फ़ा०) (सं० पु०) मंगल ग्रह।

बहरा-याब, बहरा-वर—(फ़ा०) (वि०) देखो—'बहरा-मंद'।

बहरी—(अ०) (वि०) समुद्री, समुद्र-सम्बन्धी।

बहला—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) रुपये-पैसे का थैला (२) चमड़े का दस्ताना जो शिकारी हाथ में पहनते हैं।

बहस—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) शास्त्रार्थ, वाद-विवाद, मुबाहसा, (२) झगड़ा, प्रश्नोत्तर, दलील, हुज्जत; (३) अध्याय, बाब; (४) मतलब। बहस आपड़ना—मुक़ाबिला होना, तकरार हो जाना। बहस पड़ना—मुक़ाबिला होना, तकरार होना।

बहा—(फ़ा०) (सं० पु०) मूल्य, क़ीमत, दाम।

बहादुर—(फ़ा०) (सं० पु०) वीर, योद्धा, सैनिक। (वि०)—दिलेर, बलवान्, जवाँ-मर्द।

बहादुराना—(फ़ा०) (वि०) दिलेरी से, बहादुरी से।

बहादुरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वीरता, दिलेरी।

बहाना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) उज्र, हीला, दिखावा, जाहिर-दारी, दम, फ़रेब; (२) वसीला, सबब, निमित्त, कारण; (३) ढब, मौक़ा, टालमटूल, हीला-हवाला।

बहाना-ख़ोर, बहानाजू—(फ़ा०) (वि०) हीला, ढूंढनेवाला, हीला-गर, मक्कार।

बहाना-तलब—(फ़ा०) (वि०) हीला ढूंढनेवाला, धोखे-बाज़।

बहाना-साज़—(फ़ा०) (वि०) हीला करनेवाला।

बहार—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) वसंत

बहु, (२) रौनक़, शोभा; (३) लुत्फ़, कैफ़ियत, आनन्द; (४) सैर, तमाशा, मनो रंजन, दिल-बहलाव ; (५) एक रागिनी का नाम; (६) मज़ा।

बहारी—(फ़ा०) (वि०) बहार की, बहार वाली, वसंत की।

बहाल—(फ़ा०) (वि०) (१) यथा-स्थित, क़ायम, बदस्तूर; (२) भला, ख़ुश, अच्छी दशा में; (३) मर्ज़ से छुटकारा पाने वाला; (४) सहीह।

बहाली—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) रोगी की दशा ठीक होना, नीरोग होना, (२) हर्ष, प्रफुल्लित होना।

बहिश्त—(फ़ा०) (सं० पु०) स्वर्ग।

बहिश्ती—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) स्वर्ग का रहनेवाला; (२) भिश्ती, सक्का। (वि०)—बहिश्त से सम्बन्ध रखनेवाला।

बहीर—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) आदमियों की भीड़ जो सेना के साथ होती है; (२) लश्कर के बाज़ारी लोग; (३) आदमियों की क़तार, भीड़; (४) फ़ौज का असबाब।

बह्र—(अ०) (सं० पु०) देखो—'बहर'।

बांक-पन—(हि०) (सं० पु०) (१) टेढ़ा-पन, (२) वज़ेदारी, आत्म-प्रदर्शन, ख़ुद-नुमाई; (३) सरकशी; (४) नाज़-अंदाज़, शोख़ी।

बांका—(हि०) (वि०) (१) तिरछा, टेढ़ा, झुका हुआ, मुड़ा हुआ; (२) नाराज़, नाख़ुश, सरकश, विद्रोही; (३) रंगीला, रसीला, छैला; (४) बेढब, बेढंगा; (५) एक प्रकार की छुरी जो टेढ़ी होती है; (६) तरह-दार, बना-ठना; (७) बहादुर, दिलेर, साहसी; (८) बेबाक, निडर, लुच्चा, शोहदा; (९) शोख़, चंचल, शरीर, नट-खट; (१०) आज़ाद; (११) माशूक़।

बांका-तिरछा—(वि०) घमंडी, सरकश, झगड़ालू।

बांग—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) सदा, आवाज़, शब्द; (२) पुकार, अज़ां; ज़ोर से पुकारना; (३) मुर्ग़े का बोलना।

बांग-दिरा—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) क़ाफ़िला रुख़सत होने की आवाज़। (दिरा-घंटा)।

बा—(फ़ा०) (अव्यय) (१) साथ, सहित (२) सामने, समक्ष।

बाइस—(अ०) (सं० पु०) (१) कारण, सबब, वजह, निमित्त; (२) मूजिद, निर्माता; (३) बुनियाद, जड़, असली हक़ीक़त; (४) ख़ुदा का नाम।

बाक—(फ़ा०) (सं० पु०) अंदेशा, डर, खटका। बे-बाक—निडर, निर्भय।

बाक़र—(अ०) (सं० पु०) (१) विद्वान्, आलिम; (२) रईस, मालदार।

बाक़र-ख़ानी—(अ०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार की रोटी (शीर माल)।

बाक़ला—(अ०) (सं० पु०) एक प्रकार की फली जिसे पका कर खाते हैं।

बाक़िर—(अ०) (वि०) बहुत बड़ा विद्वान्, आलिम।

बाकिरा—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) कुमारी, कुंआरी।

बाक़ियात—(अ०) (सं० स्त्री०) बाक़ी पड़ी हुई रक़में। ('बाक़ी' का बहुवचन)।

बाक़ी—(अ०) (वि०) (१) जो बचा रहे, बचा-खुचा, रहा-सहा, शेष, अवशिष्ट; (२) क़ायम, अमर, ज़िंदा; (३) ईश्वर। (सं० स्त्री०) (१) घटाना, बड़ी संख्या में से छोटी संख्या कम कर देना; (२) वह संख्या जो घटाने पर बच रहे, अन्तर।

बाक़ी-दार—(अ०) (वि०) जिसके ऊपर कुछ बाक़ी हो।

बाक़ी-मांदा—(फ़ा०) (वि०) बचा हुआ, जो बाक़ी रहे, बक़ाया, अवशिष्ट।

बाक़ी-साक़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) बेशी, बढ़ती, ज़्यादा, रहा-सहा, बचा-खुचा, फ़ाज़िल।

बा-ख़बर—(फ़ा०) (वि०) (१) होशयार, सावधान, सतर्क; (२) ख़बर रखनेवाला; (३) जाननेवाला, ज्ञाता, जानकार।

बाख़्ता—(फ़ा०) (वि०) हारा हुआ, जो गँवा चुका हो।

बाग़—(अ०) (सं० पु०) (१) उद्यान, वाटिका, चमन, गुलज़ार; (२) बाल-बच्चे, आल-औलाद। सब्ज़ बाग़ दिखाना—दम देना, धोखा देना।

बाग़चा—(फ़ा०) (सं० पु०) छोटा बाग़, चमन।

बाग़-पैरा—(फ़ा०) (वि०) माली।

बाग़-बाग़—(फ़ा०) (वि०) ख़ुश, हर्षित।

बाग़-बान—(फ़ा०) (सं० पु०) माली।

बाग़-बानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) माली का काम।

बाग़ात—(अ०) (सं० पु०) 'बाग़' का बहु-वचन।

बाग़ाती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वह ज़मीन जो बाग़ लगाने के योग्य हो।

बाग़ी—(अ०) (वि०) बाग़ से सम्बन्धित। (सं० पु०) सरकश, विद्रोही, विरोधी, बुरा चाहनेवाला।

बाग़ीचा—(फ़ा०) (सं० पु०) छोटा बाग़।

बाज—(फ़ा०) (सं० पु०) टेक्स, महसूल, कर।

बाज़—(अ०) (वि०) थोड़े, चंद, कुछ। (फ़ा०) (सं० पु०) एक शिकारी पत्ती, शिकरा। (क्रि० वि०) पीछे, उलटे। (प्रत्यय) (शब्दों के अन्त में) कर्ता, शौक़ीन। बाज़-औक़ात—कभी कभी, किसी वक्त। बाज़ आना—(१) हाथ उठाना, छोड़ देना; (२) परहेज़ करना, (३) किसी काम से बेज़ार होना।

बाज़-ख़्वास्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वापस माँगना, दी हुई चीज़ का फिर माँगना।

बाज़-ख़्वाह—(फ़ा०) (वि०) जवाब तलब करनेवाला, तहक़ीक़ात करनेवाला।

बाज़-गश्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वापसी, पीछे हटना, लौटना, फिर कर आना। आवाज़-बाज़-गश्त—प्रतिध्वनि, गूंज।

बाज-गीर—(फ़ा०) (वि०) महसूल लेने-वाला।

बाज-गुज़ार—(फ़ा०) (वि०) महसूल देने-वाला।

बाज़-दही—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वापसी, वापस देना।

बाज-दार—(फ़ा०) (वि०) महसूल देने-वाला।

बाज़दावा—(फ़ा०) (सं० पु०) नालिश का वापिस लेना, दावे से दस्त-बरदार होना, दावा छोड़ देना।

बाज़-दीद—(फ़ा०) (सं० पु०) जो मिलने आ चुका हो, उसके घर वापसी मुलाक़ात के लिए जाना।

बाज़-पस—(फ़ा०) (वि०) आख़री वक्त, अन्त समय।

बाज़-पुर्स—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) पूछ-गछ, तहक़ीक़ात, जाँच-पड़ताल, अनु-संधान; (२) जवाब-दही, कैफ़ियत तलब करना।

बाज़-याफ़्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) किसी खोई हुई चीज़ का फिर मिलना, फिर से मिला हुआ।

बाज़रगान—(फ़ा०) (सं० पु०) सौदागर।

बाज़ल—(अ०) (वि०) दानी, दाता, सख़ी, बख़्शनेवाला।

बाज़ार—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) ख़रीदने और बेचने की जगह; (२) बिक्री, ख़रीद-फ़रोख़्त; (३) भाव, निर्ख़; (४) वह स्थान जहाँ लोग जमा रहते हों। बाज़ार उठ जाना—बाज़ार बंद हो जाना, बाज़ार बढ़ना। बाज़ार उतर जाना—भाव घट जाना। बाज़ार गिरना—भाव कम हो जाना। बाज़ार चढ़ना—भाव बढ़ जाना। बाज़ार तेज़ होना—भाव तेज़ होना।

बाज़ार नापना—मारे मारे फिरना। कहा०—बाज़ार उसका जो ले के दे—हिसाब साफ़ रखने से साख बढ़ती है।

बाज़ार का गज़—वह शख़्स जो मारा मारा फिरे।

बाज़ार-बट्टा—दस्तूरी, कटौती।

बाज़ारी—(फ़ा०) (वि०) (१) बाज़ार का; (२) आम, मामूली, साधारण; (३) बाज़ार में बैठनेवाले; (४) बाज़ारी औरत—वेश्या। बाज़ारी बात—गप, अफ़वाह।

बाज़ारू—(फ़ा०) (वि०) (१) वह चीज़ जो जल्दी बिक जाय; (२) साधारण चीज़; (३) केवल दिखावे की चीज़, नुमायशी; (४) अशिष्ट।

बाज़िन्दगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) मक्कारी, चालाकी, धूर्त्तता; (२) खेल।

बाज़िन्दा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) खेलनेवाला; (२) एक क़िस्म का कबूतर।

बाज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) खेल, तमाशा, करतब; (२) शर्त, दावँ, बदन; (३) काबुली कबूतर का गिरह करना; (४) फ़रेब, धोखा; (५) गंजफ़े या ताश के पत्ते; (६) ताश या शतरंज का खेल। बाज़ी खाना—हारना। बाज़ी दे जाना—फ़रेब देना, धोखा देना। बाज़ी देना—हरा देना। बाज़ी बदना—शर्त बदना। बाज़ी लड़ाना—शर्त बदी होना। बाज़ी हाथ रहना—बाज़ी में जीत होना।

बाज़ीगर—(फ़ा०, (सं० पु०) (१) तमाशा दिखानेवाला, भानमती; (२) शोबदाबाज़।

बाज़ीगरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) तमाशा दिखाने का काम, शोबदाबाज़ी।

बाज़ी-गाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) खेल की जगह।

बाज़ीचा—(फ़ा०) (सं० पु०) खेल, तमाशा। बाज़ीच-ए-अतफ़ाल—लड़कों का खेल।

बाज़ुर्गान—(फ़ा०) (सं० पु०) व्यापारी।

बाज़ू—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) भुजा, डंड, बाँह; (२) पक्षी के शरीर का वह भाग जिसमें बड़े पर होते हैं; सहारा, आश्रय, शक्ति, ताक़त; (४) बराबर का, दूसरा, जवाब, मुक़ाबिल; (५) दाँये बाँये की फ़ौज; (६) दरवाज़े की दोनों तरफ़ की लकड़ियाँ, पट; (७) मित्र, साथी, सहायक, मददगार; (८) जोड़; (९) बाज़ू-बन्द, एक ज़ेवर; (१०) तरफ़। बाज़ू टूटना—शक्ति जाती रहना। बाज़ू तौलना—उड़ने के लिए मुस्तैद होना; उद्यत होना, आमादा होना। बाज़ू फड़कना—किसी प्रेमी से मिलने का शकुन होना।

बाज़ू-बन्द—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार का ज़ेवर।

बाज़ू-शिकन—(फ़ा०) (वि०) बलवान्, ताक़तवर।

बाढ़—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) धार; (२) आड़, काँटों की रोक, किनारा; (३) मोहरा, सामने, आगे; (४) सैनिकों की पंक्ति, फौजी सिपाहियों की क़तार; (५) खेत की हद-बन्दी जो काँटों से कर देते हैं; (६) पेड़ों की क़तार; (७) बौछार; (८) कई बंदूक़ों या तोपों का एक साथ छूटना; (९) नदी में हद से ज़्यादा पानी बढ़ जाना, बहिया, सैलाब; (१०) बढ़ना।

बातिन—(अ०) (सं० पु०) (१) अन्तःकरण, मन, दिल, ख़याल, अन्दरून; (२) अन्दर का हिस्सा, भीतरी भाग।

बातिनी—(अ०) (वि०) भीतरी, पोशीदा, आन्तरिक, मन-गत।

बातिल—(अ०) (वि०) (१) ग़लत, झूठा, मिथ्या; (२) निरर्थक, बेकार, व्यर्थ; (३)

बेहूदा; (४) प्रभाव-हीन, बे-असर; (५) रद, जो रद कर दिया गया हो।

बाद—(अ०) (क्रि० वि०) अनन्तर, पीछे। (वि०) (१) छोड़ा हुआ, अलग किया गया; (२) अतिरिक्त, सिवाय, (सं० स्त्री०) हवा, वायु।

बाद-कश—(फ़ा०) (सं० पु०) लटकानेवाला पंखा, जिसको रस्सी लगा कर चलाते हैं।

बाद-ख़ाया—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) अंड-वृद्धि, वह बीमारी जिसमें अंड-कोश बढ़ जाते हैं; (२) घोड़े के फ़ोते बढ़ जाने का रोग।

बाद-ख़ोर, बाद-ख़ोरा—(फ़ा०) (सं० पु०) इन्द्र लुप्त, गंज, वह रोग जिससे घोड़े के बाल गिर जाते हैं।

बाद-ख़्वाँ—(फ़ा०) (वि०) ख़ुशामदी।

बाद-पा, बाद-पैमा—(फ़ा०) (वि०) हवा की तरह तेज़ चलनेवाला घोड़ा; घोड़ा।

बाद-फ़रोश—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) ख़ुशामदी, झूठी ख़ुशामद करनेवाला, भाट; (२) बातूनी, बकवादी, शेख़ी-ख़ोरा, डींगिया।

बाद-बहार, बाद-बहारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वसन्त-ऋतु की हवा; हवा, पवन।

बाद-बान—(फ़ा०) (सं० पु०) पाल, वह परदा जो हवा का रुख़ बदलने या हवा भरने के लिए नाव या जहाज़ पर लगाते हैं।

बाद-रंज बोया—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार की ख़ुश-बू-दार घास; बिल्ली-लोटन।

बाद-रफ़्तार—(फ़ा०) (वि०) निहायत तेज़ और चालाक घोड़ा।

बादशाह—(फ़ा०) (सं० पु०) महाराजा, सम्राट्।

बादशाह-ज़ादा—(फ़ा०) (सं० पु०) बादशाह का बेटा, महाराज-कुमार।

बादशाह-ज़ादी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बादशाह की बेटी, महाराज-कुमारी।

बादशाहत—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) राज्य, सल्तनत।

बादशाहाना—(फ़ा०) (वि०) बादशाहों का-सा, बादशाह की तरह का, अमीराना।

बादशाही—(फ़ा०) (वि०) बादशाह का, शाहाना। (सं० स्त्री०) राज्य, सल्तनत।

बाद-हवाई—(फ़ा०) (वि०) (१) झूठा वादा, बेहूदा, निरर्थक; (२) व्यर्थ, निकम्मा, ना-कारा।

बादा—(फ़ा०) (सं० पु०) शराब, मदिरा।

बादा-कश, बादा-ख़ोर, बादा-नोश—(फ़ा०) (वि०) शराबी, शराब पीने का आदी।

बादा-परस्ती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शराब-ख़ोरी।

बादाम—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रसिद्ध मेवा।

बादामची—(फ़ा०) (सं० पु०) चाँदी, सोने या ताँबे का पत्तर जिसे संदूक़ों और बंदूक़ों के कुंदों पर लगाते हैं।

बादामा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा; (२) रेशम का कोया; (३) वह गुदड़ी जो तरह तरह के छोटे छोटे टुकड़ों से बनाई जाय।

बादामी—(फ़ा०) (वि०) (१) बादाम का; (२) बादाम के आकार का; (३) बादाम के रंग का, हलका पीला। (सं० पु०) एक प्रकार का चावल। (स्त्री०) एक प्रकार की ज़ेवर रखने की डिबिया।

बादिया—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) ताँबे का बड़ा प्याला, कटोरा; (२) जंगल, बन।

बादिया-गिर्द, बादिया-पैमा—(फ़ा०) (वि०) जंगल में फिरनेवाला।

बादियान—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सौंफ़।

बादी-उल्-नज़र—(अ०) (क्रि० वि०) देखते ही, सरसरी नज़र से, बज़ाहिर।

बाद्दी-चोर—(सं० पु०) पक्का चोर।

बादे-ख़िज़ाँ—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वह हवा जो पत-झड़ होने के लिए चलती है।

बादे-तुन्द—(फ़ा०) (वि०) तेज़ हवा, तूफ़ान, आँधी।

बादे-फ़िरंग—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) आतशक, उपदंश, गर्मी की बीमारी।

बादे-सबा—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सुबह के वक़्त की हवा, प्रातः-समीर; पूर्वी हवा।

बादे-समूम—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बहुत गर्म हवा, लू।

बान—(फ़ा०) (प्रत्यय) (१) रक्षक; (२) चालाक (शब्द के अन्त में) (अ०) (सं० पु०)—एक अरबी ख़ुशबू-दार पेड़ जिसके बीज से तेल निकालते हैं।

बा-नवा—(फ़ा०) (वि०) (१) सुरीला, अच्छी आवाज़-वाला; (२) संपन्न, समर्थ, धनवान्।

बानात—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार का मोटा ऊनी कपड़ा।

बानी—(अ०) (सं० पु०) (१) बुनियाद डालनेवाला, बनानेवाला; (२) कारण, सबब, ज़रिया; (३) नेता, प्रधान।

बानीकार—(फ़ा०) (वि०) चालाक, धूर्त्त, धोखे-बाज़, उकसानेवाला।

बानीकारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) चालाकी, उस्तादी, धूर्त्तता।

बानी-मबानी—(फ़ा०) (वि०) असल कारण, मूल कारण, मुजिद।

बानू, बानो—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बीबी, बेगम, महिला।

बाफ़—(फ़ा०) (वि०) (१) बुननेवाला; (२) बुना हुआ।

बाफ़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बुनने का काम, बुनाई।

बाफ़्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बुनावट।

बाफ़्ता—(फ़ा०) (वि०) बुना हुआ। (सं० पु०)—(१) एक प्रकार का रेशमी कपड़ा; (२) एक क़िस्म के कबूतरों का रंग।

बाब—(अ०) (सं० पु०) (१) दरवाज़ा, द्वार; (२) अध्याय, प्रकरण; (३) प्रकार, क़िस्म; (४) विषय, मामला, बाबत, बारा; (५) योग्य, लायक़, क़ाबिल; (६) दरबार, दरगाह; (७) एक क़िस्म का सरकारी टैक्स।

बाबत—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) वसीला, सिफ़ारिश; (२) सम्बन्ध, विषय। (अव्यय) बारे में, विषय में, निसबत, मामले में; बसबब, वास्ते।

बाबा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) बाप-दादा के लिए संबोधन; (२) दरवेश, साधु, फ़क़ीर; (३) हज़रत, जनाब; (४) प्यार से बाप भी अपने बेटे को इस नाम से पुकारता है।

बाबा-आदम—(१) हज़रत आदम; (२) मनुष्य जाति के मूल पुरुष; (३) रवैय्या, तरीक़ा, ढंग, अन्दाज़। बाबा आदम निराला है—निराला ढंग है, अजब तरह का अन्दाज़ है।

बाबुल—(हि०) (सं० स्त्री०) घर के छोड़ने का एक करुण गीत जो वधू के पहली बार मायका छोड़ने पर सुसराल जाते वक्त गाया जाता है।

बाबूना—(फ़ा०) (सं० पु०) एक बूटी का नाम, जो दवा के काम आती है।

बाम—(फ़ा०) (सं० पु०) कोठा, छत, बाला-ख़ाना, अटारी। (सं० स्त्री०)—एक क़िस्म की मछली।

बा-मुहावरा—(अ०) (वि०) शुद्ध, मुहावरेदार, प्रामाणिक।

बायद—(फ़ा०) (क्रि० वि०) जैसा चाहिये, जैसा होना आवश्यक हो।

बायद-ओ-शायद—(फ़ा०) (वि०) जैसा चाहिये, बहुत उचित।

बाया—(फ़ा०) (वि०) बेचनेवाला, बै करने वाला, विक्रेता।

बार—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) दफ़ा, मर्तबा; (२) भार, बोझ; (३) हमल, गर्भ; (४) फल, पेड़ की जड़, शाख़; (५) ज़िम्मेदारी, क़र्ज़; (६) दख़ल, रसाई, पहुँच, गति; (७) द्वार, दरवाज़ा। (वि०)—नागवार, भारी मालूम होनेवाला, कष्टदायक। बार देना—इजाज़त देना, दरबार में जाने देना। बार मिलना—रसाई होना, पहुँच होना।

बार-आम—(फ़ा०) (सं० पु०) दरबार-आम, आम-इजाज़त, वह राज-सभा जहाँ सब लोग जा सकें।

बार-आवर—(फ़ा०) (वि०) (१) फल लानेवाला, फल-दार; (२) हामिला, गर्भिणी; (३) फल-प्रद। बार-आवार होना—फलना, फल लाना।

बार-कश—(फ़ा०) (सं० पु०) बोझ लादने वाला जानवर।

बार-ख़ाना—(फ़ा०) (सं० पु०) काठ-किवाड़, अटाला, घर का असबाब।

बार-ख़ास—(फ़ा०) (सं० पु०) राजा का वह दरबार जिसमें ख़ास आदमी रहते हैं।

बार-गह, बार-गाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दरबार, कचहरी, अदालत।

बार-गीर—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) उठाने वाला जानवर; (२) वह सवार जिसका अपना घोड़ा न हो; (३) साईस।

बारचा, बारजा—(फ़ा०) (सं० पु०) बरामदा, कोठा, अटारी।

बार-तंग—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक दवा का नाम।

बार-दाना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) थैला, किसी चीज़ के रखने का बर्तन; (२) दुकान के बर्तन; (३) ख़ाली बक्स।

बार-दार—(फ़ा०) (वि०) (१) फल लानेवाला, फला हुआ; (२) गर्भिणी; (३) भरा हुआ, बोझ से लदा हुआ।

बार-बर, बार-बरदार—(फ़ा०) (सं० पु०) उठानेवाला, माल ढोनेवाला।

बार-बरदारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) वह चौपाये जो बोझ खींचते हैं; (२) बोझ ढोने की क्रिया; (३) मज़दूरी।

बार-याब—(फ़ा०) (वि०) दरबारी, इजाज़त पानेवाला।

बार-याबी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) हुज़ूरी, हाज़िरी, उपस्थित होना।

बार-वर—(फ़ा०) (वि०) (१) फल लानेवाला; बाल-बच्चे वाला; (२) फल-प्रद, सफल, कामयाब

बारह—(फ़ा०) (१) मुतल्लिक़, बारे में, मामले में; (२) दफ़ा, नौबत।

बारह - वफ़ात—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मुसल्मानों का एक त्यौहार; यह उस महीने में मनाया जाता है जिसमें मोहम्मद साहब बहुत बीमार रहे थे।

बारहा—(फ़ा०) (क्रि० वि०) कई बार, अकसर, प्रायः, बार बार।

बारां—(फ़ा०) (सं० पु०) बरसता हुआ, बरसनेवाला, मेंह।

बारां-दीदा—(फ़ा०) (वि०) (१) वह जिस पर मेंह पड़ चुका हो, (२) घुटा-हुआ, तजुर्बे-कार (गुर्ग के साथ व्यवहृत)।

बारानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) वह ज़मीन जो आस्मानी पानी से सैराब होती है; (२) एक क़िस्म का कोट जिससे पानी बदन तक नहीं पहुँचता, बरसाती कोट; (३) बरसनेवाला।

बाराने-रहमत—(फ़ा०) (सं० पु०) बारिश, मेंह।

बारिज़—(अ०) (वि०) प्रकट, ज़ाहिर।

बारिद्—(अ०) (वि०) सर्द, शीत, ठंडा।

बारिश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वर्षा, बरसात, मेंह। बारिश का तार—झड़ी, मेंह का सिलसिला, लगातार पानी बरसना।

बारी—(अ०) (सं० पु०) ईश्वर, परमात्मा।

बारीक—(फ़ा०) (वि०) (१) महीन, पतला; (२) नाज़ुक, सुकुमार; (३) सूक्ष्म, मुश्किल; (४) ख़फ़ीफ़।

बारीक-ख़याल—(फ़ा०) (वि०) नाज़ुक ख़याल, सूक्ष्म विचार।

बारीक-बीं—(फ़ा०) (वि०) सूक्ष्म-दर्शी, किसी विषय पर विचार और चिन्तन करने वाला, तेज़-फ़हम, प्रखर-बुद्धि।

बारीक-बीनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सूक्ष्म-चिन्तन, मर्म-समझना।

बारीका—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) हाशिया, किनारा; (२) चित्र-कारों का वह क़लम जिससे महीन रेखा खींचते हैं।

बारीकी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) पतला-पन, सूक्ष्मता; (२) कठिनता, दिक़्क़त, मुश्किल; (३) नज़ाकत, सुकुमारता। बारीकी निकालना—नुक्ता-चीनी करना, एतराज़ करना।

बारी-तआला—(अ०) (सं० पु०) ईश्वर जो सब से बड़ा है।

बारूत, बारूद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) एक प्रकार का चूर्ण जिससे आतिश बाज़ी बनती है; २) एक प्रकार का चूर्ण जिसमें आग लगाने से तोप-बंदूक़ चलती है।

बारे—(फ़ा०) (क्रि० वि०) (१) एक बार; (२) अन्त में, अल-ग़रज़, ख़ैर।

बारे-ख़ातिर—(फ़ा०) (वि०) नागवार, कष्ट-प्रद, तबीयत के ख़िलाफ़।

बारे-ख़ास—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) ख़ास इजाज़त, विशेष आज्ञा; (२) दरबार ख़ास, निजका इजलास।

बारे-ख़ुदा—(फ़ा०) (सं० पु०) ईश्वर, जिसके दरबार में हर समय हर आदमी जा सकता है।

बारे-तरदीद—(फ़ा०) (सं० पु०) जवाब-देही की ज़िम्मेदारी।

बारे-सबूत—(फ़ा०) (सं० पु०) साबित करने की ज़िम्मेदारी।

बाल—(फ़ा०) (सं० पु०) पर, पंख, बाजू का जोड़ जिससे परन्द उड़ता है। (अं० पु०)—(१) हाल, शान, इत्मीनान, ख़ातिर; (२) दिल। बाल आना—दरार पड़ना, टूटने का असर ज़ाहिर होना।

बाला—(फ़ा०) (अव्यय) ऊपर, आगे, सामने। (वि०)—(१) ऊँचा, बुलंद, बढ़कर; (२) ऊपर लिखा हुआ।

बालाई—(फ़ा०) (वि०) ऊपरी, बुलंदी का; ग़ैर-मामूली। (सं० स्त्री०)—मलाई।

बाला-ए-ताक़—(फ़ा०) (वि०) अलग, किनारे, एक तरफ़।

बाला-ख़ाना—(फ़ा०) (सं० पु०) कोठा, ऊपर का कमरा।

बाला-तर—(फ़ा०) (वि०) अधिक ऊँचा, उच्च-तर।

बाला-दस्त—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) आला, उच्च, प्रधान, मुख्य; (२) बलवान्; (३) अफ़सर, हाकिम; (४) बहतर, श्रेष्ठ।

बाला-नशीन—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सभापति, प्रधान, सदर-नशीन; (२) सर्व्वोच्च आसन श्रेष्ठ स्थान; (३ वह अमीराना चीज़ जो जाँच में हैसियत से ज़्यादा दिखलाई पड़े; (४) वह आदमी जो ख़ास इज़्ज़त की जगह बैठे।

बाला-पन—(हि०) (सं० पु०) लड़क-पन, कम-उम्री।

बालापोश—(फ़ा०) (सं० पु०) पलंग-पोश, ग़िलाफ़।

बाला-बाला—(फ़ा०) (क्रि० वि०) ऊपर ही ऊपर, गुप्त रूप से, बे कहे सुने, अलग ही अलग।

बाला-बन्द—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सर-पेच, सरबंद; (२) दस्तार; (३) एक प्रकार का ख़िलाफ़; (४) एक क़िस्म का लबादा।

बाला-भोला—(हि०) (वि०) सीधा-साधा, सादा-मिज़ाज, सरल-हृदय।

बालिग़—(अ०) (वि०) जवान, सियाना।

बालिग़-नज़र—(फ़ा०) (वि०) ग़ौर से देखनेवाला, गहरी नज़र से देखनेवाला।

बालिश्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बित्ता, अंगूठे की नोक से छिगुलिया की नोक तक की दूरी, लगभग बारह अंगुल की नाप।

बालिश्तिया—(फ़ा०) (वि०) बौना, नाटा, बालिश्त के बराबर आदमी।

बालीदगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बाढ़, बढ़ना, पैदायश।

बालीन—(फ़ा०) (सं० पु०) सिरहाना, तकिया।

बालीन-परस्त—(फ़ा०) (वि०) बीमार, आराम-तलब।

बा-वजूद—(फ़ा०) (क्रि० वि०) इतने पर भी, इतना होने पर भी।

बावर—(फ़ा०) (सं० पु०) यक़ीन, भरोसा, विश्वास, ऐतबार।

बावर्ची—(तु०) (सं० पु०) खाना पकाने वाला, रसोइया, ख़ानसामा।

बावर्ची-ख़ाना—(तु०) (सं० पु०) रसोई-घर, खाना बनाने की जगह।

बावर्ची-गरी—(तु०) (सं० स्त्री०) बावर्ची का पेशा, या काम।

बावली—(तु०) (सं० स्त्री०) वह चीज़ या जानवर जिसके द्वारा परन्दों को शिकार करने का अभ्यास कराया जाता है। बावली देना—तालीम देना, अभ्यास कराना। बावली बताना—झाँसा देना।

बा-वस्फ़—(फ़ा०) (क्रि० वि०) इतना होने पर भी, सिवाय। (वि०)—गुणवान्।

बाश—(फ़ा०) (अव्यय) रह, बना रह।

बाशद—(फ़ा०) हुआ करे, कुछ भी हो, कुछ परवा नहीं।

बाशा—(फ़ा०) (सं० पु०) एक शिकारी पक्षी।

बाशिन्दगान—(फ़ा०) (वि०) 'बाशिन्दा' का बहुवचन।

बाशिन्दा—(फ़ा०) (वि०) रहनेवाला, निवासी।

बासित—(अ०) (सं० पु०) ख़ुदा का नाम।

बासिरा—(अ०) (सं० पु०) आँख, दृष्टि, नज़र, देखने की शक्ति।

बासूर—(अ०) (सं० पु०) एक क़िस्म का रोग।

बाह—(अ०) (सं० स्त्री०) काम शक्ति, विषय-भोग की शक्ति।

बाहम—(फ़ा०) (क्रि० वि०) (१) आपस में, परस्पर; (२) साथ।

बाहम-दिगर—(फ़ा०) (क्रि० वि०) परस्पर, मिले हुए, एक दूसरे के साथ।

बाहिर—(अ०) (वि०) रोशन, ज़ाहिर, प्रकट।

बिक्र—(अ०) (वि०) कुंआरा, कुंआरी।

बिग़ाल—(अ०) (सं० पु०) ख़च्चर।

बिज़न—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) क़त्ल-आम क़त्ल का हुक्म; (२) जंगी फ़ौज का हिस्सा। बिज़न करना—क़त्ल-आम करना। बिज़न बोलना—धावा करना, क़त्ल-आम का हुक्म देना।

बिज़ाअत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) पूंजी, सरमाया; (२) हिस्सा।

बिज़ातिही—(अ०) (क्रि० वि०) स्वयं, ख़ुद।

बित्तीख़—(अ०) (सं० पु०) ख़रबूज़ा।

बिद्अत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) दीन (धर्म) की बातों में कोई नई बात या नई रस्म निकालना; (२) अत्याचार, अन्याय,

शुल्म, सख़्ती; (३) लड़ाई, झगड़ा, फ़िसाद।

बिदअती—(अ०) (वि०) झगड़ा करनेवाला, झगड़ालू, लड़ाका।

बिदायत—(अ०) (सं० स्त्री०) आरम्भ, शुरू करना।

बिदीअ—(अ०) (वि०) (१) अनोखा, नया, नादिर; (२) बनानेवाला।

बिदून—(फ़ा०) (अव्यय) बग़ैर, बिना।

बिद्दत—(अ०) (सं० स्त्री०) (देखो—'बिदअत')।

बिन—(अ०) (सं० पु०) लड़का, पुत्र।

बिनसर—(अ०) (सं० स्त्री०) वह उंगली जो बीच की उंगली और सब से छोटी उंगली के बीच में है।

बिना—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) बुनियाद, नींव; (२) जड़, सबब, कारण; (३) आरम्भ, उद्गम।

बिना-ए-दावा, बिना-ए-मुख़ासमत—(अ०) (सं० स्त्री०) दावे या नालिश की जड़, वह बात जिससे नालिश करने का हक़ पैदा हुआ, झगड़े की बुनियाद।

बिना-बर—(फ़ा०) (क्रि० वि०) इस वजह से, इसलिए, इस कारण।

बिन्त—(अ०) (सं० स्त्री०) बेटी, पुत्री, लड़की।

बिनत-उल-अनब—(अ०) (सं० स्त्री०) शराब।

बयाबान—(देखो—'बयाबान')।

बिरंज—(फ़ा०) (सं० पु०) (देखो- बिरिंज')।

बिरंज-मुश्क—(फ़ा०) (सं० पु०) एक दवा का नाम जिसे बालंगो कहते हैं।

बिरंजी—(फ़ा०) (वि०) (१) पीतल का; (२) छोटी कील।

बिरजिस, बिरजीस—(फ़ा०) (सं० पु०) एक सितारे का नाम जो छठे आसमान पर है।

बिरयाँ—(फ़ा०) (वि०) भुना हुआ, तला हुआ।

बिरयानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक क़िस्म का नमकीन पुलाव जिसमें गोश्त भून कर डालते हैं।

बिराज़—(अ०) (सं० पु०) गंदगी, ग़लाज़त, मैला।

बिरादर—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) भाई; (२) सम्बन्धी, रिश्तेदार; (३) जाति-भाई, स्वजाति।

बिरादर-ज़ादा—(फ़ा०) (सं० पु०) भतीजा, भाई का लड़का।

बिरादराना—(फ़ा०) (वि०) भाई का-सा, बिरादरी का-सा।

बिरादरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) जाति, भाई-चारा।

बिरिंज—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) पीतल, ताँबा और जस्त मिला हुआ; (२) चावल।

बिरियाँ—(फ़ा०) (वि०) भुना हुआ, तला हुआ।

बिरिश्ता—(फ़ा०) (वि०) भुना हुआ, बिरियाँ।

बिरूँ—(फ़ा०) (वि०) बाहर ('बैरून' का संक्षिप्त रूप)।

बिरेज—(फ़ा०) (अव्यय) रक्षा करो, बचाओ।

बिर्र—(अ०) (सं० स्त्री०) नेकी, भलाई, अहसान।

बिल—(अ०) (अव्यय) साथ, सहित (शब्दों के पहले)।

बिल्-अक्स—(अ०) (क्रि० वि०) इसके विपरीत, विरुद्ध इसके।

बिल्-उमूम—(अ०) (क्रि० वि०) साधारणतः, आम तौर पर।

बिलकुल—(अ०) (क्रि० वि०) (१) कुल, पूरा; (२) नितान्त।

बिल-जब्र—(अ०) (क्रि० वि०) ज़बरदस्ती, बलपूर्वक ।

बिल्-ज़रूर—(अ०) (क्रि० वि०) अवश्य, निश्चय-पूर्वक ।

बिल्-जुमला—(अ०) (क्रि० वि०) सब मिलाकर, कुल मिलाकर ।

बिल्-फ़र्ज़—(अ०) (क्रि० वि०) मानते हुए, यह मानकर ।

बिल्-फ़ेल—(अ०) (क्रि० वि०) अभी तो, इस समय ।

बिल-मुक़ाबिल—(अ०) (क्रि० वि०) मुक़ाबिले में, सामने ।

बिल्-मुक्ता—(अ०) (वि०) निश्चित, पूर्व निश्चय के अनुसार ।

बिला—(अ०) (अव्यय) बग़ैर, बिना ।

बिलाद—(अ०) (सं० पु०) नगर, बस्तियाँ 'बल्द' का बहुवचन ।

बिल्लूर, बिल्लौर—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) स्फटिक, एक साफ़ शफ़्फ़ाफ़ पत्थर; (२) बहुत स्वच्छ शीशा ।

बिशारत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) शुभ-सन्देश; .खुश-खबरी, इलहाम ग़ैबी; (२) वह अन्न जिसकी बाबत स्वप्न में आदेश हो । बिशारत देना—अच्छी ख़बर सुनाना ।

बिसात—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) बिछाने की चीज़, फ़र्श, बिस्तर; (२) शतरंज या चौसर खेलने का कागज़ या कपड़ा; (३) पूंजी, सरमाया; (४) हैसियत, सामर्थ्य, हौसला; (५) शक्ति, ताक़त; (६) हस्ती, असल हक़ीकत । बिसात से बाहर—मक़दूर से ज़्यादा, शक्ति से परे ।

बिसात-ख़ाना—(फ़ा०) (सं० पु०) बिसातियों का बाज़ार ।

बिसाती—(अ०) (सं० पु०) खुर्दा-फ़रोश, छोटी छोटी चीज़ें बेचनेवाला, फेरीवाला ।

बिसाते-ख़ाक—(अ०) (सं० स्त्री०) ज़मीन का फ़र्श ।

बिसियार—(फ़ा०) (वि०) बहुत, अधिक ।

बिसियार-गो—(फ़ा०) (वि०) ज़्यादा कहनेवाला ।

बिस्त—(फ़ा०) (वि०) बीस ।

बिस्तर—(फ़ा०) (सं० पु०) फ़र्श, बिछौना ।

बिस्मिल—(अ०) (वि०) (१) ज़िबह किया हुआ जानवर, बलि किया हुआ; (२) घायल, ज़ख्मी; (३) आशिक़, आसक्त ।

बिस्मिल्लाह—(अ०) मेहरबान और क्षमा करनेवाले ईश्वर के नाम से शुरू करता हूँ । (१) कोई कार्य आरम्भ करने के पहले बरकत हासिल करने के लिए ये शब्द कहते हैं; (२) अमीरों, रईसों के उठने बैठने पर मुसाहब कहते हैं; (३) बच्चे को पाठशाला में बिठाने की रस्म; (४) .खुदा का नाम लेना । बिस्मिल्लाह करना—(१) शुरू करना; (२) हलाल करना ।

बिहल—(अ०) (वि०) माफ़, क्षमा ।

बिहला—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) चमड़े का पंजा जिसको शिकारी हाथ पर पहनकर बाज़ को बैठाते हैं; (२) एक प्रकार का बटुआ जिसमें रुपया-पैसा और ज़रूरी काग़ज़ात रखते हैं ।

बिही—(फ़ा०) (सं० पु०) एक फल का नाम ।

बिही-दाना—(फ़ा०) (सं० पु०) बिही-फल के बीज, एक दवा ।

बीं—(फ़ा०) (वि०) देखनेवाला (शब्दों के अन्त में) ।

बी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) स्त्री, महिला, बीबी का संक्षिप्त रूप, जो आदर या प्रेम भाव से व्यवहार किया जाता है ।

बीनश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बीनाई, देखने की शक्ति ।

बीना—(फ़ा०) (वि०) (१) देखनेवाला; (२) दाना, अक़्लमंद, होशयार ।

बीनाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) देखने की शक्ति; (२) दानाई; अक़्लमंदी, बुद्धिमानी।

बीनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) नाक, नासिका।

बीबी—(तु०) (सं० स्त्री०) (१) बेगम, ख़ानम, ख़ातून, भद्र महिला; (२) पत्नी, जोरू; (३) कुल-बधू, घरवाली, (४) शरीफ़-ज़ादी।

बीबी-ज़न—(वि०) पारसा, साध्वी, नेक-बख़्त, पाक-दामन।

बीम—(फ़ा०) (सं० पु०) डर, भय, ख़ौफ़, अन्देशा।

बीम-नाक—(फ़ा०) (वि०) डरपोक।

बीमा—(फ़ा०) (सं० पु०) ठेका, ज़मानत; क़िस्तों से थोड़ा थोड़ा रुपया देना ताकि मियाद पूरी होने पर या पहले मर जाने पर कुल रक़म मिले।

बीमार—(फ़ा०) (वि०) रोगी।

बीमार-दार—(फ़ा०) (वि०) तीमार-दार, रोगी की सेवा-सुश्रूषा करनेवाला।

बीमार-दारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बीमार की ख़बर-गीरी, सुश्रुषा।

बीमार-पुरसी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बीमार का हाल पूछना।

बीमारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) रोग, मर्ज़, व्याधि; (२) दुःख, कष्ट; (३) आदत, लत।

बीवी—(सं० स्त्री०) देखो—'बीबी'।

बुआ—(हिं०) (सं० स्त्री०) बाप की बहन, फूफी।

बुक़चा—(फ़ा०) (सं० पु०) कपड़े रखने की गठरी।

बुका—(अ०) (सं० स्त्री०) मातम, सोग।

बुक़ा—(अ०) (सं० स्त्री०) जगह, मन्दिर।

बुक्म—(अ०) (वि०) गूंगे।

बुख़ला—(अ०) (सं० पु०) 'बख़ील' का बहुवचन।

बुख़ार—(अ०) (सं० पु०) (१) ज्वर, ताप, हरारत; (२) भाप, धुआँ, अबख़रे; (३) .गुस्सा, रंज, .गुबार, क्रोध या दुःख का आवेग।

बुख़ारात—(फ़ा०) (सं० पु०) भाप, अब-ख़रे। 'बुख़ार' का बहुवचन।

बुख़ारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) कोठरी जो दालान या रसोई में नाज रखने के लिए बनाते हैं।

बुख़्ल—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) कंजूसी, कृपणता, लालच; (२) तंग-दिली, हृदय की संकीर्णता।

बुग़चा—(तु०) (सं० पु०) छोटी गठरी।

बुग़ची—(तु०) (सं० स्त्री०) छोटी सी गठरी जिसमें औरतें सीने-पिरोने का सामान रखती हैं।

बुग़स—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार का बड़ा छुरा।

बुग़ारह—(फ़ा०) (सं० पु०) कपड़े या दीवार का बड़ा छेद।

बुग़्ज़—(अ०) (सं० पु०) दुश्मनी, कीना, द्वेष, वैर।

बुग़्ज़-लिल्लाही—(अ०) (सं० पु०) नाहक़ की दुश्मनी, व्यर्थ का वैर, अकारण-शत्रुता।

बुग़्ज़ी—(अ०) (वि०) बुग्ज़ रखनेवाला, द्वेष रखनेवाला।

बुज़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बकरा, बकरी।

बुज़-अख़फ़श—(फ़ा०) (वि०) नासमझ, बे समझे-बूझे गर्दन हिलानेवाला।

बुज़-दिल, बुज़-दिला—(फ़ा०) (वि०) डरपोक, कम-हिम्मत, कायर।

बुज़-दिली—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) डरपोक-पन, कायरता, कम-हिम्मती।

बु.जुर्ग—(फ़ा०) (वि०) (१) वृद्ध, बड़ा, बड़ा-बूढ़ा; (२) पूज्य, माननीय; (३) गंभीर, शरीफ़, वैभवशाली, शान-शौकत

वाला; (४) बाप-दादा, पुरखा; (५) साधु, महात्मा, पुण्यात्मा।

बु.जुर्ग-ज़ादा—(फ़ा०) (सं० पु०) शरीफ़ ज़ादा, उच्च-कुल का, आली ख़ानदान।

बु.जुर्ग-वार—(फ़ा०) (वि०) (१) वृद्ध, माननीय, बु.जुर्ग; (२) पुरखा, पूर्वज।

बु.जुर्गाना—(फ़ा०) (वि०) बु.जुर्गों की तरह का, बड़ों का सा।

बु.जुर्गी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) अदब, इज़्ज़त, मान, प्रतिष्ठा, शराफ़त, बड़प्पन; (२) वृद्धावस्था; (३) श्रेष्ठता, बड़ाई। कहा०—बु.जुर्गी ब-अक़्ल.स्त न ब-साल—बु.जुर्गी अक़्ल से है, उम्र से नहीं।

बुड़-भस—(हि०) (सं० स्त्री०) बुढ़ापे में जवानी की उमंग, बुढ़ापे की वजह से बुद्धि भ्रष्ट हो जाना।

बुत—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) मूर्ति, प्रतिमा (२) सनम, प्रेमिका, प्रेयसी, (३) ख़ामोश, जो बिलकुल चुप रहे, चुप्पा, मौन; (४) बेवक़ूफ़, मूर्ख; (५) मुक्का, घूंसा; (६) बेहोश, मद-होश।

बुत-कदा, बुत-ख़ाना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) बुत-ख़ाना, मन्दिर; (२) प्रेमिका के रहने का स्थान। बुत-ख़ान-ए-आज़िर—अग्नि-पूजकों का मन्दिर।

बुत-तराश—(फ़ा०) (वि०) बुत या मूर्ति बनानेवाला।

बुत-परस्त—(फ़ा०) (वि०) (१) मूर्ति-पूजक, बुत पूजनेवाला; (२) आशिक़।

बुत-परस्ती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मूर्ति-पूजा।

बुत-शिकन—(फ़ा०) (वि०) मूर्ति तोड़ने-वाला।

बुतान—(फ़ा०) (सं० पु०) 'बुत' का बहुवचन।

बुतून—(अ०) (सं० पु०) भेद, रहस्य, राज़ इरादा।

बुन—(अ०) (सं० पु०) (१) क़हवा, काफ़ी; (२) (स्त्री०) जड़, मूल।

बुन-गाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) जगह, मकान।

बुना-गोश—(फ़ा०) (सं० पु०) कान की लौ।

बुनियाद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) नींव, जड़, मूल; (२) असल, आरंभ; (३) हौसला, शक्ति, साहस, पुरुषार्थ; (४) माल, पूंजी, दौलत।

बुनियान—(अ०) (सं० स्त्री०) इमारत, नींव, ख़लक़त।

बुने-मू—(अ०) (सं० पु०) बाल की जड़, रोयाँ।

बुरक़ा—(सं० पु०) देखो—'बुर्क़ा'।

बुरहान—(अ०) (सं० स्त्री०) प्रमाण, दलील, पक्की दलील।

बुराक़—(अ०) (सं० पु०) (१) बहिश्त का घोड़ा; (२) घोड़ा; (३) वह ताज़िया जिसका धड़ घोड़े की शक्ल का और चेहरा इनसान का-सा बनाते हैं।

बुरादा—(फ़ा०) (स० पु०) चूर्ण, चूरा।

बुरिश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) तेज़ी, काट (तलवार की)।

बुरीदा—(फ़ा०) (वि०) काटा हुआ, तराशा हुआ।

बुरूक़—(अ०) (सं० स्त्री०) 'बर्क़' का बहुवचन।

बुरूज—(अ०) (सं० पु०) 'बुर्ज' का बहु-वचन।

बुरूदत—(अ०) (सं० स्त्री०) सर्दी, ठंढ, ठंडक।

बुर्क़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) नक़ाब; (२) लिबास, पोशाक, वस्त्र; (३) वह ख़ास वस्त्र जिसे पहन कर पर्दा-दार औरतें बाहर निकलती हैं; आँखों पर जाली लगी होती है, सिर से पैर तक सारा शरीर छिपा

रहता है; (४) वह झिल्ली जिसमें बच्चा लिपटा हुआ पैदा होता है।

बुर्क़ा-पोश—(अ०) (वि०) जो बुर्क़ा ओढ़े हो।

बुर्ज—(अ०) (सं० पु०) (१) गुंबद; (२) राशि, नक्षत्र का घर; (३) मीनार का ऊपरी भाग या उसी तरह का कोई हिस्सा; (४) क़िले की दीवार में गोल उठा हुआ गुम्बद की शक्ल का हिस्सा।

बुर्जी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) छोटा बुर्ज; (२) कंगूरा; (३) कलश, गुंबद के ऊपर का गोल हिस्सा; (४) मीनार।

बुर्द—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) मुफ़्त की आमदनी, लाभ, मुनाफ़ा; (२) रिशवत, ऊपरी आमदनी; (३) बाज़ी, आधी मात, शर्त; (४) शतरंज के खेल में वह अवस्था जब एक खिलाड़ी के पास केवल बादशाह बच रहता है। बुर्द देना—(१) आधी मात करना; (२) हारना, खोना। बुर्द मारना—(१) बाज़ी जीतना, कामयाबी पाना; (२) रिशवत लेना। बुर्द हाथ लगना—मुफ़्त की रक़म मिलना।

बुर्दबार—(फ़ा०) (वि०) सहनेवाला, सहनशील।

बुर्दबारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बरदाश्त, सब्र, सहन-शीलता।

बुर्रां—(अ०) (वि०) धार-दार, तेज़ धार वाला।

बुर्राक़—देखो—'बुराक़'।

बुर्रान—(फ़ा०) (वि०) निहायत काट करने वाला, बहुत तेज़।

बुलन्द—(फ़ा०) (वि०) ऊँचा, आली, बुलन्द, बरतर, लंबा।

बुलन्द-अख़्तर—(फ़ा०) (वि०) ख़ुशनसीब, भाग्यवान्।

बुलन्द-परवाज़—(फ़ा०) (वि०) ऊँचा उड़नेवाला, आला-ख़याल, उच्च-विचार वाला।

बुलन्दी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ऊँचाई, लंबाई, ग़रूर।

बुलबुल—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) एक सुरीली चिड़िया जिसकी दुम पर एक सुर्ख़ गुल होता है; कवि इसे गुल का प्रेमी कहते हैं; (२) आशिक़।

बुलबुल-चश्म—(फ़ा०) (सं० पु०) एक रेशमी कपड़ा जिसकी बुनावट खेस की तरह की होती है और उसमें बुलबुल की सी आँखें बनी होती हैं।

बुलबुल-हज़ार-दास्तान—(फ़ा०) (वि०) ख़ुशबयान, मीठा बोलनेवाला।

बुलबुली—(फ़ा०) (वि०) (१) बुलबुल के रंग की; (२) बुलबुल के रंग की शराब।

बुलाक़—(तु०) (सं० स्त्री०) (१) नाक में पहनने का ज़ेवर, (२) नाक के दोनों छेदों के बीच का पर्दा।

बुलूग़—(अ०) (सं० पु०) बालिग़ होना, जवानी की उम्र को पहुँचना, जवानी।

बुलूग़त—(अ०) (सं० स्त्री०) जवानी, बालिग़ होना।

बुसद—(फ़ा०) (सं० पु०) मूंगा, मूंगे की जड़।

बुस्तान—(अ०) (सं० पु०) फूलों का बाग़, गुलज़ार।

बुहतान—(अ०) (सं० पु०) तोहमत, ऐब, बदनामी, इलज़ाम, आरोप।

बुहीरा—(अ०) (सं० पु०) छोटा समुद्र जो चारों तरफ़ स्थल से घिरा हो।

बू—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) बास, गंध; (२) ख़ुश-बू, सुगंध; (३) दुर्गंध, बदबू, सड़ांद; (४) भनक, ख़बर, भेद; (५) आन-बान, शान, निशानी, ढंग, असर।

बूआ—(सं० स्त्री०) बाप की बहन, फूफी।

बू-ए-तिफ़ली—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) लड़कपन का असर।

बूक़—(अ०) (सं० स्त्री०) बग़ल।

बूक़-लमू—(अ०) (सं० पु०) गिरगट।

बूग़-दान—(फ़ा०) (सं० पु०) मदारियों का थैला।

बूग़-बन्द—(फ़ा०) (सं० पु०) सामान रखने का थैला या कपड़ा।

बूज़ना—(फ़ा०) (सं० पु०) बन्दर।

बूज़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार की शराब।

बूज़ी-ख़ाना—(फ़ा०) (सं० पु०) शराब-ख़ाना, मधु-शाला।

बूतात—(अ०) (सं० स्त्री०) उचापत, चीज़ का उधार देना।

बूद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अस्तित्व, हस्ती, वजूद।

बूद-ओ-बाश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) निवास, रहना, सकूनत।

बू-दार—(फ़ा०) (वि०) (१) बदबू देने-वाला; (२) शिकार की बू पर लगा हुआ कुत्ता, (३) वह खुशबू-दार चमड़ा जो यमन (देश) में होता है।

बूबू—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बड़ी बहन, बहन।

बूम—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) उल्लू; (२) जगह, स्थान, भूमि।

बूम-ख़सलत—(फ़ा०) (वि०) मनहूस, वीराना-पसंद, जिसे उजाड़ पसंद हो, उल्लू जैसी प्रकृतिवाला।

बूरानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार का पकवान।

बू-शनास—(फ़ा०) (वि०) जिसकी घ्राण-शक्ति (सूंघने की शक्ति) ठीक हो।

बे—(फ़ा०) (प्रत्यय) (१) निषेध-सूचक या अभाव-सूचक प्रत्यय जो शब्द के पहले लगता है, (२) बग़ैर, बिदून, बिना।

बे-अटकल—(फ़ा०) (वि०) (१) बे-सलीका, बे-शऊर; (२) बे-जोड़।

बे-अदब—(फ़ा०) (वि०) शोख़, शरीर, जो बड़ों का आदर न करे।

बे-अन्दाज़—(फ़ा०) (वि०) हद से ज़्यादा, आवश्यकता से अधिक।

बे-असर—(फ़ा०) (वि०) बेकार, निष्फल, बे फ़ायदा, प्रभाव-हीन।

बे-असल—(फ़ा०) (वि०) ग़लत, निमू ल, निराधार, झूठ, मिथ्या।

बे-आब—(फ़ा०) (वि०) आभाहीन, आभा-रहित, बे-रौनक़।

बे-आबरू—(फ़ा०) (वि०) बे-इज़्ज़त, अप-मानित, प्रतिष्ठा-रहित, ज़लील।

बे-आरामी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (औ०) बे-चैनी, बेकली, कष्ट, तकलीफ़।

बे-इख़्तियार—(फ़ा०) (वि०) (१) बहुत, बेहद; (२) अपने आप, ख़ुद-ब-ख़ुद, बिना इरादा किये; (३) विवश, मजबूर, लाचार।

बे-इख़्तियारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) विवशता, कमज़ोरी, लाचारी।

बे-इज़्ज़त—(फ़ा०) (वि०) ज़लील, बे-आबरू, अपमानित।

बे-इज़्ज़ती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अपमान, अप्रतिष्ठा।

बे-इन्तज़ामी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अव्य-वस्था, गड़बड़।

बे-इन्तिहा—(फ़ा०) (वि०) बेहद, बे-अन्दाज़, निस्सीम, असीम।

बे-इन्साफ़—(फ़ा०) (वि०) अन्यायी, जो न्याय न करे।

बे-इम्तयाज़—(फ़ा०) (वि०) बे अदब, बद-तमीज़, अशिष्ट।

बे-ईमान—(फ़ा०) (वि०) (१) अन्यायी, अधर्मी; (२) नमक-हराम, बद-नीयत, बद-दयानत; (३) दग़ा-बाज़, झूठा।

बे-उनवानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बद-इन्त-ज़ामी, कु-प्रबन्ध, अनियमितता।

बे-ऐतदाली—(फ़ा०) (सं० स्त्री० सीमोल्लं-घन, हद से बढ़ना, बद परहेज़ी।

बे-एतनाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बे-परवाई ।

बे-एतबार—(फ़ा०) (वि०) (१) अविश्वसनीय, जिसका विश्वास न हो, बे-वक़्अत; (२) जो किसी का विश्वास न करे, अविश्वासी ।

बे-ऐब—(फ़ा०) (वि०) निर्दोष, बे-नुक़्स, बे-दाग़, निर्मल ।

बे-क़द्र—(फ़ा०) (वि०) प्रतिष्ठा-हीन, नाचीज़, तुच्छ, बे-इज़्ज़त ।

बे-क़द्रा—(फ़ा०) (वि०) वह आदमी जो गुण-ग्राहक न हो ।

बे-क़द्री—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अप्रतिष्ठा, निरादर ।

बे-कम-ओ-कास्त—(फ़ा०) (वि०) कामिल, ठीक-ठीक, बिना घटाए-बढ़ाए ।

बे-क़यास—(फ़ा०) (वि०) (१) बे-हिसाब, अगणित; (२) ख़याल से बाहर ।

बे-क़रार—(फ़ा०) (वि०) बेचैन, व्याकुल, परेशान ।

बे-क़रीने—(फ़ा०) (वि०) (१) बे-ठिकाने, गड़बड़, अस्त-व्यस्त; (२) परेशान ।

बे-कल—(फ़ा०) (वि०) बेचैन, विकल ।

बे-क़स्द—(फ़ा०) (वि०) बे-इरादे, सहसा ।

बे-क़ाबू—(फ़ा०) (वि०) वश से बाहर, सामर्थ्य से बाहर ।

बे-क़ायदा—(फ़ा०) (वि०) अनियमित, बे-तरतीब ।

बे-कार—(फ़ा०) (वि०) (१) निकम्मा; (२) व्यर्थ; (३) निष्फल । (क्रि० वि०)—व्यर्थ, बे-फ़ायदे ।

बे-कारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) निकम्मा-पन; (२) व्यर्थ होना; (३) बे-रोज़गारी ।

बे-कैफ़ ओ कस—(फ़ा०) (वि०) ठीक-ठीक ।

बे-क़ौल—(फ़ा०) (वि०) बेईमान, धोखेबाज़, वचन भंग करनेवाला ।

बेख़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) जड़, बुनियाद ।

बे-ख़तर—(फ़ा०) (वि०) बे-ख़ौफ़, निडर ।

बे-ख़बर—(फ़ा०) (वि०) (१) बे-होश, अनभिज्ञ, बे-सुध; (२) अनायास, अचानक (३) बे-शऊर ।

बे-ख़ानमा—(फ़ा०) (वि०) बे-घर का, बे-वतन ।

बे-ख़ार—(फ़ा०) (वि०) (१) बिना काँटों का; (२) निडर; (३) वह लड़का जिसके डाढ़ी न निकली हो, नौ-जवान ।

बे-ख़िरद—(फ़ा०) (वि०) बे-अक़्ल, मूर्ख ।

बे-ख़ुद—(फ़ा०) (वि०) (१) आपे से बाहर, मस्त, मतवाला; (२) बे-सुध, बे-होश, मद-होश ।

बे-ख़ुदी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) १) बे होशी बे-सुध होना; (२) बे-ख़बरी ।

बे-ख़ुर्द ओ ख़्वाब—(फ़ा०) (वि०) बिना आराम के ।

बे-ख़्वाबी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) नींद न आना ।

बेग—(तु०) (सं० पु०) (१) सरदार, अमीर, संपन्न; (२) मुग़ल-राज्य की एक उपाधि ।

बेगम—(तु०) (सं० स्त्री०) (१) मलका, रानी; (२) भद्र महिला ।

बे-ग़म—(फ़ा०) (वि०) बे-फ़िक्र, चिन्ता-रहित, निश्चिन्त ।

बे-ग़मी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बेफ़िक्री, निश्चिन्तता ।

बे-ग़रज़—(फ़ा०) (वि०) बे-परवा, उदासीन ।

बेगानगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बेगाना या पराया होना, ग़ैरियत, बे-ताल्लुक़ी ।

बेगाना—(फ़ा०) (वि०) जो अपना न हो, अजनबी, ग़ैर, दूसरे का, परदेसी ।

बेगाना-ख़ू—(फ़ा०) (वि०) अक्खड़, वह जिसकी प्रकृति में मेल-जोल न हो ।

बे-ग़ायत—(फ़ा०) (वि०) इन्तहाई, बहुत ही ज़्यादा, हद का ।

बेगार—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) बिना मज़दूरी दिये काम लेना, बलपूर्वक किसी काम के लिए पकड़ना; (२) वह काम जो ज़बरदस्ती करना पड़े। **बेगार टालना**—किसी काम को बे-मन से करना।

बेगारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बे-मन से काम करनेवाला, बेगार में काम करनेवाला।

बे-गिल ओ ग़श—(१) बे-तकल्लुफ़, अनाप-शनाप, अंधा-धुंदा; (२) बे-फ़िक्री से, बे परवाई से; (३) बहुत, बहुतायत से।

बे-गुनाह—(फ़ा०) (वि०) (१) बे जुर्म, बे-क़सूर, निर्दोष; (२) नाहक़।

बे-गुमान—(फ़ा०) (वि०) बे-शक, बे-शुबहा, निस्सन्देह।

बे-ग़ैरत—(फ़ा०) (वि०) बे-हया, निर्लज्ज, अशिष्ट।

बे-चारा—(फ़ा०) (वि०) दीन, ग़रीब, निस्सहाय।

बे-चूं—(फ़ा०) (वि०) अनुपम, ला-जवाब, बे-मिस्ल।

बे-चूं ओ चरा—(फ़ा०) (वि०) बे-दलील, बे-उज्र, चुपचाप।

बेचैन—(फ़ा०) (वि०) बेकल, व्याकुल, बे-क़रार।

बे-ज़बान—(फ़ा०) (वि०) (१) चुप, ख़ामोश, मौन; (२) ग़रीब, दीन; (३) जो मुँह से अपना हाल न बता सके।

बे-ज़वाल—(फ़ा०) (वि०) पायें-दार, न घटनेवाला, अविनाशी।

बे-ज़र—(फ़ा०) (वि०) दरिद्र, मुफ़लिस। कहा०—**बेज़र इश्क़ टें टें**—बिना रुपये के इश्क़-बाज़ी नहीं होती।

बेजा—(फ़ा०) (वि० (१) अनुचित, ना-मुनासिब; (२) ना-जायज़, नियम-विरुद्ध, ख़िलाफ़-क़ानून; (३) नाहक़, ग़लत।

बेज़ाब्ता—(फ़ा०) बे क़ायदा, अनियमित,

बे-ज़ार—(फ़ा०) (वि०) (१) अप्रसन्न, नाख़ुश, नाराज़, नफ़रत करनेवाला, घृणा करनेवाला; (२) दुःखी।

बे-ज़ारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अप्रसन्नता, नफ़रत, ना.ख़ुशी।

बे-तकल्लुफ़—(फ़ा०) (वि०) (१) बे-बनावट, बे-साख्ता; (२) बे-हिजाब, बे-धड़क, निडर, निस्संकोच; (३) सीधा-साधा।

बे-तकान—(फ़ा०) (वि०) (१) बे-तकल्लुफ़; (२) घोड़े का बहुत तेज़ भागना।

बे-तदबीर—(फ़ा०) (वि०) बे-परवा, निर्द्वन्द।

बे-तमीज़—(फ़ा०) (वि०) (१) अशिष्ट, बे-अदब; (२) फूहड़।

बे-तरतीब—(फ़ा०) (वि०) बे क़ायदा, अस्त-व्यस्त।

बे-तलब—(फ़ा०) (वि०) बे-इजाज़त, अया-चित, बिना बुलाये।

बे-तहाशा—(फ़ा०) (वि०) (१) घबराहट से, (२) बे-सोचे-समझे, बे-धड़क; (३) बहुत, अनाप शनाप।

बे-ताब—(फ़ा०) (वि०) बे-चैन, परेशान, व्याकुल।

बे-ताबाना—(फ़ा०) (वि०) घबराया हुआ, बहुत जल्द।

बे-ताबी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) घबराहट, बे-चैनी, परेशानी।

बे-ताम्मुल—(फ़ा०) (वि०) बे-फ़िक्र, बे-धड़क।

बे-ताल्लुक़—(फ़ा०) (वि०) अलहदा, निर्लिप्त।

बे-तुका—(फ़ा०) (वि०) अनुपयुक्त, ना-मौज़ूं।

बेद—(फ़ा०) (सं० पु०) एक पहाड़ी पेड़ जिसमें फल नहीं आता और पतली तथा ना.ज़ुक होने के कारण उसकी शाखें सदा हिलती रहती हैं।

बेदख़ल—(अ०) (वि०) वंचित, जिसका क़ब्ज़ा या अधिकार न हो।

बे-दख़ली—(अ०) (सं० स्त्री०) बे-क़ब्ज़े होना, निकाला जाना।

बे-दम—(फ़ा०) (वि०) (१) बे-जान; (२) थका-माँदा; (३) बोदा, ख़राब।

बेद-मजनूं—(फ़ा०) (सं० पु०) एक पेड़ का नाम। देखो—'बेद'।

बेद-मुश्क—(फ़ा०) (सं० पु०) एक खुशबू दार पेड़ जिसके फूलों का अर्क़ खींचते हैं और दवा में व्यवहार करते हैं।

बे-दरेग़—(फ़ा०) (वि०) (१) बिना अफ़सोस के; (२) बे-सोचे; (३) बहुत, कसरत से; (४) वह आदमी जिसे किसी बात का इन्कार न हो।

बे-दर्द—(फ़ा०) (वि०) बेरहम, ज़ालिम, निर्दय; (२) माशूक़। कहा०—बे-दर्द क़साई क्या जाने पीर पराई—कठोर-हृदय को दूसरे का दुःख प्रभावित नहीं करता।

बे-दाग़—(फ़ा०) (वि०) (१) बे-धब्बा; (२) निर्मल, स्वच्छ, पाक, साफ़; (३) निर्दोष, बे ऐब, बे-क़सूर।

बे-दाद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अत्याचार, ज़ुल्म-सितम।

बे-दाद-गर—(फ़ा०) (वि०) ज़ालिम, अत्याचारी, निर्दयी।

बे-दाने-पानी—(वि०) बिना खाये-पिये।

बेदार—(फ़ा०) (वि०) जागनेवाला, होशयार, सावधान।

बेदार-बख़्त—(फ़ा०) (वि०) भाग्यवान्, ख़ुशनसीब।

बेदारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) जागने की हालत, जाग्रतावस्था, होशयारी।

बे-दाश्त—(फ़ा०) (वि०) बिना देख-भाल के, बग़ैर ख़बर-गीरी के।

बे-दिमाग़—(फ़ा०) (वि०) नाख़ुश, बद-मिज़ाज, परेशान, व्यग्र।

बे-दिमाग़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) परेशानी, नाख़ुशी।

बे-दिल—(फ़ा०) (वि०) (१) बे-जिगर, बहादुर; (२) रंजीदा, उदास; (३) नाख़ुश, नाराज़; (४) शोकार्त, दुःखी।

बे-दीद—(फ़ा०) (वि०) बे-मुरव्वत, बे-लिहाज़, बेहया, कट्टर, निर्दय।

बे-नज़ीर—(फ़ा०) (वि०) अनुपम, अद्वितीय, लासानी।

बे-नवा—(फ़ा०) (वि०) (१) बे-कस, बे-सामान, दरिद्र; (२) फ़क़ीर; (३) एक मुसलमान फ़िरक़े का नाम जो मज़हबी क़ैदों से आज़ाद रहता है।

बे नाम-ओ-निशान—(फ़ा०) (वि०) बे-पते, बे-ठिकाने, गुमनाम।

बे-नियाज़—(फ़ा०) (वि०) (१) स्वतंत्र, आज़ाद; (२) बे-परवा; (३) जो किसी का मोहताज न हो, जिसे किसी का आश्रय तकने की आवश्यकता न हो।

बे-नियाज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बे-परवाई; स्वतंत्रता, आज़ादी।

बे-पर—(फ़ा०) (वि०) (१) बेपर का, जो उड़ न सके; (२) बेकस, दीन। बे-पर उड़ाना—बेजा तारीफ़ें करना। बे-पर की उड़ाना—गप उड़ाना, झूठी बातें करना।

बे-परी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बे बसी, बे-कसी, दीनता।

बे-पर्दगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) परदा न होना, स्त्रियों का घर से बाहर निकलना।

बे-पर्दा—(फ़ा०) (वि०) (१) पर्दे से बाहर; (२) बिना घूंघट से मुँह ढके; (३) खुल्लम-खुल्ला।

बे-पायाँ—(फ़ा०) (वि०) बे इन्तहा, बे-हद।

बे-पीर—(फ़ा०) (वि०) (१) बे गुरू या पीर का; (२) निर्दय, बे-दर्द, ज़ालिम, बे-रहम; (३) कृतघ्न, निगुरा।

बे-फ़ायदा—(फ़ा०) (वि०) बेकार, व्यर्थ, फ़िज़ूल, निष्प्रयोजन।

बे-फ़ैज़—(फ़ा०) (वि०) कंजूस, कृपण, अनुदार, संकीर्ण-हृदय; (२) जिससे किसी का भला न हो।

बे-बदल—(फ़ा०) (वि०) (१) अद्वितीय, अनुपम, ला-जवाब, ला-सानी; (२) निश्चित, स्थिर-बुद्धि।

बे-बर्ग—(फ़ा०) (वि०) मोहताज।

बे-बस—(फ़ा०) (वि०) नाचार, निस्सहाय, असमर्थ, बेचारा, मजबूर।

बे-बसर—(फ़ा०) (वि०) अंधा।

बे-बहर—(फ़ा०) (वि०) (१) वह शख़्स जो किसी से फ़ायदा न उठाए; (२) अभागा, बद-नसीब; (३) (औ०) आवारा, वाही-तबाही, ख़राब-ख़स्ता; (४) असभ्य, अशिष्ट, बद-तमीज़, गुस्ताख़।

बे-बहा—(फ़ा०) (वि०) बेश-क़ीमत, बहु-मूल्य।

बे-बाक—(फ़ा०) (वि०) (१) निडर, दिलेर; (२) बे-हया, निर्लज्ज; (३) शोख़, गुस्ताख़, आज़ाद।

बे-बाक़—(फ़ा०) (वि०) (१) वह आदमी जो सब ऋण चुकादे, उऋण; (२) चुकाया हुआ, ख़तम। बे-बाक़ करना—क़र्ज़ा चुकाना, हिसाब साफ़ करना।

बे-बाल—(फ़ा०) (वि०) असहाय, बेकस, बे-सामान।

बे-मज़ा—(फ़ा०) (वि०) (१) बे-स्वाद, बे-लुत्फ़; (२) ख़राब; (३) उदास, नाख़ुश।

बे-मसरफ़—(फ़ा०) (वि०) बेकार, बे-फ़ायदा।

बे-महर—(फ़ा०) (वि०) बेरहम, निर्दय।

बे-महल—(फ़ा०) (वि०) बे-मौक़े; बे-वक़्त; अनुपयुक्त, असमय।

बे-मिस्ल—(फ़ा०) (वि०) अनुपम, बे-नज़ीर, लाजवाब, अद्वितीय।

बेमुहार—(फ़ा०) (वि०) बेरोक, स्वच्छंद, बे-नकेल।

बे रंग—(फ़ा०) (वि०) (औ०) बे-मौके।

बे-रंगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वह दशा जिसमें मनुष्य सब सांसारिक सम्बन्धों को त्याग कर केवल परमात्मा का ध्यान करता है।

बे-रहम—(फ़ा०) (वि०) निर्दय, बे-दर्द, ज़ालिम।

बे-रिया—(फ़ा०) (वि०) मन का स्वच्छ, दिल का साफ़, जो मक्कार न हो।

बे-रुख़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बे-मुरव्वती, उदासीनता।

बे-रेश, बे-रेशा—(फ़ा०) (वि०) (१) वह शख़्स जिसके डाढ़ी-मूछें न निकली हों; (२) वह चीज़ जिसमें रगें न हों (बे-रेशे आम)।

बेल—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) फावड़ा, कुदाल, बेलचा।

बेलचा—(फ़ा०) (सं० पु०) छोटी कुदाली, छोटा फावड़ा।

बेलदार—(फ़ा०) (सं० पु०) फावड़े से ज़मीन खोदनेवाला।

बेला—(फ़ा०) (सं० पु०) वह थैली जिसमें दरिद्रों को बाँटने के लिए रुपये रखकर निकलते हैं।

बे-लाग—(फ़ा०) (वि०) साफ़, निष्पक्ष, खरा।

बेला बरदार—(फ़ा०) (सं० पु०) थैली लेकर साथ चलनेवाला।

बे-लिहाज़—(फ़ा०) (वि०) बे-हया, बे-शर्म, गुस्ताख़, निर्लज्ज।

बे-लौस—(फ़ा०) (वि०) शुद्ध, बे-मेल, ख़ालिस।

बे-वक़अत—(फ़ा०) (वि०) बे-ग़ैरत, बे-ऐतबार, बे-क़द्र।

बे-वजह—(फ़ा०) (वि०) बिना किसी कारण के

बे-वफ़ा—(फ़ा०) (वि०) (१) बे-मुरव्वत, जो दोस्ती का पक्का न हो; (२) कृतघ्न।

बे-वहदत—(फ़ा०) (वि०) निर्लज्ज, बे-हया, बे-शर्म, बेहूदा, उजड्ड।

बेवा—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) विधवा, जिसका पति मर गया हो।

बे-वारसी—(फ़ा०) (वि०) (औ०) वह जिसका कोई मददगार न हो। कहा०—बे-वारसी नाव डावां-डोल—बिना मालिक सब काम ख़राब होते हैं।

बे-वास्ते—(फ़ा०) (वि० (औ०) बे वसीला बे-सबब, नाहक़।

बेश—(फ़ा०) (वि०) अच्छा, श्रेष्ठ, अधिक।

बे-शऊर—(फ़ा०) (वि०) नादान, मूर्ख।

बेशक—(फ़ा०) (क्रि० वि०) निस्सन्देह, अवश्य, ज़रूर।

बेशा—(फ़ा०) (सं० पु०) उजाड़, जंगल, बयाबान।

बेशी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वृद्धि, अधिकता ज़्यादती।

बे-शुमार—(फ़ा०) (वि०) बहुत, बे-गिनती, असंख्य।

बे-सख़ुन—(फ़ा०) (वि०) ख़ामोश, चुप, मौन।

बे-सबात—(फ़ा०) (वि०) ना-पायदार, बोदा।

बे-साख़्ता—(फ़ा०) (वि०) (१) बे-तकल्लुफ़, निस्संकोच, बे-फ़िक्र, बे-इरादा; (२) धड़ल्ले से, बे-धड़क, फ़ौरन।

बे-सामानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दरिद्रता, मुफ़लिसी, मोहताजी।

बे-सूद—(फ़ा०) (वि०) बे-फ़ायदा, व्यर्थ, निष्फल, अबस।

बेह—(फ़ा०) (वि०) अच्छा, श्रेष्ठ।

बे-हक़ीक़त—(फ़ा०) (वि०) ज़लील, नीच, नाचीज़।

बेहतर—(फ़ा०) (वि०) मुकाबले में अच्छा। (क्रि० वि०) ऐसा ही सही, ठीक, अच्छा।

बेहतरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) उन्नति, भलाई, कल्याण; (२) अच्छाई, उत्तमता।

बेहतरीन—(फ़ा०) (वि०) देखो—'बेहतर'।

बे-हद—(फ़ा०) (वि०) बहुत अधिक, असंख्य, बेगिनती।

बे-हमैय्यत—(फ़ा०) (वि०) निर्लज्ज, बे-हया, बेशर्म।

बे-हया—(फ़ा०) (वि०) निर्लज्ज, बेशर्म।

बे-हयाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) निर्लज्जता, बेशर्मी।

बे-हवास—(फ़ा०) (वि०) बेहोश, परेशान।

बे-हलावत—(फ़ा०) (वि०) बे-स्वाद, बे ज़ायके, बे-मज़ा।

बे-हाल—(फ़ा०) (वि०) व्याकुल, विकल, बे-चैन, दुर्दशा-ग्रस्त। (क्रि० वि०)—बहुत बुरी दशा में।

बे-हिजाब—(फ़ा०) (वि०) (१) बे-शर्म, बे-लिहाज़; (२) बे-तकल्लुफ़, निस्संकोच; (३) खुले-ख़ज़ाने।

बे-हिजाबाना—(फ़ा०) (वि०) बे-रोक-टोक, खुले-खज़ाने।

बे-हिस—(फ़ा०) (वि०) सुन्न, शून्य, जिसमें गति न हो।

बे-हिसाब—(फ़ा०) (वि०) बे-गिनती, असंख्य।

बे-हुनर—(फ़ा०) (वि०) फूहड़, कला-विहीन।

बे-हुरमत—(फ़ा०) (वि०) ज़लील, प्रतिष्ठा-रहित।

बे-हुरमती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बे-इज़्ज़ती रुसवाई, अप्रतिष्ठा।

बेहूदगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अशिष्टता, फूहड़-पन, बेढंगा-पन, ख़राबी।

बेहूदा—(फ़ा०) (वि०) (१) अशिष्ट, असभ्य; (२) अश्लील; फ़ौश; (३) आवारा; (४) निकम्मा, ख़राब; (५) नाहक़, व्यर्थ, वाहियात।

बेहूदा-गो—(फ़ा०) (वि०) व्यर्थ बकनेवाला।

बेहूदा-गोई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) व्यर्थ बकना; बकवास।

बे-होश—(फ़ा०) (वि०) (१) कम-उम्र; (२) संज्ञा-शून्य; बद-हवास; (३) फ़रेफ़्ता; (४) ग़ाफ़िल, बेख़बर, अनभिज्ञ।

बै—(अ०) (सं० स्त्री०) बेचना, बिक्री।

बैआना—(अ०) (सं० पु०) बयाना, साई।

बैइयत—(अ०) (सं० स्त्री०) मुरीद होना, शिष्यता।

बैज़—(अ०) (सं० पु०) (१) अंडे; (२) अंडकोश। ('बैज़ा' का बहुवचन)।

बैज़वी—(फ़ा०) (वि०) गोल, अंडे के आकार का।

बैज़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) अंडा; (२) अंडकोश।

बैज़ावी—(फ़ा०) (वि०) देखो—'बैज़वी'।

बैत—(अ०) (सं० पु०) घर, स्थान। (सं० स्त्री०)—वह मिले हुए दो मिसरे जिनका वज़न एक हो।

बैत-उल्-अतीक़—(अ०) (सं० पु०) काबा।

बैत-उल्-ख़ला—(अ०) (सं० पु०) टट्टी, पाख़ाना, जाय-ज़रूर।

बैत-उल्-ग़ज़ल—(अ०) (सं० स्त्री०) उम्दा शेर, चुने हुए शेर।

बैत-उल्-माल—(अ०) (सं० पु०) (१) शाही ख़ज़ाना; (२) ला-वारसी माल; (३) ख़ालसा, नज़ूल।

बैत-उल्-मुक़द्दस—(अ०) (सं० पु०) ताज़ीम का घर, काबा, मक्का।

बैत-उल्-हुज़्न—(अ०) (सं० पु०) शोक का घर, रंज का घर (आशिक़ का घर)।

बैत-उल्ला—(अ०) (सं० पु०) ख़ुदा का घर, काबा।

बैदक़—(अ०) (सं० पु०) काबा।

बैन—(अ०) (क्रि० वि०) फ़र्क़, फ़ासला, अन्तर (यौगिक शब्दों में)।

बै-नामा—(अ०) (सं० पु०) बेच-नामा; वह काग़ज़ जिसमें किसी चीज़ के बेचने का इक़रार हो।

बै-बात (बै-बिल-वफ़ा)—(अ०) (सं० स्त्री०) ऐसा रहन जिसमें मियाद के अन्दर रुपया न अदा होने से रहन की हुई जायदाद बिकी हुई समझी जाती है।

बैरक़—(तु०) (सं० पु०) झंडा, निशान।

बैरूं, बैरून—(फ़ा०) (अव्यय) बाहर, अलावा, अलग। (सं० पु०) आस-पास का प्रदेश।

बैरून-जात—(फ़ा०) (सं० पु०) शहर के आस-पास की बस्तियाँ; शहर के बाहर की बस्तियाँ, देहात, मुफ़स्सिलात।

बैरूनी—(फ़ा०) (वि०) बाहरी, बाहर का।

बोग़दान—(फ़ा०) (सं० पु०) मदारी का थैला।

बोग़-बन्द—(फ़ा०) (सं० पु०) गठरी का कपड़ा, एक दुहरा सिया हुआ कपड़ा जिसमें लिहाफ़ और तोशक वग़ैरह बाँध कर रखते हैं।

बोग़या—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) घोड़ों की बीमारी जिसमें सब अंगों से पसीना टपकने लगता है, बन्द-हैज़ा; (२) बैवा; (३) (औ०) कूड़ा-करकट, अला बला; (४) चुड़ैल, बद-शक्ल औरत।

बोज़ा—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार की शराब जो चावल, चने और जौ के आटे से बनती है।

बोता—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सोना.

बच्चा (नर); (३) झाड़ी, छोटा पेड़ जिसकी शाख़ें ज़मीन तक लटकती हैं; (४) मोटा, भद्दा।

बोती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ऊँट का मादा बच्चा।

बोती-मार—(फ़ा०) (सं० पु०) बगला।

बोरिया—(फ़ा०) (सं० पु०) चटाई।

बोरिया-बाफ़—(फ़ा०) (वि०) चटाई बनानेवाला।

बोल—(अ०) (सं० पु०) मूत्र, पेशाब। बोल-बराज़—मल-मूत्र, पेशाब-पाख़ाना। बोल ख़ता होना—पेशाब निकल जाना।

बोश—(अ०) (सं० पु०) (१) शान-शौक़त, वैभव; (२) लुच्चा, शोहदा, पाजी।

बोस-कनार—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) बोसा-बाज़ी; (२) लिपटना और चूमना, चूमना और बग़ल में लेना; चुम्बन और आलिंगन।

बोसा—(फ़ा०) (सं० पु०) चूमना, प्यार करना, चुम्बन, चूमा।

बोसा-बाज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक दूसरे को चूमना।

बोसीदगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सड़ा-गला होना, पुराना होना।

बोसीदा—(फ़ा०) (वि०) सड़ा-गला, पुराना।

बोस्तां, बोस्तान—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) फूलों का बाग़, गुलज़ार; (२) शेख़ सादी की प्रसिद्ध पुस्तक का नाम।

बोहतान—(अ०) (सं० पु०) मिथ्या अभियोग, झूठा इलज़ाम। बोहतान जोड़ना—आरोप लगाना, कलंक लगाना।

भ

भटई—(हि०) (सं० स्त्री०) भाटों की सी प्रशंसा, ख़ुशामद, स्तुति; भाटों का पेशा।

भटक—(हि०) (सं० स्त्री०) मार्ग भूल जाना; तीर का निशाने पर न पड़ना; तुरन्त, शीघ्र (सख़ी से सूम भला जो भटक दे जवाब)। भटका फिरना—मारा-मारा फिरना।

भटना, भट जाना—(हि०) (क्रि०) रंग या मैल का चढ़ जाना, लिहस जाना।

भटयारा, भटियारा—(हि०) (सं० पु०) रोटी पकानेवाला; सराय में यात्रियों को ठहराने व खिलाने का काम करनेवाला। (स्त्री०) भटयारी, भटयारिन। भटयारपन—कमीनापन, नीचता। भटयारख़ाना—(१) ठहरने की जगह; (२) सराय; (३) वह जगह जहाँ शोर-ग़ुल होता हो; नीचों के जमा होने का स्थान।

भट्ठा—(हि०) (सं० पु०) भट्ठी जिसमें ईंटें या चूना पकाया जाता है; ईंट या चूने का कारख़ाना।

भत्ता—(हि०) (सं० पु०) (१) यात्रा का ख़र्च-ख़ुराक; जो नौकरों को वेतन के अतिरिक्त दिया जाय; (२) धौंकनी; (३) उबले हुए चावल।

भत्ती—(हि०) (सं० स्त्री०) किसी घर में मृत्यु हो जाने पर जो भोजन बनता है। भत्ती खाना—मातम करना।

भर्तार—(हि०) (सं० पु०) पति, स्वामी।

भद—(हि०) (सं० स्त्री०) बदनामी; अपमान।

भद्रक—(हि०) (सं० स्त्री०) रस, मज़ा; स्थिरता।

भद्दा—(हि०) (वि०) कुरूप; काहिल।

भदेसल—(हि०) (वि०) गँवारू।

भदैयाँ—(हि०) (सं० पु०) भादों की फ़सल का आम।

भपकना—(हि०) (क्रि०) क्रोध से किसी से कुछ कहना।

भपका—(हि०) (सं० पु०) अर्क़ खींचने का यंत्र।

भपकी—(हि०) (सं० स्त्री०) धमकी; घुड़की।

भपारा—(हि०) (सं० पु०) (१) औटाई हुई दवा; (२) दम, झाँसा, फ़रेब, झूठी बात जो किसी को ख़ुश करके काम निकालने के लिए कही जाय। भपारा देना—किसी औषध को औटा कर उसकी भाप से सिकाई करना। भपारे देना—झाँसा देना, दम देना। भपारे में आना—धोखे में आना; झूठी बातों में फँस जाना।

भबक—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) गरम भाप; (२) तीव्र दुर्गंधि; (३) अग्नि की भड़क; (४) सड़ने की गंध, भकराँद। भबक उठना—भड़कना; ग़ुस्सा हो जाना।

भबकना—(हि०) (क्रि०) बहुत गरम होना; खौलना, भड़कना; लौ निकलना, झुलसना, ग़ुर्राना, ग़ुस्सा होना, क्रोध करना।

भबका—(हि०) (सं० पु०) (१) अर्क़ खींचने का यंत्र, वारुणी यंत्र; (२) तीव्र दुर्गंधि का झोंका; (३) लू, लपट।

भबकी—(हि०) (सं० स्त्री०) धमकी, घुरकी; क्रोध की सूरत बना कर डराना। भबकी देना—डराना, धमकाना। भबकी में आ जाना—डर जाना, धमकी में आ जाना।

भबूत—(हि०) (सं० स्त्री०) भस्म या राख जो योगी अपने बदन पर लगाते हैं। भबूत रमाना—फ़क़ीर हो जाना, जोग सन्यास ले लेना।

भभकना—देखो 'भबकना'।

भभास—(हि०) (सं० पु०) एक राग का नाम, विभास।

भभूका—(हि०) (सं० पु०) (१) आग का शोला, अंगारा; (२) बहुत लाल व चमकता हुआ; (३) बहुत सफेद, गोरा; (४) नटखट, ढीट, चपल; (५) गरम, जलता हुआ। भभूका बनना—क्रोध से लाल हो जाना, आग बगूला होना। भभूके उठना—(दे० औ०) क्रोध के कारण जल हो आना; शरीर जलने लगना।

भभ्भड़—(हि०) (सं० पु०) भीड़, शोर-ग़ुल।

भर—(हि०) पूरा, बराबर (सेर भर, वर्ष भर)।

भर्रा—(हि०) (सं० पु०) झाँसा, दम।

भाँच—(हि०) (सं० स्त्री०) रुपये के पैसे या रेज़गारी भुनाते समय जो कटौती देनी होती है, बट्टा।

भाँजना—(हि०) (क्रि०) बटना, बल देना; छपे हुए काग़ज़ों को मोड़ना या तह करना।

भाँजा—(हि०) (सं० पु०) बहन का बेटा। (स्त्री०) भांजी।

भाँड—(हि०) (सं० पु०) नक़्क़ाल, नाचने गानेवाले जो हँसी मज़ाक़ करते हैं; (२) जिसके पेट में बात न पचे; पेट का हलका, जो बात को जगह-जगह कहता फिरे। भाँड-भगतिये—नक़्क़ालों का पेशा करने वाले।

भाँडा—(हि०) (सं० पु०) (१) बड़ी हाँडी, मिट्टी का बड़ा बर्तन; (२) भेद, रहस्य; माल असबाब। भाँडा फूटना, भाँडा फूट जाना—भेद खुल जाना। भाँडा-फोड़—भेद को खोलनेवाला, भंडा फोड़; गुप्त बात को प्रकट करनेवाला। भाँडा फोड़ना—भेद खोल देना।

भाँत—(हि०) (सं० स्त्री०) तरह; प्रकार, रंग। भाँत भाँत का—तरह तरह का; भिन्न भिन्न प्रकार का।

भाँतिया—(हि०) (सं० पु०) एक मनोहर कबूतर जिसमें कई रंग होते हैं।

भाँपना, भाँप लेना—(हि०) (क्रि०) समझ जाना; जाँच लेना; ताड़ लेना।

भाँवर, भाँवरी—(हि०) (सं० स्त्री०) गति, चारों तरफ़ फिरना; विवाह के समय वर वधू का यज्ञ के चारों ओर फिरना, जिससे विवाह संपन्न होता है।

भाँवली—(हि०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार की रोटी।

भाँवें—(हि०) जाने, समझ में, लेखे (मेरे भाँवें—मेरे जाने, मेरे लेखे); चाहें; प्रभाव, असर।

भाई—(हि०) (सं० पु०) (१) एक ही पिता का पुत्र; (२) प्रेमी मित्र, सम्बन्धी; (३) प्रेम से स्त्री पुरुष एक दूसरे को सम्बोधन करने में इस शब्द का व्यवहार करते हैं।

भाका—(हि०) (सं० स्त्री०) हिन्दी, ब्रज भाषा।

भाग—(हि०) (सं० पु०) १८५७ के विप्लव के लिए व्यवहृत होता है। भाग-भाग—भागने की गड़बड़ या हलचल; बहुत शीघ्र गति से, जल्दी से झपट कर। भागा है! लू लू है? भागते रास्ता न मिलना—जवाब न बन पड़ना। भागते के आगे, मारते के पीछे—डरपोक, कायर मनुष्य। भागते भूत की लंगोटी ही सही—हाथ से बिलकुल जाती हुई वस्तु का थोड़ा सा भाग मिलना ही बहुत है। (क्रि०) भाग जाना—(१) फ़रार हो जाना; रूपोश होना, बेपता हो जाना; (२) मैदान से हट जाना, हिम्मत हार जाना; (भैंस या गाय का) दूध देना बंद कर देना।

भाग—(हि०) (सं० पु०) (औ०) प्रारब्ध, नसीब। भाग जाए, नसीब जागे—क़िस्मत ने साथ दिया, क़िस्मत खुल गई। भाग-भरा—.खुशक़िस्मत, प्रारब्धवान्। भाग फूटना—बदक़िस्मत होना। भाग खुलना, भाग जागना—क़िस्मत का अच्छा होना; मनोकामना पूरी होना; मान-मर्यादा, प्रतिष्ठा प्राप्त होना; दिन फिरना।

भागवान—(हि०) (वि०) .खुश क़िस्मत; धनी, सम्पत्तिशाली; भलामानस।

भाजी—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) पकी हुई तरकारी; (२) वह खाना जो बिरादरी में विवाह इत्यादि के अवसर पर बाँटा जाता है।

भाट—(हि०) (सं० पु०) (१) एक जाति विशेष जो शुभ अवसरों पर वंशावली सुनाते हैं; (२) झूठी प्रशंसा करनेवाला।

भाटा—(हि०) (सं० पु०) (१) बैंगन; (२) समुद्र की लहरों का उतार।

भाड़—(हि०) (सं० पु०) बड़ा चूल्हा; भट्टी; वह भट्टी जिसमें भड़भूँजे चने भूनते हैं। भाड़ झोंकना—(१) सूखे पत्ते इत्यादि डाल कर भाड़ को गरम करना; (२) बुरी तरह जीवन बिताना, कोई लाभ का काम न कर समय नष्ट करना। भाड़ सा भुनना—चटपट मारा जाना। भाड़ में झोंकना, भाड़ में डालना—नष्ट करना; आग में डालना; जाने देना, फेंकना; नाम न लेना। भाड़ में पड़े—(औ०) चूल्हे में जाय (कोसना)। भाड़ से निकला भट्टी में झोंका—छोटी विपत्ति से बड़ी विपत्ति में डाल दिया।

भाड़ा—(हि०) (सं० पु०) (१) किराया; (२) गाड़ी या सवारी की मज़दूरी। भाड़े का टट्टू—(१) किराये का टट्टू; (२) बोदा, जिसमें बार-बार टूट-फूट होती रहे; (३) जो नशे की दशा में ही काम कर सके, जब तक नशा न मिले कुछ भी न कर पावे; (४) जो मज़दूरी पर काम करे या फेरी लगावे; (५) जो बिना लिये काम न करे।

भात—(हि०) (सं० पु०) (१) उबले हुए चावल; (२) विवाह इत्यादि की रस्म जो

नाना मामा की ओर से की जाती है; (३) मीठे चावल। भात होगा तो कव्वे बहुत आ रहेंगे—धन होगा तो ख़ुशामदी बहुत मिल जायँगे।

भानना—(हि०) (क्रि०) भाँजना; बल देना, बटना; ख़राद पर चढ़ाना; घुमाना; रटना।

भानमती—(हि०) (सं० पु० स्त्री०) मदारी, बाज़ीगर। कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा, भानमती ने कुनबा जोड़ा—इधर उधर के चलते फिरते लोगों के जमा होने पर कहा जाता है।

भाना—(हि०) (क्रि०) अच्छा लगना; पसंद आना।

भाप—(हि०) (सं० स्त्री०) गरम हवा जो ताज़ा गरम की हुई या पकाई हुई चीज़ से निकले; या जो आदमी के मुँह से निकलती है।

भापना—(हि०) (क्रि०) देखो—'भाँपना'।

भाभर—(हि०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार की घास जिससे रस्सियाँ बनाई जाती हैं; (२) हल्की काली मिट्टी।

भाभी—(हि०) (सं० स्त्री०) भाई की स्त्री।

भायँ भायँ—(हि०) बछड़े की आवाज़। भायँ भायँ करना—भयानक मालूम होना; सूना लगना।

भार—(हि०) (सं० पु०) बोझ, ज़िम्मेदारी, उत्तरदायित्व।

भारकस—(हि०) (सं० पु०) (१) बोझ लादने का छकड़ा; (२) तस्मा जो ख़ेमे की चोब में लिपटा होता है; (३) तस्मा जो गाड़ी के डंडों को गाड़ी से जकड़ा रखता है।

भारजे—(हि०) (सं० पु०) ख़ुशामदी; साथी; चेले चाँटी, हाशीमवाली।

भारत—(हि०) (सं० पु०) (१) महाभारत, जिसमें कौरव पांडवों के युद्ध का वर्णन है; (२) हिन्दोस्तान।

भारी—(हि०) (वि०) (१) वज़नी, बोझल; (२) गरिष्ट, जो देर से पचे या हज़म हो; (३) मज़बूत; (४) बड़ा, लंबा-चौड़ा; (५) मोटा, स्थूल; (६) सूजा हुआ; (७) उदास; शोक-ग्रस्त, रंजीदा; (८) दूभर, कठिन, कष्ट-प्रद; (९) बैठी हुई, मोटी (आवाज़); (१०) जहाँ भूत-प्रेत का डर हो (मकान भारी है) या शुभ फल-दायक न हो; (११) क़ीमती, मूल्यवान। भारी भरकम—मोटा-ताज़ा; प्रतिष्ठा-प्राप्त; बुर्दबार, गंभीर; बोझल। भारी पत्थर चूमकर छोड़ देना—किसी कार्य को कठिन जानकर छोड़ देना।

भाल—(हि०) (सं० स्त्री०) बरछी का फल; तीर की नोक।

भाला—(हि०) (सं० पु०) बरछा। भाले बरदार—भाला लेकर चलनेवाला; भाला चलानेवाला।

भालू—(हि०) (सं० पु०) रीछ।

भाव—(हि०) (सं० पु०) (१) दशा, कैफ़ियत, उमंग; (२) इशारे, नाज़-अंदाज़; (३) मूल्य, क़ीमत; दर; (४) समझ; (५) स्वभाव, आदत; (६) प्रेम, ममता; (७) ढंग। भाव उतरना—क़ीमत कम होना। भाव बताना—नाच गाने में आँखों या हाथों से गीत के विषय का प्रदर्शन करना। भाव बिगाड़ना—बाज़ार बिगाड़ना, दर ख़राब कर देना। भाव-ताव—मोल तोल। भाव चढ़ाना—क़ीमत बढ़ाना। भाव काटना—दर निश्चित करना। भाव करना—मोल तय करना। भाव निकालना—मूल्य निर्धारित करना। भाव न जाने राव—बाज़ार की क़ीमत पर किसी का अधिकार नहीं चाहे जितनी घट-बढ़ सकती है।

भावज—(हि०) (सं० स्त्री०) भाई की स्त्री।

भाशा—(हि०) (सं० स्त्री०) भाषा, भारत की प्राचीन बोली।

भिचना, भिच जाना—(हि०) (क्रि०) दबना, पिचकना, शर्माना; तंग होना।

भुच—(हि०) (वि०) बहुत मोटा, काला, अनपढ़; नासमझ।

भुजाली—(हि०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार की टेढ़ी छुरी।

भुतना—(हि०) (सं० पु०) भूत, प्रेत; भद्दा, कुरूप; काला कलूटा। (स्त्री०) भुतनी।

म

मंज़िल—(अ०) (सं० स्त्री०) पड़ाव; ठहरने का स्थान; मकान का खन या खंड; लक्ष्य।

मंज़िलत—(अ०) (सं० स्त्री०) पद, आसन, ओहदा।

मं.ज़ूर—(अ०) (वि०) स्वीकृत; माना हुआ, मान लिया गया। मं.ज़ूर करना—मान लेना, स्वीकार करना; अनुमति देना।

मं.ज़ूरी—(अ०) (सं० स्त्री०) स्वीकृति, अनुमति।

मश्र.कूल—(अ०) (वि०) मुनासिब, बजा, ठीक, उचित।

मश्रज़रत—(अ०) (सं० स्त्री०) आपत्ति, उज्र.।

मश्रजून—(अ०) (सं० स्त्री०) माजून, अवलेह; एक चाटने की मीठी औषध।

मश्र.ज़ूर—(अ०) (वि०) लाचार, मजबूर; विवश; क्षमा-योग्य; अपाहिज।

मश्र.ज़ूरी—(अ०) (सं० स्त्री०) लाचारी, विवशता।

मश्रदन—(अ०) (सं० पु०) धातुओं (सोना, ताँबा इत्यादि) की खान।

मश्रदनियात—(अ०) (सं० स्त्री०) खनिज द्रव्य; खान से निकले पदार्थ।

मश्रदनी—(अ०) (वि०) खनिज, खान से निकाला हुआ।

मश्रदलत—(अ०) (सं० स्त्री०) न्याय, इन्साफ़, अदल।

मश्रदह—(अ०) (सं० पु०) आमाशय, पेट।

मश्रदूद—(अ०) (वि०) गिने हुए; गिने गिनाए; थोड़े, कुछ।

मश्रदूम—(अ०) (वि०) नम्र; मिटाया गया।

मश्रबद—(अ०) (सं० पु०) उपासना का स्थान; मन्दिर; देवालय।

मश्रबूद—(अ०) (सं० पु०) ईश्वर, परमात्मा, उपास्य देव; जिसकी पूजा की जाय।

मश्ररका—(अ०) (सं० पु०) मैदान, युद्ध-क्षेत्र; लड़ाई।

मश्ररफ़त—(अ०) (सं० स्त्री०) परिचय; अध्यात्म-विद्या, ईश्वर-ज्ञान।

मश्रमूर—(अ०) (वि०) भरा हुआ; परिपूर्ण; आबाद।

मश्ररूज़—(अ०) (वि०) प्रार्थना, विनय; अर्ज़ किया गया, निवेदन।

मश्ररूज़ा—(अ०) प्रार्थनापत्र; अर्ज़ी।

मश्ररूफ़—(अ०) (वि०) प्रसिद्ध; प्रकट; प्रत्यक्ष।

मश्रलूल—(अ०) (वि०) युक्ति वा तर्क द्वारा सिद्ध किया हुआ। (सं० पु०) कार्य, परिणाम, निष्कर्ष।

मश्रशूक़—(अ०) (सं० पु०) प्यारा; प्रियतम।

मश्रसीत—(अ०) (सं० स्त्री०) गुनाह, पाप।

मश्रसूम—(अ०) (वि०) निर्दोष, बे-गुनाह; भोला; छोटा बच्चा।

मश्राज़-अल्लाह—(अ०) ईश्वर रक्षा करे; भगवान् बचावे।

मश्राद—(अ०) (सं० स्त्री०) लौट कर जाने का स्थान।

मश्रानी—(अ०) (सं० पु०) अर्थ, अभिप्रायः; उद्देश्य।

मश्राल—(अ०) (सं० पु०) अन्त; परिणाम। मश्राल-अन्देश—परिणामदर्शी; जो परिणाम सोचता हो। मश्राल-अन्देशी—परिणामदर्शिता।

मश्राश—(अ०) (सं० स्त्री०) रोटी; जीविका; आजीविका; ज़मींदारी। नेक-मश्राश—भला आदमी। बद-मश्राश—बुरा आदमी।

मश्राशरत—(अ०) (सं० स्त्री०) रहन-सहन; सामाजिक जीवन।

मश्रासिर—(अ०) समसामयिक, सहयोगी; एक ही समय का।

मईशत—(अ०) (सं० स्त्री०) जीविका; दाल-रोटी; आवश्कताएँ।

मकड़ाना—(हि०) (क्रि०) घमंड करना; अकड़ कर चलना।

मक़तश्र (मक़ता)—(अ०) (सं० पु०) ग़ज़ल का अन्तिम शेर, जिसमें कवि का उपनाम भी रहता है।

मकतब—(अ०) (सं० पु०) पाठशाला; विद्यालय; स्कूल।

मक़तल—(अ०) (सं० पु०) क़त्ल करने का स्थान; वध-स्थान।

मकतूब—(अ०) (वि०) लिखा हुआ; लिखित। (सं० पु०) चिट्ठी; पत्र; लेख। मकतूब इलिहा—जिसके लिए पत्र लिखा गया हो; पत्र पानेवाला।

मकतूम—(अ०) (वि०) गुप्त, छिपा हुआ।

मक़तूल—(अ०) जो मार डाला गया हो, जिसका बध किया गया हो; प्रेमी।

मक़दूर—(अ०) (सं० पु०) मजाल; शक्ति; सामर्थ्य।

मकना—(अ०) (सं० पु०) बारीक कपड़ा; बारीक ओढ़नी या चद्दर।

मक़नातीस—(अ०) (सं० पु०) चुम्बक, चुम्बक पत्थर।

मक़फ़ूल—(अ०) (वि०) जायदाद जो रहन रक्खी हो; गिरो रक्खा हुआ माल।

मक़बरा—(अ०) (सं० पु०) रौज़ा; मज़ार; दरगाह; वह इमारत जहाँ किसी की लाश गाड़ी गई हो।

मक़बूज़ा—(अ०) (वि०) जिस पर कब्ज़ा या अधिकार किया गया हो; अधिकृत।

मक़बूल—(अ०) (वि०) माना हुआ; क़बूल किया हुआ; चुना हुआ, पसंद किया हुआ, प्रिय।

मकर—(अ०) (सं० पु०) धोखा, दग़ा, चालाकी, कपट, बहाना। मकर चाँदनी—रात का पिछला हिस्सा जिससे प्रायः प्रभात हो जाने का धोखा हो जाता है; वह काम या चीज़ जो दूसरों को धोखे में डाल दे।

मक़राज़—(अ०) (सं० स्त्री०) क़ैंची, कतरनी।

मक़रूक़ा—(अ०) जो अदालत से कुर्क़ की गई हो।

मक़रूज़ (अ०) (वि०) ऋणी; कर्ज़दार; जिसे कर्ज़ देना हो।

मकरूह—(अ०) (वि०) भद्दा, बेहूदा, गंदा, घृणित।

मकलावा—(हि०) (सं० पु०) विवाह के बाद वधू की विदाई।

मक़लूब—(अ०) (वि०) उल्टा हुआ; पलटा हुआ। (सं० पु०) वह शब्द जो उल्टा सीधा एक सा पढ़ा जाय।

मक़सद—(अ०) (सं० पु०) उद्देश्य; लक्ष्य; अभिप्राय; इच्छा।

मक़सूद—(अ०) (वि०) मतलब, अभिप्राय।

मक़सूम—(अ०) (वि०) बाँटा हुआ; विभक्त, बटवारा किया हुआ। (सं० पु०) (१) भाग्य, क़िस्मत; (२) गणित में भाग करने में भाज्य।

मकसूर—(अ०) (वि०) वह अक्षर जिसमें कसर का निशान लगा हो (इकार)।

मकान—(अ०) (सं० पु०) गृह; रहने का स्थान; संसार, विश्व।

मकाफ़ात—(अ०) (सं० स्त्री०) पाप का कुफल; अशुभ कर्मों का दुष्परिणाम।

मक़ाम—(अ०) (सं० पु०) मकान; ठिकाना घर; ठहरने का स्थान।

मक़ामी—(अ०) (वि०) स्थिर, ठहरा हुआ; स्थानिक, स्थानीय।

मक़ाल—(अ०) (सं० पु०) बात-चीत।

मक़ाला—(अ०) (सं० पु०) कथन, उक्ति; प्रबंध, निबंध; पुस्तक का भाग।

मक़ासिद—(अ०) (सं० पु०) उद्देश्य, अभिप्राय। (मक़सद का बहुवचन)।

मकीन (मकां)—(अ०) मकान का मालिक; मकान में रहनेवाला।

म.कूला—(अ०) (सं० पु०) उक्ति, कहावत, मसला।

मक्का—(अ०) (सं० पु०) मुसल्मानों का अरब-स्थित प्रसिद्ध तीर्थ-स्थान।

मक्कार—(अ०) धोखेबाज़, कपटी, छली।

मक्कारी—(अ०) (सं० स्त्री०) धोखा, फ़रेब, छल, कपट।

मक्र—(अ०) (सं० पु०) मकर, दग़ा, फ़रेब, धोखा।

मख़ज़न—(अ०) (सं० पु०) गोदाम, ख़ज़ाना, कोश।

मख़ज़ूना—गड़ी हुई या दबी हुई चीज़।

मख़तूबा—(अ०) (सं० स्त्री०) वह स्त्री जिसकी सगाई (मंगनी) हो चुकी हो।

मख़दूम—(अ०) (सं० पु०) जिसकी ख़िदमत या सेवा की जाय; स्वामी, मालिक; मुसल्मानों के धर्माचार्य।

मख़दूश—(अ०) (वि०) जिसमें आपत्ति या हानि की आशंका हो, जोखिम का काम।

मखना—(हि०) (सं० पु०) बड़ा हाथी जो झूम झूम कर चलता हो।

मख़बूत—(अ०) (वि०) ख़ब्ती, पागल, सिड़ी। मख़बूत-उल्-हवास—ख़ब्ती, विक्षिप्त, पागल।

मख़मल—(अ०) (सं० स्त्री०) एक बहुमूल्य मुलायम कपड़ा।

मख़मसा—(अ०) (सं० पु०) झमेला, बखेड़ा, झगड़ा, संकट।

मख़मूर—(अ०) (वि०) मत्त, नशे में चूर, मतवाला।

मख़रज—(अ०) (सं० पु०) मुँह; मुहाना, निकलने की जगह; उद्गम-स्थान, व्युत्पत्ति।

मख़रूती—(अ०) (वि०) गावदुम; गाजर की तरह।

मख़लूफ़—(अ०) पैदा किया हुआ, रचा हुआ; बनाया हुआ। (सं० स्त्री०) सृष्टि; रचना। मख़लूक़ात (बहुवचन)।

मख़लूत—(अ०) (वि०) गड-मड; मिला जुला; ख़िल्त-मिल्त, मिश्रित।

मख़फ़ी—(अ०) (वि०) गुप्त; छिपा हुआ; पोशीदा।

मख़सूस—(अ०) (वि०)। विशिष्ट; विशेष रूप से अलग किया हुआ।

मख़ौल—(सं० स्त्री०) हँसी, ठट्ठा; छेड़-ख़ानी, मज़ाक़। मख़ौलिया—हँसोड़, ठठोल, दिल्लगीबाज़।

मग़फ़िरत—(अ०) (सं० स्त्री०) छुटकारा, माफ़ी, क्षमा।

मग़फ़ूर—(अ०) (वि०) मृत, परलोक-वासी।

मग़मूम—(अ०) (वि०) शोक-ग्रस्त; दुःखी, रंजीदा।

मगर—(अ०) पर, परन्तु, लेकिन।

मग़रिब—(अ०) (सं० पु०) पश्चिम दिशा, शाम की नमाज़। मग़रिब की नमाज़—संध्या समय की नमाज़।

मग़रबी—(अ०) (वि०) पश्चिमी, पश्चिम का।

मग़रूर—(अ०) (वि०) अभिमानी, घमंडी।

मग़रूरी—(अ०) (सं० स्त्री०) अभिमान, घमंड।

मग़लूब—(अ०) (वि०) दबा हुआ; पराजित, ध्वस्त।

मग़ल्लिज़—(अ०) गाढ़ा; अश्लील, नापाक; मज़बूत।

मग़शूश—खोटा, अशुद्ध।

मग़स—(अ०) (सं० स्त्री०) मक्खी।

मग़सूब—जिस पर क्रोध हो।

मग़सूल—(अ०) (वि०) धोया हुआ।

मग़्ज़—(अ०) (सं० पु०) दिमाग़; मस्तिष्क; गिरी, गूदा, मींगी।

मग़्ज़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) गोट, हाशिया; किनारी।

मज़कूर—(अ०) (वि०) उक्त, उपर्युक्त; जिसका ज़िक्र आ चुका हो। (सं० पु०) चर्चा, पता, निशान। मज़कूरा-बाला—उपर्युक्त, जिसका ज़िक्र ऊपर हो चुका हो।

मज़कूरी—(फ़ा०) (सं० पु०) प्यादा, चपरासी; समन तामील करनेवाला कचहरी का चपरासी।

मजज़ूब—(अ०) (वि०) (१) खींचा गया, जो जज़्ब हो गया हो; एक-जिगर। (२) ईश्वर-रत, तल्लीन, तन्मय; (उ०) पागल, दीवाना।

मजज़ूम—(अ०) कोढ़ी, कुष्टी।

मजज़ूर—(अ०) (सं० पु०) मुरब्बा, वर्ग (किसी संख्या को उसी से गुणा करना)।

मज़दूर—(फ़ा०) (सं० पु०) कुली, श्रम-जीवी; मेहनती; बोझ उठानेवाला।

मज़दूरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मज़दूर का पेशा; उजरत; मेहनत के बदले में मिला हुआ धन; पारिश्रमिक।

मजनूँ—(अ०) (वि०) क्षीण-काय; अत्यन्त दुर्बल; प्रेमोन्मत्त; पागल।

मज़बूत—(अ०) (वि०) दृढ़, पक्का; बलिष्ट बलवान्।

मज़बूती—(अ०) (सं० स्त्री०) दृढ़ता; ताक़त, बल; कस; साहस, स्थिरता, धैर्य।

मजबूर—(अ०) (वि०) बेबस, तंग; विवश, लाचार। मजबूरन्—विवश होकर, लाचार होकर, तंग आकर।

मजबूरी—(अ०) (सं० स्त्री०) विवशता, लाचारी।

मजमा—(अ०) (सं० पु०) समूह, भीड़; वह स्थान जहाँ बहुत लोग जमा हों।

मजमूआ—(अ०) (सं० पु०) संग्रह; बहुत सी वस्तुओं का एक स्थान पर इकट्ठा करना।

मजमूई—(अ०) (वि०) कुल मिलाकर; एक-त्रित; सब।

मज़मून—(अ०) (सं० पु०) विषय; लेख; प्रबंध।

मज़मूम—(अ०) (वि०) मिलाया हुआ; सम्बद्ध किया हुआ।

मज़रअ—(अ०) (सं० पु०) खेती, खेत; छोटा सा ग्राम।

मज़रूआ—(अ०) (वि०) जोता-बोया हुआ; जहाँ खेती की जाती हो।

मज़रूब—(अ०) (वि०) क्षत; जिस पर चोट पड़ी हो; चुटीयल; जिसका गुणा किया जाय।

मजरूह—(अ०) (वि०) घायल; जिसे घाव या चोट लगी हो; प्रेम में बेचैन।

मजलिस—(अ०) (सं० स्त्री०) जलसा; सभा, समाज, सम्मेलन।

मजलिस-हैरान—एक प्रकार की उत्तम मिस्सी जो स्त्रियाँ होठों पर मलती हैं।

मजलिसी—(अ०) (वि०) मजलिस से सम्बन्धित। (सं० पु०) जो मजलिस में शरीक हो।

मज़लूम—(अ०) (वि०) प्रताड़ित; जिस पर अत्याचार किया गया है।

मज़हका—(अ०) (सं० पु०) मज़ाक़, दिल्लगी, मख़ौल; उपहास का पात्र।

मज़हब—(अ०) (सं० पु०) धर्म; संप्रदाय, मत, पंथ; दीन।

मज़हबी—(अ०) (वि०) धार्मिक, धर्म-सम्बन्धी। (सं० पु०) अछूत सिक्ख।

मजहूल—(अ०) (वि०) (१) सुस्त, निखट्टू, निकम्मा; (२) थका हुआ, शिथिल; (३) अज्ञात।

मज़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) स्वाद, लज़्ज़त; (२) चसका, चाट; (३) ख़ुशी, आनंद; (४) युवावस्था, सौन्दर्य, निखार; (५) लत, आदत; (६) सैर, तमाशा; (७) अवस्था, दशा, हालत, (८) सज़ा; (९) अनोखी बात।

मज़ाक़—(अ०) (सं० पु०) हँसी, दिल्लगी, मख़ौल; रुचि; रस; प्रवृत्ति, आदत; चसका, चखने की शक्ति।

मज़ाक़न्—(अ०) (क्रि० वि०) हँसी में, यों ही।

मज़ाक़िया—(अ०) (वि०) हँसी की, परिहास-पूर्ण; हास्य-प्रिय, दिल्लगीबाज़।

मजाज़—(अ०) (वि०) अधिकार-प्राप्त; अधिकारी, समर्थ। (सं० पु०) सामर्थ्य, अधिकार; योग्यता; पात्रता।

मजाज़ी—(अ०) (वि०) (१) नक़ली, झूठा, (२) सांसारिक; लौकिक।

मज़ामीन—(अ०) (सं० पु०) विषय, लेख, (मज़मून का बहुवचन)।

मज़ामीर—(अ०) (सं० पु०) बाजे; बजाने के यंत्र। (बहुवचन)।

मज़ार—(अ०) (सं० पु०) (१) समाधि, दरगाह, क़ब्र; (२) जहाँ लोग धार्मिक भाव से दर्शन करने जाते हैं।

मजाल—(अ०) (सं० स्त्री०) शक्ति, योग्यता, हिम्मत, साहस; बूता, बस।

मज़ालिम—(अ०) (सं० पु०) ज़ुल्म, क्रूरता, अत्याचार।

मज़ाहमत—(अ०) (सं० स्त्री०) रोक-टोक; दख़ल।

मज़ाहिब—(अ०) (सं० पु०) धर्म; मत; मतमतान्तर। (मज़हब का बहुवचन)।

मज़ाहिर—(अ०) (सं० पु०) प्रकाशित; प्रतीक।

मजीद—(अ०) (वि०) पवित्र और पूज्य-मान्य; (क़ुरान शरीफ़ का विशेषण)।

मज़ीद—(अ०) (वि०) अतिरिक्त; फ़ालतू, अधिक; ज़्यादा।

मज़ेदार—(वि०) स्वादिष्ट, आनंद-प्रद, मनोरंजक। **मज़ेदारी**—(सं० स्त्री०) आनन्द; स्वाद।

मत—(हि०) (सं० स्त्री०) समझ, सम्मति, बुद्धि। (पु०) मज़हब, धर्म।

मतऊन—(अ०) दोषी; लांछित; अभियुक्त।

मतज़ाइद—(अ०) (वि०) बढ़नेवाला, अधिक।

मतन—(अ०) (सं० पु०) (१) मध्य, बीच का भाग; (२) मूल, जिसकी व्याख्या की जाय, सूत्र, (३) पीठ। (वि०) पक्का; दृढ़, मज़बूत।

मतब—(अ०) औषधालय। दवाख़ाना।

मतबख़—(अ०) (सं० पु०) पाकशाला, रसोई, बावर्चीख़ाना।

मतबख़ी—(अ०) (सं० पु०) रसोइया, बावर्ची।

मतबा—(अ०) (सं० पु०) छापाख़ाना, प्रेस।

मतबूअ—(अ०) (वि०) छापा हुआ, पसन्द किया गया।

मतबूख़—(अ०) आग पर पकाई हुई चीज़।

मतब्ब—(अ०) (सं० पु०) औषधालय, दवाख़ाना।

मतरब—(अ०) (सं० पु०) गानेवाला, क़व्वाल।

मतरूक—(अ०) (वि०) परित्यक्त; छोड़ा हुआ; जिसका त्याग कर दिया गया हो।

मतरूद—(अ०) (वि०) निकाला हुआ दुतकारा हुआ।

मतलब—(अ०) (सं० पु०) अभिप्राय, अर्थ, तात्पर्य; हित, स्वार्थ; उद्देश्य, लक्ष्य, सम्बन्ध, वास्ता।

मतला—(अ०) (सं० पु०) (१) उदय होने का स्थान, सूर्य के उदय होने की दिशा, (२) ग़ज़ल के आदि का शेर जिसके दोनों चरणों में तुक मिलती है।

मतलाना—(हि०) (क्रि०) मालिश करना, .कै करने को जी करना।

मतली—(हि०) (सं० स्त्री०) उबकाई, छर्दि।

मतलूब—(अ०) (वि०) अभीष्ट, जो तलब किया गया हो, आवश्यक; मँगाया गया।

मतवाला—(हि०) (वि०) नशे में चूर।

मता-मताअ—(अ०) पूँजी, माल।

मतानत—(अ०) (सं० स्त्री०) गंभीरता; सभ्यता, दृढ़ता, मज़बूती।

मताफ़—(अ०) (सं० पु०) परिक्रमा, चक्कर।

मतीन—(अ०) (वि०) स्थिर-बुद्धि, पक्का, दृढ़। ईश्वर के लिए प्रयुक्त।

मद—(अ०) (सं० स्त्री०) विभाग, सीग़ा; खाता।

मदऊ—(अ०) (वि०) निमंत्रित, बुलाया गया, आमंत्रित।

मद.क़ूक़—(अ०) क्षय या दिक़ का रोगी।

मदख़ला—(अ०) (वि०) दाख़िल किया हुआ, जमा किया हुआ।

मद.ख़ूला—(अ०) (सं० स्त्री०) रखेली, उपपत्नी, बिना विवाह के रक्खी हुई स्त्री।

मदद—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) सहायता, आश्रय, सहारा; (२ मज़दूर।

मददगार—(अ०) (सं० पु०) सहायक, मदद देनेवाला।

मददे—(फ़ा०) (क्रि०) मदद कीजिये, सहायक हूजिए।

मदफ़न—(अ०) (सं० पु०) क़ब्रिस्तान, मुर्दे गाड़ने का स्थान।

मदफ़ून—(अ०) (वि०) (१) गाड़ा हुआ, (२) छिपा कर रक्खा हुआ।

मदरसा—(अ०) (सं० पु०) विद्यालय, पाठशाला।

मदरिया—(सं० पु०) मट्टी का हुक्क़ा।

मद-व-जज़र—(अ०) (सं० पु०) समुद्र का ज्वार भाटा।

मदह—(अ०) (सं० स्त्री०) स्तुति, प्रशंसा। मदह-ख़्वाँ, मदह-सरा—प्रशंसक, तारीफ़ करनेवाला।

मदहत—(अ०) (सं० स्त्री०) प्रशंसा, स्तुति।

मदहोश—(वि०) नशे में मत्त, मतवाला, हक्का-बक्का, भयभीत।

मदहोशी—मतवालापन, बेहोशी।

मदाख़िल—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) भीतर जाने का रास्ता, प्रवेश-द्वार; (२) आय, आमद।

मदाख़लत—(अ०) (सं० स्त्री०) क़ब्ज़ा जमाना, दख़ल करना। मदाख़िलत-बेजा—अनधिकार प्रवेश।

मदार—(अ०) (सं० पु०) (१) दौरा करने का मार्ग, (२) आधार, आश्रय; (३) चूल, धुरी, कीली; (४) एक मुस्लिम फ़क़ीर का नाम जिसका मज़ार मक्खनपुर में है।

मदार-उल्-महाम—(अ०) (सं० पु०) महा मंत्री; प्रधान मंत्री, दीवान।

मदारात—(अ०) (सं० स्त्री०) आदर-सत्कार; मान-प्रतिष्ठा।

मदारिज—(अ०) (सं० पु०) श्रेणियाँ, दरजे, रुतबे।

मदारिस—(अ०) (सं० पु०) पाठशाला, विद्यालय। (मदरसा का बहुवचन)।

मदारी—(अ०) (सं० पु०) भानमती, नट; बाज़ीगर; बंदर रीछ आदि के तमाशे दिखानेवाला; पीर मदार का चेला।

मदीऊन—(अ०) (सं० पु०) क़र्ज़दार, देनदार।

मद्दा—(हि०) (वि०) सस्ता, कम क़ीमत का।

मद्दाह—(अ० प्रशंसक; तारीफ़ करनेवाला।

मन—(फ़ा०) मैं, मेरा।

मन.कूता—(अ०) (वि०) जिस पर नुक्ते या बिंदियाँ लगी हों।

मन.कूल—(अ०) (वि०) (१) स्थानांतरित, एक जगह से उठाकर दूसरी जगह रखा हुआ; (२) नक़ल किया हुआ, उतारा हुआ; (३) उद्धृत।

मनकूला—(अ०) (वि०) चल; जंगम; जो हटाई या उठाई जा सके। जायदाद-मन.कूला—चल या जंगम संपत्ति। जायदाद-ग़ैर-मन.कूला--अचल या स्थावर सम्पत्ति।

मनकूहा—(अ०) (वि०) विवाहिता; जिसके साथ विवाह या निकाह हुआ हो।

मनज़र—(अ०) (सं० पु०) दृश्य; नज़ारा।

मनज़ल (मंज़िल)—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) ठहरने की जगह, पड़ाव, (२) एक दिन भर की यात्रा, (३) दुष्कर कार्य, कठिन काम; (४) मकान का दर्जा या खंड; (५) .क़ुरान शरीफ़ का एक भाग।

मनज़लत—(अ०) (सं० स्त्री०) मान, प्रतिष्ठा, मान्यता।

मनज़ूम—(अ०) (वि०) छन्दोबद्ध; पद्य में लिखा हुआ।

मनज़ूर—(अ०) माना गया, स्वीकार किया गया। मनज़ूर-नज़र—प्यारा, प्रेम-पात्र।

मनफ़ी—(अ०) (वि०) रोका गया, ख़ारिज किया गया; कम किया हुआ।

मनश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) तबीयत, स्वभाव, प्रकृति, आदत।

मनशा—(अ०) (सं० पु०) उद्देश्य, अभिप्राय, इच्छा।

मनसब—(अ०) (सं० पु०) (१) रुतबा, ओहदा, पद; (२) कर्म (३) अधिकार (४) अवसर।

मनसूख़—(अ०) रद किया गया।

मनसूब—(अ०) (वि०) सम्बन्धित, मंगनी किया गया।

मनसूबा—(अ०) (सं० पु०) इरादा, मनशा, युक्ति, ढंग। मनसूबा बाँधना—ठानना, इरादा करना।

मनहसर—(अ०) घेरा हुआ।

मनहूस—(अ०) (वि०) अशुभ, बुरा, अभाग्य सूचक, अमंगलकारी।

मना—(अ०) (वि०) रोका हुआ, निषिद्ध, वर्जित, अवैध, अनुचित।

मनाज़अत—(अ०) (सं० स्त्री०) झगड़ा, तक़रार।

मनाज़िर—(अ०) (सं० पु०) दृश्य, नज़ारे। (बहुवचन)।

मनात—कारण, अभिप्राय, बुनियाद।

मनार, मनारा—(अ०) (सं० पु०) लाठ, ऊँचा खंभ; स्तम्भ।

मनाही—(अ०) (सं० स्त्री०) रोक, निषेध।

मनी—(अ०) (सं० स्त्री०) वीर्य, शुक्र।

मन्तिक़—(अ०) (सं० स्त्री०) तर्कशास्त्र; वक्तृत्व; वाचालता, हुज्जत, वाद-विवाद। मन्तिक़ छाँटना, मन्तिक़ बघारना—बातें बनाना; हुज्जत करना, वितंडा करना।

मन्तिक़ी—(अ०) (सं० पु०) तार्किक, तर्क करनेवाला; हुज्जती, झगड़ालू।

मन्द—(फ़ा०) (प्रत्यय) रखनेवाला जैसे हुनरमंद; दौलतमंद।

मन्सूख़—(अ०) (वि०) रद किया हुआ।

मन्सूख़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) रद करने की क्रिया; निष्फल कराने की क्रिया।

मन्सूब—(अ०) (वि०) सम्बन्ध रखनेवाला, जिसकी मंगनी हुई हो।
मपत—(हि०) (सं० स्त्री०) नाप, पैमायश। मपना—नापा जाना। मपवाना—नाप कराना।
मपान—(हि०) (सं० स्त्री०) नाप, परिमाण।
मफ़ऊल—(अ०) (सं० पु०) जिसके साथ कोई फ़ेल या काम किया जाय; जिसके साथ व्यभिचार किया जाय; (व्याकरण) कर्म।
मफ़क़ूद—(अ०) (वि०) ग़ायब, गुम; खोया हुआ; लापता।
मफ़रत—(अ०) अत्यधिक: हद से ज़्यादा।
मफ़रस—(अ०) अन्य भाषा का शब्द जिसे फ़ारसी बना लें।
मफ़रूक़—(अ०) अलग किया गया।
मफ़रूज़—(अ०) (वि०) माना हुआ; कल्पित; फ़र्ज़ किया हुआ।
मफ़रूर—(अ०) (वि०) भागा हुआ।
मफ़लूक—(अ०) (वि०) तबाह, दुर्दशा-ग्रस्त।
मफ़हूम—(अ०) (सं० पु०) मनशा; अभिप्राय; मन में जाना गया।
मफ़ाद—(अ०) (सं० पु०) लाभ, फ़ायदा।
मफ़ासल—(अ०) (सं० पु०) हड्डी के जोड़, बंद।
मफ़ासिद—(अ०) (सं० पु०) झगड़े, दंगे, विकार। (फ़िसाद का बहुवचन)।
मफ़्तून—(अ०) (वि०) आसक्त; अनुरक्त।
मफ़्तूह—(अ०) (वि०) विजित, जीता हुआ।
मबनी—(अ०) आश्रित, निर्भर।
मबसूत—(अ०) (वि०) फैला हुआ।
मबहूत—(अ०) (वि०) बेहोश, हक्का-बक्का।
मबादी—(अ०) (सं० पु०) आरंभ में सिखाने की बातें; प्रारम्भिक शिक्षा।
मब्दा—(अ०) (सं० पु०) मूल; उत्पत्ति का स्थान; सृष्टि का आदि कारण, ईश्वर।
ममदूह—(अ०) (वि०) जिसकी प्रशंसा या स्तुति की जाय; प्रशंसित।
ममनूअ—(अ०) (वि०) निषिद्ध, वर्जित।
ममनून—(अ०) (वि०) कृतज्ञ, बाधित, अनुगृहीत।
ममात—(अ०) (सं० स्त्री०) मृत्यु, मरण।
ममा—(अ०) (सं० पु०) बहुत से देश; बहुत से प्रान्त (बहुवचन)।
मम्बा—(अ०) (सं० पु०) चश्मा, पानी का सोत; उद्गम।
मफ़हूम—(अ०) (वि०) समझा हुआ, (सं० पु०) वस्तु, पदार्थ।
मयस्सर—(अ०) (वि०) सुलभ, उपलब्ध; जो प्राप्त हो।
मरऊब—(अ०) (वि०) रौब में आया हुआ; डरा हुआ।
मरकूज़—(अ०) (सं० पु०) केन्द्र; मध्य का स्थान; ठहरने का स्थान; किसी चीज़ के खड़ा करने की जगह; धुरी, कीली।
मरक़द—(अ०) (सं० पु०) क़ब्र, समाधि; सोने की जगह।
मरक़ूम—(अ०) (वि०) लिखा हुआ।
मरक़ूमा—(अ०) (वि०) लिखा गया, लिखा हुआ।
मरग़ूब—(अ०) (वि०) रुचिकर, प्यारा, दिलपसंद, प्रिय।
मरग़ूल, मरग़ूलह—(फ़ा०) (वि०) पेचदार, टेढ़ा, बल खाये हुए; घूँघरवाला; (सं०) गिटकरी; पेचीदा आवाज़।
मरजाँ—(फ़ा०) मूँगा।
मरज़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) इच्छा, ख़ुशी, आज्ञा।
मरजूआ—(अ०) लौटाया गया; अदालत में पेश किया गया; दायर किया गया।
मरतूब—(अ०) (वि०) सीला हुआ; गीला, भीगा हुआ।

मरदानगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वीरता, शौर्य, साहस, हिम्मत, बहादुरी।

मरदाना—(फ़ा०) (वि०) वीरोचित; वीर के उपयुक्त; पुरुषोचित।

मरदुम—(फ़ा०) (सं० पु०) मनुष्य, आदमी। **मरदुम-आज़ार**—अत्याचारी; **मरदुम-आज़ारी**—अत्याचार। **मरदुम-शनास**—भले बुरे को पहचाननेवाला।

मरदुमी—साहस, वीरता, शूरता।

मरदूद—(अ०) (वि०) रद्द किया हुआ; परित्यक्त। (सं० पु०) निकम्मा, ज़लील।

मरफ़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) ढोल।

मरमर—(अ०) (सं० पु०) संगमरमर, एक प्रकार का चमकदार चिकना पत्थर।

मरम्मत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) सुधार; जीर्णोद्धार; (२) मार-पीट, सज़ा।

मरवारीद—(फ़ा०) (सं० पु०) मोती, मुक्ता। **मरवारीद-नासुफ़्ता**—बिन बिंधे मोती, जो प्रायः दवा के काम में आते हैं।

मरसिया—(अ०) (सं० पु०) (१) स्तुति, गुण-वर्णन; (२) किसी की मृत्यु पर लिखित कविता, शोकांजलि; (३) मातम, मृत्यु-शोक।

मरसिया-ख़्वाँ—(अ०) (सं० स्त्री०) मरसिया कहनेवाला।

मरसिया-ख़्वानी—(अ०) (सं० स्त्री०) मरसिया पढ़ना या कहना।

मरसिया-गो—(अ०) (सं० पु०) मरसिया पढ़नेवाला; जो मुहर्रम की मजलिसों में मरसिया पढ़ता है।

मरहबा—(अ०) (अव्यय) शाबाश; (प्रशंसा सूचक शब्द)।

मरहम—(अ०) (सं० स्त्री०) चिकनईदार लेप जो घावों पर लगाया जाता है।

मरहला—(अ०) (सं० पु०) (१) मंज़िल, ठिकाना, पड़ाव; (२) कठिन कार्य, समस्या।

मरहून—(अ०) (वि०) वह वस्तु या जायदाद जो रेहन या गिरो रखी गई हो।

मरहूम—(अ०) मृत, परलोकगत।

मरात—(अ०) (सं० स्त्री०) स्त्री; औरत।

मरातिब—(अ०) (सं० पु०) ओहदा, रुतबा; पद; विषय।

मरासिम—(अ०) (सं० पु०) मित्र-भाव, मेल-जोल।

मराहिल—(अ०) (सं० पु०) पड़ाव, मंज़िलें; कठिन समस्याएँ (मरहला का बहुवचन।

मरियम—(अ०) (सं० स्त्री०) कुमारी; ईसा की माता का नाम।

मरीज़—(अ०) (स० पु०) रोगी, बीमार।

मर्ग—(फ़ा०) (सं० पु०) मृत्यु, मौत।

मर्ग़-ज़ार—(फ़ा०) (सं० पु०) चरागाह; वह स्थान जहाँ दूब घास लगी हो; लान।

मर्ज़—(अ०) (सं० पु०) रोग, बीमारी।

मर्तबा—(अ०) (सं० पु०) (१) प्रतिष्ठा, मान, मर्यादा, पद; (२) बार, दफ़ा।

मर्तबान—(अ०) (सं० पु०) अचार रखने का बर्तन; जार।

मर्दक—(अ०) (सं० पु०) नीच मनुष्य; तिरस्कृत व्यक्ति। कह०—उट्ठा शहना मर्दक नाम—पद से हटाए जाने पर मनुष्य का तिरस्कार होता है।

मर्दुम—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) लोग, मनुष्य; (२) सभ्य पुरुष; (३) आँख की पुतली। **मर्दुम-शनास**—अच्छे बुरे आदमी को पहचाननेवाला। **मर्दुम-शुमारी**—मनुष्य-गणना; आदमियों की गिनती। **मर्दुमी**—(सं० स्त्री०) मनुष्यत्व; साहस, वीरता।

मर्दूद—(अ०) अपमानित; निकम्मा; अभागा; ज़लील।

मलऊन—(अ०) (वि०) जिस पर लानत भेजी गई हो।

मलक—(अ०) (सं० पु०) फ़रिश्ता; देवदूत। **मलक-उल्-मौत**—यमदूत।

मलका—(अ०) (सं० पु०) अभ्यास; योग्यता; दक्षता।

मलंग—(फ़ा०) (सं० पु०) मोटा ताज़ा युवा; फ़क़ीर, परमहंस; (स्त्री०) एक छोटी चिड़िया।

मलग़ोबा—(तु०) (सं० पु०) मल, मवाद; गन्दगी; जो बहुत सी चीज़ों से मिलकर गाढ़ी हुई हो।

मलज़ूम—(अ०) (वि०) अनिवार्य; आवश्यक।

मलफ़ूज़—(अ०) (सं० पु०) किसी महात्मा की वाणी; महात्मा के वचनामृत।

मलफ़ूफ़—(अ०) (वि०) लिफ़ाफ़े में बन्द; लपेटा हुआ।

मलबूस—(अ०) (सं० पु०) पोशाक; वस्त्र।

मलहूज़—(अ०) (वि०) जिसका ख़याल या लिहाज़ रखा गया हो।

मलामत—(अ०) (सं० स्त्री०) फटकार; बुरा भला कहना; झिड़की; दूषित अंश।

मलायक—(अ०) (सं० पु०) देवदूत। (मलक का बहुवचन)।

मलाल—(अ०) (सं० पु०) रंज, दुःख, शोक, उदासी, कष्ट।

मलाहत—(अ०) (सं० स्त्री०) लुनाई, नमक, साँवलापन, सौन्दर्य।

मलिक—(अ०) (सं० पु०) बादशाह, सम्राट्।

मलिका—(अ०) (सं० स्त्री०) महारानी, सम्राज्ञी।

मलीदा—(अ०) (सं० पु०) (१) बहुत मुलायम ऊनी कपड़ा; (२) चूरमा।

मलीह—(अ०) (वि०) सलोना, नमकीन, साँवला, सुन्दर।

मलोला—(हि०) (औ०) (सं० पु० मलाल, पछतावा; पश्चात्ताप।

मल्लाह—(अ०) (सं० पु०) नाविक; केवट।

मल्लाही—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) मल्लाह का पेशा; (२) मल्लाह की मज़दूरी; (३) गाली (बिना नाम लिये)।

मवहिद—(अ०) (सं० पु०) एक ही ईश्वर को माननेवाला।

मवाज़ी—(अ०) (वि०) कुल, सब।

मवाद—(अ०) (सं० पु०) (१) सामान, मसाला; (२) पीप, ग़िलाज़त।

मवालात—(अ०) (सं० स्त्री०) सम्बन्ध, सहयोग। **तर्क-मवालात**—असहयोग।

मवाली—(अ०) (सं० पु०) नौकर-चाकर; यार-दोस्त।

मवेशी—(अ०) (सं० पु०) पशु; ढोर, गाय-भैंस।

मशअल—(सं० स्त्री०) मशाल।

मशकूक—(अ०) (वि०) सन्देहयुक्त; संदिग्ध।

मशकूर—(अ०) (वि०) कृतज्ञ, अनुगृहीत।

मशक़्क़त—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) परिश्रम, मेहनत; (२) कष्ट, तकलीफ़, दुःख; आदत।

मशग़ला—(अ०) (सं० पु०) विनोद, मनोविनोद; दिल-बहलाव।

मशग़ूल—(अ०) (वि०) व्यस्त; काम में लगा हुआ।

मशमूल—(अ०) (वि०) मिलाया गया, शामिल किया गया।

मशरब—(अ०) (सं० पु०) (१) पानी पीने का स्थान, झील; (२) धर्म, मत; (३) ढंग।

मशरफ़—(अ०) (सं० पु०) ऊँचा स्थान; प्रतिष्ठित पद।

मशरूअ—(अ०) (वि०) धर्म के अनुसार; धार्मिक व्यवस्था के अनुकूल; एक प्रकार का कपड़ा।

मशरूत—(अ०) (वि०) जिसके बारे में शर्त की गई हो।

मशरूह—(अ०) (वि०) जिसकी टीका की गई हो; सटीक।

मशरिक़—(अ०) (सं० पु०) पूर्व दिशा।

मशरिक़ी—(अ०) (वि०) पूर्व का; पूर्वीय।

मशवरत—(अ०) (सं० स्त्री०) सलाह, परामर्श; षड्यंत्र।

मशहूर—(अ०) (वि०) प्रसिद्ध, विख्यात।

मशाग़िल—(अ०) (सं० पु०) मनोविनोद; खेल-तमाशे।

मशायरा—(अ०) (सं० पु०) कवि-सम्मेलन।

मशाल—(अ०) (सं० स्त्री०) लकड़ी पर कपड़ा लपेट कर और तेल में भिगोकर जलाई जाती है।

मशालची—(सं० पु०) मशाल दिखलाने-वाला।

मशीयत—(अ०) (सं० स्त्री०) इच्छा, खुशी, तबीयत, मन। मशीयत-ए-ज़दी—ईश्वरेच्छा।

मशीर—(अ०) (सं० पु०) सलाह देने वाला।

मश्क—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पानी भरने की खाल।

मश्क़—(अ०) (सं० स्त्री०) अभ्यास।

मश्कूक—(अ०) (वि०) संदिग्ध; जिसमें शक हो।

मश्कूर—(अ०) (वि०) कृतज्ञ, अनुगृहीत, बाधित।

मश्मूल—(अ०) (वि०) सम्मिलित, जो शामिल किया गया हो।

मश्शाक़—(अ०) (सं० पु०) अभ्यस्त, जिसको अभ्यास हो, दक्ष; कुशल; कार्य-क्षम।

मश्शाता—(अ०) (सं० स्त्री०) कुटनी; दूती।

मस—(अ०) (सं० पु०) (१) भाव, रुझान, रुचि; (२) स्पर्श करना; (३) स्त्री प्रसंग।

मसऊद—(अ०) (वि०) नेक, मुबारक।

मसजिद—(अ०) (सं० स्त्री०) मुसल्मानों के नमाज़ पढ़ने का स्थान।

मसदर—(अ०) (सं० पु०) मूल स्थान, उत्पत्ति, जड़, निकलने की जगह, क्रिया का सामान्य रूप।

मसदूद—(अ०) (वि०) बंद किया हुआ; रुका हुआ।

मसनद—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) गद्दी, (२) बड़ा तकिया; (३) तकिया लगाकर बैठने का स्थान।

मसनूअ—(अ०) (सं० पु०) बनाया गया; जो कारीगर ने बनाया हो।

मसनूई—(अ०) (वि०) बनावटी, कृत्रिम, नक़ली।

मसरफ़—(अ०) (सं० पु०) (१) ख़र्च, ख़र्च करना, (२) मतलब, काम, अभि-प्राय।

मसरूक़—(अ०) (वि०) चुराया हुआ।

मसरूक़ा—(अ०) (वि०) चोरी किया गया, चुराया हुआ, चोरी का।

मसरूफ़—(अ०) (वि०) ख़र्च किया गया, काम में लगा हुआ, व्यस्त, मशग़ूल।

मसरूर—(अ०) (वि०) प्रसन्न, हर्षित, उल्लसित।

मसर्रत—(अ०) (सं० स्त्री०) प्रसन्नता, हर्ष उल्लास।

मसल—(अ०) (सं० स्त्री०) लोकोक्ति, कहावत।

मसलख़—(सं० पु०) वह स्थान जहाँ पशुओं को ज़िबह किया जाता है।

मसलन्—(अ०) (क्रि० वि०) उदाहरण के लिये, जैसे, बतौर मिसाल।

मसलह—(अ०) (सं० पु०) सलाह करने-वाला, हानि से रक्षा करनेवाला।

मसलहत—(अ०) (सं० स्त्री०) नेक सलाह, भलाई, उचित बात, नीति।

मसलहतन्—(अ०) (क्रि० वि०) सोच-

समझकर, जानबूझ कर, भलाई के ख़याल से।

मसला—(अ०) (सं० पु०) (१) विचार करने का विषय, प्रश्न, पूँछी हुई बात, (२) लोकोक्ति, कहावत।

मसलूक—(अ०) (वि०) जिसके साथ उपकार किया जाय, उपकृत।

मसलूब—(अ०) (वि०) शिथिल, वृद्ध। मसलूब-उल्-हवास—वृद्धावस्था के कारण जिसकी इन्द्रियाँ शिथिल हो गई हों।

मसलूल—(अ०) (वि०) (१) क्षय-ग्रसित, क्षयी, (२) खींचा हुआ, बाहर निकाला हुआ।

मसवदा—(अ०) (सं० पु०) (१) खाक़ा, मज़मून, ऐसा लेख जिसमें बाद को घटाया बढ़ाया जा सके; (२) युक्ति, तरकीब।

मसह—(अ०) (सं० पु०) हाथ से मलना, हाथ फेरना।

मसाइब—(अ०) (सं० पु०) विपत्तियाँ, क्लेश।

मसाकिन—(अ०) (सं० पु०) घर, रहने के स्थान; (मसकन का बहुवचन)।

मसाकीन—(अ०) (सं० पु०) दरिद्री; धनहीन।

मसाजिद—(अ०) (सं० स्त्री०) मसजिदें। (मसजिद का बहुवचन)।

मसादिर—(अ०) (सं० पु०) मूल स्थान, क्रिया। (मसदर का बहुवचन)।

मसाना—(अ०) (सं० पु०) मूत्राशय, पेट के भीतर की एक थैली।

मसाफ़—(अ०) (सं० पु०) (१) युद्ध; (२) युद्ध-क्षेत्र, मैदान-जंग।

मसाफ़त—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) श्रम, थकान, (२) अन्तर, फ़ासला।

मसाम—(अ०) (सं० पु०) रोम-कूप, शरीर के छोटे छोटे छिद्र जिनसे पसीना निकलता है। मसामात—(बहुवचन)।

मसायल—(अ०) (सं० पु०) प्रश्न, समस्याएँ।

मसारिफ़—(अ०) सं० पु०) तरह तरह के ख़र्च, ख़र्च करने के अवसर।

मसालह—(अ०) (सं० पु०) शुभ बातें, उचित बातें।

मसालहत—(अ०) (सं० स्त्री०) मिलाप, आपस में मेल करना, संधि।

मसाला—(सं० पु०) (१) इमारत बनाने की सामग्री; (२) गोटा, किनारी; (३) लौंग, इलायची वग़ैरह जो भोजन पकाने में काम में लाई जाय; (४) औषधों के कई कामों में आने वाले योग; (५) हर चीज़ के बनाने की सामग्री या सामान।

मसालिक—(अ०) (सं० पु०) राहें, तरीक़े, विधियाँ।

मसास—(अ०) (सं० पु०) मलना, प्रसंग करना।

मसाहत—(अ०) (सं० स्त्री०) नाप, माप, पैमायश।

मसीह, मसीहा—(अ०) (सं० पु०) (१) ईसाई-धर्म के प्रवर्तक ईसा; (२) मित्र, दोस्त; (३) जीवन देनेवाला, जिला देनेवाला।

मसीहाई—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) मसीह के समान कार्य, (२) जीवन-दान देने की क्षमता।

मसौदा—(सं० पु०) मसविदा, मज़मून।

मस्कन—(अ०) (सं० पु०) रहने का स्थान, निवास, घर।

मस्का—(फ़ा०) (सं० पु०) मक्खन, कच्चा घी।

मस्कूड़ा—(हि०) (सं० पु०) करवट का धचका; करवट लेने में जो धचका लगता है।

मस्कनत—(अ०) (सं० स्त्री०) दीनता; ग़रीबी।

मसख़रा—(अ०) (सं० पु०) हँसोड़, ठठोल; दिल्लगीबाज़; हँसमुख !

मस्त—(फ़ा०) (वि०) (१) नशे में चूर; (२) निश्चिन्त; सदा प्रसन्न रहनेवाला, (३) यौवन-मद से भरा हुआ; (४) बेहोश, निश्चिन्त।

मस्तगी—(अ०) (सं० स्त्री०) रूमी मस्तंगी; एक गोंद की तरह की ओषधि।

मस्ती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मतवालापन; कई वृक्षों, पत्थरों, पशुओं से निकलनेवाला रस, मद।

मस्तूर—(अ०) (वि०) गुप्त; छिपा हुआ, लिखित, लिखा गया।

मस्तूरात—(अ०) (सं० स्त्री०) महिलाएँ; पर्दानशीन स्त्रियाँ।

मस्तूल—(पु०) (सं० पु०) ऊँची शहतीर जिसे नाव में खड़ी कर पाल बाँधते हैं।

मस्मूआ—(अ०) (वि०) सुना हुआ।

महक—(अ०) कसौटी।

महकमा—(अ०) (सं० पु०) न्याय व शासन विभाग, सीग़ा; अदालत।

महकूम—(अ०) (वि०) रिआया, अधीन; जिस पर हुकूमत की जाय, प्रजा।

महकूमा—(अ०) (वि०) जिस पर शासन किया जाय।

महज़—(अ०) (वि०) शुद्ध, विशुद्ध; (क्रि० वि०) केवल, सिर्फ़। क़ैद-महज़—सादी सज़ा, क़ैद जिसमें मेहनत न करनी पड़े।

महज़र—(अ०) (सं० पु०) सूचना-पत्र; वह काग़ज़ जिस पर बहुत से लोग हस्ताक्षर करते हैं; मेमोरिअल। महज़र नामा—बहुत से हस्ताक्षरों सहित सूचना-पत्र।

महज़ूज़—(अ०) (वि०) प्रसन्न, ख़ुश।

महजूब—(अ०) (वि०) गुप्त, छिपा हुआ; शर्मिंदा; वंचित किया हुआ।

महजूर—(अ०) (वि०) छोड़ा गया, जुदा किया गया; वियोगी।

महजूरी—(अ०) (सं० स्त्री०) जुदाई, वियोग, विरह।

महताब—(फ़ा०) (सं० पु०) चन्द्रमा, चाँद; चाँदनी; एक प्रकार की आतिशबाज़ी।

महताबी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) एक प्रकार की आतिशबाज़ी; (२) एक बड़ा नीबू, जिसके छिलके का मुरब्बा डालते हैं, बिजौरा; (३ ज़री, बादला; (४) कटहरेदार ऊँचा चबूतरा; (५) तालाब के किनारे की छोटी इमारत जहाँ पर बैठ कर पानी और चाँदनी का आनन्द उठाते हैं।

महदी—(अ०) (सं० पु०) मार्ग-दर्शक।

महदूद—(अ०) (वि०) सीमित, परिमित; जिसकी हद बँधी हो।

महन—(अ०) (सं० पु०) कष्ट, आपदाएँ।

महनत—(अ०) (सं० स्त्री०) श्रम, उद्योग, मज़दूरी, दुःख, कष्ट; काम की मज़दूरी, पारिश्रमिक। महनताना—वकील की फ़ीस।

महफ़िल—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) जलसा, समाज, मजलिस; (२) नाचने गाने की जगह।

महफ़ूज़—(अ०) (वि०) हिफ़ाज़त किया हुआ; बचा हुआ; सुरक्षित। महफ़ूज़ रखना—सँभाल कर रखना।

महबस—(अ०) (सं० पु०) कारागार, जेलख़ाना।

महबूब—(अ०) (सं० पु०) प्रेमी, प्रेम-पात्र; प्यारा।

महबूबियत—(अ०) (सं० स्त्री०) प्रेम, प्यार, प्रीति। महबूबी—प्रेम, प्यार, मुहब्बत।

महबूस—(अ०) (वि०) क़ैदी, बन्दी।

महम—(अ०) (सं० स्त्री०) कठिन कार्य; दुष्कर कार्य; बड़ा काम।

महमिल—(अ०) (सं० पु०) ऊँट का हौदा।

महमूद—(अ०) (वि०) प्रशंसित, सराहा गया।

महमूदी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) एक प्रकार की बारीक मलमल; (२) एक सिक्का।

महमूला—(अ०) (सं० पु०) लदा हुआ; जिस पर बोझ हो; कल्पना।

महमेज़—(अ०) (सं० स्त्री०) लोहे का काँटा जो सवारों की एड़ी में लगा रहता है जिससे घोड़े को एड़ देते हैं।

महर—(अ०) (सं० पु०) रुपया व जायदाद जो विवाह के समय मनुष्य स्त्री को देने का इक़रार करता है। **महर-मुअज्जल**—वह महर जो तत्काल विवाह के समय दिया जाय। **महर-मुवज्जल**—वह महर जो बाद में (जैसे मृत्यु या तलाक़ पर) देना हो।

मह्र—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दया, कृपा; प्रेम, प्यार, मैत्री।

महरबान—(फ़ा०) (वि०) कृपालु; मित्र, सुहृद।

महरम—(अ०) (सं० पु०) (१) अंतरंग मित्र; हार्दिक स्नेही; (२) घनिष्ठ सम्बन्धी (जो ज़नानख़ाने में जा सकता हो); (३) स्त्रियों की चोली की कटोरी। **महरम-राज़**—भेद जाननेवाला। **महरम-कार**—काम में दक्ष।

महराब—(अ०) (सं० स्त्री०) दरवाज़े के ऊपर की गोलाकार बनावट। **महराबदार**—जिसमें महराब हो; कमानीदार।

महरू—(फ़ा०) (वि०) चंद्रमुखी; चंद्रमा के समान मुखवाली।

महरूक़—(अ०) जला हुआ।

महरूम—(अ०) (वि०) वंचित, अभागा; भाग्यहीन।

महरूमी—(अ०) (सं० स्त्री०) अभाग्य, बदनसीबी, वंचित होना।

महरूर—(अ०) (वि०) गरम मिज़ाज का।

महल—(अ०) (सं० पु०) (१) राजाओं के बड़े मकान, राज-प्रासाद; (२) ठहरने का स्थान, ठिकाना; (३) अंतःपुर, रनवास; (४) अवसर, मौक़ा, समय। **महल-ख़ास** सबसे बड़ी रानी या बेगम।

महलसरा—(अ०) (सं० स्त्री०) अंतःपुर, ज़नान ख़ाना।

महली—(अ०) (सं० पु०) हिजड़ा, अन्तःपुर का चौकीदार; ख़्वाजा सरा।

महलूक—(अ०) (सं० पु०) छीला गया।

महल्ला—(अ०) (सं० पु०) नगर का विभाग, पुरा; मंडी।

महल्लेदार—(अ०) (सं० पु०) मुखिया, महल्ले का प्रधान व्यक्ति, मीर-महल्ला।

महशर—(अ०) (सं० पु०) मुसल्मानी मत के अनुसार वह दिन और स्थान जब सब मुर्दे क़ब्रों में से उठकर ज़िंदा होंगे; हंगामा, दंगा।

महसूब—(अ०) (वि०) जो हिसाब में आगया हो, जो हिसाब में लिखा गया हो।

महसूर—(अ०) (वि०) चारों तरफ़ से घेर लिया गया, घिरा हुआ, घेरे में पड़ा हुआ।

महसूरीन—(अ०) (सं० पु०) घेरे में पड़े हुए लोग, घिरे पड़े आदमी।

महसूल—(अ०) (सं० पु०) कर, भाड़ा, किराया, लगान, मालगुज़ारी।

महसूलदार—(सं० पु०) कर देनेवाला, जिस पर टेक्स लगा हो।

महसूली—(अ०) (वि०) जिस पर टेक्स वसूल किया जाता हो।

महसूस—(अ०) (वि०) अनुभूत, जिसका अनुभव हो, जो अनुभव किया जाय।

महसूसात—(अ०) (सं० स्त्री०) अनुभूति, वह वस्तु जिनका अनुभव होता हो।

महाबत—(अ०) (सं० पु०) भय, डर, खुटका। (फ़ा०) (सं० स्त्री०) विभूति, शानशौक़त।

महाम—(अ०) (सं० पु०) दुष्कर कार्य, महान् कार्य।

महार—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ऊँट की नकेल। ऊँट बे महार—बिना नकेल का ऊँट।

महारत—(अ०) (सं० स्त्री०) अभ्यास, निपुणता, दक्षता।

महाल—(अ०) (सं० पु०) (१) गाँव का भाग या हिस्सा; (२) महल्ला, टोला।

महासिल—(अ०) (सं० पु०) पैदावार का कर, आय, फल।

महीब—(वि०) डरावना, भयानक।

महव—(अ०) (वि०) तल्लीन, ध्यान-मग्न; नष्ट किया हुआ, मिटाया हुआ।

महवर—(अ०) (सं० पु०) धुरी, कीली।

मांज—(हि०) (सं० स्त्री०) दलदल, कछार।

माँझा—(हि०) (सं० पु०) (१) डोर सूतने का मसाला; (२) विवाह के पहले जो दावत लड़के के घर दी जाती है; (३) विवाह के पीले वस्त्र।

माँझी—(हि०) मल्लाह, खेवट।

माँद—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) गोबर का ढेर; (२) भिटा, खोह; (२) वह वस्तु जिसकी चमक जाती रही हो। माँद आ बूद—रहने सहने का ढंग।

मा—(अ०) (सं० पु०) जल, पानी; रस, अर्क़। मा—दरमियान, बीच, दौरान। इसके। (मासिवा, मा-क़ब्ल, मा-बाद)।

माइल—(अ०) (वि०) प्रवृत्त, किसी ओर झुका हुआ, ढलवाँ, थोड़ा-सा, कुछ-कुछ। माइल करना—झुकाना, ध्यान दिलाना।

माई—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) मा, बुढ़िया; (२) एक दवा का नाम। माईयों बिठाना—विवाह से पहले कन्या (दुलहिन) को पीले कपड़े पहिना कर एकान्त में बैठाना, जहाँ उसकी घनिष्ठ सहेलियों के अतिरिक्त कोई न जा सके, घर से बाहर न निकलना।

मा-उल्-लहम—(अ०) (सं० पु०) माँस तथा अन्य ओषधियों के योग से खिंचा हुआ एक अर्क़, जो बहुत पौष्टिक होता है।

माकूस—(अ०) (वि०) उलटा, औंधा।

माक़ूल—(अ०) (वि०) (१) उचित; बुद्धि-सम्मत, मुनासिब, ठीक; (२) योग्य, लायक़; (३) जो विरोधी का पक्ष मान जाय, (४) अच्छा, बढ़िया।

माँग—(हि०) (सं० स्त्री०) सिर के बालों के बीच की सीधी लकीर। माँग में आग लगना, माँग उजड़ना—विधवा हो जाना। माँग-भरी—सुहागिन, सौभाग्य-वती। माँग-जली—विधवा।

माग़—(फ़ा०) (सं० पु०) कबूतर की एक जाति।

माख़ूज़—(अ०) (वि०) फँसा हुआ, लिपटा हुआ, अभियुक्त, दोषी।

माख़ूज़ी—(सं०) गिरफ़्तारी।

माख़ालिया—(सं०) जनून, उन्माद।

माचा—(हि०) बहुत बड़ी ऊँची चारपाई; बैलगाड़ी के पीछे की जाली।

माजरा—(अ०) (सं० पु०) घटना, मामला, घटना का वर्णन, हाल।

माजिद—(अ०) (वि०) बुद्धिमान्, बुज़ुर्ग।

माज़िया—(क्रि० वि०) इसके बाद।

माज़िरात—(अ०) (सं० स्त्री०) बहाना; हीला-हवाला; टालमटूल।

माज़ी—(अ०) (वि०) पिछला, गुज़रा हुआ, भूतपूर्व।

माजू, माज़ू—(फ़ा०) (सं० पु०) एक वृक्ष विशेष और उसका फल, माजूफल।

माजून—(अ०) (सं० स्त्री०) औषध-मिश्रित अवलेह।

माज़ूर—(अ०) (वि०) असमर्थ, अयोग्य; लाचार।

माज़ूरी—(अ०) (सं० स्त्री०) असमर्थता; लाचारी, विवशता।

मा.ज़ूल—(अ०) (वि०) पदच्युत, बेकार।

माज़ूली—(अ०) (सं० स्त्री०) पदच्युति।

माझी—(हि०) मल्लाह, नाविक, खेवट।

माट—(हि०) (सं० पु०) (१) मट्टी का बड़ा, मटका; (२) तेल का हौज़।

माठ—(हि०) (सं० पु०) भट्टी।

माठू—(हि०) (१) बंदर की एक जाति; (२) मसख़रा, मूर्ख, भोला।

माँड—(हि०) उबले हुए चावलों का पानी, कलफ़, माँडी।

मात—(अ०) (सं० स्त्री०) शिकस्त, हार, पराजय। (वि०) हारा हुआ, परास्त। **मात करना, मात देना**—हराना, क़ाइल करना, शर्मिन्दा करना। **मात खाना, मात होना**—हार जाना, फीका पड़ जाना।

मातदिल—(अ०) (वि०) समवीर्य; जो न उग्र हो न कोमल; जिसकी तासीर न ठंडी हो, न गरम; समशीतोष्ण।

मातबर—(अ०) (वि०) (१) विश्वसनीय, विश्वास-योग्य; (२) सच्चा, ठीक।

मातबरी—(अ०) (सं० स्त्री०) साख, ईमानदारी।

मातम—(अ०) (सं० पु०) मृत्यु या विपत्ति के अवसर पर समारोह, शोक, सोग, दुःख, ग़मी। **मातम पड़ना, मातम होना**—रोने-धोने का कुहराम होना।

मातम-कदा—(अ०) (सं० पु०) ग़मी का घर, सोग का स्थान।

मातम-ख़ाना—(अ०) (सं० पु०) शोक करने का स्थान, जहाँ बैठ कर सोग मनाते हैं।

मातम-ज़दा—(अ०) (वि०) सोगवार, शोक-ग्रस्त, जिसका सम्बन्धी मर गया हो।

मातमदार—सोगी, सोगवार।

मातमदारी—(अ०) (सं० स्त्री०) ग़मी, शोक करना।

मातम-पुर्सी—(अ०) (सं० स्त्री०) समवेदना; शोक ग्रस्त के साथ सहानुभूति करना।

मातम सरा—सोग का स्थान, ग़मी का घर।

मातमी—(अ०) (वि०) सोगवार; शोक प्रकट करनेवाला, शोक-सूचक, जैसे मातमी जामा, मातमी पोशाक।

मातहत—(अ०) (वि०) अधीन, आश्रित; छोटे दर्जे का, नीची श्रेणी का।

माता—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) मा; (२) चेचक, सीतला। (वि०) मस्त, उन्मत्त।

माथा—(हि०) (सं० पु०) (१) मस्तक, सिर; (२) नाव का अगला हिस्सा। **माथा कूटना, माथा पीटना**—मातम करना, पछताना। **माथा पीटन करना**—दिखलाने को (ज़ाहिरदारी के लिए) राम राम करना। **माथा टेकन**—दंडवत करना। **माथा ठनकना**—पहले से ही आनेवाली बुराई भास जाना। **माथे पर शिकन होना**—चिंता-ग्रस्त होना। **माथे चाँद ठोड़ी तारा**—सुन्दरता का वर्णन। **माथे मढ़ना**—ज़िम्मे डालना।

मादूद—गिने-गिनाये, थोड़े, कुछ।

मादर—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) माता, जननी। **मादर ख़्वार करना**—मा बहन की गाली देना। **मादर ज़ाद**—जन्म का; पैदायशी।

मादर ख़्वाही—(सं० स्त्री०) माँ की गाली।

मादर-ब-ख़ता—(फ़ा०) (वि०) माता से भी न चूकनेवाला; अत्यन्त नीच व चांडाल।

मादरी—(फ़ा०) (वि०) माता का; (मादरी ज़बान-मातृ-भाषा)।

मादा—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) स्त्री जाति; स्त्री।

मादीन—(सं० स्त्री०) मादा।

मादूम—(अ०) (वि०) नष्ट, नाश को प्राप्त; मिटा हुआ।

माद्दा—(अ०) (सं० पु०) (१) मूलतत्व; (२) योग्यता, क्षमता; (३) पीप, मवाद; (४) जिस्म, अस्तित्व।

माद्दी—(अ०) (वि०) स्वाभाविक, प्राकृतिक; तत्व-सम्बन्धी, तात्विक, प्रकृति-गत।

मान—(सं०) आदर, सत्कार, घमंड, नाज़-नखरा। मानमत, मानामन—शोर। मान मर जाना—घमंड जाता रहना। मान रहना—बात रहना; इज़्ज़त रहना।

मानअ—(अ०) (सं० पु०) (१) मनाही, निषेध, रोक; (२) उज्र, आपत्ति; (३) रुकावट डालनेवाला; रोक लगानेवाला।

मानक—(हि०) माणिक्य, एक रत्न; लाल।

मानवी—(अ०) (वि०) भीतरी, आन्तरिक; व्यंजित।

मानिन्द—(फ़ा०) (वि०) समान, सदृश, के ऐसा।

मानी—(अ०) (सं० स्त्री०) अर्थ, आशय, मतलब, अभिप्राय। बेमानी—निरर्थक।

मानो—(हि०) (१) जो औरत घर में दारोग़ा का काम करती है; (२) छोटी छेद दार लकड़ी जो चक्की की कीली में डाली जाती है।

मानूस—(अ०) (वि०) जिसके साथ प्रेम हो; प्रेम-भाव, हिला-मिला।

मान्दगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बीमारी, शिथिलता, थकावट।

मान्दा—(फ़ा०) (वि०) (१) बीमार, रोगी; (२) बचा हुआ, शेष; (३) थका हुआ, शिथिल।

माप—(हि०) सं० स्त्री०) नाप, पैमायश; अंदाज़, जाँच।

माफ़—(अ०) (वि०) जिसे क्षमा किया गया हो।

माफ़िक़—(वि०) अनुसार, अनुकूल।

माफ़िक़त—(सं० स्त्री०) सादृश्य, समानता; अनुकूलता।

माफ़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) क्षमा; (२) वह ज़मीन जिसका लगान माफ़ हो या न लिया जाता हो।

माफ़ीदार—(अ०) (सं० पु०) जिसके पास माफ़ी की ज़मीन हो।

माब—(अ०) (सं०) वह जगह जहाँ मनुष्य लौट कर जाय।

मा-बक़ा—(अ०) (वि०) बाक़ी; बचा हुआ।

माबद— सं० पु०) देव स्थान, मंदिर।

माबाद—(क्रि० वि०) इसके बाद।

माबूद—(सं० पु०) उपास्य देव, ईश्वर।

मा-बैन—(अ०) (क्रि० वि०) इस बीच में।

माम—(हि०) (पु०) (औ०) बिसात, साधन, शक्ति, बूता।

मामता—(हि०) (सं० स्त्री०) प्यार, प्रेम, स्नेह।

मामन—(अ०) (सं० पु०) ठिकाना।

मामला—(अ०) (सं० पु०) (१) काम, कार; (२) झगड़ा, मुक़दमा; (३) व्यवहार, दस्तूर; (४) संभोग; (५) समझौता।

मामा—(लख० मां मां) (फ़ा०) (सं० स्त्री०) दाई, दासी, नौकरानी।

मामगरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दासी की वृत्ति; नौकरी।

मामूर—(अ०) (वि०) (१) मुक़र्रर, हुक्म दिया गया, नियुक्त; (२) पूर्ण, भरा हुआ।

मामूल—(अ०) (सं० पु०) रीति, दस्तूर, रिवाज।

मामूली—(अ०) (वि०) साधारण, सामान्य।

मायल—(अ०) (वि०) (१) झुका हुआ, रुजू; (२) मिला हुआ; (३) कुछ कुछ।

मायह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सम्पत्ति; माल, धन; परिमाण, सत्व।

मायूब—(अ०) (वि०) (१) दोष-पूर्ण, दोष-युक्त; (२) बुरा; (३) निन्दनीय।

मायूस—(अ०) (वि०) निराश, भग्न-मनोरथ, नाउम्मेद।

मायूसी—(अ०) (सं० स्त्री०) नैराश्य, निराशा, नाउम्मेद हो जाना।

मार—(फ़ा०) (सं० पु०) सर्प, साँप, नाग। मारे आस्तीं—आस्तीन का साँप, (जो पास रहकर ही वैर करे)।

मार—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) चोट, धक्का, दुःख, कष्ट; (२) फटकार, लानत; (३) बहुतायत; (४) इलाज, उतार; (५) लालच। मार धाड़—लड़ाई, डाँट-डपट, कहा०—मार के आगे भूत भागे या भागता है—मार के आगे सभी दब जाते हैं।

मारका—(अ०) निशान, छाप।

मारका—(अ०) (सं० पु०) युद्ध क्षेत्र, लड़ाई का मैदान। मारके का—महत्व-पूर्ण।

मारके—(हि०) बेहद, बिलकुल।

मारतौल—(हि०) (सं० पु०) हथौड़ा, मोगरा।

मारफ़त—(अ०) (अव्यय) द्वारा, ज़रिये से (सं० स्त्री०) (१) अध्यात्म-विद्या, ईश्वरीय ज्ञान; (२) परिचय, पहचान; (३) द्वारा, साधन।

मारूत—(अ०) (सं० पु०) एक फ़रिश्ता। (देखो 'हारूत')।

मारूफ़—(अ०) (वि०) प्रसिद्ध, मशहूर, विख्यात।

माल—(अ०) (सं० पु०) (१) सम्पत्ति, जायदाद, धन; (२) लगान, माल गुज़ारी; (३) कोई बढ़िया चीज़; (४) सुन्दर स्त्री, आकर्षक सुन्दरी; (५) परिणाम, फल।

माल-अंदेश—(वि०) अग्र शोची, परिणाम-दर्शी, दूर-अन्देश।

माल-अंदेशी—(सं० स्त्री०) दूर अन्देशी; परिणाम-दर्शिता।

माल-ए-ग़नीमत—(अ०) (सं० पु०) दुश्मन का माल; लूट का माल।

माल-ए-मनक़ूल—(अ०) (सं० पु०) चल या जंगम संपत्ति।

माल-ए-मुफ़्त—(अ०) (सं० पु०) मुफ़्त का माल, हराम का माल। कहा०—माले मुफ़्त दिले बेरहम—बिना मेहनत की कमाई वैसे ही फ़िज़ूल ख़र्च कर दी जाती है।

माल-ए-लावारिस—(अ०) (सं० पु०) लावारसी माल, ऐसा माल जिसका कोई हक़दार न हो।

माल-ए-वक़्फ़—(अ०) (सं० पु०) देवोत्तर सम्पत्ति. किसी धर्म के काम के लिए दी गई सम्पत्ति।

मालकियत—(अ०) (सं० स्त्री०) स्वामित्व; पूर्ण अधिकार।

माल ख़ाना—(अ०) (सं० पु०) भंडार, कोष; जहाँ माल असबाब रक्खा जाता है।

माल-गुज़ार—(सं० पु०) ज़मींदार, जो मालगुज़ारी दे।

माल गुज़ारी—(सं० स्त्री०) भूमिकर, ज़मीन का लगान जो सरकार को दिया जाता है।

माल-ग़ैर-मनक़ूला—(अ०) (सं० पु०) अचल या स्थावर सम्पत्ति।

मालज़ादा—(अ०) (सं० पु०) हराम का बच्चा, भड़ुआ, वेश्या-पुत्र।

मालज़ामिन—(अ०) (सं० पु०) जो किसी के क़र्ज़ की ज़मानत करे।

मालदार—(अ०) (वि०) धनाढ्य, धनी, सम्पत्तिशाली, रुपयेवाला।

मालदारी—(सं० स्त्री०) अमीरी, सम्पन्नता, धनाढ्यता।

माल-मक़रूक़ा—(अ०) (सं० पु०) कुर्क किया हुआ माल।

माल-मतरूका—(अ०) (सं० पु०) जो उत्तराधिकार में मिला हो; विरासत में मिला हुआ।

माल-मस्त—(अ०) (वि०) धन के कारण निश्चिन्त।

माल-मस्ती—(सं० स्त्री०) धन का अभिमान।

माल-सायर—(अ०) (सं० पु०) चुंगी या अन्य टेक्सों द्वारा आमदनी।

माल-हराम—बुरी कमाई, चोरी का माल।

माला—(हि०) (दे० में स्त्री०) (लख० में पु०) हार।

मालामाल—(वि०) धनी, बहुत सा धन इकट्ठा करनेवाला।

मालिक—(अ०) (सं० पु०) (१) स्वामी; (२) पति, (३) ईश्वर; (४) सरदार।

मालिकाना—(वि०) मालिक के तौर पर। (सं० पु०) वार्षिक या मासिक कर या जिन्स जो मालिक को उसके स्वामित्व के नाते मिलता है।

मालियत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) जमा-पूँजी, धन, सम्पत्ति; (२) दाम, मूल्य; (३) जाँच।

मालिश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मलना, रगड़ना, कै करने को जी चाहना। जी मालिश करना—कै करने को जी चाहना।

माली—(अ० फ़ा०) (वि०) (१) आर्थिक, धन-सम्बन्धी; (२) राज्यकर-सम्बन्धी। (सं०) बाग़वान।

माली ख़ोलिया—(पु०) उन्माद, पागलपन।

मालीदा—(फ़ा०) एक प्रकार का कपड़ा।

मालूम—(अ०) (वि०, ज्ञात, जाना हुआ।

मावार—(अ०) (सं० पु०) ठिकाना, घर।

माश—(अ०) (सं० पु०) (१) उर्द; जादूगर। माश का पुतला—गोरा-चिट्टा, सुन्दर। माशी—उर्द के रंग का।

माशा—(बंगला) (१) महाशय, जनाब; (२) आठ रत्ती की तोल, तोले का बारहवाँ हिस्सा। माशा तोला होना—सुकुमार होना, हालत बदलती रहना।

माशा अल्लाह—(अ०) ईश्वर कुदृष्टि से बचावे।

माशूक़—(अ०) (वि०) प्रेम-पात्र; प्रेयसी।

माश्की—(फ़ा०) (सं० पु०) भिश्ती, सक्क़ा।

मासबक़—(अ०) (वि०) उपर्युक्त, उक्त।

मासर—(अ०) (सं० पु०) अच्छे काम।

मा-सल्फ़—(अ०) (वि०) जो पहले हुआ हो; भूतपूर्व।

मासियत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) अपराध, गुनाह; (२) आज्ञोल्लंघन।

मा-सिवा—(अ०) (अव्यय) इसके अतिरिक्त, अलावा इसके।

मासूम—(अ०) (वि०) (१) निर्दोष, निरपराध, निरीह; (२) छोटा बच्चा।

मासूमियत—(अ०) (सं० स्त्री०) निरीहता, शैशव।

माह—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) चंद्रमा, चाँद, (२) मास, महीना। माह-पारा—चाँद का टुकड़ा; सुन्दर।

माह-ए-क़मरी—(फ़ा०) (सं० पु०) चन्द्र मास; जो महीना चन्द्रमा के हिसाब से माना जाता है।

माह-ए-शम्सी—(फ़ा०) (सं० पु०) सौर मास, सूर्य के हिसाब से माने जानेवाला महीना।

माह-ज़बीं—(फ़ा०) (वि०) चन्द्र-मुखी, सुन्दर।

माहज़र—(अ०) (वि०) वर्तमान, उपस्थित, मौजूद, हाज़िर।

माहताब (महताब)—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) चन्द्रमा; (२) चाँदनी।

माहताबी—(फ़ा०) (वि०) चाँदनी में रख कर बना हुआ।

माह-ब-माह—(क्रि० वि०) हर महीने, प्रति मास।

माहर—(अ०) (वि०) अच्छा जानकार; पंडित।

माहरू—(वि०) चन्द्रमा के समान मुख वाला।

माह-रुख़ा—(वि०) चन्द्रमुखी, शशिमुखी।

माहवार—(फ़ा०) (क्रि० वि०) हर महीने, प्रतिमास।

माहवारी—(फ़ा०) (वि०) हर महीने का, मासिक।

मा-हसल—(अ०) (सं० पु०) (१) उपज, पैदावार; (२) प्राप्ति; (३) निष्कर्ष, फल।

माहियत—(अ०) (सं० स्त्री०) वास्तविक गुण; तत्व, असलियत; तथ्य।

माहिर—(अ०) (वि०) अच्छा जानने-वाला।

माही—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मछली।

माही-ख़्वार—(फ़ा०) (सं० पु०) बगला, मछली खानेवाला।

माहीगीर—(फ़ा०) (सं० पु०) मछली पकड़नेवाला, मछुआ।

माहीपुश्त—(फ़ा०) (वि०) उभारदार; जिसकी पीठ उभरी हो।

माही-फ़रोश—(फ़ा०) (सं० पु०) मछली बेचनेवाला।

माही-मरातिब—(फ़ा०) (सं० पु०) नवाबों के आगे हाथियों पर चलनेवाले सात झंडे जिनपर मछलियों की शकलें बनी रहती थीं।

माहू—(हि०) (सं० स्त्री०) कनसलाई; वर्षा ऋतु का एक कीड़ा।

मिअयार—(अ०) (सं० पु०) (१) कसौटी, सोना तौलने का काँटा।

मिआद—(अ०) (सं० स्त्री०) मुद्दत, निर्दारित समय।

मिक़द—(अ०) (सं० स्त्री०) गुदा।

मिक़दार—(अ०) (सं० स्त्री०) परिमाण, मात्रा।

मिक़नअ—(अ०) (सं० पु०) एक प्रकार की ओढ़नी।

मिक़नातीस—(अ०) (सं० पु०) चुम्बक।

मिक़यास—(अ०) (सं० पु०) (१) अनुमान, अन्दाज़; (२) अंदाज़ लगाने का साधन।

मिक़राज़—(अ०) (सं० स्त्री०) कैंची, कतरनी।

मिज़ह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) आँख का पलक।

मिज़गाँ—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) आँखों के पलक।

मिज़मार—(अ०) (सं० पु०) बाजा, बाँसरी।

मिज़राब—(अ०) (सं० स्त्री०) तार का नोकदार छल्ला जिसे उंगली में पहन कर सितार बजाते हैं।

मिज़ाज़—(अ०) (सं० पु०) (१) तबीयत, शरीर व मन की दशा; (२) प्रकृति, स्वभाव, (३) प्रभाव; किसी पदार्थ का विशेष गुण; (४) अभिमान, घमंड।

मिज़ाज़ी—(सं० स्त्री०) घमंड करनेवाली स्त्री।

मिनक़ार—(अ०) (सं० पु०) (१) पक्षी की चोंच; (२) लकड़ी में छेद करने का बरमा।

मिन-जानिब—ओर से।

मिन-जुमला—इनमें से।

मिनहा—(अ०) (वि०) घटाया हुआ; मुजरा किया हुआ।

मिनहाई—(अ०) (सं० स्त्री०) घटाने की क्रिया।

मिन्तक़ा—(अ०) (सं० पु०) कमरबंद, पटका।

मिन्नत—(अ०) (सं० स्त्री०) प्रार्थना, स्तुति, विनय।

मिम्बर—(अ०) (सं० पु०) (१) मसजिद में वह ऊँचा चबूतरा जिस पर बैठकर मुल्ला उपदेश देता है; (२) वह लकड़ी का ज़ीना जिस पर बैठकर मरसिया पढ़ते हैं।

मियाँ—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) स्वामी, पति; (२) आदर सूचक संबोधन, महाशय, महानुभाव; (३) मुसलमान।

मियान—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) मध्यभाग, बीच; (२) कमर; (३) तलवार या किसी हथियार का ग़िलाफ़ या घर।

मियाना—(फ़ा०) (वि०) बीच का; मझोले आकार का। (सं० पु०) (१) केन्द्र, मध्य-भाग; (२) पालकी।

मियानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पाजामे के बीच का भाग।

मिरज़ई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) कमर तक आनेवाला एक प्रकार का छोटा अंगरखा।

मिरज़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) मीरज़ादा; सरदार का लड़का, शाहज़ादा। मिरज़ा फोया या फोहा—सुकुमार, दुबला-पतला; सुस्त, काहिल।

मिरज़ाई—(अ०) (सं० स्त्री०) मिरज़ा की उपाधि; मिरज़ापन।

मिराक़—(अ०) (सं० पु०) एक प्रकार का उन्माद, पागलपन।

मिरात—(अ०) (सं० स्त्री०) दर्पण, आईना।

मिरीख़—(अ०) (सं० पु०) मंगल (ग्रह)।

मिलाद—(अ०) (सं० पु०) जन्म-समय; पैदा होने का वक़्त।

मिल्क—(अ०) (सं० स्त्री०) ज़मींदारी; मकान; अध्यक्षता।

मिल्कियत—(अ०) (सं० स्त्री०) स्वामित्व; सम्पत्ति; मूल्य।

मिल्की—(अ०) (सं० पु०) ज़मींदार, (वि०) ज़मींदारी-सम्बन्धी।

मिल्लत—(अ०) (सं० स्त्री०) मज़हब, दीन, धर्म।

मिशरब—(अ०) (सं० पु०) (१) धर्म, मत; (२ रीति-रिवाज; (३) पानी का चश्मा, सोत; (४) पानी पीने की जगह।

मिश्क—(फ़ा०) (सं० पु०) मुश्क, कस्तूरी, मृग-नाभि।

मिस—(फ़ा०) (सं० पु०) ताँबा, ताम्र।

मिसदाक़—(अ०) (सं० पु०) साक्षी, गवाह; प्रमाण।

मिसरा—(अ०) (सं० पु०) छंद का एक चरण।

मिसरी—(अ०) (सं० पु०) (१) मिस्र देश का रहनेवाला; (२) मिस्र देश की भाषा, ईजिप्शीयन; (३) कंद, रवेदार शक्कर।

मिसल—(अ०) (सं० स्त्री०) मुक़दमे के काग़ज़-पत्र।

मिसवाक—(अ०) (सं० स्त्री०) दातून।

मिसाल—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) उदाहरण, नज़ीर; (२) उपमा, तुलना; (३) कहावत।

मिसी—(अ०) (वि०) ताँबे का।

मिस्क—(अ०) (सं० पु०) मुश्क, कस्तूरी।

मिस्कल—(अ०) (सं० पु०) तलवार साफ़ करने का औज़ार।

मिस्कीन—(अ०) (वि०) बेचारा, सीधा-सादा; दीन, दुःखी।

मिस्कीनी—(अ०) (पु० स्त्री०) दीनता; ग़रीबी; धनहीनता।

मिस्कौट—(अंग०) सलाह, मशवरा।

मिस्तर—(अ०) (सं० पु०) वह काग़ज़ जिस पर बराबर बराबर दूरी पर डोरे लगा देते हैं, जिससे दूसरे काग़ज़ों पर सीधी लकीरें बन जायँ।

मिस्मार—(अ०) (वि०) टूटा-फूटा; ढाया हुआ; खंडहर।

मिस्ल—(अ०) (वि०) समान, सदृश।

मिस्सी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) स्त्रियों के लगाने का एक प्रकार का काला दन्त मंजन; (२) वेश्याओं की प्रथम समागम की रस्म।

मिह्मीज़—(अ०) (सं० स्त्री०) लोहे का काँटा जो घोड़े के एड़ने को सवार की एड़ी में लगा रहता है।

मीज़ान—(अ०) (सं० पु०) (१) जोड़, योग; (२) तराज़ू, तुला, (३) तुला राशि।

मीना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सोने चाँदी पर किया जाने वाला रंगीन काम; (२) शराब रखने का पात्र।

मीनाकार—(फ़ा०) (सं० पु०) चाँदी सोने पर मीना करनेवाला।

मीनाकारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मीने का काम।

मीनार—(अ०) (१) दीपक रखने का ऊँचा स्थान; (२) ऊँचे खंभे; (३) निशानी जो मार्ग पर बनाते हैं, जिससे दूरी का पता लग जाय।

मीयाद—(अ०) (सं० स्त्री०) मुद्दत, नियत समय, अवधि।

मीयादी—(अ०) (वि०) जिसमें कोई अवधि तय की गई हो।

मीर—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सरदार, नायक, चौधरी, नेता; (२) धर्माचार्य; (३) सैयदों की उपाधि; (४) जो किसी काम या परीक्षा में प्रथम आवे; (५) ताश के पत्तों में बादशाह।

मीर-अदल—(फ़ा०) (सं० पु०) न्यायाध्यक्ष, प्रधान न्यायाधीश।

मीर-आख़ोर—(फ़ा०) (सं० पु०) अस्तबल का अध्यक्ष।

मीर-आतिश—(फ़ा०) (सं० पु०) तोपख़ाने का प्रधान कर्मचारी।

मीरज़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सरदार; (२) शाहज़ादा, (३) मिरज़ा।

मीर-तुज़क—(फ़ा०) (सं० पु०) जलूस का मुख्य प्रबन्ध-कर्ता।

मीर फ़र्श—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) वह पत्थर या अन्य भारी चीजें जो चाँदनी या फ़र्श के चारों कोनों पर उन्हें दबाने के लिए रख दिये जाते हैं; (२) वह मनुष्य जो अपनी जगह से न हटे।

मीर-बख़्शी—(फ़ा०) (सं० पु०) वेतन बाँटनेवाला अधिकारी।

मीर-बह्र—(फ़ा०) (सं० पु०) जहाज़ी बेड़ों का अफ़सर; समुद्री सेना का नायक।

मीर-मजलिस—(फ़ा०) (सं० पु०) सभापति, प्रधान।

मीर-मतबख़—(फ़ा०) (सं० पु०) शाही बावर्चीख़ाने का व्यवस्थापक।

मीर-महल्ला—(फ़ा०) (सं० पु०) मुखिया; महल्ले का प्रधान निवासी।

मीर-मुंशी—(फ़ा०) (सं० पु०) प्रधान मंत्री, सरिश्तेदार।

मीर-शिकार—(फ़ा०) (सं० पु०) शिकार का मुख्य व्यवस्थापक।

मीर-हाज—(फ़ा०) (सं० पु०) हज करनेवालों का सरदार।

मीरास—(अ०) (सं० स्त्री०) विरसे में मिली हुई जायदाद, जो सम्पत्ति उत्तराधिकार में मिले।

मीरासी—(अ०) (वि०) मीरास से सम्बन्ध रखनेवाली। (सं० पु०) मुसलमान पेशेवर गवैय्ये।

मीरो—(लख०) वह आदमी जो काम में सबसे बढ़कर रहे।

मुंजमिद—(अ०) (वि०) जमा हुआ।

मुअइयन—(अ०) (वि०) नियुक्त; मुक़र्रर किया हुआ; निश्चित।

मुअजज़ा—(सं० पु०) करामात, चमत्कार।

मज़हका—(अ०) (सं० पु०) मज़ाक़, दिल्लगी, मख़ौल; उपहास का पात्र।

मज़हब—(अ०) (सं० पु०) धर्म; संप्रदाय, मत, पंथ; दीन।

मज़हबी—(अ०) (वि०) धार्मिक, धर्म-सम्बन्धी। (सं० पु०) अछूत सिक्ख।

मज़हूल—(अ०) (वि०) (१) सुस्त, निखट्टू, निकम्मा; (२) थका हुआ, शिथिल; (३) अज्ञात।

मज़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) स्वाद, लज़्ज़त; (२) चसका, चाट; (३) ख़ुशी, आनंद; (४) युवावस्था, सौन्दर्य, निखार; (५) लत, आदत; (६) सैर, तमाशा; (७) अवस्था, दशा, हालत, (८) सज़ा; (९) अनोखी बात।

मज़ाक़—(अ०) (सं० पु०) हँसी, दिल्लगी, मख़ौल; रुचि; रस; प्रवृत्ति, आदत; चसका, चखने की शक्ति।

मज़ाक़न्—(अ०) (क्रि० वि०) हँसी में, यों ही।

मज़ाक़िया—(अ०) (वि०) हँसी की, परिहास-पूर्ण; हास्य-प्रिय, दिल्लगीबाज़।

मजाज़—(अ०) (वि०) अधिकार-प्राप्त; अधिकारी, समर्थ। (सं० पु०) सामर्थ्य, अधिकार; योग्यता; पात्रता।

मजाज़ी—(अ०) (वि०) (१) नक़ली, झूठा, (२) सांसारिक; लौकिक।

मज़ामीन—(अ०) (सं० पु०) विषय, लेख, (मज़मून का बहुवचन)।

मज़ामीर—(अ०) (सं० पु०) बाजे; बजाने के यंत्र। (बहुवचन)।

मज़ार—(अ०) (सं० पु०) (१) समाधि, दरगाह, क़ब्र; (२) जहाँ लोग धार्मिक भाव से दर्शन करने जाते हैं।

मजाल—(अ०) (सं० स्त्री०) शक्ति, योग्यता, हिम्मत, साहस; बूता, बस।

मज़ालिम—(अ०) (सं० पु०) ज़ुल्म, क्रूरता, अत्याचार।

मज़ाहमत—(अ०) (सं० स्त्री०) रोक-टोक; दख़ल।

मज़ाहिब—(अ०) (सं० पु०) धर्म; मत; मतमतान्तर। (मज़हब का बहुवचन)।

मज़ाहिर—(अ०) (सं० पु०) प्रकाशित; प्रतीक।

मजीद—(अ०) (वि०) पवित्र और पूज्य-मान्य; (क़ुरान शरीफ़ का विशेषण)।

मज़ीद—(अ०) (वि०) अतिरिक्त; फ़ालतू, अधिक; ज़्यादा।

मज़ेदार—(वि०) स्वादिष्ट, आनंद-प्रद, मनोरंजक। मज़ेदारी—(सं० स्त्री०) आनन्द; स्वाद।

मत—(हि०) (सं० स्त्री०) समझ, सम्मति, बुद्धि। (पु०) मज़हब, धर्म।

मतऊन—(अ०) दोषी; लांछित; अभियुक्त।

मतज़ाइद—(अ०) (वि०) बढ़नेवाला, अधिक।

मतन—(अ०) (सं० पु०) (१) मध्य, बीच का भाग; (२) मूल, जिसकी व्याख्या की जाय, सूत्र, (३) पीठ। (वि०) पक्का; दृढ़, मज़बूत।

मतब—(अ०) औषधालय। दवाख़ाना।

मतबख़—(अ०) (सं० पु०) पाकशाला, रसोई, बावर्चीख़ाना।

मतबख़ी—(अ०) (सं० पु०) रसोइया, बावर्ची।

मतबा—(अ०) (सं० पु०) छापाख़ाना, प्रेस।

मतबूअ—(अ०) (वि०) छापा हुआ, पसन्द किया गया।

मतबूख़—(अ०) आग पर पकाई हुई चीज़।

मतब्ब—(अ०) (सं० पु०) औषधालय, दवाख़ाना।

मतरब—(अ०) (सं० पु०) गानेवाला, क़व्वाल।

मुआलिज—(अ०) (सं० पु०) वैद्य, चिकित्सक।

मुआलिजा—(अ०) (सं० पु०) इलाज, चिकित्सा।

मुआवज़ा—(अ०) (सं० पु०) बदल; बदले में दी हुई चीज़; मूल्य, परिवर्तन।

मुआवदत—(अ०) (सं० स्त्री०) वापसी, लौट आना; वापस आना।

मुआविन—(अ०) (सं० पु०) हिमायती, सहायक, मददगार।

मुआवेनत—(अ०) (सं० स्त्री०) सहायता, हिमायत, मदद।

मुआशरत—(अ०) (सं० स्त्री०) आपस में मिलजुल कर रहना, सहवास।

मुआहदा—(अ०) (सं० पु०) इक़रार, निश्चय, कनट्राक्ट।

मुक़ई—(अ०) (वि०) वमनकारक; क़ै लानेवाला; जिसके खाने या पीने से क़ै आवे।

मुक़तदा—(अ०) (सं० पु०) धार्मिक नेता, इमाम, पेशवा।

मुक़त्तर—(अ०) (वि०) तरणित; बूंद-बूंद करके टपकाया हुआ।

मुक़त्ता—(अ०) (वि०) तराशा हुआ; कटा-छँटा; सभ्य, सुशील।

मुक़द्दम—(वि०) आगे चलनेवाला; पहले आनेवाला; प्रधान, मुख्य।

मुक़द्दमा—(अ०) (सं० पु०) मालिश; दावा; झगड़ा, जिसका निर्णय अदालतें करती हैं, भूमिका।

मुकद्दर—(अ०) (वि०) (१) मैला, गंदा; (२) दुःखी, असन्तुष्ट, अशान्त।

मुक़द्दर—(अ०) (सं० पु०) तक़दीर, भाग्य, क़िस्मत।

मुक़द्दस—(अ०) (वि०) पवित्र, पावन, पाक।

मुकरनी, मुकरी—(हि०) पहेली।

मुक़न्निन—(अ०) (सं० पु०) क़ानून जाननेवाला; क़ानून बनानेवाला।

मुक़फ़्फ़ल—(अ०) (वि०) जिसमें ताला लगा हो; बन्द।

मुक़फ़्फ़ा—(अ०) (वि०) क़ाफियेदार; तुकदार; तुकान्त।

मुकम्मिल—(अ०) (वि०) पूर्ण, पूरा।

मुक़रज़—(अ०) (वि०) कतरा हुआ; क़ैंची से कतरा हुआ।

मुक़र्रब—(अ०) (सं० पु०) (१) समीपवर्ती, घनिष्ठ मित्र, मुँह लगा।

मुकर्रम—(अ०) (वि०) प्रतिष्ठित, सम्मानित, माननीय।

मुकर्रर—(क्रि० वि० फिर से, दूसरी बार।

मुक़र्रर—(अ०) (वि०) (१) निश्चित, निस्सन्देह; (२) इक़रार किया हुआ; (३) नियुक्त, नियत, तैनात।

मुक़र्ररी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) निश्चित लगान या तनख़्वाह आदि; तय किया हुआ; (२) नियुक्ति।

मुक़लिब—(अ०) (वि०) बदलनेवाला, पलटनेवाला।

मुक़ल्लिद—(अ०) (वि०) अनुगामी, मुरीद भक्त।

मुक़व्वी—(अ०) (वि०) पौष्टिक, बलवर्द्धक; शक्ति उत्पन्न करनेवाला।

मुक़श्शर—(अ०) (वि०) छिला हुआ, जिसका छिलका उतार लिया गया हो।

मुकस्सर—(अ०) (वि०) (१) घन, दो बार गुणा किया हुआ; (२) बराबर भुजावाला; जिसकी लंबाई, चौड़ाई, ऊँचाई बराबर हो।

मुक़ाबा—(अ०) (सं० पु०) शृंगार-दान।

मुक़ाबिल—(अ०) (वि०) (१) बराबर, समान; (२) आमने सामने, सम्मुख; (३) विरुद्ध। (सं०) वैरी, विरोधी, प्रेमी।

मुक़ाबिला—(अ०) (सं० पु०) (१) समानता; (२) तुलना, जाँच; (३) आमना-सामना; (४) मुठभेड़, लड़ाई; (५) प्रतियोगिता; (६) विरोध, युद्ध।

मुक़ाम—(अ०) (सं० पु०) (१) ठिकाना, ठहरने की जगह, पड़ाव, मंज़िल; (२) विराम, ठहरना, चलते चलते रुकना; (३) घर, निवास स्थान; (४) अवसर।

मुकाफ़ात—(अ०) (सं० स्त्री०) बदला, एवज़, सज़ा।

मुक़ामात—(अ०) (सं० पु०) स्थान, पड़ाव (मुक़ाम का बहुवचन)।

मुक़ारबत—(अ०) (सं० स्त्री०) सामीप्य, पास होना, निकट होना।

मुक़िर—(अ०) (वि०) इक़रार करनेवाला, लिखनेवाला। मन-मुक़िर—मैं, लिखनेवाला; मैं, इक़रार करनेवाला।

मुक़ीम—(अ०) (वि०) ठहरनेवाला, ठहरा हुआ।

मुक़ैयद—(अ०) (वि०) क़ैद किया हुआ; बंद, बाँधा हुआ।

मुक़ैश—(अ०) (सं० पु०) (१) सोने चाँदी के चौड़े तार; (२) सोने चाँदी के तारों का बना कपड़ा।

मुक़्तज़ा—(अ०) (सं० पु०) तक़ाज़ा, माँग; अवसर, आवश्यकता।

मुक़्तज़ी—(अ०) (वि०) तक़ाज़ा करनेवाला; माँगनेवाला, इच्छुक।

मुक़्तदी—(अ०) अनुगामी, शिष्य।

मुख़न्नस—(अ०) (वि०) नपुंसक, हिजड़ा।

मुख़बिर—(अ०) (सं० पु०) जासूस, भेदिया, गुप्त रूप से ख़बर देनेवाला।

मुख़बिरी—(अ०) (सं० स्त्री०) जासूसी; मुख़बिर का काम।

मुख़फ़्फ़—(अ०) (वि०) संक्षिप्त, कम।

मुख़त्तत—(अ०) (वि०) धारीदार, लकीरवाला।

मुख़म्मस—(अ०) (सं० पु०) (१) पाँच अंगों की वस्तु; (२) पद्य, जिसका एक बंद पाँच मिसरों का हो।

मुख़्लिस—(अ०) (वि०) (१) विशुद्ध; (२) अकेला, अविवाहित; (३) सच्चा।

मुख़्लिसी—(अ०) (सं० स्त्री०) छुटकारा, रिहाई, मुक्ति।

मुख़ातिब—(अ०) (सं० पु०) ध्यान देनेवाला; वक्ता, बोलनेवाला।

मुख़ातिबा—आमने सामने कुछ कहना; कथोपकथन।

मुख़ालिफ़—(अ०) (सं० पु०) विरोधी, वैरी। (वि०) विरुद्ध, विपरीत।

मुख़ालिफ़त—(अ०) (सं० स्त्री०) विरोध, वैर, वैर भाव।

मुख़ासमत—(अ०) (सं० स्त्री०) शत्रुता, झगड़ा, लड़ाई, अनबन।

मुख़िल—(अ०) (वि०) ख़लल डालनेवाला; बाधक, रोड़ा अटकानेवाला।

मुख़ैयर—(अ०) (वि०) उदार, दानशील; किसी को अधिकार देनेवाला।

मुख़ैयला—(अ०) (सं० स्त्री०) विचार-शक्ति; सोचने विचारने की ताक़त।

मुख़्तफ़ी—(अ०) (वि०) गुप्त, छिपा हुआ।

मुख़्तलत—(अ०) (वि०) मिला हुआ, गड-मड।

मुख़्तलिफ़—(अ०) (वि०) भिन्न प्रकार का; और ही, और तरह का; अलग, भिन्न भिन्न।

मुख़्तसर—(अ०) (वि०) संक्षिप्त, छोटा; छोटा किया हुआ।

मुख़्तार—(अ०) (सं० पु०) (१) स्वाधीन, अधिकार-प्राप्त; (२) अधिकार-प्राप्त प्रतिनिधि; (३) सरबराहकार, गुमाश्ता, एजेन्ट।

मुख़्तार-आम—(अ०) (सं० पु०) वह प्रतिनिधि जिसे सब प्रकार के काम करने के अधिकार दिये गये हों।

मुख़्तार-कार—(अ० फ़ा०) (सं० पु०) कार्याधिकारी, संचालक, प्रबन्धकर्ता।

मुख़्तार-कारी—(सं० स्त्री०) मुख़्तारगिरी, मुख़्तार का काम।

मुख़्तार-ख़ास—(अ०) (सं० पु०) जिसे कोई ख़ास काम करने का अधिकार दिया गया हो।

मुख़्तार-तन्—(क्रि० वि०) मुख़्तार के ज़रिये से, मुख़्तार द्वारा (असालतन् नहीं)

मुख़्तार-नामा—(अ० फ़ा०) (सं० पु०) वह काग़ज़ या लेख जिसके द्वारा किसी को मुख़्तार नियुक्त किया जाय।

मुख़्तारी—(अ०) (सं० स्त्री०) मुख़्तार का पेशा; मुख़्तार का काम।

मुग़—(अ०) (सं० पु०) अग्नि-उपासक; जो अग्नि की पूजा करता हो।

मुग़रक़—(अ०) (वि०) चमकता हुआ; जगमगाता हुआ।

मुग़ल—(अ०) (सं० पु०) (१) मंगोल देश का निवासी; (२) तातार के रहनेवाले तुर्कों का एक वर्ग; (३) मुसलमानों में का एक वर्ग।

मुग़लक़—(अ०) (वि०) (१) कठिन अर्थवाला; (२) बन्द किया हुआ दरवाज़ा।

मुग़लानी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) दासी, नौकरानी; (२) कपड़े सीनेवाली स्त्री।

मुग़ालता—(अ०) (सं० पु०) (१) धोखा, छल, कपट; (२) भूल, भ्रम, ग़लती।

मुग़ील—(अ०) (सं० पु०) बबूल, कीकर।

मुग़ीलां—(अ०) (सं० पु०) मुग़ील (बबूल) का बहुवचन।

मुग़ीस—(अ०) (वि०) वादी, मुद्दई, जो अभियोग उपस्थित करे।

मुग़ां—(अ०) (सं० पु०) अग्नि-उपासक। (मुग़ का बहुवचन)।

मुचलका—(तु०) (सं० पु०) नियत समय पर अदालत में उपस्थित होने का इक़रारनामा; (२) भविष्य में अपराध नहीं करने का प्रतिज्ञा-पत्र; (३) हाज़िर होने की ज़मानत।

मुज़क्कर—(अ०) (सं० पु०) पुलिंग, नर।

मुज़ख़रफ़—(अ०) (सं० पु०) चिकनी-चुपड़ी बातें; बनावट की बात; बेहूदा और वाहियात बात। मुज़ख़रफ़ात—(बहुवचन)।

मुज़ग़—(अ०) (सं० पु०) (१) मास का टुकड़ा; (२) कौर, ग्रास; (३) गर्भाशय, बच्चेदानी।

मुजतमा—(अ०) (वि०) एकत्रित, जो जमा या इकट्ठे हुए हैं।

मुज़तर—(अ०) (वि०) विवश, बेचैन, परेशान, विकल।

मुज़तरब—(अ० वि०) विकल, बेचैन, बेक़रार।

मुजतहिद—(अ०) (सं० पु०) (१) कोशिश करनेवाला; (२ ठीक मार्ग बतानेवाला; (३) धर्म का आचार्य।

मुजद्दिद—(अ०) (वि०) पुराने को नया करनेवाला; निर्मायक, जीर्णोद्धारक।

मुज़फ़्फ़र—(अ०) (वि०) विजयी, विजेता, विजय पानेवाला।

मुज़बज़ब—(अ०) (वि०) (१) धुकड़-पुकड़ करनेवाला; (२) असमंजस में पड़ा हुआ, किं कर्तव्य विमूढ़, जो कुछ निश्चय न कर सके; (३) अनिश्चित, संदिग्ध।

मुजमल—(अ०) (वि०) संक्षिप्त हिसाब।

मुजमलन्—(क्रि० वि०) संक्षेप में, थोड़े में।

मुज़महिल—(अ०) (वि०) (१) थका हुआ; (२) शिथिल; (३) दुर्बल।

मुज़म्मत—(अ०) (सं० स्त्री०) बुराई, निंदा, निंदात्मक लेख।

मुज़म्मा—(अ०) (सं० पु०) घोड़े की पिछाड़ी के साथ बाँधने का रस्सा। मुज़्ज़मे लेना—आड़े हाथों लेना, ठीक कर देना।

मुजरई—वह नाचनेवाला जो बैठ कर गावे।

मुजरा—(अ०) (सं० पु०) (१) किसी रक़म में से कम किया गया या घटाया गया, जो किसी रक़म में से काट लिया गया हो; (२) कटौती; (३) जो जारी किया गया हो, (४) आदरपूर्वक अभिवादन करना, अभिवादन; (५) गायकों या नर्तकियों का बैठकर गाना।

मुजराई—(अ०) (सं० पु०) (१) मुजरा किये जाने या काटे जाने की क्रिया, कम करना, घटाना; (२) वह स्त्री या पुरुष जो अभिवादन करे या अभिवादन के लिए उपस्थित हो; (३) मरसिया-गो, मरसिया पढ़नेवाला।

मुजरिम—(अ०) (सं० स्त्री०) अभियुक्त, दोषी, जिसने कोई अपराध किया हो, अपराधी।

मुज़र्रत—(अ०) (सं० स्त्री०) हानि, नुक़सान, ज़रर।

मुजर्रद—(अ०) (वि०) (१) कुमार, कुआँरा, अविवाहित; (२) अकेला, एकाकी, जिसके और कोई साथी न हो; (३) संन्यासी।

मुजर्रदी—(अ०) (सं० स्त्री०) स्वाधीन होना, अकेलापन, अकेला होना; अविवाहित होने की दशा।

मुजर्रब—(अ०) (वि०) परीक्षित, आज़माया हुआ; जाँचा हुआ, अनुभूत।

मुजर्रबात—(अ०) (सं० पु०) परीक्षित प्रयोग; अनुभूत योग, आज़मूदा नुस्ख़े।

मुजल्लद—(अ०) (वि०) जिल्ददार; जिसकी जिल्द बंधी हो।

मुज़ल्लफ़—(अ०) (वि०) ज़ुल्फ़वाला, ज़ुल्फ़ों से घिरा हुआ।

मुजल्ला—(अ०) (वि०) पालिश किया हुआ, चमकाया हुआ, जिला किया हुआ।

मुजल्ली—(अ०) (वि०) चमकदार, चमकीला।

मुजवज़ह—(अ०) (वि०) (१) सुझाया हुआ, प्रस्तावित; (२) निश्चित किया हुआ; (३) बतलाया हुआ।

मुजव्वफ़—(अ०) (वि०) खोखला, भीतर से ख़ाली।

मुजव्विज़—(अ०) न्याय करनेवाला, सम्मति देनेवाला।

मुजस्सम, मुजस्सिम—(अ०) (वि०) साक्षात, मूर्तिवान्, शरीरधारी।

मुज़हर—(अ०) (सं० पु०) (१) ज़ाहिर करनेवाला, बयान करनेवाला; इज़हार देनेवाला, गवाही देनेवाला, (२) जासूस, भेदिया।

मुज़ाअफ़—(अ०) (वि०) दूना, द्विगुणित; गुणा किया हुआ।

मुजादला—(अ०) (सं० पु०) विरोध, लड़ाई-झगड़ा।

मुज़ाफ़—(अ०) (वि०) बढ़ाया हुआ, मिलाया हुआ; सम्बन्ध स्थापित किया हुआ।

मुज़ाफ़ात—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) बढ़ाई हुई जगह; मिलाई हुई चीज़ें; (२) शहर के आस-पास के स्थान; मुफ़स्सिल।

मुजामअत—(अ०) (सं० स्त्री०) सम्भोग, स्त्री-प्रसंग; सहवास, विषय-भोग।

मुज़ायक़ा—(अ०) (सं० पु०) डर, हर्ज, हानि।

मुज़ारा—(अ०) (वि०) समान, बराबर का। (सं० पु०) किसान, खेती करनेवाला।

मुजारियह—(अ०) (वि०) (१) प्रचलित, रायज, जो जारी हो; (२) नियम-बद्ध।

मुज़ावजत—(अ०) (सं० स्त्री०) विवाह, शादी।

मुजाविर—(अ०) (सं० पु०) वह आदमी या नौकर जो मज़ार या दरगाह पर रहता है; पड़ोसी, पास रहनेवाला।

मुजाविरी—(अ०) (सं० पु०) मुजाविर का काम।

मुजाविल—(अ०) (सं० पु०) योद्धा, लड़नेवाला।

मुजाविला—(अ०) (सं०) लड़ाई, झगड़ा।

मुजाहिद—(अ०) (सं० पु०) जहाद करनेवाला; धर्म के लिए लड़नेवाला; धर्म की रक्षा के लिए युद्ध करनेवाला।

मुज़ाहिम—(अ०) (वि०) (१) रोकनेवाला, बाधा डालनेवाला; (२) कष्ट देनेवाला।

मुज़ाहिमत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) रोक-टोक, रोकना; (२) कष्ट देना।

मुज़िर—(अ०) (वि०) हानिकारक, नुक़सानदेह, बुरा, खराब।

मुजीब—(अ०) (१) जवाब देनेवाला, ईश्वर; (२) रेचक दस्त लानेवाली, औषध।

मुड़ासा—(हि०) (सं० पु०) पगड़ी, साफ़ा।

मुड्ढ—(हि०) (सं० पु०) सरपंच, सरदार, नेता।

मुतंजन—(अ०) (सं० पु०) मांस और चावल से बना हुआ एक खाना।

मुतअय्यन—(अ०) (वि०) नियुक्त किया हुआ, तय किया हुआ, मुक़र्रर किया हुआ।

मुतअज्जिब—(अ०) (वि०) विस्मित, आश्चर्य-चकित; जो ताज्जुब में पड़ गया हो।

मुतअद्दिद—(अ०) (वि०) कई, अनेक, बहुसंख्यक।

मुतअद्दी—(अ०) (सं० पु०) सकर्मक क्रिया।

मुतअफ़्फ़िन—(अ०) (वि०) दुर्गंधित, बदबूदार।

मुतअल्लिक़—(अ०) (वि०) सम्बन्धित, सम्बन्ध रखनेवाला।

मुतअल्लिक़-ए-फ़ेल—(अ०) (सं० पु०) क्रिया विशेषण।

मुतअल्लिक़ीन—(अ०) (सं० पु०) (१) सगे-सम्बन्धी; परिवार के लोग, कुटुंबी; (२) रिश्तेदार; (३) घर में रहनेवाले, परिजन।

मुतअस्सिब—(अ०) (वि०) (१) पक्षपाती, जिसमें तास्सुब या पक्षपात हो, (२) कट्टर, कठमुल्ला।

मुतअस्सिर—(अ०) (वि०) प्रभावित, असर पड़ा हुआ।

मुतअह्—(सं० पु०) अस्थायी विवाह।

मुतअहिद—(अ०) (सं० पु०) ठेकेदार, इजारेदार।

मुतआई—(अ०) (सं० स्त्री०) मुताह से विवाहित स्त्री।

मुतअख़रीन—(अ०) (वि०) आधुनिक लोग, सहयोगी।

मुतक़द्दम—(अ०) (वि०) आगे बढ़नेवाला।

मुतक़दिमीन—(अ०) (सं० पु०) पुराने ज़माने के लोग; प्राचीन काल के पुरुष।

मुतक़्क़ी—(अ०) धर्म-भीरु; परहेज़गार।

मुतकब्बर—(अ०) (वि०) अभिमानी, घमंडी।

मुतकल्लिम—(अ०) (सं० पु०) (१) कहनेवाला, वक्ता, बोलने में दक्ष; (२) व्याकरण में प्रथम पुरुष।

मुतख़ल्लल—(अ०) ख़लल डालनेवाला; भंग करनेवाला, रोड़ा अटकानेवाला, बाधक।

मुतख़ल्लुस—(अ०) (वि०) उपनाम से युक्त; जिसका उपनाम हो।

मुतख़ासिम—(अ०) दुश्मन, वैरी, झगड़ालू।

मुतख़ैयलह—(अ०) (सं० पु०) विचार शक्ति, धारणा; कल्पना।

मुतग़ैयर—(अ०) (वि०) अस्थिर, बदला हुआ; परिवर्तित।

मुतज़म्मिन—(अ०) (वि०) सम्मिलित, मिला हुआ; संयुक्त।

मुतज़ाद—(अ०) (वि०) विरोधी।

मुतज़िक्करह—(अ०) उपर्युक्त, उल्लिखित, जिसका ज़िक्र किया गया हो।

मुत्तफ़िक़—(अ०) (वि०) सहमत; सब मिल कर, एक मत होकर।

मुत्तसिल—(अ०) वि० (१) पास-पास, लगा हुआ, बराबर।

मुत्तहिद—(अ०) (वि०) मेल रखनेवाला; एकता रखनेवाला। मुत्तहिदुल-वतन—एक पेट का।

मुतदैयन—(अ०) (वि०) (१) सत्यनिष्ठ, अच्छी नियत रखनेवाला, ईमानदार; (२) धर्मनिष्ठ, श्रद्धावान्, धर्म पर विश्वास रखनेवाला, धर्मात्मा।

मुतनजन—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार का मीठा पुलाव।

मुतनफ़्फ़स—(अ०) (सं० पु०) मनुष्य, व्यक्ति, प्राणी, जीवधारी।

मुतनफ़्फ़र—(अ०) (वि०) घृणा उत्पन्न करनेवाला, नफ़रत करनेवाला।

मुतनाक़िज़—(अ०) (वि०) विरोधी, प्रतिकूल।

मुतनाक़िस—(अ०) (वि०) दोषयुक्त, सदोष, दूषण-सहित।

मुतनाज़ा—(अ०) जिस पर झगड़ा हो। मुतनाज़ाफ़िया—वह जिस पर झगड़ा हो।

मुतनासिब—(अ०) (वि०) उपयुक्त, ठीक, सुडौल।

मुतनाही—(अ०) हद को पहुँचनेवाला।

मुतफ़ क्किर—(अ०) (वि०) चिन्तातुर, चिन्तित, फ़िक्रमंद।

मुतफ़न्नी—(अ०) (वि०) मक्कार, धूर्त, कपटी, चालाक।

मुतफ़र्रक़ात—(अ०) (सं० पु०) (१) हिसाब की फुटकर रक़में; (२) फुटकर चीज़ें; (३) ज़मींदारी की इधर-उधर बिखरी हुई ज़मीनें; (४) छोटी मोटी रिशवत में दी हुई रक़में।

मुतफ़र्रद—(अ०) (वि०) एकाकी, अकेला, बिना साथी के।

मुतफ़र्रिक़—(अ०) (वि०) (१) भिन्न-भिन्न, फुटकर, अनेक प्रकार के; (२) रिशवत में दिया गया।

मुतबख़्ख़ी—(अ०) (सं० पु०) बावर्ची, रसोई बनानेवाला।

मुतबन्ना—(अ०) (सं० पु०) दत्तक पुत्र, गोद, गोद लिया लड़का।

मुतबर्रक, मुतबर्रिक—(अ०) (वि०) शुभ, पवित्र, मुबारक, स्वर्गीय।

मुतबस्सम—(अ०) (वि०) खिला हुआ; मुसकरानेवाला।

मुतमर्रद—(अ०) बाग़ी, विद्रोही, सरकश।

मुतमल्लिक़—(अ०) (वि०) ख़ुशामदी, चाटुकार, हाँ में हाँ मिलानेवाला।

मुतमैयन—(अ०) (वि०) (१) संतुष्ट, तृप्त; (२) शान्त, निश्चिन्त; (३) संपन्न।

मुतमौवल, (मुतमव्वल)—(अ०) (वि०) धनी, अमीर, मालदार।

मुतरज्जिम—(अ०) अनुवादक, अनुवाद करनेवाला, उल्था करनेवाला।

मुतरद्दद—(अ०) (वि०) परेशान, चिंतित।

मुतरस्सल—(अ०) (सं० पु०) पत्र भेजनेवाला।

मुतरादिफ़—(अ०) (वि०) समानार्थी, पर्यायवाची, एक ही अर्थ का।

मुतरिब—(अ०) (सं० पु०) गानेवाला, गायक।

मुतरिबी—(अ०) (सं० स्त्री०) गान विद्या; संगीत।

मुतलक़—(अ०) (क्रि० वि०) बिलकुल, पूरी तरह से, निरा; ज़रा सा भी।

मुतलक़-उल्-इनान—बिलकुल आज़ाद, बेलगाम, बेबाक।

मुतलक़्क़ा—(अ०) (सं० स्त्री०) तलाक़ दी हुई, परित्यक्ता।

मुतलज़्ज़िज़—(अ०) स्वाद चखनेवाला, रस लूटनेवाला।

मुतलव्विन—(अ०) (वि०) परिवर्तनशील, बदलनेवाला, अस्थिर।

मुतला—(अ०) (वि०) जिसे सूचना दी गई हो, आगाह, जानकार।

मुतलाशी—(अ०) (वि०) तलाश करनेवाला, ढूँढनेवाला, अन्वेषक।

मुतल्ला—(अ०) (वि०) जिस पर सोना चढ़ा हो; जिस पर सोने का मुलम्मा हो।

मुतल्लिक़—(अ०) (वि०) सम्बन्ध रखनेवाला।

मुतल्लिक़ीन—(अ०) (सं० पु०) घरवाले, बाल-बच्चे।

मुतवक्किल—(अ०) (वि०) संतोषी, भाग्य पर भरोसा करनेवाला।

मुतवज्जह—(अ०) (वि०) ध्यान देनेवाला, प्रवृत्त; कृपालु।

मुतवत्तिन—(अ०) (वि०) निवासी, रहनेवाला।

मुतवफ़्फ़ा—(अ०) (वि०) मृत, स्वर्गीय, परलोकवासी, मरहूम।

मुतवल्ली—(अ०) (सं० पु०) ट्रस्टी; प्रबंध करनेवाला; धार्मिक संस्था या देवोत्तर सम्पत्ति का इन्तज़ाम करनेवाला।

मुतवस्सित—(अ०) (वि०) (१) औसत दरजे का, साधारण, मामूली; (२) बीच का, मध्य का।

मुतवाज़ी—(अ०) समानान्तर (रेखाएँ)।

मुतवातिर—(अ०) (क्रि०.वि०) लगातार, निरन्तर, एक के बाद एक।

मुतशक्किर—(अ०) (वि०) कृतज्ञ, अनुगृहीत।

मुतशक्की—(अ०) (वि०) सन्देह करनेवाला।

मुतशाबह—(अ०) (वि०) समानाकृति, एकसी सूरत, एक सूरत के।

मुतसद्दी—(अ०) (सं० पु०) पेशकार, मुंशी, लेखक।

मुतसद्दी-गरी—(अ०) (सं० स्त्री०) मुंशी का काम, लेखक का काम।

मुतसल्ली—(अ०) (वि०) प्रसन्न, संतुष्ट, शोक-रहित, चिन्ता रहित।

मुतसावी—(अ०) (वि०) बराबर (एक दूसरे के)।

मुतसव्वर—(अ०) (वि०) कल्पित, ध्यान में आया हुआ।

मुतस्सफ़—(अ०) अफ़सोस करनेवाला।

मुतस्सर—(अ०) (वि०) प्रभाव करनेवाला, सर करनेवाला।

मुतहक़्क़क़—(अ०) (वि०) जाँचा हुआ, परखा हुआ।

मुतहज्जर—(अ०) फोड़ा या घाव जो पत्थर के समान कड़ा हो।

मुतहम्मल—(अ०) (वि०) स्थिर-चित्त, बुर्दबार, सहनशील, बरदाश्त करनेवाला।

मुतहर्रक—(अ०) (वि०) चलानेवाला, चलता हुआ।

मुतहैयर—(अ०) (वि०) विस्मित, चकित, हक्का-बक्का, आश्चर्यान्वित।

मुताअ—(सं० पु०) अल्पकाल के लिए विवाह।

मुताइल—(अ०) (सं० पु०) सोचनेवाला, विचार करनेवाला।

मुताई—वह स्त्री जिसके साथ मुताअ किया गया हो।

मुताबिक़—(अ०) (वि०) अनुसार।

मुताबिक़त—(अ०) (सं० स्त्री०) अनुकूलता, सादृश्य।

मुताला—(अ०) (सं० पु०) पढ़ना, अध्ययन।

मुतालबा—(अ०) (सं० पु०) पावना; जो रक़म वाजिब हो; माँगना।

मुताह—(अ०) (सं० पु०) अस्थायी विवाह।

मुताही—(अ०) (सं० स्त्री०) वह स्त्री जिसके साथ अस्थायी विवाह हुआ हो।

मुतीअ—(अ०) (वि०) आज्ञाकारी, आज्ञानुवर्ती, अधीन।

मुत्तक़ी—(अ०) (सं० पु०) परहेज़गार, सदाचारी।

मुत्तफ़िक़—(अ०) (वि०) एक मत, सहमत; एक राय के।

मुत्तसल—(अ०) (वि०) लगा हुआ, बराबर, सटा हुआ।

मुत्तहद—(अ०) (वि०) मिले हुए।

मुत्तहम—(अ०) (वि०) अभियुक्त, जिस पर आरोप लगाया गया हो।

मुदब्बिर—(अ०) (सं० पु०) बुद्धिमान्, परामर्शदाता, मंत्री।

मुदम्मिग़—(अ०) (वि०) अभिमानी, घमंडी।

मुदरिक—(अ०) सुधी, बात को समझनेवाला।

मुदरिका—(अ०) (सं० स्त्री०) विचार-शक्ति।

मुदर्रर—(अ०) मूत्रल (मूत्र लाने वाली) औषध।

मुदर्रिस—(अ०) (सं० पु०) शिक्षक, पढ़ाने वाला।

मुदर्रिसी—(अ०) (सं० स्त्री०) मुदर्रिस का पेशा।

मुदल्लत—(अ०) (वि०) युक्ति-साध्य, जो युक्ति से ठीक साबित हो।

मुदल्लिल—(अ०) (वि०) तार्किक, युक्ति या दलील से अपना पक्ष समर्थन करनेवाला।

मुदव्वर—(अ०) (वि०) गोल।

मुदाम—(अ०) (क्रि० वि०) हमेशा, सदा, लगातार, निरन्तर।

मुद्दआ—(अ०) (सं० पु०) उद्देश्य, लक्ष्य, अभिप्राय, मुराद।

मुद्दआ-अलेह—(अ०) (सं० पु०) प्रतिवादी, जिस पर नालिश या दावा किया जाय।

मुद्दई—(अ०) (सं० पु०) (१) वादी, दावा या नालिश करनेवाला; (२) दुश्मन, वैरी।

मुद्दत—(अ०) (सं० स्त्री०) अवधि; बहुत समय, बहुत दिन, अरसा।

मुद्दालेह—(अ०) (सं० पु०) जिस पर नालिश की गई हो।

मुद्दैया—(अ०) (सं० स्त्री०) मुद्दई का स्त्रीलिंग।

मुनअक़िद—(अ०) (वि०) क़रार पाना; ठहरना, इकट्ठा होना।

मुनक़ज़ी—(अ०) (वि०) गत, बीता हुआ, जो ख़तम हो गया हो।

मुनक़ता—(अ०) (वि०) (१) अलग किया हुआ; (२) ख़तम किया हुआ, समाप्त; (३) चुकाया हुआ।

मुनक़लिब—(अ०) (वि०) उलटनेवाला, औंधा; फिर जानेवाला, परिवर्तनशील।

मुनकशिफ़—(अ०) (वि०) प्रकट, खुलनेवाला।

मुनक़सिम—(अ०) (वि०) विभक्त, बाँटा हुआ।

मुनकिर—(अ०) (वि०) इन्कार करनेवाला, मुकर जानेवाला; नास्तिक।

मुनक़्क़श—(अ०) (वि०) नक़्क़ाशी किया हुआ।

मुनक़्क़ा—(अ०) (सं० पु०) साफ़ किया हुआ; बड़ी किशमिश, दाख।

मुनज़दी—(अ०) एकान्तवासी, एकान्तसेवी।

मुनजमिद—(अ०) (वि०) ठोस, जमा हुआ।

मुनज्जिम—(अ०) (सं० स्त्री०) नजूमी, ज्योतिषी।

मुनफ़अत—(अ०) (सं० स्त्री०) फ़ायदा, लाभ।

मुनफ़इल—(अ०) (वि०) शरमिंदा, लज्जित।

मुनफ़सला—(अ०) (वि०) जिसका फ़ैसला हो गया हो।

मुनब्बत—(अ०) (वि०) जिसमें उभरे हुए नक़्श बने हों।

मुनब्बत-कारी—(अ० फ़ा०) (सं० स्त्री०) उभारदार बेल बूटे का काम जो लकड़ी इत्यादि पर किया जाय।

मुनव्वर—(अ०) (वि०) चमकनेवाला, प्रकाशमान्।

मुनशी—(अ०) (सं० पु०) (१) लेखक, मुहर्रिर; (२) मान सूचक उपाधि।

मुनश्शी—(अ०) (वि०) नशा करनेवाली चीज़।

मुनसरिम—(अ०) (सं० पु०) (१) अदालत का प्रधान कर्मचारी; (२) व्यवस्थापक, (३) प्रतिनिधि।

मुनसलिक—(अ०) (वि०) पिरोया हुआ; बँधा हुआ, नत्थी किया हुआ; सम्मिलित।

मुनसिफ़—(अ०) (सं० पु०) न्यायकर्ता, इन्साफ़ करनेवाला; दीवानी का हाकिम।

मुनसिफ़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) न्याय, इन्साफ़; मुनसिफ़ का पद या कार्य।

मुनहनी—(अ०) (वि०) (१) टेढ़ा, झुका हुआ; (२) दुबला-पतला; ज़रा-सा।

मुनहरिफ़—(अ०) (वि०) (१) फिरनेवाला, टेढ़ा, तिरछा; (२) विद्रोही, विरोधी।

मुनहदिम—(अ०) (वि०) गिराया हुआ, बरबाद, मिस्मार; खँडहर।

मुनहसर—(अ०) (वि०) निर्भर, आश्रित।

मुनाज़रा—(अ०) (सं० पु०) वाद-विवाद, बहस, शास्त्रार्थ।

मुनाजात—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) ईश्वर-प्रार्थना; (२) प्रार्थना, विनय, विनती।

मुनादी—(अ०) (सं० स्त्री०) ढिंढोरा, डुग्गी।

मुनाफ़ा—(अ०) (सं० पु०) लाभ, फ़ायदा।

मुनाफ़िक़—(अ०) (सं० पु०) (१) ऊपरी मित्र-भाव रखनेवाला पर मन में द्वेष रखनेवाला, (२) धर्म-द्रोही।

मुनासिब—(अ०) (वि०) उचित, ठीक; माक़ूल।

मुनासिबत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) सम्बन्ध; (२) औचित्य, उचित होना।

मुनीब—(अ०) (सं० पु०) (१) मुनीम, हिसाब लिखनेवाला; (२) मालिक, स्वामी; (३) ईश्वर-भक्त।

मुनीबी—(सं० स्त्री०) बहीखाता लिखनेवाले का काम; मुनीमी।

मुनीर—(अ०) (वि०) रोशन करनेवाला, प्रकाश करनेवाला।

मुन्ताक़िम—(अ०) (सं० पु०) (१) बदला लेनेवाला; (२) ईश्वर।

मुन्तक़िल—(अ०) (वि०) जगह बदलनेवाला; एक जगह से हटा कर दूसरी जगह रखा जानेवाला।

मुन्तख़ब—(अ०) (वि०) चुना हुआ, छँटा हुआ।

मुन्तज़िम—(अ०) (वि०) इन्तज़ाम करनेवाला, व्यवस्थापक, मैनेजर।

मुन्तज़िर—(अ०) (वि०) उम्मेदवार, इन्तज़ार या प्रतीक्षा करनेवाला।

मुन्तशर—(अ०) (वि०) (१) तित्तर बित्तर, बिखरा हुआ; (२ हैरान, परेशान।

मुन्तही—(अ०) (वि०) पहुँचा हुआ; दक्ष, पूर्ण ज्ञाता।

मुन्दरज—(अ०) (वि०) दर्ज किया या लिखा हुआ, शामिल किया हुआ।

मुन्शी—(सं० पु०) लेखक, एक उपाधि।

मुफ़रद—(अ०) (वि०) अकेला, एकाकी; बिन ब्याहा।

मुफ़र्रह—(अ०) (वि०) आनन्द देनेवाला, मनोल्लास उत्पन्न करनेवाला; एक औषध जो गिरी हुई तबीयत को उठाने के लिए दी जाती है।

मुफ़लिस—(अ०) (वि०) निर्धन, ग़रीब।

मुफ़लिसी—(अ०) (सं० स्त्री०) ग़रीबी, निर्धनता, दरिद्रता।

मुफ़सदा—(अ०) (सं० पु०) फ़िसाद, झगड़ा, दंगा, बखेड़ा।

मुफ़सिद—(अ०) (वि०) शरीर, बाग़ी, झगड़ालू, फ़िसाद करनेवाला।

मुफ़स्सल—(अ०) (वि०) ब्यौरेवार, तफ़सील-वार, स्पष्ट। (सं० पु०) शहर के आस-पास के स्थान।

मुफ़स्सिर—(अ०) (वि०) कथावाचक, शास्त्र वक्ता।

मुफ़ाख़िर—(अ०) (वि०) अभिमानी; घमंड करनेवाला।

मुफ़ाजात—(अ०) (वि०) अनायास, अचानक। मर्ग-ए-मुफ़ाजात—अचानक होनेवाली मृत्यु, अकाल मृत्यु।

मुफ़ारक़त—(अ०) (सं० स्त्री०) जुदाई; विच्छेद।

मुफ़ीज़—(अ०) (वि०) गुण करनेवाला; उपकार करनेवाला।

मुफ़ीद—(अ०) (वि०) फ़ायदेमन्द, लाभप्रद।

मुफ़्त—(अ०) (वि०) (१) बिना मूल्य का; बे मोल, बिना दाम का; (२) अकारण, व्यर्थ, नाहक़। मुफ़्त की ठाँयँ ठाँयँ—व्यर्थ का झगड़ा। मुफ़्त-ख़ोरा—बिना महनत और बिना दाम खानेवाला।

मुफ़्तर—(अ०) रोज़ा तोड़नेवाला; नियम भंग करनेवाला।

मुफ़्तरी—(अ०) (वि०) (१) झूठा अभियोग लगानेवाला; (२) धोखेबाज़, धूर्त, शरीर।

मुफ़्ती—(अ०) (सं० पु०) फ़तवा या धार्मिक व्यवस्था देनेवाला; न्याय-कर्ता।

मुफ़्तूल—(अ०) (वि०) बटा हुआ (तार या डोर)।

मुबतला—(अ०) (वि०) गिरफ़्तार, घिरा हुआ, फँसा हुआ।

मुबदी—(अ०) (सं० पु०) ईश्वर।

मुबद्दल—(अ०) (वि०) बदला हुआ, परिवर्तित।

मुबनी—(अ०) (वि०) आश्रित; आधार पर, निर्भर।

मुबर्रा—(अ०) (वि०) (१) पवित्र, शुद्ध, पाक; (२) निर्दोष।

मुबर्रिदात—(अ०) (सं० पु०) वह दवा जिसकी तासीर ठंडी हो; शीत-वीर्य व शीतल प्रभाववाली औषधें।

मुबलिग़—(अ०) (सं० पु०) धन की संख्या, रुपया, (नक़द रुपये की संख्या प्रकट करने को)।

मुबहम—(अ०) (वि०) अस्पष्ट, गोल बात।

मुबही—(अ०) (वि०) वृष्य, कामोद्दीपक औषध।

मुबादरत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) शीघ्रता, जल्दी, त्वरा; (२) साहस, चालाकी।

मुबादला—(अ०) (सं० पु०) बदला, अदल-बदल।

मुबादा—(फ़ा०) (अव्यय) ऐसा न हो कि; यह न हो कि।

मुबारक—(अ०) (वि०) (१) शुभ, मंगलप्रद; (२) भाग्यशाली, अनुकूल; (३) नेक। (सं०) ख़ुशख़बरी, सुसमाचार, सुसंवाद। (व्यंग्य में) मनहूस।

मुबारक-बाद—(अ०) (सं० स्त्री०) बधाई; बधावे।

मुबारकी—(अ०) (सं० स्त्री०) बधाई, ख़ुशी कराना। (लख०) एक रोग जिससे नींद बहुत आती है।

मुबारज़—(अ०) (सं० पु०) वीर, युद्ध-वीर।

मुबालग़ा—(अ०) (सं० पु०) अत्युक्ति; बहुत बढ़ा कर बात कहना।

मुबाशरत—(अ०) (सं० स्त्री०) सम्भोग, मैथुन।

मुबाह—(अ०) (वि०) वैध, नियमानुकूल; उचित।

मुबाहात—(अ०) (सं० स्त्री०) घमंड, शेख़ी, बड़ाई।

मुबाहिसा—(अ०) (सं० पु०) वाद-विवाद, शास्त्रार्थ; प्रश्नोत्तर, शंका-समाधान।

मुब्तज़ल—(अ०) (वि०) साधारण, नीच, ज़लील, घृणित।

मुब्तदा—(अ०) (सं० पु०) आरंभ; (व्याकरण में) कर्ता।

मुब्तदी—(अ०) (सं० पु०) नौसिखुआ।

मुब्तला—(अ०) वि० फंसा हुआ, ग्रस्त, घिरा हुआ, व्यस्त। मुब्तला कर लेना—फँसा लेना।

मुमकिन—(अ०) (वि०) संभव, जो हो सके।

मुमकिनात—(अ०) (सं० स्त्री०) सम्भावनाएँ; जो हो सकता हो।

मुमतद—(अ०) (वि०) लम्बा।

मुमताज़—(अ०) (वि०) अग्रणी, प्रतिष्ठित, सम्मान्य।

मुमलकत—(अ०) (सं० स्त्री०) राज्य, सल्तनत।

मुमलूक—(अ०) (सं० पु०) गुलाम, बंदा, दास।

मुमलूका—(अ०) (वि०) क़ब्ज़े में आया हुआ, अधिकार में किया हुआ।

मुमसिक—(अ०) (वि० (१) रोकनेवाला बाँधनेवाला; (२) कृपण; कंजूस; (३) बंधेज करनेवाली औषध।

मुमानिअत—(अ०) (सं० स्त्री०) मनाही, निषेध।

मुमालिक—(अ०) (सं० पु०) अनेक देश, अनेक प्रान्त।

मुमासिल—(अ०) (वि०) सदृश, बराबर, मानिन्द।

मुमिद—(अ०) (वि०) सहायक।

मुम्तहन—(अ०) (वि०) परीक्षार्थी, जिसकी परीक्षा हो!

मुम्तहिन—(अ०) (सं० पु०) परीक्षक।

मुरक़्क़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) चित्रों की पुस्तक, एलबम; (२) फ़क़ीरों की गुदड़ी। (वि०) अनुपम। मुरक़्क़ा उलट जाना—संसार का उलट-पुलट जाना। मुरक़्क़ा खींचना—तसवीर खींचना।

मुरक्कब—(अ०) (वि०) मिला हुआ; मिश्रित। (सं० पु०) (१) स्याही, मसि; (२) मिश्रण, योग।

मुरग़ाबी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक पक्षी।

मुरग़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मुर्ग़ की मादा।

मुरन्डा—(हि०) (१) भुने हुए गेहूँ का लड्डू; (२) चुरमुर, सूखा हुआ। मुरन्डा करना—तोड़ना-मरोड़ना, ख़ूब पीटना।

मुरताज़—(अ०) (सं० पु०) साधक।

मुरतब—(अ०) (वि०) जो क्रम से लगाया गया हो।

मुरत्तिब—(अ०) (सं० पु०) तरतीब से लगानेवाला।

मुरदन—(फ़ा०) (सं० पु०) मरना।

मुरदनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) मृत्यु के समय की शरीर की दशा; (२) शव के साथ जाना।

मुरदा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) मरा हुआ; जो मर गया हो; (२) बेदम, (३) मुरझाया हुआ, अपना गुण व रूप खोया हुआ।

मुरदार—(फ़ा०) (वि०) (१) मृत, मरा हुआ; (२) अपवित्र; (३) निरुत्साह; (४) एक घृणा-सूचक गाली।

मुरदारी—(औ०) छिपकली।

मुरद्दद—(अ०) रोका गया; वापस किया हुआ।

मुरब्बा—(अ०) (सं० पु०) (१) चाशनी में किया हुआ फलों का पाक, एक मीठा खाने का पदार्थ; (२) चौकोर, जिसकी लम्बाई चौड़ाई बराबर हो; (३) चार चरणों का एक प्रकार का छंद।

मुरब्बी—(अ०) (सं० पु०) (१) पालन करनेवाला; (२) सरपरस्त, सहायता करनेवाला।

मुरवारीद—(फ़ा०) (सं० पु०) मोती, मुक्ता। मुरवारीद-नासुफ़्ता—बिन बिंधे मोती।

मुरव्वज—(अ०) (वि०) प्रचलित।

मुरव्वत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) प्रीति, लिहाज़; (२) भलमनसाहत।

मुरशिद—(अ०) (सं० पु०) (१) अध्यात्म का उपदेश देनेवाला, साधु, योगी; (२) शिक्षक, गुरु; (३) उस्ताद, चालाक, होशयार।

मुरसिल—(अ०) (वि०) भेजनेवाला, प्रेषक।

मुरसिला—(अ०) (सं० पु०) भेजा हुआ पत्र; भेजनेवाला, प्रेषक। (वि०) प्रेषित, भेजा हुआ।

मुरस्सा—(अ०) (वि०) जड़ाऊ, जड़ित।

मुरस्साकार—(अ० फ़ा०) (वि०) जड़िया; रत्न व नगीने जड़ने वाला।

मुराआत—(अ०) (सं० स्त्री०) प्रेम, लिहाज़, मुरव्वत।

मुराक़बा, मुराक़बत—(अ०) (सं० पु०) (१) ईश्वर-चिन्तन करना; (२) आशा करना; (३) रक्षा करना।

मुराजात—(अ०) (सं० स्त्री०) वापस आना, लौटना।

मुराद—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) इच्छा, कामना, मनोरथ, अभिलाषा; (२) मतलब, आशय, अभिप्राय। मुराद पर आना—उपभोग के योग्य होना, योग्य अवस्था प्राप्त होना। मुरादों के दिन—युवावस्था।

मुरादी—(अ०) (वि०) (१) मनोनुकूल, इच्छानुसार; (२) तात्पर्य।

मुराफ़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) अर्ज़ी, प्रार्थना-पत्र; (२) दावा, नालिश; (३) अपील।

मुरासलत—(अ०) (सं० स्त्री०) पत्र-व्यवहार।

मुरासला—(अ०) (सं० पु०) पत्र, चिट्ठी।

मुरासलात—(अ०) (सं० पु०) पत्र चिट्ठियाँ।

मुरीद—(अ०) (सं० पु०) चेला, शिष्य, भक्त, दास, सेवक।

मुरीदी—(अ०) (सं० स्त्री०) शिष्यता, सेवा, शागिर्दी।

मुर्ग़—(फ़ा०) (सं० पु०) एक पक्षी विशेष, मुरग़ा।

मुर्ज़—(अ०) (सं० पु०) रोग, लत, आदत।

मुर्ज़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) इच्छा, मन, खुशी, पसंद।

मुर्तकिब—(अ०) (वि०) कर्ता, करनेवाला।

मुर्तज़ा—(अ०) (सं० पु०) स्वीकृत, पसंद, किया हुआ।

मुर्तशी—(अ०) (सं० पु०) रिशवत लेनेवाला, घूंसख़ोर।

मुर्तहिन—(अ०) (सं० पु०) रहन रखनेवाला, गिरो रखनेवाला।

मुर्दा—मरा हुआ; लाश।

मुर्दन—(फ़ा०) (सं० पु०) मरना; मृत्यु को प्राप्त होना।

मुल—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मदिरा, शराब।
मुलक़्क़ब—(अ०) (वि०) जिसको कोई विशेष नाम दिया गया हो।
मुलज़्ज़िज़—(अ०) (वि०) स्वाद बढ़ानेवाला।
मुलज़िम—(अ०) (वि०) अभियुक्त; जिस पर इलज़ाम लगाया गया हो।
मुलतजी—(अ०) (वि०) प्रार्थी, शरणार्थी।
मुलतमिस—(अ०) (वि०) प्रार्थी।
मुलतवी—(वि०) रोक दिया जाना, ठहरा देना, ढील डालना।
मुलम्मा—(अ०) (सं० पु०) (१) गिलट, क़लई; (२) दिखावा, टीप-टाप।
मुलहिक़—(अ०) (वि०) पास, लगा हुआ, मिला हुआ।
मुलहिद—(अ०) (वि०) काफ़िर, धर्म-भ्रष्ट।
मुलाक़ात—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) भेंट, मिलन; (२) मेल-मिलाप, आना-जाना, परिचय।
मुलाक़ी—(अ०) (सं० पु०) मिलनेवाला।
मुलाज़िम—(अ०) (सं० पु०) नौकर, चाकर।
मुलाज़िमत—(अ०) (सं० स्त्री०) नौकरी, सेवा।
मुलायम—(अ०) (वि०) (१) नरम, मृदु; (२) धीमा, आहिस्ता; (३) हलका, सुकुमार।
मुलायमत—(अ०) (सं० स्त्री०) नरमाई, मृदुता।
मुलाहज़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) निरीक्षण, देख-भाल; (२) मुरव्वत, लिहाज़; (३) रिआयत।
मुलूक—(अ०) (सं० पु०) बादशाह। (मलिक का बहुवचन)।
मुलूल—(अ०) (वि०) दुःखी, उदास।
मुलैयन—(अ०) (वि०) दस्तावर, मल फुलानेवाली औषध
मुल्क—(अ०) (सं० पु०) राज्य, देश।
मुल्की—(अ०) (वि०) देश का, राजकीय।
मुल्तवी—(अ०) (वि०) रोका गया, स्थगित।
मुल्ला—(अ०) (सं० पु०) (१) विद्वान्; (२) बाल-शिक्षक; (३) मसजिद में रहनेवाला, नमाज़ पढ़ानेवाला। कहा०—मुल्ला की दौड़ मसजिद तक—मनुष्य का प्रयत्न वहीं होता है जहाँ उसकी पहुँच हो। मुल्ला की मारी हलाल—बड़े आदमियों का बुरा काम भी अच्छा समझा जाता है।
मुल्लू—(हि०) (सं० स्त्री०) वह चिड़िया जिसके पर बाँध कर जाल में डाल देते हैं, जिससे और चिड़ियाँ उसे देखकर आ फँसें।
मुवक्किल—(अ०) (सं० पु०) जो किसी को अपना वकील बनावे।
मुवज्जह—(अ०) (वि०) माक़ूल, उचित, ठीक।
मुवर्रिख़—(अ०) (सं० पु०) इतिहास-लेखक।
मुवर्रिख़ा—(अ०) (वि०) लिखा हुआ; अमुक तिथि या तारीख को लिखा गया।
मुवाख़ज़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) जवाब माँगना; (२) उत्तरदायित्व।
मुवाजह—(अ०) सामने, मुक़ाबिल; मौजूदगी।
मुवैयद—(अ०) (वि०) समर्थक, समर्थन करनेवाला।
मुशज्जर—(अ०) (वि०) फूलदार कपड़ा, बूटेदार
मुशद्दद—(अ०) (वि०) द्वित्व किया हुआ अक्षर।
मुशफ़िक़—(अ०) (वि०) (१) दयालु, कृपा करनेवाला; (२) मित्र।
मुशफ़िक़ाना—(अ०) (वि०) मित्र का सा; मित्रोचित।

मुशबक—(अ०) (वि०) जालीदार, जिसमें बहुत से छेद हों।

मुशब्बह—(अ०) (वि०) समान, तुल्य। (सं०) जिसके साथ उपमा दी जाय।

मुशरिक—(अ०) (वि०) शरीक करनेवाला। (सं० पु०) देव-पूजक, जो ईश्वर के साथ-साथ अन्य देवताओं को भी मानता हो।

मुशरिफ़—(अ०) (वि०) उच्च। (सं० पु०) प्रधान नेता।

मुशर्रफ़—(अ०) (वि०) (१) जिसे ऊँचा स्थान दिया गया हो; (२) प्रतिष्ठित, माननीय।

मुशर्रह—(अ०) (वि०) सटीक, जिसकी व्याख्या की गई हो।

मुशाअरह—(अ०) (सं० पु०) कवि-सम्मेलन।

मुशाबह—(अ०) (वि०) समान, एकसा; समानाकृति।

मुशाबहत—(अ०) (सं० स्त्री०) समानता।

मुशायख़—(अ०) (सं० पु०) शेख़, मुल्ला आदि धर्म के जाननेवाले। (शेख़ का बहु-वचन)।

मुशायरा—(अ०) (सं० पु०) कवि-सम्मेलन।

मुशार—(अ०) (वि०) जिससे इशारा किया गया हो, विश्वास-पात्र।

मुशारुन-इलेह—(अ०) (वि०) उक्त, जिसकी ओर संकेत किया गया हो।

मुशाहरा—(अ०) (सं० पु०) वेतन; तनख़्वाह।

मुशाहिद—(अ०) (वि०) देखनेवाला।

मुशाहिदा—(अ०) (सं० पु०) अवलोकन, देखना।

मुशाहीर—(अ०) (सं० पु०) मशहूर लोग, प्रसिद्ध पुरुष।

मुशीर—(अ०) (सं० पु०) (१) इशारा करनेवाला; (२) परामर्श-दाता, सलाह-गीर; (३) राज-मंत्री।

मुश्क—(फ़ा०) (सं० पु०) कस्तूरी।

मुश्क-बू—(फ़ा०) (वि०) जिसमें कस्तूरी की सुगन्ध हो।

मुश्क-बेद—(अ०) (सं० पु०) एक सुगंधित फूल का पौदा।

मुश्किल—(अ०) (वि०) कठिन, दुष्कर। (सं० स्त्री०) कठिनता, कठिनाई, मुसीबत, आफ़त।

मुश्किल-कुशा—(अ० फ़ा०) (सं० पु०) (१) कठिनाई दूर करनेवाला; (२) ईश्वर।

मुश्की—(फ़ा०) (वि०) (१) कस्तूरी-मिश्रित; (२) कस्तूरी के रंग का, काला। (सं० पु०) एक प्रकार का घोड़ा।

मुश्कें—(सं० स्त्री०) दोनों बाहें। मुश्कें कसना या बाँधना—बाहें पीठ की ओर लेजाकर बाँधना।

मुश्ट—चुप, मौन।

मुश्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मुट्ठी, हाथ की मुट्ठी।

मुश्तइल—(अ०) (वि०) जलता हुआ, .खूब बलता हुआ।

मुश्तक़—(अ०) (वि०) वह शब्द जो किसी दूसरे शब्द से बने।

मुश्तबा—(अ०) (वि०) संदेह - युक्त; संदिग्ध।

मुश्तमिल—(अ०) (वि०) मिला हुआ, शामिल।

मुश्तरक—(अ०) (वि०) सम्मिलित, साझे का।

मुश्तरका—(अ०) (वि०) साझे का, सम्मिलित, जिसके कई मालिक हों।

मुश्तरी—(अ०) (सं० पु०) (१) ख़रीदनेवाला; ग्राहक; (२) एक ग्रह का नाम।

मुश्तहर—(अ०) (वि०) (१) प्रकाशित, विज्ञापित; (२) घोषित, प्रचारित।

मुश्तहिर—(अ०) (सं० पु०) विज्ञापक, मनादी करवानेवाला।

मुश्तही—(अ०) (वि०) (१) इच्छा बढ़ानेवाला, उद्दीपक; (२) क्षुधा बढ़ानेवाली दवा।

मुश्ताक़—(अ०) (वि०) उत्सुक, अधिक उत्कंठित, बहुत ही इच्छा रखनेवाला।

मुसक़्क़फ़—(अ०) (वि०) पटा हुआ, जिस पर छत पड़ी हो।

मुसक़्क़ल—(अ०) (वि०) जो साफ़ करके माँज कर चमकाया गया हो।

मुसख़्ख़र—(अ०) (सं० पु०) विजित; वश में किया गया।

मुसज्जअ—(अ०) (वि०) (१) तुकान्त; (२) वज़न क़ाफ़िये से दुरुस्त; (३) ठीकठाक।

मुसद्दक़—(अ०) (वि०) जाँचा हुआ; सही किया हुआ।

मुसद्दस—(अ०) (सं० पु०) (१) छै चरण वाला छंद; (२) छै भुजा या कोण वाला।

मुसन्ना—(अ०) (सं० पु०) नक़ल, प्रतिलिपि।

मुसन्निफ़—(अ०) (सं० पु०) ग्रंथकार, लेखक।

मुसफ़्फ़ा—(अ०) (वि०) निखरा हुआ, पाक, साफ़, शुद्ध।

मुसफ़्फ़ी—(अ०) (वि०) साफ़ करनेवाला, शोधक। मुसफ़्फ़ी ख़ून—रक्त-शोधक।

मुसब्बर—(अ०) (सं० पु०) एक कड़वी ओषधि।

मुसब्बितह—(अ०) (वि०) मुहर किया हुआ।

मुसम्मन—(अ०) (वि०) आठ कोनों का।

मुसम्मम—(अ०) (वि०) पक्का, दृढ़; निश्चल।

मुसम्मा—(अ०) (वि०) नामक, नामी; मनुष्यों के नाम के आगे लगाया जाता है।

मुसम्मात—(अ०) (सं० स्त्री०) स्त्रियों के नाम के पहले लगाया जाता है।

मुसम्मी—(अ०) (वि०) नामक, नामधारी।

मुसर्रफ़—(अ०) (वि०) अपव्ययी, फ़िज़ूल ख़र्च।

मुसर्रत—(अ०) (सं० स्त्री०) प्रसन्नता, हर्ष, आनन्द।

मुसलमान—(अ०) (सं० पु०) मुस्लिम, मोहम्मद साहब के अनुयायी।

मुसलमानी—(अ०) (वि०) मुसलमान का। (सं० स्त्री०) मुसलमानों का एक संस्कार जिसमें बालक के इंद्रिय की टोपी काट दी जाती है; ख़तना।

मुसलमीन—(अ०) (सं० पु०) मुसलमान (मुसलिम का बहुवचन)।

मुसलसल—(अ०) (वि०) लगातार, सिलसिलेवार, पै दर पै।

मुसलिम—(अ०) (सं० पु०) मुसलमान।

मुसलेह—(अ०) (वि०) सुधारक; संशोधक।

मुसल्लम—(अ०) (वि०) (१) माना हुआ, स्वीकृत; (२) साबित, सालिम, पूरा, सब।

मुसल्लस—(अ०) (सं० पु०) त्रिभुज; तीन भुजावाला; तिकोना।

मुसल्लसी—(अ०) (वि०) तिकोना।

मुसल्लह—(अ०) (वि०) सशस्त्र, हथियारबंद।

मुसल्ला—(अ०) (सं० पु०) (१) नमाज़ पढ़ने की जगह; (२) छोटी दरी जिस पर नमाज़ पढ़ते हैं।

मुसल्ली—(अ०) (सं० पु०) नमाज़ पढ़नेवाला।

मुसव्विर—(अ०) (सं० पु०) चित्रकार, तसवीर बनानेवाला।

मुसव्विरी—(अ०) (सं० स्त्री०) चित्रकला।

मुसहफ़—(अ०) (सं० पु०) (१) क़ुरान शरीफ़; (२) छोटी पुस्तकों का संग्रह।

मुसहिल—(अ०) (सं० पु०) रेचक, दस्त लानेवाली दवा।

मुसाफ़हा—(अ०) (सं० पु०) मिलने के समय हाथ मिलाना।

मुसाफ़ात—(अ०) (सं० पु०) मित्रता, दोस्ती।

मुसाफ़िर—(अ०) (सं० पु०) यात्री, सफ़र करनेवाला।

मुसाफ़िर-ख़ाना—(अ०) (सं० पु०) यात्रियों के ठहरने का स्थान।

मुसाफ़िरत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) यात्रा करना; (२) परदेश, घर से बाहर।

मुसाफ़िराना—(अ०) (वि०) यात्रा सम्बन्धी; यात्रियों के उपयुक्त।

मुसावात—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) एक सी दशा, समानता, बराबरी; (२) सामान्य बातें; (३) गणित की एक रीति; समीकरण।

मुसावी—(अ०) (वि०) बराबर, समान।

मुसाहमत—(अ०) (सं० स्त्री०) साझा, शराकत।

मुसाहलत—(अ०) (सं० स्त्री०) सुस्ती करना, काहिली।

मुसाहिब—(अ०) (सं० पु०) बड़े आदमियों के साथ रहनेवाला, राजा का दरबारी।

मुसाहिबत—(अ०) (सं० स्त्री०) मुसाहिब होना; हाज़िरी देना; पास बैठना।

मुसिह—(अ०) (वि०) संशोधक; भूल सुधारनेवाला।

मुसीबत—(अ०) (सं० स्त्री०) आपत्ति; कष्ट, संकट, क्लेश, दुःख।

मुस्किर—(अ०) (सं० पु०) नशा पैदा करनेवाली चीजें; मादक वस्तु।

मुस्किरात—(अ०) (सं० पु०) मादक द्रव्य (मुस्किर का बहुवचन)।

मुस्तअद—(वि०) उद्यत, तैयार।

मुस्तअफ़ी—(अ०) (वि०) इस्तीफ़ा देने वाला; त्याग-पत्र देनेवाला।

मुस्तअमल—(अ०) (वि०) (१) प्रचलित, जिसका चलन हो; (२) व्यवहृत, काम में लाया हुआ।

मुस्तआर—(अ०) (वि०) उधार लिया हुआ।

मुस्तक़बिल—(अ०) (सं० पु०) भविष्य।

मुस्तक़िल—(अ०) (वि०) (१) स्थायी; (२) दृढ़, मज़बूत। मुस्तक़िल-मिज़ाज—दृढ़ संकल्प वाला।

मुस्तक़ीम—(अ०) (वि०) सीधा खड़ा हुआ।

मुस्तग़नी—(अ०) (वि०) (१) स्वच्छन्द, स्वाधीन; (२) निश्चिन्त, मौजी; (३) सन्तुष्ट।

मुस्तग़रक़—(अ०) (वि०) डूबा हुआ, लवलीन।

मुस्तग़ीस—(अ०) (सं० पु०) नालिशी, फ़रियादी; दावा करनेवाला।

मुस्तज़ाद—(अ०) (वि०) बढ़ाया हुआ; ज़्यादा किया हुआ। (सं० पु०) एक प्रकार का छंद जिसके हर एक मिसरे के अन्त में एक छोटा सा पद लगा रहता है।

मुस्तजाब—(अ०) (वि०) क़बूल किया गया, स्वीकृत; सुन लिया गया।

मुस्ततील—(अ०) (सं० पु०) वह क्षेत्र जिसकी लम्बाई ज़्यादा और चौड़ाई कम हो।

मुस्तदई—(अ०) (वि०) प्रार्थी, इच्छुक।

मुस्तदीर—(अ०) (वि०) गोल।

मुस्तनद—(अ०) (वि०) प्रामाणिक; माननीय; सप्रमाण।

मुस्तफ़ा—(अ०) (वि०) पवित्र, साफ़ किया हुआ। (सं० पु०) मोहम्मद साहब का नाम।

मुस्तफ़ीज़—(अ०) (वि०) उपकार की

अपेक्षा रखनेवाला; लाभ की आशा करने-वाला।

मुस्तफ़ीद—(अ०) (वि०) लाभ उठाने-वाला; लाभान्वित, फ़ायदा पानेवाला।

मुस्तरद—(अ०) (वि०) (१) रद किया हुआ; (२) लौटाया गया।

मुस्तवी—(अ०) (वि०) समतल, चौरस।

मुस्तस्ना—(अ०) (वि०) चुना हुआ; अलग किया गया; पृथक्।

मुस्तहक़—(अ०) (वि०) अधिकार प्राप्त; अधिकारी; हक़दार।

मुस्तहकम—(अ०) (वि०) (१) पक्का, दृढ़; (२) अटल; (३) ठीक।

मुस्ताजिर—(अ०) (सं० पु०) (१) ज़मीं-दार; (२) ठेकेदार; (३) किसान, असामी।

मुस्ताजिरी—(अ०) (सं० स्त्री०) ठेकेदारी, पट्टा।

मुस्तैद—(अ०) (वि०) तत्पर; चुस्त, चालाक, तेज़।

मुस्तौजिब—(अ० (वि०) (१) दंडनीय; (२) उत्तरदायी।

मुस्तौफ़ी—(अ०) हिसाब जाँच करनेवाला, मीर-मुन्शी।

मुस्बत—(अ०) (वि०) लिखित; प्रमा-णित, सिद्ध किया हुआ। (सं० पु०) जोड़, धन।

मुहक़—(अ०) (वि०) अधिकारी, अधिकार-प्राप्त; पात्र।

मुहकम—(अ०) (वि०) पायदार, मज़बूत, दृढ़, पुख़्ता।

मुहक़्क़क़—(अ०) (वि०) चौकस; जो जाँच करने पर ठीक निकले; प्रमाणित। (सं० पु०) सुन्दर लिपि।

मुहक़्क़र—(अ०) (वि०) घृणित।

मुहक़्क़िक़—(अ०) (सं० पु०) परीक्षक, जाँच करनेवाला; दार्शनिक, तत्व-शोधक।

मुहज़्ज़ब—(अ०) (वि०) सभ्य, सुशील, शिष्ट; बातहज़ीब।

मुहतमिम—(अ०) (सं० पु०) प्रबन्धकरने-वाला, व्यवस्थापक; मैनेजर।

मुहतमल—(अ०) (वि०) (१) अस्पष्ट, संदिग्ध; (२) संभव।

मुहतसिब—(अ०) (सं० पु०) प्रजा के आचरण का निरीक्षक।

मुहताज—(अ०) (वि०) (१) दरिद्र, ग़रीब; (२) जिसे किसी चीज़ की आव-श्यकता हो; (३) अपाहिज।

मुहताज-ख़ाना—(अ० फ़ा०) (सं० पु०) अनाथालय।

मुहताजी, मुहताजगी—(अ०) (सं० स्त्री०) गरीबी, दरिद्रता, आवश्यकता।

मुहतात—(अ०) (वि०) होशयार; सतर्क, सावधानी रखनेवाला।

मुहताल—(अ०) (सं० पु०) मक्कार, कपटी, फ़रेबी।

मुहद्दिस—(अ०) (सं० पु०) हदीस का जाननेवाला, शास्त्रज्ञ, धर्माचार्य।

मुहन्दिस—(अ०) (सं० पु०) गणितज्ञ; ज्योतिषी।

मुहब्बत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) प्रेम, प्रणय, प्यार, (२) मित्रता।

मुहब्बत-आमेज़—(अ० फ़ा०) (वि०) प्रेम-पूर्ण, स्नेह-पूर्ण।

मुहमल—(अ०) (वि०) (१) बेकार, निकम्मा; (२) बेहूदा, निरर्थक।

मुहम्मद—(अ०) (सं० पु०) (१) प्रशंसित; मुसलमानों के पैग़म्बर साहब।

मुहर—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) अंगूठी; (२) किसी चीज़ पर खुदा हुआ नाम; (३) निशान; (४) अशर्फ़ी।

मुहरक—(अ०) (वि०) हरकत देनेवाला, उकसानेवाला; आन्दोलक, संचालक।

मुहरह—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) काग़ज़ व कपड़े के घोटने का यंत्र; (२) शतरंज की गोट; (३) कौड़ी, सीप; (४) एक पत्थर जो विष के प्रभाव को दूर करता है; (५)

सर्प की मणि; (६) गर्दन व पीठ की हड्डियों का टुकड़ा; (७) हथौड़ा।

मुहरहबाज़—शोबदेबाज़, अय्यार; बाज़ीगर।

मुहर्रफ़—(अ०) (वि०) टेढ़ा; बिगाड़ा हुआ।

मुहर्रम—(अ०) (सं० पु०) (१) वर्ष का पहला मास; (२) हुसैन की मृत्यु के दिन जिसमें मुसलमान शोक मनाते हैं; (३) मातम, शोक।

मुहर्रम की पैदायश, मुहर्रमी सूरत—रोती सूरत।

मुहर्रा—(अ०) (वि०) जो पानी में आग की गरमी से मुलायम हो जाय।

मुहर्रिक—(अ०) (वि०) (१) हरकत या गति देनेवाला; (२) संचालक, नेता।

मुहर्रिर—(अ०) (सं० पु०) लिखनेवाला, लेखक, मुंशी।

मुहर्रिरा—(अ०) (वि०) लिखित, लिखा हुआ।

मुहर्रिरी—(अ०) (सं० स्त्री०) मुन्शीगरी।

मुहलक—(अ०) (वि०) घातक, मार डालनेवाला।

मुहलत—(अ०) (सं० स्त्री०) .फ़ुरसत, अवकाश।

मुहल्ला—(अ०) (सं० पु०) नगर का भाग। **मुहल्ला-ख़मोशान**—क़ब्रस्तान।

मुहसिन—(अ०) (सं० पु०) भलाई करनेवाला; एहसान करनेवाला। उदार। **मुहसिन-कुश**—कृतघ्न।

मुहाजरत—(अ०) (सं० स्त्री०) एक स्थान से दूसरे स्थान जाना, एक देश छोड़ कर दूसरे देश चला जाना।

मुहाज़ात—(अ०) (सं० पु०) सामने आना; मुक़ाबिला करना।

मुहाज़ी—(अ०) (सं० पु०) सामनेवाला हिस्सा।

मुहाफ़ज़त—(अ०) (सं० स्त्री०) रक्षा, हिफ़ाज़त।

मुहाफ़ा—(अ०) सं० पु०) पर्देदार सवारी, पालकी।

मुहाफ़िज़—(अ०) (सं० पु०) रक्षक, हिफ़ाज़त करनेवाला।

मुहाफ़िज़-ख़ाना—(अ०) (सं० पु०) कचहरी के काग़ज़ात व पुरानी मिसलें रखने का स्थान।

मुहाफ़िज़-दफ़्तर—(अ०) (सं० पु०) न्यायालय व कचहरी का वह अधिकारी जिसके ऊपर सब काग़ज़-पत्रों की रक्षा का भार हो।

मुहाबा—(अ०) (सं० पु०) भय; डर।

मुहारबा—(अ०) (सं० पु०) लड़ाई, युद्ध।

मुहाल—(अ०) (वि०) असम्भव, नामुमकिन।

मुहावरा—(अ०, (सं० पु०) (१) अभ्यास, आदत; (२) रोज़ की बोलचाल का प्रयोग; कहावत, विशेष अर्थ-द्योतक वाक्य।

मुहासबा—(अ०) (सं० पु०) हिसाब; लेखा।

मुहासरा—(अ०) (सं० पु०) घेरा, शत्रु की सेना या गढ़ को चारों ओर से घेर लेना; घेरा डालना।

मुहासिब—(अ०) (सं० पु०) गणितज्ञ; हिसाब जाँचनेवाला।

मुहासिल—(अ०) (सं० पु०) वसूली; लगान व टेक्स आदि से वसूल होनेवाली रक़म।

मुहिब—(अ०) (सं० पु०) प्रेमी, मित्र।

मुहिम—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) कठिन काम; (२) युद्ध; (३) चढ़ाई, आक्रमण।

मुही—(अ०) (सं० पु०) ईश्वर; ज़िन्दा करनेवाला।

मुहीत—(अ०) (वि०) घेरनेवाला। (सं० पु०) घेरा, समुद्र।

मुहीब—(अ०) (वि०) भयानक, डरावना।

मुहैया—(अ०) (वि०) तैयार, लैस, उपस्थित, मौजूद, प्रस्तुत।

मू—(फ़ा०) (सं० पु०) बाल, केश, रोम।

मूए—(फ़ा०) (सं० पु०) बाल, केश।

मूए आतिश दीदा—(फ़ा०) (सं० पु०) आग दिखाया हुआ बाल, (बाल आग की गरमी पाकर पेचदार हो जाता है)।

मूजिद—(अ०) (वि०) आविष्कारक, ईजाद करनेवाला।

मूजिब—(अ०) (सं० पु०) सबब, कारण।

मूज़ी—(अ०) (वि०) अत्याचारी, कष्ट पहुँचानेवाला; दुष्ट, पाजी।

मूनिस—(अ०) (सं० पु०) (१) मित्र, दोस्त; (२) सहायक, साथी।

मू-ब-मू—(क्रि० वि०) बाल बाल, ज़रा ज़रा।

मू-बाफ़—(फ़ा०) (सं० पु०) वह पट्टी या फ़ीता जिससे स्त्रियाँ चोटी गूँथती हैं; चोटी बाँधने का कपड़ा।

मूरिस—(अ०) (सं० पु०) पूर्व पुरुष, पुरखा।

मू-शिगाफ़ी—छानबीन, बाल की खाल निकालना।

मूसी—(अ०) (वि०) वसीयत करनेवाला।

मूसीक़ार—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) कुक्रनस; एक पक्षी जिसका गाना बड़ा सुरीला माना जाता है, इसके गाने से जंगल में आग लग जाती है; (२) एक बाजे का नाम।

मूसीक़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) गानविद्या, संगीत-शास्त्र।

मेअराज, (मअराज)—(अ०) (सं० पु०) (१) मोहम्मद साहब का ख़ुदा का प्रकाश देखना। (२) सीढ़ी; (३) परमगति, सर्वोच्च स्थान। मअराज मिलजाना, मअराज हो जाना—उन्नति के सर्वोच्च शिखर पर पहुँच जाना।

मेख़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) कील; खूंटी, काँटा।

मेख़चू—(फ़ा०) (सं० पु०) हथौड़ा।

मेज़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ऊँची तख़्तों की चौकी, जिस पर काग़ज़, क़लम रखते हैं या खाना खाते हैं।

मेज़बान—(फ़ा०) (सं० पु०) जिसके यहाँ मेहमान आवे; आतिथ्य करनेवाला।

मेदा—(अ०) (सं०) आमाशय, पेट।

मेमार—(अ०) (सं० पु०) राज, कारीगर।

मेमारी—(अ०) (सं० स्त्री०) राजगीरी, मकान बनाने का काम।

मेवा—(फ़ा०) (सं० पु०) सूखे हुए फल; किशमिश, बादाम इत्यादि।

मेवा-फ़रोश—(फ़ा०) (सं० पु०) मेवा या फल बेचनेवाला।

मेश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) भेड़।

मेहतर—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) महान् पुरुष, बड़ा आदमी, नवाब; (२) सरदार, नेता; (३) भंगी, जमादार।

मेहनत—(अ०) (सं० स्त्री०) परिश्रम; श्रम, मज़दूरी।

मेहनताना—(अ०) (सं० पु०) पारिश्रमिक, मज़दूरी; वकील की फ़ीस।

मेहनती—(अ०) (वि०) परिश्रमी, उद्योगी।

मेहमान—(फ़ा०) (सं० पु०) अतिथि, पाहुना।

मेहमान-ख़ाना—(फ़ा०) (सं० पु०) अतिथि-शाला।

मेहमान-दार—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अतिथि सत्कार, आतिथ्य; ख़ातिरदारी।

मेहमानवाज़—(फ़ा०) (सं० पु०) मेहमानों की ख़ातिर करनेवाला।

मेहमानवाज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) आथित्य; मेहमानों की ख़ातिर करना।

मेहमानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) मेहमान होना; (२) ख़ातिर, दावत।

मेहरबान—(फ़ा०) (सं० पु०) दयालु, कृपालु; मित्र, दोस्त।

मेहरबानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) कृपा, दया; अनुकम्पा।

मेह्र—(फ़ा०) (सं० पु०) कृपा, दया; सहानुभूति; सुख। (सं० पु०) सूर्य; एक महीने का नाम।

मै—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शराब; सुरा। (क्रि० वि०) साथ।

मै-कदा—(फ़ा०) (सं० पु०) कलारी, मै-ख़ाना, मधुशाला।

मै-कश—(फ़ा०) (सं० पु०) शराब पीने-वाला।

मै-कशी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शराब पीना, मद्य-पान; सुरा-सेवन।

मै-ख़ाना—(फ़ा०) (सं० पु०) कलारी, शराब पीने का स्थान।

मै-ख़्वार—(फ़ा०) (सं० पु०) शराबी; शराब पीनेवाला।

मै-ख़्वारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शराब पीना, शराब की लत।

मैदा—(फ़ा०) (सं० पु०) महीन आटा।

मैदान—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) क्षेत्र, युद्ध-क्षेत्र; (२) समतल भूमि, जिसमें ऊँचाई-निचाई न हो; (३) खेलने की जगह।

मै-नोशी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शराब पीना।

मै-परस्त—(फ़ा०) (सं० पु०) शराबी; शराब का पुजारी।

मै-परस्ती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शराब की पूजा; शराब का बेहद शौक़।

मै-फ़रोश—(फ़ा०) (सं० पु०) कलार, शराब बेचनेवाला।

मैमूँ—(फ़ा०) (सं० पु०) बन्दर।

मैयत—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मृत्यु, मौत, लाश।

मैल—(अ०) (सं० पु०) (१) झुकाव; (२) अनुरक्ति, आसक्ति, प्रेम, चाह; (३) सलाई, आँख में अंजन लगाने की सलाई।

मैलान—(अ०) (सं० पु०) प्रवृत्ति, झुकाव, रग़बत, अनुराग, चाह।

मोअज़्ज़िन—(अ०) (सं० पु०) नमाज़ के लिए बुलानेवाला, नमाज़ की बाँग देने वाला।

मोआयना—(सं० पु०) निरीक्षण, देख-भाल।

मोजज़ा—(अ०) (सं० पु०) चमत्कार, करामात।

मोज़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) जुराब; पैरों में पहनने का कपड़े का ख़ोल; (२) पिंडली के नीचे का हिस्सा; (३) बूट-जूता। कहा०—मोज़े का घाव, रानी जाने या राव। मोज़े का घाव, मियाँ जाने या पाँव। अपना कष्ट मनुष्य ही स्वयं जानता है

मोतक़िद—(अ०) (वि०) विश्वास करने-वाला, अनुयायी, भक्त।

मोतमद—(अ०) (वि०) विश्वास-पात्र, विश्वसनीय।

मोतमिद—(अ०) (वि०) विश्वास करने-वाला।

मोतरिज़—(अ०) (वि०) आपत्ति करने वाला, उज्र करनेवाला।

मोताद—(अ०) (सं० स्त्री०) औषध की मात्रा।

मोम—(फ़ा०) (सं०पु०) शहद की मक्खियों के छत्ते में निकलनेवाला चिकना पिघलने-वाला द्रव्य।

मोमिन—(अ०) (सं० पु०) (१) ईमान रखनेवाला; विश्वासी; (२) धर्म-निष्ठ; (३) मुसल्मान जुलाहा।

मोमियाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार की औषध, जिसे चोट, घाव पर लगाते हैं और पिलाते हैं, रूप-रंग में शिलाजीत से मिलती हुई होती है।

मोमी—(फ़ा०) (वि०) मोम का।

मोर—(अ०) (सं० पु०) च्यूँटी, चींटी, पिपीलिका।

मोरचा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) छोटी चींटी; (२) लोहे का ज़ंग; (३) वह स्थान जहाँ से फ़ौज लड़ती है और क़िले की रक्षा करती है; (४) खाई।

मोहतमिम—(अ०) (सं० पु०) प्रबंध करने वाला, व्यवस्थापक।

मोहताज—(वि०) ग़रीब, अपाहिज।

मोहमिल—(अ०) (वि०) (१) निरर्थक, अस्पष्ट; (२) त्यक्त, छोड़ा हुआ।

मोहर—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) नाम अंकित करने का ठप्पा, मुद्रा; (२) छाप, निशानी, (३) अशर्फ़ी।

मोहरा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) मुँह, बर्तन का मुँह; (२) ऊपरी भाग; (३) फ़ौज का आगे का हिस्सा; (४) फ़ौज के चढ़ने की दिशा या रुख़; (५) कौड़ी; (६) शतरंज की गोट; (७) चमक, पालिश।

मोहलत—(अ०) (सं० स्त्री०) फ़ुरसत, अवकाश; (२) अवधि, मिआद।

मोहलिक—(अ०) (वि०) घातक, जान लेनेवाला।

मोहसिन—(अ०) (वि०) कृपालु, उपकारक।

मोहसिन-कुश—(अ०) (वि०) कृतघ्न; एहसान न माननेवाला।

मौक़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) अवसर, समय; (२) स्थान, जगह, घटना-स्थल।

मौक़ूफ़—(अ०) (वि०) (१) रोका गया, बंद किया गया; (२) बरख़ास्त, नौकरी से अलग किया हुआ; (३) रद किया गया; (४) निर्भर, मुनहसिर।

मौक़ूफ़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) बरख़ास्तगी, हटाया जाना, बंद किया जाना।

मौज—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) लहर, पानी की लहर; (२) धुन, ख़याल, उमंग, जोश।

मौज़ा—(अ०) (सं० पु०) ग्राम, खेत।

मौज़ूँ—(अ०) (वि०) उपयुक्त, उचित, ठीक।

मौजूद—(अ०) (वि०) (१) विद्यमान, उपस्थित, हाज़िर, (२) तैयार, प्रस्तुत।

मौजूदगी—(अ०) (सं० स्त्री०) हाज़िरी, उपस्थिति।

मौजूदा—(अ०) (वि०) वर्तमान, हाल का।

मौजूदात—(अ०) (सं० स्त्री०) तमाम सृष्टि, अखिल विश्व।

मौत—(अ०) (सं० स्त्री०) मृत्यु।

मौरूसी—(अ०) (वि०) (१) बाप-दादा से मिला हुआ, पैतृक; (२) वह ज़मीन जिसे बहुत दिन तक जोतने से किसान का हक़ हो जाता है।

मौलवी—(अ०) (सं० पु०) धर्माचार्य; पंडित, विद्वान्।

मौला—(अ०) (सं० पु०) (१) ईश्वर; (२) स्वामी, मालिक; ३) सहायक।

मौलाना—(अ०) (सं० पु०) बहुत बड़ा विद्वान्।

मौलूद—(अ०) (सं० पु०) (१) जन्म के दिन; (२) मोहम्मद साहब के जन्म का उत्सव, (३) नवजात शिशु।

मौसम—(अ०) ऋतु, समय, अवसर।

मौसूफ़—(अ०) (वि०) उक्त, उपर्युक्त, जिसका वर्णन किया जा चुका हो।

मौसूम—(अ०) (वि०) नामी, नामक, नामधारी।

मौसूल—(अ०) वि० (१) मिला हुआ, लगा हुआ; (२) प्राप्त, वसूल हुआ।

मौहूम—(अ०) (वि०) कल्पित, सोचा हुआ।

य

यक—(फ़ा०) (वि०) (१) एक; (२) अकेला। कहा०—यक अनार, सद

बीमार—चीज़ एक और चाहनेवाले बहुत। यक पीरी व सद ऐब—बुढ़ापा सौ बीमारियों के बराबर है।

यक-क़लम—(फ़ा०) (वि०) बिलकुल, तमाम, सब, पूरा। (क्रि० वि०) फ़ौरन, ज़रूर, एक-बारगी।

यक-चश्म—(फ़ा०) वि०) काना।

यक-चश्मी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) नेक बद को एक नज़र से देखना; (२) एक-रुख़ी तसवीर।

यक-जद्दी—(फ़ा०) (वि०) एक दादा की औलाद।

यक-ज़बाँ—(फ़ा०) (वि०) बात का पक्का, सच्चा, बात पर क़ायम रहनेवाला।

यक-जहत—(फ़ा०) (वि०) एक-मत, सह-मत, मुत्तफ़िक़।

यक-जहती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दोस्ती, एक मत होना।

यक-जा—(फ़ा०) इकट्ठे, मिले-जुले।

यक-जाई—(फ़ा०) (वि०) एक ही जगह जमा।

यक-जान—(फ़ा०) (वि०) एक-दिल, ख़ूब मिला हुआ। यक जान दो क़ालिब—पक्का दोस्त, एक प्राण दो शरीर।

यक-तरफ़ा—(वि०) एक तरफ़ की, जिसमें दूसरी तरफ़ का लिहाज़ न किया जाय।

यक-तही—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) कपड़ा जो दोहरा न हो, इकहरा हो।

यकता—(फ़ा०) (वि०) (१) ईश्वर; (२) अकेला, निराला; (३) बे-जोड़, बे-नज़ीर।

यकताई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) एक होना, (२) अकेला होना; (३) बे नज़ीर होना, अनुपम होना।

यक-तारा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) एक तार का सितार; (२) एक प्रकार की बारीक मलमल।

यक-दस्त—(फ़ा०) (वि०) (१) एक-सा, बराबर; (२) ख़िलअत।

यक-दस्ती—(फ़ा०) (वि०) (१) एक हाथ का; (२) (सं० पु०) कुश्ती का एक पेच।

यक-दिल—(फ़ा०) (वि०) अंतरंग, हम-दम, घनिष्ठ।

यक न शुद दो शुद—(फ़ा०) एक आफ़त तो थी ही, दूसरी और आगई।

यक-ब-यक—(क्रि० वि०) अचानक, एक बारगी।

यक-बारगी—(फ़ा०) (क्रि० वि०) (१) अचानक, सहसा; (२) कुल।

यक-पुश्ता—(वि०) एक तरफ़ छपा हुआ काग़ज़।

यक-मुश्त—(फ़ा०) (क्रि० वि०) एक दफ़ा, एक बार में, इकट्ठा, एक साथ।

यक-रंग—(फ़ा०) (वि०) बाहर भीतर एक-सा, सच्चा दोस्त, निष्कपट।

यक-रंगी—(फ़ा० (सं० स्त्री०) दोस्ती, प्रीति; भीतर बाहर एक-सा होना।

यक-रुख़ी—(फ़ा०) (वि०) एक-तरफ़ा; दोनों तरफ़ से एक ही शकल का।

यक-रू—सच्चा दोस्त जो सामने और पीछे नेक कहे।

यक-लख़्त—(फ़ा०) (वि०) सारा, बिल-कुल, सब, तमाम।

यकशंबा—(फ़ा०) (सं० पु०) रविवार, इतवार।

यक-सर—(फ़ा०) (क्रि० वि०) बिलकुल, तमाम।

यक-साँ—(फ़ा०) (वि०) एक-सा, बराबर, समान।

यक-सू—(फ़ा०) (वि०) एक तरफ़, स्थिर। यक-सू करना—अलग करना, फ़ैसल करना। यक-सू होना—सब से अलग होना।

यक-सूई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) क़याम, फ़ुरसत, अवकाश।

यकायक—(फ़ा०) (क्रि० वि०) एक बारगी, अचानक, सहसा।

यक़ीन—(अ०) (सं० पु०) (१) विश्वास, ऐतबार; (२) भरोसा, इत्मीनान। **यक़ीन आना**—विश्वास आना। **यक़ीन करना; यक़ीन जानना**—सच जानना, विश्वास करना। **यक़ीन लाना**—विश्वास करना, बावर करना।

यक़ीनी—(अ०) (वि०) निस्सन्देह, निश्चित, बेशुबह।

यक़ीनन्—(अ०) (क्रि० वि०) ज़रूर, अवश्य; बेशक।

यके बाद दीगरे—(फ़ा०) एक दूसरे के बाद।

यक्का—(फ़ा०) (सं० पु०) इक्का, एक घोड़े की सवारी। (वि०) (१) एक से सम्बन्ध रखनेवाला; (२) अकेला; (३) लासानी, अनुपम, बे-जोड़।

यक्का-ताज़—(फ़ा०) (वि०) जो अकेला ही शत्रुओं का सामना करने को तैयार हो और किसी की मदद की प्रतीक्षा न करे; बहादुर, वीर।

यक्कुम—(फ़ा०) (वि०) (१) प्रथम, पहला; (२) महीने की पहली तारीख़।

यख़—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार की बरफ़। (वि०) बहुत ठंडा, निहायत सर्द।

यख़नी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) उबाले हुए मांस का पानी, शोरबा।

यग़मा—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) लूट, डाका; (२) लूट का माल; (३) तुर्किस्तान का एक प्रदेश जहाँ के निवासी बहुत सुन्दर होते हैं।

यग़माई—(फ़ा०) (सं० पु०) डाकू, लुटेरा।

यगां—(फ़ा०) (क्रि० वि०) अकेले।

यगानगत, यगानगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) रिश्तेदारी, सम्बन्ध; (२) आपस-दारी; (३) अनोखापन; (४) एकता, मेल-जोल।

यगाना—(फ़ा०) (वि०) (१) एक घराने या कुनबे का; (२) पास का रिश्तेदार, निकट सम्बन्धी; (३) बेजोड़; अनुपम।

यज़दान—(फ़ा०) (सं० पु०) ईश्वर का एक नाम, जिसे पारसी मानते हैं।

यज़दान-परस्त—(फ़ा०) (वि०) आतश-परस्त, अग्नि उपासक, पारसी।

यज़दान-परस्ती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पारसियों की ईश्वरोपासना।

यज़दानी—(फ़ा०) (वि०) ईश्वर-सम्बन्धी। (सं० पु०) पारसी।

यज़ीद—(अ०) (सं० पु०) (१) माविया के बेटे का नाम जिसने ख़िलाफ़त की आड़ में हज़रत इमाम हुसैन को करबला के मैदान में क़त्ल किया था; (२) संग-दिल, क्रूर; बेबस।

यज़्द—(फ़ा०) (सं० पु०) ईरान का एक प्रसिद्ध नगर।

यतीम—(अ०) (सं० पु०) (१) वह कम-उम्र बालक जिसका बाप या मा या दोनों मर गये हों, अनाथ; (२) बहुमूल्य रत्न, बड़ा मोती।

यतीम-उल्-तरफ़ैन—(अ०) (सं० पु०) वह बच्चा जिसके मा बाप दोनों मर गये हों।

यतीम-ख़ाना—(अ०) (सं० पु०) यतीमों के रहने का स्थान, अनाथालय।

यतीमी—(अ०) (सं० स्त्री०) यतीम होने की दशा।

यद—(अ०) (सं० पु०) हाथ।

यदे-तूली—(अ०) (सं० पु०) दक्षता, मलका, प्रवीणता, हस्तलाघव।

यदे-बैज़वी, यदे-बैज़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) चमकता हुआ हाथ; (२) हज़रत मूसा का हाथ जिसमें ईश्वरीय प्रकाश भर गया था; (३) करामात, चमत्कार।

यबूसत—(अ०) (सं० स्त्री०) ख़ुश्की, सूखापन।

यम—(फ़ा०) (सं० पु०) दरिया।

यमन—(अ०) (सं० पु०) अरब के एक प्रसिद्ध प्रान्त का नाम, जहाँ का अक़ीक़ और लाल प्रसिद्ध है।

यमनी—(अ०) (वि०) यमन प्रदेश का; (२) (सं०) एक प्रकार का नीला रंग का कबूतर।

यमान—(अ०) (वि०) यमन देश का।

यमानी—(अ०) (सं० पु०) यमन देश का निवासी। (सं० स्त्री०) यमन देश की भाषा। (वि०) यमन देश का।

यमीन—(अ०) (सं० पु०) (१) सीधा हाथ, दाहिना हाथ; (२) दाईं तरफ़; (३) शपथ, क़सम; (४) ताक़त, शक्ति। (वि०) दायाँ, दाहिना। यमीन ओ यसार—दाईं-बाईं, फ़ौज का दायाँ बायाँ बाज़ू।

यरक़ान—(अ०) (सं० पु०) कामला या पाँडु रोग, पीलिया।

यरक़ानी—(अ०) (वि०) पाँडु-रोगी, पीलिये का मरीज़।

यरग़माल—(फ़ा०) (सं० पु०) १) ज़मानत; (२) आदमी या चीज़ जो दूसरे के पास जमा कर दी जाय और शर्त पूरी होने पर वापस मिले।

यराक़—(तु०) (सं० पु०) लड़ाई का सामान, हथियार।

यर्ग़ा—(फ़ा०) (वि०) एक प्रकार के घोड़े का रंग।

यल—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) पहलवान, बहादुर; (२) मोटा, मुस्टंडा। यल ओ शल—(वि०) ख़ूब मोटा।

यला—(फ़ा०) (वि०) छोड़ा गया, मुक्त, बे-क़ैद।

यल्गार—तु०) (सं० स्त्री०) हमला, आक्रमण, चढ़ाई, धावा।

यल्दा—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अंधेरी रात जो सब से बड़ी होती है और मनहूस समझी जाती है।

यशब—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार का सब्ज़ मायल कड़ा पत्थर जो दिल को ताक़त पहुँचानेवाला समझा जाता है।

यशम—(फ़ा०) (सं० पु०) यशब नामक पत्थर।

यसार—(अ०) (सं० पु०) बायाँ हाथ, बाईं तरफ़।

यसावल—(तु०) (सं० पु०) चोबदार।

यसीन—देखो 'यासीन'।

यसीर—(अ०) (वि०) (१) सहल, आसान; (२) थोड़ा छोटा। (सं०) मातृ-हीन बालक, बिना मा का बच्चा।

यहीया—(अ०) (सं० पु०) इस्लाम के एक पैग़म्बर का नाम।

यहूद (इब्रा०)—(सं० पु०) (१) वह देश जहाँ हज़रत ईसा ने जन्म लिया था; (२) यहूद के निवासी; यहूदी (बहुवचन)।

यहूदी (इब्रा०)—(सं० पु०) (१) यहूद देश का निवासी; (२) हज़रत मूसा की उम्मत का आदमी।

याँ—(हि०) (क्रि० वि०) यहाँ, इस जगह।

या—(फ़ा०) अव्यय) अथवा, वा। (अ०) सम्बोधन, हैरत वा आश्चर्य प्रकट करने के लिए। या इलाही—हे ईश्वर। या बारे ख़ुदा—हे परमपिता परमेश्वर।

याक़ूत—(अ०) (सं० पु०) (१ एक रत्न, लाल, मानक; (२) एक प्रकार का पुलाव जिसके चावल सुर्ख़ रंग के हों।

याक़ूती—(अ०) (वि०) (१) याक़ूत से सम्बन्धित; (२) (सं० स्त्री०) एक प्रकार की पौष्टिक माजून, जिसमें रत्न भी डाले जाते हैं; (३) एक प्रकार की मिठाई जो खीर की भाँति पकाई जाती है।

याक़ूब—(पु०) हज़रत यूसुफ़ के बाप का नाम।

याग़—(तु०) (सं० पु०) घी, तेल।

याज़्दा—(फ़ा०) (वि०) ग्यारह। याज़्दहुम—ग्यारहवाँ।

याजूद—(अ०) (सं० पु०) हज़रत नूह के पोते का नाम जो बहुत शरीर और झगड़ालू था। इसका भाई माजूज था। याजूद-माजूज—फ़िसादी, झगड़ालू, कपटी, उपद्रवी।

याद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) स्मरण-शक्ति, स्मृति; (२) रटना, (३) ख़याल, (४) कंठस्थ, बर-ज़बान।

याद-अल्लाह—(स्त्री०) (१) फ़क़ीरों का अभिवादन; (२) ईश्वर-स्मरण; (३) जान-पहचान, परिचय, दुआ-सलाम, साहब-सलामत; (४) भूली-बिसरी हुई। याद-अल्लाह होना—दोस्ती होना, जान पहचान होना।

याद-आवरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) याद आना, याद करना, पत्र लिखना; (२) मिज़ाज-पुरसी करना, कुशल-मंगल पूछना।

याद-गार—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) निशानी, स्मृति-चिन्ह; (२) बेटा; (३) पुरानी इमारत; (४) वह चीज़ जिससे किसी की याद ताज़ा हो।

यादगारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (औ०) याद।

यादगारे-ज़माना—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ला-जवाब, ज़माने में याद रहनेवाली चीज़।

याद-दाश्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) स्मरण शक्ति; (२) याद रखने का निशान; (३) डायरी, नोट-बुक, रोज़-नामचा।

याद-दिहानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) याद रखना, ध्यान रखना, ख़याल रखना, भूल न जाना।

याद-दिही—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) याद रखना।

याद-फ़रामोश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार की शर्त और बाज़ी जिसमें यह बदते हैं कि एक मनुष्य जब दूसरे को कोई चीज़ दे और पानेवाला कह दे कि "याद है" तो वह जीता और यदि पानेवाला यह कहना भूल जाय तो देनेवाला कहता है, "फ़रामोश" और जीत जाता है।

यादश-बख़ैर—(फ़ा०) जिनकी याद कर रहे हैं वह सकुशल रहें—इस पद का व्यवहार उस समय किया जाता है जब किसी अनुपस्थित मित्र या सम्बन्धी का ज़िक्र हो रहा हो। यदि किसी मित्र का ज़िक्र हो रहा हो और वह अनायास आ निकले तो भी यह कहा जाता है।

यादे-अय्याम—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पिछले दिनों की दशा की याद करना।

यानी—(अ०) (क्रि० वि०) (१) अर्थात, तात्पर्य यह है कि, मतलब यह है कि; (२) क्योंकि, इसलिए कि।

यानीचे—(फ़ा०) क्यों, किस कारण से, किस वजह से।

याने—(क्रि० वि०) यानी।

याफ़्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) आमदनी, नफ़ा; (२) रिशवत, ऊपरी आमदनी।

याफ़्तनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) जो वसूल करने के क़ाबिल हो, पाने के लायक़।

याब—(फ़ा०) (प्रत्यय) पानेवाला, हासिल करनेवाला। (जैसे, फ़तह याब)।

याबिन्दा—(फ़ा०) (वि०) पानेवाला।

याबिस—(अ०) (वि०) ख़ुश्क, ख़ुश्की करनेवाला।

याबी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) प्राप्ति की क्रिया, पाना (शब्दों के अन्त में)।

याबू—(फ़ा०) (सं० पु०) छोटे क़द का घोड़ा, टट्टू।

यार—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सहायक, हिमायती, मददगार, (२) मित्र, दोस्त, साथी; (३) वेश्या का प्रेमी; (४) प्रेमी, माशूक़।

यार-ग़ार—(फ़ा०) (सं० पु०) गहरा दोस्त, पक्का दोस्त।

या-रब—(१) हे ईश्वर; (२) पुकार, फ़रयाद।

यार-फ़रोश—(फ़ा०) (वि०) ख़ुशामदी।

यार-बाज़—(फ़ा०) (वि०) फ़ाहशा, दुश्चरित्रा, कुलटा।

यार-बाश—(फ़ा०) (वि०) (१) वह आदमी जो हर एक से मेल रखता हो, मिलनसार; (२) ऐयाश, तमाशबीन, कामुक।

यार-बाशी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मिलनसारी, हर एक से मेल रखना।

यार-मार—(फ़ा०) (वि०) विश्वास-घाती, मित्र के साथ विश्वास घात करनेवाला।

यार-लोग—चालाक यार; हम लोग।

यारा—(फ़ा०) (सं० पु०) सामर्थ्य, ताक़त।

यारान—(फ़ा०) (सं० पु०) मित्र, (यार का बहुवचन)।

यारान-अदम, यारान-रफ़्ता—(फ़ा०) (सं० पु०) मुर्दे, मरे हुए लोग।

याराना—(फ़ा०) (वि०) मित्रों का सा, मित्रोचित। (सं० पु०) मित्रता, दोस्ती, स्नेह, प्रेम, मेल।

यारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) मदद, सहायता; (२) मित्रता, प्रेम। यारी देना—मदद देना। यारी ख़ुश्‍क करना—बच्चों का एक दूसरे से मित्रता तोड़ना।

यारे-जानी—(फ़ा०) (वि०) प्राण प्रिय मित्र, दिली दोस्त।

याल—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) गर्दन, गला; (२) घोड़े की गर्दन पर के बड़े बड़े बाल।

यावर—(फ़ा०) (सं० पु०) सहायक, हिमायती, दस्तगीर।

यावरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सहायता, मदद, सहारा, दस्तगीरी।

यावा—(फ़ा०) (वि०) बेहूदा, व्यर्थ, ऊटपटांग, निरर्थक।

यावा-गो—(फ़ा०) (वि०) बेहूदा बकनेवाला, बकवादी।

यावा-सरा—(फ़ा०) (वि०) यावा-गो; बकवादी।

यास—(अ०) (सं० स्त्री०) निराशा, नाउम्मेदी, मायूसी।

यास-कुल्ली—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पूरी निराशा, घोर नैराश्य।

यासमन, या-समीन—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) चमेली, एक ख़ुशबूदार फूल की बेल।

यासीन—(अ०) (सं० स्त्री०) क़ुरान-शरीफ़ की एक प्रसिद्ध आयत (जिसका आरंभ इस शब्द से होता है)। मृत्यु के समय बीमार के पास पढ़ी जाती है। यासीन का वक़्त आना—मृत्यु समीप होना।

याहू—(अ०) (अव्यय) हे ईश्वर। (सं० पु०) एक प्रकार का सफ़ेद रंग का कबूतर जिसके मुँह से 'याहू' की आवाज़ निकलती है।

युब्स—(अ०) (सं० पु०) सूखा-पन, ख़ुश्की।

युमन—(अ०) (सं० पु०) (१) सौभाग्य, बरकत, ख़ुश-क़िस्मती; (२) सफलता, कामयाबी।

युसर—(अ०) (सं० पु०) बड़प्पन, उदारता, तवंगरी, सौभाग्य।

यूज़—(फ़ा०) (सं० पु०) चीता। (वि०) सौ।

यूनस, यूनुस—(इब्रा०) (सं० पु०) (१) एक पैग़म्बर का नाम; (२) खंभा।

यूनान—(फ़ा०) (सं० पु०) यूरुप के एक प्रसिद्ध देश का नाम, ग्रीस।

यूनानी—(फ़ा०) (वि०) (१) यूनान का रहनेवाला; (२) यूनान का, यूनान का बना हुआ; (३) (सं० स्त्री०) यूनान की भाषा; (४) यूनान की वैद्यक, चिकित्सा-प्रणाली।

यूरिश—(तु०) (सं० स्त्री०) (१) हमला, चढ़ाई, आक्रमण, धावा; (२) फ़िसाद, हँगामा, बलवा।

यूसुफ़—(इब्रा०) (सं० पु०) एक प्रसिद्ध पैग़म्बर का नाम जिनका सौन्दर्य अद्वितीय था। मिस्र देश की ज़ुलैख़ा आप पर आसक्त थी; (२) बहुत ही सुन्दर; (३) (स्त्री०) क़ुरान शरीफ़ की एक सुरत का नाम।

यूसुफ़े-सानी—यूसुफ़ का सा सुन्दर और स्वरूपवान्।

यूहा—(अ०) (सं० पु०) एक प्रकार का सर्प जिसके बारे में यह प्रसिद्ध है कि जब वह हज़ार वर्ष का हो जाय तब उसमें यह शक्ति आ जाती है कि जो चाहे वही शकल रख ले।

येलाक़—(तु०) (सं० पु०) वह स्थान जो गर्मी के मौसम में भी ठंडा रहे।

योम, यौम—(अ०) (सं० पु०) दिन, दिवस, रोज़।

यौम-उल्-हिसाब—(अ०) (सं० पु०) क़यामत या हश्र का दिन जब सब मरे हुओं की रूहें उठेंगी और उनके कर्मों का हिसाब होगा।

योमिया, यौमिया—(अ०) (सं० पु०) (१) दिन भर की उजरत, एक दिन की मज़दूरी, (२) रोज़ की ख़ुराक; (३) रोज़ का ख़र्च। (वि०) प्रति दिन, हर रोज़।

र

रंग—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) वर्ण, जैसे हरा, लाल, पीला; (२) रंगत; रूप; (३) ढंग, तर्ज़, रविश; (४) राग, गाना, नाच; (५) खेल-कूद; (६) वह वस्तु जिससे रंगते हैं; (७) दशा, हाल, कैफ़ियत; (८) रौनक़, शोभा, कान्ति, बहार, सौन्दर्य, ख़ूबसूरती; (९) समाँ; (१०) सदृश, मानिन्द; (११) रौग़न, वारनिश, सजावट; (१२) आनन्द, हर्ष; मोद; लुत्फ़, मज़ा; (१३) दस्तूर, रस्म, क़ायदा; (१४) प्रकार, क़िस्म; (१५) तमाशा, सैर; (१६) हँसी, दिल्लगी, मज़ाक, चुहल, (१७) गंजफ़े की आठों बाज़ियों के नाम; (१८ जोश, हम-असर; (१९) ख़ुमार, नशा, ताक़त; (२०) कपट, छल, मकर, हीला, (२१) बर्ताव, व्यवहार। **रंग-ब रंग, रंगा-रंग**—हर तरह का, तरह तरह का। **रंग-ढंग**—(१) दशा, हालत; (२) चाल-चलन, आदत, बरताव। **रंग-ओ-बू**—(फ़ा० पु०) शान-शौकत, रौनक़। **रंगा हुआ सियार**—जो ज़ाहिर में अच्छा और भीतर से बुरा हो। **रंग आना**—रंग चढ़ना, रौनक़ आना। **रंग उड़ाना**—(१) अन्दाज़ या तर्ज़ सीख लेना; (२) अपनी ख़ुशी से दूसरे को बे-रंग करना; (३) रंग नष्ट करना। **रंग उखड़ना**—बे-रौनक़ होना, हाल ख़राब हो जाना। **रंग उतरना**—रंग जाता रहना। **रंग उदास होना**—रंग का फीका होना। **रंग और होना**—दूसरा अन्दाज़ होना। **रंग कटना**—रंग उड़ना। **रंग चढ़ाना**—अपना सा बनाना। **रंग चमकना**—इज़्ज़त ज़्यादा होना, प्रतिष्ठा बढ़ना। **रंग टपकना**—ख़ास हालत ज़ाहिर होना। **रंग जमना**—विश्वास पैदा होना, बुनियाद पड़ना। **रंग जमाना**—असर डालना, बुनियाद डालना। **रंग दिगर-गूँ करना**—ख़राब हालत पैदा करना। **रंग दिगर-गूँ होना**—ख़राब हालत होना। **रंग देना**—(१) मज़ा देना; (२) बात बना देना। **रंग निखरना**—रंग का साफ़ होना। **रंग पतला होना**—हाल बे-हाल होना। **रंग पर आना**—रौनक़ पर आना, बहार पर आना। **रंग पर होना**—बहार पर होना, रौनक़ पर होना। **रंग बधना**—रौनक़ पकड़ना, समाँ छा जाना। **रंग बाँधना**

—समाँ बाँधना। रंग बिगड़ना—हालत ख़राब होना। रंग बदल जाना—तर्ज़ बदलना, हालत बदलना। रंग बनाना—धज बनाना। रंग में भंग करना—लुत्फ़ बिगाड़ना। रंग मद्धम होना—रंग फीका होना। रंग मिटना—आदर जाता रहना। रंग लाना—(१) रंग पकड़ना, अच्छा दिखाई देना, (२) झगड़ा करना, तकरार करना; (३) बुराई करना; (४) मज़ा चखाना, तमाशा दिखाना। रंग होना—अन्दाज़ होना, तर्ज़ होना।

रंग-आमेज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) नक़्क़ाशी मुसव्वरी।

रंगत—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) चेहरे का रंग; (२) कपड़े के ऊपर का रंग, (३) रूप; (४) हालत, अवस्था, कैफ़ियत; (५) आनन्द, मज़ा। रंगत ग़ैर होना—चेहरे का रंग बदल जाना (शर्म से)।

रंग-तरा—(पु०) (१) संग तराश, पत्थर का काम करनेवाला; (२) बड़ी और मीठी नारंगी।

रंग-महल—(फ़ा०) (सं० पु०) बादशाहों और अमीरों के ऐश करने का स्थान; भोग-विलास का भवन।

रंग-रलियाँ—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) हँसी, चुहल, ऐश।

रंग-रसिया—(हि०) (वि०) रंगीला, अय्याश।

रंग-रूप—(सं० पु०) चेहरा-मुहरा, चमक-दमक, सूरत।

रंग-रेज़—(फ़ा०) (सं० पु०) कपड़े रंगने-वाला।

रंग-साज़—(फ़ा०) (वि०) रंग चढ़ानेवाला, रंग-रौग़न करनेवाला।

रंगई—(हि०) (सं० स्त्री०) रंगना, रंगने की मज़दूरी।

रंगा-रंग—(फ़ा०) (वि०) तरह तरह का, रंग-ब-रंगा।

रंगीन—(फ़ा०) (वि०) (१) रंगदार, रंगा हुआ; (२) रंगीला, ज़िन्दा-दिल, खुश-मिज़ाज; (३) दिल-पसंद, सजा हुआ।

रंगीन-मिज़ाज—(फ़ा०) (वि०) हँस-मुख, ज़िन्दा-दिल।

रंगीनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शोख़ी।

रंगीला—(हि०) (वि०) (१) बाँका, छैल-छबीला; आनन्दी, प्रेमी।

रंज—(फ़ा०) (सं० पु०) दुःख, दुख-दर्द, खेद, शोक, पछतावा, मलाल। रंज ओ महन—मुसीबत, दुःख। रंज आना—दुःख होना, मलाल होना। रंज उठाना—दुःख सहना। रंज करना—कुढ़ना, अफ़सोस करना। रंज देना—तकलीफ़ देना, सताना। रंज मिटना—तकलीफ़ दूर होना। रंज मोल लेना—अपने सिर पर दुःख लेना। रंज लेना—तकलीफ़ सहना। रंज होना—(१) ग़म होना, (२) अन-बन होना।

रंजिश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) नाराज़गी, मन-मुटाव, दुश्मनी, वैर।

रंजीदगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) रंजिश, दुःख, ग़म।

रंजीदा—(फ़ा०) (वि०) ख़फ़ा, उदास, नाख़ुश, नाराज़, रुष्ट।

रंजीदा-ख़ातिर—(फ़ा०) (वि०) नाराज़, नाख़ुश, दुःखी।

रंजूर—(फ़ा०) (वि०) बीमार।

रअद—(अ०) (सं० पु०) मेघ-गर्जन, बादलों की गड़गड़ाहट।

रअना—(अ०) (सं०) (१) बनाव-सिंगार करके रहनेवाला, छैला; (२) एक प्रकार का फूल। (वि०) सुन्दर, दो-रंगा, दो-रुख़ा।

रअनाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) बनाव-सिंगार, ख़ुद-आराई; (२) सुन्दरता; (३) दो-रुख़ापन।

रश्रय्यत—(अ०) (सं० स्त्री०) प्रजा, रिश्राया। (देखो 'रइय्यत')।

रश्रशा—(अ०) (सं० पु०) (१) कँपकँपी, थरथराहट; (२) एक रोग का नाम जिसमें हाथ पैर अपने आप काँपते रहते हैं।

रश्रशा-अन्दाम—(फ़ा०) (वि०) कँपकँपी का बीमार।

रश्रशा-दार—(फ़ा०) (वि०) काँपनेवाला। रश्रशा-दार आवाज़—वह आवाज़ जो थरथरा कर मुँह से निकले।

रइय्यत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) शासित, प्रजा; (२) आसामी, काश्तकार; (३) वह आदमी जो बिना किराये किसी के मकान में रहता हो।

रईस—(अ०) (सं० पु०) (१) बड़ा आदमी, धनी, इज़्ज़त-वाला; (२) रियासत या बड़ी ज़मीदारी का मालिक।

रईसी—(अ०) (सं० स्त्री०) रईस होना, ठाट-बाट, धन-वैभव।

रऊनत—(अ०) (सं० स्त्री०) अभिमान, घमंड।

रऊसा—(अ०) (सं० पु०) 'रईस' का बहुवचन।

रकअत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) टेढ़, टेढ़ापन, झुकाव; (२) नमाज़ का एक हिस्सा; (३) प्रसिद्धि, शोहरत।

रक़बा—(अ०) (सं० पु०) क्षेत्र-फल, ज़मीन की लंबाई-चौड़ाई का गुणन-फल।

रक़म—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) लिखने की क्रिया, लेखन; (२) मोहर, छाप, निशान; (३) रुपया, धन; (४) ज़ेवर, गहना; (५) प्रकार, क़िस्म; (६) धूर्त्त, चालाक।

रक़म-तराज़—(अ०) (सं० पु०) लिखनेवाला, मुहर्रिर।

रक़म-वार—(अ०) (क्रि० वि०) ब्यौरे-वार, तफ़सील-वार।

रक़मी—(अ०) (वि०) लिखा हुआ।

रकाकत—(अ०) (सं० स्त्री०) सुस्ती, सिफ़लापन, निर्लज्जता।

रकान—(सं० स्त्री०) युक्ति, तरकीब।

रकाब—(अ०) (सं० स्त्री०) लोहे का हल्क़ा जो घोड़े की ज़ीन में दोनों तरफ़ लटकता रहता है और जिस पर पाँव रख कर सवार होते हैं; (२) बादशाहों की सवारी का घोड़ा; (३) लम्बा-सा अठ-पहलू प्याला। रकाब पर पैर रखे होना—चलने को बिलकुल तैयार होना। रकाब में—साथ, हम-राह।

रक़ाबत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) मुहब्बत में शरीक होना, एक ही प्रेमिका को चाहना; (२) वैर-भाव, शत्रुता जो इस कारण से हो कि दोनों एक ही से प्रेम करते हैं; प्रतिद्वंद्विता।

रकाब-दार—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) हलवाई; (२) बहुत बढ़िया खाना बनानेवाला; (३) साईस, जो रकाब पकड़ कर घोड़े पर सवार करावे; (४) बादशाहों की सवारी के साथ खाना लेकर चलनेवाला।

रकाबी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) छोटी थाली, तश्तरी।

रकाबी-मज़हब—(फ़ा०) (सं० पु०) वह जो कभी इधर कभी उधर हो जाय, ढिलमिल-यक़ीन, बे पेंदी का लोटा।

रकीक—(अ०) (वि०) घटियल, तुच्छ।

रक़ीक़—(अ०) (वि०) (१) दुर्बल, पतला, कमज़ोर; (२) नरम, मुलायम।

रक़ीब—(अ०) (सं० पु०) (१) एक ही प्रेमिका का दूसरा प्रेमी, हरीफ़, दुश्मन; (२) हम-पेशा।

रक़ीमा—(अ०) (सं० पु०) चिट्ठी, पत्र, पुरज़ा।

रक़्क़त—(अ०) (सं० स्त्री०) पतला होना, वीर्य का पतला होना, शिकायत।

रक़्क़ास—(अ०) (सं० पु०) नाचनेवाला।

रक़्स—(अ०) (सं० पु०) नाच, नृत्य। रक़्से-ताऊस—मोर का मस्त होकर नाचना, मोर की तरह का नाच।

रख़ना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सूराख़, दीवार का छेद, छोटी खिड़की; (२) बाधा, रोक, ख़लल; (३) फ़िसाद, टंटा; (४) ऐब, त्रुटि।

रख़ना-अन्दाज़—(फ़ा०) (वि०) ख़लल डालनेवाला, बाधा डालनेवाला।

रख़ना-अन्दाज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ख़लल, बाधा, अड़ंगा, भाँजी मारना।

रख़ना-बन्दी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) सूराख़ बन्द करना; (२) फ़िसाद रोकना।

रख पत, रखा पत—(कहा०) इज़्ज़त करो और इज़्ज़त पाओ।

रख़्त—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) माल-असबाब, सामान; (२) लिबास, पहनने के कपड़े; (३) जूते का चमड़ा; (४) ठाठ-बाट।

रख़्श—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) घोड़ा; (२) रोशनी।

रग—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) शरीर की रक्त-वाही नाड़ी, या नस; (२) पट्ठा; (३) फूल या पत्ते का रेशा; (४) आँख का डोरा; (५) नस्ल, असल, जाति; (६) तार, तागा। रग औ पट्ठा—असल, नस्ल। रग रग में—सारे शरीर में। रग उतरना—ग़ुस्सा या ज़िद दूर होना। रग खड़ी होना—रग पर वरम आ जाना। रग चढ़ना—किसी रग का अपनी जगह से हट जाना। रग दबना—दबाव होना, क़ाबू होना। रगें निकल आना—बहुत दुबला होना। रग फड़कना—होनेवाली बात से आगाह हो जाना। रग का मुँह खुल जाना—फ़स्द खुलवाने में ख़ून ज़्यादा आना। रग रग में कूट के भरा होना—हर एक काम से वाक़िफ़ होना, किसी गुण का पूरी तौर से होना। रगें मरना—रगों की ताक़त जाती रहना।

रग-ज़न—(फ़ा०) (वि०) फ़स्द खोलनेवाला, जर्राह, रग चीर कर ख़ून निकालनेवाला।

रग-ज़नी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) फ़स्द खोलना, रग चीर कर ख़ून निकालना।

रग-दार—(फ़ा०) (वि०) जिसमें नसें या रेशे हों।

रग़बत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) मेल, चाह, ख़्वाहिश; (२) प्रवृत्ति, रुचि।

रगी, रगीला—(फ़ा०) (वि०) (१) ज़िद्दी, हठीला, फ़िसादी, सरकश; (२) वह कपड़ा जिसके तार ऊपर उभर आए हों; (३) मोटी रगों का पान; (४) बद-ज़ात, शरीर; (५) गोश्त जो साफ़ न हो।

रगे-अब्र—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बादल की स्याह धारी।

रगे-जान—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शरीर के भीतर की वह मुख्य नाड़ी जिससे सारे शरीर में रक्त पहुँचता है, शाह-रग।

रचता-पचता—(हि०) (वि०) ख़ुशबू-दार और हज़म होनेवाली चीज़।

रज़—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) अंगूर; (२) रंग करनेवाला। दुख़्तरे-रज़—(अंगूर की बेटी) अंगूरी शराब, शराब, मदिरा।

रजअत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) वापसी, लौटना; (२) तलाक़ दी हुई स्त्री को फिर ग्रहण करना; (३) (सूर्य चन्द्र के अतिरिक्त) किसी नक्षत्र का अपनी चाल से फिरना; (४) ख़ब्त, जनून, पागलपन।

रजब—(अ०) (सं० पु०) अरबी चान्द्र वर्ष का सातवाँ महीना।

रज़वान—(अ०) (सं० पु०) (१) बहिश्त के दारोग़ा का नाम; (२) रज़ा-मन्दी।

रज़ा—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) उम्मेद, आशा; (२) ख़ौफ़, डर।

रज़ा—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) ख़ुशी, इच्छा; (२) आज्ञा, अनुमति; (३) स्वीकृति, मंज़ूरी; (४) छुट्टी। रज़ा ओ रग़बत से—आप से, अपनी इच्छा से।

रज़ाअत—(अ०) (सं० स्त्री०) बच्चे को स्तन-पान कराना, दूध पिलाना।

रज़ाई—(हि०) (सं० स्त्री०) रंगे हुए कपड़े की रुई-दार दुलाई, लिहाफ़। (वि०) जिसके साथ दूध का सम्बन्ध हो। ज़ाई भाई—वह भाई जिसके साथ माँ दाई का दूध पिया हो।

रज़ा-कार—(उ०) (वि०) स्वयं-सेवक, वालन्टीयर।

रज़ा-मन्द—(फ़ा०) (वि०) राज़ी, सन्तुष्ट, प्रसन्न।

रज़ा-मन्दी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मंज़ूरी, स्वीकृति, अनुमति।

रज़ाल-पन—(सं० पु०) कमीनापन, नीचता।

रज़ाला—(अ०) (सं० पु०) कमीना, नीच, कम-ज़ात।

रज़ी—(अ०) (वि०) सन्तुष्ट, ख़ुशनूद।

रज़ीअ—(अ०) (वि०) रज़ाई भाई, जिसने एक ही माँ या दाई का दूध पिया हो।

रज़ील—(अ०) (सं० पु०) (१) नीच, सिफ़ला, कमीना; (२) नीची जाति का। कहा०—रज़ील की दो न अशराफ़ की सौ—कमीने की दो गालियाँ भी अशराफ़ की सौ गालियों से बढ़ कर होती हैं।

रज़्ज़ाक़—(अ०) (सं० पु०) (१) ईश्वर; (२) जीविका देनेवाला।

रज़्ज़ाक़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) पालन, पालन-पोषण, रोज़ी देना।

रज़्म—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) लड़ाई, मारका, युद्ध।

रज़्म-गाह—(फ़ा०) (सं० पु०) युद्ध-क्षेत्र, लड़ाई का मैदान, मैदाने-जंग।

रज़्मिया—(फ़ा०) (वि०) युद्ध-सम्बन्धी।

रड़िकना—(हि०) (क्रि०) खटकना, चुभना।

रत-जगा—(हि०) (पु०) ख़ुदाई रात, ख़ुशी का उत्सव जो औरतें रात भर जग कर मनाती हैं।

रतल—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) शराब का प्याला; (२) छत्तीस रुपये भर की तौल, अट्ठाईस तोले और साढ़े चार माशे का वज़न।

रतूबत—(अ०) (सं० स्त्री०) नमी, तरी।

रत्ब—(अ०) (वि०) (१) तर, नम; (२) बुरा, ख़राब। रत्ब ओ याबस—(अ० वि०) तर ओ ख़ुश्क, सब, अच्छा और बुरा।

रद्—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) न मानना, फेर देना, वापस करना; (२) झुटलाना; (३) तरदीद; (४) बातिल।

रदायत—(अ०) (सं० स्त्री०) ख़राब होना।

रदीफ़—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) वह आदमी जो घोड़े या ऊँट पर पीछे बैठे; (२) वह शब्द जो ग़ज़ल के हर शेर के अंत में क़ाफ़िए के पीछे बार-बार आता है।

रदीफ़-वार—(अ०) (वि०) अक्षर-क्रम के अनुसार।

रद्द—(अ०) (सं० पु०) (१) जो टूटा, तोड़ा गया हो, बदल दिया हुआ; (२) बेकार, ख़राब। (सं०) (स्त्री०) क़ै, वमन। रद्द ओ क़द्ह—हुज्जत, तकरार, बहस। रद्द ओ कद्—हुज्जत, बहस। रद्द-बदल—(१) उलट-पलट; (२) विवाद, हुज्जत, तकरार; (३) लड़ाई में हमला करना।

रद्दा—(फ़ा०) (सं० पु०) ईंट पर ईंट (रखना); तह पर तह (रखना)। रद्दा जमाना, रद्दा रखना—इलज़ाम रखना।

रद्दी—(अ०) (वि०) नाक़िस, बिगड़ा हुआ,

ख़राब, बेकार। (सं०) नाक़िस काग़ज़। रद्दी कर देना—बेकार कर देना।

रद्दे-ख़ल्क—(वि०) मरदूद।

रन्द—(फ़ा०) (पु०) क़िले की दीवार के छेद जिनसे दुश्मन पर बंदूक़ चलाते हैं।

रन्दा—(फ़ा०) (सं० पु०) बढ़ई का एक औज़ार जिससे लकड़ी साफ़ और चिकनी की जाती है।

रफ़अत—(अ०) (सं० स्त्री०) ऊँचाई, बुलन्दी, पद की उच्चता।

रफ़क़—(अ०) (सं० स्त्री०) नरमी।

रफ़ज़—(अ०) (सं० पु०) सरदार को छोड़ना।

रफ़रफ़—(अ०) (सं० पु०) मोहम्मद साहब की सवारी। (देखो रफ़र्फ़)।

रफ़ा—(अ०) (वि०) (१) शान्त, निवृत्त, निवारण किया हुआ; (२) दूर किया हुआ। (सं० पु०) (१) क्षमा करना, जाने देना; (२) दूर करना, झगड़ा मिटाना।

रफ़ाक़त—(अ०) (सं० स्त्री०) मेल-जोल, वफ़ादारी; (२) ख़ैर-ख्वाही, शुभ-चिन्तन, (३) संग-साथ।

रफ़ा-दफ़ा—देखो 'रफ़ा'।

रफ़ाह—(अ०) (सं० स्त्री०) आराम, सुख, हित। (देखो 'रिफ़ा')।

रफ़ाहियत—(अ०) (सं० स्त्री०) आराम, सुख।

रफ़ी—(सं० स्त्री०) ज़र्रे, किसी से चीज़ के झाड़ने से जो कण गिरते हैं।

रफ़ीअ—(अ०) (वि०) ऊँचा, बुलंद।

रफ़ी-उल्-शान—(वि०) बड़े मरतबेवाला, प्रतिष्ठित।

रफ़ीक़—(अ०) (सं० पु०) (१) हम-सफ़र, साथी, संगी, हम-राही; (२) मित्र, मदद-गार, सहायक।

रफ़ीदा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) गद्दी जिस पर रोटी रखकर तनूर में लगाते हैं; (२) गोल और भद्दी पगड़ी।

रफ़ू—(अ०) (सं० पु०) फटे हुए कपड़े में तागे भरना, एक प्रकार की सिलाई।

रफ़ू-कारी—(अ०) (सं० स्त्री०) रफ़ू करना, फटे हुए को सीना।

रफ़ू-गर—(अ०) (वि०) रफ़ू करनेवाला, शाल-दुशाले में रफ़ू करनेवाला।

रफ़ू-चक्कर—(अ०) (वि०) चल देना, भाग जाना। रफ़ू-चक्कर में आ जाना—हैरान हो जाना।

रफ़्त—(फ़ा०) (वि०) गया हुआ, बीता हुआ। रफ़्त ओ आमद—(फ़ा०) (स्त्री०) आना-जाना। रफ़्त ओ गुज़िश्त—गया-गुज़रा।

रफ़्तगान—(फ़ा०) (वि०) मरे हुए, गुज़रे हुए।

रफ़्तगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) जाना, जाने की क्रिया; बे-ख़ुदी।

रफ़्तनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) निर्यात, माल का बाहर जाना; (२) गमन।

रफ़्ता—(फ़ा०) (वि०) बे-ख़ुद, आशिक़।

रफ़्तार—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) चाल, रविश। रफ़्तार ओ गुफ़्तार—चाल-चलन, तौर-तरीक़। रफ़्तार उड़ाना—चाल की नक़ल करना।

रफ़्ता-रफ़्ता—(फ़ा०) (क्रि० वि०) धीरे-धीरे, आहिस्ता-आहिस्ता।

रफ़र्फ़—(अ०) (सं० पु०) वह सवारी जिस पर मोहम्मद साहब सवार होते थे।

रब—(अ०) (सं० पु०) ईश्वर, जग-पालक। रब-उल-आलमीन—संपूर्ण विश्व का पालन कर्ता, ईश्वर।

रबड़—(हि०) (सं० स्त्री०) निष्फल प्रयास, व्यर्थ का श्रम।

रबात—(अ०) (स० स्त्री०) मुसाफ़िर-ख़ाना।

रबाब—(अ०) (सं० पु०) एक प्रकार की सारंगी (बाजा)।

रबाबी—(अ०) (सं० पु०) रबाब बजानेवाला।

रबी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) वसंत ऋतु; (२) वह फ़सल जो वसन्त में काटी जाती है।

रबी-उल्-अव्वल—(अ०) (सं० पु०) अरबी वर्ष का तीसरा महीना।

रबी-उल्-आख़िर—(अ०) (सं० पु०) अरबी वर्ष का चौथा महीना।

रबी-उल्-सानी—(अ०) (सं० पु०) अरबी वर्ष का चौथा महीना।

रबीब—(अ०) (सं० पु०) सौतेला बेटा जो पहले पति से हो।

रबीबा—(अ०) (सं० स्त्री०) बेटी जो पहले पति से हो।

रबूदगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) तंद्रा, ग़फ़लत जो बीमार को होती है।

रब्त—(अ०) (सं० पु०) (१) सम्बन्ध, मेल, लगाव; (२) अभ्यास, महारत; मश्क़। रब्त-ज़ब्त—मेल-मिलाप, आमद-रफ़्त, राह-रस्म। रब्त होना—(१) दोस्ती होना; (२) अभ्यास होना।

रब्ब—(अ०) (सं० पु०) ख़ुदा, ईश्वर, स्वामी। रब्ब-उल्-आलमीन—दुनिया को पालनेवाला।

रब्बानी—(अ०) (वि०) ईश्वर-सम्बन्धी।

रम—(फ़ा०) (सं० पु०) नफ़रत, गुरेज़, घृणा; दूर रहने की इच्छा। रम भूल जाना—चौकड़ी भूल जाना।

रमक़—(अ०) (सं० स्त्री०) सिसकती जान, अंतिम श्वास; थोड़ी सी चीज़। (वि०) बहुत कम, ज़रा-सा।

रम-कर्दा, रम-ख़ुर्दा—(फ़ा०) (वि०) भागा हुआ, घबराया हुआ।

रमज़ान—(अ०) (सं० पु०) एक अरबी चान्द्र महीना जिसमें मुसल्मान रोज़ा (व्रत) रखते हैं। कहा०—रमज़ान के नमाज़ी, मोहर्रम के सिपाही—वह आदमी जो दिखावे के लिए कुछ दिन तक कोई काम करे।

रमज़ानी—(अ०) (वि०) (१) रमज़ान से सम्बन्ध रखनेवाला; (२) रमज़ान में पैदा हुआ; (३) भुक्खड़, मर-भुक्खा।

रमद—(अ०) (सं० पु०) आँख की बीमारी जिससे आँख सुर्ख़ रहती है।

रमल—(अ०) (सं० पु०) एक प्रकार की ज्योतिष जिसमें पाँसे फेंक कर भविष्य-फल बतलाते हैं।

रमीदगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) नफ़रत, वहशत, घृणा, दूर रहने की इच्छा।

रमीदा—(फ़ा०) (वि०) भागा हुआ, वहशी।

रमीम—(अ०) (वि०) बोसीदा, गला हुआ सड़ा हुआ।

रमूज़—(सं० स्त्री०) देखो 'रमूज़' 'रम्ज़' का बहुवचन। रमूज़ फेंकना—आवाज़ा कसना, पर्दे में ताना मारना। रमूज़ें छाँटना—नोक-झोंक की बातें करना। रमूज़-नमूज़—आवाज़े-तवाज़े।

रम्ज़, रम्ज़ा—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) इशारा, आँखों आदि का संकेत; (२) पेचदार बात, बारीक बात, नुक्ता; बारीकी; (३) रहस्य, भेद, गुप्त बात; (४) निशान, अलामत; (५) व्यंग्य, नोक-झोंक।

रम्ज़-शनास—(फ़ा०) (वि०) इशारा पहचानने वाला।

रम्माज़—(अ०) (वि०) इशारों से बात करनेवाला।

रम्माल—(अ०) (सं० पु०) ज्योतिषी, रमल फेंकनेवाला।

रवन्ना—(हि०) (सं० पु०) (१) (औ०) वह नौकर जो औरतों के काम काज करने को दरवाज़े पर रहता है; (२) परवाना राहदारी, वह काग़ज़ जिस पर माल की तादाद, ले जानेवाले का नाम, चीज़ का नाम, महसूल आदि लिखा रहता है।

रवाँ—(फ़ा०) (वि०) (१) चलनेवाला, जारी, प्रचलित; (२) बहता हुआ; (३) मंजा हुआ, मश्क़ पर चढ़ा हुआ; (४) मौजूदा, वर्तमान; (५) तेज़; (६) अर्थ के बिना किसी पुस्तक को पढ़ना, बिना हिज्जे लगाये पढ़ना।

रवाँ-दवाँ—दौड़ना, ख़राब-ख़स्ता। रवाँ दवाँ फिरना—मारा मारा फिरना। रवाँ करना—(१) जारी करना, साफ़ करना, (२) मश्क़ करना; (३) तेज़ करना, बाढ़ रखना, (४) चलाना, फेरना।

रवा—(फ़ा०) (वि०) उचित, जायज़, वाजिब। (यौगिक में) पूरा करनेवाला, जारी करनेवाला। यौ० रवाई-पूरा करना। रवा होना—काम चलना, काम का दुरुस्त होना।

रवाज—(अ०) (सं० स्त्री०) प्रथा, दस्तूर, परिपाटी, चाल, रीति।

रवाजी—(अ०) (वि०) रस्मी, मामूली।

रवा-दार—(फ़ा०) (वि०) (१) साथी, शुभचिन्तक; (२) सम्बन्ध रखनेवाला।

रवा-दारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) किसी काम का रिआयत से जायज़ रखना।

रवानगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) प्रस्थान, चालान, रवाना होने की क्रिया।

रवाना—(फ़ा०) (वि०) (१) जानेवाला; (२) भेजा हुआ।

रवानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) बहाव, प्रवाह; (२) तेज़ी।

रवायत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) किसी की बात नक़ल करना; (२) अनुभव, सरगुज़श्त; (३) कहावत, मसल।

रवा-रवी—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) जल्दी, सरसरी; (२) भागा-भाग।

रविश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) गति, चाल; (२) तौर-तरीक़, रंग-ढंग; (३) बाग़ की पटरी, रौस। रविश बिगड़ना—अन्दाज़ बिगड़ना, ढंग बिगड़ना।

रवैयत—(अ०) (सं० स्त्री०) दर्शन; दिखाई देना।

रवैया—(फ़ा०) (सं० पु०) रंग-ढंग, दस्तूर, तौर-तरीक़।

रशहा—(अ०) (सं० पु०) टपकना, पानी जो कहीं से टपके।

रशीद—(अ०) (वि०) (१) ईश्वर का नाम; (२) संस्कृत, शिक्षित और सभ्य।

रश्क—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) ईर्ष्या, हसद, डाह; (२) दुश्मनी, वैर; (३) दूसरे के साथ प्रेम होने पर ईर्ष्या। रश्क आना—किसी की उन्नति देखकर कुढ़ना।

रश्के-परी—(फ़ा०) (वि०) (स्त्री०) इतनी सुन्दर कि रूप देख कर परी भी हसद करे।

रसद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) हिस्सा, बाँट; (२) ग़ल्ला, जिन्स; (३) लश्कर या फ़ौज का सामान। (अ०) सं० स्त्री०) नक्षत्रों की गति देखने का स्थान, वेधशाला।

रसद-गाह—(अ०) (सं० स्त्री०) तारों की गति आदि देखने की मीनार, वेध-शाला।

रसद-रसानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) लश्कर में रसद पहुँचाना।

रसदी—(वि०) हिस्से के मुताबिक़।

रसन—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) रस्सी। रसन-बाज़—(फ़ा०) (वि०) नट जो रस्सियों पर तमाशा दिखावे।

रसम—देखो 'रस्म'।

रस-मसा—(हि०) (वि०) तर (पानी से या पसीने से) रसमसाना—तर होना।

रसाँ—(फ़ा०) (वि०) पहुँचानेवाला।

रसा—(फ़ा०) (वि०) (१) किसी चीज़ तक पहुँचनेवाला; (२) दूर जानेवाला; (३) पूर्ण।

रसाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पहुँच, दख़ल। रसाई पैदा करना—रसूख़ (मेल) हासिल करना।

रसालत—(अ०) (सं० स्त्री०) पैग़म्बरी।

रसावल—(हि०) (सं० स्त्री०) गन्ने के रस की खीर।

रसास—(अ०) (सं० पु०) रोग।

रसीद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) प्राप्ति, पहुँचना; (२) किसी चीज़ के वसूल होने या मिल जाने का प्रमाण-रूप लिखा हुआ काग़ज़; (३) गंजफ़े की बाजी में किसी के पास सर पहुँचना। रसीद करना—मारना, लगाना। रसीद होना—गंजफ़े की बाज़ी में सर आना।

रसीदा—(फ़ा०) (वि०) (१) पहुँचा हुआ, प्राप्त; (२) पकने की हद पर पहुँचा हुआ फल; (३) पूर्णता को पहुँचा हुआ; (४) कामिल, पूर्ण।

रसीदी—(फ़ा०) (वि०) रसीद का, रसीद से सम्बन्ध रखनेवाला।

रसूख़—(सं० पु०) देखो 'रुसूख़'।

रसूम—(सं० पु०) देखो 'रुसूम'।

रसूल—(अ०) (सं० पु०) (१) पैग़म्बर, ईश्वर का दूत; (२) दूत; (३) मोहम्मद साहब की उपाधि; (४) मार्ग-दर्शक।

रस्त-गार—(फ़ा०) (वि०) रिहाई पानेवाला, छूटनेवाला।

रस्त-गारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) रिहाई, मुक्ति।

रस्ता—(फ़ा०) (सं० पु०) मार्ग। ('रास्ता' का संक्षिप्त रूप)।

रस्म—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) रिवाज, रीति, दस्तूर, परिपाटी; (२) मेल-जोल; (३) रविश, आदत, तर्ज़, तरीक़ा। (फ़ा०) (सं० स्त्री०) वेतन, तनख़्वाह। रस्म श्रो रवाज—दस्तूर-क़ायदा, रीति-रिवाज। रस्म श्रो राह—रब्त-ज़ब्त, मेल-जोल। रस्म उठाना—आदत या रिवाज के विरुद्ध करना।

रस्मियात—(अ०) (सं० स्त्री०) रस्में, रीतियाँ। ('रस्म' का बहुवचन)।

रस्मी—(अ०) (वि०) (१) साधारण, मामूली; (२) रस्म-सम्बन्धी।

रह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) 'राह' का संक्षिप्त रूप।

रह-गुज़री—(वि०) राह पर गुज़रनेवाला, मार्ग-गामी।

रहन—(फ़ा०) (सं० पु०) देखो 'रेहन'।

रह-नुमा—(फ़ा०) (वि०) मार्ग बतानेवाला, मार्ग-दर्शक।

रह-बर—(फ़ा०) (वि०) मार्ग दिखलानेवाला, रास्ता बतलानेवाला।

रह-बरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मार्ग-प्रदर्शन।

रहम—(अ०) (सं० पु०) (१) दया, तरस, अनुग्रह; (२) क्षमा, माफ़ी; (३) करुणा; (४) स्त्री का गर्भाशय, बच्चे-दानी; (५) चावलों का कच्चा हलवा।

रहमत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) दया, अनुकंपा, कृपा; (२) वर्षा, वृष्टि। रहमत ख़ुदा की—शाबाश! क्या कहना!

रहम दिल—(अ०) (वि०) महरबान, दयालु, दयावान्, दयार्द्र।

रहमान—(अ०) (वि०) दया करनेवाला; (सं० पु०) ईश्वर।

रहवार—(फ़ा०) (सं० पु०) क़दम चलनेवाला घोड़ा।

रहल—(अ०) (सं० स्त्री०) वह लकड़ी की चीज़ जिस पर रख कर क़ुरान का पाठ करते हैं।

रहायश—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) रहना, बूद-बाश, रहने की जगह; (२) गुंजायश, ज़ब्त, बरदाश्त।

रहा-सहा—(वि०) बचा-खुचा।

रहीक़—(अ०) (सं० स्त्री०) ख़ालिस

रहीम—(अ०) (वि०) बहुत कृपालु, दयालु। (सं० पु०) ईश्वर का नाम।

राँदा—(फ़ा०) (वि०) मरदूद, निकाला हुआ। राँदा जाना—ज़लील किया जाना।

राई—(अ०) (वि०) चारपायों का चराने-वाला; बादशाह।

राकड़—(हि०) (सं० स्त्री०) सब से कम दरजे की ज़मीन जो सिर्फ़ ख़रीफ़ की एक फ़सल के काम आती है।

राकिब—(अ०) (वि०) ऊँट या घोड़े का सवार।

राक़िम—(अ०) (वि०) लेखक, लिखने-वाला।

राक़िम-उल्-हरूफ़—(अ०) (वि०) इस लेख का लिखनेवाला।

राग़—(फ़ा०) (सं० पु०) पहाड़ के नीचे का मैदान।

राग़िब—(अ०) (वि०) ख्वाहिश-मंद, इच्छुक; प्रवृत्ति रखनेवाला।

राज़—(फ़ा०) (सं० पु०) गुप्त बात; भेद, रहस्य। राज़ ओ नियाज़—प्रेमियों के रहस्य और नख़रे। राज़ फ़ाश करना, राज़ रोशन करना—गुप्त भेद प्रकट करना।

राज़क़ा—(अ०) (सं० पु०) रोज़ी, जीविका।

राज़-दाँ, राज़-दार—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) भेद या रहस्य जाननेवाला; (२) साथी।

राज़-दारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) भेद जानना; (२) भेद छिपाना।

राजा—(हि०) (सं० पु०) (१) नृप, बाद-शाह; (२) उदार; (३) भोला-भाला (४) धनी, अमीर। राजा इंदर का अखाड़ा—सुन्दर स्त्रियों का समूह। कहा०—(१) राजा जोगी किसके मीत—राजा और भिखारी किसी के मित्र नहीं होते। (२) राजा रक्खे रानी खावे—कमाता कोई है, उड़ाता कोई है। (३) राजा का परवाना और साँप का खिलाना बराबर है—राजाओं की संगति बड़ी भयावह है।

राज़िक़—(अ०) (सं० पु०) (१) ईश्वर; (२) जीविका या रोज़ी देनेवाला।

राज़ी—(अ०) (वि०) (१) सम्मत, रज़ा-मंद, माननेवाला; (२) तनदुरुस्त, नीरोग, स्वस्थ; (३) प्रसन्न, ख़ुश, सुखी; (४) इच्छुक, आमादा, उत्सुक। (सं० स्त्री०) रज़ामन्दी, ख़ुशी, अनुकूलता। राज़ी-राज़ी—ख़ुशी-ख़ुशी। राज़ी-ख़ुशी—कुशल-मंगल, सही-सलामत।

राज़ी-नामा—(फ़ा०) (सं० पु०) आपस का तस्फ़ीया; बाहमी फ़ैसले का काग़ज़।

राज़े-सरबस्ता—(फ़ा०) (वि०) ऐसा भेद जो ज़ाहिर न हो।

राछ—(हि०) (सं० पु०) (१) जुलाहों की कंघी जिससे कपड़े का एक एक तार निकाल लेते हैं; (२) बढ़ई और राज के औज़ार; (३) लकड़ी या शहतीर के अन्दर का पक्का हिस्सा।

राछस—(हि०) (सं० पु०) राक्षस।

रातिब—(अ०) (सं० पु०) (१) पशुओं का भोजन; (२) रोज़ का बंधा हुआ खाना।

रातिबा—(अ०) (सं० पु०) वेतन, तनख्वाह।

रान—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) जाँघ, जंघा, ज़ानू। रान से रान बाँधना—दूर न होने देना।

राना—(सं० पु०) देखो 'रअना'।

रानाई—(सं० स्त्री०) देखो 'रअनाई'।

रापी—(हि०) (सं० स्त्री०) चमड़ा काटने और छीलने का औज़ार।

राफ़त—(अ०) (सं० स्त्री०) मेहरबानी, कृपा।

राफ़िज़ी—(अ०) (सं० पु०) (१) वह सेना जो अपने सरदार को छोड़ दे; (२) शियों के एक फ़िरक़े का नाम।

राबित, राबिता—(अ०) (सं० पु०) मेल-मिलाप, रब्त-ज़ब्त, सम्बन्ध।

राम—(फ़ा०) (वि०) सेवक, फ़रमा-बरदार, आज्ञाकारी।

रामिश—(फ़ा०) (सं० पु०) गवैया, आनन्द; गाना बजाना।

रामिश-गर—(फ़ा०) (वि०) गानेवाला, डोम।

राय—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) सम्मति, मत; (२) तदबीर, तजवीज़; (३) विचार, ख़याल।

रायगां—(फ़ा०) (वि०) व्यर्थ, निरर्थक, बेकार, ज़ाया।

रायज—(अ०) (वि०) प्रचलित, जारी। रायज-उल्-वक़्—वर्तमान में जारी।

राय-ज़न—(फ़ा०) (वि०) वह आदमी जिससे सलाह लें।

राय-ज़नी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) किसी बारे में राय ज़ाहिर करना।

रायत—(अ०) (सं० पु०) लश्कर का निशान, झंडा।

रावत—(हि०) (सं० पु०) बहादुर, वीर, सूरमा।

रावी—(अ०) (वि०) वक्ता, कथा कहनेवाला, लेखक।

राशिद—(अ०) (वि०) धर्म-भीरु, ठीक मार्ग पर चलनेवाला।

राशी—(अ०) (वि०) रिशवत देनेवाला।

रास—(अ०) (सं० पु०) (१) सिरा, ऊपरी भाग; (२) पशुओं की संख्या सूचक शब्द; (३) स्थल का वह कोना जो जल में दूर तक चला गया हो, अन्तरीप। (फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) रास्ता, सड़क; (२) घोड़े की बाग; (३) राहु ग्रह।

रासिख़—(अ०) (वि०) दृढ़, मज़बूत, पायदार। (सं० पु०) ताँबा।

रास्त—(फ़ा०) (वि०) (१) दुरुस्त, सही, ठीक; (२) सीधा, उचित; (३) दाहिना, दायाँ, अनुकूल रास्त आना—ठीक बनना। रास्त लाना—इच्छानुसार करना।

रास्त-किरदार—(वि०) सच बोलनेवाला।

रास्त-गो—(फ़ा०) (वि०) सच्चा, स्पष्ट-वक्ता।

रास्त-गोई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सच और साफ़ बात कहना।

रास्त-बाज़—(फ़ा०) (वि०) सच्चा, ईमानदार।

रास्त-बाज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सचाई, ईमानदारी, दयानतदारी।

रास्त-मिज़ाज—(फ़ा०) (वि०) नेक, नेक-मिज़ाज, साधु-स्वभाव।

रास्ता—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) मार्ग, राह, सड़क; (२) रस्म, रीति, क़ायदा; (३) ढंग, तरीक़ा, उपाय। रास्ता दिखाना—(१) इन्तज़ार कराना; (२) राह बताना। रास्ता देखना—इन्तज़ार करना। रास्ता नापना—थोड़ी देर को आना। रास्ते पर आना—ठीक हो जाना, क़ाबू में आना। रास्ता बताना—टाल देना, बहाना करना। रास्ता लेना—किसी ओर चल देना।

रास्ती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) सचाई, ईमानदारी; (२) सीधापन। रास्ती से—(क्रि०) नरमी से। रास्ती पर होना—सीधा होना, अनुकूल होना।

राह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) रास्ता, मार्ग; (२) मौक़ा, महल; (३) दोस्ती, मेल, रब्त, रसाई; (४) ढब, ढंग, तरीक़ा; (५) ख़बर, आगाही; (६) प्रथा, चाल, नियम, क़ायदा, रीति; (७) बहाना, हीला,

तदबीर; (८) ग़रज़, मतलब, सबील। राह ओ रब्त, राह ओ रस्म—मेल-जोल। राह राह की—सीधी-सीधी, ठीक-ठीक बात। राह खोटी करना—चलने में देर लगाना, रास्ते में रोकना। राह चलतों से लड़ना—बे सबब लड़ना। राह डालना—ढंग डालना। राह पर आना—ठीक होना, नेक बनना। राह पर लाना—क़ाबू में लाना। राह पर लगा लाना—अपने माफ़िक बना लेना। राह पैदा करना—दोस्ती पैदा करना, मेल बढ़ाना। राह बताना—तदबीर बताना, निकाल देना। राह में आँखें बिछाना—बहुत हार्दिक स्वागत करना। राह में रह जाना—साथ छोड़ देना। राह में काँटे बिछाना—रास्ता कठिन करना। राह रखना—दोस्ती रखना। राह लगाना—ढंग पर डालना। राह लेना—रवाना होना, रास्ता पकड़ना।

राह-ख़र्च—(फ़ा०) (सं० पु०) सफ़र-ख़र्च, मार्ग-व्यय।

राह-गीर—(फ़ा०) (सं० पु०) रास्ता चलनेवाला, मुसाफ़िर।

राह गुज़र, राह गुज़ार—(फ़ा०) (सं० पु०) रास्ता, मार्ग, सड़क।

राह-चलता—(वि०) राहगीर, जिससे परिचय न हो।

राह-ज़न—(फ़ा०) (सं० पु०) डाकू, क़ज़्ज़ाक़, लुटेरा, बटमार।

राह-ज़नी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) डाका, बटमारी।

राहत—(अ०) (सं० स्त्री०) चैन, आराम, सुख।

राहत-तलब—(फ़ा०) (वि०) आराम-तलब।

राहत-परस्त—(फ़ा० (वि०) ख़ुशी और आराम चाहनेवाला।

राहते-जान—(फ़ा०) (वि०) दिल ख़ुश करनेवाला।

राह-दार—(फ़ा०) (वि०) राह का निगह-बान, रास्ते का महसूल लेनेवाला।

राह-दारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) महसूल। परवाना राहदारी—देखो 'रवन्ना'।

राहनुमा—(फ़ा०) (वि०) रहबर, रास्ता दिखानेवाला, हादी।

राह-बर—(फ़ा०) (वि०) मार्ग-दर्शक।

राह-बरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मार्ग-प्रदर्शन, रास्ता दिखलाना।

राह-मार—(वि०) राहज़न, बटमार, डाकू। राह मारना—रास्ते में लूटना।

राह-मारी—(हि०) (सं० स्त्री०) बटमारी, डाका।

राह-रविश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) रंग-ढंग, तौर-तरीक़ा, चाल-चलन।

राह-रास्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ठीक रास्ता, सीधा मार्ग।

राह-रौ—(फ़ा०) (सं० पु०) यात्री, रास्ता चलनेवाला।

राह-वार—(फ़ा०) (सं० पु०) घोड़ा, क़दम-बाज़ घोड़ा। राह-वार उड़ाना—घोड़े को तेज़ चलाना।

राहिन—(अ०) (सं० पु०) रहन या गिरवी रखनेवाला, आड़ करनेवाला।

राहिब—(अ०) (सं० पु०) विरक्त, संसार छोड़ कर अलग रहनेवाला।

राहिम—(अ०) (वि०) रहम करनेवाला।

राहिल—(अ०) (वि०) कूच करनेवाला, जानेवाला।

राहिला—(अ०) (सं० पु०) सवारी का जानवर।

राही—(फ़ा०) (सं० पु०) रास्ता चलनेवाला, मुसाफ़िर, यात्री।

रिआयत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) पक्ष-पात, तरफ़दारी, महरबानी; (२) कमी,

न्यूनता; (३) विचार, ख़याल, लिहाज़; (४) औचित्य।

रिआयती—(अ०) (वि०) जिसकी तरफ़दारी की जाय, जिसमें कुछ रिआयत हो।

रिआया—(अ०) (सं० स्त्री०) प्रजा। 'रइय्यत' का बहुवचन।

रिकाब—(सं० स्त्री०) देखो 'रकाब'।

रिकाबी—(सं० स्त्री०) देखो 'रकाबी'।

रिक़्क़त—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) कोमलता, नरमी; (२) रोना-धोना, रुदन; (३) दया, अनुकंपा; (४) दिल भर आना, गद्गद् हो जाना।

रिज़क—(सं० पु०) देखो 'रिज़्क़'।

रिज़वाँ—(अ०) (सं० पु०) एक फ़रिश्ता जो स्वर्ग का दारोग़ा है।

रिजाल-उल्-ग़ैब—(अ०) (सं० पु०) दिशा-शूल, योगनी।

रिज़ाला—(अ०) (सं० पु०) (१) कमीना, नीच; (२) दुष्ट, पाजी।

रिज़्क़—(अ०) (सं० पु०) .ख़ुराक, भोजन, रोज़ी, जीविका।

रिदा—(अ०) (सं० स्त्री०) चादर।

रिन्द—(फ़ा०) (सं० पु०) आज़ाद, बे-क़ैद आदमी; स्वच्छन्द मनुष्य; मन-मौजी, मस्त। (फ़ा०) (वि०) मतवाला, मस्त।

रिन्दा—(फ़ा०) (सं० पु०) वाहियात आदमी।

रिन्दाना—(फ़ा०) (वि०) रिन्दों का-सा, रिन्द की तरह का।

रिन्दी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) मस्ती, रिन्द-पन; (२) लुच्चा-पन।

रिफ़अत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) बुलंदी, ऊँचाई, उन्नति; (२) महत्त्व।

रिफ़ाह—(अ०) (सं० स्त्री०) आराम, नेकी, भलाई, उपकार, बहबूदी। रिफ़ाह-आम आम लोगों की बहबूदी, सर्व-साधारण का लाभ।

रिबा—(अ०) (सं० पु०) सूद।

रिबा-ख़्वार—(फ़ा०) (वि०) सूद-ख़ोर, सूद लेनेवाला।

रियह—(अ०) (सं० पु०) फेफड़ा, फुस्फुस।

रिया—(अ०) (सं० स्त्री०) छल, धोखा, कपट, दुश्मनी, ज़ाहिरदारी, दुनिया-साज़ी।

रियाई—(अ०) (वि०) धूर्त, चालाक, रिया-कार।

रिया-कार—(अ०) (वि०) मक्कार, ज़माना-साज़, कपटी।

रिया-कारी—(अ०) (सं० स्त्री०) फ़रेब, मक्कारी।

रियाज़—(अ०) (सं० पु०) (१) बाग़; (२) मेहनत, मशक़्क़त; (३) अभ्यास, मश्क़; (४) तपस्या।

रियाज़त—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) मेहनत, मशक़्क़त; (२) अभ्यास, मश्क़, महारत; (३) व्यायाम, कसरत, वर्ज़िश; (४) मज़दूरी।

रियाज़त-कश, रियाज़ती—(अ०) (वि०) मेहनती, मशक़्क़त उठानेवाला।

रियाज़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) विज्ञान का एक भाग, जिसमें गणित संगीत आदि शामिल हैं; (२) अभ्यास करनेवाला।

रियाज़ी-दाँ—(अ०) (वि०) रियाज़ी (विज्ञान) जाननेवाला।

रियासत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) सरदारी, अफ़सरी; (२) राज, अमलदारी; (३) अमीरी, वैभव।

रियाह—(अ०) (सं० स्त्री०) वायु, शरीर के भीतर की वायु। 'रीह' का बहुवचन।

रिवाज़—देखो 'रवाज'।

रिश्ता—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सम्बन्ध; (२) सामीप्य, निकटता; (३) एक रोग जिसमें डोरे की तरह का माद्दा शरीर में से निकलता है, नेहरुआ; (४) लड़ी, नज़्म।

रिश्ता-ज़ान—श्वास चलने की क्रिया।

रिश्ता-बर-पा—पाँव में डोरा बँधा हुआ।

रिश्ता-शमा—वह डोरा जो मोम-बत्ती के भीतर होता है और जलता है।

रिश्तेदार—(फ़ा०) (सं० पु०) सम्बन्धी, नातेदार।

रिश्तेदारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सम्बन्ध, नाता।

रिश्वत—(अ०) (सं० स्त्री०) घूस, उत्कोच, नाजायज़ नज़र या भेंट।

रिश्वत-ख़ोर, रिश्वत - ख़्वार—(फ़ा०) (वि०) रिश्वत खानेवाला, घूस-ख़ोर।

रिश्वत-सितानो—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) घूस लेना, रिशवत खाना।

रिसालत—(अ०) (सं० स्त्री०) पैग़म्बरी, दूत होना।

रिसाल-दार—(फ़ा०) (सं० पु०) रिसाले का अफ़सर।

रिसाल-दारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) रिसाल-दार का पद।

रिसाला—(अ०) (सं० पु०) (१) घुड़-सवार सेना, अश्वारोही सेना; (२) पत्र, चिट्ठी; (३) पुस्तिका, छोटी पुस्तक।

रिहल—(अ०) (सं० स्त्री०) लकड़ी की वह चीज़ जिस पर रख कर क़ुरान-शरीफ़ या कोई पुस्तक पढ़ते हैं।

रिहलत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) कूच, प्रस्थान; (२) मृत्यु, मौत, इन्तक़ाल।

रिहा—(फ़ा०) (वि०) छूटा हुआ, बंधन से मुक्त।

रिहाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) छुटकारा, मुक्ति, माफ़ी, फ़राग़त।

रिहायश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) देखो 'रहायश'।

रीख़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) चूल, बुनियाद, जड़, ताक़त।

रीम—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मवाद, पीप।

रीश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) डाढ़ी, ठोढ़ी पर के बाल।

रीश-बच्चा—(फ़ा०) (सं० पु०) ठोढ़ी के ऊपर के बाल।

रीश-ख़न्द—(फ़ा०) (सं० पु०) हंसी, ठट्ठा, मज़ाक़।

रीशे-फ़ाज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शराब छानने का कपड़ा जो सुराही के मुँह पर लगा रहता है, साफ़ी।

रीश-याबा—(फ़ा०) सं० पु०) अँगूर की एक क़िस्म।

रीह—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) वायु, हवा; (२) अपान वायु, पाद; (३) शरीर के भीतर की वायु।

रीही—(अ०) (वि०) रीह से सम्बन्धित, वायु का।

रुऊनत—(अ०) (सं० स्त्री०) घमंड, ग़रूर।

रुकन—(पु०) (१) सितून, खंभा; (२) कारिन्दा, सरबराहकार; (३) ज़रूरी भाग।

रुकूअ—(अ०) (सं० पु०) नमाज़ में घुटनों पर हाथ रखकर झुकना; नम्रता-पूर्वक झुकना।

रुक्क़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) छोटा पत्र, पुरज़ा; (२) पैवंद, थेगली।

रुक्क़ात—(अ०) (सं० पु०) पत्रों का संग्रह, ख़तूत का संग्रह।

रुक्न—(अ०) (सं० पु०) (१) खंभा, सितून (२) सरबराहकार, कार्य-कर्ता।

रुख़—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) चेहरा; (२) शतरंज के एक मोहरे का नाम; (३) उनक़ा की तरह का एक बड़ा जानवर; (४) दिशा, ओर, तरफ़, जानिब; (५) मेल, कृपा-दृष्टि, रुझान; (६) सामना, अग्रभाग।

रुख़शन्दगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) चमक।

रुख़शान—(फ़ा०) (वि०) चमकनेवाला।

रुख़सत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) आज्ञा, इजाज़त; (२) विदा, कूच, रवानगी; (३) मोहलत, छुट्टी, अवकाश; (४) जाओ, रवाना हो।

रुख़सत-तलब—(फ़ा०) (वि०) जाने की इजाज़त चाहनेवाला।

रुख़सताना—(फ़ा०) (सं० पु०) बिदाई, वह रुपया जो किसी को चलते समय दिया जाय।

रुख़सती—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) बिदाई, वधू की बिदा; (२) वह रुपया जो बिदा के समय दिया जाय, सलामी।

रुख़सार, रुख़सारा—(फ़ा०) (सं० पु०) कपोल, गाल।

रुखाई—(हि०) (सं० स्त्री०) बेपरवाई, बे-मुरव्वती। रुखाई करना—बे-मुरव्वती करना, मिज़ाज करना।

रुजहान—(अ०) (सं० पु०) ध्यान, तवज्जह।

रुजू—(अ०) (वि०) प्रवृत्त, ध्यानावस्थित। (सं० स्त्री०) (१) झुकना, प्रवृत्ति; (२) लौटना, वापस आना; (३) मुक़दमें की सुनवाई, पुनर्विचार।

रुजूलत-रुजूलियत—(अ०) (सं० स्त्री०) विषय या काम की शक्ति; पुंसत्व।

रुत—(हि०) (सं० स्त्री०) ऋतु, मौसम, फ़सल।

रुतबा—(अ०) (सं० पु०) (१) पद, दरजा, ओहदा; (२) मान, प्रतिष्ठा।

रुफ़्त-रोब—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) झाड़ू देना।

रुब—(अ०) (सं० पु०) अनार, बिही, अंगूर इत्यादि का रस पका कर गाढ़ा किया हुआ; बहुवचन—रुब्बाब।

रुबा—(अ०) (वि०) चौथाई।

रुबाई—(अ०) (सं० स्त्री०) चार चरणों का पद्य। बहुवचन—'रुबाईयात'।

रुबा-मस्कून—(पु० दुनिया का चौथाई हिस्सा जो आबाद है।

रुमूज़—(अ०) (सं० स्त्री०) 'रम्ज़' का बहुवचन।

रुम्मान—(अ०) (सं० पु०) अनार।

रुशद—(अ० (सं० पु०) होश संभलना।

रुसवा—(फ़ा०) (वि०) बदनाम, ज़लील, ख़्वार। रुसवा करना—ऐब को प्रकट करना।

रुसवाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बदनामी, ज़िल्लत, अप्रतिष्ठा, अपमान, फ़ज़ीहत।

रुसूख़, रुसूख़ियत—(अ०) (सं० पु०) (१) दृढ़ता, मज़बूती; (२) धैर्य; (३) पहुँच, मेल-जोल, रसाई, रब्त-ज़ब्त; (४) विश्वास, एतबार।

रुसूम—(अ०) (सं० पु०) (१) रीति, रिवाज, 'रस्म' का बहुवचन; (२) क़ायदे, दस्तूर, नियम, तरीक़े; (३) शादी-ब्याह की रस्में; (४) (स्त्री०) सरकारी ख़र्चा, कोर्ट-फ़ीस, स्टाम्प इत्यादि।

रुस्तख़ेज़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) क़्यामत।

रुस्तम—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) ईरान का एक परम प्रसिद्ध प्राचीन पहलवान, (२) बड़ा बहादुर। छिपा रुस्तम—देखने में सीधा सादा पर वास्तव में बड़ा वीर। रुस्तम ख़ाँ, रुस्तम का साला—शेख़ी बाज़।

रुस्तमी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) बहादुरी, वीरता; (२) ज़बर-दस्ती।

रू, रूप—(फ़ा०) (सं० पु०) मुँह, मुख, चेहरा, आकृति; (सं० स्त्री०) (१) वजह; कारण, सबब; (२) बुनियाद, तल, बिसात, (३) आगा, अबरा, अग्र-भाग; (४) आशा, तवज्जह।

रूईदगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वनस्पति, नबातात।

रूईय्यत—(अ०) (सं० स्त्री०) दीदार, सूरत, दर्शन, नज़र आना।

रूए-किताबी—(फ़ा०) (सं० पु०) किसी क़दर लांबा चेहरा।

रूए-ज़मीन—ज़मीन की सतह।

रूए-दाद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) देखो 'रूदाद'।

रूए-सखुन—(फ़ा०) (सं० पु०) इशारा, ख़िताब।

रूंद—(हि०) (सं० स्त्री०) गश्त, रात का गश्त।

रूकन, रूखन—(हि०) (सं० स्त्री०) घाता, ऊपर, अलावा, ख़रीदने के बाद बिना क़ीमत जो ऊपर से ले लिया जाय।

रूकश—(फ़ा०) (वि०) विरोधी, सामने मुक़ाबिला करनेवाला, हरीफ़।

रू-कार—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अगला हिस्सा, सामने का हिस्सा।

रु-गरदाँ—(फ़ा०) (वि०) (१) बे-दिमाग़; (२) कपड़ा जिसका आगा पीछा एक-सा हो; नाराज़, नाख़ुश, मुँह फेरनेवाला।

रूखा—(हि०) (वि०) (पु०) (१) सूखा, .खुश्क; (२) सादा; (३) बे मजा, बे-लुत्फ़; (४) फीका, दाल तरकारी बिना, (५) अक्खड़, नाख़ुश; (६) असभ्य, कठोर; (७) बिना घी का। रूखा-फीका—बद-मज़ा। रूखी-सूखी—बुरा और ख़राब खाना।

रूज—(हि०) (सं० पु०) नील गाय।

रू-दर-रू—(देह०) मुँह पर, ऐलानिया, किसी के सामने।

रूदबार—(फ़ा०) (सं० पु०) बहुत बड़ी झील, बड़ा और चौड़ा जल-डमरू-मध्य।

रू-दाद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) हालत, माजरा, वृत्तान्त; (२) समाचार, कैफ़ियत, हाल; (३) अदालत की कार-रवाई।

रू-दारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) लिहाज़, पास, ख़याल।

रू-नुमाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) मुँह-दिखाई, मुँह दिखलाने की रस्म; (२) नक़दी जो वर पक्ष वाले मुँह देख कर वधू को देते हैं।

रू-पाक—(फ़ा०) (सं० पु०) रूमाल।

रू-पोश—(फ़ा०) (वि०) ग़ायब, मुँह छिपाए हुए, पोशीदा।

रू-पोशी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ग़ायब होना, मुँह छिपाना।

रूब-कफ़ा—(फ़ा०) (वि०) सिर झुकाए हुए।

रू-बकार—(फ़ा०) (सं० पु०) परवाना, आज्ञा-पत्र, तहरीरी हुक्म।

रू-बराह—(फ़ा०) (वि०) तैयार, प्रस्तुत, संशोधित, ठीक किया हुआ।

रू-बरू—(फ़ा०) (क्रि० वि०) सामने, सम्मुख, आगे।

रूबा, रूबाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) लोमड़ी। (उ०) (वि०) डरपोक।

रू-बाह-बाज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) फ़रेब करना, मक्कारी, चालाकी।

रूम—(फ़ा०) (सं० पु०) टर्की देश का नाम।

रूमाल—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) मुँह पोंछने का कपड़ा; (२) वह ऊनी या सूती कपड़ा जो तिकोना ओढ़ा जाता है। रूमाल से रूमाल बदलना—भाई चारा करना, गाढ़ी दोस्ती करना।

रूमाली—(स्त्री०) (१) ओढ़नी; (२) मियानी का कपड़ा; (३) वह तिकोना कपड़ा जो पहलवान कसरत के वक्त बाँधते हैं; (४) गुलू-बंद; (५) वह रूमाल जो औरतें सर से बाँध लेती हैं; (६) एक प्रकार का कबूतर; (७) मुगदर की एक कसरत। रूमाली-सुइयाँ—बहुत बारीक सुइयाँ।

रूमी—(फ़ा०) (वि०) (१) रूम देश से सम्बन्धित; रूम देश का निवासी, तुर्क।

रू-रिआयत—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) तरफ़-दारी, लिहाज़, पक्षपात, पक्ष।

रू-शनास—(फ़ा०) (वि०) परिचित, जान-पहचान का, वाक़िफ़-कार।

रू-सफ़ेद—गोरे चेहरे का।

रू-सियः, रू-सियाह—(फ़ा०) (वि०) (१) काले मुँह का; (२) पापी, गुनहगार; (३) ज़लील, कम-बख़्त।

रू-सियाही—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बदनामी, ज़िल्लत, अपमान।

रूह—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) जीव, आत्मा; (२) जौहर, सत्त, सार; (३) दिल, नीयत, भीतरी इच्छा; (४) इत्र। रूह क़ब्ज़ करना—मौत के फ़रिश्ते का मनुष्य के शरीर से रूह निकालना। रूह क़ब्ज़ होना—बहुत डर होना।

रूह-अफ़ज़ा—(अ०) (वि०) चित्त प्रसन्न करनेवाला।

रूह-उल्-क़ुदस—(अ०) (सं० पु०) जब्रईल (फ़रिश्ता)।

रूहड़—(हि०) (सं० पु०) मोटा धागा। (वि०) भद्दा।

रूहानियत—(स्त्री०) आत्मिक बल।

रूहानी—(अ०) (वि०) (१) रूह या आत्मा से सम्बन्ध रखनेवाला; (२) पाक-साफ़, पवित्र।

रूहे-रवाँ—(स्त्री०) (१) जानेवाली रूह; (२) असल चीज़, तत्व; (३) वह पुरुष जिसके ऊपर दार-मदार किसी काम का हो।

रेख़्ता—(फ़ा०) (वि०) (१) गिरी पड़ी; (२) अस्त-व्यस्त। (सं० पु०) (१) पक्की बनी हुई इमारत; (२) उर्दू भाषा के शेर (पद्य); (३) उर्दू-भाषा।

रेख़्ती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) स्त्रियों की बोली में की हुई कविता।

रेग—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) रेत।

रेग-दान—(फ़ा०) (सं० पु०) रेग रखने का बरतन।

रेग-माल—(पु०) वह चीज़ जिससे धातु की वस्तु को साफ़ करते हैं, सैंड-पेपर।

रेग-माही—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक छोटा-सा जानवर जो रेगिस्तान में रहता है, सकनक़ूर।

रेगिस्तान—(फ़ा०) (सं० पु०) रेत का बड़ा मैदान, मरु-देश, मरुस्थल।

रेगे-रवाँ—(फ़ा०) (वि०) चमकती हुई रेत जो पानी की तरह बहती मालूम होती है।

रेज़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) परंद का चहकना, पक्षियों का कल-रव।

रेज़-गारी, रेज़गी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) रुपये के टुकड़े, हिस्से। रेज़गी-लड़के—(दे०) नन्हे बच्चे।

रेज़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) बहुत छोटा टुकड़ा; (२) पुरज़ा; (३) रेशमी कपड़े का थान; (४) नौची, नयी उम्र की लड़की; (५) उम्दा और सुडौल संदूक़। रेज़ा-रेज़ा होना—टुकड़े टुकड़े होना।

रेज़िश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) ज़ुकाम, नज़ला, प्रतिश्याय; (२) गिरना; झड़ना।

रेब—(अ०) (सं० पु०) सन्देह, दुविधा।

रेवन्द, रेवन्द-चीनी—(फ़ा०) (सं० पु०) एक वृक्ष जिसकी लकड़ी और जड़ दवा के काम आती है।

रेशम—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) वह तार जो रेशम के कीड़े के पेट से पैदा होता है; (२) रेशम की गाँठ जो बड़ी मुश्किल से खुलती है।

रेशा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) पेड़ों की रगें, फूसड़ा; (२) सूत का तार; (३) आम के फल में जो तार होते हैं।

रेशा-ख़तमी—(वि०) ख़ुश, बहुत हँसनेवाला।

रेशा-दवानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शरारत करना, फ़िसाद करना।

रेशा-दार—(फ़ा०) (वि०) जिसमें रेशे हों।

रेहन—(फ़ा०) (सं० पु०) बंधक, गिरो,

अपनी जायदाद की आड़ करना, क़र्ज़ के बदले अपनी जायदाद गिरवी रखना।

रेहन-दार—(फ़ा०) (सं० पु०) मुर्तहिन, जिसके पास जायदाद गिरवी रक्खी हो।

रेहन नामा—(फ़ा०) (सं० पु०) वह काग़ज़ जिसमें रेहन की शर्तें दर्ज हों।

रेहां, रेहान—(अ०) (सं० पु०) तुलसी की तरह का एक ख़ुशबूदार पौदा, बालंगा; (१) एक सुगंधित घास; (२) एक प्रकार की अरबी लेख-प्रणाली।

रोग—(हि०) (सं० पु०) (१) दुख-दर्द, बीमारी, मर्ज़; (२) वबाल, जंजाल; (३) झगड़ा, फ़िसाद; (४) दिक़्क़त, मुश्किल, तकलीफ़, कष्ट; (५) ऐब, नुक़्स, दोष; (६) क्लेश, दुःख देनेवाली चीज़। रोग-धोग—झगड़ा, मुसीबतें। रोग का घर—बीमारी का सबब। रोग काटना—झगड़ा चुकाना, क़ज़िया पाक करना। रोग पालना—झगड़ा पीछे लगा लेना। रोग बसाना—(१) अपने पीछे झगड़ा लगा लेना; (२) दुश्मन बना लेना; (३) बुरी आदत डाल लेना। रोग लाना—झगड़ा करना।

रोग़न—(फ़ा०) (सं० पु०) देखो 'रौग़न'।

रोज़—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) दिन, दिवस; (२) समय, वक़्त, ज़माना; (३) एक दिन की मज़दूरी या वेतन; (४) मृत्यु की तिथि। (अव्यय) हमेशा, हर रोज़, आये दिन। रोज़-रोज़—हर रोज़। रोज़ का क़िस्सा—हर घड़ी का झगड़ा।

रोज़-अफ़ज़ूँ—(फ़ा०) (वि०) नित्य बढ़ने-वाला, जो चीज़ रोज़ बढ़े।

रोज़गार—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) ज़माना; (२) पेशा, कारोबार, धंधा, व्यवसाय, नौकरी; (३) व्यापार, तिजारत। कहा०—रोज़गार और दुश्मन बार-बार नहीं मिलते—मौक़े को हाथ से न जाने देना चाहिए।

रोज़गारी—(फ़ा०) (सं० पु०) व्यापारी, नफ़ा उठाने की इच्छा करनेवाला।

रोज़न—(फ़ा०) (सं० पु०) रोशन-दान, सूराख़, छेद।

रोज़-नामचा, रोज़-नामा—(फ़ा०) (सं० पु०) वह किताब जिस पर रोज़ का किया हुआ काम या हिसाब लिखा जाता है, डायरी।

रोज़-ब-रोज़—(फ़ा०) (क्रि० वि०) पै-दर-पै, लगातार, नित्य-प्रति।

रोज़-बाज़ार—(फ़ा०) (सं० पु०) रौनक़।

रोज़-मर्रा—(फ़ा०) (अव्यय) हर रोज़, नित्य। (सं० पु०) बोल चाल की भाषा।

रोज़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) व्रत, उपवास; (२) फ़ाक़ा; (३) विशेषतः वह उपवास जो मुसल्मान रमज़ान के महीने में करते हैं। रोज़ा उछलना, (देह०) रोज़ा चढ़ना (लख०)—रोज़े में झुंझला कर बात करना। कह०—(१) आई तो रोज़ी, नहीं तो रोज़ा—मिल गया तो खा लिया वरना उपवास तो है ही। (२) रोज़े छुड़ाने गये थे, नमाज़ गले पड़ी—एक आफ़त से बचने की फ़िक्र की दूसरी आफ़त सर पड़ी।

रोज़ा-कुशाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) रोज़ा खोलना, दिन भर के उपवास के बाद कुछ खाना; (२) रोज़ा खुलवाने की तक़रीब।

रोज़ा-ख़ोर, रोज़ा-ख़्वार—(फ़ा०) (सं० पु०) जो रोज़ा नहीं रक्खे।

रोज़ा-दार—(फ़ा०) (सं० पु०) रोज़ा रखनेवाला।

रोज़ाना—(फ़ा०) (क्रि० वि०) (१) हमेशा, जो बात हर रोज़ की जाय; (२) रोज़ीना।

रोज़ा-मरियम (रोज-ए-मरियम)—(फ़ा०) (१) वह उपवास जो मरियम ने ईसा के पैदा होने के दिन रखा था

और दिन भर मौन धारण किया था; (२) मौन, चुप; ख़ामोशी ।

रोज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) रोज़गार, जीविका; (२) नसीब, हिस्सा । **रोज़ी का ठीकरा**—रोज़ी का ज़रिया, जीविका का साधन । **रोज़ी की मार**—रोटी या जीविका की तकलीफ़ ।

रोज़ीना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) एक दिन की मज़दूरी; (२) रोज का ख़र्च; (३) पेंशन ।

रोज़ीना-दार—(फ़ा०) (वि०) तनख़्वाहदार, वेतन भोगी; पेंशन-दार ।

रोज़ी-रसां—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) ईश्वर; (२) रोटी देनेवाला, जीविका देने वाला ।

रोज़े-ख़ोर—जो रमज़ान में रोज़े नहीं रखे ।

रोज़े-जज़ा, रोज़े-दाद—(फ़ा०) (सं० पु०) कर्मों का फल मिलने का दिन, क़यामत का दिन ।

रोज़े-पेश—(फ़ा०) (सं० पु०) उम्र का आख़िर दिन; क़यामत का दिन ।

रोज़े-रौशन—(फ़ा०) (सं० पु०) सुबह, सबेरा, प्रातःकाल ।

रोज़े-शुमार—(फ़ा०) (सं० पु०) क़यामत का दिन, जिस दिन अच्छे बुरे कर्मों का हिसाब होगा ।

रोज़े-सिया, रोज़े-सियाह—(फ़ा०) (सं० पु०) मुसीबत का दिन, विपत्ति का दिन ।

रोद—(फ़ा०) (सं० पु०) नदी, नाला, नहर ।

रोद-बार—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) वह स्थान जहाँ बहुत सी नहरें जारी हों; (२) बड़ी नहर ।

रोदा—(फ़ा०) (सं० पु०) आँत, अंतड़ी ।

रोब—(अ०) (सं० पु०) धाक, दबदबा-शान-शौकत, आतंक । **रोब-दाब**—धाक । **रोब बांधना**—धाक बिठाना, आतंक जमाना । **रोब मानना**—डर जाना, भय मानना ।

रोब-दार—(फ़ा०) (वि०) तेजस्वी, ख़ौफ़-नाक, डरावना ।

रोया—(अ०) (सं० पु०) स्वप्न, जो कुछ स्वप्न में देखा जाय ।

रोशन—(फ़ा०) (वि०) (१) चमकता हुआ, जलता हुआ, प्रकाशित; (२) साफ़, प्रकट, ज़ाहिर; (३) प्रसिद्ध, प्रकाशमान ।

रोशन-चौकी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार के बाजेवालों की चौकी ।

रोशन-ज़मीर—(फ़ा०) (वि०) बुद्धिमान्, समझदार ।

रोशन-ज़मीरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अक़्ल-मन्दी, बुद्धिमानी ।

रोशन-ताब—(फ़ा०) (वि०) बहुत चमकने वाला ।

रोशन-दान—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) रोशनी आने का सुराख़; (२) धुआँ निकलने का छिद्र ।

रोशन-दिमाग़—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) आला-दिमाग़; वह जिसका दिमाग़ बहुत अच्छा और ऊँचा हो; (२) सुंघनी, नास, हुलास ।

रोशन-दिल—(फ़ा०) (सं० पु०) अक़्ल-मन्द, बुद्धिमान् ।

रोशन-निहाद—(फ़ा०) (वि०) नेक-तीनत, भला आदमी ।

रोशनाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) लिखने की स्याही, मसि । **रोशनाई उठाना**—स्याही सोखना, जज़्ब करना ।

रोशनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) नूर, चमक-दमक, उजाला; (२) दीपक, चिराग़; (३) दीप-माला का प्रकाश, दीप-दान; (४) रौनक़, आबादी ।

रौ—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) पानी का बहाव, धारा; (२) जोश, वलवला; (३) भीड़; (४) धुन, ख़याल ।

रौग़न—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) तेल, घी; (२) वारनिश; (३) चमक-दमक, आब-ताब।

रौग़न-गर, रौग़न-फ़रोश—(फ़ा०) (वि०) तेली।

रौग़नी—(फ़ा०) (वि०) (१) रौग़न या वारनिश किया हुआ; (२) वह रोटी जिसके ख़मीर में रौग़न (घी) मिलाया गया हो या घी ऊपर से चुपड़ा गया हो; (३) (लख०) लड़ाई का मुर्ग़।

रौग़ने-क़ाज़—(फ़ा०) (सं० पु०) राज-हंस की चरबी जो बहुत आब-दार व चिकनी होती है। **रौग़ने-क़ाज़ मलना**—चिकनी-चुपड़ी बातें बनाकर दम देना या काम निकालना।

रौग़ने-ज़र्द—(फ़ा०) (सं० पु०) घी, गाय का घी।

रौग़ने-तल्ख़—(फ़ा०) (सं० पु०) कड़ुआ तेल।

रौग़ने-सियाह—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) कड़ुआ तेल; (२) चिराग़ का तेल।

रौज़न—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) छिद्र, सूराख; (२) झरोखा, छोटी खिड़की।

रौज़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) बाग़, बाग़ीचा; बाटिका; (२) किसी फ़क़ीर या बड़े आदमी की क़ब्र; मक़बरा, जिस पर गुम्बद बना होता है।

रौज़ा-ख़्वाँ—(फ़ा०) (सं० पु०) मरसिया-गो, मरसिया पढ़नेवाला।

रौज़े-रिज़वाँ—(अ०) (सं० पु०) बहिश्त, स्वर्ग की बाटिका।

रौनक़—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) किसी चीज़ की ख़ूबी, दीप्ति, कांति; (२) आबादी, चहल-पहल; (३) बहार, आनन्द, लुत्फ़, कैफ़ियत; (४) शोभा, छटा।

रौनक़-अफ़ज़ा—(फ़ा०) (वि०) रौनक़ बढ़ानेवाला, शोभा-वर्द्धक।

रौनक़-अफ़रोज़—(फ़ा०) (वि०) रौनक़ बढ़ानेवाला। **रौनक़-अफ़रोज़ होना**—तशरीफ़ लाना।

रौनक़-दार—(फ़ा०) (वि०) शोभा-पूर्ण, सुन्दर, सजा हुआ।

रौनक़-दारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शोभा, विभूति।

रौनक़े-बाज़ार—(फ़ा०) (वि०) प्रसिद्ध, मशहूर।

रौनक़े-महफ़िल—(फ़ा०) (वि०) महफ़िल की रौनक़, महफ़िल की शोभा।

रौशन—(वि०) (देखो—'रोशन')

ल

लंग—(फ़ा०) (सं० पु०) लंगड़ा, लूला, अपाहिज; (२) लंगड़ापन।

लंगर—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) लोहे की ज़ंजीर या रस्सा जो नाव या जहाज़ ठह-राने के लिए काम में आता है; (२) वह जगह जहाँ मोहताजों और दरिद्रों को खाना मिलता है; (३) खेमा खड़ा करने का मोटा रस्सा; (४) पहलवानों का लंगोट; (५) धड़ के नीचे का हिस्सा; (६) बोझ, वज़न; (७) घड़ी का लटकन या पेंडूलम; (८) पैर की बेड़ी।

लंगर-ख़ाना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) फ़क़ीरों को रोज़ खाना बटने की जगह; (२) बावर्ची-ख़ाना।

लंगर-गाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) जहाज़ों के ठहरने की जगह।

लंगर-दार—(फ़ा०) (वि०) संगीन, वज़नी।

लंगरी—(फ़ा०) (वि०) (१) लंगर से सम्बन्ध रखनेवाला; (२) एक प्रकार का बड़ा तख़्ता।

लअ़न—(अ०) (सं० स्त्री०) फटकार, झिड़की।

और दिन भर मौन धारण किया था; (२) मौन, चुप; ख़ामोशी।

रोज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) रोज़गार, जीविका; (२) नसीब, हिस्सा। **रोज़ी का ठीकरा**—रोज़ी का ज़रिया, जीविका का साधन। **रोज़ी की मार**—रोटी या जीविका की तकलीफ़।

रोज़ीना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) एक दिन की मज़दूरी; (२) रोज का ख़र्च; (३) पेंशन।

रोज़ीना-दार—(फ़ा०) (वि०) तनख़्वाहदार, वेतन भोगी; पेंशन-दार।

रोज़ी-रसाँ—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) ईश्वर; (२) रोटी देनेवाला, जीविका देने वाला।

रोज़े-ख़ोर—जो रमज़ान में रोज़े नहीं रखे।

रोज़े-जज़ा, रोज़े-दाद—(फ़ा०) (सं० पु०) कर्मों का फल मिलने का दिन, क़यामत का दिन।

रोज़े-पेश—(फ़ा०) (सं० पु०) उम्र का आख़िर दिन; क़यामत का दिन।

रोज़े-रौशन—(फ़ा०) (सं० पु०) सुबह, सबेरा, प्रातःकाल।

रोज़े-शुमार—(फ़ा०) (सं० पु०) क़यामत का दिन, जिस दिन अच्छे बुरे कर्मों का हिसाब होगा।

रोज़े-सिया, रोज़े-सियाह—(फ़ा०) (सं० पु०) मुसीबत का दिन, विपत्ति का दिन।

रोद—(फ़ा०) (सं० पु०) नदी, नाला, नहर।

रोद-बार—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) वह स्थान जहाँ बहुत सी नहरें जारी हों; (२) बड़ी नहर।

रोदा—(फ़ा०) (सं० पु०) आँत, अंतड़ी।

रोब—(अ०) (सं० पु०) धाक, दबदबा-शान-शौकत, आतंक। **रोब-दाब**—धाक। **रोब बांधना**—धाक बिठाना, आतंक जमाना। **रोब मानना**—डर जाना, भय मानना।

रोब-दार—(फ़ा०) (वि०) तेजस्वी, ख़ौफ़-नाक, डरावना।

रोया—(अ०) (सं० पु०) स्वप्न, जो कुछ स्वप्न में देखा जाय।

रोशन—(फ़ा०) (वि०) (१) चमकता हुआ, जलता हुआ, प्रकाशित; (२) साफ़, प्रकट, ज़ाहिर; (३) प्रसिद्ध, प्रकाशमान।

रोशन-चौकी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार के बाजेवालों की चौकी।

रोशन-ज़मीर—(फ़ा०) (वि०) बुद्धिमान्, समझदार।

रोशन-ज़मीरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अक़्ल-मन्दी, बुद्धिमानी।

रोशन-ताब—(फ़ा०) (वि०) बहुत चमकने वाला।

रोशन-दान—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) रोशनी आने का सुराख़; (२) धुआँ निकलने का छिद्र।

रोशन-दिमाग़—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) आला-दिमाग़; वह जिसका दिमाग़ बहुत अच्छा और ऊँचा हो; (२) सुंघनी, नास, हुलास।

रोशन-दिल—(फ़ा०) (सं० पु०) अक़्ल-मन्द, बुद्धिमान्।

रोशन-निहाद—(फ़ा०) (वि०) नेक-तीनत, भला आदमी।

रोशनाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) लिखने की स्याही, मसि। **रोशनाई उठाना**—स्याही सोखना, जज़्ब करना।

रोशनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) नूर, चमक-दमक, उजाला; (२) दीपक, चिराग़; (३) दीप-माला का प्रकाश, दीप-दान; (४) रौनक़, आबादी।

रौ—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) पानी का बहाव, धारा; (२) जोश, वलवला; (३) भीड़; (४) धुन, ख़याल।

रौग़न—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) तेल, घी; (२) वारनिश; (३) चमक-दमक, आब-ताब।

रौग़न-गर, रौग़न-फ़रोश—(फ़ा०) (वि०) तेली।

रौग़नी—(फ़ा०) (वि०) (१) रौग़न या वारनिश किया हुआ; (२) वह रोटी जिसके ख़मीर में रौग़न (घी) मिलाया गया हो या घी ऊपर से चुपड़ा गया हो; (३) (लख०) लड़ाई का मुर्ग़।

रौग़ने-क़ाज़—(फ़ा०) (सं० पु०) राज-हंस की चरबी जो बहुत आब-दार व चिकनी होती है। **रोग़ने-क़ाज़ मलना**—चिकनी-चुपड़ी बातें बनाकर दम देना या काम निकालना।

रौग़ने-ज़र्द—(फ़ा०) (सं० पु०) घी, गाय का घी।

रौग़ने-तल्ख़—(फ़ा०) (सं० पु०) कडुआ तेल।

रौग़ने-सियाह—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) कडुआ तेल; (२) चिराग़ का तेल।

रौज़न—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) छिद्र, सूराख; (२) झरोखा, छोटी खिड़की।

रौज़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) बाग़, बाग़ीचा; बाटिका; (२) किसी फ़क़ीर या बड़े आदमी की क़ब्र; मक़बरा, जिस पर गुम्बद बना होता है।

रौज़ा-ख़्वाँ—(फ़ा०) (सं० पु०) मरसिया-गो, मरसिया पढ़नेवाला।

रौज़े-रिज़्वाँ—(अ०) (सं० पु०) बहिश्त, स्वर्ग की बाटिका।

रौनक़—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) किसी चीज़ की ख़ूबी, दीप्ति, कांति; (२) आबादी, चहल-पहल; (३) बहार, आनन्द, लुत्फ़, कैफ़ियत; (४) शोभा, छटा।

रौनक़-अफ़ज़ा—(फ़ा०) (वि०) रौनक़ बढ़ानेवाला, शोभा-वर्द्धक।

रौनक़-अफ़रोज़—(फ़ा०) (वि०) रौनक़ बढ़ानेवाला। **रौनक़-अफ़रोज़ होना**—तशरीफ़ लाना।

रौनक़-दार—(फ़ा०) (वि०) शोभा-पूर्ण, सुन्दर, सजा हुआ।

रौनक़-दारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शोभा, विभूति।

रौनक़े-बाज़ार—(फ़ा०) (वि०) प्रसिद्ध, मशहूर।

रौनक़े-महफ़िल—(फ़ा०) (वि०) महफ़िल की रौनक़, महफ़िल की शोभा।

रौशन—(वि०) (देखो—'रोशन')

ल

लंग—(फ़ा०) (सं० पु०) लंगड़ा, लूला, अपाहिज; (२) लंगड़ापन।

लंगर—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) लोहे की ज़ंजीर या रस्सा जो नाव या जहाज़ ठह-राने के लिए काम में आता है; (२) वह जगह जहाँ मोहताजों और दरिद्रों को खाना मिलता है; (३) खेमा खड़ा करने का मोटा रस्सा; (४) पहलवानों का लंगोट; (५) धड़ के नीचे का हिस्सा; (६) बोझ, वज़न; (७) घड़ी का लटकन या पेंडुलम; (८) पैर की बेड़ी।

लंगर-ख़ाना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) फ़क़ीरों को रोज़ खाना बटने की जगह; (२) बावर्ची-ख़ाना।

लंगर-गाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) जहाज़ों के ठहरने की जगह।

लंगर-दार—(फ़ा०) (वि०) संगीन, वज़नी।

लंगरी—(फ़ा०) (वि०) (१) लंगर से सम्बन्ध रखनेवाला; (२) एक प्रकार का बड़ा तख़्ता।

लश्नन—(अ०) (सं० स्त्री०) फटकार, झिड़की।

और दिन भर मौन धारण किया था; (२) मौन, चुप; ख़ामोशी ।

रोज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) रोज़गार, जीविका; (२) नसीब, हिस्सा । रोज़ी का ठीकरा—रोज़ी का ज़रिया, जीविका का साधन । रोज़ी की मार—रोटी या जीविका की तकलीफ़ ।

रोज़ीना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) एक दिन की मज़दूरी; (२) रोज का ख़र्च; (३) पेंशन ।

रोज़ीना-दार—(फ़ा०) (वि०) तनख़्वाहदार, वेतन भोगी; पेंशन-दार ।

रोज़ी-रसाँ—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) ईश्वर; (२) रोटी देनेवाला, जीविका देने वाला ।

रोज़े-ख़ोर—जो रमज़ान में रोज़े नहीं रखे ।

रोज़े-जज़ा, रोज़े-दाद—(फ़ा०) (सं० पु०) कर्मों का फल मिलने का दिन, क़यामत का दिन ।

रोज़े-पेश—(फ़ा०) (सं० पु०) उम्र का आख़िर दिन; क़यामत का दिन ।

रोज़े-रौशन—(फ़ा०) (सं० पु०) सुबह, सवेरा, प्रातःकाल ।

रोज़े-शुमार—(फ़ा०) (सं० पु०) क़यामत का दिन, जिस दिन अच्छे बुरे कर्मों का हिसाब होगा ।

रोज़े-सिया, रोज़े-सियाह—(फ़ा०) (सं० पु०) मुसीबत का दिन, विपत्ति का दिन ।

रोद—(फ़ा०) (सं० पु०) नदी, नाला, नहर ।

रोद-बार—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) वह स्थान जहाँ बहुत सी नहरें जारी हों; (२) बड़ी नहर ।

रोदा—(फ़ा०) (सं० पु०) आँत, अंतड़ी ।

रोब—(अ०) (सं० पु०) धाक, दबदबा-शान-शौकत, आतंक । रोब-दाब—धाक । रोब बांधना—धाक बिठाना, आतंक जमाना । रोब मानना—डर जाना, भय मानना ।

रोब-दार—(फ़ा०) (वि०) तेजस्वी, ख़ौफ़-नाक, डरावना ।

रोया—(अ०) (सं० पु०) स्वप्न, जो कुछ स्वप्न में देखा जाय ।

रोशन —(फ़ा०) (वि०) (१) चमकता हुआ, जलता हुआ, प्रकाशित; (२) साफ़, प्रकट, ज़ाहिर; (३) प्रसिद्ध, प्रकाशमान ।

रोशन-चौकी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार के बाजेवालों की चौकी ।

रोशन-ज़मीर—(फ़ा०) (वि०) बुद्धिमान्, समझदार ।

रोशन-ज़मीरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अक़्ल-मन्दी, बुद्धिमानी ।

रोशन-ताब—(फ़ा०) (वि०) बहुत चमकने वाला ।

रोशन-दान—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) रोशनी आने का सुराख़; (२) धुआँ निकलने का छिद्र ।

रोशन-दिमाग़—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) आला-दिमाग़; वह जिसका दिमाग़ बहुत अच्छा और ऊँचा हो; (२) सुंघनी, नास, हुलास ।

रोशन-दिल—(फ़ा०) (सं० पु०) अक़्ल-मन्द, बुद्धिमान् ।

रोशन-निहाद—(फ़ा०) (वि०) नेक-तीनत, भला आदमी ।

रोशनाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) लिखने की स्याही, मसि । रोशनाई उठाना—स्याही सोखना, जज़्ब करना ।

रोशनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) नूर, चमक-दमक, उजाला; (२) दीपक, चिराग़; (३) दीप माला का प्रकाश, दीप-दान; (४) रौनक़, आबादी ।

रौ—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) पानी का बहाव, धारा; (२) जोश, वलवला; (३) भीड़; (४) धुन, ख़याल ।

रौग़न—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) तेल, घी; (२) वारनिश; (३) चमक-दमक, आब-ताब।

रौग़न-गर, रौग़न-फ़रोश—(फ़ा०) (वि०) तेली।

रौग़नी—(फ़ा०) (वि०) (१) रौग़न या वारनिश किया हुआ; (२) वह रोटी जिसके ख़मीर में रौग़न (घी) मिलाया गया हो या घी ऊपर से चुपड़ा गया हो; (३) (लख०) लड़ाई का मुर्ग़।

रौग़ने-क़ाज़—(फ़ा०) (सं० पु०) राज-हंस की चरबी जो बहुत आब-दार व चिकनी होती है। **रौग़ने-क़ाज़ मलना**—चिकनी-चुपड़ी बातें बनाकर दम देना या काम निकालना।

रौग़ने-ज़र्द—(फ़ा०) (सं० पु०) घी, गाय का घी।

रौग़ने-तल्ख़—(फ़ा०) (सं० पु०) कड़ुआ तेल।

रौग़ने-सियाह—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) कड़ुआ तेल; (२) चिराग़ का तेल।

रौज़न—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) छिद्र, सूराख़; (२) झरोखा, छोटी खिड़की।

रौज़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) बाग़, बाग़ीचा; बाटिका; (२) किसी फ़क़ीर या बड़े आदमी की क़ब्र; मक़बरा; जिस पर गुम्बद बना होता है।

रौज़ा-ख़्वाँ—(फ़ा०) (सं० पु०) मरसिया-गो, मरसिया पढ़नेवाला।

रौज़े-रिज़्वाँ—(अ०) (सं० पु०) बहिश्त, स्वर्ग की बाटिका।

रौनक़—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) किसी चीज़ की ख़ूबी, दीप्ति, कांति; (२) आबादी, चहल-पहल; (३) बहार, आनन्द, लुत्फ़, कैफ़ियत; (४) शोभा, छटा।

रौनक़-अफ़ज़ा—(फ़ा०) (वि०) रौनक़ बढ़ानेवाला, शोभा-वर्द्धक।

रौनक़-अफ़रोज़—(फ़ा०) (वि०) रौनक़ बढ़ानेवाला। **रौनक़-अफ़रोज़ होना**—तशरीफ़ लाना।

रौनक़-दार—(फ़ा०) (वि०) शोभा-पूर्ण, सुन्दर, सजा हुआ।

रौनक़-दारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शोभा, विभूति।

रौनक़े-बाज़ार—(फ़ा०) (वि०) प्रसिद्ध, मशहूर।

रौनक़े-महफ़िल—(फ़ा०) (वि०) महफ़िल की रौनक़, महफ़िल की शोभा।

रौशन—(वि०) (देखो—'रोशन')

ल

लंग—(फ़ा०) (सं० पु०) लंगड़ा, लूला, अपाहिज; (२) लंगड़ापन।

लंगर—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) लोहे की ज़ंजीर या रस्सा जो नाव या जहाज़ ठह-राने के लिए काम में आता है; (२) वह जगह जहाँ मोहताजों और दरिद्रों को खाना मिलता है; (३) खेमा खड़ा करने का मोटा रस्सा; (४) पहलवानों का लंगोट; (५) धड़ के नीचे का हिस्सा; (६) बोझ, वज़न; (७) घड़ी का लटकन या पेंडुलम; (८) पैर की बेड़ी।

लंगर-ख़ाना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) फ़क़ीरों को रोज़ खाना बटने की जगह; (२) बावर्ची-ख़ाना।

लंगर-गाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) जहाज़ों के ठहरने की जगह।

लंगर-दार—(फ़ा०) (वि०) संगीन, वज़नी।

लंगरी—(फ़ा०) (वि०) (१) लंगर से सम्बन्ध रखनेवाला; (२) एक प्रकार का बड़ा तख़्ता।

लअ़न—(अ०) (सं० स्त्री०) फटकार, झिड़की।

लअ़न-तअ़न—(अ०) (सं० स्त्री०) लानत-मलामत, झिड़की, फटकार ।

लअ़ब—(अ०) (सं० स्त्री०) पुतली, गुड़िया, खिलौना । (फ़ा०) (स्त्री०) आँख की पुतलियाँ ।

लआ़न—(अ०) (सं० पु०) औरत और मर्द का एक दूसरे को लानत करना; एक दूसरे पर दोषारोपण करना ।

लईन—(अ०) (वि०) फटकारा हुआ, मरदूद, मलऊन, जिस पर लानत भेजी जाय, बदबख़्त ।

लऊक़—(अ०) (सं० पु०) चाटने की लसदार औषध, चटनी, अवलेह ।

लकद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) लात, ठोकर, दुलत्ती ।

लकद-ज़न—(फ़ा०) (वि०) ठोकर मारनेवाला ।

लकनत—(अ०) (सं० स्त्री०) हकलापन, रुकरुक कर बोलने की आदत, रोग या नशे की दशा में रुकरुक कर बोलना ।

लक़ब—(अ०) (सं० पु०) उपनाम, उपाधि ।

लक़लक़—(अ०) (सं० पु०) सारस (पक्षी) (वि०) बहुत दुबला-पतला ।

लक़लक़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) सारस की आवाज़; (२) साँप का बार-बार जीभ निकालना; (३) रोब-दाब, दबदबा, हौसला; (४) ख़ुश-बयानी, वाक पटुता ।

लक़वा—(अ०) (सं० पु०) फ़ालिज, पक्षाघात, एक प्रकार का वात-रोग ।

लक़ा—(अ०) (सं० पु०) चेहरा, सूरत, आकृति, शक्ल । माहे-लक़ा—चन्द्रमा के समान मुखवाला ।

लक़ ओ दक़—(अ०) (वि०) (१) वीराना, बंजर, उजाड़, सुनसान; (२) बहुत आडंबरवाला ।

लक़ा—(सं० पु०) एक प्रकार का कबूतर जो प्रायः अपनी गर्दन दुम के साथ लगाए रहता है ।

लक़ात—(औ०) (वि०) कमज़ोर, दुर्बल ।

लक्क़ाता—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) फ़ाहशा और बेहया औरत ।

लख़लख़—(फ़ा०) (वि०) (१) दुबला-पतला, लाग़िर; वह आवाज़ जो गर्मी, भूख प्यास में गले से निकलती है । लख़-लख़ करना—भूख प्यास या गर्मी के मारे गले से आवाज़ न निकलना ।

लख़लख़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सुगंधित चीज़ों का योग जिसे दिमाग़ को चेतन करने के लिए सुँघाते हैं; (२) वह पात्र जिसमें यह योग रखते हैं ।

लख-लुट—(हि०) (वि०) बहुत बड़ा फ़िज़ूल-ख़र्च, खाऊ-उड़ाऊ ।

लख़्त—(फ़ा०) (सं० पु०) टुकड़ा, हिस्सा, खंड, भाग । यक-लख़्त—बिलकुल, एक दम । लख़्ते-जिगर—कलेजे का टुकड़ा, प्यारी संतान । लख़्ते-जिगर खाना—बहुत कष्ट सहना ।

लख़्ता—(फ़ा०) (सं० पु०) जमे हुए ख़ून का लोथड़ा ।

लग़ज़िश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) फिसलन; (२) कँपकँपी; (३) भूल, ग़लती, ख़ता; (४) बयान में फ़र्क़ आना; (५) गुमराह होना, बहकना ।

लगन—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) हाथ-पाँव धोने का बरतन, चिलमची; (२) वह थाली जिसमें शमा जलाई जाय ।

लगाम—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) बाग, रास; (२) वह चमड़े का तस्मा जिससे घोड़े को चलाया और इधर-उधर मोड़ा जाय; (३) क़ाबू में रखनेवाली चीज़ ।

लग़ायत—(अ०) (क्रि० वि०) (१) सहित; (२) तक, पर्यन्त ।

लग्गा—(हि०) (सं० पु०) (१) लंबा बाँस; (२) नाव खेने का बाँस; (३) लाग,

प्यार, मुहब्बत, दोस्ती; (४) सम्बन्ध, वास्ता; (५) बराबरी, समानता; (६) ढंग, डौल; (७) आरंभ, शुरू; (८) पहुँच, रसाई; दख़ल। लग्गा-सग्गा—मेल-जोल। लग्गा खाना—बराबर का होना। लग्गा लगाना—(१) शुरू करना; (२) प्रेम करना। लग्गा होना—प्रेम होना, सम्बन्ध होना।

लग़्व—(अ०) (वि०) (१) बेहूदा, बेमानी, वाहियात; (२) व्यर्थ, बेकार।

लग़्वियात—(अ०) (सं० स्त्री०) वाहियात बातें, बेहूदा बातें।

लजलाज़—(फ़ा०) (सं० पु०) शोधित पारा।

लजाजत—(अ०) (सं० स्त्री०) .खुशामद, दीनता, आजिज़ी, मिन्नत।

लज़ायज़—(अ०) (सं० पु०) स्वादिष्ट पदार्थ, लज़्ज़तदार चीज़ें। 'लज़्ज़त' का बहुवचन।

लज़ीज़—(अ०) (वि०) मज़ेदार, स्वादिष्ट, लज़्ज़तदार।

लज़ूम—(सं० पु०) आवश्यक होना, लाज़िम होना।

लज़्ज़त—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) स्वाद, मज़ा, ज़ायक़ा; (२) लुत्फ़, आनन्द।

लज़्ज़त-आशना—(फ़ा०) (वि०) लज़्ज़त हासिल करनेवाला।

लज़्ज़त-परस्त—(फ़ा०) (वि०) केवल स्वाद का प्रेमी।

लताड़—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) डाँट-डपट, फटकार; (२) दुःख, मुसीबत; (३) काम-काज की अधिकता; (४) दौड़-धूप, थकाधट; (५) मेहनत, परिश्रम; (६) दबाव।

लताफ़त—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) बारीकी, सूक्ष्मता; (२) उम्दगी, .खूबी; (३) स्वाद मज़ा, ज़ायक़ा; (४) नरमी, सफ़ाई; (५) .खूबसूरती, सुकुमारता, कोमलता।

लतायफ़—(अ०) (सं० पु०) चुटकले, दिल्लगी की बातें, बारीकियाँ। 'लतीफ़ा' का बहुवचन।

लतायफ़-उल-हील—(अ०) (सं० पु०) हीले-बहाने जो दूसरों को बुरे लगें।

लतीफ़—(अ०) (वि०) (१) स्वादिष्ट, मज़ेदार, ज़ायक़े-दार; (२) सुथरा, साफ़; (३) अच्छा, उम्दा; (४) सूक्ष्म, कोमल; (५) हलका, नरम, मुलायम; (६) पाक, पवित्र।

लतीफ़-ग़िज़ा—(स्त्री०) हलका खाना, जो जल्दी हज़म हो जाय।

लतीफ़-मिज़ाज—(फ़ा०) (वि०) सुथरी तबीयतवाला, .खुश-मिज़ाज।

लतीफ़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) चुटकला, दिल-चस्प बात, मनोरंजक बात; (२) अजब या अनोखी बात।

लतीफ़ा-गो—(अ०) (सं० पु०) चुटकला कहनेवाला, .खुश-मिज़ाज।

लतीफ़ा-बाज़—(अ०) (सं० पु०) चुटकले-बाज़।

लत्मा—(अ०) (सं० पु०) थपेड़ा, थमांचा।

लन्तरानी—(अ०) (सं० स्त्री०) शेख़ी, डींग। लन्तरानी की लेना—शेख़ी मारना, दून की लेना।

लप—(हि०) (सं० स्त्री०) मुट्ठी, मुट्ठी-भर।

लपका—(हि०) (सं० पु०) (१) लत, बुरी आदत; (२) बुरा दस्तूर; (३) मज़ा, चसका, चाट। लपका पड़ना—चसका पड़ना, मज़ा पड़ना, लत पड़ना। लपका होना—चसका पड़ जाना।

लप चख़नी—(औ०) .खुशामद करनेवाली, बेहूदा .खुशामदी; हाथ-चालाक।

लप-झप—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) फुरती, तेज़ी, जल्दी; (२) फ़रेब; मक्कारी; (३) चोरी।

लपका—(हि०) (सं० पु०) (१) मोटे आटे

का हलवा; (२) राब, शीरा; (३) एक प्रकार की घास।

लपाटन—(हि०) (वि०) (स्त्री०) झूठी, अनहोनी बातें बनानेवाली।

लपाड़िया—(हि०) (वि०) (पु०) झूठा, गप्पी।

लप्पड़-सप्पड़—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) घबराहट का काम; (२) इस प्रकार जल्दी-जल्दी बोलना जो सुननेवाले की समझ में न आवे।

लफंग—(फ़ा०) (सं० पु०) शेख़ी-बाज़, बदमाश, लुच्चा।

लफ़्ज़—(अ०) (सं० पु०) शब्द, बात। **लफ़्ज़ ब लफ़्ज़**—हूबहू, हर्फ़ ब हर्फ़, साफ़ साफ़।

लफ़्ज़ी—(अ०) (वि०) (१) असली, लुग़वी, कोष के अनुसार; (२) शाब्दिक। **लफ़्ज़ी तरजुमा**—वह अनुवाद जो लफ़्ज़ ब लफ़्ज़ हो। **लफ़्ज़ी मानी**—लुग़वी मानी; सामान्य अर्थ।

लफ़्फ़ाज़—(अ०) (वि०) (१) बढ़ा कर बातें करनेवाला, शेख़ी मारनेवाला; (२) ख़ुश-बयान, वाक-पटु, मधुर-भाषी।

लफ़्फ़ाज़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) डींग, शेख़ी; (२) लस्सानी, बकवास, बक-बक; वाक पटुता।

लब—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) होंठ; (२) थूक, लार, राल; (३) किनारा, तट; (४) हाशिया, मुंडेर; (५) तरफ़, ओर। **लब ओ लहजा**—(फ़ा०) (सं० पु०) बोलने का ढंग, उच्चारण। **लब खुलना**—बात करना। **लब पर आना**—कहना, कुछ कहा जाना। **लब पर आह होना**—ज़ुल्म की शिकायत होना। **लब पर लाना**—कहना। **लब पर मुहर करना, लगाना**—चुप हो जाना। **लब सीना**—ज़बान बंद करना।

लबड़—(हि०) (वि०) झूठा, बेहूदा।

लबड़-ख़ब्दा—(वि०) (पु०) झूठा, लपाटिया।

लबड़-चटाई करना—(क्रि०) (१) ज़टल हाँकना, ऊल-जलूल बकना; (२) ख़ुशामद करना।

लबड़-धों धों—गुल, शोर, हंगामा; तकरार, झंझट; बेईमानी; बद-इन्तज़ामी, कुप्रबंध।

लबड़ा—(हि०) (वि०) (पु०) (१) झूठा (२) बायें हाथ से काम-करने वाला, खब्बा, (३) बड़-हत्था, (४) नदीदा; चटोरा।

लब-तश्ना—(फ़ा०) (वि०) प्यासा।

लब-बंद—(फ़ा०) (वि०) चुप, जो बोल न सके।

लब-ब-लब—(फ़ा०) (वि०) (१) होंठ से होंठ मिला हुआ; (२) मुक़ाबिला करनेवाला।

लब-रेज़—(फ़ा०) (वि०) ऊपर तक भरा हुआ, लबालब।

लबलबा—(अ०) (सं० पु०) पशुओं के पेट के नीचे की गाँठ जिसमें से लसदार चीज़ रिसती रहती है। (हि०) (वि०) लसदार, चिपकनेवाला।

लबल्लोस—(हि०) (वि०) बेहया, नंगा, मूर्ख।

लबादा—(फ़ा०) (सं० पु०) रुई-दार चुग़ा।

लबालब—(फ़ा०) (वि०) किनारे तक भरा हुआ, लबरेज़।

लबूब—(अ०) (सं० पु०) एक प्रकार की माजून। 'लुब' का बहुवचन।

लबे-आब—(फ़ा०) (सं० पु०) नदी, झील, हौज़ वग़ैरह का किनारा।

लबे-गोया—(फ़ा०) बोलनेवाला होंठ।

लबे-गोर—(फ़ा०) (वि०) क़ब्र के किनारे पहुँचा हुआ, मरने ही वाला।

लबे-जाम—(फ़ा०) (वि०) जाम या मद्य-पात्र का किनारा।

लबे-जू—(फ़ा०) (सं० पु०) नदी का किनारा।

लबे-तेग़—(फ़ा०) (सं० पु०) तलवार की धार।

लबे-दरिया—(फ़ा०) (सं० पु०) नदी का किनारा।

लबे-दीवार—(फ़ा०) (सं० पु०) दीवार का किनारा।

लबे-बाम—(सं० पु०) कोठे का किनारा, बाला-ख़ाने का किनारा।

लबे-माशूक—हुक्क़ा (वाजिद अलीशाह का रखा हुआ नाम)।

लबेरा—(हि०) (सं० पु०) चिथड़ा, धज्जी।

लबेरी—(हि०) (सं० स्त्री०) लीर, छोटी धज्जी।

लबे-सड़क—(फ़ा०) (सं० पु०) सड़क का किनारा।

लबे-शीरीं—(फ़ा०) (सं० पु०) मधुर होंठ, माशूक़ के होंठ।

लब्बे आजाना—तालू में वरम हो जाना।

लम—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) अस्लियत, बात की तह; (२) वजह, सबब; (३) इलज़ाम, आरोप, तुहमत।

लमहा—(अ०) (सं० पु०) क्षण, पल, बहुत थोड़ा समय। लमहे लमहे में—हर घड़ी।

लम्बोतरा—(हि०) (वि०) (पु०) बहुत लंबा (जो देखने में बुरा लगे)।

लम्स—(अ०) (सं० पु०) स्पर्श, छूना।

लरज़ना—(अ०) (क्रि०) हिलना, काँपना, डरना।

लरज़ाँ—(फ़ा०) (वि०) काँपनेवाला; भय से काँपनेवाला।

लरज़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) ख़ौफ़ या बीमारी से काँपना, कंप, थरथराहट; (२) भू-कंप, भोंचाल। लरज़े से बुख़ार आना—कपकपी देकर बुख़ार आना, जाड़े से बुख़ार आना, जूड़ी आना।

लरज़िश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) रअशा, कपकपी, थरथराहट।

ललक—(हि०) (सं० स्त्री०) उमंग, शौक़, वलवला, लालच, धुन, लौ, लहर, ख़याल।

लवाज़मा—(अ०) (सं० पु०) ज़रूरी सामान, आवश्यक सामग्री।

लवाज़िम—(अ०) (सं० पु०) ज़रूरी चीज़ें, असबाब, ज़रूरी सामान।

लवाहिक़—(अ०) (सं० पु०) (१) भाई-बंद; रिश्तेदार, सम्बन्धी; (२) नौकर-चाकर; (३) साथ रहने की चीज़ें।

लश्कर—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सेना, फ़ौज; (२) छावनी, पड़ाव, कैंप।

लश्कर-आरा—(फ़ा०) (वि०) लश्कर तैयार करनेवाला।

लश्कर-कशी—हमला, चढ़ाई, धावा, सेना जुटाना।

लश्कर-गाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ख़ेमा, डेरा, पड़ाव, छावनी, केम्प।

लश्कर-शिकन—(फ़ा०) (वि०) बहादुर आदमी, वीर, दिलेर।

लश्करी—(फ़ा०) (वि०) (१) लश्कर से सम्बन्ध रखनेवाला; (२) सैनिक, फ़ौजी सिपाही। लश्करी बोली—(१) कई देशों की मिली-जुली बोली (२) उर्दू को भी लश्करी ज़बान कहा जाता है।

लसर्का—(हि०) (सं० पु०) (लख०) (औ०) थोड़ा सा ताल्लुक़, वास्ता, सरोकार।

लस्सान—(अ०) (वि०) (१) बहुत

बोलनेवाला, बातून; (२) चिकनी-चुपड़ी बातें बनानेवाला।

लस्सानी—(अ०) (सं० स्त्री०) गोयाई, बहुत बातें बनाना, चिकनी-चुपड़ी बातें।

लहजा—(अ०) (सं० पु०) (१) बोलने का ढंग, स्वर, (२) आवाज़। लब ओ लहजा—बोलने का ढंग।

लहज़ा—(अ०) (सं० पु०) लमहा, पल, क्षण, बहुत थोड़ा समय। लहज़ा-ब-लहज़ा—हरदम, हर घड़ी।

लहद्—(अ०) (सं० स्त्री०) क़ब्र, मज़ार, वह गढ़ा जिसमें मुर्दा गाड़ा जाय।

लहन—(अ०) (सं० स्त्री०) स्वर, आवाज़।

लहम—(अ०) (सं० पु०) (१) आवाज़, सुरीली आवाज़; (२) गोश्त।

लहलोट—(हि०) (वि०) बेताब, बेक़रार, किसी चीज़ के पाने के लिए बेचैन।

लहीम—(अ०) (वि०) माँसल।

लहीम-शहीम—(अ०) (वि०) मोटा-ताज़ा।

लाँक—(हि०) (सं० स्त्री०) खलयान, कटे हुए अनाज का ढेर।

ला—(अ०) (अव्यय) बग़ैर, बिना, ना, नहीं—शब्दों के आरंभ में लगकर अभाव या निषेध सूचित करता है।

ला-इलाज—(अ०) (वि०) ला-दवा, जिसका इलाज न हो सके, असाध्य; (२) जिसका कोई उपाय न हो।

ला-इल्म—(अ०) (वि०) अनजान, बे-इल्म, अज्ञान, जिसको कोई जानकारी न हो, बे-ख़बर।

ला-इल्मी—(अ०) (सं० स्त्री०) बे-ख़बरी, अज्ञान।

लाउबाली—(अ०) (वि०) निडर, बे-फ़िक्रा, दिलेर, बे-परवा। ला उबाली कारख़ाना—पूरी पूरी बद-इन्तज़ामी।

ला-उम्मती—(अ०) (सं० पु०) नास्तिक, किसी धर्म को न माननेवाला।

लाओ लश्कर—(अ०) (सं० पु०) (१) लश्कर और उसके साथ के लोग; (२) भीड़।

ला-कलाम—(अ०) (वि०) (१) निश्चित, ध्रुव, यक़ीनन; (२) जिसमें कुछ कहने की गुंजायश न हो।

ला-कलामी—(अ०) (सं० स्त्री०) बात न करना, चुप रहना। (वि०) यक़ीनी, निस्सन्देह।

लाख़—(फ़ा०) (सं० पु०) स्थान, जगह।

लाखा—(हि०) (सं० पु०) (१) पान का लाल रंग, जिसे स्त्रियाँ सौन्दर्य बढ़ाने के लिए होंठों पर जमाती हैं; (२) एक जंगली मुर्ग़।

ला-ख़िराज—(अ०) (वि०) वह ज़मीन जिस पर सरकारी महसूल न हो, माफ़ी।

ल-ख़िराज-दार—(अ०) (स० पु०) माफ़ीदार।

लाग—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) मदद, सहारा; (२) ताल्लुक़, सम्बन्ध; (३) प्रेम, लगन, मुहब्बत; (४) मज़ा, स्वाद, चसका; (५) वैर, दुश्मनी, अदावत, (६) करतब, शोबदा, तिलस्म, चमत्कार; (७) जादू, टोना; (८) एक मकान का दूसरे मकान से इतना पास होना कि एक से दूसरे में आसानी से जा सकें; (९) ध्यान, तवज्जह। लाग पर—चोट पर, मुक़ाबिले पर। लाग-डाँट—अन-बन। लाग-लपेट—(हि०) (स्त्री०) (१) तरफ़दारी, हिमायत, पक्ष; (२) छल फ़रेब, धोखा। लाग पैदा करना—अदावत या वैर पैदा करना। लाग बाँधना—वैर बाँधना। लाग लगना—प्रेम होना, उमंग होना।

लाग़र—(फ़ा०) (वि०) दुबला-पतला।

लाग़री—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) कमज़ोरी, नाताक़ती, दुबलापन।

लाचार—(अ०) (वि०) (१) विवश, बेबस

मजबूर; (२) असमर्थ, निरुपाय; (३) दीन, दुखी (शुद्ध रूप 'ना-चार' है)।

लाचारी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) नाचारी, मजबूरी, विवशता; (२) असमर्थता, दीनता, बेबसी।

लाजवर्द—(फ़ा०) (सं० पु०) एक नीले रंग का मूल्यवान् पत्थर; राजावर्त।

लाजवर्दी—(फ़ा०) (वि०) नीला, आसमानी रंग का।

ला-ज़बान—(अ०) (वि०) जो कुछ बोल न सकता हो, मूक। (सं० स्त्री०) गाली।

ला-जवाब—(अ०) (वि०) (१) यकता, अद्वितीय, अनुपम, बेजोड़; (२) ख़ामोश, चुप, जो उत्तर न दे सके; (३) क़ायल, आजिज़।

ला-ज़वाल—(अ०) (वि०) जिसका ह्रास या नाश न हो, जो नश्वर न हो।

लाज़िब—(अ०) (वि०) वह चोट जिसका निशान (अच्छा हो जाने पर भी) बाक़ी रहे।

लाज़िम—(अ०) (वि०) अनिवार्य, आवश्यक। लाज़िम आना—ज़रूरी, होना, यक़ीनी नतीजा निकलना।

लाज़िमी—(अ०) (वि०) अनिवार्य, ज़रूरी, जिसका होना ज़रूरी हो।

लाठ—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) खंभा, स्तम्भ, सितून; (२) कोल्हू की मोटी और लंबी लकड़ी; (३) मूसल, मोगरी; (४) चरख़ी की सब से लंबी और बीच की खूंटी।

लात—(अ०) (सं० पु०) अरब की तीन मशहूर मूर्तियों में से एक का नाम, जिनकी पूजा इस्लाम फैलने से पहले होती थी।

ला-तादाद—(अ०) (वि०) बेशुमार, असंख्य।

लाद—(हि०) (सं० स्त्री०) बोझ, भार। लाद चलना—कूच करना, सब सामान समेट कर चल देना।

ला-दवा—(अ०) (वि०) ला-इलाज, जिसकी दवा न हो सके, असाध्य।

ला-दावा—(अ०) (वि०) जिसका कोई दावा या हक़ न हो, जिसके अधिकार नष्ट हो गये हों। (सं०पु०) दस्त-बरदारी, फ़ारिग़-ख़ती, अपना अधिकार छोड़ना। ला-दावा देना—किसी हक़ को छोड़ देना।

लानत—(अ०) (सं० स्त्री०) फटकार, भर्त्सना, धिक्कार। लानत का तौक़—ज़िल्लत। लानत मलामत—बुरा-भला कहना, सख़्त-सुस्त कहना, शर्मिन्दा करना। लानत का मारा—मरदूद, मलाऊन, बदनसीब, फूटे नसीब का। लानत बकार शैतान—किसी काम से घृणा प्रकट करने के लिए कहते हैं। लानत करना—बुरा-भला कहना। लानत बरसना, लानत की बौछार होना—(१) हर शख़्स का लानत करना; (२) बे-रौनक़ी होना। लानत भेजना—(१) बुरा-भला कहना, (२) छोड़ना, नफ़रत करना। लानत का तौक़ पहनना—बदनाम होना।

ला-पता—(अ०) (वि०) जिसका पता न हो।

ला-परवा—(अ०) (वि०) बे-परवा, ग़ाफ़िल।

ला-परवाई—(अ०) (सं० स्त्री०) बे-परवाई, ग़फ़लत।

लाफ़—(फ़ा०) (सं० पु०) शेख़ी, डींग, घमंड, बड़ाई। लाफ़ ओ गज़ाफ़—शेख़ी, डींग।

लाफ़-ज़न—(फ़ा०) (वि०) शेख़ीबाज़, डींगिया।

लाफ़-ज़नी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शेख़ी मारना, डींग हाँकना।

ला-बुद—(अ०) (क्रि० वि०) बेशक, निस्सन्देह, मजबूरन ।

ला-बुदी—(अ०) (वि०) ज़रूरी, निश्चित, यक़ीनी ।

ला-मकान—(अ०) (वि०) जिसका घर-बार न हो ।

लाम-काफ़—(फ़ा०) (सं० पु०) वाही-तबाही बातें, गाली-गुफ़्तार, दुर्वचन ।

ला-मज़हब—(अ०) (वि०) जो किसी धर्म को न मानता हो, बे-दीन ।

लामिस—(अ०) (वि०) छूनेवाला ।

लामिसा—(अ०) (सं० स्त्री०) स्पर्श, स्पर्श-शक्ति, स्पर्श-ज्ञान; छूनेवाली ताक़त जिससे गर्मी-सर्दी, नर्मी-सख़्ती का भान होता है ।

ला - मुहाल, ला - मुहाला—यक़ीनन, निस्सन्देह, बिल-ज़रूर ।

लायक़—(अ०) (वि०) (१) योग्य, क़ाबिल, (२) मौज़ूँ, उपयुक्त, मुनासिब । लायक़ - फ़ायक़—बड़ा लायक़, बहुत योग्य ।

लायक़-मन्द—(वि०) लायक़, योग्य, गुण-वान् ।

लायक़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) योग्यता, लियाक़त ।

लायज़ाल—(अ०) (वि०) सनातन, स्थायी, शाश्वत ।

लायमूत—(अ०) (वि०) अमर ।

ला-रैब—(अ०) (क्रि० वि०) बेशक, निस्सन्देह ।

लाल—(फ़ा०) (सं० पु०) माणिक्य, लाल रंग का बहु-मूल्य रत्न । लालों-लाल—(१) माला-माल; (२) बहुत सुर्ख़ । लाल-गूं—लाल के रंग का, बहुत ही सुर्ख़ । लाल उगलना—(१) मृदु भाषण करना; (२) (व्यंग्य) बदनामी करना, गाली बकना । कहा० लाल गूदड़ में नहीं छिपता—अच्छी चीज़ छिपाये नहीं छिपती ।

लाल-बेग—(सं० पु०) मेहतरों के पीर का नाम ।

लाल-बेगिया—(वि०) लाल बेग के वंश का, मेहतर ।

लाला—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार का लाल फूल जिसके भीतर काला दाग़ होता है; (२) शमा जो मुशाइरे में कवियों के सम्मुख रखी जाती है । (वि०) चमकने-वाला, रोशन ।

लाला-ज़ार—(फ़ा०) (सं० पु०) बाग़, चमन; वह खेत जिसमें लाला के फूल बहुतायत से हों ।

लाला-फ़ाम—(फ़ा०) (वि०) लाल, सुर्ख़, लाल रंग का ।

लाला-रुख़ लाला-रुख़सार, लाला-रू—(फ़ा०) (वि०) (१) जिसका मुख लाला के फूल के समान सुर्ख़ हो, सुर्ख़ चेहरेवाला; (२) बहुत सुन्दर; (३) माशूक़, दिल-बर, दिल-रुबा ।

लाला-शाही—(लख०) (पु०) पीने का तम्बाकू जो गुड़ के शीरे में पका कर बनाते हैं ।

लाले—(सं० पु०) लालच, अभाव, दुर्लभ-ता । लाले पड़ना—(१) किसी चीज़ का दुर्लभ या अप्राप्य होना । (२) संकट में आना ।

लावनी—(हि०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार का गीत जिसको मरहटी और ख़्याल भी कहते हैं ।

ला-वल्द—(अ०) (वि०) बे-औलाद, निस्सन्तान ।

ला-वारिस—(अ०) (वि०) वह माल या शख़्स जिसका कोई वारिस या हक़दार न हो ।

ला-वारिसी—(अ०) (सं० स्त्री०) वह चीज़ जिसका कोई हक़दार न हो ।

लाश—(तु०) (सं० स्त्री०) (१) मुरदा, शव, मृत शरीर; (२) जनाज़ा । लाशों के

पुश्ते लगना—लाशों का ढेर जमा हो जाना।

ला-शरीक—(फ़ा०) (वि०) ख़ुदा, जिसका कोई शरीक नहीं है।

लाशा—(फ़ा०) (सं० पु०) लाश, शव।

लासा—(हि०) (सं० पु०) (१) एक लस-दार माद्दा जो पौदों से प्राप्त होता है; (२) वह लुआब-दार चीज़ जिससे चिड़ियाँ पकड़ते हैं; (३) चसका; (४) आदत; (५) झगड़ा।

ला-सानी—(अ०) (वि०) यकता, बेजोड़, फ़र्द, अनुपम, अद्वितीय।

ला-सुख़न—(औ०) बद-ज़बानी, गुस्ताख़ी, गाली। ला-सुख़न कहना, ला-सुख़न निकालना—बुरा कहना, बकना।

ला-हक़—(अ०) (वि०) (१) पहुँचने-वाला, पीछे से आनेवाला; (२) आश्रित, मिला हुआ।

ला-हल—(अ०) (वि०) जो हल न हो सके, जटिल, कठिन।

ला-हासिल—(अ०) (वि०) (१) फ़िज़ूल, व्यर्थ, जिससे कुछ लाभ न हो; (२) निकम्मा, बेकार; (३) निष्फल, बेफ़ायदा; (४) वह आराज़ी या ज़मीन जिससे कुछ आमदनी न हो।

लाहिक़—(अ०) (सं० पु०), रिश्तेदार, सम्बन्धी, आश्रित।

ला-हौल—(अ०) (स्त्री०) घृणा-सूचक वाक्य; (२) शैतान और भूत-प्रेत के भगाने का मंत्र; (३) बुरी बात पर असम्मति या घृणा सूचक शब्द। ला-हौल पढ़ना, लाहौल भेजना—(१) शैतान से बचाने की ईश्वर से प्रार्थना करना; (२) घृणा या नफ़रत प्रकट करना; (३) ख़याल न करना, परवा न करना। लाहौल वला क़ूव्वत—(अ०) (१) नफ़रत ज़ाहिर करने के मौक़े पर बोलते हैं; (२) ऐसा नहीं हो सकता।

लिक़ा—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) दीदार, मुलाक़ात, दर्शन; (२) चेहरा, सूरत।

लिज-लिजा—(हि०) (वि०) पिल-पिला, नरम, मुलायम, लस-दार।

लिजाम—(अ०) (सं० स्त्री०) बाग, रास।

लिपाई—(हि०) (सं० स्त्री०) कहगल, प्लास्तर। लिपा होना—भार होना। लिपे में आ जाना—(१) मुश्किल में पहुँच जाना; (२) दम में आ जाना (लिपी हुई जगह में फिसलन होती है)।

लिफ़ाफ़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) काग़ज़ का गिलाफ़; (२) सफ़ेद कपड़ा जो मुरदे के बदन पर लपेटा जाता है; (३) बनावट, दिखावा, ज़ाहिरी शान, ऊपरी टीप-टाप।

लिफ़ाफ़िया—(अ०) (वि०) कोरे दिखावे का, कमज़ोर और बोदा।

लिबास—(अ०) (सं० पु०) (१) पोशाक, पहनने के वस्त्र; (२) रूप, शक्ल, भेष।

लिबासी—(अ०) (वि०) (१) नक़ली, जाली, झूठा; (२) ऊपर से ढका हुआ।

लियाक़त—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) योग्यता, कार्य-क्षमता, (२) हुनर, ज्ञान; (३) जौहर, ख़ूबी, उम्दगी; (४) होशयारी, बुद्धिमत्ता; (५) सभ्यता, विवेक।

लिल्लाह—(अ०) (क्रि० वि०) ईश्वर के लिए, बराये ख़ुदा।

लिसान—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) जीभ, ज़बान; (२) बोली, भाषा। लिसान-उल्-अस्र—अपने समय का ख़ुश-बयान। लिसान-उल-ग़ैब—(१) आकाश-वाणी; (२) हाफ़िज़ शीराज़ी (प्रसिद्ध कवि) की उपाधि।

लिहाज़—(अ०) (सं० पु०) (१) ख़याल, ध्यान, तवज्जह; (२) लज्जा, शर्म, हया; (३) मुरव्वत, मुलाहज़ा, पासदारी, रिआ-यत; (४) परहेज़; (५) पक्षपात, तरफ़-दारी। लिहाज़ आना—मुरव्वत आ जाना। लिहाज़ उठा देना—बेशर्म हो

जाना, लिहाज़ छोड़ देना। लिहाज़ करना—अदब करना, पास करना। लिहाज़ तोड़ना—पर्दा क़ायम न रखना। लिहाज़ रखना—ख़याल रखना, परहेज़ करना, शर्म करना, ख़याल करना।

लिहाज़-वाला—(वि०) बा-मुरव्वत, हया-दार।

लिहाज़ा—(अ०) इस बात से, पस।

लिहाफ़—(अ०) (सं० पु०) बड़ी रज़ाई जिसमें बहुत रुई हो।

लीचड़—(हि०) (वि०) ना-दिहंद, क़र्ज़ लेकर मुश्किल से देनेवाला।

लुंग—(फ़ा०) (सं० पु०) धोती, लँगोटी।

लुंगाड़ा—(हि०) (सं० पु०) बेहया आदमी, आवारा।

लुंगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) तहमत, कमर पर लपेटने की छोटी धोती।

लुंजा—(फ़ा०) (वि०) बे हाथ-पाँव का, हाथ-पैर से लाचार।

लुआब—(अ०) (सं० पु०) (१) लस, चेप; (२) थूक, राल, लार।

लुआब-दार—(अ०) (वि०) लस-दार, चेप-दार, लस-लसा।

लुकटी (लुखटी)—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) अध-जली लकड़ी; (२) लड़ाई करा देनेवाली स्त्री, चुग़ल-ख़ोर।

लुकनत—(अ०) (सं० स्त्री०) हकलापन, रुकरुक कर बोलने की आदत।

लुक़मा—(अ०) (सं० पु०) कौर, निवाला, ग्रास।

लुक़मान—(अ०) (सं० पु०) (१) एक प्रसिद्ध विद्वान् का नाम; (२) बहुत बड़ा बुद्धिमान्। लुक़मान को हिकमत सिखाना—अक्लमंद को तदबीर बताना; बुद्धिमान् को शिक्षा देना। लुक़मान के पास दवा न होना—रोग का असाध्य होना।

लुक़न्दरा—(वि०) (पु०) आवारा फिरनेवाला, झूठ बोलनेवाला।

लुक्क़ा—(वि०) लुच्चा, शोहदा।

लुग़त—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) भाषा, बोली, ज़बान; (२) शब्द; (३) शब्द-कोश, डिकशनरी। लुग़त गढ़ना—अपनी ओर से शब्द बनाना। लुग़त छाँटना, लुग़त झाड़ना—अपनी योग्यता जताना, कठिन शब्दों का प्रयोग करना।

लुग़त-दाँ—(फ़ा०) (वि०) लुग़त जाननेवाला।

लुग़ात—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) भाषाएँ; (२) शब्द-कोश। 'लुग़त' का बहुवचन।

लुग्ज़—(अ०) (सं० पु०) पहेली, समस्या।

लुग़वी—(अ०) (वि०) (१) लुग़त से सम्बन्ध रखनेवाला; (२) असली, असली अर्थ। लुग़वी मानी—सामान्य अर्थ।

लूजूजत—(अ०) (सं० स्त्री०) लस, चेप, लुआब।

लुज्जा—(अ०) (सं० पु०) पानी की गहरी जगह, मंझधार।

लुतरा—(हि०) (वि०) इधर की उधर लगानेवाला, चुग़ल-ख़ोर, ओछा, किसी का भेद सुनकर औरों पर प्रकट करनेवाला।

लुत्फ़—(अ०) (सं० पु०) (१) बहार, मज़ा, आनन्द; (२) स्वाद; ज़ायक़ा; (३) दया, अनुग्रह, करम; (४) ख़ूबी, उत्तमता; (५) दिलचस्पी, रस।

लुपड़ी—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) लेप, पुलटिस; (२) सर की पगड़ी।

लुब—(अ०) (सं० पु०) सत्त, मग़ज़, ख़ुलासा।

लुबान—(अ०) (सं० पु०) देखो—'लोबान'।

लुबाब—(अ०) मग़ज़।

लुबूब—(अ०) (सं० पु०) (१) तत्त्व, सत्त, सार; (२) एक प्रकार का अवलेह।

लुब्बे-लुबाब—(अ०) (सं० पु०) ख़ुलासा, सार, तत्व।

लुम्बड़—(फ़ा०) (वि०) ज़रूरत से ज़्यादा लंबा; लंबा और मूर्ख।

लुर—(फ़ा०) (वि०) (१) बे-तमीज़, अशिष्ट, मूर्ख; (२) (स्त्री०) एक जाति का नाम जो चालाकी में मशहूर है।

लुर-पन, लुर-पना—(पु०) हिमाक़त, मूर्खता।

लूती—(अ०) (सं० पु०) (१) अस्वाभाविक मैथुन करनेवाला; (२) रिन्द, बेफ़िक्रा।

लू लू—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) हौवा, बच्चों को डराने के लिए एक कल्पित जीव का नाम; (२) मूर्ख; (३) सिड़ी, पागल।

लेक—(फ़ा०) 'लेकिन' का संक्षिप्त रूप।

लेकिन—(अ०) (अव्यय) परन्तु, पर।

लेज़म—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार की कमान जिसमें लोहे की ज़ंजीर और कटोरियाँ पड़ी रहती हैं और उससे कसरत (व्यायाम) करते हैं।

लैत-ओ-लाल—(अ०) (सं० पु०) टाल-मटूल; बहाना। लैत-ओ-लाल में डालना—बहाने करना।

लैमूं; लैमू—(फ़ा०) (सं० पु०) नीबू।

लैमूनी—(फ़ा०) (वि०) जिसमें नीबू डाला गया हो।

लैल—(अ०) (सं० पु०) रात।

लैला—(अ०) (स्त्री०) (१) क़ैस की माशूक़ा; (२) हसीन स्त्री, माशूक़ा। लैलारा ब चश्म मजनूं बायद दीद—माशूक़ को आशिक़ की नज़र से देखना चाहिए।

लोबान—(अ०) (सं० पु०) एक प्रकार का गोंद जो आग पर रखने से ख़ुश-बू देता है और दवा में काम आता है।

लोबिया—(फ़ा०) (सं० पु०) एक तरकारी की फली।

लौज़—(अ०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई, बरफ़ी।

लौज़ात—(अ०) (सं० स्त्री०) "लौज़" का बहुवचन।

लौज़ियात—(अ०) (सं० पु०) बादाम का हलवा।

लौस—(अ०) (सं० पु०) (१) मिलावट, मेल; (२) सम्पर्क; (३) दाग़, धब्बा, ऐब। लौसे-दुनिया—दुनिया की मुहब्बत।

लौह—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) लकड़ी का तख़्ता; (२) पुस्तक का मुख-पृष्ठ, टाइटिल-पेज।

लौह-मज़ार—(अ०) (सं० पु०) वह पत्थर जो क़ब्र के सरहाने मृत्यु की तारीख़ इत्यादि लिखकर लगाते हैं।

लौह-मश्क़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) वह तख़्ती जिस पर आरंभ में लिखने का अभ्यास करते हैं; (२) वह चीज़ जो बहुत ज़्यादा इस्तेमाल की जाय।

व

व-इल्ला—(अ०) (क्रि० वि०) नहीं तो, वरना।

वईद—(अ०) (सं० स्त्री०) डाँट-डपट, धमकी, झिड़की।

वक़अत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) इज़्ज़त, क़द्र, प्रतिष्ठा, साख; (२) महत्व, मूल्य; (३) शक्ति, बल, ताक़त; (४) ऊँचाई, उच्चता।

वक़फ़ियत—(अ०) (सं० स्त्री०) देखो—'वाक़फियत'।

वक़ार—(अ०) (सं० पु०) (१) महत्व, बड़प्पन; (२) विभूति, वैभव, ठाठ, शान-शौकत; (३) शालीनता, शिष्टता; (४) भार, बोझ।

वक़ाया—(अ०) (सं० पु०) घटनाएँ, समाचार, ख़बरें।

वक़ाया-निगार—(अ०) (वि०) संवाद-दाता, नामा-निगार।

वक़ार—(अ०) (सं० पु०) (१) वैभव, शान-शौकत, विभूति; (२) शालीनता, उत्तम शील-स्वभाव; (३) स्थिरता, धैर्य।

वकालत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) क़ायम-मुक़ामी, प्रतिनिधित्व, दूसरे की तरफ़ से पक्ष-समर्थन करना; (२) वकील का पेशा या काम; (३) दूत-कर्म, किसी राज की ओर से दूसरे राज्य में प्रतिनिधित्व करना।

वकालतन्—(अ०) (क्रि० वि०) वकील के द्वारा, वकील की मारफ़त।

वकालत-नामा—(अ०) (सं० पु०) वह काग़ज़ जिसके द्वारा वकील को मुक़र्रर किया जाता है, मुख़्तार-नामा।

वक़ाहत—(अ०) (सं० स्त्री०) बे-हयाई, निर्लज्जता।

वक़ीअ—(अ०) (वि०) उच्च, ऊँचा, प्रतिष्ठित, इज़्ज़तवाला।

वकील—(अ०) (सं० पु०) (१) मुख़्तार, जो किसी दूसरे की तरफ़ से काम करे; (२) अदालत में मुक़दमे की पैरवी करने-वाला; (३) प्रतिनिधि, दूत, एलची।

वक़ूअ—(अ०) (सं० पु०) घटना, ज़ाहिर होना। वक़ूअ में आना—ज़ाहिर होना।

वक़ूआ—(अ०) (सं० पु०) वारदात, घटना, फ़िसाद।

वक़ूफ़—(अ०) (सं० पु०) (१) तजुर्बा, अनुभव, अभ्यास, मश्क़; (२) खड़ा होना, ठहरना; (३) सलीक़ा, शऊर, अक़्ल।

वक़्त—(अ०) (सं० पु०) (१) समय; (२) अवसर, मौक़ा; (३) मौसम, फ़सल, ऋतु; (४) अवकाश, मोहलत, फ़ुरसत; (५) उम्र, ज़िन्दगी; (६) ज़माना, अर्सा; (७) बार, दफ़ा; (८) दशा, हालत; (९) मुद्दत मियाद; (१०) मौत, (११) मुसीबत, दिक़्क़त, बुरा समय, विपत्ति।

वक़्तन्-फ़वक़्तन्—(अ०) (क्रि० वि०) अपने अपने मौक़े पर, कभी कभी, समय समय पर, बीच बीच में।

वक़्त-बेवक़्त—हरवक़्त, हमेशा, बराबर।

वक़्ती—(अ०) (वि०) वर्तमान काल की।

वक़्फ़—(अ०) (सं० पु०) (१) ख़ुदा के नाम पर छोड़ी हुई चीज़, जिसका कोई ख़ास मालिक न हो; (२) लोक हित की चीज़ जिसे सब व्यवहार में ला सकें; (३) क़ुरान-पाठ में कहीं कम कहीं ज़्यादा ठहरना।

वक़्फ़-नामा—(अ०) (सं० पु०) वह काग़ज़ जिसमें जायदाद के वक़्फ़ करने का इक़रार होता है, दान-पत्र।

वक़्फ़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) क़ुरान-शरीफ़ के पढ़ने में कहीं कम कहीं ज़्यादा ठहरना; (२) ढील, मोहलत।

वक़्फ़ी—(अ०) (वि०) धर्मार्थ दिया हुआ।

वक़्र—(अ०) (सं० पु०) बड़ाई, इज़्ज़त, आबरू, मान-प्रतिष्ठा।

वगर—(फ़ा०) (अव्यय) और अगर, और जो।

वगर-ना—(फ़ा०) (अव्यय) नहीं तो।

वग़ा—(अ०) (सं० स्त्री०) लड़ाई, युद्ध, जंग।

वग़ैरह—(अ०) (अव्यय) इत्यादि।

वज़न—(अ०) (सं० पु०) (१) भार, बोझ; (२) तौल, मिक़दार; (३) इज़्ज़त, मान, वक़्त; (४) जाँच।

वज़न-कश—(वि०) तौला, तोलनेवाला, वज़न करनेवाला।

वज़न-दार—(वि०) (१) भारी, बोझल; (२) इज़्ज़त-दार।

वज़नी—(अ०) (वि०) (१) भारी, बोझल; (२) बा-वक़्त।

वजब—(अ०) (सं० पु०) बालिश्त।

वजह—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) सबब, कारण, हेतु; (२) चेहरा, सूरत, शक्ल; (३) तर्ज़, ढंग, दस्तूर; (४) जानिब, तरफ़, ओर, रुख़; (५) धन, रुपया, माल।

वजह-तस्मिया—(अ०) (सं० स्त्री०) नाम रखने का सबब।

वजह-माश—वह चीज़ जिसके द्वारा रोटी चलती हो, गुज़ारा करने का ज़रिया।

वजह-तहरीक—वह कारण जिससे कोई मनुष्य किसी की ओर प्रवृत्त हो।

वजह-सबूत--गवाही, साक्षी, प्रमाण।

वजा—(अ०) (सं० पु०) पीड़ा, टीस, दर्द।

वज़ा—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) बनावट, रचना; (२) सज-धज, फ़ैशन; (३) दस्तूर, रीति; (४) तर्ज़, रविश, रंग-ढंग; (५) मुजरा, मिनहा, वसूल; (६) जनना, बच्चा देना। वज़ा-हमल—बच्चा पैदा करना। वज़ा करना—मुजरा करना, काटना, निकालना। वज़ा नस्तालीक़ होना—अंदाज या व्यवहार में शिष्टता होना।

वज़ा-दार—(अ०) (वि०) (१) सुन्दर, .खुब-सूरत; (२) सिद्धान्त पालन करने-वाला। पाबन्द-वज़ा—अपनी चाल पर क़ायम रहनेवाला।

वज़ा-दारी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) तरह-दारी; (२) वसूल या सिद्धान्त पर क़ायम रहना, जिस बात को एक बार ग्रहण करें उसे आजन्म निभाना।

वज़ायफ़—(अ०) (सं० पु०) 'वज़ीफ़ा' का बहुवचन।

वज़ारत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) वज़ीर या अमात्य का पद, मंत्रित्व; (२) वज़ीर का दफ़्तर।

वजाहत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) .खूब-सूरती, सुन्दरता; (२) रोब, दिखावा; (३) इज़्ज़त, प्रतिष्ठा।

वज़ाहत—(अ०) (सं० स्त्री०) तफ़सील के साथ बयान करना, ब्योरेवार वर्णन करना।

वज़ीअ—(अ०) (वि०) कमीना, नीच; तुच्छ।

वज़ीफ़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) वह चीज़ जो हर रोज़ के लिए मुक़र्रर हो; (२) रोज़ीना, वेतन, तनख्वाह, पेन्शन; (३) किसी मंत्र का जाप; (४) छात्र-वृत्ति, जीवन-निर्वाह, जागीर; (५) किसी बात की रट। वज़ीफ़ा भानना—वज़ीफ़ा पढ़ना।

वज़ीर—(अ०) (सं० पु०) (१) मंत्री, अमात्य, दीवान; (२) शतरंज का एक मोहरा।

वज़ीरी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) वज़ीर का पद या काम; (२) (फ़ा० पु०) एक प्रकार का अंजीर।

वज़ीरे-आज़म—(अ०) (सं० पु०) प्रधान अमात्य, मदारुल-मुहाम।

वजीह—(अ०) (वि०) सुन्दर।

वज़ू—(अ०) (सं० पु०) नमाज़ पढ़ने के पहले हाथ, पैर, मुँह आदि का धोना। वज़ू टूटना—नीयत में फ़र्क़ आना। वज़ू ढीले होना हिम्मत हारना।

वजूद—(अ०) (सं० पु०) (१) अस्तित्व, जिस्म, बदन, शरीर; (२) प्रकट होना, ज़ाहिर होना; (३) सफलता, सफल-मनोरथ होना; (४) ठहराव, क़याम। वजूद पाना—पैदा होना, हस्ती में आना। वजूद में लाना—पैदा करना।

वजूब—(अ०) (सं० पु०) वाजिब होना, लाज़िम होना, आवश्यक होना।

वजूह—(अ०) (सं० पु०) सबब, कारण, युक्ति। 'वजह' का बहुवचन।

वजूह—(अ०) (वि०) ज़ाहिर, प्रकट ।

वजूहात—(अ०) (सं० स्त्री०) कारण, सबब, दलील, युक्ति । 'वजह' का बहुवचन ।

वज्द—(अ०) (सं० पु०) (१) तन्मय हो जाना, तल्लीनता, आपे को भूल जाना, बे.ख़ुद हो जाना; बे-.ख़ुदी, आत्म-विस्मृति; (२) बे-.ख़ुद होकर झूमने लगना ।

वतन—(अ०) (सं० पु०) जन्म-भूमि, मातृ-भूमि, स्वदेश ।

वतनी—(फ़ा०) (वि०) हम-वतन, अपने ही देश का रहनेवाला ।

वतर—(अ०) (सं० पु०) (१) कमान का चिल्ला; (२) बाजे के तार ।

वती—(अ०) (सं० स्त्री०) सम्भोग, मैथुन ।

वतीरा—(अ०) (सं० पु०) आदत, दस्तूर, रंग-ढंग, तौर-तरीक़ा ।

वदीयत—(अ०) (सं० स्त्री०) अमानत, धरोहर ।

वन्द—(फ़ा०) (प्रत्यय) शब्द के अन्त में 'स्वामी' का बोध कराता है ।

वफ़ा—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) निबाहना; निबाह करना; (२) मुरव्वत, स्नेह, प्रेम; (३) हित-चिन्तन, .खैर ख़्वाही ।

वफ़ात—(अ०) (सं० स्त्री०) मौत, मृत्यु ।

वफ़ादार—(अ०) (वि०) (१) शुभ-चिन्तक, ख़ैर-ख़्वाह; (२) नमक-हलाल, विश्वसनीय, मौतबिर; (३) कर्तव्य-शील ।

वफ़ादारी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) कर्तव्य-परायणता; (२) विश्वास-पात्रता, नमक-हलाली ।

वफ़ा-परस्त—(अ०) (वि०) वफ़ादार, सच्चा ।

वफ़ा-परस्ती—(अ०) (सं० स्त्री०) सचाई, प्रेम ।

वफ़ूर—(अ०) (वि०) बहुतायत, अधिकता ।

वफ़्क़—(अ०) (वि०) अनुसार, मुताबिक़ ।

वफ़्द—(अ०) (सं० पु०) एलची, किसी का सन्देश किसी के पास ले जाना ।

वबा—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) हैज़ा; (२) बहुत फैलनेवाला रोग; (३) महामारी ।

वबाल—(अ०) (सं० पु०) (१) बोझ, भार; (२) सख़्ती, आपत्ति, कठिनाई, संकट; (३) अज़ाब, किये की सज़ा, कर्म-फल ।

वर—(फ़ा०) (प्रत्यय) शब्दों के अन्त में 'वाला' का अर्थ देता है ।
(वि०) श्रेष्ठ, बढ़कर ।

वरअ—(अ०) (सं० स्त्री०) सदाचार, नेक-चलनी ।

वरक़—(अ०) (सं० पु०) (१) पुस्तकों का एक पत्र, दो पृष्ठ या दो सफ़े; (२) काग़ज़ का टुकड़ा; (३) फूल की पंखड़ी; (४) गंजफ़े का पत्ता; (५) बारीक और चौड़ी तराशी हुई चीज़, काश; (६) सोने, चाँदी के पतले पत्तर ।

वरक़-उल्-ख़याल—(अ०) (सं० पु०) भंग ।

वरक़-साज़—(अ०) (१) सोने चाँदी के वरक़ बनानेवाला; (२) ज़र-कोब ।

वरक़ा—(अ०) (सं० पु०) काग़ज़ का टुकड़ा, पृष्ठ, पत्र ।

वरक़ी—(वि०) (१) वरक़ से सम्बन्ध रखनेवाली; (२) परत-दार ।

वरक़े-कायनात—(फ़ा०) (सं० पु०) दुनिया, संसार, विश्व, आलम ।

वरग़लाना—(क्रि०) (१) बहकाना, ललचाना, भुलावे में डालना; (२) उकसाना, भड़काना ।

वरग़लालना—देखो 'वरग़लाना' ।

वरज़िश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) कसरत, व्यायाम; (२) अभ्यास, मश्क़ ।

वरज़िशी—(फ़ा०) (वि०) व्यायाम-सम्बन्धी; (२) कसरती, व्यायाम किया हुआ ।

वरता—(अ०) (सं० पु०) भँवर, पानी का चक्कर।

वरद—(अ०) (सं० पु०) गुलाब का फूल।

वरदी—(अ०) (वि०) गुलाबी, गुलाब के रंग का।

वरना—(फ़ा०) (क्रि० वि०) नहीं तो, नहीं तो फिर।

वरम—(अ०) (सं० पु०) सूजन, सोज़िश, शोथ।

वरला—(हि०) इधर का।

वरसा—(अ०) (सं० पु०) तरका, उत्तराधिकार द्वारा प्राप्त धन।

वरसा-दार—(अ०) (वि०) वारिस, उत्तराधिकारी।

वरा, वराय—(अ०) (१) पीछे, पीछे की तरफ़। (२) सिवा, अलावा, अतिरिक्त, फ़ालतू।

वरासत—(अ०) (सं० स्त्री०) देखो 'विरासत'।

वरासतन्—(अ०) (क्रि० वि०) देखो 'विरासतन्'।

वरूद—देखो 'वुरूद'।

वरे—(हि०) इस तरफ़, इधर, पास।

वर्क़—(अ०) (सं० पु०) देखो 'वरक़'।

वर्ज़िश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) देखो 'वरज़िश'।

वर्द—(अ०) (सं० पु०) गुलाब का फूल।

वर्दी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) ख़ास पहनावा या पोशाक; (२) सरकारी महकमों के अफ़सर और नौकरों का नियत पहनावा, जिससे वह पहचाने जा सकते हैं; (२) नौबत, निश्चित समय पर बजनेवाले बाजे।

वर्ना—(क्रि० वि०) देखो 'वरना'।

वलवला—(अ०) (सं० पु०) जोश-ख़रोश, आवेश, उमंग। वलवला उठना—उमंग उठना, जोश पैदा होना।

वलादत—(अ०) (सं० स्त्री०) जनना, प्रसव करना।

वलिया—(अ०) (सं० स्त्री०) संरक्षिका, स्त्री निगहबान।

वली—(अ०) (सं० पु०) (१) निगहबान, संरक्षक, अभिभावक, गार्डियन; (२) हाकिम, अफ़सर; (३) साधु, फ़क़ीर, योगी। कहा० (१) वली के घर शैतान—लायक़ की औलाद नालायक़। (२) वली को वली ही पहचानता है—जिस प्रकार का मनुष्य होता है, वह उसी प्रकार के मनुष्य को पहचान सकता है।

वली-अल्लाह—(अ०) (सं० पु०) पहुँचा हुआ साधु, पूर्ण योगी, आबिद, ज़ाहिद।

वली-अहद—(अ०) (सं० पु०) (१) युवराज, जिसे जीवित राजा की मृत्यु पर राज्याधिकार मिले; (२) हाकिमे-वक़्त।

वली-खंगड़—(हि०) (वि०) (१) हिमायत करनेवाला; (२) बना हुआ फ़क़ीर।

वली-नेमत—(अ०) (सं० पु०) पालन करनेवाला, स्वामी, पालक।

वलीमा—(अ०) (सं० पु०) विवाह की ज्यौनार।

वले—(फ़ा०) (अव्यय) लेकिन, मगर, पर।

वले-क—(अव्यय) 'व-लेकिन'।

व-लेकिन—(अ०) (अव्यय) लेकिन, परन्तु, पर।

वल्द—(अ०) (सं० पु०) पुत्र, आत्मज, बेटा।

वल्द-उल्-ज़िना—(अ०) (वि०) हरामी, व्यभिचार में पैदा।

वल्द-उल्-हराम—(अ०) (वि०) हरामी, फ़ाहशा स्त्री का बच्चा।

वल्द-उल्-हलाल—(अ०) (वि०) औरस, विवाहिता पत्नी से उत्पन्न।

वल्दियत—(अ०) (सं० स्त्री०) बाप का नाम; ख़ानदान, वंश।

वल्लाह—(अ०) (अव्यय) ईश्वर की शपथ, यथार्थ में, फ़िल-हक़ीक़त।

वल्लाह-आलम—(अ०) (१) .खुदा जाने, ईश्वर जाने; (२) ईश्वर ही जानता है; न जाने, हमें नहीं मालूम।

वल्लाह-बिल्लाह—जब शपथ को और ज़ोर देना होता है तो यह वाक्य बोला जाता है।

वश—(फ़ा०) (प्रत्यय) गुण-सूचक अर्थ पैदा करने के लिए शब्द के अन्त में लगाया जाता है।

वसअ, वसअत—(१) विस्तार, फैलाव, चौड़ापन; (२) क्षेत्र-फल, लंबाई-चौड़ाई; (३) शक्ति, सामर्थ्य, ताक़त, मजाल; (४) गुंजायश। **वसअते-इख़्लाक़**—(स्त्री०) हर एक से ख़ातिर-दारी के साथ पेश आना।

वसत—(अ०) (सं० पु०) मध्य-भाग, ठीक बीचो-बीच।

वसमा—(अ०) (सं० पु०) नील के पत्ते जिनसे ख़िज़ाब किया जाता है। **वसमा-लगाना**—ख़िज़ाब करना।

वसवसा, वसवास—(अ०) (सं० पु०) (१) आशंका, बुरा ख़याल जो दिल में आवे; (२) वहम, ख़ौफ, डर; (३) सन्देह, शक; (४) आना-कानी, आगा-पीछा। **वसवास लाना**—वहम करना, शक करना।

वसवासी—(अ०) (वि०) वहमी, शक्की, ढिल मिल यक़ीन।

वसाइक़—(अ०) (सं० पु०) 'वसीक़ा' का बहुवचन।

वसातत—(अ०) (सं० स्त्री०) ज़रिया, वसीला, साधन।

वसादा—(अ०) (सं० पु०) तकिया।

वसाफ़—(अ०) (वि०) बहुत तारीफ़ करनेवाला।

वसायल—(अ०) (सं० पु०) वसीले, ज़रिये, वास्ते। 'वसीला' का बहुवचन।

वसाया—(अ०) (सं० पु०) 'वसीयत' का बहुवचन।

वसी—(अ०) (सं० पु०) वसीयत पर अमल करनेवाला, सरबराहकार।

वसीअ—(अ०) (वि०) लम्बा-चौड़ा, कुशादा, विस्तृत।

वसीअत—(अ०) (सं० स्त्री०) देखो 'वसीयत'।

वसीक़—(अ०) (वि०) दृढ़, पक्का।

वसीक़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) प्रतिज्ञा, सनद, मुआहदा; (२) इक़रारनामा, अहद-नामा, दस्तावेज़, तमस्सुक; (३) सरकारी काग़ज़ या प्रोमिसरी नोट जिन पर सूद मिला करे; (४) वृत्ति।

वसीक़ा-दार—(अ०) (सं० पु०) वसीक़ा पानेवाला।

वसीम—(अ०) (वि०) .खूबसूरत।

वसीयत—(अ०) (सं० स्त्री०) मरने के बाद संपत्ति का प्रबन्ध; मनुष्य की इच्छाओं का प्रकाशन, जो मरने के बाद अपनी सम्पत्ति के विभाजन या प्रबन्ध के बारे में हों।

वसीयत-नामा—(अ०) (सं० पु०) वह लिखा हुआ काग़ज़ जिसमें मनुष्य अपने मरने के बाद की व्यवस्था लिखता है और अपनी सम्पत्ति के बारे में अपने इरादे ज़ाहिर करता है कि उसका कैसे उपभोग और प्रबंध किया जाय।

वसीला—(अ०) (सं० पु०) (१) आश्रय, सहारा, सहायता; (२) सबब, ज़रिया; (३) सम्बन्ध, हिमायत।

वसूक़—(अ०) (सं० पु०) (१) मज़बूती, दृढ़ता; (२) भरोसा, एतबार, विश्वास; (३) अध्यवसाय।

वसूल—(अ०) (सं० पु०) हासिल, आमद,

प्राप्ति, पहुँचना; (२) (वि०) पहुँचा हुआ, प्राप्त, जो मिल चुका हो, जमा।

वसूल-बाक़ी—(अ०) (सं० पु०) जो वसूल हो चुका हो और जो वसूल होना बाक़ी हो।

वसूली—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) प्राप्ति, वसूल हो जाना; (२) वह जो वसूल होने को हो, याफ़्तनी, क़ाबिल-वसूल।

वस्त—(अ०) (सं० पु०) मध्य, बीचों-बीच। (देखो 'वसत')।

वस्ती—(अ०) (वि०) बीच का, मध्य का।

वस्न—(अ०) (सं० पु०) पत्थर या किसी और चीज़ की मूर्ति।

वस्फ़—(अ०) (सं० पु०) (१) गुण, ख़ूबी, ख़ासियत; (२) पहचान, विशेषता, स्वभाव।

वस्फ़ी—(अ०) (वि०) जिसमें गुण बतलाये गये हों, विवरणात्मक।

वस्मा—(अ०) (सं० पु०) (१) नील के पत्ते जिनसे ख़िज़ाब करते हैं; (२) उबटना; (३) एक प्रकार का कपड़ा जिस पर सोने-चाँदी के वर्क़ों से छपाई होती है।

वस्ल—(अ०) (सं० पु०) (१) मिलन, मुलाक़ात, मिलाप; (२) संयोग; (३) चस्पाँ होना, जोड़ से जोड़ मिलना; (४) मृत्यु।

वस्लख़ा—(अ०) (सं० पु०) छोटा टुकड़ा (कपड़े या काग़ज़ का)।

वस्लत—(सं० स्त्री०) देखो 'वस्ल'।

वस्ली—(अ०) (सं० स्त्री०) मश्क़ करने का मोटा काग़ज़; मोटा काग़ज़।

वस्साफ़—(अ०) (वि०) प्रशंसक, गुण बतलानेवाला।

वह्दत—(अ०) (सं० स्त्री०) एकत्व, यकताई, एक होने का भाव।

वह्दते-वजूद—(स्त्री०) हर एक प्राणी को ईश्वर का रूप समझना।

वह्दानियत—(अ०) (सं० स्त्री०) एक होना, ख़ुदा की यकताई, एक एव ब्रह्म का सिद्धान्त; यकता होना।

वह्दानी—(फ़ा०) (वि०) एक से संबंधित।

वहब—(अ०) (सं० पु०) बख़्शिश, उदारता, दान।

वहबी—(अ०) (वि०) बख़्शा हुआ, दिया हुआ, ईश्वर-प्रदत्त।

वहम—(अ०) (सं० पु०) (१) भ्रम, गुमान, मिथ्या धारणा; (२) व्यर्थ की शंका, शक, सन्देह।

वहम-नाक—(फ़ा०) (वि०) (१) वहम करनेवाला; (२) ख़ौफ़नाक, भयानक।

वहमी—(अ०) (वि०) वहम करनेवाला; ख़याली, क़यासी।

वहला—(अ०) (सं० पु०) हमला, बारी, दफ़ा, नौबत।

वहूश—(अ०) (सं० पु०) जंगली चौपाये। (वहशी का बहुवचन)।

वहशत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) जंगली-पन, हैवानियत; (२) जहालत, जड़ता; (३) जनून, सनक, पागलपन; (४) उदासी, वीरानगी, उजाड़; (५) नफ़रत, घृणा; (६) घबराहट, परेशानी; (७) डर, भय। वहशत उछलना—ख़फ़क़ान होना, सनक होना। वहशत की लेना—वहशत की बातें करना। वहशत बरसना—उदासी छाना, सिड़ीपन प्रकट होना। वहशत होना—घबराना, परेशान होना।

वहशत-अंगेज़—(अ०) (वि०) भयानक, डरावना, विकराल, भीषण।

वहशत-ख़ेज़—(फ़ा०) (वि०) वहशत बढ़ानेवाला, वहशत पैदा करनेवाला।

वहशत-ज़दा—(फ़ा०) (वि०) (१) बहुत परेशान, बहुत घबराया हुआ, उदास; (२) ख़ब्ती, पागल।

वहशत-नाक—(अ०) (वि०) घबरा देने-वाला, भीषण, भयानक।

वहशियाना—(अ०) (क्रि० वि०) वहशियों की तरह।

वहशी—(अ०) (वि०) (१) जंगली, असभ्य; (२) भड़कनेवाला, घबरानेवाला।

वहशी-तबीयत, वहशी-मिज़ाज—(फ़ा०) (वि०) जो एकान्त पसंद करे और आदमियों से भागता हो।

वहहाज़—(अ०) (वि०) बहुत चमकता हुआ।

वहहाब—(अ०) (वि०) बहुत बख़्शनेवाला। (सं० पु०) ईश्वर।

वहहाबी—(अ०) (सं० पु०) (१) अब्दुल वहाब नजदी का चलाया हुआ सम्प्रदाय; (२) वहाब का अनुयायी।

वही—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) ईश्वर का संदेश, पैग़ाम-इलाही जो उसके किसी पैग़म्बर या दूत पर उतरता था।

वहीद—(अ०) (वि०) अकेला, यकता, अद्वितीय, अनुपम, बेजोड़।

वहूश—(अ०) (सं० पु०) वहशी का 'बहुवचन'।

वाँ—वहाँ का संक्षिप्त रूप।

वा—(फ़ा०) (वि०) (१) कुशादा, फैला हुआ, खुला हुआ; 'वाए' का संक्षिप्त रूप वा-अस्सलाम—और सलाम पहुँचे। (पत्र के अंत में लिखते हैं)। वा करना—खोलना।

वाइज़—(अ०) (सं० पु०) (१) धर्मोपदेशक (२) भली बातें बतलाने वाला, शिक्षा या नसीहत देनेवाला।

वाइद—(अ०) (वि०) वादा करनेवाला, वचन देनेवाला।

वाक़ई—(अ०) (वि०) सत्य; सच, वास्तविक। (अव्यय) सच-मुच, यथार्थ में, वास्तव में।

वाक़फ़ियत—(अ०) (सं० स्त्री०) जान-पहचान, परिचय; ज्ञान।

वाक़या—(अ०) (सं० पु०) (१) घटना, होनेवाला; (२) वृत्तान्त, हाल, समाचार।

वाक़यात—(अ०) (सं० पु०) घटनाएँ, हाद से, वृत्तान्त। (वाक़या का बहुवचन)।

वाक़या-नवीस—(अ०) (सं० पु०) संवाददाता, नामा-निगार, ख़बर-लिखनेवाला।

वाक़ा—(अ०) (वि०) (१) होनेवाला; (२) स्थित, संयोग से हुआ।

वाक़िफ़—(अ०) (वि०) परिचित, आगाह, जाननेवाला, ज्ञाता।

वाक़िफ़-कारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) जान-पहचान, शनासाई, परिचय; (२) अनुभव, तजुर्बा, ज्ञान; (३) जाँच, परख।

वाक़फ़ियत—(फ़ा०) (स्त्री०) (१) परिचय, जान-पहचान, (२) ज्ञान, इल्म, ख़बर; (३) अभ्यास, महारत; (४) अनुभव, तजुर्बा।

वा-गुज़ार—(फ़ा०) (वि०) छोड़ देना, रिहा करना।

वा-गुज़ाश्त—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) छोड़ना, रिहा करना, (२) मुक्ति, छोड़ने की क्रिया।

वाज़—(अ०) (सं० पु०) (१) उपदेश, नसीहत, शिक्षा, सीख; (२) कथा, धार्मिक उपदेश; (३) मौखिक शिक्षा, ज़बानी की जाय वह नसीहत।

वाज़ा—(अ०) (वि०) (१) प्रकट, ज़ाहिर; (२) साफ़ लिखना, स्पष्ट; (३) ब्योरेवार, विस्तृत।

वाज़िअ—(अ०) (वि०) मूजिद, निर्माता, रचयिता, बनानेवाला। वाज़िअ-क़ानून क़ानून बनानेवाला, स्मृति-कार।

वाजिद—(अ०) (वि०) (१) ईश्वर का नाम; (२) ग़नी; (३) बात निकालनेवाला; (४) वजूद या अस्तित्व देनेवाला; (५) पानेवाला।

वाजिब—(अ०) (वि०) (१) उचित, ठीक, मुनासिब; (२) आवश्यक, ज़रूर, लाज़िम;

(३) योग्य, अधिकारी, पात्र। (सं० पु०) (१) ईश्वर, जो अपने अस्तित्व के लिए किसी और पर निर्भर न हो, स्वयं-भू; (२) तनख्वाह, वेतन।

वाजिब-उल्-अर्ज़—(अ०) (वि०) निवेदन करने के योग्य, कथनीय। (सं० पु०) सरकारी बंदोबस्त के पीछे जो शर्तें किसी गाँव के ज़मींदार और काश्तकारों के बीच में तय होती हैं या पहले से चली आती हैं, उनका लेख; दस्तूर-देही का काग़ज़।

वाजिब-उल्-अदा—(अ०) (वि०) जो देना ज़रूरी हो, जिसका चुकाना आवश्यक हो।

वाजिब-उल्-इज़हार—(अ०) (वि०) जिसका ज़ाहिर करना ज़रूरी हो।

वाजिब-उल्-क़त्ल—(अ०) (वि०) क़त्ल के लायक़।

वाजि-उल्-ज़आन—(अ०) (वि०) जिसकी तामील ज़रूरी हो, जिसका पालन आवश्यक हो।

वाजिब-उल्-तलब—(अ०) (वि०) माँगने के लायक़, वसूल करने के योग्य।

वाजिब-उल्-तसलीम—(अ०) (वि०) मानने योग्य, स्वीकार करने योग्य।

वाजिब-उल्-ताज़ीम—(अ०) (वि० इज़्ज़त करने के लायक़, आदर-योग्य।

वाजिब-उल्-ताज़ीर—(अ०) (वि०) दण्डनीय, सज़ा के क़ाबिल।

वाजिब-उल्-तामील—(अ०) (वि०) अमल में लाने के योग्य।

वाजिब-उल्-रहम—(अ०) (वि०) दयनीय, तरस खाने के लायक़।

वाजिब-उल्-रिआयत—(अ०) (वि०) माफ़ी या क्षमा के योग्य।

वाजिब-उल्-वजूद—(अ०) (वि०) स्वयं-भू, आत्म निर्भर।

वाजिब-उल्-वसूल—(अ०) (वि०) याफ़्तनी, वसूल करने के योग्य।

वाजिबात—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) कर्तव्य, फ़रायज़, ज़रूरीयात, आवश्यक कार्य; (२) लवाज़मात, ज़रूरी चीज़ें, आवश्यक वस्तुएँ; (३) चढ़ी हुई तनख्वाहें, जो वसूल होने के योग्य हों। 'वाजिब' का बहुवचन।

वाजिबी—(अ०) (वि०) (१) उचित, ठीक, मुनासिब, दुरुस्त, माक़ूल, बजा; (२) योग्य; (३) थोड़ी, किसी क़दर, अल्प मात्रा में। (सं० पु०) तनख़्वाह, वेतन। **वाजिबी-सा**—थोड़ा-सा, ज़रा-सा। **वाजिबी-वाजिबी**—योंही-सा, थोड़ा सा।

वाज़िह—देखो 'वाज़ा'।

वाड़ा—(हि०) (सं० पु०) टोला, कूचा, वह स्थान जहाँ एक प्रकार के लोग रहते हों।

वादा—(अ०) (सं० पु०) (१) वचन, प्रतिज्ञा, क़ौल, इक़रार; (२) मरने का वक्त, मौत, मौत का दिन। **वादा आ पहुँचना**—वक्त आ पहुँचना, मौत का वक्त पास आना। **वादा ईफ़ा करना**—वादा पूरा करना। **वादा पर जीना**—वादा पूरा होने की उम्मेद पर जीना। **वादा टालना**—बहाना करना। **वादा बराबर आना**—जीवन काल पूरा होना।

वादा ख़िलाफ़, वादा-शिकन—(वि०) वादा पूरा न करनेवाला।

वादा-वफ़ा—(वि०) क़ौल का सच्चा, वादा पूरा करनेवाला।

वादी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) घाटी, पहाड़ के पास की नीची भूमि; (२) जंगल, वन।

वादी-नवर्द—(फ़ा०) (वि०) वहशी, दीवाना।

वापस—(फ़ा०) (क्रि० वि०) लौटाया हुआ; लौटा हुआ।

वापसी—(फ़ा०) (वि०) लौटा हुआ; लौटने वा वापस होनेवाला। (सं० स्त्री०) (१) लौटने की क्रिया; (२) गिरी हुई चीज़; (३) लौटनेवाली।

वापसीं, वापसीन—(फ़ा०) (वि०) अन्तिम, आख़िरी । **दमे-वापसीन**—अंतिम श्वास, मरने के पहले का साँस ।

वाफ़िर—(अ०) (वि०) बहुत अधिक ।

वाफ़ी—(अ०) (वि०) तमाम, पूरा, ख़ातिर-ख़्वाह, यथेष्ट, यथेच्छ ।

वाबस्तगान—(फ़ा०) (सं० पु०) वह लोग जो किसी से विशेष सम्बन्ध रखते हैं ।

वाबस्तगी—(फ़ा०) (स्त्री०) ताल्लुक़, सरोकार, सम्बन्ध ।

वाबिस्ता—(फ़ा०) (वि०) संबद्ध, बंधा हुआ, लगा हुआ । (सं० पु०) सम्बन्धी, रिश्तेदार ।

वाम—(फ़ा०) (सं० पु०) उधार, क़र्ज़, ऋण ।

वा-मांदगान—(फ़ा०) (सं० पु०) पिछड़े हुए ।

वा-मांदगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) थकान, शिथिलता; (२) आजिज़ी, दीनता ।

वा-मांदा—(फ़ा०) (वि०) (१) बाक़ी रहा हुआ, आजिज़, पिछड़ा हुआ; (२) जूठा, उच्छिष्ट ।

वामिक़—(अ०) (सं० पु०) (१) मित्र, दोस्त; (२) चाहनेवाला, प्रेमी ।

वाय—(फ़ा०) (अव्यय) (१) अफ़सोस, दुःख, चिन्ता, कष्ट । (२) हाय रे ।

वार—(फ़ा०) (वि०) (१) समान, तुल्य; (सम्बन्ध या निसबत सूचक); (सं० पु०) (१) चोट (जैसे तलवार की); हमला, चोट; (२) बारी, दावँ; (३) मौक़ा, घात, .फ़ुरसत । **वार पार**—इधर से उधर तक, आर-पार । **वार ख़ाली जाना**—ज़रब न पड़ना, चोट न पड़ना । **वार ख़ाली देना**—चोट बचाना । **वार मिलना**—मौक़ा मिलना, .फ़ुरसत मिलना ।

वारदात—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) दुर्घटना, हादसा; (२) मार-पीट, दंगा, हंगामा ।

वारफ़्ता—(फ़ा०) (वि०) (१) आपे से बाहर, बे.ख़ुद, संज्ञा-हीन; (२) आशिक़ ।

वारफ़्तगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बे-.ख़ुदी, आपे से बाहर होना, तल्लीनता ।

वारस्तगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) आज़ाद होना, स्वतन्त्र होना, बे-परवाई ।

वारस्ता—(फ़ा०) (वि०) आज़ाद, बे-परवा, स्वेच्छाचारी, स्वाधीन । **वारस्ता-तबा, वारस्ता मिज़ाज**—बे-परवा, स्वतंत्र ।

वारा—(हि०) (सं० पु०) (१) बचत, किफ़ायत; (२) फ़ायदा, नफ़ा । **वारा-न्यारा**—(१) फ़ैसला, समझौता; (२) छुटकारा; (३) ख़ात्मा, समाप्त होना, अन्त । **वारे-न्यारे**—गहरे, बहुत लाभ, बहुत नफ़ा ।

वारिद—(अ०) (वि०) आनेवाला, पहुँचने वाला ।

वारिद-सादिर—(अ०) (सं० पु०) अतिथि, यात्री ।

वारिदात—(अ०) (सं० स्त्री०) घटना, हाल, हालत, दंगा । देखो 'वारदात' ।

वारिस—(अ०) (सं० पु०) (१) उत्तराधिकारी, मृत्यु के पीछे का हक़दार; (२) (औ०) पति, खाविन्द; (३) मददगार, सहायक ।

वारिसी—(सं० स्त्री०) देखो 'विरासत' ।

वाला—(फ़ा०) (वि०) (१) उच्च, ऊँचा; (२) श्रेष्ठ, महान् ।

वाला-क़द्र—(फ़ा०) (वि०) रुतबेवाला, प्रतिष्ठित, आली-मरतबा, उच्च-पदस्थ ।

वाला-गुहर—(फ़ा०) (वि०) आली ख़ानदान ।

वाला-जाह—(फ़ा०) (वि०) उच्च-पद वाला ।

वाला-निगाह—(फ़ा०) (वि०) ऊँचे विचारवाला, उदाराशय ।

वाला-शान—(फ़ा०) (वि०) बड़ी शानवाला, गौरवशाली ।

वालाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बुज़ुर्गी, बड़प्पन।

वालिद—(अ०) (सं० पु०) पिता, बाप।

वालिदा—(अ०) (सं० स्त्री०) मा, माता।

वालिदैन—(अ०) (सं० पु०) माता-पिता, मा-बाप।

वालिह—(अ०) (वि०) आशिक़, फ़रेफ़्ता।

वाली—(अ०) (सं० पु०) (१) संरक्षक, सहायक, हामी; (२) बादशाह, राजा; (३) निगहबान। वाली - वारिस—संरक्षक और हिमायती।

वाली-ए-मुल्क—मुल्क का हाकिम, देश का शासक।

वाल्ला—(अ०) (अव्यय) और नहीं तो, वरना, नहीं तो।

वावेला, वावैला—(अ०) (सं० पु०) (१) अफ़सोस, विलाप; (२) फ़रयाद, दुहाई; (३) शोर-ग़ुल।

वाशग़ून—(फ़ा०) (वि०) उलटा, औंधा। (आसमान का लक्षण)।

वा-शुद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) छुटकारा, गिरफ़्तारी दूर होना।

वा-शुदगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) गिरफ़्तारी दूर होना; संकोच दूर होना।

वासिश्र—(अ०) (वि०) फलनेवाला।

वासिक़—(अ०) (वि०) मज़बूत, दृढ़, पक्का, स्थायी।

वासित—(अ०) (सं० पु०) (१) मध्य भाग; (२) मध्यस्थ।

वासिफ़—(अ०) (वि०) तारीफ़ करनेवाला।

वासिल—(अ०) (वि०) (१) मुलाक़ात करनेवाला, मिलनेवाला; (२) वसूल होनेवाला, प्राप्त होनेवाला, मिला हुआ; (३) पहुँचनेवाला, शामिल होनेवाला। वासिल-बहक़-होना—मर जाना।

वासिल-बाक़ी—वह हिसाब जिससे जमा और बक़ाया मालूम हो।

वासिल-बाक़ी-नवीस—तहसील का वह कर्मचारी जिसके पास वासिल-बाक़ी का रजिस्टर रहता है; वसूल और बाक़ी का हिसाब रखनेवाला।

वासिलात—(अ०) (सं० स्त्री०) किसी मकान या ज़मीन की आय जो ना-जायज़ क़ब्ज़ा रखनेवाले (अनधिकारी) ने वसूल की हो।

वा-सोख़्त—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) नफ़रत, घृणा; (२) वह कविता जिसमें माशूक़ के अत्याचार और तज्जनित शोक का वर्णन हो और प्रेम से घृणा प्रकाशित की गई हो।

वासोख़्तगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) कुढ़न, दिल का जलना।

वासोज़—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) जलन, ज्वाला; (२) आवेश।

वास्ता—(अ०) (सं० पु०) (१) सम्बन्ध, ताल्लुक़, रब्त, इलाक़ा; (२) ग़रज, मतलब; (३) सरोकार, पाला, मौक़ा; (४) ज़रिया, वसीला; (५) मित्रता, प्रीति, प्रेम, (६) संभोग, सम्पर्क; (७) मध्यस्थ, सालिस, एलची। वास्ता देना—बीच में डालना, दुहाई देना।

वास्ता-दार—(वि०) (१) रिश्तेदार, सम्बन्धी; (२) किसी प्रकार का सम्बन्ध रखनेवाला।

वास्ते—(अ०) (अव्यय) (१) लिए, निमित्त; (२) हेतु, सबब, कारण।

वाह—(फ़ा०) (अव्यय) (१) साधु-साधु, धन्य; (२) आश्चर्य, हर्ष, घृणा सूचक शब्द; (३) शाबाश, ख़ूब; (४) बेशक। वाह-रे—शाबाश। वाह-रे हम—अपने किसी काम पर घमंड दर्साना। वाह-वाह —(हर्ष प्रकट करना)।

वाहिद—(अ०) (वि०) (१) एक, अकेला; (२) यकता, अनुपम, अद्वितीय। (सं० पु०) ईश्वर, परमात्मा

वाहिद-उल्-ऐन—यक-चश्म, काना।
वाहिद-शाहिद—(१) वाक़िफ़, परिचित, अभिज्ञ; (२) पानेवाला। वाहिद-शाहिद होना—(१) बा-ख़बर होना; (२ किसी चीज़ की सूरत देखना; (३) कोई चीज़ पाना।
वाहिब—(अ०) (वि०) हिबा करनेवाला, दान करनेवाला।
वाहिमा—(अ०) (सं० पु०) कल्पना-शक्ति।
वाहियात—(अ०) (वि०) (१) बेहूदा और निरर्थक बातें; (२) व्यर्थ; (३) ख़ुराफ़ात।
वाही—(अ०) (वि०) बेहूदा, नाकारा, आवारा, लग्व।
वाही-तबाही—(अ०) (वि०) (१) बेहूदा, ख़राब, आवारा; (२) निरर्थक, बेमानी। (सं० स्त्री०) बेमानी बातें, निरर्थक बकवास। वाही-तबाही बकना—बेहूदा बातें करना। वाही-तबाही फिरना—आवारा फिरना।
विक़ार—(अ०) (सं० पु०) बुर्दबारी, प्रतिष्ठा, विभूति।
विज़ारत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) वज़ीर का पद; वज़ीर का काम; (२) वज़ीर होना; (३) वज़ीर का दफ़्तर।
विज्दान—(अ०) (सं० पु०) जानना, दरयाफ़्त करना; खोज करने की शक्ति।
विदा—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) प्रस्थान, रवाना होना, रुख़सत; (२) वधू का अपने माता-पिता के घर से दूलह के घर जाना।
विफ़ाक़—(अ०) (सं० पु०) मुहब्बत, मेल-जोल।
विरासत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) उत्तराधिकार, वारिस होना; (२) उत्तराधिकार से प्राप्त धन, सम्पत्ति, तरका, मीरास।
विरासतन्—(अ०) (क्रि० वि०) वारिस के रूप में, बहैसियत वारिस या उत्तराधिकारी; बतौर तरका।
विर्द—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) हर रोज़ का काम, नित्य-कर्म; (२) मामूली, साधारण कृत्य। विर्द ज़बान होना—ज़बान पर चढ़ना। विर्द रखना—बिना नागा करना।
विला—(अ०) (सं० स्त्री०) मुहब्बत, दोस्ती, स्नेह, मित्र-भाव।
विलादत—(अ०) (सं० स्त्री०) बच्चा जनना।
विलायत—(अ०) (सं० पु०) (१) एक बादशाह का मुल्क, देश; (२) पहले ईरान और अफ़ग़ानिस्तान के लिए व्यवहृत था, अब इंग्लैंड के लिए बोलते हैं; (३) विदेश, (सं० स्त्री०) (१) किसी काम की ज़िम्मेदारी; (२) पुण्यात्मा का ईश्वर के साथ सामीप्य; (३) वली होना, संरक्षक या सरपरस्त होना।
विलायत-ज़ा—(फ़ा०) (वि०) जिसकी पैदायश विलायत (ईरान, या इंग्लैंड) में हुई हो।
विलायतन्—(फ़ा०) (क्रि० वि०) संरक्षक होने के कारण, वाली-वारिस होने की हैसियत से।
विलायती—(अ०) (वि०) (१) विलायत का, विलायत का बना हुआ; (२) परदेसी, विदेशी; (३) अनजान, जंगली, जो बोली न समझे।
विसाल—(अ०) (सं० पु०) (१) मुलाक़ात, मिलाप; (२) प्रेमियों का मिलन; (३) मृत्यु, मौत।
वीरान—(फ़ा०) (वि०) (१) उजाड़, ग़ैर-आबाद; (२) तबाह, ख़राब, बंजर, (३) बे-रौनक़, श्री-हीन, श्री-हत।
वीराना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) जंगल, उजाड़; (२) उदासी, परेशानी।
वीराना-नशीन—जंगल में बैठनेवाला।
वीरानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) तबाही, ख़राबी, बरबादी; (२) परेशानी, अबतरी, उदासी।

वुज़रा—(अ०) (सं० पु०) 'वज़ीर' का बहुवचन।

वुज़ू—(सं० पु०) 'वज़ू'।

वुजूद—(सं० पु०) 'वजूद'।

वुफ़ूद—(अ०) (सं० पु०) (१) दूत, क़ासिद।

वुफ़ूर—(अ०) (सं० पु०) बहुतायत, कसरत।

वुरसा—(अ०) (सं० पु०) 'वारिस' का बहुवचन, उत्तराधिकारी।

वुरूद—(अ०) (सं० पु०) (१) उतरना, ऊपर से नीचे आना; (२) पहुँचना।

वुसअ़—(अ०) (सं० स्त्री०) फैलाव, चौड़ापन, कुशादगी।

श

शंग—(फ़ा०) (वि०) शोख़, चुलबुला, हँस-मुख (माशूक़ के लिए)।

शंगरफ़, शंजरफ़—(फ़ा०) (सं० पु०) शिंगरफ़, हिंगुल।

शंगरफ़ी—(फ़ा०) (वि०) सुर्ख़, शिंगरफ़ के रंग का।

शअ़बान—(सं० पु०) देखो—'शाबान'।

शआर—(सं० पु०) (देखो—'शिआर')।

शआइर—(अ०) (सं० पु०) क़ुर्बानियाँ और इबादत; पूजा और बलिदान।

शऊर—(अ०) (सं० पु०) (१) बुद्धि, विवेक, सलीक़ा, तमीज़, पहचान; (२) योग्यता, ढंग।

शऊर-दार—(अ०) (सं० पु०) अक़्लमंद, दक्ष, कुशल, हुनर-मंद, तमीज़-दार।

शक़—(अ०) (सं० पु०) शंका, शुबह।

शकर—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) खाँड, बूरा। (देखो—('शक्कर')। शकर से मुँह भरना—मिठाई खिलाना (किसी ख़ुशी के अवसर पर) (या ख़ुशी की बात सुनकर)। शकर-शार होना—ख़ूब मिल-जुल जाना।

शकर-क़ंद—(फ़ा०) (सं० पु०) एक कंद जिसकी तरकारी बनाते हैं।

शकर-खंद, शकर-खंदा—(फ़ा०) (सं० पु०) मुसकराना।

शकर-ख़ोरा, शकर-ख़्वार—(फ़ा०) (वि०) (१) एक पक्षी जो मिठाई बड़े चाव से खाता है; (२) मिठाई का शौक़ीन, तर-माल खानेवाला।

शकर-ख़्वाब, शकर-ख़्वाबी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मीठी नींद, सोना।

शकर-गुफ़्तार—(फ़ा०) (वि०) मीठा बोलने वाला, शीरीं-कलाम।

शकर-तरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सफ़ेद शक्कर, चीनी।

शकर-पारा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) एक मीठे फल का नाम; (२) एक पकवान का नाम जिसको चौखूंटा बनाते हैं।

शकर-रंजी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मामूली रंजिश जो कभी कभी मित्रों में हो जाती हैं।

शकर-रेज़—(फ़ा०) (वि०) खुश-मिज़ाज आदमी, मीठी बातें।

शकर-रेज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मीठी बातें।

शकर-लब—(फ़ा०) (वि०) शीरीं-बयान, मीठा बोलनेवाला।

शकराना—(फ़ा०) (सं० पु०) भात जिसे शकर और घी डालकर खाते हैं।

शकरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार का मीठा फ़ालसा।

शकल—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) सूरत, चेहरा, आकृति, रूप; (२) मानिन्द, सदृश; (३) वज़ा, रंग-ढंग, अंदाज़; (४) उपाय, तरीक़ा, (५) प्रकार, क़िस्म; (६) ढाँचा, नक़्शा, बनावट; (७) सूरत, चेष्टा; (८) मूर्ति; (९) हालत, दशा, अवस्था। शकल ओ शबाहत—(फ़ा०) (स्त्री०) सूरत, रंग-ढंग। शकल ओ शमाइल—ख़ूबसूरती,

सूरत और सीर। शकल निकालना—मौक़ा निकालना, तदबीर निकालना।

शक़ादत—(अ०) (सं० स्त्री०) बद-बख़्ती, विपत्ति।

शक़ायक़—(अ०) (सं० पु०) फूल।

शक़ीक़त, शक़ीक़ा—(अ०) (सं० पु०) आधे सिर का दर्द, आधा सीसी।

शकील—(अ०) (वि०) सुन्दर, रूपवान्।

शकीला—(अ०) (वि०) सुन्दरी, स्वरूपवती।

शकूक—(अ०) (सं० पु०) शंकाएँ ('शक' का बहुवचन)।

शकूर—(अ०) (वि०) (१) ईश्वर का नाम; (२) बहुत कृतज्ञ, शुक्र करनेवाला।

शकोह—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) दब-दबा, शान; (२) बड़प्पन, महत्व।

शक़्क़—(अ०) (वि०) शिगाफ़ पड़ा हुआ, शक़्क़ होना—फट जाना।

शक़्क़-उल्-क़मर—(अ०) (सं० पु०) चन्द्रमा के दो टुकड़े हो जाना (मोहम्मद साहब का एक चमत्कार)।

शक्कर—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शकर, चीनी, बूरा, खाँड।

शक्की—(अ०) (वि०) शक करनेवाला, सन्देह करनेवाला, वहमी।

शक़ी—(अ०) (वि०) अभागा, बदनसीब।

शक्ल—(अ०) (सं० स्त्री०) देखो—'शकल'।

शख़्स—(अ०) (सं० पु०) (१) आदमी, मनुष्य, व्यक्ति; (२) शरीर, बदन।

शख़्सियत—(अ०) (सं० स्त्री०) शेख़ी, घमंड, शान, व्यक्तित्व, आत्म-श्लाघा। शख़्सियत बघारना—डींग हाँकना, इतराना।

शख़्सी—(अ०) (वि०) एक मनुष्य से सम्बन्ध रखनेवाली; व्यक्ति-गत।

शग़फ़—(अ०) (सं० पु०) अत्यन्त प्रेम, बहुत दिल-चस्पी।

शग़ब—(अ०) (सं० पु०) शोर, ग़ुल, हल्ला।

शग़ल—(अ०) (सं० पु०) (१) पेशा, धंधा, (२) ईश्वर का ध्यान; (३) मनोरंजन, तफ़रीह।

शग़ाल—(अ०) (सं० पु०) सियार, गीदड़, शृगाल।

शग़ाली—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार का अंगूर जिसे गीदड़ बहुत खाता है।

शगुन—(सं० पु०) देखो—'शगून'।

शगुफ़्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) तफ़रीह, मनोविनोद। (वि०) ख़ुश, प्रफुल्ल।

शगुफ़्तगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) फूलों का खिलना, सर-सब्ज़ी; (२) ख़ुशी, प्रफुल्लता।

शगुफ़्ता—(फ़ा०) (वि०) (१) फूला हुआ, खिला हुआ; (२) ख़ुश, प्रफुल्ल।

शगुफ़्ता-ख़ातिर—(वि०) खुश मिज़ाज, प्रफुल्लित, बश्शाश।

शगून—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) फ़ाल, मुबारक सायत देखना, शुभ मुहूर्त देखना; (२) शुभ मुहूर्त; (३) समय की कोई घटना जिससे शुभ और अशुभ लक्षण देखते हैं।

शगूनिया—(फ़ा०) (सं० पु०) शकुन देखने या विचारनेवाला।

शगूफ़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) कली, बिना खिला हुआ फूल; (२) पुष्प, फूल; (३) कोई अजब अनोखी बात; (४) सुर्रा। शगूफ़ा खिलाना—बहार दिखाना, अनोखी बात करना। शगूफ़ा छोड़ना—नई अनोखी बात कहना। शगूफ़े निकालना—ऐब निकालना। शगूफ़ा फूलना—अजीब बात प्रकट होना। शगूफ़ा लाना—आफ़त लाना।

शगूफ़ा-कारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) गुल-कारी।

शग़ल—(अ०) (सं० पु०) देखो 'शग़ल'।

शजर—(अ०) (सं० पु०) वृक्ष, तनेदार पेड़।

शजर-दार—(फ़ा०) (वि०) जिस पर गुल-कारी हो, बेल-बूटेदार।

शजरा—(अ०) (सं० पु०) (१) वृक्ष, पेड़; (२) कुर्सी-नामा, वंशावली, वंश-वृक्ष।

शजरा कुल्ला—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) चीज़-बस्त, बोरिया-बंधना; (२) पीरों का शजरा और टोपी जो भक्त-जनों को प्रसाद रूप में मिलती है। **शजरा कुल्ला उठाना**—बिस्तर बाँध कर चलने की तैयारी करना; बोरिया-बंधना सँभालना।

शत, शत्त—(अ०) (सं० स्त्री०) दरिया, नाला।

शतरंज—(अ०) (सं० स्त्री०) एक बाज़ी या खेल।

शतरंज-बाज़—(अ०) (वि०) शतरंज का खिलाड़ी।

शतरंजी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) एक प्रकार का दबीज़ सूती फ़र्श; (२) शतरंज का खिलाड़ी।

शतरंजी-बाफ़—(फ़ा०) (वि०) शतरंजी बनानेवाला।

शत्ता, शत्ताह—(अ०) (वि०) शोख़, निर्लज्ज, बद-वज़ा।

शत्ताही—(अ०) (सं० स्त्री०) बेहयाई, शोख़ी, निर्लज्जता।

शत्म—(अ०) (सं० पु०) गाली, गाली देना।

शदाइद—(अ०) (सं० पु०) तकलीफ़ें, सख़्तियाँ।

शदीद—(अ०) (वि०) (१) सख़्त, कठिन, मुश्किल; (२) बहुत ज़ोर का, बहुत ज़्यादा।

शदीद-उल्-अमल—(अ०) (वि०) जिसका काम सख़्त हो, सख़्ती करने-वाला।

शद्द—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) दृढ़ता, मज़बूती; (२) सख़्ती, कठोरता, ज़ोर। **शद्द ओ मद्द**—(अ०) (सं० स्त्री०) धूम-धाम, शान-शौक़त।

शद्दा—(अ०) (सं० पु०) (१) आक्रमण, चढ़ाई; (२) अलम, निशान, वह झंडे जो मोहर्रम में ताज़ियों के साथ होते हैं।

शद्दाद—(अ०) (सं० पु०) प्राचीन काल का एक बादशाह जो अपने आपको ईश्वर कहता था और जिसने बहिश्त का-सा एक बाग़ लगवाया था।

शनाअत—(अ०) (सं० स्त्री०) बदी, बुराई।

शनाख़्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पहचान, वाक़फ़ियत, परिचय, शनासाई।

शनास—(फ़ा०) (वि०) पहचाननेवाला। (प्रायः शब्द के अन्त में लगता है)।

शनासा—(फ़ा०) (वि०) पहचाननेवाला, परखनेवाला।

शनासाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) जान-पह-चान, परिचय, वाक़-फ़ियत।

शनीअ—(अ०) (वि०) बुरा, दुष्ट, पाजी।

शनीआ—(अ०) (सं० पु०) बुरी बात, बुरा काम।

शप—(फ़ा०) (वि०) (१) जल्द, शीघ्र; (२) तलवार या क़मची मारने की आवाज़। **शप-शप, शपा-शप**—झप-झप, जल्दी-जल्दी, लगातार।

शपरा, शप्पर—(फ़ा०) (सं० पु०) चम-गादड़।

शफ़क़—(अ०) (सं० स्त्री०) प्रातःकाल या संध्या समय की आकाश की लालिमा। (वि०) बहुत सुन्दर, हसीन। **शफ़क़ का टुकड़ा**—अत्यन्त सुन्दर।

शफ़क़त—(अ०) (सं० स्त्री०) रहम, दया, सहानुभूति, ग़म-ख़्वारी।

शफ़क़ती—(अ०) (वि०) शफ़क़ के रंग वाला, सुर्ख़ रंग का।

शफ़तालू—(सं० पु०) देखो 'शफ़्तालू'।

शफ़ा—(अ०) (सं० स्त्री०) सेहत, आरोग्य, तनदुरुस्ती।

शफ़ाअत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) गुनाहों की माफ़ी की सिफ़ारिश; (२) कामना, इच्छा।

शफ़ाअत-गर—(फ़ा०) (वि०) सिफ़ारिश करनेवाला।

शफ़ाख़ाना—(अ०) (सं० पु०) चिकित्सालय, औषधालय।

शफ़ीअ—(अ०) (वि०) (१) दूसरे की सिफ़ारिश करनेवाला; (२) शफ़ा (पड़ोस की ज़मीन दूसरे के मुक़ाबिले लेने) का हक़ रखनेवाला।

शफ़ीक़—(अ०) (वि०) सहानुभूति रखनेवाला, दयालु, हम-दर्द।

श.फ़ूफ़ा—(सं० पु०) 'शगूफ़ा' का अपभ्रंश।

शफ़्तल—(वि०) बेहूदा, नालायक़, बदकार औरत।

शफ़्तालू—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार का बड़ा आड़ू।

शफ़्फ़ाफ़—(अ०) (वि०) स्वच्छ, निहायत साफ़।

शफ़्फ़ाफ़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) स्वच्छता, सफ़ाई।

शब—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) रात्रि। शब-ओ-रोज़—हरवक्त, हर समय।

शब-अफ़राज़—(फ़ा०) (वि०) रात का रोशन करनेवाला, चाँद। (सं० पु०) जुगनू।

शबका—(अ०) (सं० पु०) (१) लोहे के तारों का जाल, (२) बड़ा सूराख़।

शब-कोर—(फ़ा०) (वि०) जिसे रात को न दिखलाई दे; रतौंधवाला।

शब-कोरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) रतौंध, रात को दिखाई न देना।

शबक्का—(सं० पु०) छेद, खोंता।

शब-ख़ूं—(फ़ा०) (सं० पु०) रात का हमला, छापा; रात के समय शत्रु पर बेख़बरी में छापा मारना। शब-ख़ूं मारना, शब-ख़ूं लाना—छापा मारना।

शब-ख़ेज़—(वि०) रात को उठनेवाला।

शब-ख़्वानी—(वि०) वह कहानी जो रात को दास्तान-गो पढ़ा करते हैं।

शब-ख़्वाबी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) रात को पहनने का वस्त्र।

शब-गर्द—(फ़ा०) (वि०) रात का फिरनेवाला, कोतवाल।

शब-गीर—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) बुलबुल; (२) रात के समय गानेवाला; (३) तड़का, प्रभात।

शब-गूं—(फ़ा०) (वि०) काला, स्याह।

शब-चिराग़—(फ़ा०) (सं० पु०) लाल, जो रात को चिराग़ की तरह चमकता है।

शब-ताब—(फ़ा०) (वि०) रात को चमकनेवाला, (आबदार मोती के लिए कहते हैं)।

शब-तार शब-तारीक—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अंधेरी रात।

शब-दीज़—(फ़ा०) (सं० पु०) मुश्की घोड़ा।

शब-देग़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वह खाना जो रात भर मद्दी आँच पर बनाते हैं, इसमें शलजम, अंडे, कबाब इत्यादि हाँडी में डालकर, उसका मुँह खामकर आग पर चढ़ाते हैं।

शब-देजूर—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अँधेरी रात।

शबनम—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) ओस; (२) एक प्रकार का बहुत महीन सफ़ेद कपड़ा। शबनम का रोना—ओस गिरना।

शबनमी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मसहरी, मच्छर-दानी।

शब-बरात—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मुसल्मानों का एक त्यौहार। कहते हैं इस रात को उम्र और रोज़ी का हिसाब फ़रिश्ते करते हैं। इसको .खुशी का त्यौहार मानते हैं और आतिश-बाज़ी छुड़ाते हैं। बु.ज़ुर्गों के नाम पर रोटी हलवा बांटते हैं।

शब-बाश—(फ़ा०) (वि०) रात की रात रहनेवाला। शब-बाश होना—रात को रहना।

शब-बाशी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) रात का ठहरना, रात का क़याम।

शब-बेदार—(फ़ा०) (वि०) रात को जाग कर भजन करनेवाला।

शब-बेदारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) रात का जागरण।

शब-मांदा—(वि०) रात की बासी चीज़।

शब-रंग—(वि०) मुश्की घोड़ा, काले रंग का घोड़ा।

शब-रो—(वि०) (१) रात का चलनेवाला, चोर; (२) कोतवाल।

शबाब—(अ०) (सं० पु०) (१) जवानी, युवावस्था, यौवन; (२) सौन्दर्य, (३) उन्नति-काल, तरक़्क़ी का ज़माना।

शबात—(रूमी) (सं० पु०) जाड़े का आख़िरी महीना।

शबान—(फ़ा०) (सं० पु०) चरवाहा, ग्वाला. गड़रिया।

शबानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) चरवाहा पन, गड़रिया-पन।

शबाहत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) रौनक़, आभा; (२) रूप, सूरत।

शबिस्ताँ—(फ़ा०) (सं० पु०) अंतःपुर, शयनागार, ख़िलवत-ख़ाना, रात को सोने की जगह; (३) मसजिद की वह जगह जहाँ रात को इबादत करते हैं।

शबीना—(फ़ा०) (वि०) (१) रात का; (२) रात का बचा हुआ, बासी। (सं० पु०) (१) वह काम जो रात भर कराया जाय; (२) हाफ़िज़ का रमज़ान की एक ही रात में .क़ुरान शरीफ़ का पाठ करना।

शबीह—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) तसवीर; (२) हम-शकल, मानिंद।

शबे-क़द्र—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मुसल्मानों के रमज़ान की सत्ताईसवीं रात, जो बड़ी पवित्र मानी जाती है।

शबे-ज़िन्दादार—(फ़ा०) (वि०) रात भर जागनेवाला।

शबे-ज़ुफ़ाफ़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सुहाग-रात, तख्त की रात, वह रात जिस दिन वर और वधू का प्रथम मिलन होता है।

शबे-तार, शबे-तारीक—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अंधेरी रात।

शबे-माह, शबे-महताब—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) चाँदनी रात।

शबे-यल्दार—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अंधेरी रात, जो काटे न कटे।

शबे-वस्ल, शबे-विसाल—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) प्रिय-मिलन की रात, माशूक़ से मिलने की रात; (२) वह रात जिसमें पहुँचे हुए फ़क़ीर की मृत्यु हो।

शबे-शहादत—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मोहर्रम की नवीं रात, जिसके सुबह को हज़रत इमाम हुसेन शहीद होते हैं (मारे जाते हैं)।

शब्बार; शब्बीर—(फ़ा०) (वि०) (१) भला, नेक; (२) सुन्दर, .खूबसूरत। (सं० पु०) (१) हारू के लड़कों के नाम; (२) मोहम्मद साहब के नवासे।

शब्बो—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) सफ़ेद फूल का एक पौदा जिसकी सुगंध रात को निकलती है; (२) इसके फूल।

शमर—(अ०) (सं० पु०) मरदूद, ज़ालिम, अत्याचारी, शक्की, वहमी।

शमला—(अ०) (सं० पु०) सर से बाँधने का शाल, तुर्रा।

शमशाद—(फ़ा०) (सं० पु०) एक वृक्ष जिसकी उपमा क़द से दी जाती है।

शमशीर, शमशेर—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) तलवार।

शमशीर-बरहना—(फ़ा०) (वि०) (१) नंगी तलवार; (२) लड़ने-मरने पर तैयार।

शमा—(अ०) (सं० स्त्री०) मोम-बत्ती, चरबी की बत्ती।

शमा-ए-सहर, शमा - ए - सहरी—(सं० स्त्री०) वह जो जल्दी बुझ जाय।

शमाइम—(अ०) (सं० पु०) खुश-बूएँ जो सूंघी जायँ।

शमातत—(अ०) (सं० स्त्री०) किसी की ख़राबी पर .खुश होना।

शमा-दान—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मोमबत्ती रखने का पात्र; वह आधार जिसमें लगाकर मोमबत्ती जलाते हैं।

शमा-महफ़िल—(फ़ा०) (वि०) महफ़िल की रौनक़।

शमामा—(अ०) (सं० स्त्री०) .खुश-बू, सुगंधि।

शमायल—(अ०) (सं० पु०) आदतें।

शमा-रू—(अ०) (वि०) नूरानी चेहरेवाला, तेज-पूर्ण मुखवाला।

शमीम—(अ०) (सं० स्त्री०) सुगंध; खूशबूदार हवा।

शमूल—(अ०) (सं० पु०) शामिल होना।

शम्बा—(फ़ा०) (सं० पु०) शनिवार।

शम्मा—(अ०) (सं० पु०) (१) हलकी सुगंध; (२) किसी चीज का एक बार सूंघना। (वि०) बहुत थोड़ा।

शम्मास—(अ०) (सं० पु०) सूर्य-पूजक, सूर्योपासक।

शम्स—(अ०) (सं० पु०) सूर्य।

शम्सा— (सं० पु०) कलाबत्तू का वह छोटा फुँदना जो माला के बीच में लगा रहता है।

शम्सी—(अ०) (वि०) सूर्य-सम्बन्धी। (उ०) (सं० स्त्री०) शशमाही तनख्वाह, छै महीने बाद मिलनेवाली छुट्टी।

शयातीन—(अ०) (सं० पु०) 'शैतान' का बहुवचन।

शर—(अ०) (सं० पु०) शरारत, पाजीपन, दुष्टता।

शर-अंगेज़—(फ़ा०) (वि०) झगड़ालू, दंगई।

शरअ—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) .क़ुरान शरीफ़ में दी गई आज्ञा, नियम, या विधि; (२) मज़हब, धर्म; (३) धर्म-शास्त्र, आईन, क़ानून; (४) दस्तूर, रीति, परिपाटी। **शरअ पर चलना**—इस्लाम के नियम पालना।

शरअन्—(अ०) (क्रि० वि०) शरअ या मुसलमानी क़ानून के अनुसार।

शरअ-मोहम्मदी—(अ०) (सं० स्त्री०) इस्लाम के नियम या क़ानून।

शरई—(अ०) (वि०) जो शरअ या इस्लाम के क़ानून के मुताबिक हो। **शरई डाढ़ी**—लम्बी डाढी (एक मुश्त, दो अंगुश्त)। **शरई पैजामा**—टख़नों से ऊँचा पैजामा।

शरक़ी—(वि०) देखो—'शर्क़ी'।

शरग़ा—(वि०) बादामी रंग का घोड़ा।

शरत—(सं० स्त्री०) देखो—'शर्त'।

शरफ़—(अ०) (सं० पु०) देखो 'शर्फ़'।

शरफ़-याब—(अ०) (वि०) देखो 'शर्फ़-याब'।

शरबत—(अ०) (सं० पु०) (१) पेय, पानक, पीने के लिये शकर मिला पानी। **शरबत के से घूँट पीना**—किसी कड़वी चीज़ को मज़े लेकर पीना; कड़वी बात .खुशी से बरदाश्त करना।

शरबती—(अ०) (वि०) (१) शरबत के रंग का, हलका पीला; (२) रसीला, रसदार। (सं० पु०) (१) एक प्रकार का हल्का पीला रंग, कुछ सुर्ख़ी लिये हुए;

(२) एक प्रकार का मीठा नीबू, मिट्ठा, ज़र्द-आलू; (३) मलमल की तरह का बढ़िया कपड़ा; (४) एक प्रकार का नगीना; (५) एक क़िस्म का बड़ा फ़ालसा; (६) एक प्रकार का कबूतर। **शरबते-मर्ग**—(फ़ा०) मौत।

शरम—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) लज्जा, हया; (२) लिहाज़, संकोच; (३) प्रतिष्ठा। **शरम को लेना**—शरम करना। **शरम रखना**—इज़्ज़त बचाना। **शरम रह जाना**—इज़्ज़त-आबरू में फ़र्क़ न आना। **शरम से कटना**—शरमिन्दा होना। **शरम से गठरी हो जाना**—बहुत शरमिंदा होना। **शरम से गड़ जाना**—बहुत शरमिंदा होना। **शरम से पानी-पानी हो जाना**—बहुत शरमिंदा हो जाना।

शरम-गाह—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) वह जगह जिसका छिपाना वाजिब हो; (२) योनि, स्त्री की जननेंद्रिय।

शरम-गीं—(फ़ा०) (वि०) शरमिंदा, लज्जित।

शरम-नाक—(फ़ा०) (वि०) शर्म के क़ाबिल, लज्जा के योग्य।

शरम-सार—(अ०) (वि०) लज्जित, शरमिंदा।

शरम-सारी—(अ०) (सं० स्त्री०) शरमिंदगी।

शरम-हुज़ूरी—(अ०) (सं० स्त्री०) सामने का लिहाज़, मुँह-देखे की शरम, मुँह-देखे की मुहब्बत।

शरमाना—(अ०) (क्रि०) (१) शरमिंदा होना; (२) शरमिन्दा करना, लज्जित करना।

शरमालू—(वि०) हयादार, शर्मदार, लज्जाशील।

शरमा-शरमी—(अ०) (क्रि० वि०) शर्म के मारे, लज्जा-वश।

शरमिन्दगी—(अ०) (सं० स्त्री०) लज्जा, नदामत।

शरमिन्दा—(अ०) (वि०) लज्जित। **शरमिन्दा होना**—नादिम होना, अहसान-मंद होना।

शरमीला—(अ०) (वि०) लज्जाशील, शरम में आ जानेवाला।

शरर—(अ०) (सं० पु०) आग की चिनगारी।

शरर-फ़िशाँ—(फ़ा०) (वि०) चिंगारियाँ उड़ानेवाला।

शरर-बार—(फ़ा०) (वि०) चिंगारियाँ बरसानेवाला।

शरह—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) टीका, भाष्य, नोट; (२) दर, भाव, क़ीमत। **शरह-चढ़ाना**—किसी किताब पर टीका लिखना।

शरह-बन्दी—(अ०) (सं० स्त्री०) दर या भाव की सूची।

शराकत—(अ०) (सं० स्त्री०) साझा, हिस्सेदारी।

शराकत-नामा—(अ०) (सं० पु०) वह काग़ज़ जिस पर साझे की शर्तें लिखी जाती हैं।

शराफ़त—(अ०) (सं० स्त्री०) सज्जनता, भलमंसी।

शराब—(अ०) (सं० स्त्री०) मदिरा, मद्य। **शराब उड़ना**—शराब का ख़ूब पिया जाना। **शराब चलना**—पास बैठ कर प्याले पर प्याले चढ़ाना।

शराब-ख़ाना—(अ०) (सं० पु०) वह स्थान जहाँ शराब बनती या बिकती है।

शराब-ख़्वार—(अ०) (वि०) शराब पीनेवाला।

शराब-ख़्वारी—(अ०) (सं० स्त्री०) शराब पीना, मदिरा-पान।

शराबी—(अ०) (सं० पु०) शराब पीने-वाला, पियक्कड़।

शराबे-तहूर—(अ०) (सं० स्त्री०) बहिश्त में मिलनेवाली शराब।

शराब-दो-श्रातशा—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) तेज़, दो बार खिंची हुई शराब।

शरायत—(अ०) (सं० स्त्री०) शर्तें, कैदें—'शर्त' का बहुवचन।

शरायत-तमहीदी—इब्तदाई शर्तें, प्रारंभिक शर्तें।

शरार—(अ०) (सं० पु०) चिनगारी।

शरारत—(अ०) (सं० स्त्री०) बुराई, ख़राबी, शोख़ी, बद-ज़बानी।

शरारतन्—(अ०) (क्रि० वि०) शरारत से, पाजीपन से।

शरारती—(औ०) (वि०) शरीर, दुष्ट।

शरारा—(अ०) (सं० पु०) चिनगारी, आग का पतंगा।

शरीअत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) ईश्वरीय मार्ग, ईश्वरीय नियम; (२) धर्म-शास्त्र; (३) स्पष्ट और पवित्र मार्ग; मुसल्मानों का धर्म-शास्त्र, दीनी क़ानून।

शरीक—(अ०) (वि०) शामिल, सम्मिलित, मिला हुआ, लगा हुआ। (सं० पु०) (१) साथी, मददगार, दोस्त, सहायक; (२) साझी, हिस्सेदार। शरीक करना साझी करना, शामिल करना। शरीक रहना—शामिल रहना, इकट्ठा रहना।

शरीक-जुर्म—(अ०) (वि०) अपराध में शामिल, सह-अपराधी।

शरीक-रंज-ओ-राहत—(वि०) दुख-सुख का साथी।

शरीक-राय—(वि०) राय से इत्तफ़ाक़ करनेवाला, सहमत।

शरीक-हाल—(वि०) दुख-दर्द में साथ

शरीफ़—(अ०) (सं० पु०) (१) अच्छे घराने का, अच्छे वंश का, कुलीन; (२) भला-मानस, आदरणीय।

शरीफ़-ज़ादा—(पु०) अशराफ़ का बेटा, भले घर का लड़का।

शरीफ़ा—(पु०) सीता-फल, एक मीठे फल का नाम।

शरीर—(अ०) (वि०) नटखट, दुष्ट, ऐब-दार।

शर्क़—(अ०) (सं० पु०) (१) पूर्व, पूरब; (२) सूर्योदय की दिशा।

शर्क़ी—(अ०) (वि०) पूरबी, पूरब का रहने-वाला।

शर्त—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) प्रण, क़ौल; (२) बाज़ी, बदन; (३) क़ायदा; (४) अनिवार्य, लाज़िम; (५) अवश्य ऐसा होगा।

शर्तिया—(अ०) (क्रि० वि०) शर्त बदकर, ज़रूर, निश्चय।

शर्ती—(वि०) जिसमें कोई शर्त हो, इक़रार करके।

शर्फ़—(अ०) (सं० पु०) (१) बड़प्पन, उत्तमता, श्रेष्ठता; (२) किसी नक्षत्र का अपनी राशि पर आना; (३) प्रतिष्ठा, महत्व, आदर; (४) सौभाग्य। शर्फ़ ले जाना—सबक़त ले जाना, बढ़ जाना। शर्फ़ होना—महत्व प्राप्त होना; बुज़ुर्गी हासिल होना।

शर्फ़-याब—(अ०) (वि०) प्रतिष्ठित; शर्फ़ हासिल करनेवाला।

शर्म—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) हया, लज्जा, ग़ैरत; (२) इज़्ज़त, लिहाज़। (देखो—'शरम')।

शर्म-गाह—(अ०) (सं० स्त्री०) स्त्री की जननेंद्रिय, योनि।

शर्म-सार—(अ०) (वि०) शर्मिंदा, लज्जा-

शर्मा-शर्मी—शर्म और लिहाज़ के दबाव में, संकोच-वश, मुरव्वत के सबब से।

शर्र—(अ०) (सं० पु०) बदी, शरारत, बुराई, ख़राबी, झगड़ा। शर्र उठाना—झगड़ा खड़ा करना।

शर्री—(अ०) (वि०) बुरा, ख़राब, झगड़ालू, फ़िसादी।

शल—(अ०) (वि०) थका-माँदा, शिथिल, जिसके हाथ-पैर रह गये हों। शल कर देना—थका देना। शल हो जाना—थक जाना।

शलगम, शलजम—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार की तरकारी, एक कंद।

शलवार—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) पैजामे के नीचे पहनने का जाँघिया; (२) एक प्रकार का पैजामा, इज़ार।

शलीता—(सं० पु०) (१) एक प्रकार का मोटा कपड़ा; (२) बड़ा थैला।

शलूका—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार का आधी बाँह का कुरता जो कमर तक होता है।

शल्ल—(अ०) (वि०) शिथिल। देखो 'शल'।

शल्लक—(तु०) (सं० स्त्री०) बंदूकों या तोपों की बाढ़ जो सलामी के लिए या हर्ष के अवसर पर चलाई जाती है। शल्लक उड़ाना—गप्प उड़ाना।

शवाहिद—(अ०) (सं० पु०) सबूत, मिसालें, गवाह। 'शाहिद' का बहुवचन।

शव्वाल—(अ०) (सं० पु०) मुसलमानों के वर्ष का दसवाँ चान्द्र मास।

शश—(फ़ा०) (वि०) छै।

शश ओ-पंज—(पु०) उधेड़-बुन, फ़िक्र-अंदेशा, घबराहट, हैरानी। शश-ओ-पंज में पड़ना—फ़िक्र में पड़ना, उधेड़-बुन में ग्रस्त होना। शश-ओ-पंज में होना—

शश जहत—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) छै दिशाएँ, उत्तर, दक्षिण, पूर्व, पश्चिम, ऊपर, नीचे; (२) सम्पूर्ण विश्व।

शश-दर—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) दुनिया, आलम, विश्व, संसार; (२) वह स्थान जहाँ से छूटना कठिन हो। (वि०) हैरान, परेशान, चकित।

शश-दाँग—(फ़ा०) (वि०) तमाम और कुल; अखिल विश्व, तमाम दुनिया।

शश-पहल, शश-पहलू—(वि०) षट्-कोण, छै पहलू का, छै कोने का।

शशम—(फ़ा०) (वि०) छठा हिस्सा, छठवीं चीज़।

शश-माही—(फ़ा०) (वि०) छै महीने का, आधे वर्ष का।

शश-रंगा—(लख०) एक प्रकार का हलवा जो अंडे और शकर से बनाया जाता है।

शश-रोज़—(फ़ा०) (सं० पु०) दुनिया की पैदायश (सृष्टि) के छै दिन।

शस्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) निशाना, लक्ष्य, हदफ़, सीध; (२) मिज़राब जिससे सितार बजाते हैं; (३) मछली पकड़ने का काँटा; (४) वह पुरज़ा या छल्ला जिसे दर्ज़ी और तीर-दाज़ उंगली में पहन लेते हैं। शस्त बाँधना, शस्त लगाना—सीध बाँधना।

शह—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) बादशाह (२) दूल्हा, वर। ('शाह' का संक्षिप्त)। (सं० स्त्री०) (१) किश्त, शतरंज खेलने में अपने मोहरे ऐसी जगह चलना कि दूसरे के बादशाह को अपनी जगह से हटना पड़े; (२) मदद; सहायता, हिमायत; (३) बहकाना, उकसाना; (४) (उ०) ढील, धीरे धीरे पतंग को डोर पिलाना। (वि०) बढ़कर, ज्यादा अच्छा। शह पाना—इशारा पाना।

शहं-कारा—(हि०) (सं० स्त्री०) बदकार, बहुत ख़राब औरत।

शह-ज़ादा—देखो—'शाह-ज़ादा' ।

शहज़ोर—(फ़ा०) (वि०) बलवान्, ज़बरदस्त ।

शह-ज़ोरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ज़बरदस्ती, ताक़त, पहलवानी ।

शहतीर—(फ़ा०) (सं० पु०) बड़ी कड़ी, लट्ठा ।

शहतूत—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) एक फल; (२) उस फल का पेड़ ।

शहद—(अ०) (सं० पु०) (१) मधु; (२) बहुत मीठा । शहद की मक्खी—(१) शहद जमा करने वाली मक्खी; (२) लालची, (३) वह आदमी जो सिर हो जाय और पीछा न छोड़े । शहद की छुरी—मीठी छुरी; ज़बान का मीठा, दिल का खोटा, जो मित्रता की ओट में बैर करे ।

शहना—(अ०) (सं० पु०) (१) कोतवाल, (२) चौकीदार, खेत की फ़सल की निगहबानी करनेवाला ।

शहनाई—(फ़ा०) (दे० स्त्री०) एक प्रकार का बाजा जो मुँह से बाँसरी की तरह बजाते हैं ।

शह-पर—(फ़ा०) (सं० पु०) पक्षी का सब से बड़ा पर ।

शहबाज़—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार का बड़ा बाज़ (पक्षी) ।

शह-बाला—(फ़ा०) (सं० पु०) वह छोटी उम्र का लड़का जो सुसज्जित करके विवाह के समय दूल्हा के साथ जाता है ।

शहम—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) मोटा-पन, मोटाई; (२) चरबी; (३) गूदा ।

शह-मात—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) शतरंज के खेल में किश्त देकर मात करना; (२) बोलने की जगह नहीं है । शहमात करना—क़ायल करना, ज़बान बंद करना ।

शहर—(फ़ा०) (सं० पु०) नगर, बड़ी आबादी । कहा०—शहर में ऊँट बदनाम—मशहूर आदमी की शामत आती है, नामी चोर मारा जाय ।

शहर-गर्द शहर-गश्त—(पु०) शहर में गश्त करने वाला ।

शहर-पनाह, शहर-बन्द—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शहर की चार-दीवारी ।

शहर-बदर—(वि०) जला-वतन, निर्वासित ।

शहर-यार—(फ़ा०) (सं० पु०) अपने समय का सब से बड़ा बादशाह ।

शहर-शमला—(उ०) (औ०) अंधेर नगरी ।

शहरियत—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) नागरिकता, शहरी-पन; गवाँर-पन का उलटा ।

शहरी—(फ़ा०) (वि०) (१) शहर से सम्बन्धित, शहर का; (२) नागरिक, शहर में रहनेवाला ।

शहरे-ख़मोशाँ—(फ़ा०) (सं० पु०) क़ब्रिस्तान ।

शहला—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) वह स्त्री जिसकी आँखें भेड़ के समान काली या भूरी हों; (२) एक प्रकार की नरगिस जिसके फूल स्याह होते हैं और उसकी उपमा आँख से दी जाती है ।

शहवत—(अ०) (सं० स्त्री०) कामेच्छा, काम-वासना ।

शहवत-अंगेज़—(अ०) (वि०) कामोद्दीपक, काम-वासना बढ़ानेवाला ।

शह-वत-परस्त—(अ०) (वि०) कामुक, ऐय्याश ।

शहसवार—(अ०) (पु०) घोड़े की सवारी में दक्ष । शाह—7 शह; शाह17

शहादत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) गवाही, इज़हार; (२) शहीद होना, धर्म के नाम पर मारा जाना, बलिदान हो जाना (३) क़त्ल, ज़िबह ।

शहादत-नामा—(पु०) (१) वह किताब जिसमें हज़रत इमाम हुसेन की शहादत

का हाल हो; (२) कपड़े पर कलमा शहादत लिख कर मुरदे के कफ़न पर रखते हैं।

शहाना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) एक राग; (२) लाल रंग की विशेष प्रकार की चूड़ियाँ; (३) शादी का जोड़ा, दूल्हा की लाल रंग की पोशाक। (वि०) बढ़िया; ठाठ-दार, राजसी।

शहाब—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार का गहरा लाल रंग।

शहाबी—(फ़ा०) (वि०) (१) सुर्ख़; (२) (औ०) झलक, अक्स; (३) एक क़िस्म की महताबी जिसमें लाल रंग निकलता है।

शहामत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) बड़प्पन, (२) दिलेरी, वीरता।

शही—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बादशाही।

शहीद—(अ०) (वि०) (१) धर्म-वीर, धर्म पर बलिदान होने वाला; (२) जो नाहक़ मारा जाय; क़ुर्बान; (३) गवाह। शहीद होना—(१) नाहक़ मारा जाना, मारा जाना; (२) आशिक़ होना; (३) नष्ट होना।

शहीम—(अ०) (वि०) मोटा, स्थूल।

शाअर—(अ०) (सं० पु०) कवि। (देखो —'शायर')।

शाइबा—(अ०) (सं० पु०) आलूदगी, मिलावट, लिथड़ना।

शाइस्तगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सभ्यता, योग्यता, शिष्टता, भलमंसी।

शाइस्ता—(फ़ा०) (वि०) शिष्ट, सभ्य, लायक़, शिक्षित, सीधा।

शाक़—(अ०) (वि०) (१) कठिन, दुष्कर, मुश्किल; (२) ना-गवार, दूभर, असह्य; (३) अप्रिय, नापसंद। शाक़ गुज़रना —बुरा लगना; दूभर होना, ना-गवार होना। शाक़ होना—ना-गवार होना।

शाकिर—(अ०) (वि०) सब्र करनेवाला, धैर्यवान्, उपकार माननेवाला, कृतज्ञ। कहा०—शाकिर को शक्कर, मूज़ी को टक्कर—शाकिर को ईश्वर सुख देता है और मूज़ी को दुःख।

शाकी—(अ०) (वि०) (१) शिकायत करने वाला, पुकार करनेवाला (२) अपना दुःख सुनाने वाला, (३) चुग़ली खाने वाला।

शाक़ूल—(फ़ा०) (सं० पु०) राज-मज़दूरों का एक औज़ार जिससे दीवार की सीध देखते हैं।

शाक़्क़ा—(अ०) (वि०) कठिन, मुश्किल, सख़्त।

शाख़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) टहनी, डाली, डाल; (२) टुकड़ा, खंड; (३) ऐब, दोष, नुक़्स; (४) कमान की लकड़ी; (५) झगड़ा, पख़, झंझट; (६) ख़ूबी, उम्दगी, (७) अनोखी बात, (८) एक प्रकार का पकवान; (९) संतान, वंश, (१०) सींग, हिरन का सींग; (११) क़िस्म, प्रकार; (१२) बारूद रखने का पात्र।

शाख़चा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) टहनी, डाली; (२) तुहमत, अभियोग।

शाख़-दर-शाख़—(फ़ा०) (वि०) (१) दूर तक की जगह; (२) उलझा हुआ।

शाख़-दार—(फ़ा०) (वि०) टहनीवाला; सींगवाला।

शाख़-साना—(फ़ा०) (स० पु०) (१) तकरार, फ़िसाद, लड़ाई, बहस, विवाद; (२) ऐब, बद-गुमानी, कलंक; (३) सन्देह, शक; (४) बहाना, दम, ढकोसला, दग़ा, मकर, फ़रेब।

शाख़-सार—(फ़ा०) (सं० पु०) वह जंगल जहाँ शाख़-वाले पेड़ बहुत हों।

शाखे.-आहू—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) हिरन का सींग।

शाखे.-ग़ज़ाल—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) हिरन का सींग; (२) कमान; (३) दूज का चाँद।

शाखे-ज़ाफ़रान—(फ़ा०) (वि०) अजीब, विलक्षण, अनोखा, नादिर।

शाखे-दरिया—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दरिया या नदी का वह हिस्सा जो अपनी धार से अलग होकर दूसरी ओर बहता हो।

शाखे-नबात—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मिसरी के कूज़े में लगी हुई लकड़ी।

शागिर्द—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सेवक, नौकर; (२) शिष्य, चेला।

शागिर्द-पेशा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) अमला, दफ़्तर में काम करनेवाले; (२) नौकर-चाकर, ख़िदमत-गार; (३) छोटे छोटे नौकरों के रहने के वह मकान जो मालिक की कोठी के पास बने रहते हैं।

शागिर्द-रशीद—(फ़ा०) (सं० पु०) योग्य शिष्य, लायक़ शागिर्द।

शागिर्दी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) शिष्यता; (२) सेवा, टहल।

शाग़िल—(अ०) (वि०) (१) व्यस्त, मसरूफ़; (२) ईश्वर-चिन्तन करनेवाला, ख़ुदा का ज़िक्र करनेवाला।

शाज़—(अ०) (वि०) (१) अकेला; एकाकी; (२) अनुपम, बेजोड़; (३) नियम-विरुद्ध, असाधारण, अनोखा, नादिर, कम। (क्रि० वि०) कभी कभी, इत्तफ़ाक़न्, गाहे गाहे।

शाज़-ओ-नादिर—(अ०) (क्रि० वि०) कभी-कभी।

शातिर—(अ०) (सं० पु०) (१) चालाक, ऐय्यार, धूर्त; (२) चोर, गिरह काटनेवाला; (३) दूत; (४) वह शख़्स जो किसी पर बार न हो; (५) शतरंज का खिलाड़ी।

शाद—(फ़ा०) (वि०) (१) प्रसन्न, ख़ुश, हर्ष से भरा; (२) भरा हुआ, पूर्ण।

शाद-काम—(फ़ा०) (वि०) ख़ुश-हाल, सफल; कामयाब।

शाद-कामी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ख़ुश-हाली, सफलता।

शाद-बाश—(फ़ा०) (अव्यय) (१) शाबाश, (२) ख़ुश रहो।

शाद-मान, शाद-मन्द—(फ़ा०) (वि०) प्रसन्न, ख़ुश।

शादाँ—(फ़ा०) (वि०) प्रसन्न, मुदित।

शादान—(फ़ा०) (वि०) (१) उपयुक्त, योग्य, उचित, मुनासिब, ठीक; (२) श्रेष्ठ, उत्तम।

शादाब—(फ़ा०) (वि०) सर-सब्ज़, हरा-भरा, तरो-ताज़ा।

शादाबी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) तरो-ताज़गी, सरसब्ज़ी, हरियाली।

शादियाना—(फ़ा०) (वि०) (१) मंगल-गीत; (२) ख़ुशी के बाजे, नौबत; (३) मुबारक-बाद, बधाई, बधावे, ख़ुशी के गीत; (४) वह रुपया जो ज़मींदार के यहाँ विवाह के अवसर पर काश्तकारों को देना पड़ता है।

शादी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) उत्सव, जशन, त्योहार; (२) आनन्द, मंगल; (३) विवाह; (४) पुत्र-जन्म की ख़ुशी। शादी करना—(१) विवाह करना; (२) ख़ुशी मनाना; (३) घोड़े या मकान का बेचना; (४) नये मकान में रहने से पहले दावत देना, गृह-प्रवेश करना। कहा० —शादी ख़ाना आबादी—विवाह करने से घर आबाद होता है।

शादी-मर्ग—(फ़ा०) (वि०) जो ख़ुशी के के मारे मर गया हो; हर्ष की अधिकता के कारण मर जानेवाला। (सं० स्त्री०) ऐसी मृत्यु जो आनन्द के आधिक्य से हो।

शान—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) हक़, सम्बन्ध, निसबत, (२) शौकत, दबदबा, ठाठ, तड़क-भड़क; (३) शक्ति, क़ुदरत, ताक़त; (४) आन, करामात, विभूति; (५) सूरत, ढंग; (६) प्रतिष्ठा, मान, वैभव।

शान-दार—(अ०) (वि०) धूम-धाम का, ठाठ-बाट का, दर्शनीय।

शान-शौकत—(अ०) (सं० स्त्री०) रौब-दाब, ठाठ-बाट, तड़क-भड़क।

शाना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) कंघी, कंघा; (२) कांधा, कंधा।

शाना-बीं—(फ़ा०) (वि०) शकुन देखनेवाला।

शाने-ख़त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) लिखने का अंदाज़, ढंग।

शाने-ख़ुदा—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) परमेश्वर की लीला।

शाने-नज़ूल—(अ०) (सं० स्त्री०) क़ुरान-शरीफ़ की किसी आयत (मंत्र) के उतरने का अवसर।

शापूर—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) एक चित्रकार का नाम जो ख़ुसरो-परवेज़ के यहाँ नौकर था और शीरीं के चित्र बनाया करता था; (२) एक प्रसिद्ध पहलवान का नाम।

शाफ़ई—(अ०) (सं० पु०) मुसल्मानों की सुन्नी सम्प्रदाय के चार इमामों में से एक का नाम।

शाफ़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) दवा में तर की हुई रुई की बत्ती, जो घाव में या गुदा में रखते हैं; (२) दवा या साबुन की बत्ती।

शाफ़ी—(अ०) (वि०) (१) शफ़ा देनेवाला, नीरोग करनेवाला, संतोष देनेवाला; (२) संतोष-प्रद, सीधा, पूरा-पूरा, साफ़।

शाफ़ी-ए-मुतलक़, शाफ़ी-ए-हक़ीक़ी—(पु०) असली सेहत देनेवाला, ईश्वर।

शाब—(अ०) (सं० पु०) जवान।

शाबश—(फ़ा०) शाबाश का संक्षिप्त रूप।

शाबान—(अ०) (सं० पु०) अरबी वर्ष का आठवाँ चान्द्र मास, जिसमें शब-बरात होती है।

शाबानी — (अ०) (सं० स्त्री०) वह हलवा जो शब-बरात में बनाते और बाँटते हैं।

शाबाश—(फ़ा०) (अव्यय) वाह-वाह, साधु साधु, ख़ुश रहो, क्या कहना (प्रशंसा-सूचक शब्द)।

शाबाशी—(अ०) (सं० स्त्री०) प्रशंसा, पीठ ठोकना।

शाम—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) संध्या, सूर्यास्त का समय; (२) अन्तिम समय। (सं० पु०) एक देश का नाम। शाम-सुबह लगाना—हीला-हवाला करना, टाल-मटूल करना। शाम की पूछना, सहर की कहना—बेतुका जवाब देना, कुछ का कुछ जवाब देना।

शाम-गाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शाम का वक़्त, संध्या-समय।

शाम-घात— (हि०) (सं० स्त्री०) (पटेबाज़ों की बोली) जिस तरफ़ दुश्मन मारे उसी तरफ़ मुक़ाबिलेवाला भी वार करे।

शामत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) दुर्भाग्य, बद-क़िस्मती; (२) बुराई, आफ़त, विपत्ति; (३) दुर्दशा, मुसीबत। शामत का मारा—ख़राब-हाल, आपद्-ग्रस्त। शामत की मार—कम-बख़्ती, दुर्भाग्य। शामत आना—बुरे दिन आना, कम-बख़्ती आना। शामत का घिरना—बुरे दिन आना, शामत आना। शामत भुगतना—किये की सज़ा पाना। शामत में फँसना—मुसीबत में फँसना। शामत सर पर खेलना, शामत सवार होना—शामत आना, बुरे दिन आना। शामत होना—कम-बख़्ती होना, दुर्भाग्य होना।

शामत-ज़दा—(अ०) (वि०) बद-नसीब, अभागा, कम-बख़्ती का मारा।

शामती—(वि०) (औ०) बद-नसीब, कम-बख़्ती का मारा।

शामते-एमाल—(अ०) (सं० स्त्री०) गुनाहों की सज़ा, सज़ा, कर्मों का फल।

शामियाना—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार का ख़ेमा, सायबान, बड़ा तम्बू।

शामिल—(अ०) (वि०) साथ, इकट्ठा, सम्मिलित, शरीक।

शामिल-मिस्ल—(वि०) मुक़दमे के काग़ज़ात के साथ नत्थी किया हुआ।

शामिल-हाल—(अ०) (वि०) शरीक-हाल, हर दशा में साथ देनेवाला। (क्रि० वि०) साझे में, साथ मिलकर।

शामिलात—(अ०) (सं० स्त्री०) साझा, हिस्सा।

शामी—(अ०) (वि०) शाम देश से सम्बन्ध रखनेवाला, शाम देश का। (सं० पु०) शाम देश का रहनेवाला। (सं० स्त्री०) शाम देश की भाषा।

शामी-कबाब—(पु०) एक खाना; गोश्त को मसाला मिला कर उबालते हैं और फिर पीस कर टिकिया बना कर और डोरे बाँध कर तल लेते हैं। शाम देश में इनका रिवाज है।

शामे-गरीबाँ—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मुसीबत की शाम, ग़रीबी की शाम, यात्रियों की संध्या जो बीहड़ स्थानों में पड़ती है।

शामे-जवानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) आख़िरी जवानी, जवानी का उतार।

शाम्मा—(अ०) (सं० पु०) सूँघने की शक्ति, घ्राण-शक्ति।

शायक़—(अ०) (वि०) चाहनेवाला, प्रेमी, शौक़ रखनेवाला, उत्सुक।

शायद—(फ़ा०) (क्रि० वि०) संभवतः, कदाचित्, स्यात्।

शायर—(अ०) (सं० पु०) कवि, शेर कहनेवाला।

शायरा—(अ०) (सं० स्त्री०) कवयित्री, स्त्री-कवि।

शायराना—(फ़ा०) (वि०) शायर के ढंग से; अत्युक्ति-पूर्ण।

शायरी—(अ०)(सं० स्त्री०) (१) कविता, काव्य-रचना, शेर-गोई; (२) अत्युक्ति।

शायाँ—(फ़ा०) (वि०) लायक़, मुनासिब, उपयुक्त, मौज़ूँ, अभीष्ट।

शाया—(अ०) (वि०) (१) ज़ाहिर, प्रकट; (२) प्रकाशित, छपा हुआ।

शारअ—(अ०) (सं० पु०) (१) बड़ी राह, सड़क, राज मार्ग; (२) शरीअत बनानेवाला, धर्म-मार्ग बतलानेवाला।

शारअ-आम—(अ०) (सं० पु०) आम रास्ता, शाह राह, राज-मार्ग।

शारअ-इस्लाम—(अ०) (सं० पु०) मोहम्मद साहब।

शारक—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मैना।

शारह—(अ०) (सं० पु०) टीकाकार, शरह लिखनेवाला।

शारिक़—(अ०) (सं० पु०) सूर्य।

शारिब—(अ०) (वि०) पीनेवाला।

शाल—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ऊनी या रेशमी चादर, दुशाला।

शाल-दोज़—(फ़ा०) (वि०) शाल पर काम बनानेवाला।

शाल-बाफ़—(फ़ा०) (वि०) शाल बनानेवाला। (सं० पु०) एक प्रकार का लाल रंग का रेशमी कपड़ा।

शाल-बाफ़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शाल बुनने का काम; शाल-बाफ़ (कपड़े) से सम्बन्धित।

शाली—(फ़ा०) (वि०) शाल का।

शाशा—(फ़ा०) (सं० पु०) पेशाब, मूत्र।

शाह—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) ईश्वर, ख़ुदा; (२) स्वामी, मालिक; (३) बादशाह; (४) साधुओं की उपाधि; (५) वर, दूल्हा; (६) शतरंज का एक मोहरा; (७) मूल, जड़। (वि०) बढ़कर, बड़ा।

शाहज़ादा—(फ़ा०) (सं० पु०) राजकुमार, बादशाह का बेटा।

शाह-ज़ादी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) राजकुमारी, बादशाह की बेटी।

शाहतरा—(फ़ा०) (सं० पु०) एक बूटी का नाम जो दवा में काम आती है।

शाह-दरिया—(फ़ा०) (सं० पु०) औरतों का कल्पित जिन या भूत।

शाह-नामा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) फ़ारस का एक प्रसिद्ध ग्रंथ; (२) बादशाहों का इतिहास।

शाहन्-शाह—(फ़ा०) (सं० पु०) राजाओं का राजा, सम्राट्।

शाहन्-शाही—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शाहन्-शाह का पद, राज्य।

शाह-बरहना—(फ़ा०) (सं० पु०) स्त्रियों का एक कल्पित भूत जो नग्न रहता है।

शाह-बलूत—(फ़ा०) (सं० पु०) एक बड़ा वृक्ष जिसमें फल लगते हैं।

शाह-बाज़ (शह-बाज़)—(फ़ा०) (सं० पु०) बड़ा बाज़, (शिकारी पक्षी)।

शाह-बाला—(फ़ा०) (सं० पु०) देखो—'शह-बाला'।

शाह-राह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) राज-मार्ग, सड़क, आम रास्ता।

शाहवार—(फ़ा०) (वि०) बादशाहों के योग्य, राजोचित।

शाहाना—(फ़ा०) (वि०) (१) राजसी, बादशाही, राजकीय, राजाओं के योग्य; (२) बहुत बढ़िया, बहु-मूल्य। (सं० पु०) (१) विवाह के समय का वर का लिबास; (२) एक राग का नाम। शाहाना जोड़ा—दूल्हा की सुर्ख़ पोशाक।

शाहाना-मिज़ाज—नाज़ुक मिज़ाज, बादशाहों जैसा स्वभाव।

शाहाना-वक़्त—शाम का वक़्त, संध्या काल।

शाहिद—(अ०) (सं० पु०) गवाह, साक्षी। (फ़ा०) (वि०) बहुत सुन्दर।

शाहिद-आदिल—सच्चा गवाह।

शाहिद-बाज़—(अ०) (वि०) सुन्दरियों से सोहबत रखनेवाला, सौन्दर्य-प्रेमी।

शाहिद-बाज़ार—(अ०) (वि०) बाज़ारी माशूक़, वेश्या।

शाहिद-बाज़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) सौन्दर्योपासना।

शाहिद-हाल—(अ०) (वि०) घटना का आँखों से देखनेवाला गवाह, चश्म-दीद गवाह।

शाहिदी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) साक्षी, गवाही, शहादत; (२) तराज़ू की डंडी।

शाहीं—(फ़ा०) (सं० पु०) एक सफ़ेद रंग का शिकारी पक्षी।

शाही—(फ़ा०) (वि०) बादशाहों का सा, राजसी। (सं० स्त्री०) शासन, हुकूमत, राज्य।

शाहीन—(फ़ा०) (सं० पु०) देखो—'शाहीं'।

शिंगरफ़—(फ़ा०) (सं० पु०) हिंगुल।

शिआर—(अ०) (सं० पु०) (१) बदन से लगा हुआ कपड़ा; (२) पोशाक, वस्त्र; (३) तर्ज़, रविश, ढंग, चाल; (४) आदत, अभ्यास। (यौगिक के अन्त में 'आदत रखनेवाला, का अर्थ देता है)।

शिकंजा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) अपराधियों को सख़्त सज़ा देने का यंत्र; (२) दाब प्रेस, जिल्द-साज़ों का किताबें दबाकर काटने का यंत्र; (३) दुःख, यंत्रणा, अज़ाब; (४) (उ०) रुई दबाने की कल, कोल्हू पेलने का आला (यंत्र)। शिकंजे में खींचना—सख़्त सज़ा देना, हर तरफ़ से जकड़ देना, बहुत तंग करना।

शिक़—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) टुकड़ा, हिस्सा; (२) तरफ़, ओर; (३) क़िस्म, प्रकार।

शिकन—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सिलवट, सिकुड़न, झोल।

शिकन-दर-शिकन—(फ़ा०) (वि०) पेचदार।

शिकनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) तोड़ना, तोड़ने की क्रिया।

शिकम—(फ़ा०) (सं० पु०) पेट; उदर।

शिकम-परवर, शिकम-बन्दा—(फ़ा०) (वि०) पेट भरने वाला, स्वार्थी, पेटू।

शिकम-सेर—(फ़ा०) (वि०) पेट-भरा, संपन्न।

शिकमी—(फ़ा०) (वि०) (१) शिकम या पेट से सम्बन्ध रखनेवाला; (२) मादरज़ाद, पैदायशी; (३) अंदरूनी, भीतरी, अंतर्गत।

शिकमी-काश्तकार—(फ़ा०) (सं० पु०) वह काश्तकार जिसने असली काश्तकार से खेत जोतने को लिया हो, ज़मींदार से नहीं।

शिकरा—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार का बाज़ (शिकारी पक्षी)। शिकरा पालना—अपने ऊपर भार लेना।

शिकरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार का फ़ालसा जो बहुत मीठा और बड़ा होता है।

शिकवा—(फ़ा०) (सं० पु०) शिकायत, गिला।

शिकवा-गुज़ार—(फ़ा०) (वि०) शिकायत करनेवाला।

शिकवा-मंद—(फ़ा०) (वि०) गिला करनेवाला, शिकायत करनेवाला।

शिकस्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) हार, पराजय; (२) टूट-फूट।

शिकस्तगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) टूट-फूट, ख़स्तगी।

शिकस्त-बन्द—(फ़ा०) (सं० पु०) एक क़िस्म का कुल्ला जो टूटता है और बंद हो

शिकस्त-रेख़्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) टूट-फूट, नुक़सान, हरजा।

शिकस्ता—(फ़ा०) (वि०) (१) ख़राब, गिरा हुआ, बे-रौनक़, टूटा-फूटा; (२) (उ०) घसीट कर लिखा हुआ।

शिकस्ता-ख़ातिर—(फ़ा०) (वि०) ग़मग़ीन, रंजीदा, दुःखी; शोक-ग्रस्त।

शिकस्ता-बाज़ू—(फ़ा०) (वि०) बे-कस, निःशक्त, बे-क़ुव्वत।

शिकस्ता-हाल—(फ़ा०) (वि०) परेशान, मुहताज, बेचारा।

शिकस्ते-क़ीमत—(फ़ा०) (वि०) पहले भाव से क़ीमत का कम होना।

शिकस्ते-फ़ाश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) भारी शिकस्त, गहरी हार।

शिकायत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) बुराई, दुखड़ा, गिला; (२) उलाहना, उपालंभ; (३) दुःख, तकलीफ़; (४) रोग, बीमारी।

शिकायत-मंद—(अ०) (वि०) शिकायत करनेवाला।

शिकार—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) जानवरों को मारना; आखेट, मृगया; (२) वह जानवर जिसका मारना लक्ष्य हो; (३) वह जानवर जो मारा गया हो; (४) आहार, भक्ष्य; (५) गोश्त, माँस; (६) मुफ़्त का माल; (७) आसामी, जिसे फँसाने और मारने से लाभ हो।

शिकार-गाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) शिकार खेलने का स्थान; (२) काग़ज़ की कंदील जिसमें काग़ज़ के हाथी घोड़े चलते फिरते नज़र आते हैं।

शिकार-बन्द—(फ़ा०) (सं० पु०) वह तस्मा जो घोड़े की दुम के पास पीछे की ओर इसलिए बाँधते हैं कि उसमें कोई सामान या शिकार किया हुआ जानवर लटकाया जा सके।

शिकारी—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) शिकार करनेवाला; (२) शिकार में काम आने-

वाला; (३) वह जानवर जो शिकार हुआ हो।

शिकाल—(फ़ा०) (वि०) ऐब-दार घोड़ा, जिसका दायाँ हाथ या बायाँ पाँव सफ़ेद हो।

शिकेब, शिकेबाई—(फ़ा०) (सं०) संतोष, सब्र, बुर्दबारी।

शिकोह—(सं० पु०) देखो 'शकोह'।

शिगाफ़—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) नश्तर, चीरा; (२) सूराख़, छेद; (३) दर्ज़, दरार। शिगाफ़ देना—नश्तर लगाना।

शिगाफ़ पड़ना—फट जाना।

शिग़ाल—(फ़ा०) (सं० पु०) सियार, शृगाल।

शिगुफ़्ता—(वि०) देखो 'शगुफ़्ता'।

शिगूफ़ा—(सं० पु०) देखो 'शगूफ़ा'।

शिता—(अ०) (सं० पु०) जाड़ा, सरदी का मौसम।

शिताब—(फ़ा०) (क्रि० वि०) जल्दी, झट-पट, शीघ्र।

शिताब-कार—(फ़ा०) (वि०) (१) जल्दी काम करनेवाला; (२) जल्दी करनेवाला, जल्द-बाज़, उतावला।

शितावा—(फ़ा०) (सं० पु०) वह काग़ज़ जिसे बारूद में तर करके सुखा रखते हैं और फ़लीता की जगह काम में लाते हैं।

शिताबी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शीघ्रता, जल्दी, तेज़ी, घबराहट।

शिताहाँ—(फ़ा०) (वि०) जल्द-बाज़, तेज़ी करता हुआ।

शिद्दत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) तेज़ी, जोश, ज़ोर, उग्रता; (२) सख़्ती, कठिनता; (३) ज़्यादती, अधिकता; (४) जब्र, अत्याचार, ज़बरदस्ती। शिद्दत करना—ज़बरदस्ती करना, ज़ुल्म करना।

शिना—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) तैरना, पानी में हाथ-पैर मारना।

शिनाख़्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) देखो—'शनाख़्त'।

शिनावर—(फ़ा०) (वि०) पैरनेवाला, तैराक।

शिनावरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पैरना।

शिनास—(फ़ा०) (वि०) पहचाननेवाला। देखो—'शनास'।

शिनासा—(फ़ा०) (वि०) पहचाननेवाला, परखनेवाला।

शिनासाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पहचान, परिचय, वाक़फ़ियत।

शिनीश्र—(अ०) (वि०) बद, ख़राब, बुरा।

शिप्पा—(लख०) टिप्पस।

शिफ़ा—(अ०) (सं० स्त्री०) देखो—'शफ़ा'।

शिफ़ाअत—देखो—'शफ़ाअत'।

शिब्ब—(अ०) (सं० स्त्री०) फिटकरी।

शिमाल—देखो 'शुमाल'।

शियाफ़—(अ०) (सं० पु०) शाफ़ा, दवाओं की बत्ती जो घाव में या गुदा में रखी जाती है।

शिरकत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) शामिल होना, शरीक होना; (२) साझा, सहयोग।

शिरयान—(अ०) (सं० स्त्री०) शिरा, छोटी नस, रग।

शिरा—(अ०) (सं० स्त्री०) ख़रीदारी।

शिर्क—(अ०) (सं० पु०) ईश्वर के अतिरिक्त अन्य देव-देवियों को मानना, जिसे मुसल्मान अधर्म समझते हैं।

शिलंग—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) चौकड़ी, छलाँग; (२) डग, क़दम।

शिलांग—(सं० पु०) दूर-दूर टाँके लगा कर सीना, मोटी सिलाई।

शिस्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) देखो 'शस्त'।

शिह्ना—(सं० पु०) देखो 'शहना'।

शिहाब—(अ०) (सं० पु०) (१) आकाश से टूटनेवाला तारा; (२) आग की लपट।

शिहाबा—(उ०) (पु०) अगियाबैताल, भूत-प्रेत।

शीआ—(अ०) (सं० पु०) (१) मुसल्मानों की एक सम्प्रदाय के लोग; (२) वह गिरोह या उस गिरोह का कोई आदमी जो हज़रत अली और उनकी औलाद को माननेवाला हो और बाक़ी तीनों सहाबा को उनसे कम पूज्य समझता हो; (३) इमामिया मज़हबवाला।

शीन—(अ०) (सं० पु०) अरबी वर्ण-माला का एक अक्षर। शीन क़ाफ़ दुरुस्त होना—उच्चारण शुद्ध होना।

शीर—(फ़ा०) (सं० पु०) दूध।

शीर-ओ-शकर—(फ़ा०) (वि०) (१) एक प्रकार का उम्दा रेशमी कपड़ा; (२) ख़ूब मिले हुए। शीर-ओ-शकर होना—आपस में ख़ूब मिल-जुल जाना।

शीर-ख़िश्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार की दस्तावर दवा।

शीर-ख़ोर—(फ़ा०) (वि०) दूध-पीता बच्चा।

शीर-ख़ोरगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वह उम्र जिसमें बच्चा दूध पीता है।

शीर-गर्म—(फ़ा०) (वि०) नीम-गर्म, कुनकुना।

शीरनी—(सं० स्त्री०) शीरीनी, मिठाई।

शीर-बिरंज—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) खीर।

शीर-माल—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मैदा की ख़मीरी रोग़नी रोटी जिसके पकाने में दूध का छींटा देते हैं।

शीरा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) अर्क़ जो किसी चीज़ को पीस कर निकाला जाय; (२) चाशनी, क़िवाम; (३) पतला गुड़।

शीराज़—(फ़ा०) (सं० पु०) फ़ारस का एक प्रसिद्ध शहर।

शीराज़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) वह फ़ीता जो किताब की जुज़-बन्दी के बाद पुश्ते के दोनों तरफ़ लगा देते हैं; (२) सिलाई जो किताब और पुट्ठों पर की जाती है; (३) इन्तज़ाम, बंदोबस्त, सिल-सिला, बन्दिश, संगठन। शीराज़ा बाँधना—अस्तव्यस्त वस्तु को इकट्ठा करना। शीराज़ा (खुलना, टूटना) बिखरना—अबतरी पड़ना, इन्तज़ाम क़ायम न रहना।

शीराज़ा-बन्दी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) जुज़-बन्दी, किताब की सिलाई।

शीराज़ी—(फ़ा०) (वि०) शीराज़ नगर का निवासी, शीराज़ शहर का। (सं० पु०) एक प्रकार का कबूतर।

शीरीं—(फ़ा०) (वि०) (१) मीठा, मधुर; (२) प्रिय, दिल-पसंद।

शीरीनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) मिठास; (२) मिठाई।

शीरे-बिरंज—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) चावलों की खीर।

शीरे-मादर—(फ़ा०) (सं० पु०) मा का दूध, हलाल।

शीशए-साइत—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार का समय नापने का यंत्र; पुरानी चाल की घड़ी, जिसमें बालू भर दिया जाता था और जब वह नीचे के छेद से गिर जाता था, तो समय का अंदाज़ लगाते थे।

शीश-गर—(फ़ा०) (वि०) शीशा और शीशे की चीज़ें बनानेवाला।

शीश-महल—(फ़ा०) (सं० पु०) वह मकान जिसमें चारों तरफ़ शीशे लगे हों। शीश-महल का कुत्ता—बौखलाया हुआ कुत्ता; दीवाना, बावला आदमी।

शीशा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) काँच, एक पार-दर्शी धातु; (२) बोतल, काँच की सुराही; (३) आईना, दर्पण, आरसी; (४) झाड़-फ़ानूस। शीशे में उतारना—क़ाबू में लाना, ग़ुस्सा कम कर देना। शीशे में ढालना—क़ाबू में लाना।

शीशा-आलात—रोशनी का साज़-सामान।

शीशा-बाज़—(फ़ा०) (सं० पु०) शोबदा-बाज़, बाज़ीगर।

शीशी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शीशे का पात्र, जिसमें दवा, तेल आदि रखते हैं।

शुआअ—(अ०) (सं० स्त्री०) सूर्य की किरण, किरण, रश्मि।

शुआर—(सं० पु०) देखो 'शिआर'।

शुकराना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) शुक्रिया, धन्यवाद, कृतज्ञता; (२) वह धन जो धन्यवाद के रूप में मेहनताने के अतिरिक्त वकील को दिया जाय।

शुक़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) फ़रमान-शाही, वह रुक्का जो बादशाह की ओर से किसी को लिखा जाय; (२) वह कपड़ा जो अलम में बाँधते हैं।

शुक्र—(अ०) (सं० पु०) कृतज्ञता, धन्य-वाद, अहसान मानना। शुक्र करना, शुक्र अदा करना—धन्यवाद देना।

शुक्र-गुज़ार—(अ०) (वि०) शुक्र अदा करनेवाला, धन्यवाद देनेवाला, कृतज्ञ, आभारी, अनुगृहीत।

शुक्रिया—(अ०) (सं० पु०) धन्यवाद, किसी के अहसान को तारीफ़ के साथ प्रकट करना।

शुग़ल—(अ०) (सं० पु०) देखो 'शग़ल'।

शुजाअ—(अ०) (वि०) दिलेर, वीर, बहादुर।

शुजाअत—(अ०) (सं० स्त्री०) वीरता, बहादुरी, दिलेरी।

शुतरी—(फ़ा०) (वि०) (१) ऊँट के रंग का; (२) ऊँट के बालों का बना हुआ। (सं० पु०) ऊँट की पीठ पर रख कर बजाया जानेवाला नक्कारा।

शुतुर—(फ़ा०) (सं० पु०) ऊँट। शुतुर बे-मुहार—(१) बे-नकेल का ऊँट; (२) आज़ाद और क़ाबू से बाहर, निडर, आवारा।

शुतुर-कीना—(फ़ा०) (सं० पु०) वह शख़्स जिसका कीना और कपट कभी न निकले, दिली अदावत, दिली दुश्मनी। (ऊँट बदला लेकर ही छोड़ता है)।

शुतुर-ख़ाना—(फ़ा०) (सं० पु०) ऊँट रखने का मकान।

शुतुर-ग़मज़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) शरारत, चालाकी, छल-कपट; (२) बेजा नख़रा।

शुतुर-गुर्बा—(फ़ा०) (सं० पु०) दो नामा-फ़िक़ (असमान) चीज़ें जिनमें एक लम्बी और एक पस्त हो।

शुतुर-नाल—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ऊँट की पीठ पर रखकर चलाई जानेवाली छोटी तोप।

शुतुर-बान—(फ़ा०) (वि०) ऊँट वाला।

शुतुर-मुर्ग़—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार का बहुत बड़ा पक्षी जिसके कई अंग ऊँट की तरह होते हैं।

शुतुर-सवार—(फ़ा०) (सं० पु०) साँड़नी-सवार।

शुद—(फ़ा०) (वि०) गया-बीता। (सं० पु०) किसी कार्य का आरंभ। शुद हो जाना—मुक़ाबले की शर्त तय हो जाना।

शुद-आमद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मेल-जोल, राह-रस्म।

शुदनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) भावी, होन-हार, इत्तफ़ाक़ी आफ़त। (वि०) होने-वाली, इत्तफ़ाक़िया।

शुद-बुद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पढ़ने-लिखने का थोड़ा अभ्यास।

शुद-शुदा—आहिस्ता-आहिस्ता, रफ़्ता-रफ़्ता।

शुफ़ा—(अ०) (सं० पु०) पड़ोस। हक़-शुफ़ा—हक़ जो मकान या ज़मीन के पड़ोस में होने से हासिल होता है।

शुश्श—(फ़ा०) (सं० पु०) फेफड़ा।

शुब्ह—(अ०) (सं० पु०) (१) सन्देह, शक, गुमान; (२) वहम, भ्रम। शुब्ह उठाना—शक दूर करना।

शुमाइल—(फ़ा०) (सं० पु०) आदतें, स्वभाव।

शुमार—(फ़ा०) (सं० पु०) गिनती, गणना, हिसाब।

शुमार-कुनिन्दा—(फ़ा०) (वि०) गिनती करनेवाला।

शुमारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) गिनना।

शुमाल—(फ़ा०) (सं० पु०) उत्तर (दिशा)।

शुमाली—(अ०) (वि०) उत्तरी, उत्तर का।

शुमूल—(अ०) (वि०) पूरा, सम्पूर्ण।

शुरका—(अ०) (सं० पु०) 'शरीक' का बहुवचन।

शुरफ़ा—(अ०) (सं० पु०) 'शरीफ़' का बहुवचन।

शुरू—(अ०) (सं० पु०) (१) आरंभ, किसी काम में पड़ना; (२) वह स्थान जहाँ से कोई वस्तु आरंभ हो, उठान, इब्तदा।

शुर्फ़ा—(अ०) (सं० पु०) 'शरीफ़' का बहुवचन।

शुर्ब—(अ०) (सं० पु०) पीना, पान करना।

शुर्ब-उल्-यहूद—छिपकर शराब पीना।

शुल्ला—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार का खाना, पतली खिचड़ी।

शुस्त-ओ-शू—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) नहाना-धोना, साफ़ करना।

शुस्तगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शब्दों की शुद्धता; स्वच्छता।

शुस्ता—(फ़ा०) (वि०) (१) मँजा हुआ, धोया हुआ; (२) साफ़, स्वच्छ; (३) शुद्ध, पाक। शुस्ता ओ रुफ़्ता—(फ़ा०) (वि०) मँजी हुई, पाक-साफ़ (बात-चीत)।

शुहूद—(अ०) (सं० पु०) साधक की वह अवस्था जिसमें संसार के सब पदार्थों में ईश्वर का रूप दिखलाई देने लगता है।

शुहूर—(अ०) (सं० पु०) महीने।

शूम—(फ़ा०) (वि०) (१) मनहूस, कुलक्षण, अशुभ; (२) कंजूस।

शूम-क़दम—(फ़ा०) (वि०) जिसका क़दम मनहूस हो, सब्ज़-क़दम।

शूमी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बद बख़्ती, नहूसत।

शूरा—(अ०) (सं० पु०) मशवरा, सलाह।

शेख़—(अ०) (सं० पु०) (१) बूढ़ा आदमी; (२) पीर, बुज़ुर्ग, बड़ा-बूढ़ा, गुरु-जन; (३) धर्म-शास्त्र का ज्ञाता, धर्माचार्य; (४) नेता, पेशवा; (५) दरगाह या धार्मिक स्थान का सरदार, सज्जाद-नशीन; (६) मुसल्मानों की चार जातियों में से एक (शेख़, सैय्यद, मुग़ल, पठान)। शेख़ ओ शाब—बूढ़े और जवान। कहा०—शेख़ क्या जाने साबन का भाव—जिसका जिस चीज़ से कुछ सरोकार ही न हो, वह उसके बारे में कुछ नहीं जानता।

शेख़-उल्-इस्लाम—(अ०) (सं० पु०) अपने समय का इस्लाम का सबसे बड़ा नेता और आचार्य।

शेख़-उल्-रईस—(अ०) (सं० पु०) बूअली सीना (सबसे प्रसिद्ध हकीम) का उपनाम।

शेख़-चिल्ली—(अ०) (सं० पु०) एक कल्पित मूर्ख, अहमक़, मसख़रा, वहमी। शेख़ चिल्ली का मनसूबा—वह मनसूबा जो बिलकुल वह्मी हो।

शेख़-वक़्त—(अ०) (सं० पु०) अद्वितीय विद्वान् (वर्तमान समय का)।

शेख़ानी—(स्त्री०) (१) क़ौम शेख़ की औरत; (२) शेख़ की जोरू; (३) (लक्ष०) (औ०) मक्खी।

शेख़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) बड़ाई, डींग, अहंकार, घमंड; (२) ऐंठ, अकड़। शेख़ी और तीन काने—बेजा शेख़ी मारना। शेख़ी बघारना, मारना,

हाँकना—इतराना, डींग मारना। शेख़ी जताना—बड़ाई ज़ाहिर करना, आत्म-श्लाघा करना।

शेख़ी-ख़ोरा, शेख़ी-बाज़—(वि०) घमंडी, डींग की लेनेवाला, दून की हाँकनेवाला।

शेफ़्तगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) आसक्ति, इश्क़ होना।

शेफ़्ता—(फ़ा०) (वि०) आशिक़, आसक्त, फ़रेफ़्ता।

शेर—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) उर्दू शायरी का दो चरण का एक पद्य, बेत; (२) बाघ, नाहर, व्याघ्र, सिंह; (३) अत्यन्त वीर पुरुष, बहादुर और निडर आदमी। शेर मारना—बड़ी बहादुरी करना, बड़ा काम करना। शेर होना—दिलेर होना, ज़्यादा होना।

शेर-अंदाज़, शेर अफ़गन—(फ़ा०)(वि०) दिलेर, साहसी।

शेर-आबी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) घड़ियाल. मगर, नाका।

शेर-ओ सुख़न—(पु०) काव्य, काव्य और साहित्य, कविता का मर्म।

शेर-ख़ुश्क—(फ़ा०) (सं० पु०) वह शेर (पद्य) जिसमें न तो अर्थ-गौरव हो और न शब्द-लालित्य; जिसमें कोई ख़ूबी न हो।

शेर-ख़्वानी—(अ०) (सं० स्त्री०।) शेर या कविता पढ़ना, शेर कहना।

शेर-गो—(फ़ा०) (वि०) शायर, शेर कहने-वाला, कवि।

शेर-गोई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शायरी, कविता, शेर कहना।

शेर-तर—(फ़ा०) (सं० पु०) आनन्द-दायक कविता, बा-मज़ा शेर।

शेर-दहाँ—(फ़ा०) (वि०) (१) शेर के समान मुखवाला; (२) जिसके सिरों या घुंडियों पर शेर का मुँह बना हो। (सं० पु०) (१) एक क़िस्म की बंदूक़; (२) जिसकी घुंडी शेर की मुँह की सी हो; (३) वह मकान जो आगे दरवाज़े की तरफ़ चौड़ा और पीछे कम हो, सिंह-मुहाना।

शेर-दिल—(फ़ा०) (वि०) साहसी, वीर, दिलेर, बलिष्ठ, बलवान्।

शेर-पंजा—(फ़ा०) (सं० पु०,) बघ-नख; शेर के पंजे की शक्ल का एक हथियार।

शेर-बबर—(फ़ा०) (सं० पु०) केसरी, सिंह।

शेर-बच्चा—(फ़ा०) (वि०) (पु० (१) शेर का बच्चा; (२) एक क़िस्म की छोटी बंदूक़।

शेर-मर्द—(फ़ा०) (वि०) बहुत बड़ा दिलेर, अत्यन्त वीर।

शेरा—(सं० पु०) बड़े मुँह का कुत्ता।

शेवन—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) नूहा, रोना-पीटना, मातम करना; (२) नाला-फ़रयाद, दुखड़ा रोना।

शेवा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) रीति, तरीक़ा, ढंग, अंदाज़; (२) दस्तूर, क़ायदा, प्रथा।

शै—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) वस्तु, पदार्थ; (२) नायाब चीज़, दुर्लभ वस्तु; (३) भूत-प्रेत; (४) बरकत, ज़्यादती।

शै-लतीफ़—(लख०) बुद्धि, अक़्ल।

शैतनत—(अ०) (सं० स्त्री०) शैतानी, दुष्टता, पाजीपन, शरारत।

शैतान—(अ०) (सं० पु०) (१) असंसारी जीव जो मनुष्यों को बहकाकर धर्म-च्युत करता है; (२) शरीर, दुष्ट, बद-ज़ात; (३) बहकाने वाला, मार्ग-भ्रष्ट करनेवाला, फ़िसादी; (४) बदख़्वाह, बुराई करनेवाला, लड़ाई करानेवाला; (५) ग़ुस्सा, क्रोध, तम। शैतान से ज़्यादा मशहूर—निहायत बदनाम। शैतान की आँत—बहुत लंबी चीज़, तूल-तवील। शैतान उछलना—शरारत सूझना। शैतान उठाना—झगड़ा करना। शैतान चढ़ना

—गुस्सा आना, बदी पर आना। शैतान का पनाह माँगना—बहुत ही शरीर होना।

शैतानी—(अ०) (सं० स्त्री०) दुष्टता, पाजीपन, शरारत, नटखट-पन। (वि०) शैतान-सम्बन्धी।

शैदा—(फ़ा०) (वि०) प्रेम में डूबा हुआ, आसक्त, आशिक़, दीवाना, मद-होश, प्रेम में मतवाला।

शैदाई—(फ़ा०) (सं० पु०) आसक्त, दीवाना, प्रेम में पागल।

शोअरा—(फ़ा०) (सं० पु०) कवि-गण। 'शायर' का बहुवचन।

शोख़—(फ़ा०) (वि०) (१) धृष्ट, ढीठ; (२) तर्रार, बेबाक, निडर; (३) शरीर, गुस्ताख़; (४) दिल्लगी-बाज़, हंसोड़; (५) माशूक़, प्रेम-पात्र; (६) चमकीला, चमकदार, (रंग) तेज़, चंचल, चपल।

शोख़-चश्म—(फ़ा०) (वि०) (१) धृष्ट, ढीठ; (२) बेहया, बेशर्म, निर्लज्ज।

शोख़-चश्मी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) निर्लज्जता; बेहयाई, बेबाकी, शरारत।

शोख़-तब्आ, शोख़-तबीयत—(फ़ा०) (वि०) तेज़ चपल, चंचल-प्रकृति।

शोख़-दीदा—(फ़ा०) (वि०) (१) ढीठ; (२) बेशर्म, निर्लज्ज।

शोख़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) धृष्टता, ढिठाई, गुस्ताख़ी, बेअदबी; (२) दुष्टता, शरारत; (३) चुलबुला-पन, चंचलता, चपलता, हंसोड़पन; (४) चालाकी, बेक़रारी; (५) तेज़ी, चमक (रंग की)।

शोब—(फ़ा०) (सं० पु०) धोये जाने की क्रिया, धुलाई। शोब खाना, शोब पड़ना—कपड़े का एक बार धोया जाना।

शोबदा—(अ०) (सं० पु०) (१) जादू, बाज़ीगरी, नज़र-बन्दी, इन्द्र-जाल; (२) धोखा, फ़रेब, छल, कपट।

शोबदा-गर—(अ०) (वि०) बाज़ीगर, मदारी।

शोबदा-बाज़—(फ़ा०) (वि०) जादूगर, बाज़ीगर, भानमती, (२) मक्कार, धोखेबाज़, छलिया।

शोबदा-बाज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) नज़र बंदी, चालाकी, धोखा।

शोबा—(अ०) (सं० पु०) (१) टुकड़ा, हिस्सा, शाख़; (२) नहर, वह नहर जो किसी नहर से निकाली जाय।

शोर—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) ग़ुल, शोग़ा, हल्ला; (२) शोहरत, धूम; (३) खारी नमक; (४) ऊसर, बंजर; (५) इश्क़, जनून, वलवला। (वि०) खारा, अशुभ। शोर लगना—खार का पैदा हो जाना, लोना लगना।

शोर-ओ-शर—(उ०) लड़ाई, दंगा, फ़िसाद, हंगामा।

शोर-पुश्त—(फ़ा०) (वि०) सरकश, लड़ाका, झगड़ालू।

शोर-बख़्त—(फ़ा०) (वि०) बद-नसीब, अभागा।

शोर-बोर—(वि०) शराबोर, बिलकुल भीगा हुआ।

शोर-महशर—(फ़ा०) (सं० पु०) अत्यन्त शोर और हल्ला।

शोरबा, शोरवा—(फ़ा०) (सं० पु०) पतला सालन, पके हुए गोश्त का पानी, रसा।

शोरा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) एक प्रकार का खार जो मट्टी से निकलता है; (२) एक घास का नाम।

शोरा-गर—(फ़ा०) (वि०) शोरा बनानेवाला।

शोरा-पुश्त—(फ़ा०) (वि०) लड़ाका, सरकश, झगड़ालू।

शोरा-पुश्ती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) लड़ाई, झगड़ा।

शोराबा—(फ़ा०) (सं० पु०) खारी पानी।

शोरियत—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) खारीपन।

शोरिश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) खलबली, हल-चल; (२) बलवा, हंगामा, झगड़ा; (३) परेशानी; (४) खार होना या नमकीन होना।

शोरीदा—(फ़ा०) (वि०) हैरान, परेशान, व्याकुल, विकल, दीवाना।

शोरीदा-ख़ातिर—(फ़ा०) (वि०) परेशान, परेशान-हाल।

शोरीदा-बख़्त—(फ़ा०) (वि०) बद-बख़्त, अभागा।

शोरीदा-सर—(फ़ा०) (वि०) परेशान, दीवाना, पागल, सौदाई।

शोरीदा-सरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) परेशानी, पागलपन।

शोरीदा-हाल—(उ०) (वि०) परेशान हाल, दीवाना, विक्षिप्त।

शोला—(अ०) (सं० पु०) रोशनी, लौ, लपट। शोला-भभूका होना—आग हो जाना, लाल-पीला होना।

शोला-ख़ू—(फ़ा०) (वि०) तेज़-मिज़ाज, उग्र स्वभाव।

शोला-ज़न—(फ़ा०) (वि०) शोला निकालनेवाला।

शोला-ज़बान—(फ़ा०) (वि०) तेज़ ज़बान।

शोला-ज़ा—(फ़ा०) (वि०) शोला देनेवाला।

शोला-फ़िशां, शोला-बार—(फ़ा०) (वि०) शोला बरसानेवाला।

शोला-रुख़, शोला-रू—(फ़ा०) (वि०) बहुत सुन्दर; माशूक़।

शोशा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) चुटकला, अनोखी बात; (२) नोक; (३) अक्षरों का निशानी या दन्दाना जो सिरे पर होता है। शोशा उठाना—झगड़ा खड़ा करना, नई बात निकालना। शोशा छोड़ना—(१) अनोखी बात कहना; (२) झगड़े की बात कहना; (३) शरारत या नटखट-पन करना।

शोहदा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) बदमाश, गुंडा; (२) बद-चलन, बाज़ारी आदमी।

शोहरत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) नेक नामी, प्रसिद्धि; (२) चरचा, अफ़वाह; (३) बदनामी, रुसवाई।

शोहरत-अफ़ज़ा—(अ०) (वि०) शोहरत बढ़ानेवाला।

शोहरा—(अ०) (सं० पु०) प्रसिद्धि, नाम, धूम धाम। शोहरए-आफ़ाक़—सब दुनिया में मशहूर।

शोहरा-वर—(अ०) (वि०) मशहूर, प्रसिद्ध।

शौक़—(अ०) (सं० पु०) (१) उत्कंठा, लालसा, आरज़ू, तमन्ना, चाव; (२) उत्साह, उमंग, जोश, सरगर्मी; (३) काम; (४) धुन, तरंग; (५) चाट, चसका; (६) प्रवृति, झुकाव, तबीयत का मिलान। शौक़ ओ ज़ौक़—किसी काम की सरगर्मी, उमंग। शौक़ से—(१) ख़ुशी से, बेधड़क; (२) दिल से, तबीयत से। कह—(१) शौक़ में ज़ौक़, दस्तूरी में लड़का—एक काम का प्रयत्न किया, दूसरा मुफ़्त में बन गया। (२) शौक़ीन बुढ़िया चटाई का लहँगा—(व्यंग्य में) उसके लिए कहते हैं जो अपनी उम्र और हैसियत के विरुद्ध लिबास पहने।

शौक़ीन—(अ०) (सं० पु०) (१) शौक़ करनेवाला, ख़ूगर, उग्र अभिलाषी, अभ्यस्त, (२) छैला, रंगीला।

शौक़ीनी—(अ०) (सं० स्त्री०) शौक़ीन होना, उत्कट लालसा रखना; बना-ठना रहना।

शौरा—(अ०) (सं० पु०) कविगण। 'शायर' का बहुवचन।

शौहर—(फ़ा०) (सं० पु०) पति, स्वामी, भर्ता, खाविन्द, मालिक।

शौहरा—(फ़ा०) (सं० पु०) वर के सर पर बाँधा जानेवाला सेहरा।

शौहरी—(फ़ा०) (वि०) शौहर या पति से सम्बन्धित।

स

संग—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) पत्थर; (२) बोझ, भार।

संग-आस्ताना—(फ़ा०) (सं० पु०) घर की दहलीज़, देहली।

संग-तरा—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार की बड़ी और मीठी नारंगी।

संग-तराश—(फ़ा०) (सं० पु०) पत्थर काटनेवाला, पत्थर का काम बनानेवाला।

संग-तराशी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पत्थर के काम बनाने का पेशा; बुतसाज़ी, मूर्ति बनाना।

संग-दाना—(फ़ा०) (सं० पु०) पक्षी का पेट जिसमें से अक्सर कंकर निकलते हैं।

संग-दिल—(फ़ा०) (वि०) कठोर हृदय, बेरहम, निर्दय, जफ़ा-कार, जिसका दिल पत्थर के समान कठिन हो।

संग-प-रस—(फ़ा०) (सं० पु०) पारस पत्थर, स्पर्श-मणि, वह पत्थर जिसके स्पर्श से लोहा सोना हो जाता है।

संग-पुश्त—(फ़ा०) कछुआ, कच्छप।

संग-बसरी—(फ़ा०) (सं० पु०) बसरा नगर का पत्थर, जो दवा के काम आता है। बहुत लोग इसे खर्पर (खपरिया) की जगह व्यवहार करते हैं।

संगम—(फ़ा०) (सं० पु०) वह स्थान जहाँ दो नदियाँ या पेड़ मिलें।

संग-मरमर—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार का सफेद चिकना पत्थर।

संग-मूसा—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार का काला पत्थर।

संगर—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) दीवार जो लड़ाई के अवसर पर बना लेते हैं; (२) काँटों की बाढ़ जो बाग़ या खेत के चारों ओर बना लेते हैं; (३) खाई, ख़न्दक़।

संग-रेज़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) कंकर, रोड़ा।

संग-लाख—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) पहाड़ी ज़मीन, पथरीली ज़मीन; (२) (वि०) कठिन, मुश्किल, दुश्वार।

संग-शेई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दाल या चावल में पानी डाल कर तले में बैठे हुए कंकर चुनना।

संग-साज़—(फ़ा०) (वि०) वह आदमी जो छापे के पत्थर को ठीक करता और उसकी ग़लतियाँ सुधारता है।

संग-सार—(फ़ा०) सं० पु०) (१) एक प्रकार की सज़ा; (२) वह सज़ा जिसमें आदमी को कमर तक ज़मीन में गाड़कर पत्थर मार-मार कर उसका काम तमाम किया जाता था, पत्थर मार कर मार डालना।

संग-सुलेमानी—(फ़ा०) (सं० पु०) एक पत्थर जो अकसर दो-रंगा या ज़ुन्नार-दार (जनेऊ-दार) होता है; (२) स्याह व सफ़ेद पत्थर जिसकी फ़क़ीर माला बना कर गले में डालते हैं।

संगीन—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार का हथियार जो अकसर बंदूक़ पर चढ़ाया जाता है। (वि०) (१) पत्थर का बना हुआ; (२) भारी, मज़बूत, सख़्त; (३) दबीज़, टिकाऊ, पाय-दार।

संगीन-जुर्म—(फ़ा०) (सं० पु०) वह जुर्म या अपराध जो कड़ी सज़ा के क़ाबिल हो।

संगीन-दिल—(फ़ा०) (वि०) बेरहम, कठोर-हृदय, निर्दयी।

संगीनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) सख़्ती, कठोरता; (२) गाढ़ापन, ठोस-पन, भारी-पन।

संगे-असवद—(फ़ा०) (सं० पु०) वह पत्थर जो काबे की दीवार में लगा हुआ है और जिसे मुसलमान हज करते समय चूमते हैं।

संगे-आस्ताँ—(फ़ा०) (सं० पु०) देहलीज़ का पत्थर।

संगे-आहन-रुबा—(फ़ा०) (सं० पु०) मक़नातीस, चुंबक-पत्थर।

संगे-ख़ारा—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार का नीला सख़्त पत्थर।

संगे-जराहत—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार का पत्थर जिसे पीस कर ज़ख़्म पर छिड़कने से ख़ून बंद हो जाता है; सेलखड़ी।

संगे-निशान—(फ़ा०) (सं० पु०) वह पत्थर जो रास्तों पर फ़ासला बतलाने को गाड़ देते हैं।

संगे-मज़ार—(फ़ा०) (सं० पु०) वह पत्थर जो क़ब्र पर लगा रहता है और जिसमें मृतक का नाम इत्यादि खुदे रहते हैं।

संगे-मसाना—(फ़ा०) (सं० पु०) पथरी, जो आदमी के मूत्राशय में पैदा हो जाती है।

संगे-माही—(फ़ा०) (सं० पु०) एक सख़्त और सफ़ेद पत्थर जो मछली के सिर में से निकलता है।

संगे-मिक़नातीस—(फ़ा०) (सं० पु०) चुम्बक पत्थर।

संगे मूसा—(फ़ा०) (सं० पु०) एक क़िस्म का स्याह पत्थर।

संगे-यशब—(फ़ा०) (सं० पु०) एक सब्ज़ी-माइल क़ीमती पत्थर, जो हृदय सम्बन्धी रोगों में व्यवहार किया जाता है, जिसे दिल की धड़कन में घिस कर पीते हैं या तख़्ती बना कर पहनते हैं।

संगे-राह—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) रास्ते में पड़ा हुआ पत्थर जिससे आने-जाने वालों को कष्ट हो; (२) बाधा, रोक, अड़चन।

संगे-लरज़ाँ—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार का लचीला पत्थर।

संगे-लौह—(फ़ा०) (सं० पु०) क़ब्र के सिरहाने लगा हुआ पत्थर, जिस पर नाम या कोई वाक्य लिखा होता है।

संगे-शजर, संगे-शजरी—(फ़ा०) (सं० पु०) अक़ीक़-शजरी, नदी या समुद्र में निकलनेवाला एक पत्थर जिसमें दरख़्तों के नक़्श बने होते हैं।

संगे-सिमाक़—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार का सफ़ेद पत्थर।

संगे-सीना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) छाती पर धरा हुआ पत्थर; (२) असह्य वस्तु, या बात; (३) कष्ट पहुँचानेवाली बात।

संगे-सुरमा—(फ़ा०) (सं० पु०) वह पत्थर जिसका सुरमा बनाते हैं।

संगे-सुर्ख़—(फ़ा०) (सं० पु०) लाल पत्थर।

संज—(फ़ा०) (वि०) जाननेवाला, समझनेवाला।

संजाफ़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) हाशिया, चौड़ी और आड़ी गोट; (२) एक कम अर्ज़ का कपड़ा जिसकी गोट लगाते हैं।

संजाफ़ी—(फ़ा०) (वि०) किनारेदार, हाशियेदार।

संजाब—(फ़ा०) (सं० पु०) एक जानवर जो चूहे से बड़ा होता है जिसकी खाल की पोस्तीन बनाते हैं।

संजीदगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वक़अत, इज़्ज़त; गंभीरता, भारीपन।

संजीदा—(फ़ा०) (वि०) (१) गंभीर, समझदार, शिष्ट; (२) जंचा हुआ, मौज़ूँ, उपयुक्त; (३) जाँच कर निशाना लगानेवाला।

संभाला—(हि०) (सं० पु०) मरने से पहले रोगी की दशा में सुधार होना; मृत्यु से पहले कुछ देर के लिए चेत जाना। संभाला लेना—मरते आदमी का कुछ होश में आ जाना।

सअ़द—(अ०) (सं० पु०) (१) सौभाग्य, ख़ुश-क़िस्मती; (२) अच्छी ग्रह-दशा। (वि०) शुभ, अच्छा, नेक, मुबारक।

सअ़ब—(अ०) (वि०) सख़्त, कठिन, दुश्वार, कठोर।

सआ़दत (अ०) (सं० स्त्री०) (१) सौभाग्य, ख़ुश-क़िस्मती, (२) नेकी, भलाई।

सआ़दत-मन्द—(अ०) (वि०) (१) भाग्य-वान्, नेक-बख़्त; (२) भला, नेक, आज्ञा-कारी।

सई—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) परिश्रम, मशक़्क़त, कोशिश; (२) सिफ़ारिश। सई-सिफ़ारिश—कहना सुनना। सई उठवाना, सई उठाना—किसी की सिफ़ारिश लाना।

सईद—(अ०) (वि०) (१) शुभ, मुबारक; (२) भाग्यवान्, नेक-बख़्त, नेक।

सऊबत—(अ०) (सं० स्त्री०) कठिनता, मुश्किल, दिक़्क़त, मुसीबत, संकट, कष्ट।

सकत—(हि०) (सं० स्त्री०) ताक़त, शक्ति।

सकता—(अ०) (सं० पु०) (१) बेहोशी, मूर्च्छा; (२) कविता में यति-भंग का दोष, वज़न का पूरा न होना; (३) हैरत, हैरानी। सकते का आलम—हैरत, हैरत का मुक़ाम, विस्मय की दशा; मौनावस्था, स्तंभित हो जाना। सकता पड़ना—शेर के वज़न में फ़र्क़ आना। सकता होना—(१) यति-भंग होना; (२) बेहोशी होना।

सक़न-क़ूर—(रूमी०) (सं० पु०) (१) एक प्रकार की मछली; (२) रेग-माही।

सकना—(अ०) (सं० पु०) रहनेवाले; 'साकिन' का बहुवचन।

सक़मूनिया—(यू०) (सं० पु०) एक प्रकार का गोंद जो दवा के काम आता है।

सक़र—(अ०) (सं० पु०) नरक, दोज़ख़।

सक़ालत—(अ०) (सं० स्त्री०) बोझ, वज़न, भारीपन।

सक़ीफ़ा-बन्दी—(स्त्री०) बेहूदा बात, निकम्मी बात।

सक़ीम—(अ०) (वि०) (१) बीमार, रोगी; (२) ऐब-दार।

सक़ील—(अ०) (वि०) (१) बोझल, भारी, वज़नी; (२) गरिष्ट, नाक़ाबिल हज़्म।

सकृत—(सं० पु०) देखो—'सुकृत'।

सकूत—(अ०) (सं० पु०) (१) ठहरना, क़याम; (२) चित की शान्ति।

सकूनत—(अ०) (सं० स्त्री०) रहने का स्थान, निवास।

सकोरा—(फ़ा०) (सं० पु०) मट्टी का प्याला।

सक़्क़न—(अ०) (सं० स्त्री०) पानी भरने-वाली औरत।

सक़्क़ा—(अ०) (सं० पु०) भिश्ती, पानी पिलाने का पेशा करनेवाला। सक़्क़ाई करना—पानी देना, पानी पिलाने का पेशा करना। सक़्क़े की बादशाही—थोड़े दिन की हुकूमत। (निज़ाम नामक सक़्क़े ने हुमांयूं बादशाह को डूबने से बचाया था, जिसके इनाम में उसे ढाई दिन की बादशाही मिली थी। इसने चमड़े का सिक्का चलाया था)।

सक़ावा—(अ०) (सं० पु०) पानी रखने का हौज़।

सक़्फ़—(अ०) (सं० पु०) मकान की छत या ऊपर का हिस्सा।

सख़ा-सख़ावत—(अ०) (सं० स्त्री०) दानशीलता, उदार होना, दानी होना।

सख़ी—(अ०) (वि०) उदार, दानी, फ़ैयाज़। कहा०—(१) सख़ी सूम साल भर में बराबर हो जाते हैं—कंजूस को भी कुअवसर पड़ने पर ख़ूब ख़र्च करना पड़ता है। (२) सख़ी से सूम भला जो तुरत दे जवाब—इंतज़ार में रखने से इन्कार बहतर है।

सख़ीफ़—(अ०) (वि०) बेहूदा।

स.ख़ुन—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) कविता, शेर; (२) कलाम, उक्ति; (३) बातचीत; (४) वचन, वादा, अहद; (५) कहावत, म.कूला; (६) ऐतराज़।

स.ख़ुन-आरा—(फ़ा०) (वि०) शायर कामिल, कवि।

स.ख़ुन-कोताह—(फ़ा०) क़िस्सा कोताह, संक्षेप में, तात्पर्य यह है कि।

स.ख़ुन-गर्म—(फ़ा०) (सं० पु०) रंगीन बात।

स.ख़ुन-गुस्तर—(फ़ा०) (वि०) शायर।

स.ख़ुन-चीन—(फ़ा०) (वि०) (१) चुग़ल-ख़ोर, लुतरा, इधर की उधर कहनेवाला; (२) ऐब निकालनेवाला।

स.ख़ुन-चीनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) चुग़ली, ऐब निकालना।

स.ख़ुन-तकिया—(फ़ा०) (सं० पु०) तकिया-कलाम, वह शब्द जो किसी की बातचीत में बार बार मुँह से निकले।

स.ख़ुन-तराज़—(फ़ा०) (वि०) शायर, कवि।

स.ख़ुन-तल्ख़—(फ़ा०) (वि०) कुवचन, नागवार बात।

स.ख़ुन-दाँ—(फ़ा०) (वि०) (१) कवि, शायर; (२) काव्य-मर्मज्ञ।

स.ख़ुन-परवर—(फ़ा०) (वि०) (१) अपनी बात का पक्ष करनेवाला; (२) अपनी बात को निबाहनेवाला।

स.ख़ुन-परवाज़—(फ़ा०) (वि०) कवि, शायर।

स.ख़ुन-फ़हम—(फ़ा०) (वि०) (१) शायर, कवि; कविता समझनेवाला, (२) बुद्धि-मान्, समझदार, चतुर।

स.ख़ुन-फ़हमी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) काव्य का समझना, शेर का समझना।

स.ख़ुन-रस—(फ़ा०) (वि०) बात की तह को पहुँचनेवाला, मर्म समझनेवाला।

स.ख़ुन-वर—(फ़ा०) (वि०) शायर, कवि, कविता का मर्मज्ञ।

स.ख़ुन-शिनास—(फ़ा०) (वि०) मर्मज्ञ, बात की तह तक पहुँचनेवाला; क़द्र-दाँ, गुण-ग्राहक।

स.ख़ुन-संज—(फ़ा०) (वि०) काव्य-मर्मज्ञ, कविता समझनेवाला।

स.ख़ुन-साज़—(फ़ा०) (वि०) (१) बातें बनानेवाला, चिकनी-चुपड़ी बातें बनाने-वाला; (२) अच्छा बोलनेवाला।

सख़्त—(फ़ा०) (वि०) (१) कड़ा, कठोर, ना-मुलायम; (२) कठिन, मुश्किल; (३) मज़बूत, बेरहम, निर्दय; (४) बहुत बड़ा, भारी, संगीन; (५) मनहूस, अशुभ; (६) तेजी। (क्रि० वि०) बहुत अधिक। सख़्त-सुस्त कहना—बुरा भला कहना, झिड़कना।

सख़्त-कलामी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बद-ज़बानी, कटु वाक्य कहना।

सख़्त-ज़मीन—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) कड़ी ज़मीन; (२) जब रदीफ़ क़ाफ़िए मुश्किल हों।

सख़्त-जान—(फ़ा०) (वि०) (१) संग-दिल, निर्दय, कठोर-हृदय; (२) जिसकी जान मुश्किल से निकले, बेहयाई से ज़िन्दा रहनेवाला; (३) बहुत परिश्रमी।

सख़्त-जानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) घोर परिश्रम, जफ़ा-कशी।

सख़्त-दिल—(फ़ा०) (वि०) संग-दिल, निर्दय।

सख़्त-दिली—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बेरहमी, निर्दयता, संग-दिली।

सख़्त-मुश्किल—(फ़ा०) (वि०) बहुत कठिन। (स्त्री०) बड़ी दुश्वारी।

सख़्त-लगाम—(फ़ा०) (वि०) सरकश घोड़ा।

सख़्ती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) बद-मिज़ाजी, अक्खड़पन; (२) कठोरता, ज़ुल्म, अत्याचार; (३) मज़बूती, दृढ़ता; (४) तेज़ी, तुंदी, भीषणता; (५) ताकीद, डांट-डपट; (६) दिक़्क़त, कष्ट, तंगी। **सख़्ती से**—मुश्किल से, बमुश्किल।

सग—(फ़ा०) (सं० पु०) कुत्ता।

सग़ीर—(अ०) (वि०) छोटा, अदना। **सग़ीर-सिन**—कम ऊम्र का, छोटी उम्र का, अल्प-वयस्क। **सग़ीर-सिनी**—कम उम्री, नाबालिग़ी।

सग़ीरा—(अ०) (वि०) (स्त्री०) छोटी।

सग़्र—(अ०) (सं० पु०) छोटा-पन।

सज—(हि०) (सं० स्त्री०) सजावट, आरायश, नुमायश, दिखावा, अंदाज़। **सज-धज**—(हि०) (स्त्री०) बनाव-सिंगार।

सजा—(अ०) (सं० पु०) (१) पक्षियों की आवाज़, कलरव; (२) ऐसे वाक्य जिनके अन्तिम शब्द तुकान्त हों; (३) वह शेर या गद्य का टुकड़ा जिसमें किसी मनुष्य का नाम कुछ और अर्थ भी प्रकट करे।

सज़ा—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) दंड, जुर्माना, जेल, क़ैद; (२) एवज़, बदला।

सज़ाए-क़त्ल, सज़ाए-मौत—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) क़त्ल की सज़ा, प्राण-दंड, फाँसी।

सज़ा-याफ़्ता—(फ़ा०) (वि०) जो सज़ा पा चुका हो; जो क़ैद में रहा हो या जिसको जुर्माना देना पड़ा हो।

सज़ा-याब—(फ़ा०) (वि०) सज़ा पानेवाला; सज़ा-याफ़्ता।

सज़ा-वार—(फ़ा०) (वि०) (१) लायक़, मुनासिब, उचित; (२) मुबारक, शुभ।

सज़ावुल—(तु०) (सं० पु०) तहसील वसूल करनेवाला, तहसीलदार।

सजिल—(हि०) (वि०) अच्छा, उम्दा, नफ़ीस, ठीक।

सज्जाद—(अ०) (वि०) सिजदा करनेवाला, दंडवत करनेवाला।

सज्जादा—(अ०) (सं० पु०) (१) मुसल्ला। वह दरी जिस पर नमाज़ पढ़ते हैं; (२) फ़क़ीर की गद्दी, मसनद।

सज्जादा-नशीन—(अ०) (वि०) किसी पीर या फ़क़ीर की गद्दी पर बैठनेवाला; किसी बुज़ुर्ग का ख़लीफ़ा।

सड़क—(अ०) (सं० स्त्री०) शारअ-आम, राज-मार्ग, शाह-राह।

सतर—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) लकीर, रेखा; (२) पंक्ति, क़तार। (वि०) (१) टेढ़ा, वक्र; (२) कुपित, क्रुद्ध।

सतह—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) हर चीज़ का ऊपरी हिस्सा, तल; (२) विस्तार, फैलाव।

सतह-आब—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पानी का ऊपरी हिस्सा; (२) पानी की चादर।

सतह-ज़मीन—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) रुए-ज़मीन, धरती, पृथ्वीतल; (२) मैदान।

सतहा—(अ०) (सं० पु०) सतह, तबक़ा।

सताइश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सराहना, तारीफ़ करना, प्रशंसा।

सताइश-गर—(फ़ा०) (वि०) सराहनेवाला।

सताइश-गरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) तारीफ़, प्रशंसा।

सतून—(फ़ा०) (सं० पु०) स्तंभ, खंभा।

सतूवत—(अ०) (सं० स्त्री०) दबदबा, क़हर।

सत्तार—(अ०) (वि०) (१) ईश्वर का नाम; (२) पर्दापोश, ऐब ढाँकनेवाला।

सत्यानास—(हि०) (सं० पु०) नाश, बरबादी।

सद—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) पर्दा, ओट; (२) दीवार। (वि०)—सौ, शत। सद्दे राह होना—राह में रोड़ा होना, अड़चन होना

सदक़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) निछावर; (२) दान, ख़ैरात। सदक़े—वारी, क़ुर्बान।

सद-चाक—(फ़ा०) (वि०) सैकड़ों जगह से फटा हुआ।

सदफ़—(अ०) (सं० स्त्री०) मोती की सीप, सीप, शुक्ति।

सद-बर्ग—(फ़ा०) (सं० पु०) गेंदा।

सदमा—(अ०) (सं० पु०) टक्कर, धक्का, चोट, ठेस; (२) रंज; (३) नुक़सान।

सदर—(अ०) (सं० पु०) (१) सीना, छाती; (२) मकान का सहन, आगे का हिस्सा; आँगन; (३) प्रधान, सभापति; (४) मुख्य स्थान, (५) छावनी, लश्कर। (वि०) (१) ख़ास; (२) श्रेष्ठ, अमीर; ऊपरवाला।

सदर-आज़म—(अ०) (सं० पु०) वज़ीर आज़म, प्रधान मंत्री।

सदर-आला—(अ०) (सं० पु०) सब-जज, सिविल जज।

सदर-जहान—(अ०) (सं० पु०) एक जिन जिसे स्त्रियाँ मानती हैं।

सदर-नशीन—(अ०) (सं० पु०) सभापति, प्रधान, मीर-मजलिस।

सदर-नशीनी—(अ०) (सं० स्त्री०) सभापतित्व।

सदर-सदूर—(अ०) (सं० पु०) प्रधान न्यायाधीश।

सदरी—(अ०) (सं० स्त्री०) एक क़िस्म की मिरज़ई, या कुरती।

सदहा—(फ़ा०) (वि०) सैकड़ों, बहुत से।

सदा—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) गूंज, प्रतिध्वनि, (२) आहट, आवाज़, शब्द; (३) दरवेश के माँगने की आवाज़। सदा देना—फ़क़ीरों का आवाज़ लगाना।

सदाक़त—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) सचाई, सत्यता, खरापन; (२) सुबूत, साक्षी।

सदारत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) प्रधान का पद, सभापति का पद; (२) सभापतित्व।

सदी—(अ०) (सं० स्त्री०) शताब्दी, सौ वर्ष, सौ साल का ज़माना।

सद्द—(अ०) (सं० पु०) (१) रोकना, आड़; (२) (स्त्री०) दीवार।

सद्दे-रह, सद्दे-राह—(फ़ा०) (वि०) रोक, अड़चन।

सद्दे-सिकन्दर—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) काँसे की दीवार जो सिकन्दर ने उत्तर के रहनेवालों को रोकने के लिए चीन और तातार के बीच में बनाई थी; (२) बहुत मज़बूत और पाय-दार।

सद्र—(अ०) (सं० पु०) देखो 'सदर'।

सन—(अ०) (सं० पु०) (१) साल, वर्ष; (२) सम्वत्।

सनअत—(अ०) (सं० स्त्री०) कारीगरी, कला-कौशल।

सन-जुलूस—(अ०) (सं० पु०) राज्यारोहण का सम्वत्।

सनद—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) सुबूत, प्रमाण; (२) सार्टीफ़िकट, प्रमाण-पत्र; (३) एतबार; (४) प्रामाणिक बात; (५) तमस्सुक, क़बाला; (६) मसनद। (वि०) प्रामाणिक, विश्वसनीय।

सनदन्—(अ०) (क्रि० वि०) प्रमाण-रूप, सनद की बिना पर।

सनद-याफ़्ता—(अ०) (वि०) वह आदमी जिसके पास किसी बात का सर्टीफ़िकट हो; प्रमाण-पत्र-प्राप्त।

सनम—(अ०) (सं० पु०) (१) मूर्ति, प्रतिमा; (२) माशूक़ ।

सनम-आमद—(अ०) (सं० पु०) एक खेल जो छोटे छोटे विद्यार्थी आपस में खेलते हैं; एक प्रकार का अन्त्याक्षरी ।

सनम कदा, सनम-ख़ाना—(अ०) (सं० पु०) (१) बुत ख़ाना, मन्दिर; (२) माशूक़ के रहने की जगह ।

सना—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) प्रशंसा, स्तुति, तारीफ़; (२) एक पौदा जिसकी पत्ती दवा में काम आती है, सनाय ।

सनाअत—(अ०) (सं० स्त्री०) हुनर, दस्त-कारी, कारीगरी, पेशा ।

सना-गर—(अ०) (सं० पु०) प्रशंसा या स्तुति करनेवाला ।

सनाया—(अ०) (सं० पु०) (१) कारीगरी, कला-कौशल; (२) कुवचन ।

सनीन—(अ०) (सं० पु०) साल । 'सन' का बहुवचन ।

सनून—(अ०) (सं० पु०) मंजन, दाँतों पर मलने की दवा ।

सनोबर—(अ०) (सं० पु०) एक पेड़ का नाम ।

सन्दल—(अ०) (सं० पु०) चन्दन ।

सन्दली—(फ़ा०) (वि०) (१) चन्दन का बना हुआ; (२) चन्दन के रंग का; (३) (सं० स्त्री०) चौकी, कुरसी, ऊँची तिपाई ।

सन्दूक़—(अ०) (सं० पु०) पेटी, बक्स ।

सन्दूक़चा, सन्दूक़ची—(अ०) (सं० पु०) छोटा बक्स, छोटा सन्दूक़ ।

सन्दूक़-साज़—(अ०) (वि०) सन्दूक़ बनाने-वाला ।

सन्दूक़ी—(अ०) (वि०) सन्दूक़ की शक्ल का ।

सन्नाअ—(अ०) (सं० पु०) बहुत ही हुनर-वाला; अत्यन्त निपुण कारीगर ।

सपाट—(हि०) (वि०) (१) बराबर, हम-वार, समतल; (२) साफ़, सादा ।

सपाटा—(हि०) (सं० पु०) (१) दौड़, झपट; (२) सैर, तमाशा ।

सपिस्ताँ—(फ़ा०) (सं० पु०) लिसोढ़ा, एक चेपदार छोटा फल ।

सपुर्द—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सौंपना, किसी के संरक्षण में देना ।

सपुर्दगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सौंपा जाना ।

सपेद—(फ़ा०) (वि०) (१) श्वेत, सफ़ेद, धौला; (२) गोरा, गौर-वर्ण; (३) कोरा, सादा; (४) भय-भीत, डरा हुआ, जिसका डर से रंग उड़ गया हो । सपेद पड़ जाना—चेहरे का रंग उड़ जाना (डर से या रंज से) ।

सपेद - स्याह आलम—(फ़ा०) बुराई-भलाई; ऊँच-नीच ।

सपेद-ओ-स्याह का इख़्तियार—पूरा पूरा अधिकार ।

सपेदा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) प्रभात की आभा; (२) एक दवा ।

सफ़—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) पंक्ति, परा, क़तार; (२) फ़र्श, बोरिया, चटाई ।

सफ़-आरा—(अ०) (वि०) परा जमाने-वाला, श्रेणी-बद्ध करनेवाला, जंग में मुक़ाबिला करनेवाला ।

सफ़-कशी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) लड़ाई में पंक्ति बनाना, युद्ध के लिए पंक्ति रचना ।

सफ़दर—(फ़ा०) (वि०) लश्कर की सफ़ फाड़नेवाला, पंक्ति तोड़नेवाला ।

सफ़-बन्दी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सफ़ क़ायम करना, सफ़ जमाना, सैनिकों को क़ायदे से खड़ा करना ।

सफ़-बस्ता—(फ़ा०) (वि०) क़तार बाँधे, पंक्ति जमाये हुए ।

सफ़र—(अ०) (सं० पु०) (१) अरबी सन् का दूसरा चांद्र मास, जो मनहूस गिना जाता है, इसमें कोई ख़ुशी का काम नहीं किया जाता; (२) प्रस्थान, यात्रा, कूच; (३) एक स्थान से दूसरे स्थान जाने की दशा या समय; (४) फ़ुरसत, अवकाश; (५) एक प्रकार का रोग।

सफ़र-आख़रत—(फ़ा०) (सं० पु०) मृत्यु, मर जाना।

सफ़र-कश—(फ़ा०) (वि०) सैर करनेवाला, सैय्याह; (२) अनुभवी, तजुर्बेकार।

सफ़र-नामा—(अ०) (सं० पु०) सफ़र के हालात, यात्रा का विवरण।

सफ़रा—(अ०) (सं० पु०) पित्त।

सफ़रावी—(अ०) (वि०) पित्त-सम्बन्धी।

सफ़रा-शिकन—(फ़ा०) (वि०) सफ़रा ज़ाइल करनेवाला, पित्त बिगाड़नेवाला।

सफ़री—(फ़ा०) (वि०) (१) मुसाफ़िर; (२) सफ़र में काम आनेवाला; (सं० पु०) (१) राह-ख़र्च, मार्ग-व्यय; (२) अमरूद (फल)।

सफ़वी—(अ०) (सं० पु०) ईरान का एक राज-वंश जिसका आदि पुरुष सफ़ी नामक पहुँचा-हुआ फ़क़ीर था।

सफ़हा—(अ०) (सं० पु०) (१) पृष्ठ, पन्ना; (२) विस्तार, फैलाव; (३) ऊपर का हिस्सा। सफ़ह-ए-हस्ती—(फ़ा०) (सं० पु०) दुनिया।

सफ़ा—(अ०) (वि०) (१) पवित्र; पाक, शुद्ध; (२) बेलाग, निष्पक्ष। सफ़ा कहना —बेलाग कहना, लगी लिपटी न रखना।

सफ़ाई—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) शुद्धि, स्वच्छता; (२) स्पष्टता, खरापन; (३) सरलता, सादगी; (४) खुरदरा-पन निकालना, मैल-कूड़ा दूर करना; (५) फुर्ती, चालाकी; (६) दिल का साफ़ होना, नेक नीयती; (७) निर्दोषता साबित करना; (८) हिसाब की बेबाकी, चुकौता; (९) मिलाप, सुलह; (१०) चिकना करना, घुटाई; (११) बेशर्मी, निर्लज्जता; (१२) बरबादी, तबाही।

सफ़ा-चट—(अ०) (वि०) बिलकुल साफ़, सफ़ा चट करना—बिलकुल मूँड डालना, साफ़ कर देना। सफ़ा-चट मैदान—बिलकुल साफ़ मैदान जिसमें पेड़ वग़ैरह कुछ न हो।

सफ़ात—(अ०) (सं० पु०) अच्छी सिफ़तें, गुण; 'सिफ़त' का बहुवचन।

सफ़ाया—(अ०) (सं० पु०) (१) पूरी सफ़ाई, कुछ बाक़ी न छोड़ना; (२) नेस्त-नाबूद, सत्यानाश। सफ़ाया करना—नेस्त-नाबूद करना।

सफ़ाहत—(अ०) (सं० स्त्री०) कमीनापन, मूर्खता।

सफ़ी—(अ०) (वि०) (१) शुद्ध, पवित्र; (२) स्वच्छ, निर्मल, साफ़। (सं० पु०) ईरान के उस फ़क़ीर का नाम जिसने सफ़वी राज-वंश चलाया।

सफ़ीना—(अ०) (सं० पु०) (१) किश्ती, नाव; (२) याद दाश्त का काग़ज़; (३) परवाना, समन।

सफ़ीर—(अ०) (सं० पु०) एलची, दूत, कारिन्दा। (सं० स्त्री०) (१) परंदों का चह-चहाना, कलरव; (२) परन्दों को बुलाने की सीटी।

सफ़े-जंग—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) लड़ाई की परा-बन्दी, क़तार बाँधना; (२) वह लड़ाई जो आमने-सामने क़तार बाँध कर हो।

सफ़े-तेग़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) तलवार की दोनों तरफ़ें।

सफ़ेद—(फ़ा०) (वि०) देखो 'सपेद'। (१) श्वेत, गोरा; (२) कोरा, सादा। (सं० स्त्री०) गंजफ़े की आठ बाज़ियों में से एक

का नाम । स्याह-सफ़ेद—भला, बुरा, सब कुछ ।

सफ़ेद-पोश—(फ़ा०) (वि०) (१) सफ़ेद या साफ़ कपड़े पहननेवाला; (२) भला-मानस ।

सफ़ेदा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) एक दवा; (२) आम और ख़रबूज़े का एक भेद ।

सफ़ेदी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) श्वेत होना, गोरा-पन; (२) चूने की पुताई, दीवार पर सफ़ेद रंग करना ।

सफ़े-मातम—(अ०) (सं० स्त्री०) मातम करने का फ़र्श ।

सफ़ूफ़—(अ०) (सं० पु०) चूर्ण, कुटी-पिसी चीज़ ।

सफ़्फ़ा—(अ०) (वि०) (१) सफ़ा, साफ़; (२) बरबाद, नष्ट ।

सफ़्फ़ाक—(अ०) (वि०) बेरहम, निर्दय, ख़ूनी ।

सफ़्फ़ाकी—(अ०) (सं० स्त्री०) बेरहमी, ख़ूँ-रेज़ी, मार-काट ।

सफ़्फ़ार—(अ०) (सं० पु०) ठठेरा ।

सबक़—(अ०) (सं० पु०) (१) नित्य का पाठ, पाठ; (२) शिक्षा, सीख, उपदेश, नसीहत; (३) दंड, सज़ा । सबक़ पढ़ाना —(१) शिक्षा देना; (२) बहकाना, पट्टी पढ़ाना, दम देना । सबक़ रवाँ होना—पाठ ख़ूब याद होना ।

सबक़त—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) आगे बढ़ना; (२) बड़ाई, बुज़ुर्गी; (३) बरतरी, किसी से आगे बढ़ जाना; बढ़कर होना । सबक़त ले जाना—आगे बढ़ जाना ।

सबद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) टोकरा, टोकरी ।

सबब—(अ०) (सं० पु०) (१) कारण, वजह; (२) वसीला, ज़रिया, साधन; (३) हुज्जत, दलील ।

सबल—(अ०) (सं० पु०) मोतिया-बिंद,

सबा—(अ०) (वि०) सात । (सं० स्त्री०) हवा, शीतल-मंद पवन ।

सबा-ख़िराम—(फ़ा०) (वि०) तेज़ घोड़ा ।

सबात—(अ०) (सं० पु०) (१) स्थिरता, क़रार, क़याम; (२) पायदारी, दृढ़ता, मज़बूती, इस्तक़लाल ।

सबाबत—(अ०) (सं० स्त्री०) एक जगह स्थिर रहना ।

सबाह—(अ०) (सं० स्त्री०) सबेरा, प्रभात, तड़का ।

सबाहत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) सफ़ेद रंग, गोरा-पन; (२) सौंदर्य, ख़ूबसूरती ।

सबील—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) रास्ता, मार्ग; (२) उपाय, तरीक़ा, तदबीर, युक्ति; (३) प्याऊ, पानी पिलाने की जगह ।

सबीह—(अ०) (वि०) गोरा-चिट्टा, ख़ूब-सूरत, सुन्दर ।

सबू—(फ़ा०) (सं० पु०) घड़ा, मटका ।

सबूचा—(फ़ा०) (सं० पु०) छोटा घड़ा; मटकी ।

सबूत—(अ०) (सं० पु०) (१) प्रमाण, साक्षी या गवाही से साबित करना या होना; (२) स्थिरता, क़याम, जमना; (३) दलील, युक्ति; (४) दृढ़ता, मज़बूती ।

सबूरा—(अ०) (सं० पु०) बनावटी इंन्द्रिय या लिंग जिससे स्त्रियाँ अपनी काम-वासना पूरी करती हैं; चमड़े में सिले हुए एक रुपये के पैसे ।

सबूस—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) चोकर, भूसी ।

सबूह—(अ०) (सं० स्त्री०) सुबह पीने की शराब ।

सबूही—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वह शराब जो सुबह पी जाय ।

सब्ज़—(फ़ा०) (वि०) (१) हरा; (२) ताज़ा; (३) शुभ, मुबारक ।

सब्ज़-ए-ख़त—(फ़ा०) (सं० पु०) गालों पर बालों के उगने से जो सब्ज़ी प्रकट होती है ।

सब्ज़-क़दम—(फ़ा०) (सं० पु०) अशुभ, मनहूस, बद-बख़्त, जिसका कहीं आना जाना मनहूस हो।

सब्ज़-पा—(फ़ा०) (वि०) बद-बख़्त, अशुभ, मनहूस।

सब्ज़-पेशानी—(फ़ा०) (वि०) जो ज़ाहिर में अच्छा मालूम हो।

सब्ज़-पोश—(फ़ा०) (वि०) हरा लिबास पहननेवाला; मातमी कपड़े पहननेवाला; मातमी, ज़ाहिद।

सब्ज़-फोड़ा—(सं० पु०) एक प्रकार का कबूतर जिसके हरे परों के बीच में सफ़ेद पर हों।

सब्ज़-बाग़—(दिखाना के साथ) धोखा देना, दम देना।

सब्ज़-बख़्त—(फ़ा०) (वि०) .ख़ुश-नसीब, भाग्यवान्।

सब्ज़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) हरियाली, नबातात; (२) नील-कंठ; (३) पन्ना (रत्न); (४) एक प्रकार का आम या ख़रबूज़ा; (५) कान का एक ज़ेवर, (६) भंग; (७) सफ़ेद रंग का घोड़ा; (८) वह सब्ज़ी जो डाढ़ी मूछों के नये बाल निकलने से चेहरे पर प्रकट होती है।

सब्ज़ा-ज़ार—(फ़ा०) (सं० पु०) वह स्थान जहाँ हरियाली .ख़ूब हो।

सब्ज़ाने-चमन—(फ़ा०) (सं० पु०) बाग़ के पेड़।

सब्ज़ा-रंग—(फ़ा०) (वि०) गंदुमी रंग, माशूक़।

सब्ज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) हरियाली, नबातात, (वनस्पति); (२) हरी तरकारी, साग-पात; (३) भंग।

सब्ज़ी-फ़रोश—(फ़ा०) (वि०) तरकारी बेचनेवाला; भंग बेचनेवाला।

सब्ज़ी-मंडी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वह स्थान जहाँ तरकारी और ताज़े फल बिकते हैं।

सब्त—(अ०) (सं० पु०) (१) लिखना, नक़्श करना; (२) मोहर।

सब्बाग़—(अ०) (सं० पु०) रंगनेवाला, रंगरेज़।

सब्बाबा—(अ०) (सं० स्त्री०) तर्जनी, अंगूठे के पास की उंगली।

सब्यिया—(अ०) (सं० स्त्री०) दूध-पीती बच्ची, लड़की।

सब्बी—(अ०) (सं० पु०) दूध पीता बच्चा, लड़का।

सब्र—(अ०) (सं० पु०) (१) संतोष, इत्मीनान, धैर्य, धीरज; (२) बरदाश्त, सहन-शीलता; (३) संयम। किसी का सब्र पड़ना—पीड़ित की आह का असर पड़ना, .ख़ुदा की मार पड़ना। सब्र कर बैठना—निराश हो जाना। कहा०—सब्र की दाद .ख़ुदा के हाथ है—सब्र करनेवालों का न्याय ईश्वर करता है।

सम—(अ०) (सं० पु०) विष, ज़हर।

समअ—(अ०) (सं० पु०) कान, समाअत।

समअ-ख़राशी—(अ०) (सं० स्त्री०) बक बक कर दिमाग़ परेशान करना, व्यर्थ दिमाग़ चाटना।

सम्म-उल्-फ़ार—(अ०) (सं० पु०) संखिया।

समक—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) वह मछली जो ज़मीन के नीचे है; (२) पृथ्वी का सबसे नीचा तबक़ा।

समद—(अ०) (वि०) (१) .ख़ुदा का नाम; (२) जिसपर सब निर्भर हों और वह किसी पर निर्भर न हो, बेनियाज़।

समन—(अ०) (सं० पु०) (१) क़ीमत, मूल्य; (२) अदालत का परवाना, अदालत की हाज़िर होने की आज्ञा।—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) चमेली, .ख़ुशबूदार सफ़ेद फूलवाली बेल।

समन-अन्दाम—(फ़ा०) (वि०) जिसका

शरीर चमेली के समान गोरा हो, श्वेत-रंग का, गोरा-चिट्टा।

समन्द—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) घोड़ा, अश्व; (२) वह घोड़ा जिसके अयाल, दुम और जांघ स्याह हों।

समन्दर—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) एक चूहे की शक्ल का जानवर जो आग में पैदा होता है, जो आग से बाहर निकले तो मर जाय; (हि० सं०) समुद्र, दरिया।

समर—(अ०) (सं० पु०) (१) फल, मेवा; (२) लाभ, सुफल, नेक नतीजा; (३) सन्तान, औलाद; (४) माल, धन। **समर आना**—फल आना, फल लगना। **समर पाना**—सुफल पाना।

समरा—(अ०) (सं० पु०) (१) फल; (२) लाभ, सुफल; (३) परिणाम, नतीजा; (४) बदला।

समसाम—(अ०) (सं० स्त्री०) काटनेवाली तलवार, नंगी तलवार।

समा—(अ०) (सं० पु०) आकाश।

समाअ—(अ०) (सं० पु०) सुनना, श्रवण करना।

समाअत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) सुनना, हाकिम का मुक़दमा सुनना, सुनवाई; (२) सुनने की ताक़त। **समाअत करना**—सुनना। **समाअत में फ़र्क़ आना, समाअत में फ़र्क़ होना**—कम सुनाई देना।

समाई—(अ०) (वि०) सुना हुआ।

समाक़—(अ०) (सं० पु०) एक प्रकार का सफ़ेद और नरम पत्थर।

समाजत—(अ०) (सं० स्त्री०) ख़ुशामद, जुहार, विनय-प्रार्थना।

समावी—(अ०) (वि०) ऊपर का, दैवी, ग़ैबी।

समीअ—(अ०) (वि०) (१) ख़ुदा का नाम, (२) बहुत सुननेवाला।

समीम—(अ०) (वि०) सच्चा, ख़ालिस, शुद्ध।

समूम—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) गरम ज़हरीली हवा; (२) लू।

समूर—(अ०) (सं० पु०) (१) एक बहुत ही बारीक पशमवाले जानवर का नाम, जिसकी खाल जोड़ कर पोस्तीन बनाते हैं; (२) इस कपड़े (पोस्तीन) को भी समूर कहते हैं।

समोसा—(फ़ा०) (सं० पु०) तिकोना, तिकोनी शक्ल का एक पकवान; तिकोना लपेटा हुआ कपड़ा।

सम्त—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) सीधा; (२) ओर, तरफ़, दिशा।

सम्त-उल्-रास—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) वह तरफ़ जो सर के ऊपर है; (२) सब से ऊँचा स्थान।

सम्बुल—(अ०) (सं० पु०) (१) बालछड़, जटामांसी, एक सुगंधित वनस्पति; (२) इसकी उपमा बालों या ज़ुल्फ़ से दी जाती है।

सम्म—(अ०) (सं० पु०) ज़हर, विष।

सम्मी—(अ०) (वि०) ज़हरीला।

सम्मुल-फ़ार—(अ०) (सं० पु०) संखिया।

सम्मे-क़ातिल—(अ०) (पु०) घातक विष।

सर—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सिर, खोपड़ी; (२) गर्दन तक शरीर के ऊपर का हिस्सा; (३) नेता, सरदार; (४) शीर्षक, उनवान, पेशानी; (५) तरफ़, ओर; (६) मेल, इच्छा, ख़्वाहिश; (७) आरंभ, शुरू, अव्वल; (८) किनारा; (९) दिमाग़, मस्तिष्क; (१०) शक्ति। (वि०) जीता हुआ। (क्रि० वि०) ऊपर, ज़िम्मे।

सर-अंजाम—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) कार्य की समाप्ति; (२) प्रबंध, इन्तज़ाम, बंदोबस्त, व्यवस्था; (३) सामग्री, सामान।

सर-अंदाज़—(फ़ा०) (वि०) नाज़ से चलनेवाला, सर नीचे करके चलनेवाला।

सरअ—(अ०) (सं० स्त्री०) मिरगी रोग।

सर-अफ़गंदा—(फ़ा०) (वि०) परेशान, ग़रूर से सर नीचे डाले हुए।

सर-अफ़राज़—(फ़ा०) (सं० पु०) ऊँचा सिर रखनेवाला, सिर उठानेवाला, घमंडी।

सर-आग़ाज़—(फ़ा०) (सं० पु०) शीर्षक, पेशानी, उनवान।

सर-आमद—(फ़ा०) (वि०) (१) पूरा, पूर्ण; (२) बड़ा, मुख्य; (३) सरदार।

सर-कटा—(वि०) वह शख़्स जिसका सर कटा हो।

सर-कश—(फ़ा०) (वि०) (१) विद्रोही, बाग़ी; (२) दर्रा, उद्दंड।

सरक़ा—(अ०) (सं० पु०) चोरी।

सरकार—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) मालिक, सरदार; (२) गवर्नमेंट, राज-सत्ता; (३) रियासत; (४) माशूक़।

सरकारी—(फ़ा०) (वि०) (१) सरकार का, मालिक का; (२) राजकीय। सरकारी काग़ज़—(१) स्टाम्प, राज्य का काग़ज़; (२) प्रामिसरी नोट।

सर-कोब—(फ़ा०) (वि०) गोशमाली करनेवाला, पीटनेवाला।

सर-कोबी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सज़ा, दंड देना, पीटना।

सर-ख़त—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) किराये-नामा, क़बाला; (२) वह काग़ज़ जिस पर नौकरी की तारीख़ वग़ैरह लिखी हो; (३) हिसाब-किताब, देन लेन का परचा; (४) परवाना।

सर-ख़ुश—(फ़ा०) (वि०) (१) शराब से मस्त; (२) ख़ुश हाल, सुखी, संपन्न।

सर-ख़ुशी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) नशा, शराब का सरूर, मस्ती, ख़ुशी।

सर-ख़ेल—(फ़ा०) (सं० पु०) सरग़ना, जाति का मुखिया।

सर-ग़ज़ल—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) ग़ज़ल का मतला या पहला बेत; (२) वह ग़ज़ल जो दीवान में उम्दा और अच्छी हो।

सरग़ना—(फ़ा०) (सं० पु०) नेता, प्रधान, मुखिया।

सर-गरदाँ—(फ़ा०) (वि०) (१) हैरान, परेशान; (२) निछावर, क़ुर्बान।

सर-गरदानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) परेशानी, हैरानी, फ़िक्र, झगड़ा।

सर-गरम—(फ़ा०) (वि०) मुस्तैद, तत्पर, चालाक, मेहनती।

सर-गरमी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) तेज़ी, चालाकी, कोशिश।

सर-गरोह—(फ़ा०) (सं० पु०) मुखिया, नेता।

सर-गश्तगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) हैरानी, परेशानी, आवारगी; (२) आफ़त, मुसीबत, कष्ट।

सर-गश्ता—(फ़ा०) (वि०) भटका हुआ, हैरान, परेशान, विकल।

सर-गिराँ—(फ़ा०) (वि०) (१) मस्त; (२) ग़ुस्सेवर, ख़फ़ा; (३) घमंडी।

सर-गिरानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) ख़ुमार, सर का भारी होना; (२) ख़फ़गी; (३) अफ़सोस।

सर-गुज़श्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) गुज़रा हुआ हाल; बीती हुई बात; (२) अनुभव, जीवन-चरित।

सर-गुज़ार—(फ़ा०) (वि०) जाँबाज़, जान पर खेल जानेवाला।

सर-गोशी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) काना फूसी, कान में बात कहना, चुपके से बात कहना; (२) चुग़ली, निंदा।

सर-चढ़ा—(वि०) मुँह-लगा, गुस्ताख़, घमंडी। सर चढ़ के बोलना—आप से आप प्रकट होना; छिपाये न छिपाना। सर चढ़ कर लड़ना—व्यर्थ को छेड़-ख़ानी कर लड़ना।

सर-चश्मा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) पानी के निकलने की जगह; चश्मा; (२) नदी का उद्गम।

सर-चोट—(फ़ा०) (वि०) चिढ़, चोट, लाग।

सरज़द—(फ़ा०) (वि०) प्रकट, ज़ाहिर।

सर-ज़दनी—(वि०) जान से मार डालने के लायक़।

सर-ज़निश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बुरा भला कहना, फटकार, मलामत।

सर-ज़नी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) प्रयत्न, कोशिश, महनत।

सर-ज़मीन—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) देश, मुल्क, विलायत; (२) ज़मीन।

सर-ज़ोर—(फ़ा०) (वि०) (१) सरकश, उद्दंड; (२) ज़बरदस्त, ताक़तवर; (३) नट-खट।

सर-ज़ोरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सरकशी, धींगाधींगी।

सर-डूब—(फ़ा०) (वि०) (१) शराबोर, लथ-पथ; (२) आदमी-डुबान।

सर-तराश—(फ़ा०) (सं० पु०) हज्जाम, नाई।

सर-ताज—(फ़ा०) (सं० पु०) स्वामी, मालिक, परम श्रेष्ठ।

सर-तान—(अ०) (सं० पु०) (१) केंकड़ा (२) कर्कराशि; (३) एक प्रकार का फोड़ा जो बहुत कड़ा होता है।

सर-ता-पा—(फ़ा०) (क्रि० वि०) बिलकुल, सिर से पैर तक, अव्वल से आख़िर तक।

सर-ताब—(फ़ा०) (वि०) सरकश, उद्दंड।

सर-ताबी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सरकशी, उद्दंडता, विद्रोह।

सर-ता-सर—(फ़ा०) बिलकुल, तमाम।

सर-तेज़—(फ़ा०) (वि०) तुंद, तेज़, जिसकी नोक तेज़ हो।

सर-दुवाल—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) घोड़े के मुँह पर की वह चमड़े की चीज़ जिसमें लगाम अटकी रहती है, मोहरी।

सर-दफ़्तर—(फ़ा०) (सं० पु०) मीर मुंशी, दफ़्तर का अफ़सर।

सरदा—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार का ख़रबूज़ा।

सर-दाब, सर-दाबा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) तहख़ाना, ज़मीन के नीचे बना हुआ कमरा; (२) क़ब्र जो पहले से खोद कर ख़ाली पाट देते हैं।

सरदार—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सरग़ना, अफ़सर, नेता, नायक; (२) अमीर, रईस; (३) शासक।

सरदारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अफ़सरी, हुकूमत।

सरदी—(सं० स्त्री०) देखो—'सर्दी'।

सर-धरा—(हि०) (सं० पु०) नेता, मुरब्बी, बड़ा-बूढ़ा। सर धरना—किसी के ज़िम्मे लगाना।

सरनाम—(फ़ा०) (वि०) प्रसिद्ध, मशहूर।

सर-नामा—(फ़ा०) (सं० पु०) पत्र के ऊपर लिखा हुआ पता।

सर-निगूं—(फ़ा०) (वि०) (१) सर के बल, औंधा; (२) लज्जित, शरमिंदा।

सर-पंच—(फ़ा०) (सं० पु०) प्रधान पंच।

सर-परस्त—(फ़ा०) (वि०) संरक्षक, मुरब्बी, मददगार, अभिभावक।

सरपरस्ती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) संरक्षण, सहायता।

सर-पेच—(फ़ा०) (सं० पु०) पगड़ी के ऊपर लगाने का ज़ेवर।

सर-पोश—(फ़ा०) (सं० पु०) ढक्कन, ढकना। सर-पोश खुलजाना—गुप्त भेद प्रकट हो जाना।

सर-फ़राज़—(फ़ा०) (वि०) प्रतिष्ठित, माननीय। सर-फ़राज़ करना—इज़्ज़त देना, तरक़्क़ी देना, तशरीफ़ लाना।

सर-फ़रोशी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) जाँबाज़ी, दिलेरी।

सरफ़ा—(सं० पु०) देखो—'सर्फ़ा' ।

सर-ब-कफ़—(फ़ा०) (वि०) जान देने को तैयार ।

सर-ब-गरेबां—(फ़ा०) (वि०) शरमिंदा ।

सर-ब-ज़ानू—पीठ झुका कर बैठना (रंज या फ़िक्र में) ।

सर-ब-मुहर—(फ़ा०) (वि०) (१) मुहर किया हुआ, बंद; (२) पूरा, कुल ।

सर-बराह—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) प्रबंधक, कारिंदा; (२) मेट ।

सर-बराहकार—(फ़ा०) (सं० पु०) मुंतज़िम, कारिन्दा, प्रबंधक ।

सर-बराही—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) प्रबंध, बंदोबस्त; (२) सर-बराह का पद या कार्य ।

सर-ब-सर—(फ़ा०) (क्रि० वि०) बिलकुल, तमाम, बराबर ।

सर-बस्ता—(फ़ा०) (वि०) (१) गुप्त, पोशीदा; (२) दुश्वार, कठिन; (३) पेचीदा ।

सर-बाज़—(फ़ा०) (वि०) (१) जान पर खेलनेवाला, जाँ-बाज़; (२) वीर ।

सर-बाज़ी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) निडर होकर वीरता का काम करना ।

सर-बुलंद—(फ़ा०) (वि०) (१) घमंडी, (२) प्रतिष्ठा-प्राप्त ।

सर-मग़ज़न—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) व्यर्थ की बकबक; (२) परिश्रम, मशक़्क़त; (३) माथा-पच्ची; (४) चिन्ता, फ़िक्र । सर-मग़ज़न करना—किसी काम में फ़िक्र करना ।

सरमद—(अ०) (वि०) (१) मिला हुआ, एक; (२) मग्न, ईश्वर-प्रेम में मग्न; (३) मस्त; (४) अनन्त, सनातन ।

सर-मस्त—(फ़ा०) (वि०) मतवाला, मत्त, नशे में चूर ।

सरमा—(फ़ा०) (सं० पु०) सर्दी का मौसम, जाड़ा, शीत-काल ।

सरमाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) जाड़े के कपड़े । (वि०) जाड़े का ।

सरमाया—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) पूँजी, मूल-धन; (२) धन, सम्पत्ति; (३) कारण, सबब ।

सरमाया-दार—(फ़ा०) (वि०) मालदार, पूँजी-पति ।

सर-मुख—(फ़ा०) (वि०) सामने, समक्ष ।

सर-लश्कर—(फ़ा०) (वि०) फ़ौज का सरदार ।

सरवत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) दौलत, वैभव, तवंगरी; (२) अधिकार, हुकूमत ।

सरवर—(फ़ा०) (सं० पु०) नेता, नायक । (सं० स्त्री०) बराबरी ।

सरवरे-कायनात—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) मोहम्मद साहब की उपाधि; (२) सारी सृष्टि का प्रधान या नेता ।

सर-शार—(फ़ा०) (वि०) (१) लबालब, लबरेज़, मुँह तक भरा हुआ; (२) मस्त, बे ख़ुद, नशे में चूर ।

सर-सब्ज़—(फ़ा०) (वि०) (१) हरा-भरा, तरो-ताज़ा, ज़िन्दा; (२) माल-दार, रुपये वाला; (३) ऐश में व्यस्त, मस्त ।

सर-सर—(अ०) (सं० स्त्री०) आँधी, तेज़ हवा ।

सरसरी—(फ़ा०) (वि०) बे सोचे-समझे, बे-परवाई से, जल्दी में, मोटे तौर पर । (सं० स्त्री०) एक ज़ेवर जो माथे पर पहना जाता है । सरसरी सा काम—आसान काम, ऐसा काम जो आवश्यक न समझा जाय ।

सरसाम—(फ़ा०) (सं० पु०) सन्निपात, एक भयंकर रोग ।

सरहंग—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) फ़ौज का सरदार, सेना-पति; (२) पहलवान; (३) कोतवाल, सिपाही; (४) (उ०) दिल-चला ।

सरहतन्—(अ०) (क्रि० वि०) खुल्लम खुल्ला; साफ़-साफ़।

सर-हद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सीमा, किनारा, छोर।

सरा—(अ०) (सं० पु०) ज़मीन के नीचे की मट्टी। (फ़ा०) (सं० स्त्री०) मुसाफ़िर-ख़ाना, यात्रियों के ठहरने की जगह।

सराई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (यौगिक शब्दों के अन्त में) जानने की क्रिया, गान।

सराचा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) छोटा ख़ेमा; (२) छोटा मकान, क़नात।

सरात—(अ०) (सं० स्त्री०) मुसलमानों के विश्वास में एक पुल का नाम जो दोज़ख़ पर क़ायम होगा; वह बाल से भी पतला और तलवार से भी तेज़ होगा।

सराते मुस्तक़ीम—फ़ा०) (वि०) सीधा रास्ता।

सरा-परदा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) शाही दरबार या ख़ेमा; (२) वह क़नात जो ख़ेमे के चारों ओर परदा करने के लिए लगाई जाती है; (३) ख़ेमा, डेरा।

सरापा—(फ़ा०) (क्रि० वि०) सिर से पैर तक, बिलकुल, तमाम। (सं० पु०) (१) नख-शिख, वह काव्य जिसमें सब अंगों का वर्णन हो; (२) पूरा ख़िलअत, सिरोपाव।

सराफ़—(अ०) (सं० पु०) (१) परखनेवाला, रुपया परखनेवाला; (२) सोना-चाँदी बेचनेवाला; (३) नक़दी ज़ेवर का लेन-देन करनेवाला। **सराफ़ के से टके**—वह सौदा या माल जो पड़ा न रहे, जब चाहें बेच लें।

सराफ़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) सराफ़ का पेशा या काम; (२) सराफ़ों का बाज़ार; (३) कोठी, बंक।

सराफ़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) चाँदी-सोने का व्यापार, सराफ़ का काम; (२) महाजनी लिपि, मुंडी लिपि।

सराब—(अ०) (सं० पु०) (१) धोखा, छल, धोखा ही धोखा; (२) मृग-तृष्णा, मरीचिका, रेतीली ज़मीन जो चाँद सूरज की चमक से पानी का धोखा देती है।

सराय—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) मुसाफ़िर-ख़ाना, यात्रियों के ठहरने की जगह; (२) घर, मकान। **सराय का कुत्ता**—बड़ा लालची। कहा०—**सराय का कुत्ता हर मुसाफ़िर का यार**—मतलबी लोग हर एक के साथ गठ जाते हैं।

सरायत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) पैठना, घुसना, प्रवेश करना; (२) प्रभाव, तासीर करना, असर।

सरासर—(फ़ा०) (अव्यय) (१) इस सिरे से उस सिरे तक; (२) बिलकुल, तमाम; (३) साक्षात्, प्रत्यक्ष।

सरासरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) तेज़ी, फुरती; (२) जल्दी, शीघ्रता; (३) अंदाज़ से, बिना सोचे-समझे; (४) रवारवी, कोई काम बिना ध्यान दिये करना। (क्रि० वि०) जल्दी में, बिना सोचे-समझे।

सरासीमा—(फ़ा०) (वि०) घबराया हुआ, भौचक्का, हैरान, परेशान।

सरासीमगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) परेशानी, विकलता।

सराहत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) टीका, व्याख्या; (२) स्पष्टता। **सराहत करना**—टीका करना, खोल कर रखना।

सराहतन्—(अ०) (क्रि० वि०) खुल्लम-खुल्ला, साफ़ तौर पर।

सरिश्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) स्वभाव, गुण, प्रकृति; (२) आदत, तरीक़ा। (वि०) मिला हुआ, मिश्रित।

सरिश्ता—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) दफ़्तर, महकमा, कचहरी; (२) दस्तूर, रिवाज, रीति, परिपाटी; (३) तदबीर, उपाय, युक्ति, चारा; (४) विभाग; (५) नौकर-

चाकर; (६) सम्बन्ध, ताल्लुक़; (७) मेल-मिलाप।

सरिश्तेदार—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सरदार; (२) किसी विभाग का मुख्य कर्मचारी; (३) पेशकार।

सरिश्तेदारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सरिश्तेदार का काम या पद।

सरी—(अ०) (सं० पु०) ज़मीन के नीचे की मट्टी।

सरीअ—(अ०) (वि०) तेज़. जल्दी करनेवाला। (सं० स्त्री०) एक प्रकार का छंद।

सरीअ-उल्-तासीर—(अ०) (वि०) जल्दी प्रभाव दिखानेवाला, ज़ूद-असर।

सरीअ-उल्-हज़्म—(अ०) (वि०) जल्दी हज़्म होनेवाला, शीघ्र पचनेवाला।

सरीर—(अ०) (सं० पु०) तख़्त, राजसिंहासन। (सं० स्त्री०) क़लम चलने की आवाज़।

सरीर-आरा—(अ०) (वि०) तख़्त-नशीन, सिंहासनारूढ़।

सरीह—(अ०) (वि०) प्रकट ज़ाहिर, स्पष्ट।

सरीहन्—(अ०) (क्रि० वि०) खुल्लमखुल्ला, साफ़ तौर से, साफ़-साफ़।

सरे-इजलास—(फ़ा०) (क्रि० वि०) भरी कचहरी में, हाकिम के सामने।

सरे-तसलीम—(झुकाना के साथ) राज़ी होना, आज्ञा मानना।

सरे-दस्त—(फ़ा०) (क्रि० वि०) इसी समय, अभी, तुरन्त।

सरे-नौ—(फ़ा०) (क्रि० वि०) नये सिरे से, आरंभ से, शुरू से।

सरे-बाज़ार—(फ़ा०) (क्रि० वि०) खुल्लमखुल्ला, सबके सामने, भीड़ में।

सरे-बालीं—(फ़ा०) (सं० पु०) सिरहाना।

सरे मू—(फ़ा०) (वि०) ज़रा सा, रत्ती भर, बाल-बराबर।

सरे-राह—(फ़ा०) राह के सिरे पर, रास्ते में।

सरेश—(सं० पु०) देखो 'सरेस'।

सरे-शाम—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) संध्या, शाम। (क्रि० वि०) शाम होते ही।

सरेस—(फ़ा०) (सं० पु०) चिपकाने का एक पदार्थ।

सरो—(फ़ा०) (सं० पु०) एक पेड़ का नाम जो सीधा बढ़ता है। देखो—'सर्व'।

सरो-आज़ाद—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार का सरो-वृक्ष।

सरो-क़द, सरो-क़ामत—(फ़ा०) (वि०) सरो के समान क़द का।

सरोकार—(फ़ा०) (सं० पु०) ग़रज़, मतलब, वास्ता।

सरो-चिराग़ाँ—(फ़ा०) (सं० पु०) सरो वृक्ष के समान शीशे का या लकड़ी का झाड़ जिसमें बहुत सी बत्तियाँ जलती हैं।

सरोद—(फ़ा०) (सं० पु०) एक बाजे का नाम; (२) गाना बजाना; (३) उक्ति, कथन; (४) राग, गीत।

सरोश—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) फ़रिश्ता जब्राईल; (२) फ़रिश्ता; (३) ग़ैब की आवाज़, आकाश-वाणी।

सरो-सामान—(फ़ा०) (सं० पु०) माल-असबाब, ज़रूरी असबाब।

सर्द—(फ़ा०) (वि०) (१) ठंडा, शीतल; (२) ढीला, सुस्त; (३) मंद, धीमा; (४) नपुंसक, नामर्द, क्लीव।

सर्द-मिज़ाज—(फ़ा०) (वि०) (१) जिसका मिज़ाज (या प्रकृति) ठंडा हो, सुस्त; (२) कठोर-हृदय।

सर्द-मेहर—(फ़ा०) (वि०) कठोर, निर्दय, निर्मम।

सर्दी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) ठंड, ठंढक, शीत, जाड़ा; (२) शीतलता; (३) ज़ुकाम, प्रतिश्याय, नज़ला।

सर्फ़—(अ०) (सं० पु०) (१) व्यय, ख़र्च; (२) बेहूदा ख़र्च, फ़िज़ूल ख़र्च; (३) व्याकरण।

सर्फ़ा—(अ०) (सं० पु०) अपव्यय, बेजा ख़र्च; अफ़सोस।

सर्व—(फ़ा०) (सं० पु०) एक मशहूर पेड़ (जिसकी उपमा क़द से दी जाती है), सरो।

सर्व-आज़ाद—(फ़ा०) (सं० पु०) सर्व वृक्ष की एक क़िस्म जो सीधा और ऊँचा चला जाता है।

सर्राज—(अ०) (सं० पु०) ज़ीन-साज़।

सर्राफ़—(सं० पु०) देखो 'सराफ़'।

सल्तनत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) राज्य, हुकूमत, बादशाहत; (२) प्रबंध, इन्तज़ाम, शासन-व्यवस्था; (३) सुभीता, आराम।

सलफ़—(अ०) (वि०) गुज़रा हुआ, गुज़िश्त, पहले का, गत। (सं० पु०) अगले ज़मानेवाले, पहले लोग, पुराने समय के लोग। **सलफ़ से**—पहले से, आरंभ से, शुरू ज़माने से, प्राचीन काल से।

सलफ़ची—(अ०) (सं० स्त्री०) चिलमची, हाथ मुँह धोने का बर्तन।

सलब—(अ०) (सं० पु०) (१) दूर करना, ज़ब्त करना; (२) छीन लेना।

सलम—(अ०) (सं० स्त्री०) किसी चीज़ की क़ीमत पेशगी दे देना।

सलमा—(हि०) (सं० पु०) चाँदी-सोने के तार जिनको बटकर कपड़े में लगाते हैं।

सलवात—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) ईश्वर की कृपा; (२) सलाम, दुआ; (३) शुभेच्छा; (४) गाली, दुर्वचन; (५) किसी काम को छोड़ना। **सलवातें सुनाना**—बुरा-भला कहना, गालियाँ सुनाना।

सलसुल-बोल—(अ०) (सं० पु०) मसाने का रोग जिसमें मूत्र क़तरा क़तरा होकर निकलता है; मूत्र-कृच्छ्र।

सल्सबील—(अ०) (सं० स्त्री०) बहिश्त की एक नहर का नाम।

सला—(अ०) (सं० स्त्री०) निमंत्रण, खाने के लिए बुलाना।

सलातीन—(अ०) (सं० पु०) शहज़ादे, शाही ख़ानदान के भाई-बंद, पहले बादशाहों की औलाद। 'सुलतान' का बहुवचन।

सलाबत—(अ०) (सं० स्त्री०) दृढ़ता, मज़बूती, बेजा सख़्ती।

सलाबत-जंग—(अ०) (वि०) एक फ़ौजी ओहदेदार।

सलाम—(अ०) (सं० पु०) (१) प्रणाम, तसलीम, बंदगी; (२) रुख़सत; (३) माफ़ रखिये; (४) एक प्रकार का पद्य। **सलाम-पयाम, सलाम-पैग़ाम**—बातचीत; सगाई या मंगनी की बात।

सलाम-अलेक—(१) बंदगी; (२) शनासाई, परिचय, जान-पहचान।

सलाम-अलेकुम्—(अ०) (सं० स्त्री०) (तुम सलामत रहो) सलाम, बंदगी।

सलामत—(अ०) (वि०) (१) सुरक्षित, महफ़ूज़, (२) ज़िन्दा, जीवित; (३) तनदुरुस्त, स्वस्थ; (४) क़ायम, विद्यमान; (५) पूरा, सही-सालिम; (६) सकुशल; (७) शुभ, मुबारक। (क्रि० वि०) अच्छी तरह, कुशल-पूर्वक। **सलामत रहना**—सही-सालिम रहना, क़ायम रहना।

सलामत-रवी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) बीच के मार्ग का अनुसरण करना; (२) किफ़ायत-शआरी, कम ख़र्च करना।

सलामत-रौ—(फ़ा०) (वि०) होशयारी से चलनेवाला, मित-व्ययी, किफ़ायत-शार।

सलामती—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) रक्षा, हिफ़ाज़त, बचाव; (२) तनदुरुस्ती, कुशलता, ख़ैरियत, आराम; (३) मौजूदगी,

ज़िंदगी; अस्तित्व; (४) एक प्रकार का मोटा कपड़ा।

सलामी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) रुपया या ज़ेवर जो वर-वधू को दिया जाता है; (२) हथियारों को उठाकर सलाम करना; (३) सत्कार करने के लिए तोपों या बंदूकों की बाढ़ छोड़ना; (४) ढाल, ढलवाँ; (५) सलाम करनेवाला, मुजरई; (६) झुकनेवाला।

सलासत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) प्रवाह-युक्त होना, सरल होना, सलीस होना; (२) हमवारी, समतल होना; (३) मुलामियत, कोमलता, नरमी; (४) सुगमता, सादगी, सफ़ाई, स्पष्टता।

सलासते-ज़बान—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) नरम कलामी, मीठा बोलना, मृदु-भाषण।

सलासिल—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) बेड़ी, ज़ंजीर; (२) शृंखलाएँ, श्रेणियाँ। 'सिल-सिला' का बहुवचन।

सलासी—(अ०) (वि०) तिकोने।

सलाह—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) अच्छाई, नेकी, भलाई; (२) राय, सम्मति, मशवरा, तजवीज़; (३) इरादा, विचार, मंशा; (४) मुनासिब, मौज़ूं, उचित, उपयुक्त (बात)।

सलाह-अन्देश—(फ़ा०) (वि०) ख़ैर-अन्देश, शुभेच्छु।

सलाह-कार—(अ०) (सं० पु०) (१) परामर्श देनेवाला; (२) धर्म और नीति-पूर्ण आचरण करनेवाला।

सलाहियत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) मुलामियत, नरमी, आहिस्तगी; (२) रोज़-नामचा, मुसाफ़िरों की रिपोर्ट जो सराय में लिखी जाती है। सलाहियत पर आना—दुरुस्ती पर आना, राह पर आना।

सलीक़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) शऊर, विवेक, तमीज़, हुनर, योग्यता; (२) व्यवहार, बरताव, ढंग; (३) हर चीज़ को अपने अन्दाज़े और जगह पर रखने की अक़्ल; (४) तहज़ीब, शिष्टता, संजीदगी, गाम्भीर्य।

सलीक़ा-दार, सलीक़ामन्द - सलीक़ा-शआर—(अ०) (वि०) तमीज़दार, शऊरदार, शिष्ट, सभ्य, हुनर-मन्द, होश-यार, चतुर।

सलीक़ा-मजलिस—(अ०) (सं० पु०) सभा-चातुर्य।

सलीब—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) सूली; (२) क्रास, उस सूली का निशान जिस पर ईसा मसीह को फाँसी दी गई थी।

सलीम—(अ०) (वि०) (१) हलीम, बुर्दबार, शान्त, गंभीर; (२) सही, ठीक; (३) शुद्ध-हृदय, जिसका मन कलुषित न हो; (४) सहनशील।

सलीम-उल्-तबा—(अ०) (वि०) (१) नरम-दिल, हलीम, कोमल-प्रकृति; (२) धीर, गंभीर, दूर-दर्शी; (३) समझदार।

सलीम-शाही—एक प्रकार की दिल्ली-वाल ख़ूबसूरत और हलकी जूतियाँ।

सलीस—(अ०) (वि०) (१) सरल, सुगम, आसान, सहज; (२) रवा, चलता हुआ, प्रवाह-युक्त; (३) प्रसाद-गुण-युक्त, समझ में आनेवाला, आम-फ़हम, जो सब की समझ में आसके।

सलीस-गोई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ऐसी कविता करना जो समझने में आसान हो; ऐसा काव्य जिसमें कठिन और दुरूह शब्द न हों।

सलूक—(अ०) (सं० पु०) देखो—'सुलूक'।

सल्ख़—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) पोस्त उतारना, खाल खींचना; (२) जिस दिन चंद्रमा दिखलाई पड़े, शुक्ल-पक्ष की द्वितीया, (३) चाँद्रमास का आख़री दिन; (४) चाँदनी रात।

सल्तनत—(अ०) (सं० स्त्री०) बादशाहत, हुकूमत, दौर-दौरा, राज्य, शासन, अमलदारी।

सल्ब—(अ०) (वि०) नष्ट, बरबाद।

सल्ले-अला—(अ०) (सं० स्त्री०) कुरान शरीफ़ का एक मंत्र, जिसको किसी वस्तु की प्रशंसा करने के अवसर पर कहते हैं।

सवाद—(अ०) (सं० पु०) (१) स्याही, रंग की स्याही; (२) हवाली, नगर के आस-पास के स्थान; (३) पढ़ने-लिखने की योग्यता, समझदारी, बुद्धिमानी। (फ़ा०) (सं० पु०) हर बड़ा शहर।

सवानह—(अ०) (सं० पु०) घटनाएँ। 'सानिहा' का बहुवचन।

सवानह-उमरी—(अ०) (सं० स्त्री०) जीवन-चरित, जीवनी, जीवन-कथा।

सवानह-निगार—(अ०) (वि०) संवाद दाता, रिपोर्टर।

सवाब—(अ०) (सं० पु०) (१) पुण्य, शुभ कर्मों का फल; (२) भलाई, नेकी, सत्कर्म; (३) बदला, सुफल। सवाब कमाना—नेकी हासिल करना, भलाई कमाना। सवाब बख़्शना—सत्कर्म का फल दूसरे को देना। सवाब लूटना—पुण्य कमाना, नेक काम करना।

सवाब-अन्देश—(अ०) (वि०) (१) भलाई सोचनेवाला, उपकारी; (२) बहतरी की राय सोचनेवाला।

सवाबित—(अ०) (सं० पु०) स्थिर तारे; अचल नक्षत्र।

सवार—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) जो घोड़े पर सवार हो, अश्वारोही; (२) अश्वारोही सैनिक या सिपाही; (३) किसी सवारी पर बैठा हुआ; (४) मस्त, नशे में चूर। (वि०) किसी वाहन पर बैठा हुआ।

सवारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) घोड़े पर चढ़ने का काम; (२) सवार होने की चीज़; (३) जलूस; (४) कुश्ती का एक दावँ; (५) वह शख़्स जो सवार हो, सवार होनेवाला। (बहुवचन में) ज़नानी सवारियाँ—पर्दा-नशीन औरतें।

सवाल—(अ०) (सं० पु०) (१) प्रश्न, जो पूछा जाय; (२) पूछने की क्रिया; (३) माँग, दरख़्वास्त, प्रार्थना; (४) गणित का प्रश्न।

सवालात—(अ०) (सं० पु०) प्रश्न ('सवाल' का बहुवचन)।

सवाहिल—(अ०) (सं० पु०) किनारे, तट। 'साहिल' का बहुवचन।

सहक़—(अ०) (सं० पु०) घिसना, पीसना, कूटना, खरल करना।

सहन—(अ०) (सं० पु०) (१) आँगन, मकान के सामने की खुली जगह; (२) एक प्रकार का उम्दा रेशमी कपड़ा।

सहनक—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) छोटा थाल, रकाबी; (२) छोटा सहन; (३) मोहम्मद साहब की पुत्री बीबी फ़ातिमा के नाम की नियाज़ और उससे सम्बन्धित खाना। सहनक देना—सहनक की नियाज़ देना। सहनक से उठ जाना—चरित्र-भ्रष्ट हो जाना (स्त्री का)।

सहनची—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) बग़ल में बनी हुआ छोटा मकान; (२) दालान के इधर-उधर वाली कोठरी।

सहन-दार—(अ०) (वि०) जिसमें सहन या आँगन हो।

सहबा—(अ०) (सं० स्त्री०) सुर्ख़ शराब, अंगूरी शराब।

सहम—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) भय, डर, ख़ौफ़; (२) तीर। सहम चढ़ना—ख़ौफ़ छा जाना, भयभीत होना। सहम जाना—डर जाना।

सहम-नाक—(फ़ा०) (वि०) डरावना, भयानक, ख़ौफ़नाक।

सहमा—(वि०) डरा हुआ, चुप।

सहर—(अ०) (सं० स्त्री०) प्रभात, सुबह, प्रातःकाल।

सहर-ख़ंद—(फ़ा०) (वि०) सुबह की तरह खिला हुआ, हंसता हुआ, ख़ुश।

सहर-ख़ेज़—(फ़ा०) (वि०) सुबह सोकर उठनेवाला।

सहर-ख़ेज़िया—(उ०) (वि०) चोर उचक्का जो सुबह की पड़ी-पड़ाई चीज़ें उठा ले जाय।

सहर-गही—(अ०) (सं० स्त्री०) रमज़ान के दिनों का वह खाना जो रात को पिछले पहर खाते हैं।

सहरा—(अ०) (सं० पु०) जंगल, बयाबान, वन।

सहरा-ए-आज़म—(अ०) (सं० पु०) अफ्रीका का बड़ा सहरा, रेगिस्तान, जो तीन हज़ार मील लंबा और एक हज़ार मील चौड़ा है।

सहरा-गर्द—(फ़ा०) (वि०) जंगलों में फिरनेवाला।

सहरा-गर्दी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) जंगलों में फिरना।

सहराई—(अ०) (वि०) जंगली।

सहल—(अ०) (वि०) सहज, आसान, सादा।

सहल-अंकार—(अ०) (वि०) (१) काहिल, आलसी, सुस्त; (२) आराम-तलब; (३) बहाना-बाज़।

सहल-उल्-वसूल—(अ०) (वि०) आसानी से वसूल होनेवाला।

सहाब—(अ०) (सं० पु०) बादल, अब्र, मेघ।

सहाबत—(अ०) (सं० स्त्री०) यार होना, मित्र-भाव, यारी करना।

सहाबा—(अ०) (सं० पु०) (१) मित्र, दोस्त; (२) मोहम्मद साहब के घनिष्ठ मित्र।

सहाबी—(अ०) (सं० पु०) मोहम्मद साहब के घनिष्ठ मित्र और उनके वंशज।

सहाम—(अ०) (सं० पु०) (१) हिस्सा, भाग; (२) तीर। देखो 'सिहाम'।

सहायफ़—(अ०) (सं० पु०) (१) ग्रन्थ, पुस्तक; (२) पृष्ठ।

सही—(उ०) (१) ठीक है, दुरुस्त है; (२) जो तुम कहते हो या समझे हो, वही होगा; (३) मान लो, फ़र्ज़ कर लो; (४) ग़नीमत है, बहुत है; (५) ऐसा ही होगा; (६) ताकीद, या तसल्ली या ख़ातिर या सिलसिला क़ायम रखने के लिए और बेपरवाई ज़ाहिर करने के लिए व्यवहृत।

सहीफ़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) पुस्तक, रिसाला, किताब; (२) पृष्ठ, पन्ना; (३) पत्र, ख़त, चिट्ठी।

सहीम—(अ०) (वि०) साझी, शरीक, हिस्सेदार।

सही-सलामत—(अ०) (वि०) (१) ज़िन्दा, जीवित; (२) आरोग्य, भला-चंगा; (३) आफ़त से महफ़ूज, विपत्ति से सुरक्षित; (४) जिसमें कोई कमी या दोष न आया हो।

सही-सालिम—(अ०) (वि०) (१) पूरा और कामिल, सम्पूर्ण; (२) ज्यों का त्यों; (३) ज़िन्दा, जीवित।

सहीह—(अ०) (वि०) (१) तनदुरुस्त, स्वस्थ; (२) पूरा, पूर्ण, कामिल; (३) ठीक, दुरुस्त, सच; (४) उचित, बजा। सहीह करना—(१) दुरुस्त करना; (२) दस्तख़त करना, तसदीक़ करना; (३) (औ०) मारना, रसीद करना।

सहूलत, सहूलियत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) आसानी, सुगमता; (२) शिष्टाचार।

सहो—(अ०) (सं० पु०) भूल, चूक, ख़ता, ग़लती।

सहो-क़लम—(अ०) (सं० पु०) कुछ का कुछ लिख जाना; लिखने की ग़लती।

सह्हो-कातिब—(अ०) (सं० पु०) नक़ल करनेवाले की भूल।

सह्व—(अ०) (सं० पु०) देखो 'सह्हो'।

सह्वन्—(अ०) (क्रि० वि०) भूल से, ग़लती से।

साअ—(अ०) (सं० पु०) एक वज़न (या तोल) जो २३४ तोले के बराबर होता है।

साअत—(अ०) (सं० स्त्री०) देखो 'साइत'।

साइक़ा—(अ०) (सं० स्त्री०) बिजली, बिजली जो ज़मीन पर गिरे।

साइक़ा-फ़िगन—(फ़ा०) (वि०) बिजलियाँ गिरानेवाली।

साइक़ा-बार—(फ़ा०) (वि०) बिजली बरसानेवाला।

साइक़ा-बारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बिजलियाँ बरसाना।

साइत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) एक घंटे का समय, ढाई घड़ी; (२) पल, लहमा; (३) मुहूर्त, शुभ लग्न; (४) समय देखने की घड़ी।

साइब—(अ०) (सं० पु०) बाहु, बाँह, बाज़ू; (२) कलाई।

साइब—(अ०) (वि०) (१) पहुँचनेवाला, रसा; (२) ठीक, दुरुस्त।

साई—(अ०) (सं० पु०) दौड़-धूप करनेवाला, कोशिश करनेवाला, उद्योग करनेवाला। (सं० स्त्री०) पेशगी, बयाना।

साईस—(अ०) (सं० पु०) घोड़े की ख़िदमत करनेवाला, घोड़े की देख-भाल करनेवाला; घोड़ा हाँकनेवाला।

साईसी—(अ०) (सं० स्त्री०) घोड़े की ख़िदमत का काम या पेशा। कहा०—साईसी इल्म दरयाव—हर हुनर या विद्या में ख़ास रहस्य होते हैं।

साक़—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) दरख़्त का तना; (२) साग-पात का डंठल, (३) पिंडली।

साक़न—(अ०) (सं० स्त्री०) देखो 'साक़िन'।

साकित—(अ०) (वि०) (१) चुप, मौन, ख़ामोश; (२) चुपचाप एक जगह ठहरा हुआ।

साक़ित—(अ०) (वि०) (१) गिरानेवाला; (२) गिरा हुआ, नष्ट; (३) त्यक्त, छोड़ा हुआ। साक़ित करना—(१) गिराना, निकालना; (२) ना-मंज़ूर कर देना। साक़ित होना—गुम हो जाना, नष्ट हो जाना।

साक़ित-उल-मिल्कियत—(अ०) (वि०) जिसकी जायदाद अलग हो गई हो।

साकिन—(अ०) (वि०) (१) निवासी, रहनेवाला, (२) एक स्थान पर चुपचाप ठहरा हुआ; (३) बे-स्वर का अक्षर, हलन्त।

साक़िन—(अ०) (सं० स्त्री०) वह बाज़ारी औरत जो भंग, हुक्क़ा आदि पिलाती है।

साक़िब—(अ०) (वि०) चमकता हुआ, प्रकाश-मान।

साक़िया—ऐ साक़ी। (देखो—'साक़ी'।)

साक़ी—(अ०) (सं० पु०) (१) पानी या शराब पिलानेवाला; (२) हुक्क़ा पिलानेवाला; (३) माशूक़।

साक़ी-अज़ल—(फ़ा०) (सं० पु०) ईश्वर।

साक़ूल—(तु०) (सं० पु०) दीवार की सीध नापने का औज़ार।

साख—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) भरम, ऐतबार, इज़्ज़त-आबरू, प्रतिष्ठा; (२) ठाठ, आन-बान।

साखा—(हि०) (सं० पु०) (१) एकता, एक-दिल होना; (२) लड़ाई, अन-बन; (३) साख, ठाठ।

साख़्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) बनावट, बनाने की क्रिया; (२) बनी हुई बात, मनगढ़ंत बात।

साख़्ता—(फ़ा०) (वि०) झूठा, नक़ली, मसनूई, बनाया हुआ।

साख़्ता-परदाख़्ता—(फ़ा०) (वि०) बनाया हुआ, सँवारा हुआ।

साग़र—(अ०) (सं० पु०) (१) प्याला; (२) शराब का प्याला। साग़र चलना—शराब का दौर चलना।

साग़र-कश—(फ़ा०) (वि०) शराब-ख़ोर।

साग़री—(अ०) (सं० स्त्री०) गुदा।

साचक़, साचिक़—(तु०) (सं० स्त्री०) हिना-बंदी की रस्म, मुसलमानों की एक रस्म जिसमें विवाह से पहले वधू के यहाँ कपड़े, मेंहदी इत्यादि भेजे जाते हैं।

साज़—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सामान, असबाब; (२) सजाने का सामान; (३) हथियार; (४) मिल जाना, मेल-जोल, छिपकर दूसरे के पक्ष में हो जाना। (वि०) (यौगिक के अन्त में) बनानेवाला।

साज़-गार—(फ़ा०) (वि०) (१) मुबारक; शुभ; (२) अनुकूल, ठीक।

साज़-गारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) निबाह, अनुकूलता, मुआफ़क़त।

साज़-बाज़—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) साज़िश, षड्यंत्र; (२) मिलाप, मेल।

साज़-सामान—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) असबाब; लवाज़म; (२) तैयारी, ठाठ।

साजिद—(अ०) (वि०) सर झुकानेवाला, दंडवत करनेवाला।

साज़िन्दा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) साज़ या बाजा बजानेवाला; (२) सारंगिया, तबलची, समाजी।

साज़िश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) किसी के विरुद्ध मेल-जोल, लगाव, षड्यंत्र।

साज़िशी—(फ़ा०) (वि०) मेल करनेवाला, फ़रेबी।

सात-पाँच—(हि०) (सं० स्त्री०) चालाकी, हीला-बहाना, मकर, छल। सात-पाँच करना—तकरार करना, झगड़ा निकालना। सात-पाँच लाना—उलझना, हुज्जत करना।

सातिर—(अ०) (वि०) छुपानेवाला।

सातूर—(अ०) (सं० पु०) ख़ंजर, बड़ी छुरी।

साद—(अ०) (सं० पु०) (१) अरबी लिपि का एक अक्षर; (२) क़ुरान का एक सूरत (अध्याय) का नाम; (३) स्वीकृति का निशान; (४) आँख, नेत्र (शायर आँख से उपमा देते हैं)। साद करना—सही का निशान करना, स्वीकार करना, दस्तख़त करना।

सादगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) सादापन, भोलापन, सरलता; (२) सफ़ाई, निष्कपट होना।

सादस—(अ०) (वि०) छठा, छठवाँ।

सादा—(अ०) (वि०) (१) बे-मेल, ख़ालिस, शुद्ध; (२) साफ़, कोरा, बिना लिखा हुआ; (३) नादान, मूर्ख, बेहुनर, सीधा-सादा, भोला-भाला; (४) सीधी बनावट का।

सादा-कार—(फ़ा०) (वि०) सोने-चाँदी पर उम्दा काम बनानेवाला, सुनार।

सादात—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) हज़रत अली की औलाद; (२) सैयद जाति।

सादा-दिल—(फ़ा०) (वि०) भोला, निष्कपट, साफ़-दिल।

सादा-दिली—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) साफ़-दिली, भोला-पन, बेवक़ूफ़ी।

सादा-पन, सादा-पना—(फ़ा०) (सं० पु०) भोलापन, सादगी, सरल-स्वभाव।

सादा-पुरकार—(फ़ा०) (सं० पु०) शोख़ और ऐय्यार माशूक़।

सादा-मिज़ाज—(फ़ा०) (वि०) जिसके स्वभाव में बनावट न हो, सीधा सादा।

सादा-रुख़, सादा-रू—(फ़ा०) (वि०) बिना डाढ़ी-मूछ का, बे रेशे जवान।

सादा-लौह—(फ़ा०) (वि०) (१) भोला-भाला, सीधा-सादा; (२) बेवक़ूफ़, मूर्ख।

सादा-लौही—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) भोला-पन, बेवक़ूफ़ी।

सादा-वज़ा—(फ़ा०) (वि०) सादा-तौर, जो फ़ैशन में न हो।

सादिक़—(अ०) (वि०) (१) सच्चा, सत्य-निष्ठ; (२) प्रकट, ज़ाहिर; (३) पक्का, वफ़ादार; (४) शुद्ध, पवित्र; (५) उपयुक्त, ठीक, लागू होना, चस्पाँ होना।

सादिक़-उल्-एतक़ाद—(अ०) (वि०) जिसके धार्मिक विश्वास दृढ़ हों।

सादिक़-उल्-क़ौल—(अ०) (वि०) दृढ़-व्रती, बात का पक्का, वफ़ादार।

सादिर—(अ०) (वि०) (१) जारी, प्रचलित, नाफ़िज़; (२) निकलनेवाला, जारी होनेवाला।

सादिर-वारिद—(फ़ा०) (सं० पु०) अतिथि, आया-गया, यात्री, मेहमान।

सादी—(वि०) (स्त्री०) (१) भोली-भाली, नादान; (२) कोरी, साफ़; (३) बिना बनावट की।

सान—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) बाढ़ रखने का पत्थर; (२) मानिन्द, समान; (३) धार, बाढ़। (वि०) तेज़ करनेवाला, ज़ंग दूर करनेवाला।

सानह—(अ०) (सं० पु०) हादसा, घटना।

साना—(अ०) (सं० पु०) देखो 'सानिअ'।

सानिअ—(अ०) (सं० पु०) (१) बनाने-वाला, रचयिता; (२) पेशावर, कारीगर। सानिअ-क़ुदरत, सानिअ-मुतलक़—ईश्वर।

सानियन्—(अ०) (क्रि० वि०) दुबारा, फिर एक बार, मुकर्रर।

सानिया—(अ०) (सं० पु०) पल, क्षण, मिनट।

सानिहा—(अ०) (सं० पु०) दुर्घटना, हादसा।

सानी—(अ०) (वि०) (१) द्वितीय, दूसरा; (२) जोड़ का, मुक़ाबिले का, मानिंद।

सानी-उल्-हाल—दूसरे वक्त, फिर, बाद को।

साफ़—(अ०) (वि०) (१) बे-मेल, ख़ालिस, शुद्ध; (२) उजला, कोरा, बेदाग़; (३) पाक, निर्लिप्त; (४) सरल, सहज, स्पष्ट, सलीस; (५) हमवार, बराबर, समतल; (६) निष्कपट, द्वेषहीन, बे-कोना, बे-मैल; (७) बिलकुल, क़तई, पूर्ण रूप से; (८) चुना हुआ, फटका हुआ, बीना हुआ; (९) ठीक, दुरुस्त; (१०) ज़ाहिर, प्रकट; (११) बे-लौस, बे लाग; (१२) निष्पक्ष; (१३) निथरा हुआ; (१४) निर्दोष, बे ऐब; (१५) सादा, कोरा। (क्रि०) (वि०) (१) बिना रोक-टोक के; (२) बिना दोष या कलंक के; (३) बिना कष्ट के; (४) बिलकुल; (५) बे मालूम। साफ़-साफ़—खुल्लम खुल्ला, बेलाग, स्पष्ट, सफ़ेद, बे-दाग़। साफ़ करना, साफ़ कर देना—(१) धोना, मैल निकालना; (२) ठीक करना, नक़ल करना; (३) बुहारना; (४) बिलकुल चट कर जाना, खा-पी जाना; (५) बिल-कुल ग़ारत करना; (६) मश्क़ करना, अभ्यास करना; (७) मार डालना, क़त्ल करना। साफ़ कहना—खरी खरी सुनाना। साफ़ गुज़रना—फ़ाक़े से गुज़रना; भूखा रहना। साफ़ निकल जाना—बिलकुल इन्कार कर जाना। साफ़ रहना—उजला रहना, बे-लाग रहना, ईमानदारी से रहना। साफ़ सुनाना—खरी खरी सुनाना, गालियाँ देना।

साफ़-गोई—(अ०) (सं० स्त्री०) साफ़ साफ़ कहना, स्पष्ट कह देना।

साफ़-ज़मसीर साफ़-तबा साफ़तीनत—(फ़ा०) (वि०) निष्कपट, बे-कीना, द्वेष-रहित।

साफ़दिली—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दिल की सफ़ाई, निर्मल मन होना।

साफ़-दीदा—(वि०) (औ०) ढीठ, बे-ग़ैरत, बेशर्म।

साफ़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) सिर से बांधने का दुपट्टा, पगड़ी, मुंडासा; (२) रोज़ के कपड़े धोना; (३) शिकारी जानवर को भूखा रखना।

साफ़िन—(अ०) (सं० स्त्री०) एक रग का नाम जो पाँव के गट्टे में है।

साफ़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) रुमाल; (२) वह कपड़ा जिससे बावर्ची चूल्हे से बरतन उतारते हैं; (३) छानने का कपड़ा; (४) चिलम के नीचे लगाने का कपड़ा।

साफ़ी-नामा—(फ़ा०) (सं० पु०) राज़ीनामा।

सावन—(सं० पु०) साबून (अ०) का अपभ्रंश। देखो—'साबुन'। सावन के मोल—(औ०) ख़ूब जूतियाँ लगना।

साबर—(हि०) (सं० पु०) (१) बारह-सिंगा; (२) सफ़ेद या पीले रंग का कपड़ा जो हिरन या बारह-सिंगे की खाल से बनाया जाता है; (३) नक़ब लगाने का औज़ार।

साबिक़—(अ०) (वि०) अगला, पहला, पूर्व का। साबिक़ में—अगले ज़माने में।

साबिक़-दस्तूर—(अ०) (वि०) पुरानी रीति के अनुसार, पहले की तरह।

साबिक़न—(अ०) पहले, पहली बार।

साबिक़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) भेंट, जान-पहचान, मुलाक़ात; (२) वास्ता, सरोकार, सम्बन्ध। (वि०) पहले का।

साबिक़ीन—(अ०) (सं० पु०) पुराने आदमी, अगले समय के लोग।

साबित—(अ०) (वि०) (१) पूरा, जो टूटा-फूटा न हो; (२) पायदार, क़ायम, बरक़रार; (३) दृढ़, मज़बूत; (४) प्रमाणित, जिसका सुबूत हो चुका हो; (५) ठीक, दुरुस्त; (६) स्थिर, एक ही स्थान पर रहनेवाला (ग्रह), ध्रुव।

साबित-क़दम—(फ़ा०) (वि०) दृढ़, दृढ़-व्रती, बात पर क़ायम।

साबित-क़दमी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दृढ़ता, धैर्य।

साबिर—(अ०) (वि०) संतोष करनेवाला, सब्र करनेवाला।

साबुन—(अ०) (सं० पु०) एक योग जिससे हाथ-मुँह धोते हैं, या कपड़ा धोकर साफ़ करते हैं। साबुन सा मुँह में घुलना, साबुन सा मुँह होना—मुँह का स्वाद मीठा होना। साबुन का तार, साबुन में तार—बेलौस, निर्लिप्त। (साबुन को लोहे के तार से काटते हैं)।

साबून—(अ०) (सं० पु०) देखो—'साबुन'।

साबूनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार की मिठाई।

साम—(अ०) (सं० पु०) रुस्तम पहलवान के दादा का नाम।

सामईन—(अ०) (सं० पु०) सुननेवाले।

सामा—(अ०) (सं० पु०) सुननेवाला, श्रोता।

सामान—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) असबाब, चीज़ वस्तु; (२) हथियार, औज़ार; (३) बंदोबस्त, प्रबंध, दुरुस्ती; (४) होश, आसार; (५) सामग्री।

सामिआ—(अ०) (सं० स्त्री०) सुनने की शक्ति।

सामित—(अ०) (वि०) चुप, ख़ामोश, चुपचाप।

सामिरी—(अ०) (सं० वि०) एक प्रसिद्ध जादूगर का नाम।

सामिरी-फ़न—(अ०) (सं० पु०) जादूगर।

सामी—(अ०) (वि०) बुलंद, आला, उच्च। (हि०) (सं० स्त्री०) उपजाऊ भूमि।

सायबान—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) मकान के आगे का छप्पर जो धूप रोकने को बनाया जाता है; (२) टीन या फूस का पटा हुआ उसारा।

सायर—(अ०) (वि०) (१) फिरनेवाला, गर्दिश करनेवाला; (२) तमाम, कुल। (उ०) (सं० स्त्री०) चुंगी। (अ०) (सं० पु०)—(१) सैलानी; (२) आवारा, मारा मारा फिरनेवाला। सायर-ख़र्च—फुटकर ख़र्च, असाधारण ख़र्च।

सायर-दार—(अ०) (वि०) फिरनेवाला; जारी व मशहूर।

सायल—(अ०) (सं० पु०) (१) पूछनेवाला, प्रश्न करनेवाला; (२) चाहनेवाला, (३) जारी होनेवाला; (४) फ़क़ीर, भिखारी; (५) उम्मेदवार, आसरा करने वाला; (६) प्रार्थी, अर्ज़ी देनेवाला; (७) दस्तख़त करनेवाला।

साया—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) छाया, परछाईं; (२) सहायता, हिमायत, मदद; (३) जिन, भूत, प्रेत; (४ सोहबत का असर, संगति का प्रभाव; (५) वह स्याही जो चित्र-कार तसवीर में जगह जगह देते हैं, शेड। (अ०) (सं० पु०) मेमों की घेरे-दार पोशाक। साया उठना—सरपरस्त या बड़े-बूढ़े का मर जाना। साया उतारना—भूत उतारना, आसेब दूर करना। साया ढलना—झुट-पुटे का वक्त होना। साया पिसा जाना—बहुत भीड़ होना। साया बन कर साथ रहना—कभी जुदा न होना। साया रहना—सिर पर किसी बुज़ुर्ग का क़ायम रहना। साया से जलना—नफ़रत करना। साया से दूर दूर रहना—किसी की सोहबत से नफ़रत करना।

साय-ज़दा—(फ़ा०) (वि०) जिस पर आसेब हो।

साया-दार—(फ़ा०) (वि०) (१) छाया-दार; (२) वह शख़्स जिसको आसेब हो।

साया-परवर्दा—(फ़ा०) (वि०) लाड़ला।

सारंग—(हि०) (सं० पु०) (१) एक राग का नाम; (२) (लख०) शहद की बड़ी मक्खी।

सार—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) ऊँट; २) सर; (३) मिस्ल, मानिंद; (४) जगह; (५) बहुतायत।

सारक़—(अ०) (सं० पु०) चोर।

सारबान—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) ऊँट हाँकनेवाला; (२) ऊँट पर सवारी करनेवाला।

सारा—(फ़ा०) (वि०) ख़ालिस, शुद्ध। (हि०) (वि०) कुल, सब।

सारी—(अ०) (वि०) असर करनेवाला।

साल—(फ़ा०) (सं० पु०) वर्ष, बरस।

साल-आइन्दा—(फ़ा०) (सं० पु०) आनेवाला साल, आगामी वर्ष।

साल-क़मरी—(फ़ा०) (सं० पु०) चांद्र वर्ष, वह साल जिसकी गणना चंद्रमा की चाल पर लगाई जाय।

साल-ख़ुर्दा—(फ़ा०) (वि०) (१) पुराना, प्राचीन; (२) तजुर्बे-कार।

साल-गिरह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) जन्म-दिन, बरस-गाँठ।

साल-गुज़िश्ता—(फ़ा०) (सं० पु०) गत वर्ष, पिछला साल।

साल-तमाम—(फ़ा०) (सं० पु०) वर्ष की समाप्ति, साल का आख़ीर।

सालन—(हि०) (सं० पु०) (१) पका हुआ गोश्त, (२) रोटी के साथ खाने को नमकीन तरकारी।

साल-फ़स्ली—(हि०) (सं० पु०) वह साल जो फ़सलों के हिसाब से लिया जाता है।

साल-ब-साल—(फ़ा०) (क्रि० वि०) प्रति-वर्ष, सालाना, हर साल।

सालब-मिसरी—(अ०) (सं० स्त्री०) एक पौष्टिक कंद।

साल-शम्सी—(अ०) (सं० पु०) सौर वर्ष; वह वर्ष जिसकी गणना सूर्य की चाल से की जाती है।

सालह—(अ०) (वि०) नेक, भला।

साल-हाल—(फ़ा०) (सं० पु०) चलता हुआ वर्ष, यही साल।

सालहा-साल—(फ़ा०) (क्रि० वि०) बहुत वर्षों से या तक, मुद्दतों।

सालहिजरी—(अ०) (सं० पु०) साल-क़मरी, चांद्र-वर्ष, वह साल जो मोहम्मद साहब की हिजरत (मक्का से मदीना जाना) से शुरू हुआ।

साला—(फ़ा०) (वि०) साल से सम्बंन्ध रखनेवाला, वर्ष का।

सालाना—(फ़ा०) (वि०) वार्षिक, हर साल का। (सं०) वह वृत्ति जो प्रति वर्ष के अन्त में मिले।

सालार—(फ़ा०) (सं० पु०) सरदार, अफ़सर, प्रधान नेता, मुखिया।

सालार-जंग—(फ़ा०) (सं० पु०) फौजी अफ़सरों का सरताज, प्रधान सेनाध्यक्ष।

सालिक—(अ०) (सं० पु०) (१) राह चलनेवाला, यात्री, राह-गीर; (२) ईश्वर-भक्त गृहस्थ।

सालिम—(अ०) (वि०) (१) पूर्ण, पूरा, सब; (२) सही-सलामत, नीरोग।

सालियाना—(वि०) देखो 'सालाना'।

सालिस—(अ०) (वि०) तीसरा, तृतीय। (सं० पु०) दो आदमियों का फ़ैसला करनेवाला, पंच।

सालिस-नामा—(अ०) (सं० पु०) पंच-फ़ैसला।

सालिसी—(अ०) (सं० स्त्री०) पंचायत, समझौता।

सालीना—(फ़ा०) (वि०) वार्षिक वृत्ति, वह रक़म जो हर साल किसी को मिले।

सालूस—(फ़ा०) (वि०) (१) मकर, फ़रेब, धोखा, कपट; (२) वह शख़्स जो अपने ऊपरी और दिखावटी ढंग से लोगों को धोखा दे, बगला-भगत।

साले-कबीसा—(फ़ा०) (सं० पु०) वह वर्ष जिसमें अधिक मास पड़े, लौंद का साल।

साले-पैवस्ता—(फ़ा०) (सं० पु०) गत वर्ष।

साले-रवाँ—(फ़ा०) (सं० पु०) चलता हुआ वर्ष।

सालेह—(अ०) (वि०) (१) नेक, भला; (२) सदाचारी।

साले-हाल—(फ़ा०) (सं० पु०) साल-हाल, चलता हुआ वर्ष, यही साल।

सालोतरी—(हि०) (सं० पु०) चौपायों का इलाज करनेवाला।

साँसा—(हि०) (सं० पु०) फ़िक्र, अंदेशा, चिन्ता, भय, ख़ौफ़, ख़तरा।

साहब—(अ०) (वि०) वाला, रखनेवाला, (शब्दों के आरंभ में) (सं० पु०) (१) मालिक, स्वामी; (२) आदर-सूचक शब्द; (३) यूरोपियन लोग; (४) सम्मानित व्यक्ति; (५) परमेश्वर; (६) पति, पत्नी का पारस्परिक संबोधन; (६) मित्र, दोस्त, साथी।

साहब-ज़ादा—(अ०) (सं० पु०) (१) लड़का, सुपुत्र, बेटा; (२) नातजुर्बेकार युवा; (३) अमीर-ज़ादा।

साहब-ज़ादा-पन—(सं० पु०) नादानी, बेवक़ूफ़ी।

साहब-ज़ादी—(अ०) (सं० स्त्री०) लड़की, बेटी।

साहब-दिमाग़—(अ०) (वि०) घमंडी, अभिमानी, मुतकब्बर।

साहब-नज़र—(अ०) (वि०) दाना, दूर-दर्शी।

साहब-फ़राश—(अ०) (वि०) वह बीमार जो बिस्तर से न उठ सके।

साहब-सलामत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) सलाम, बंदगी; (२) जान पहचान, रस्मी मुलाक़ात।

साहबा—(अ०) (सं० स्त्री०) साहब का स्त्री-लिंग।

साहबान—(अ०) (सं० पु०) साहब का बहु-वचन।

साहबाना—(अ०) (वि०) साहबों का-सा, साहबों की तरह का।

साहबी—(अ०) (वि०) साहब का, साहब का सा। (सं० स्त्री०) (१) इज़्ज़त, प्रतिष्ठा, मान, बड़प्पन; (२) प्रभुता, हुकूमत; (३) ठाठ, दौर-दौरा।

साहबे-आलम—(अ०) (सं० पु०) दिल्ली के मुग़ल शाहज़ादों की उपाधि।

साहबे-इक़बाल—(फ़ा०) (वि०) ख़ुश-नसीब, भाग्यवान्।

साहबे-इख़्तियार—(फ़ा०) (वि०) अधिकार रखनेवाला, स्वाधीन, आज़ाद।

साहबे-इख़लाक़—(फ़ा०) (वि०) सभ्य, शिष्ट, ख़लीक।

साहबे-क़िरान—(अ०) (सं० पु०) तैमूर-लंग का नाम; जिसके ग्रह बड़े अच्छे हों, जन्म-पत्री में राज-योग पड़ा हो।

साहबे-ख़ाना—(फ़ा०) (सं० पु०) घर का मालिक, मेज़बान।

साहबे-जमाल—(फ़ा०) (वि०) हसीन, सुन्दर, ख़ूबसूरत।

साहबे-जायदाद—(फ़ा०) (वि०) जिसके पास ज़मीन जायदाद हो।

साहबे-ज़ौक़—(फ़ा०) (वि०) शौक़ीन, जिसे किसी बात का चसका हो।

साहबे-तख़्त—(फ़ा०) (सं० पु०) बाद-शाह।

साहबे-तदबीर—(फ़ा०) (वि०) होशयार, चतुर।

साहबे-दिल—(फ़ा०) (वि०) दाना, समझदार, दानिश-मंद।

साहिब—(सं० पु०) देखो 'साहब'।

साहिर—(अ०) (सं० पु०) जादूगर।

साहिरा—(अ०) (सं० स्त्री०) जादूगरनी।

साहिरी—(अ०) (सं० स्त्री०) जादूगरी।

साहिल—(अ०) (सं० पु०) नदी या समुद्र का किनारा, तट।

सिंजाफ़—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) गोट, हाशिया, किनारा, (२) एक प्रकार का घोड़ा। देखो 'संजाफ़'।

सिंजाब—(फ़ा०) (सं० पु०) एक जानवर जिसकी खाल की पोस्तीन बनती है।

सिकंजबीन—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सिरके और नीबू के रस का शरबत।

सिकंदर—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) यूनान का प्रसिद्ध बादशाह जिसने हिन्दोस्तान और चीन पर चढ़ाई की थी और अपने जीवन में बहुत विजय पाई थी; (२) भाग्यशाली।

सिकंदरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) घोड़े की ठोकर खाकर सिर के बल गिरना, घोड़े का ठोकर खाना।

सिक़ा—(अ०) (सं० पु०) मौतबिर आदमी, विश्वास-पात्र।

सिक्कए-क़ल्ब—(अ०) (सं० पु०) जाली सिक्का, नक़ली बना हुआ सिक्का।

सिक्का—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) तर्ज़, ढंग, दस्तूर, रीति; (२) शाही मुहर; (३) मुहर, छाप, ठप्पा; (४) हुक्म, हुकूमत, प्रभुता, रोब-दाब; (५) ढला हुआ धातु का टुकड़ा जो देश में प्रचलित हो और

जिसका मूल्य निर्द्धारित हो; (६) पदक, तमग़ा। सिक्का बिठाना, सिक्के बिठलाना—हुकूमत जताना, रोब जमाना। सिक्का बैठना—रोब बैठना।

सिक़्क़ा—(अ०) (सं० पु०) मौतबिर आदमी, विश्वास-पात्र, जिसके क़ौल-फ़ेल का विश्वास हो।

सिक्का-रायज-उल् वक्त़—(अ०) (सं० पु०) प्रचलित सिक्का, जो वर्तमान समय में चलता हो; चलन-बाज़ार सिक्का।

सिल्क़—(अ०) (सं० पु०) (१) भार, बोझ; (२) भारी-पन।

सिल्क़े-समाअत—(अ०) (सं० पु०) ऊँचा सुनना, कम सुनने की बीमारी।

सिग़र—(अ०) (सं० पु०) छोटाई, छोटापन। देखो 'सग्र'।

सिग़र-सिनी—(फ़ा०) (सं० पु०) छोटी उम्र, कम उम्र।

सिग़ार—(अ०) (सं० पु०) छोटे लड़के, छोटी लड़कियाँ।

सिजदा—(अ०) (सं० पु०) ज़मीन पर सिर रखना, दंडवत प्रणाम।

सिजदए - शुकराना, सिजदए - शुक्र—ईश्वर को धन्यवाद बज़रिए सिजदा देना।

सिजदा-गाह—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) सिजदा या दंडवत करने का स्थान, (२) लकड़ी, या मिट्टी की वह गोल टिकिया जिस पर शीया लोग नमाज़ पढ़ते समय सिजदा करते हैं।

सिजदा गुज़ार—(फ़ा०) (वि०) सिजदा करनेवाला।

सिजिल—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मुहर किया हुआ काग़ज़ या सनद, दस्तावेज़।

सिट्टी—(हि०) (सं० स्त्री०) हवास, औसान। सिट्टी गुम होना, सिट्टी भूलना—औसान जाते रहना, सिटपिटा जाना।

सितद—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) लेना। दाद ओ सितद—देन-लेन।

सितम—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) अन्याय, अंधेर; (२) अत्याचार, ज़ुल्म; (३) ग़ज़ब, अनर्थ, बेजा। सितम तोड़ना—सताना, तकलीफ़ देना, ज़ुल्म करना।

सितम-ईजाद—(फ़ा०) (वि०) बड़ा ज़ालिम, माशूक़।

सितम - कश, सितम - ज़दा—(फ़ा०) (वि०) पीड़ित, जिस पर अत्याचर किया गया हो, सताया हुआ।

सितम-ज़रीफ़—(फ़ा०) (वि०) हँसी हँसी में ज़ुल्म करनेवाला, हास्य की ओट में अत्याचार करनेवाला।

सितम-शआर—(फ़ा०) (वि०) सितमगर, अत्याचार करनेवाला, जिसकी ज़ुल्म करने की आदत हो, अत्याचारी।

सितम-रसीदा—(फ़ा०) (वि०) अत्याचार-पीड़ित।

सितां—(फ़ा०) यौगिक शब्दों में 'लेनेवाला'; (२) जहाँ किसी चीज़ की बहुतायत हो, जैसे गुलिस्ताँ।

सिताइश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) देखो 'सताइश'।

सितार—(फ़ा०) (सं० पु०) एक बाजे का नाम।

सितारा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) तारा, नक्षत्र; (२) तक़दीर, भाग्य; (३) सफ़ेद निशान जो घोड़े के माथे पर होता है; (४) वह गोल गोल सुनहरे-रुपहले टुकड़े जो टोपियों, जूतियों आदि पर चमक के वास्ते लगाते हैं; (५) एक प्रकार की आतिश-बाज़ी; (६) बंदूक़ की टोपी का वह हिस्सा जो गोल और सफ़ेद होता है; (७) गोल-गोल चमकदार टुकड़े जो ज़ंजीर या बादले में होते हैं। सितारा अच्छा या बुलंद होना—क़िसमत अच्छी

होना। सितारा बरगश्ता होना—बुरे दिन होना।

सितारा-शनास—(फ़ा०) (सं० पु०) ज्योतिषी।

सिदाना—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक क़िस्म की माला जिसमें ३३ दाने होते हैं।

सिद्क़—(अ०) (सं० पु०) सचाई, सत्यता। सिद्क़-दिल से—साफ़-दिली से, सच्चे दिल से।

सिद्दीक़—(अ०) (वि०) बहुत सच्चा।

सिन—(अ०) (सं० पु०) उम्र, अवस्था, वय।

सिन-रसीदा—(अ०) (वि०) वृद्ध, बूढ़ा।

सिनान—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) भाला, तीर की नोक।

सिने-तमीज़—(फ़ा०) (सं० पु०) समझ की उम्र, जवानी की उम्र। सिने-तमीज़ को पहुँचना—बालिग़ होना, सयाना होना।

सिने-बुलूग़त—(अ०) (सं० पु०) (१) बालिग़ होने की उम्र, वयस्क होने की अवस्था; (२) युवावस्था, जवानी।

सिने-शऊर—(अ०) (सं० पु०) समझ की उम्र, युवावस्था, जवानी।

सिन्दान—(फ़ा०) (सं० पु०) घन, निहाई।

सिपर—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) ढाल, फरी; (२) रोक, आड़, बचानेवाली चीज़। सिपर डाल देना—हथियार डाल देना, हार मान जाना।

सिपर-अन्दाख्ता—(फ़ा०) (वि०) आजिज़, दीन।

सिपस्तां—(फ़ा०) (सं० पु०) लिसोड़ा।

सिपह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सेना।

सिपह-गरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सैनिक का काम या पेशा।

सिपह-दार—(फ़ा०) (वि०) लश्कर का सरदार, सेना-नायक।

सिपहर—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) गोल; (२) आकाश।

सिपह-सालार—(फ़ा०) (सं० पु०) सेना-पति, फ़ौज का बड़ा अफ़सर।

सिपारा—(फ़ा०) (सं० पु०) क़ुरान-शरीफ़ का हर एक तीसवाँ हिस्सा।

सिपारिश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) देखो 'सिफ़ारिश'।

सिपास—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) तारीफ़, स्तुति, धन्यवाद।

सिपास-गुज़ारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) धन्यवाद देना, स्तुति करना।

सिपास-नामा—(फ़ा०) (सं० पु०) लिखित धन्यवाद, एड्रेस, अभिनंदन-पत्र।

सिपाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सेना, लश्कर, फ़ौज।

सिपाह-गरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सिपाही का काम या पेशा।

सिपाहियाना—(फ़ा०) (वि०) सिपाहियों की तरह का।

सिपाही—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सैनिक, योद्धा; (२) शूर, बहादुर; (३) चपरासी, कान्सटेबिल।

सिपिहर—(फ़ा०) (सं० पु०) आसमान, आकाश।

सिपिस्तां—(फ़ा०) (सं० पु०) लिसोड़ा, एक फल का नाम जो लसदार होता है।

सिपुर्द—(फ़ा०) (वि०) (१) किसी के अधिकार में दिया हुआ, किसी के क़ब्ज़े में दिया हुआ। सिपुर्द करना—(१) सौंपना, हिफ़ाज़त में देना; (२) क़ब्ज़े में देना, अमानत रखना, हवाले करना; (३) हिरासत में देना।

सिपुर्दगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) हवालात, हिरासत; (२) तहवील।

सिपुर्द-नामा—(फ़ा०) (सं० पु०) सिपुर्दगी की तहरीर।

सिप्पा—(हि०) (सं० पु०) टिप्पस, ढंग, ढब। सिप्पा लड़ना—मौक़ा मिलना, रसाई होना। सिप्पा लड़ाना—टिप्पस जमाना, ढंग डालना।

सिफ़त—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) लक्षण, गुण, तारीफ़; (२) विशेषता, ख़ूबी, ख़ासियत; (३) स्वभाव, प्रकृति।

सिफ़त-सरा—(फ़ा०) (वि०) तारीफ़ करनेवाला।

सिफ़र—(अ०) (सं० पु०) (१) ख़ाली होना; (२) शून्य, विंदु, नुक़ता, नुक़्ते का निशान।

सिफ़लगी—(अ०) (सं० स्त्री०) कमीना-पन, नीचता, पाजी-पन।

सिफ़ला—(अ०) (वि०) नीच, कमीना, पाजी।

सिफ़ला-पन—(सं० पु०) नीचता, कमीना-पन, नालायक़ी।

सिफ़ला परवर—(अ०) (वि०) कमीनों को मुँह लगानेवाला।

सिफ़ली—(अ०) (वि०) घटिया, नीची, नीचे का हिस्सा।

सिफ़ात—(अ०) (सं० स्त्री०) गुण। सिफ़त का 'बहुवचन'।

सिफ़ाती—(फ़ा०)।(वि०) सिफ़त से संबंध रखनेवाला।

सिफ़ारत—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) एलचीगरी, पैग़ामबरी; दूत का काम या पद; (२) वह गिरोह जो सुलह, दोस्ती या किसी और काम के फ़ैसले के लिए एक राज्य से दूसरे राज्य की तरफ़ भेजा जाय।

सिफ़ारिश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) किसी की भलाई या उपकार के लिए कुछ कहना, किसी के पक्ष में कुछ कहना।

सिफ़ारिशी—(फ़ा०) (वि० (१) जिसमें सिफ़ारिश हो; (२) जिसकी सिफ़ारिश की गई हो। सिफ़ारिशी टट्टू—जो सिफ़ारिश से नौकर हो जाय पर योग्यता न रखे।

सिफ़ाल—(अ०) (सं० पु०) मट्टी का बरतन, ठीकरी।

सिफ़्ल—(फ़ा०) (वि०) मोटा, दबीज़। (सं०) मोटा कपड़ा, गाढ़ा कपड़ा।

सिब्ग़—(अ०) (सं० पु०) रंग, लाल।

सिब्त—(अ०) (सं० पु०) सन्तान, औलाद-बेटे या बेटी की।

सिब्तैन—(अ०) (सं० पु०) हज़रत इमाम हसन और हज़रत इमाम हुसेन।

सिब्र—(अ०) (सं० पु०) एलुआ।

सिमग़—(अ०) (सं० पु०) गोंद।

सिमुर्ग़—(फ़ा०) (सं० पु०) एक परंद का नाम।

सिम्त—(सं० स्त्री०) देखो 'सम्त'।

सियह—(फ़ा०) (वि०) सियाह का संक्षिप्त रूप। (१) काला; (२) अशुभ, बुरा, ख़राब।

सियाक़—(अ०) (सं० पु०) (१) चलाना; (२) वह डोरी जो बाज़ के पैर में बाँधते हैं; (३) हिसाब लिखने के क़ायदे; (४) तर्ज़, ढंग।

सियादत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) सरदारी; (२) शासन, हुकूमत; (३) सैय्यदों की जाति, बीबी फ़ातिमा के वंशज।

सियानत—(अ०) (सं० स्त्री०) हिफ़ाज़त, रक्षा।

सियार—(हि०) (सं० पु०) गीदड़, शृगाल। सियार की लाठी—अमलतास।

सियार-सिंगी—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) सियार की हड्डियों का ढाँचा; (२) ऐसा मनुष्य जिस पर मार का असर न हो। (प्रसिद्ध है कि जिसके पास सियार की हड्डी होती है, उस पर किसी हथियार का असर नहीं होता।

सियासत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) देश की रक्षा और शासन; (२) शासन-प्रबंध; (३) धमकी, तंबीह, (४) सख़्ती, रोब दाब, आतंक, ख़ौफ़।

सियासत-गर—(फ़ा०) (वि०) ख़ूँ-रेज़; सफ़्फ़ाक।

सियासत-दाँ—(फ़ा०) (सं० पु०) राज-नीतिज्ञ।

सियासी—(फ़ा०) (वि०) मुल्की मामलात के मुतअल्लिक़, राज्य-प्रबन्ध से सम्बन्ध रखने वाले; राजनीति सम्बन्धी।

सियाह—(फ़ा०) (वि०) (१) काला; (२) अशुभ, मनहूस।

सियाह-कार—(फ़ा०) (वि०) बदकार, पापी, ज़ालिम।

सियाह-कारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पाप, बदकारी, ज़ुल्म।

सियाह-गोश—(फ़ा०) (सं० पु०) एक दरिन्दे का नाम, एक शिकारी जानवर।

सियाह-चश्म—(फ़ा०) (वि०) बे-मुरव्वत, बेवफ़ा।

सियाह-ज़बाँ—(फ़ा०) (सं० पु०) वह शख़्स जिसकी बद-दुआ जल्द असर करे, जिसका श्राप जल्दी लगे।

सिहाहत—(अ०) (सं० स्त्री०) सफ़र, यात्रा, सैर।

सियाह-ताब—(फ़ा०) (सं० पु०) वह जिसकी स्याही में चमक हो।

सियाह-ताला—(फ़ा०) (वि०) अभागा, बद-क़िसमत।

सियाह-दाना—(फ़ा०) (सं० पु०) काले तिल, जो नज़र बद दूर करने को जलाये जाते हैं।

सियाह-दिल—(फ़ा०) (वि०) क्रूर, संग-दिल, बे-मुरव्वत, बे-वफ़ा।

सियाह-पोश—(फ़ा०) (वि०) मातमी, सोगवार, शोक-ग्रस्त, जो मातमी कपड़े पहने हो। सियाह-पोश होना—शोक मनाना, सोग करना, मातमी लिबास पहनना।

सियाह-बख़्त—(फ़ा०) (वि०) बद-नसीब, भाग्यहीन, कमबख़्त।

सियाह-बातिन—(फ़ा०) (वि०) कपटी, मक्कार, जिसका दिल काला हो।

सियाह-मस्त—(फ़ा०) (वि०) बद-मस्त, नशे में चूर, मदोन्मत्त।

सियाह-रू—(फ़ा०) (वि०) काला-कलूटा, ज़लील, ख़्वार।

सियाह-रूई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अपमान, ज़िल्लत, शर्मिंदगी।

सियाहा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) पटवारी का एक काग़ज़; (२) रोज़-नामचा, हिसाब-बही; (३) रजिस्टर जिसमें आय-व्यय लिखी जाती है। सियाहा करना—रजिस्टर में दर्ज करना, खाते पर चढ़ाना। सियाहा होना—रजिस्टर में दर्ज होना।

सियाहा-नवीस—(फ़ा०) (वि०) रजिस्टर में लिखनेवाला।

सियाही—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) रोश-नाई, मसि, लिखने की स्याही; (२) काजल, क़ारिख; (३) अंधेरा, अंधकार; (४) कलंक, दाग़, धब्बा, ऐब, नुक़्स।

सिर—(अ०) (सं० पु०) भेद, रहस्य, राज़। देखो—'सर'।

सिरकंगबीन—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शरबत, सिकंजबीन, सिरके का शरबत।

सिरका—(फ़ा०) (सं० पु०) सुरू, गुड़, गन्ना या अंगूर का शीरा जिसे सड़ाकर ख़मीर उठा लेते हैं।

सिरका-जबीं, सिरका-पेशानी—(फ़ा०) (वि०) त्यौरी चढ़ाए हुए, बे-दिमाग़, क्रुद्ध।

सिरात—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) सीधी सड़क; (२) दोज़ख़ का पुल।

सिरिश्क—(फ़ा०) (सं० पु०) आँसू, बूंद, क़तरा।

सिरेस—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रकार की चिपकनेवाली चीज़।

सिर्फ़—(अ०) (वि०) केवल, एकाकी, तनहा, फ़क़त।

सिल—(अ०) (सं० स्त्री०) तपेदिक़, राजयक्ष्मा, टी० बी०।

सिलफ़ची, सिलबची—(अ०) (सं० स्त्री०) चिलमची, हाथ मुँह धोने का बर्तन।

सिलसिला—(अ०) (सं० पु०) (१) श्रेणी, क़तार, पंक्ति; (२) क्रम, ढंग, परंपरा; (३) बेड़ी, ज़ंजीर, शृंखला; (४) दुरुस्ती, व्यवस्था, तरतीब; (५) वंश, नस्ल, ख़ानदान; (६) शिजरा, कुर्सीनामा। सिलसिला चलना—नस्ल चलना, क्रम चलना। सिलसिला जारी करना—कोई काम छेड़ना। सिलसिला तोड़ देना—संबंध तोड़ देना। सिलसिला निकलना—राह निकलना, आरंभ होना। सिलसिला मिलना—सम्बन्ध जारी होना। सिलसिला होना—सम्बन्ध होना, ताल्लुक़ होना।

सिलसिला-बन्दी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) क्रम लगाना; (२) तरतीब, दुरुस्ती; (३) संबन्ध, ताल्लुक़; (४) नौकरी का सम्बन्ध।

सिलसिले-वार—(अ०) (वि०) क्रम के अनुसार, तरतीब-वार, पद के अनुसार।

सिलह—(अ०) (सं० पु०) (१) हथियार, अस्त्र-शस्त्र; (२) औज़ार।

सिलह-ख़ाना—(अ०) (सं० पु०) हथियार रखने की जगह, शस्त्रागार।

सिलह-पोश—(अ०) (वि०) हथियार-बन्द; अस्त्र-शस्त्र से सुसज्जित।

सिलह-शोर—(फ़ा०) (वि०) देखो 'सिलाह-शोर'।

सिला—(अ०) (सं० पु०) (१) इनाम, बख़्शिश, पारितोषक, पुरस्कार; (२) बदला, एवज़, फल, सुफल; (३) प्रभाव, असर।

सिलाह—(अ०) (सं० पु०) (१) युद्ध करने के हथियार, अस्त्र-शस्त्र; (२) औज़ार। सिलह-ए-रह्म—(फ़ा०) (सं० पु०) आस-पास वालों से मुहब्बत का बर्ताव रखना।

सिलाह-ख़ाना—(अ०) (सं० पु०) शस्त्रागार, हथियार रखने की जगह।

सिलाह-दार—(फ़ा०) (वि०) बहादुर सिपाही, वीर सैनिक; मेगज़ीन का दारोग़ा।

सिलाह-बन्द—(अ०) (वि०) हथियार लिये हुए, सशस्त्र।

सिलाह-शोर—(फ़ा०) (वि०) बहादुर सिपाही, हथियार-बन्द, सशस्त्र।

सिलाह-साज़—(अ०) (वि०) हथियार बनानेवाला।

सिलाह-साज़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) हथियार बनाने का काम।

सिल्क—(अ०) (सं० पु०) (१) लड़ी, मोती की लड़ी; (२) तग़ा, डोरा; (३) लड़ी, पंक्ति; (४) क्रम, सिलसिला।

सिवा—(अ०) (अव्यय) बग़ैर, बिना; अतिरिक्त, अलावा। (वि०) अधिक, ज़्यादा, फ़ालतू।

सिवाय—(अ०) (अव्यय) (१) सिवा, अतिरिक्त; (२) (उ०) (सं० स्त्री०) मुनाफ़े की वह रक़म जो ज़मींदार को मुनाफ़े के अतिरिक्त वसूल हो।

सिह—(फ़ा०) (वि०) तीन।

सिहर—(अ०) (सं० पु०) जादू, टोना, तंत्र, तिलस्म।

सिहर-आमेज़—(फ़ा०) (वि०) अभिमंत्रित, प्रभावित।

सिहर-बयान—(फ़ा०) (वि०) ख़ुशबयान, मनोमोहक वर्णन करनेवाला।

सिह्र-बाज़—(फ़ा०) (वि०) जादूगर, फ़सूंगर।

सिह्र-साज़—(फ़ा०) (वि०) जादूगर, तांत्रिक।

सिहाम—(अ०) (सं० पु०) (१) हिस्से, टुकड़े, भाग; (२) तीर, नावक।

सी—(फ़ा०) (वि०) तीस।

सीख़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) लोहे की लंबी सींक जिस पर कबाब लगाते हैं।

सीख़चा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) लोहे की सलाख़, छोटी सीख़; (२) साफ़ करने की छोटी छड़।

सीग़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) विभाग, सरिश्ता, महकमा; (२) साँचे में ढालना; (३) व्याकरण का एक विभाग; (४) विवाह, निकाह (शीओं का)।

सीदी—(अ०) (सं० पु०) हबशी।

सीना—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) छाती, कौड़ी से लेकर गर्दन तक का शरीर का भाग; (२) स्तन, कुच।

सीना-काबी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बहुत सख़्त कोशिश, कठोर परिश्रम।

सीना-कोबी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सीना-ज़नी; छाती पीटना, छाती पीटकर मातम करना।

सीना-चाक—(फ़ा०) (वि०) ग़मगीन आशिक़, शोक-विह्वल प्रेमी।

सीना-ज़न—(फ़ा०) (सं० पु०) मातम करनेवाला, छाती पीट कर शोक करने वाला।

सीना-ज़नी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शोक में छाती पीटना।

सीना-ज़ोर—(फ़ा०) (वि०) ज़बरदस्त, अत्याचारी, ज़ालिम।

सीना-ज़ोरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ज़बर-दस्ती, सख़्ती, अत्याचार।

सीना-फ़िगार—(फ़ा०) (वि०) रंजीदा, शोक-ग्रस्त, ग़मगीन।

सीना-बन्द—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सर्दी में पहनने की एक प्रकार की पोशिश; (२) घोड़े की पेटी, तंग; (३) चोली, बाडी।

सीना-रेश—(फ़ा० (वि०) सीने पर घाव करनेवाला।

सीना-सिपर—(फ़ा०) (वि०) मारके में डटा रहनेवाला। (क्रि० वि०) सामने होकर, मुक़ाबिल होकर। सीना-सिपर करना—युद्ध में डटा रहना, पैर जमाये रखना, निडर होकर सामने आना। सीना-सिपर होना—आफ़त और बलाओं का निशाना बनना।

सफ़ीनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) नाव, किश्ती; (२) एक प्रकार की थाली।

सी-पारा—(फ़ा०) (सं० पु०) देखो 'सिपारा'।

सीम—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) धन, दौलत; (२) चाँदी।

सीम-तन, सीम-बर—(फ़ा०) (वि०) (१) गोरा-चिट्टा, हसीन, ख़ूबसूरत; (२) माशूक़।

सीमाब—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) पारा; (२) बेचैन, बेक़रार।

सीमाबिया, सीमाबी—(फ़ा०) (सं० पु०) कबूतर के रंग का नाम।

सीमी—(फ़ा०) (सं० पु०) चाँदी से संबंध रखनेवाला।

सीमीं-तन, सीमीं बदन—(फ़ा०) (वि०) माशूक़।

सीमुर्ग़—(फ़ा०) (सं० पु०) एक पक्षी का नाम।

सीरत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) तबीयत, प्रकृति, स्वभाव; (२) गुण, ख़ासियत।

सुऊद—(अ०) (सं० पु०) (१) ऊपर चढ़ना; (२) किसी संख्या को कई बार गुणा करना।

सुक़रात—(यू०) (सं० पु०) प्राचीन काल के प्रसिद्ध यूनानी दार्शनिक का नाम।

सुक़ीम—(अ०) (वि०) (१) रुग्ण, बीमार; (२) बुरा, ख़राब।

सुक़ीम-उल्-हाल—(अ०) (वि०) रोगी, दुर्बल, मरीज़।

सुक़ुम—(अ०) (सं० पु०) (१) रोग, बीमारी; (२) दोष, नुक़्स, ख़राबी; (३) कष्ट, दुःख, तकलीफ़।

सुक़ूत—(अ०) (सं० पु०) (१) गिर पड़ना, ख़ता करना, ग़लती करना; (२) किसी शब्द का छंद की गति में ठीक न बैठना।

सुकून—(अ०) (सं० पु०) (१) आराम, क़याम, ठहराव, स्थिरता; (२) शान्ति, धैर्य।

सुकूनत—(अ०) (सं० स्त्री०) रहना, निवास। सुकूनत-पज़ीर होना—रह पड़ना, रहने लगना।

सुकूरा—(फ़ा०) (सं० पु०) सकोरा, मिट्टी का प्याला।

सुक्कान—(अ०) (सं० पु०) (१) रहनेवाले, निवासी; (२) नाव की पतवार।

सुक्र—(अ०) (सं० पु०) ख़ुमार, नशे की मस्ती।

सुख़न, सुख़ुन—(सं० पु०) देखो 'सख़ुन'।

सुग़रा—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) छोटी चीज़; (२) छोटी लड़की।

सुज़ाक—(फ़ा०) (सं० पु०) एक रोग का नाम, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र।

सुजूद—(अ०) (सं० पु०) सिजदा, दंडवत, सिज़दा करना।

सुतुर्ग—(फ़ा०) (वि०) बुज़ुर्ग, बड़ा, महत्त्व-पूर्ण, बड़ा काम।

सुतून—(फ़ा०) (सं० पु०) स्तंभ, मनारा।

सुतूर—(फ़ा०) (सं० पु०) चारपाया, घोड़ा, ख़च्चर, बैल।

सुदाअ—(अ०) (सं० पु०) सिर का दर्द।

सुदूर—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) जारी होना, प्रचलित होना; (२) सदर का बहुवचन।

सुद्दा—(अ०) (सं० पु०) पेट के अन्दर जमा हुआ मल, गाँठ।

सुनीन—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) नेज़े के ऊपर का हिस्सा।

सुन्नत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) राह, रविश, दस्तूर, रीति, प्रथा; (२) वह रीति जिसको पैग़ंबर साहब ने बरता हो; (३) (उ०) ख़तना, मुसलमानी।

सुन्नी—(अ०) (सं० पु०) मुसलमानों का एक फ़िरक़ा जो चारों ख़लीफ़ाओं को मानता है; सहाबा या मोहम्मद साहब के चारों साथियों को माननेवाला।

सुपुर्द—(सं० स्त्री०) देखो—'सपुर्द'।

सुपेद—(वि०) देखो—'सपेद'।

सुपेदा—(फ़ा०) (सं० पु०) सफ़ेदा, जस्ते का चूर्ण जो प्रायः दवा या रंगाई में काम आता है।

सुपेदी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) श्वेतता।

सुफ़रा—(अ०) (सं० पु०) (१) दस्तर-ख़्वान; भोजन रखने का पात्र; (२) (फ़ा०) गुदा।

सुफ़ुल—(अ०) (सं० पु०) फोक, फुज़ला।

सुफ़ुल-दान—(फ़ा०) (सं० पु०) फोक रखने का बरतन।

सुफ़ूफ़—(अ०) (सं० पु०) (१) चूर्ण, पिसी कुटी चीज़, फंकी; (२) 'सफ़' का बहुवचन।

सुबह—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) प्रातःकाल, सवेरा; (२) सुबह की नमाज़। सुबह-सवेरे—तड़के। सुबह ओ शाम करना, सुबह ओ शाम बताना—हीला-हवाला करना, टालमटूल करना।

सुबह-अज़ल—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वह सुबह जिसकी कभी शाम नहीं।

सुबह-काज़िब—(अ०) (सं० स्त्री०) वह सुबह की रोशनी जिसके बाद फिर अंधेरा

हो जाता है और थोड़ी देर के बाद उजाला।

सुबह-गाह—(फ़ा०) (सं० पु०) गजर-दम, मुँहअंधेरे, तड़के।

सुबह-खेज़—(फ़ा०) (वि०) (१) प्रभात में उठनेवाला; (२) ज़ाहिद, आबिद, धर्मात्मा।

सुबह-खेज़ा, सुबह-खेज़िया—(सं० पु०) (१) बहुत सवेरे जागनेवाला; (२) वह चोर जो मुसाफ़िरों से पहले उठकर उनका माल चुरा ले जाता है।

सुबह-दम—(फ़ा०) (क्रि० वि०) गजर-दम, मुँह-अंधेरे।

सुबह-सादिक़—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) उषा काल; (२) माशूक़ की प्रशंसा।

सुबहा—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) माला के दाने, तसबीह के दाने; (२) तसबीह।

सुबहान—(अ०) (वि०) (१) पाक, पवित्र; (२) (अव्यय) हर्ष या आश्चर्य।

सुबहा-गरदां—(फ़ा०) (वि०) माला फेरनेवाला, तस्बीह पढ़नेवाला।

सुबुक—(फ़ा०) (वि०) (१) ख़फ़ीफ़, हल्का, नाज़ुक; (२) तेज़, चुस्त, चालाक, चतुर; (३) बेतकल्लुफ़, बेइज़्ज़त।

सुबुक-खेज़—(फ़ा०) (वि०) चुस्त-चालाक, तेज़-रफ़्तार, शीघ्र गामी।

सुबुक-दस्त—(फ़ा०) (वि०) तेज़, चुस्त, फुरतीला, जल्दी काम करनेवाला, हाथ के कामों में जल्दी करनेवाला।

सुबुक-दस्ती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) फुरती, हस्त-लाघव, चुस्ती, झड़ाका।

सुबुक-दोश—(फ़ा०) (वि०) जिसके पास कुछ बोझ न हो, स्वतंत्र, आज़ाद, फ़ारिग़, निश्चिन्त, फ़ुरसत-वाला।

सुबुक-पोश—(फ़ा०) (वि०) जिसके ऊपर कोई बोझ न हो।

सुबुक-बार—(फ़ा०) (वि०) हलके बोझ वाला, अकेला, निश्चिन्त।

सुबुक-रफ़्तार, सुबुक-रौ—(फ़ा०) (वि०) तेज़-रफ़्तार, शीघ्र-गामी।

सुबुक-सर—(फ़ा०) (वि०) (१) कमीना, नीच, तुच्छ; (२) कम-क़ीमत, कम-हिम्मत, मूर्ख।

सुबुक-सार—(फ़ा०) (वि०) कम-क़ीमत, तुच्छ, छछोरा।

सुबुक-सारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) छछोरा-पन, ज़िल्लत, हल्का-पन।

सुबुकी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) ज़िल्लत, अपमान, अप्रतिष्ठा; (२) हिचकी।

सुबू—(फ़ा०) (सं० पु०) घड़ा, मटका।

सुबूचा—(फ़ा०) (सं० पु०) छोटा घड़ा।

सुबूत—(अ०) (सं० पु०) प्रमाण, सिद्धि। देखो—'सबूत'।

सुम—(फ़ा०) (सं० पु०) पशुओं का खुर।

सुम्ब—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सुराख़ करने का औज़ार, बरमा; (२) तोप में बारूद डाल कर ऊपर से ठोकने का काग़ज़।

सुम्बुल—(फ़ा०) (सं० पु०) बाल-छड़, एक ख़ुशबू-दार घास का नाम।

सुम्बुला—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) गेहूँ या जौ की बाल; (२) कन्या-राशि।

सुम्म-बुकुम—(अ०) (वि०) वह आदमी जो किसी बात का जवाब न दे।

सुम्माक़—(अ०) (सं० पु०) एक प्रकार की दवा।

सुरअत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) शीघ्रता, जल्दी; (२) तेज़ी।

सुरख़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) एक प्रकार का घोड़ा; (२) लाल रंग का कबूतर; (३) शराब, मदिरा।

सुरख़ाब—(फ़ा०) (सं० पु०) चकवा। सुरख़ाब का पर लगना—किसी शख़्स में कोई नई या अनोखी बात होना।

सुरख़ाब का पर होना—अनोखी बात होना, ख़ास जौहर होना।

सुरना—(.फ़ा०) (सं० स्त्री०) नफ़ीरी, एक प्रकार का बाजा।

सुरनाई—(.फ़ा०) (सं० पु०) नफ़ीरी बजानेवाला।

सुरमई—(फ़ा०) (वि०) सुरमे के रंग का, एक प्रकार का नीला रंग। (सं० पु०) एक प्रकार का नीला रंग।

सुरमगीं—(.फ़ा०) (वि०) जिसमें सुरमा लगा हो।

सुरमा—(.फ़ा०) (सं० पु०) (१) अंजन; (२) नीले रंग का एक खनिज पदार्थ जिसको महीन पीस कर आँख में लगाते हैं। (वि०) बहुत महीन, निहायत बारीक पिसा हुआ।

सुरमा-आलूद—(.फ़ा०) (वि०) सुरमा लगी हुई।

सुरमा-दर-गुलू—(.फ़ा०) (वि०) चुप, ख़ामोश, जिसकी आवाज़ न निकले।

सुरमा-दानी—(.फ़ा०) (सं० स्त्री०) सुरमा रखने की डिबिया।

सुराग़—(तु०) (सं० पु०) (१) खोज, निशान, टोह, ठिकाना; (२) तलाश, ढूँढना। सुराग़ चलना—पता मिलना, खोज मिलना।

सुराग़-रसाँ—(तु०) (वि०) तलाश करने वाला, खोज करनेवाला।

सुराग़-रसानी—(तु०) (सं० स्त्री०) तलाश, पता, खोज।

सुराग़ी—(सं० पु०) जासूस, मुख़बिर।

सुराही—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) शराब या पानी रखने का पात्र; (२) (उ०) सुराही की शक्ल का कपड़े का टुकड़ा जो अंगरखे की दोनों बग़लों के नीचे खूबसूरता के लिए सी देते हैं। (वि०) लंबा और सुन्दर।

सुराही-दार—(अ०) (वि०) सुराही की शक्ल का; लम्बी, किसी क़दर लंबी।

सुरीन—(.फ़ा०) (सं० पु०) (१) चूतड़, नितंब; (२) पुट्ठा।

सुरूर—(.फ़ा०) (सं० पु०) (१) ख़फ़ीफ़ नशा, हलका नशा, .ख़ुमार; (२) .ख़ुशी, हर्ष, प्रसन्नता, फ़रहत। सुरूर जमना सुरूर होना—.ख़ुमार चढ़ना, आँखों में सुर्ख़ी झलकना।

सुरैया—(अ०) (सं० पु०) छै नक्षत्र जो पास पास हैं, झुमका।

सुरोद—(.फ़ा०) (सं० पु०) गीत, राग।

सुरोश—(.फ़ा०) (सं० पु०) (१) फ़रिश्ता, शुभ सूचना देनेवाला फ़रिश्ता (देव-दूत); (२) हज़रत जिब्रइल का नाम।

सुर्ख़—(.फ़ा०) (वि०) (१) लाल, लाल रंग का; (२) महँगा, तेज़, गिराँ। (सं० पु०) (१) लाल रंग। (सं० स्त्री०)—घुंघची, रत्ती; (२) गंजफ़े की एक बाज़ी का नाम। सुर्ख़ ओ सफ़ेद—सोना-चाँदी।

सुर्ख़-बेद—(.फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक वृक्ष का नाम।

सुर्ख़-रू—(.फ़ा०) (वि०) (१) लाल चेहरेवाला; (२) सफल-मनोरथ, कामयाब, .ख़ुश; (३) प्रतिष्ठा पानेवाला, इज़्ज़त हासिल करनेवाला। सुर्ख़-रू करना—इज़्ज़त देना। सुर्ख़-रू होना—इज़्ज़त पाना, मान पाना।

सुर्ख़-रूई—(.फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) प्रतिष्ठा इज़्ज़त; (२) सफलता, कामयाबी।

सुर्ख़ा—(सं० पु०) (१) एक प्रकार का घोड़ा; (२) एक क़िस्म का कबूतर; (३) शराब, मदिरा।

सुर्ख़ी—(.फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) लाली, लालिमा, लाल रंगत; (२) लेख का शीर्षक; (३) .ख़ून, रक्त; (४) कुटी हुई ईंट।

सुर्फ़ा—(फा०) (सं० पु०) खाँसी, कास।

सुर्रा—(अ०) (सं० पु०) थैली, रुपये रखने की थैली।

सुलतान—(अ०) (सं० पु०) (१) बादशाह; (२) बादशाह के वंशजों की उपाधि।

सुलताना—(अ०) (सं० स्त्री०) मलका, शहज़ादी, बेगम।

सुलतानी—(अ०) (वि०) शाही, राजसी।

सुलफ़ा—(फा०) (सं० पु०) (१) वह तम्बाकू जो चिलम में ज़ीरा-ज़ीरा करके भरा जाता है और उस पर आग रख कर हुक़्क़ा पीते हैं; (२) ऐसे भरा हुआ हुक़्क़ा; (३) चरस।

सुलसुल—(अ०) (सं० स्त्री०) फ़ाख़्ता।

सुलह—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) मेल, मिलाप, मैत्री, संधि; (२) समझौता, आपस का फ़ैसला।

सुलह-कुल—(अ०) (सं० स्त्री०) किसी से दुश्मनी न करना, किसी से वैर या विरोध न करना। (सं० पु०) बे-तास्सुब आदमी जो झगड़े फ़िसाद से अलग रहे, शान्ति-प्रिय।

सुलह-नामा—(अ०) (सं० पु०) राज़ी-नामा, संधि-पत्र, वह काग़ज़ जिस पर समझौते की शर्तें लिखी हों।

सुलूक—(अ०) (सं० पु०) (१) ईश्वर की खोज, अध्यात्म-चिन्तन; (२) बरताव, व्यवहार, रवैय्या, अमल; (३) भलाई, नेकी, हित। सुलूक करना—भलाई का बर्ताव करना, नेकी करना, रुपये-पैसे से सहायता करना। सुलूक से रहना—मिलाप रखना, मिलकर रहना।

सुलेमान—(अ०) (सं० पु०) (१) हज़रत दाऊद के बेटे का नाम जो पैग़म्बर माने जाते हैं; (२) एक पहाड़ का नाम।

सुलेमानी—(अ०) (सं० पु०) (१) सफ़ेद आँखों वाला घोड़ा; (२) एक प्रकार का दु-रंगा पत्थर; (३) एक क़िस्म का चूरन। (वि०) सुलेमान से संबन्ध रखनेवाला।

सुल्तान—(अ०) (सं० पु०) देखो—'सुलतान'।

सुल्ब—(अ०) (सं० पु०) (१) नस्ल, वंश, संतान; (२) कुलीनता, उच्चकुल; (३) पीठ की हड्डी, पीठ के मुहरे, रीढ़।

सुल्बी—(अ०) (वि०) सगा, हक़ीक़ी, सहोदर।

सुल्स—(अ०) (सं० पु०) तीसरा हिस्सा; तिहाई भाग।

सुवैदा—(अ०) (सं० पु०) एक काला बिन्दु जिसका दिल पर होना माना जाता है।

सुस्त—(फा०) (वि०) (१) कूढ़, कुंद-ज़हन; (२) दुर्बल, कमज़ोर; (३) काहिल, आलसी; ४) उदास, खिन्न-चित्त; (५) जिसमें तेज़ी न हो, धीमा।

सुस्त क़दम—(फा०) (वि०) धीमा चलनेवाला।

सुस्त-पैमाँ—(फ़ा०) (वि०) वादे का कच्चा, वचन भंग करनेवाला।

सुस्त-राय—(फ़ा०) (वि०) मूर्ख, बेवकूफ़, कूढ़।

सुस्ती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) काहिली; आलस्य; (२) शिथिलता, ढीला-पन; (३) नामर्दी, क्लीवता।

सुहबत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) संगति, साथ, मित्रता; (२) जलसा, मजलिस, सम्मिलन; (३) साथ सोना, संभोग। सुहबत उठाना—किसी के साथ रह कर कुछ सीखना। सुहबत बिगड़ जाना—अन-बन हो जाना।

सुहूलत—(अ०) (सं० स्त्री०) देखो—'सहूलत'।

सुहेल—(अ०) (सं० पु०) एक तारे का नाम जिसके प्रभाव से यमन देश में चमड़ा बहुत अच्छा तैयार होता है।

सू—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) दिशा, सिम्त, तरफ़, जानिब, ओर।

सूऽ—(अ०) (वि०) बुरा, ख़राब। (सं० स्त्री०) (१) बुराई, खराबी; (२) बीमारी, कष्ट, आफत।

सूए-अदब—(अ०) (सं० पु०) अपमान, बेअदबी, निरादर।

सूए-इत्तफ़ाक़—(अ०) (सं० पु०) मौक़े की ख़राबी, कुयोग।

सूए-ज़न—(अ०) (सं० पु०) बद-गुमानी, द्वेष।

सूए-तदबीर—(अ०) (सं० स्त्री०) तदबीर की ख़राबी, उपाय का दोष।

सूए-तनफ़्फ़ुस—(अ०) (सं० पु०) साँस का अनियमित रूप से जल्दी जल्दी चलना।

सूए-मिज़ाजी—(अ०) (सं० स्त्री०) बीमारी, रोग। सू-उल्-मिज़ाज—बीमार।

सूए-हज़्मी—(अ०) (सं० स्त्री०) अपच, बद-हज़्मी।

सूक़ियाना—(अ०) (वि०) ताज़ारियों का, सर्व-साधारण का।

सूक़ी—(अ०) (वि०) बाज़ारी।

सूज़ाक़—(फ़ा०) (सं० पु०) देखो—'सुज़ाक'।

सूद—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) ब्याज; (२) नफ़ा, लाभ, फ़ायदा, (३) भलाई, बहतरी, नतीजा, फल।

सूद-ख़ोर, सूद-ख़ोरा—(फ़ा०) (वि०) सूद लेनेवाला।

सूद-मन्द—(फ़ा०) (वि०) फ़ायदा देने-वाला, लाभ-प्रद, मुफ़ीद।

सूदा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) किसी चीज़ का बुरादा; (२) वह जो घिसने से हासिल हो।

सूफ़—(अ०) (सं० पु०) (१) क़लम का रेशा, वह कपड़ा जो दावात में डाला जाय; (२) वह कपड़ा जिसे घाव में भरते हैं; (३) गोटा बुनने का बाना; (४) ऊनी कपड़ा, पशमीना।

सूफ़-पोश—(अ०) (सं० पु०) कंबल ओढ़नेवाले फ़क़ीर।

सूफ़ार—(फ़ा०) (सं० पु०) तीर की चुटकी, तीर के पीछे की तरफ़ का छेद।

सूफ़ियाना—(अ०) (वि०) (१) सूफ़ियों जैसा; (२) सादा, जिसमें चमक न हो।

सूफ़ी—(अ०) (सं० पु०) (१) ऊनी कपड़ा पहननेवाला; पश्म-पोश; (२) दरवेश, उदार-चेता, मुसल्मानों की एक सम्प्रदाय।

सूबा—(अ०) (सं० पु०) प्रांत, प्रदेश, देश का एक भाग।

सूबाजात—(अ०) (सं० पु०) 'सूबा' का बहुवचन।

सूबा-दार—(अ०) (सं० पु०) (१) प्रान्त का शासक; (२) एक फ़ौजी ओहदे-दार।

सूबेदार—(अ०) (सं० पु०) देखो—'सूबा-दार'।

सूबेदारी—(अ०) (सं० स्त्री०) सूबेदार का पद, या ओहदा।

सूरंजान—(फ़ा०) (सं० पु०) एक दवा का नाम।

सूर—(अ०) (सं० पु०) (१) तुरई, एक बाजा; (२) वह बाजा जो क़यामत के दिन मुरदों को उठाने के लिए बजाया जायगा। (फ़ा०) (सं० पु०)—(१) जशन, शादी, उत्सव, आनन्द; (२) लाल रंग; (३) घोड़े, ख़च्चर या ऊँट का स्याही मायल रंग।

सूरए-इख़्लास—(अ०) (सं० पु०) .कुरान के ११२वाँ अध्याय।

सूरए-यासीन—(अ०) (सं० पु०) मरने के समय पढ़ा जानेवाला .कुरान का अंश।

सूरत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) कुरान के ११४ अध्यायों में से हर एक को सूरत कहते हैं; (२) रूप, शक्ल; (३) लिबास, भेष; (४) ढंग, अन्दाज़, क़रीना; (५) तजवीज़, युक्ति, उपाय, तदबीर, मौक़ा; (६) निशान, आसार, लक्षण; (७) छवि, शोभा; (८) दशा, अवस्था, हालत, कैफ़ियत; (९) मानिन्द, समान, अनुकूल। सूरत न शकल, भाड़ से निकल—(व्यंग में) बद्-सूरत के लिए कहा जाता है।

सूरत-आशना—(फ़ा०) (वि०) जान-पहचान, पहचाननेवाला।

सूरत-आशनाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) जान-पहचान।

सूरत-दार—(फ़ा०) (वि०) स्वरूपवान्, .खूबसूरत।

सूरतन्—(फ़ा०) (क्रि० वि०) देखने से, सूरत के भरोसे।

सूरत-परस्त—(फ़ा०) (वि०) (१) ज़ाहिर-परस्त, केवल ऊपरी सूरत देखनेवाला; (२) मूर्ति-पूजक (३) सौन्दर्योपासक।

सूरत-बन्द, सूरत-साज़—(फ़ा०) (वि०) मुसव्वर, नक़्क़ाश, चित्रकार।

सूरत-हराम—(फ़ा०) (वि०) देखने में अच्छा पर भीतर से बुरा।

सूरते-माश—(फ़ा०) (सं० पु०) रोटी या जीविका का ज़रिया, जीविका का साधन या युक्ति।

सूरा—(अ०) (सं० पु०) (१) .कुरान का अध्याय; (२) सूरत, निशान।

सूराख़—(फ़ा०) (सं० पु०) छेद, रख़ना। —(अ०) (सं० स्त्री०) मुलेठी। (फ़ा०) (सं० स्त्री०) गोह, सूसमार का संक्षिप्त रूप।

सूस-मार—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) गोह, एक जंगली जानवर का नाम।

सूसी—(हि०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार का रंगीन धारी-दार कपड़ा।

सेब—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रसिद्ध फल।

सेबे-ज़नख़दाँ—(फ़ा०) (सं० पु०) सेब की तरह की सुन्दर ठोढ़ी।

सेर—(फ़ा०) (वि०) (१) आसूदा, छका हुआ, पेट-भरा; (२) बेज़ार, घृणा करने-वाला; (३) निश्चिन्त, फ़ारिग़; (४) बहुत कसीर। सेर होना—(१) छकना, पेट भरना, नीयत भरना; (२) दिल भर जाना, बेपरवा होना, बेज़ार होना।

सेर-ग़ज़ल—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) वह ग़ज़ल जिसमें बहुत शेर (बेत) हों।

सेर-चश्म—(फ़ा०) (वि०) (१) बे-परवा, जो देखने से उकता गया हो, निश्चिन्त। (२) उदार, फ़ैयाज़।

सेर-चश्मी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बे-परवाई, निश्चिन्तता।

सेर-हासिल—(फ़ा०) (वि०) उर्वरा, ज़र-ख़ेज़, अच्छी पैदावार की ज़मीन।

सेराब—(फ़ा०) (वि०) पानी से भरा हुआ, हरा-भरा, तरो-ताज़ा, लबरेज़।

सेराबी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) तरो-ताज़गी, हरा-भरापन, शादाबी।

सेरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) जी भरना, पेट भरना, नियत भरना, तृप्ति, तुष्टि।

सेव—(फ़ा०) (सं० पु०) देखो—'सेब'।

सेह—(फ़ा०) (वि०) तीन।

सेहत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) आरोग्य, अराम, रोग से मुक्त होना; (२) दोषों से पाक होना; (३) संशोधन करना, सही करना, शुद्ध करना।

सेहत-ख़ाना—(अ०) (सं० पु०) पाख़ाना, टट्टी।

सेहत-नामा—(अ०) (सं० पु०) (१) शुद्धि-पत्र, वह पत्र जिसमें भूलें शुद्ध की गई हों; (२) तनदुरुस्ती का सर्टीफ़िकट।

सेहत-बख़्श—(अ०) (वि०) आरोग्य देने-वाला, मुफ़ीद।

सेह-बन्दी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) तीसरे महीने की क़िस्त। (सं० पु०) तीसरे महीने क़िस्त वसूल करनेवाला आदमी।

सेह-बरगा—(फ़ा०) (सं० पु०) तीन पंखड़ियों वाला फूल।

सेह-मंज़िला—(फ़ा०) (वि०) तीन मंज़िल वाला मकान।

सेह-माही—(फ़ा०) (वि०) तीन महीने में होने-वाला, त्रै-मासिक।

सेहर—(अ०) (सं० पु०) जादू, टोना, तंत्र। (देखो—'सिहर')।

सेहर-बयाँ—(अ०) (वि०) ख़ुश-बयान, जादू का-सा असर करनेवाला वक्ता।

सेह-शम्बा—(फ़ा०) (सं० पु०) मंगलवार।

सैक़ल—(अ०) (सं० पु०) जिला, सफ़ाई, ज़ंग दूर करना। सैक़ल-करना—साफ़ करना, ज़ंग दूर करना।

सैक़ल-गर—(अ०) (वि०) जिला करने-वाला, साफ़ करनेवाला, हथियार साफ़ करनेवाला, सान चढ़ानेवाला।

सैद—(अ०) (सं० पु०) (१) वह जानवर जिसको शिकार करें, शिकार; (२) पतंग-बाज़ी या कबूतर-बाज़ी की जंग। सैद करना—शिकार करना। सैद बदना—शर्त लगाना।

सैद - अन्दाज़, सैद - अफ़गन—(फ़ा०) (वि०) शिकारी, शिकार करनेवाला।

सैद - अफ़गनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शिकार करना।

सैद-गर—(फ़ा०) (वि०) शिकारी, शिकार करनेवाला।

सैद-गाह—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शिकार खेलने की जगह।

सैदानी—(अ०) (सं० स्त्री०) सैय्यदानी, सैय्यद जाति की स्त्री।

सैदी—(अ०) (सं० पु०) (१) शत्रु, मुक़ा-बिल, दुश्मन; (२) जो कबूतर-बाज़ी में दूसरे के मुक़ाबिल हो।

सैफ़—(अ०) (सं० स्त्री०) तलवार।

सैफ़-ज़बाँ—(अ०) (वि०) (१) जिसकी दुआ क़बूल होती हो, जिसकी प्रार्थना स्वीकार होती हो; (२) तेज़-ज़बान, मुँह-फट।

सैफ़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) जिल्द बनाने वालों का औज़ार जिससे काग़ज़ काटते हैं।

सैफ़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) एक दुआ का नाम; मारण-तंत्र।

सैय्यद—(अ०) (सं० पु०) (१) इमाम, पेशवा, नेता; (२) हज़रत फ़ातिमा की औलाद जो हज़रत अली से है; (३) सैय्यद की रुह; मुसल्मानों का एक वर्ग।

सैय्यद-उल्-शहदा—(अ०) (सं० पु०) हज़रत इमाम हुसेन।

सैय्यद-ज़ादा—(अ०) (सं० पु०) सैय्यद की औलाद।

सैय्यदानी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) सैय्यद जाति की स्त्री; (२) सैय्यद की गाय।

सैय्याद—(अ०) (सं० पु०) (१) शिकारी, चिड़ी-मार, बहेलिया, अहेरी; (२) माशूक़।

सैय्यार—(अ०) (सं० पु०) (१) घूमने या गर्दिश करनेवाला सितारा (नक्षत्र); (२) सैर करनेवाला।

सैय्यारा—(अ०) (सं० पु०) गर्दिश करने-वाला या घूमनेवाला सितारा या नक्षत्र।

सैय्यारात—(अ०) (सं० पु०) सितारे, नक्षत्र। 'सैय्यारा' का बहुवचन।

सैय्याल—(अ०) (वि०) पतला, तरल, बहनेवाला।

सैय्याह—(अ०) (वि०) यात्री, मुसाफ़िर, सफ़र करनेवाला।

सैय्याही—(अ०) (सं० स्त्री० यात्रा, सफ़र, मुसाफ़िरत।

सैर—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) फिरना, गर्दिश करना; (२) हवा-ख़ोरी, घूमना-फिरना; (३) आनन्द, लुत्फ़, मज़ा; (४) हँसी-मज़ाक़; (५) मेला, नज़्ज़ारा, तमाशा; (६) आनन्द-मंगल।

सैर-गाह—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) सैर की जगह, तमाशा देखने की जगह; (२) वह कंदील जिसमें कागज़ के हाथी-घोड़े नज़र आते हैं।

सैर-सपाटा—(सं० पु०) सैर करते फिरना।

सैल—(अ०) (सं० स्त्री०) पानी का बहाव, प्रवाह।

सैलानी—(उ०) (वि०) सैर का शौक़ीन, मारा-मारा फिरनेवाला; जो एक जगह न टिके, सैर-तमाशे में ही लगा रहे।

सैलाब—(फ़ा०) (सं० पु०) पानी का चढ़ाव, पानी की रौ, बाढ़।

सैलाबची—(लश्क०) (सं० स्त्री०) चिलमची, हाथ-मुँह धोने का बर्तन।

सैलाबी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) तरी, नमी; (२) वह धरती जो नदी की बाढ़ से सींची जाय; (३) बाढ़, तूफ़ान, बढ़िया।

सोख़्त—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सूजन, शोथ; (२) ताश का एक जुआ। (वि०) बेकार, निकम्मा। सोख़्त होना—(१) ज़ब्त होना; (२) ज़ाया होना, बेकार हो जाना।

सोख़्तगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) सूजन, शोथ; (२) जलन, पीड़ा; (३) रंज, दुःख, कष्ट।

सोख़्तनी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) जलने के योग्य।

सोख़्ता—(फ़ा०) (वि०) (१) जला हुआ, झुलसा हुआ; (२) बहुत दुःखी, जिसका जी जला हो। (सं० पु०) (१) स्याही सोखने का काग़ज़, ब्लाटिंग पेपर; (२) बारूद में रंगा हुआ कपड़ा जिस पर चक-माक से बहुत जल्दी आग लग जाती है।

सोख़्ता-जान—(फ़ा०) (वि०) आशिक़; जिसकी जान जलती हो।

सोख़्ता-जिगर—(फ़ा०) (वि०) आशिक़; जिसका जी जलता हो।

सोख़्ता-बख़्त—(फ़ा०) (वि०) बद-नसीब, अभागा।

सोख़्ती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ज़िल्लत, रंज-मलाल, जी की जलन, क्लेश।

सोग—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) शोक, मातम, मरने का दुःख; (२) रंज, मानसिक क्लेश।

सोग-नशीन—(उ०) (वि०) मातम में बैठनेवाला।

सोगवार—(फ़ा०) (वि०) मातम करनेवाला, दुःखी।

सोगवारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) किसी के मरने का शोक, मातम।

सोगी—(फ़ा०) (वि०) मातम में ग्रस्त, शोक-ग्रस्त।

सोज़—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) जलन, क्लेश; (२) दर्द, दुःख, रंज; (३) वह पद्य जिन्हें मरसिया-पढ़नेवाले लय के साथ पढ़ते हैं, मर्सिया-ख़्वानी का एक तर्ज़ या ढंग।

सोज़-ख़्वाँ—(फ़ा०) (वि०) एक ख़ास ढंग से मर्सिया पढ़नेवाला।

सोज़न—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सूई।

सोज़न-कारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सूई का काम।

सोज़न-साअ़त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) घड़ी की सूई।

सोज़-नाक—(फ़ा०) (वि०) जलानेवाला।

सोज़नी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) एक प्रकार का दु-हरा या रुई-भरा कपड़ा जिस पर सूई का बारीक काम हो; (२) एक क़िस्म का फ़र्श या लिबास जिस पर सूई का बारीक काम हो।

सोज़ाँ, सोज़िन्दा—(फ़ा०) (वि०) जलानेवाला।

सोज़िश—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) जलन, कुढ़न; मानसिक यातना।

सोफ़्ता—(हि०) (सं० पु०) (१) .फ़ुरसत, मोहलत, छुटकारा; (२) एकान्त स्थान।

सोम—(फ़ा०) (वि०) (१) तीसरा; (२) मुरदे का तीजा, मरने का तीसरा दिन।

सोसन—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार का नीला फूल।

सोसनी—(फ़ा०) (वि०) (१) सोसन के रंग का; (२) नीला, आस्मानी रंग का।

सोहन—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) रेती; (२) एक प्रकार की मिठाई जिसको हलवा-सोहन भी कहते हैं। **सोहन करना**—रेतना, रितवाना।

सोहबत—(अ०) (सं० स्त्री०) देखो—'सुहबत'।

सोहबत-दारी—(अ०) (सं० स्त्री०) संभोग।

सोहबत-याफ़्ता—(फ़ा०) (वि०) जिसने अच्छी संगति में बैठकर कुछ सीखा हो।

सोहबती—(अ०) (वि०) साथी, संगी।

सोहान—(फ़ा०) (सं० पु०) रेती, लकड़ी या लोहा साफ़ करने का काँटे-दार औज़ार। (वि०) जान को आ जानेवाला, ना-गवार।

सैाकन—(हि०) (सं० स्त्री०) सौत। **सैाकनों की जोड़ी**—एक प्रकार की आतिश-बाज़ी जो छूटते वक़्त टकराती है।

सैागन्द—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शपथ, क़सम।

सैागात—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) भेंट, तुहफ़ा, उपहार; (२) (उ०) अनोखी चीज़।

सैागाती—(फ़ा०) (वि०) बहुत बढ़िया, भेंट के योग्य।

सैादा—(अ०) (वि०) काला, स्याह। (सं० पु०) (१) शरीर के चार (अंशों) दोषों में से एक का नाम; (२) ख़ब्त, उन्माद, जनून, पागल-पन; (३) इश्क़, प्रेमोन्माद, परेशानी; (४) व्यापार, ख़रीदना-बेचना; (५) वह चीज़ जो बाज़ार से ख़रीदी जाय; (६) ख़याल। **सैादा उछलना**—ख़ब्त सवार होना, जनून होना। **सैादा चमकना**—जनून बढ़ जाना, उन्माद बढ़ना। **सैादा पटना**—ख़रीदने-बेचने का मामला तय करना। **सैादा फिरना**—(१) लिए हुए माल का वापस होना; (२) ख़ब्त होना। **सैादा बनाना**—दीवाना बनाना, आशिक़ बनाना। **सैादाई होना**—दीवाना होना।

सैादाई—(अ०) (सं० पु०) दीवाना, ख़ब्ती, पागल, आशिक़।

सैादागर—(फ़ा०) (सं० पु०) व्यापारी, व्यवसायी, ताजिर, तिजारत करनेवाला।

सैादागरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) व्यापार, तिजारत। (उ०) (वि०) तिजारती।

सैादा-ज़दा—(फ़ा०) (वि०) दीवाना, पागल, सौदाई।

सैादावी—(अ०) (वि०) (१) पागल, ख़ब्ती; (२) दुःखी; (३) सौदा से संबंधित, जिसके शरीर में सौदा नामक अंश बढ़ गया हो।

सैादा-सुलफ़—(सं० पु०) (१) खाने-पीने की चीज़; (२) वह चीज़ जो बाज़ार से ख़रीदी जाय।

सौर—(अ०) (सं० पु०) (१) बैल, साँड; वृष राशि।

सौसन—(फ़ा०) (सं० पु०) देखो—'सोसन'।

सौसनी—(फ़ा०) (वि०) नीला, आसमानी रंग का।

स्याह—(फ़ा०) (वि०) देखो—'सियाह'।

स्याही—(सं० स्त्री०) देखो—'सियाही'।

ह

हंग—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) विचार, इरादा; (२) शक्ति, ताक़त; (३) सेना, फ़ौज; (४) भारीपन; (५) समझदारी, बुर्द-बारी, बुद्धिमानी।

हंगाम—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) समय, अवसर, मौक़ा; (२) ऋतु, मौसम; (३) झगड़ा, फ़िसाद।

हंगामा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) झगड़ा, दंगा-फ़िसाद; (२) शोर-गुल, हल्ला; (३) भीड़-भाड़, जमाव; (४) दंगल, वह जगह जहाँ करतब दिखलाये जाते हैं।

हंगामा-आरा, हंगामा-परवाज़—(फ़ा०) (वि०) झगड़ा मचानेवाला, दंगा-फ़िसाद करनेवाला।

हंगामी—(फ़ा०) (वि०) चंद रोज़ का, कुछ दिन का, ख़ास वक्त तक का।

हंजार—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) मार्ग, रास्ता; (२) रंग-ढंग, तर्ज़, रविश, गति-विधि; (३) हलचल।

हइयात—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) बनाया जाना, तैयार किया जाना; (२) आकृति, रूप, बनावट; (३) ज्योतिष। (देखो 'हैयत')।

हक—(अ०) (सं० पु०) दूर करना, खुरचना, छीलना।

हक़—(अ०) (सं० पु०) (१) सत्य; (२) ईश्वर; (३) उचित, ठीक, दुरुस्त, लायक़; दायित्व; (६) दावा, अधिकार; (७) बदला; (८) हिस्सा; (९) मज़दूरी, उजरत, फ़ीस; (१०) इनाम, नेग। हक़ अदा करना—कर्तव्य पालन करना। हक़ में—शान में, निसबत, बाबत, लिए, वास्ते।

हक़-आशना—(अ०) (वि०) सत्य-निष्ठ, साधु, ईश्वर-भक्त।

हक़-उल तहसील—(फ़ा०) (पु०) वसूल करने का हक़।

हक़-उल-नज़र—(फ़ा० पु०) वह हिस्सा जो खाने में से थोड़ा निकाल कर अलग रख देते हैं (नज़र बचाने को)।

हक़-उल्लाह—(अ०) (वि०) ठीक, सत्य, न्याय-लगती।

हक़-गो—(फ़ा०) (वि०) सच बोलनेवाला, न्याय का पक्ष लेनेवाला।

हक़-तलफ़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) अन्याय, हक़ मारना, अधिकार छीनना।

हक़-ताला—(अ०) (सं० पु०) परम पिता, ईश्वर।

हक़-दार—(वि०) हक़ रखनेवाला, अधिकारी।

हक़-नाशनास—(फ़ा०) (वि०) कृतघ्न।

हक़-नाहक़—(अ०) (क्रि० वि०) व्यर्थ, अकारण, बे-सबब।

हक़-पज़ीर—सच्ची बात क़बूल करनेवाला।

हक़-परस्त—(अ०) (वि०) आस्तिक, ईश्वर को माननेवाला, सच्चा मनुष्य।

हक़-परस्ती—(अ०) (सं० स्त्री०) न्याय, इन्साफ़।

हक़-बात—सही और सच बात।

हक्म—(अ०) (सं० पु०) न्यायकर्ता, पंच।

हक़-रसी—(अ०) (सं० स्त्री०) न्याय, इन्साफ़।

हक़-शफ़ा—(अ०) (सं० पु०) पहले ख़रीदने का हक़; पड़ोसी या हिस्सेदार होने के

मकान को दूसरे से पहले ख़रीद लेने का होता है।

हक़-शनास—(अ०) (वि०) (१) क़द्र-दाँ, गुण-ग्राहक; (२) न्यायशील, मुंसिफ़, (३) आस्तिक।

हक़ारत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) घृणा; (२) सुबकी, बेइज़्ज़ती, ज़िल्लत, अप्रतिष्ठा। हक़ारत से देखना—ख़ातिर में न लाना, ज़लील समझना।

हक़ीक़त—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) असल, जड़, मूल, तत्व; (२) तथ्य, यथार्थ बात, (३) कैफ़ियत, हाल, माजरा, वस्तु-स्थिति; (४) बिसात, हैसियत। हक़ीक़त में—वास्तव में। हक़ीक़त खुलना—असल हाल मालूम हो जाना।

हक़ीक़तन्—(अ०) वाक़ई, वास्तव में।

हक़ीक़ी—(अ०) (वि०) (१) असली, तथ्य की; (२) सगा, अपना; (३) ईश्वर का।

हकीम—(अ०) (सं० पु०) (१) बुद्धिमान्, दाना, अक़्लमंद, चतुर, होशयार; (२) दार्शनिक, तत्व-ज्ञानी; (३) वैद्य, चिकित्सक।

हकीमी—(अ०) (सं० स्त्री०) हिकमत, चिकित्सा।

हक़ीर—(अ०) (वि०) (१) छोटा, अदना, दुबला-पतला; (२) घृणित, ज़लील, ख़्वार, ओछा, सुबक।

हकूमत—(अ०) (सं० स्त्री०) राज्य, हुकूमत।

हक्का-बक्का—(हि०) (वि०) घबराया हुआ, विस्मित।

हक्क़ा—(फ़ा०) (क्रि० वि०) परमेश्वर की शपथ, हक़ है, सच है।

हक्काक—(अ०) (सं० पु०) मोहर बनानेवाला, नगीना साज़।

हक़्क़ानियत—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सचाई, ईश्वर से सम्बन्ध रखना।

हक़्क़ानी—(फ़ा०) (वि०) सत्य या ईश्वर-सम्बन्धी।

हक़्क़ियत—(अ०) (सं० स्त्री०) मिलकियत, जायदाद।

हक़्क़े-तसनीफ़—(अ०) (सं० पु०) लेखक का अधिकार, कापी-राइट।

हक़्क़े-चहारुम—(अ०) (वि०) चौथाई भाग जो मिले।

हक़्क़े-हीन-हयात—ज़िंदगी भर का हक़।

हज—(अ०) (सं० पु०) धार्मिक यात्रा, मुसल्मानों की काबे के दर्शन करने के लिए मक्का की यात्रा।

हज़—(अ०) (सं० पु०) (१) सौभाग्य, नसीब, क़िस्मत; (२) आनन्द, प्रसन्नता, ऐश; (३) मज़ा, स्वाद, लुत्फ़।

हज़फ़—(अ०) (सं० पु०) गिरा देना, निकालना, दूर करना।

हज़बर—(अ०) (सं० पु०) शेर बबर, फ़ाड़नेवाला शेर, बड़ा बहादुर।

हज़म—(अ०) (सं० पु०) (१) पाचन, पचजाना; (२) ग़बन, चोरी।

हजर—(अ०) (सं० पु०) पत्थर, संग।

हज़र—(अ०) (सं० पु०) (१) बचाव, परहेज़; (२) क़याम, एक जगह ठहरना।

हजर-उल्-यहूद—(अ०) (सं० पु०) एक प्रकार का पत्थर जो दवा के काम में आता है, बेर पत्थर।

हज़रत—(अ०) (सं० पु०) (१) दरगाह, सामीप्य, नज़दीकी; (२) बादशाहों, महात्माओं की उपाधि, सम्मान और आदर सूचक शब्द जो नाम के पहले लगाते हैं; (३) जनाब, हुज़ूर। (उ०) (वि०) शरीर, बदज़ात, चालाक, चलते हुए, बेढब।

हज़रत-पसंद—(वि०) जो बादशाह को पसंद हो।

हज़रत-सलामत—(अ०) (सं० पु०) (१) हुज़ूर, श्रीमान्, जनाब-आली; (२) यार, दोस्त।

हज़रात—(अ०) (सं० पु०) 'हज़रत' का बहुवचन ।
हजरे-असवद—(अ०) (सं० पु०) एक बड़ा काला पत्थर जो मक्का में है और जिसे यात्री चूमते हैं ।
हज़ल—(अ०) (सं० पु०) बेहूदा बातें, मज़ाक़, फ़हश बात, परिहास (पद्य) ।
हज़ल-गो—(फ़ा०) (वि०) परिहास-पद्य बनानेवाला, बेहूदा बकनेवाला ।
हज़ल-गोई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) मज़ाक़ की कविता बनाना, बेहूदा बकना ।
हज़्यात—(अ०) (सं० स्त्री०) बेहूदा बातें ।
हज़ा—(अ०) यह (संकेत) ।
हज़ाक़त—(अ०) (सं० स्त्री०) दानाई, अभ्यास, बुद्धिमानी ।
हजामत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) नाई का काम, सर मूँड़ना, बाल बनना; (२) सफ़ाई, दुरुस्ती; (३) बाल बनाने की मज़दूरी; (४) बढ़े हुए बाल जिन्हें कटाना हो । हजामत-बनाना—(१) सर मूँड़ना; (२) ठगना; (३) पीटना ।
हज़ार—(फ़ा०) (वि०) (१) सहस्र, दस सौ; (२) कितना ही, बहुतेरा, अनेक । (सं० स्त्री०) बुलबुल ।
हज़ार-चन्द—हज़ार गुना ।
हज़ार-चश्म—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) केंकड़ा।
हज़ार-चश्मा—(फ़ा०) (सं० पु०) पीठ पर होनेवाला भीषण फोड़ा, अदीठ ।
हज़ार-दाना—(फ़ा०) (वि०) हज़ार दाने की माला, एक बूटी ।
हज़ार-दास्ताँ—(फ़ा०) (सं० पु०) बुलबुल । (वि०) अच्छा और बहुत बोलनेवाला ।
हज़ार-पा—(फ़ा०) (सं० पु०) खनखजूरा ।
हज़ार-हा—(फ़ा०) (वि०) हज़ारों, अन-गिनती, असंख्य ।
हज़ारा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) एक प्रकार का बड़ा गेंदा, या गेंदे का फूल; (२) सीमा प्रान्त की एक पहाड़ी जाति का नाम; (३) एक पहाड़ी का नाम; (४) फ़व्वारा ।
हज़ारी—(फ़ा०) (सं० पु०) एक हज़ार सिपाहियों का सरदार ।
हज़ारी-बज़ारी—(वि०) (१) हज़ारों तरह के आदमियों से मिलनेवाला और बाज़ार में बैठनेवाला; (२) कमीना, अविश्वस-नीय ।
हज़ारी-रोज़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) रज्जब माह की सत्ताईसवीं तारीख़ का रोज़ा (व्रत) ।
हज़ो—(अ०) (वि०) दुःखित ।
हज़ीज़—(अ०) (सं० पु०) गढ़ा, नशेब ।
हज़ीमत—(अ०) (सं० स्त्री०) पराजय, हार, भागड़, भगदड़ ।
हज़ीरा—(अ०) (सं० पु०) क़ब्रस्तान की चार-दीवारी, मक़बरे का गुम्बज़ ।
हजूज़—(पु०) 'हज' का बहुवचन ।
हजूम—(अ०) (सं० पु०) जमाव, भीड़ ।
हज़े-नफ़्सानी—(अ०) (सं०स्त्री०) हैवानी ख़ुशी, पाशविक आनन्द ।
हजो—(अ०) (सं० स्त्री०) निन्दा, बदगोई, बुराई ।
हज्ज—(अ०) (सं० पु०) नियमित समय पर यात्रा करना—देखो 'हज' ।
हज्जाम—(अ०) (सं० पु०) हजामत बनाने-वाला, नाई ।
हज्जामी—(अ०) (सं० स्त्री०) नाई का पेशा, हजामत बनाने का काम ।
हज्जे-अकबर—(अ०) (सं० पु०) बहुत बड़ा पर्व, शुक्रवार को पड़ने पर हज्ज बहुत बड़ा माना जाता है ।
हज्जे-असग़र—(अ०) (सं० पु०) मामूली हज्ज, जो शुक्रवार को न पड़े ।
हज्ब—(अ०) (सं० पु०) उत्तराधिकार से वंचित करना ।
हज्म—(अ०) (सं० पु०) मोटाई, जसामत, स्थूलता ।

हज़म—(अ०) (वि०) (१) पचा हुआ; (२) बेईमानी से लिया हुआ। (सं० पु०) होशयारी।

हड़क—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) पागल कुत्ते के ज़हर का असर होने पर कुत्ते की तरह बोलना और काटने दौड़ना; (२) उमंग, वलवला। हड़क उठना—(१) बावले कुत्ते की तरह व्यवहार करना। (२) उमंग उठना।

हतक—(अ०) (सं० स्त्री०) बेइज़्ज़ती, अपमान।

हतक-इज़्ज़त—(अ०) (सं० स्त्री०) बदनामी, मान-हानि, किसी की इज़्ज़त-आबरू ख़राब करना।

हत्मी—(अ०) (वि०) दृढ़, पक्का, मज़बूत।

हत्ता—(अ०) (अव्यय) यहाँ तक, इस क़दर, जब तक, जहाँ-तक।

हत्तुल-इमकान—(अ०) (क्रि० वि०) जहाँ तक बस चले, यथा-शक्ति, यथा-साध्य।

हत्तल-मक़दूर—(अ०) (क्रि० वि०) यथा साध्य, जहाँ तक संभव हो, जिस क़दर मुनासिब हो।

हद—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) किनारा, सीमा; (२) पहुँच, अन्त; (३) वह सज़ा या दंड जो इस्लामी क़ानून के अनुसार दी जाय; (४) निश्चित स्थान, रवाना होने की जगह; (५) अहाता, बाड़ा; (६) मर्यादा। हद करना—ऐसी बात करना कि उससे आगे असंभव हो। हद से गुज़रना—हद से बढ़ जाना। हद से बाहर होना—बहुत ज़्यादा होना। हद हो जाना—किसी काम का बे-इन्तिहा होना।

हदफ़—(अ०) (सं० पु०) तीर का निशाना, चोट।

हदफ़-आफ़त—(वि०) आफ़त का निशाना, आफ़त में ग्रस्त।

हद-बन्दी—(अ०) (सं० स्त्री०) हद बाँधना।

हदाया—(अ०) (सं० पु०) भेंट ('हदिया' का बहुवचन)।

हदासत—(अ०) (सं० स्त्री०) आरंभ, नौजवानी, नया-पन।

हदिया—(अ०) (सं० पु०) (१) भेंट, उपहार, नज़र, नज़राना, तुहफ़ा; (२) क़ुरान के समाप्त होने का उत्सव; (३) वह पोशाक जो क़ुरान ख़तम होने पर उस्ताद को दी जाय। हदिया करना—क़ुरान समाप्त करना।

हदीक़ा—(अ०) (सं० पु०) चारदीवारी का बाग़।

हदीद—(अ०) (सं० पु०) लोहा।

हदीस—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) बात, नई बात; (२) मोहम्मद साहब के वचन और कार्यों का विवरण; (३) बयान, ज़िक्र; (४) इतिहास, इतिवृत्त। हदीस खींचना—(देह०) (औ०) किसी बात को छोड़ना, तौबा करना। हदीस समझना—बिलकुल सच समझना।

हदूद—(अ०) (सं० स्त्री०) 'हद' का बहुवचन।

हद्द—(अ०) (सं० स्त्री०) हद।

हद्दाद—(अ०) (सं० पु०) (१) लुहार; (२) जेल का दारोग़ा।

हनज़ल—(अ०) (सं० पु०) इन्द्रायण का फल।

हनोज़—(फ़ा०) (क्रि० वि०) अभी तक, अब तक। कहा०—हनोज़ दिल्ली दूर अस्त—अभी दिल्ली दूर है—अभी मतलब पूरा होने में बहुत देर है। हनोज़ रोज़ अव्वल—अभी तक कुछ तरक्क़ी नहीं है।

हप्पो—(हि०) (सं० स्त्री०) अफ़ीम की गोली जो स्त्रियाँ बच्चों को देती हैं।

हफ़-नज़र—(फ़ा०) चश्म बद्दूर, ईश्वर बुरी नज़र से बचावे।

हफ़्त—(फ़ा०) (वि०) सात।

हफ़्त-अक़लीम—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सात विलायतें जो सात सितारों से सम्बन्ध रखती हैं; सातों देश।

हफ़्त-अन्दाम—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) एक रग का नाम जिसकी फ़स्द से सिर, सीना, हाथ, पाँव का ख़ून निकलता है।

हफ़्त-इमाम—(फ़ा०) (सं० पु०) इस्लाम के सात प्रसिद्ध इमाम।

हफ़्त-औरंग—(फ़ा०) (सं० पु०) सात रंग।

हफ़्त-क़लम—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) अरबी की सात प्रकार की लिपि; (२) सातों लिपियों का जानने व लिखनेवाला; (३) आला दरजे का ख़ुश-नवीस।

हफ़्त-किशवर—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सात आसमान।

हफ़्त-ज़बान—(फ़ा०) (वि०) सात भाषाएँ जाननेवाला।

हफ़्त-जोश—(फ़ा०) (सं० पु०) सात धातु मिला कर जो चीज़ बनाई जाय, सप्त-धातु।

हफ़्त-दोज़ख़—(फ़ा०) (सं० पु०) सात नरक।

हफ़्त-परदा—(फ़ा०) (सं० पु०) सात आसमान, आँखों के सात पर्दे।

हफ़्त-पुश्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सात पीढ़ी।

हफ़्तम—(फ़ा०) (वि०) सातवाँ।

हफ़्त-मेवा—सात प्रकार के मेवे (किश-मिश, अंजीर, शफ़तालू, खजूर, आलू बुख़ारा, सेब और अंगूर)।

हफ़्ता—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) सप्ताह; (२) सनिवार; (३) सातवाँ दिन।

हफ़्ताअशरह—(पु०) आठ दस दिन का समय।

हफ़्ताद—(फ़ा०) (वि०) सत्तर, बहुत।

हफ़्ता-दोस्त—(फ़ा०) (वि०) जो रोज़ नया दोस्त करे और दोस्ती पर क़ायम न रहे।

हब—(अ०) (सं० स्त्री०) गोली, दाना, बीज।

हबक-धबक—(औ०) काम करने की चालाकी।

हबड़ा—(हि०) (वि०) बड़े बड़े दाँतों-वाला।

हबन्नक—(अ०) (वि०) सिड़ी, मूर्ख, पगला, जाँगलू, छोटे क़द का अहमक़।

हबश—(अ०) (सं० पु०) हबशियों के रहने का देश, अफ्रीका का एक भाग।

हबशी—(अ०) (सं० पु०) हबश देश का निवासी जो बहुत ही काला होता है।

हबाब—(अ०) (सं० पु०) (१) पानी का बुलबुला; (२) हाथ का एक ज़ेवर; (३) रोशनी के कँवल, शीशे के गोले। हबाब-सा—बारीक, पतला।

हबीब—(अ०) (सं० पु०) (१) मित्र, दोस्त; (२) प्रिय, प्यारा।

हबूब—(अ०) (सं० पु०) (१) दाने, गोलियाँ; (२) हवा का प्रवाह।

हब्बज़ा—(अ०) शाबाश, साधु-साधु।

हब्बबूत—(अ०) (सं० पु०) (१) अवतरण, ऊपर से नीचे आना; (२) नीची भूमि; (३) रोग के कारण होनेवाली कमज़ोरी; (४) हानि, नुक़सान।

हब्बा—(अ०) (सं० पु०) अन्न का दाना, बहुत ही कम अंश, ज़र्रा।

हब्श, हब्शा—(अ०) (सं० पु०) हबशियों का देश, ज़ंगबार, सूडान, अफ्रीका।

हब्शी—देखो—'हबशी'।

हब्स—(अ०) (सं० पु०) (१) क़ैद-ख़ाना, कारागार; (२) बन्द करना, बन्द या क़ैद रहना; (३) उमस, घुटाव, वह गरमी जो हवा न चलने के कारण होती है।

हब्स-दम—(अ०) (सं० पु०) (१) दमा रोग, श्वास रोग; (२) प्राणायाम, श्वास रोकना।

हब्स-बेजा—(अ०) (सं० पु०) ज़बरदस्ती किसी को मकान में बन्द कर देना।

हम—(फ़ा०) (क्रि० वि० (१) भी; (२) आपस में, परस्पर; किसी काम में शिरकत ज़ाहिर करने के लिए; (३) बल्कि, इसके अतिरिक्त।

हम-अमर—(फ़ा०) (वि०) एक समय का; सम-कालीन।

हम-अहद—(फ़ा०) (वि०) समकालीन, एक समय का।

हम-आग़ोश—(फ़ा०) (वि०) बग़ल-गीर, परस्पर गले मिलनेवाला।

हम-आवाज़—(फ़ा०) (वि०) (१) एक-मत, साथ; (२) सुर या राग में शरीक; (३) जिनकी एक आवाज़ हो।

हम-आवुर्द—(फ़ा०) (वि०) सामने खड़े होकर लड़नेवाला, दुश्मन, प्रतिद्वंदी।

हम-आहंग—(फ़ा०) (वि०) वह जिनकी एक आवाज़ हो, एक-मत।

हम-उम्र—(फ़ा०) (वि०) बराबर की उम्र का, सम-वयस्क।

हम-क़द—(फ़ा०) (वि०) बराबर क़द का।

हम-क़दम—(फ़ा०) (वि०) साथ; साथ चलनेवाला, हम-राह।

हम-कनार—(फ़ा०) (वि०) बग़लगीर।

हम-क़लम—(फ़ा०) (वि०) जो लोग एक ही काम पर मुक़र्रर हों; हम-ओहदा।

हम-कलाम—(फ़ा०) (वि०) मिल कर बातें करनेवाला, साथ में बातें करने-वाला।

हम-कलामी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बात-चीत, वार्तालाप।

हम-कासा—(फ़ा०) (वि०) हम-प्याला, साथ साथ पीनेवाला।

हम-क़ौम—(फ़ा०) (वि०) एक जाति का, सजातीय।

हम-ख़ाना—(फ़ा०) (वि०) एक ही घर में रहनेवाला, घर में साथ रहनेवाला।

हमख़्वाबा—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) जोरू। हम-ख़्वाब होना—साथ सोना।

हम-चश्म—(फ़ा०) (वि०) बराबरी वाला। हम-चश्म होना—मुक़ाबिल होना।

हम-ज़बान—(फ़ा०) (वि०) मुत्तफ़िक़, सहमत, बोलने में साथ देनेवाला।

हम-जमाअत—(फ़ा०) (वि०) हम-सबक़, सहपाठी।

हम-जलीस—(फ़ा०) (वि०) साथ उठने बैठनेवाला।

हम-जवार—(फ़ा०) (वि०) पड़ोसी, हम-साया।

हम-ज़ात—(फ़ा०) (वि०) एक जाति का, सजातीय।

हम-ज़ाद—(फ़ा०) जो साथ पैदा हुआ हो; वह जिन या फ़रिश्ता जो हर आदमी के साथ पैदा होता है और हमेशा साथ रहता है।

हम-ज़ानू—(फ़ा०) (वि०) बराबर का।

हम-जिन्स—(फ़ा०) (वि०) यकसाँ, एक ही प्रकार का।

हम-ज़ुल्फ़—(फ़ा०) (सं० पु०) साढ़ू।

हम-ज़ोर—(फ़ा०) (वि०) ताक़त में बराबर।

हम-जोली—(फ़ा०) (वि०) हम-उम्र जो साथ खेला हो, सम-वयस्क।

हम-तराज़ू—(फ़ा०) (वि०) हम-पल्ला, हम-वज़न।

हम-तरीक़—(फ़ा०) (वि०) हम-वज़ा, एक ही तर्ज़ या ढंग का।

हम-ता—(फ़ा०) (वि०) बराबर, शरीक, समान।

हम-ताला—(फ़ा०) (वि०) एकसी क़िसमत वाला।

हम-दम—(फ़ा०) (वि०) (१) घनिष्ठ मित्र, रफ़ीक़; (२) हुक्क़ा।

हम-दर्द—(फ़ा०) (वि०) दुख-दर्द का साथी, सहानुभूति रखनेवाला।

हम-दर्दी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सहानुभूति, दर्द-मंदी, ग़म-ख़्वारी।

हम-दस्त—(फ़ा०) (वि०) साथ काम करनेवाला, बराबर।

हम-दास्तान—(फ़ा०) (वि०) हम-कलाम, साथ मिलने-बोलनेवाला।

हम-दिगर—(फ़ा०) (क्रि० वि०) आपस में, बाहम, परस्पर, दोनों एक दूसरे में।

हम-दीवार—(फ़ा०) (वि०) पड़ोसी, हम-साया।

हम-दोश—(फ़ा०) (वि०) बराबर बैठने वाला, बराबर, साथी।

हमनफ़्स—(फ़ा०) (वि०) साथी, मित्र।

हम-नवाला—(फ़ा०) (वि०) साथ खाने-वाला।

हम-नशीं—(फ़ा०) (वि०) पास उठने बैठनेवाला, साथी।

हम-नस्ल—(फ़ा०) (वि०) एक वंश का।

हमनाम—(फ़ा०) (वि०) एक ही नाम का।

हम-पल्ला—(फ़ा०) (वि०) बराबर की टक्कर का, हम-वज़न।

हमपहलू—(फ़ा०) (वि०) साथी, बराबर बैठनेवाला।

हम-पा—(फ़ा०) (वि०) साथी, साथ चलने वाला।

हम-पाया—(फ़ा०) (वि०) एक ही दर्जा रखनेवाला, बराबरी का पद रखनेवाला।

हम-पेशा—(फ़ा०) (वि०) एक पेशा और एक ही काम करनेवाला।

हमला-आवर—(फ़ा०) (वि०) हमला करनेवाला, चढ़ाई करनेवाला।

हम-वक़्त—(फ़ा०) (वि०) हम-असर, समकालीन।

हम-प्याला—(फ़ा०) (वि०) गहरा दोस्त, एक ही प्याले में पीनेवाला। हम-प्याला ओ हम-नवाला—एक ही प्याले में साथ खाने पीनेवाला।

हम-बग़ल—(फ़ा०) (वि०) बग़ल-गीर।

हम-बज़्म—(फ़ा०) (वि०) महफ़िल में शरीक।

हम-बिस्तर—(फ़ा०) (वि०) एक ही बिस्तर पर सोनेवाला, संभोग करनेवाला।

हम-बिस्तरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) संभोग, एक साथ सोना।

हम-मकतब—(फ़ा०) (वि०) सहपाठी।

हम-मज़हब—(फ़ा०) (वि०) सह-धर्मी, एक ही धर्म माननेवाला।

हम-मरकज़—(फ़ा०) (वि०) ऐसे वृत्त जिनका केन्द्र एक ही हो।

हम-मानी—(फ़ा०) (वि०) समानार्थक, एक ही अर्थ रखनेवाला।

हम-रंग—(फ़ा०) (वि०) एक रंग का, एक तरह का, एक-वज़ा।

हम-रकाब—(फ़ा०) (वि०) सवारी के साथ।

हम-राज़—(फ़ा०) (वि०) अंतरंग, रहस्य जाननेवाला।

हम-राह—(फ़ा०) (वि०) (१) साथी, साथ चलनेवाला; (२) साथ।

हम-राह रकाब—(फ़ा०) (वि०) जलूस की सवारी के साथ।

हम-रिश्ता—(फ़ा०) (वि०) जो रिश्ते में बराबर हो।

हमल—(अ०) (सं० पु०) (१) भार, बोझ; (२) गर्भ; (३) मेष-राशि। इस्क़ाते-हमल—गर्भ-पात।

हमला—(अ०) (सं० पु०) (१) आक्रमण, चढ़ाई, धावा; (२) वार, चोट।

हम-वतन—(फ़ा०) (वि०) स्वदेशी, एक ही देश का।

हम-वार—(फ़ा०) (वि०) एकसा, बराबर। हमवार कर लेना—राज़ी करना, अपनी राय के अनुकूल बनाना।

हम-वारा—(फ़ा०) (क्रि० वि०) (१) सदा, हमेशा; (२) निरन्तर, लगातार।

हम-शक्ल—(फ़ा०) (वि०) एकसी शक्लवाला, समान-रूप।

हम-शान—(फ़ा०) (वि०) एक ही दरजे का, सम-कक्ष।

हम-शीर—(फ़ा०) (वि०) हक़ीक़ी भाई।

हम-शीरा—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बहन, भगिनी।

हम-संग—(फ़ा०) (वि०) रुतबे में बराबर।

हम-सख़ुन—(फ़ा०) (वि०) हम-ज़बान, मुक़ाबिल होकर बोलनेवाला। हम-सख़ुनी करना—मुक़ाबिल होकर बोलना।

हम-सदा—(फ़ा०) (वि०) साथ मिलकर आवाज़ देनेवाला।

हम-सफ़र—(फ़ा०) (वि०) सह-यात्री, साथ साथ सफ़र करनेवाला।

हम-सफ़ीर—(फ़ा०) (वि०) हम-दम, हम-रंग, एक सी बोली बोलनेवाले।

हम-सबक़—(फ़ा०) (वि०) साथ में पढ़नेवाला।

हम-सर—(फ़ा०) बराबर वाला, जोड़ का।

हम-सरी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बराबरी। हम-सरी करना—बराबरी करना।

हमसाज़—(फ़ा०) (वि०) अनुकूल, मित्र।

हम-सायगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पड़ौस।

हम-साया—(फ़ा०) (सं० पु०) पड़ौसी।

हम-सायी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) पड़ोसिन।

हम सال, हम-सिन—(फ़ा०) (वि०) उम्र में बराबर।

हम-सिलक—(फ़ा०) (सं० पु०) समधी।

हम-सोहबत—(फ़ा०) (सं० पु०) मुसाहब, सोहबत में रहनेवाला।

हम-हमा—(अ०) (सं० पु०) भारी आवाज़ (घोड़े, बैल या शेर की)।

हमां, हमाना—(फ़ा०) (वि०) गोया, शायद।

हमा—(फ़ा०) (वि०) कुल, सारा, सब।

हमा-तन—(फ़ा०) (क्रि० वि०) बिलकुल, तमाम।

हमा-तन गोश—(फ़ा०) (वि०) सुनने पर पूरा मुतवज्जह, पूरे ध्यान से सुननेवाला।

हमा-दां—(फ़ा०) (वि०) सर्वज्ञ, सब बातें जाननेवाला।

हमाम-दस्ता—(फ़ा०) (सं० पु०) लोहे का खरल जिसमें दवा मसाला कूटते हैं।

हमयल—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) गले में तिरछा परतला डालना, जिसमें तलवार लटकाते हैं; (२) यज्ञोपवीत; (३) औरतों के गले में पहनने का एक ज़ेवर (४) बहुत छोटे आकार का क़ुरान जिसे गले में तावीज़ की तरह डाल लेते हैं। (वि०) गले में पड़ी हुई।

हमाल—(फ़ा०) मिस्ल, मानिन्द, समान।

हमाशा—सर्व साधारण, सब।

हमाशुमा—(हि०) (वि०) सामान्य लोग।

हमाहमी—(हि०) (सं० स्त्री०) घमंड की बातें करना।

हमीद—(अ०) (वि०) (पु०) खूब प्रशंसित वस्तु।

हमीदा—(अ०) (वि०) (स्त्री०) हमीद का स्त्री लिंग।

हमीम—(अ०) (सं० पु०) (१) गर्म; (२) दोस्त, रिश्तेदार।

हमेश—(औ०) हमेशा।

हमेशगी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) हमेशा बना रहना।

हमेशा—(फ़ा०) (क्रि० वि०) सदा; नित्य।

हमैयत—(अ०) (सं० स्त्री०) शर्म, लज्जा, ग़ैरत, नंग।

हम्द—(अ०) (सं० स्त्री०) ईश्वर की प्रशंसा, स्तुति, तारीफ़।

हम्माम—(अ०) (सं० पु०) नहाने की जगह, स्नानागार। हम्माम करना—नहाना। हम्माम की लुंगी—वह चीज़ जो हर आदमी के इस्तेमाल में आवे।

हम्मामी—(अ०) (सं० पु०) वह जो हम्माम में स्नान कराता है।

हम्माल—(अ०) (सं० पु०) मज़दूर, बोझ ढोनेवाला।

हया—(अ०) (सं० स्त्री०) शर्म, लज्जा।

हयात—(अ०) (सं० स्त्री०) ज़िंदगी, जीवन।

हयात-मुस्तग्रार—(स्त्री०) नश्वर देह, चन्दरोज़ा ज़िंदगी।

हया-दार, हया-मन्द—(फ़ा०) (वि०) लिहाज़वाला, लज्जाशील, शर्मदार।

हयूला—(अ०) (सं० पु०) प्रकृति, तथ्य, मूल तत्व।

हर—(फ़ा०) (वि०) प्रत्येक। हर-ग्राईना—(फ़ा०) (क्रि० वि०) बेशक, ज़रूर, अवश्य। हर-आन—हर घड़ी। हर दो—दोनों, दोनों के दोनों। हर बार—बार बार, घड़ी घड़ी। हर सू—हर तरफ़। हर कस—हर एक शख़्स।

हरकत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) जुम्बिश, गर्दिश; (२) तड़प; (३) काम, कार्य; (४) ना-पसंद बात; (५) दोष, क़सूर, जुर्म, अपराध, खोट; (६) नुक़सान, हानि, ज़रर; (७) सफ़र, यात्रा, कूच, चलत-फिरत।

हरकारा—(फ़ा०) (सं० पु०) चिट्ठी रसाँ, डाकिया, चपरासी।

हरकुजा—हर जगह, जहाँ कहीं।

हर-गाह—(फ़ा०) (क्रि० वि०) जब, जिस घड़ी जिस हाल में।

हरगिज़—(फ़ा०) (क्रि० वि०) कदापि।

हर चंद—(फ़ा०) (१) कितना ही, कैसा ही, बहुतेरा; (२) यद्यपि।

हरचह—(फ़ा०) हर चीज़, जो कुछ।

हरज—(अ०) (सं० पु०) (१) तंगी, सख़्ती; (२) नुक़सान, हानि; (३) देर, कमी, अन्तर; हरज मरज—(फ़ा०) (पु०) बिगाड़, फ़िसाद, गड़बड़, बलवा, नुक़सान।

हरज—(अ०) (सं० पु०) नुक़सान, तावान, हानि; क्षत-पूर्ति।

हरज़ा—(फ़ा०) (वि०) बेहूदा, व्यर्थ, निरर्थक, ख़राब, नामाक़ूल। हरज़ा घर, हरज़ा-सरा—(फ़ा०) (वि०) बेहूदा बकने वाला।

हरजाई—(फ़ा०) (वि०) (१) बे-मुरव्वत, बे-वफ़ा; (२) आवारा, जो कभी कहीं और कभी कहीं रहे।

हरजाई-पन, हरजाई-पना—हर एक से मुलाक़ात रखना, बे-मुरव्वती, बेवफ़ाई।

हरज़ा-गर्द—(फ़ा०) (वि०) बेहूदा मारा-मारा फिरनेवाला।

हरजाना—(अ०) (सं० पु०) क्षत-पूर्ति, नुक़सान का एवज़, हानि का बदला।

हरज़ा-सराई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) बकवास, अटल।

हर-दिल-अज़ीज़—(फ़ा०) (वि०) सर्व-प्रिय, लोक-प्रिय, सबका प्यारा, आम-पसंद।

हरफ़त—(अ०) (सं० स्त्री०) कला-कौशल, कारीगरी, हुनर, विद्या।

हर-फ़न-मौला—(वि०) हर एक काम में दक्ष।

हरबा—(अ०) (सं० पु०) (१) हथियार, अस्त्र-शस्त्र; (२) धावा, हमला, आक्रमण।

हरवाई—(फ़ा०) (वि०) हरजाई, बेमुरव्वत, बेवफ़ा, आवारा, जो कभी कहीं और कभी कहीं रहे, एक जगह न टिके।

हरबोंग—(हि०) (सं० पु०) अंधेर, गड़बड़ी।

हरम—(अ०) (सं० पु०) (१) काबे की चार-दीवारी; (२) अंतःपुर, ज़नानख़ाना, मकान के अन्दर स्त्रियों के रहने का हिस्सा।

हरम-ज़दगी—(अ०) (सं० स्त्री०) शरारत, दुष्टता, हरामीपन।

हरमज़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार की लाल मिट्टी जो रंगने में काम आती है।

हरम-सरा—(अ०) (सं० स्त्री०) ज़नाना मकान, अन्तःपुर, ज़नान-ख़ाना।

हरहफ़्त—(फ़ा०) (वि०) आरास्ता, सिंगार किये हुए।

हरमान—(अ०) (सं० पु०) नैराश्य, ना-उम्मेदी, मायूसी।

हराम—(अ०) (वि०) (१) निषिद्ध, अनियमित, नाज़ायज़, अवैध; (२) बुरा, नापाक, पलीद, त्याज्य, दूषित। (सं० पु०) (१) वह बुरा काम या बदकारी जिसका शास्त्र में निषेध हो; (२) सुअर, शूकर; (३) अधर्म, पाप, बेईमानी; (४) व्यभिचार। हराम का—मुफ़्त का, बेईमानी से प्राप्त। हराम कर देना—नागवार कर देना, बदमज़ा कर देना। हराम करना—व्यभिचार करना, बदकारी करना। हराम मौत मरना—ख़ुदकुशी करना। हराम होना—ना-जायज़ होना, मना होना, निषिद्ध होना। कहा०—हराम कोठे पर पुकारता है—बुरी बात अपने आप प्रसिद्ध हो जाती है। हराम चालीस घर लेकर डूबता है—बदकारी का असर दूर-दूर पहुँचता है।

हराम-कार—(अ०) (वि०) व्यभिचारी, बदकार।

हराम-ख़ोर—(अ०) (वि०) (१) पाप की कमाई खानेवाला, रिशवत-खानेवाला, बद-ज़ात; (२) नमक-हराम, मुफ़्त-ख़ोर; (३) बेमुरव्वत, बेवफ़ा; (४) आलसी, निकम्मा।

हराम-मग़ज़—(अ०) (सं० पु०) रीढ़ की हड्डी के भीतर का गूदा। इसका खाना निषिद्ध है।

हराम-ज़ादा—(अ०) (वि०) (१) वर्ण-संकर, दोग़ला; (२) शरीर, बदमाश, बदज़ात, चालाक, पाजी। कहा०—हराम-ज़ादे की रस्सी दराज़ है—बदमाश बहुत ज़िन्दा रहता है।

हरामी—(अ०) (वि०) (१) व्यभिचार से उत्पन्न; (२) चोर, शरीर, बदज़ात।

हरामीपन—(अ०) (सं० पु०) पाजीपन, दुष्टता, बदज़ाती।

हरारत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) ताप, गर्मी, हिद्दत; (२) तबख़ीर, हल्का ज्वर; (३) ग़ुस्सा, क्रोध।

हरारा—(अ०) (सं० पु०) (१) आवेश, गर्मी, जोश; (२) तेज़ी, तुंदी, तीव्रता। हरारा देना—(औ०) चाल चलना, जुल देना। हरारा लाना—गर्म होना, तेज़ होना, बदी से पेश आना। हरारा लेना—जोश दिखाना, तेज़ी दिखाना।

हराबुल—(तु०) (सं० पु०) (१) वह थोड़ी सी फ़ौज जो लश्कर के आगे चलती है; (२) आगे की फ़ौज का सरदार।

हरास—(फ़ा०) (सं० पु०) (देह० स्त्री०) (१) भय, डर, हौल; (२) ना-उम्मेदी निराशा, मायूसी।

हरीफ़—(अ०) (सं० पु०) (१) हम पेशा, एक ही व्यवसाय करनेवाला, (२) शत्रु, वैरी, दुश्मन; (३) होशयार, धूर्त, चालाक; (४) प्रतिद्वंदी, विरोधी।

हरीर—(अ०) (सं० पु०) (१) रेशम; (२) रेशमी कपड़ा।

हरीरा—(अ०) (सं० पु०) एक प्रकार का पतला हलुआ।

हरीरी—(अ०) (वि०) (१) रेशमी, रेशम का; (२) महीन, पतला; (३) दुबला-पतला आदमी।

हरीस—(अ०) (वि०) (१) लालची, लोभी; (२) ईर्ष्यालु, ईर्ष्या करनेवाला; (३) खाऊ, पेटू, भुखमरा; (४) प्रतिद्वंदी, देखा देखी कोई काम करनेवाला।

हरूफ़—(अ०) (सं० पु०) अक्षर। (हर्फ़ का बहुवचन)।

हर्ज—(अ०) (सं० पु०) देखो—'हरज'।

हर्जाना—(अ०) (सं० पु०) देखो—'हरजाना'।

हर्फ़—(अ०) (सं० पु०) (१) वर्णमाला का अक्षर; (२) बात, शब्द; (३) दोष, कलंक, नुक़्स, ऐब; (४) अफ़सोस।

हर्फ़-आशना—(अ०) (वि०) जिसे अक्षर-ज्ञान हो।

हर्फ़-गीर—(अ०) (वि०) ऐब या दुर्गुण बयान करनेवाला, दोष-दर्शी।

हर्फ़-गीरी—(अ०) (सं० स्त्री०) दोष देखना, दोष बताना।

हर्फ़-चीं—(फ़ा०) (वि०) नुक्ता-चीं, दोष निकालनेवाला।

हर्फ़-ब-हर्फ़—(अ०) (क्रि० वि०) अक्षरशः, शब्दशः, एक एक अक्षर।

हर्फ़-इख़्तसास—(अ०) (सं० पु०) वह अक्षर जो शब्द में कुछ विशेषता उत्पन्न करने के लिए लगाया जाय।

हर्फ़-इज़ाफ़त—(अ०) (सं० पु०) वह अक्षर जिससे एक संज्ञा का दूसरी के साथ सम्बन्ध सूचित हो।

हर्फ़-नफ़ी—(अ०) (सं० पु०) वह अक्षर या शब्द जो अस्वीकृति या इन्कार के लिए प्रयुक्त किया जाय।

हर्फ़-निदा—(अ०) (सं० पु०) सम्बोधन, वह अक्षर या शब्द जिसका प्रयोग किसी को बुलाने के लिए किया जाय।

हर्राफ़—(अ०) (वि०) धूर्त, चालाक, तेज़ औरत; माशूक़।

हर्बा—(अ०) (सं० पु०) (१) लड़ाई का हथियार; (२) हमला, चढ़ाई; (३) झपट्टा। हर्बे-ज़र्बे—(अ०) हर घड़ी, बराबर, घड़ी घड़ी।

हल—(अ०) (सं० पु०) सुलझाव, समस्या का निराकरण; (२) कठिन कार्य को सरल करना; (३) पिसाई, घुलना, घुटाई, पिसला, ख़ूब मिल जाना; (४) गणित का प्रश्न निकालना।

हलक़—(अ०) (सं० पु०) (१) गला, गर्दन; (२) मुँह, ज़बान। हलक़ बंद करना—किसी को चुप करना, बोलने न देना। हलक़ बैठ जाना—आवाज़ का भारी हो जाना। हलक़ तक भरना—भूख से ज़्यादा खा लेना। हलक़ से उतरना—गवारा होना। हलक़ का दरबान—(पु०) (१) खाने पीने को मना करनेवाला; (२) बोलने से रोकनेवाला; (३) हर बात पर टोकनेवाला।

हलक़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) वृत्त, गोलाई, गिरदा; (२) घेरा, परिधि; (३) दल, झुंड, मजमा; (४) पहिया; (५) इलाक़ा, गाँवों या क़स्बों का समूह; (६) घुंडी का घर, तुकमा।

हलकान—(अ०) (वि०) (१) थका-माँदा; शिथिल; (२) हैरान, परेशान; (३) अधमरा। हलकान करना—थका मारना, परेशान करना।

हलक़ा-ब-गोश—(अ०) (सं० पु०) जिसके कान में ग़ुलामी का हलक़ा पड़ा हो; ग़ुलाम, दास।

हल-कारी—(सं० स्त्री०) सोने चाँदी को हल करके फूल पत्ती बनाना।

हलकूम—(अ०) (सं० पु०) हलक़, सोने और गले के बीच का गढ़ा।

हलकोरा—(हि०) (सं० पु०) लहर, मौज।

हलजान—(औ०) (स्त्री०) एक रस्म जिसमें शादी के बाद घर की बीबी सब महमानों से पैसे जमा कर के पूरी-साग पकाती और सब को बाँटती है।

हलफ़—(अ०) (सं० पु०) शपथ, क़सम, सौगन्ध। हलफ़ उठाना—क़सम खाना। हल्फ़ देना—क़सम दिलाना, या देना।

हलफ़-दरोग़ो—(अ०) (सं० स्त्री०) झूठी क़सम खाना।

हलफ़न्—(अ०) (क्रि० वि०) हलफ़ से, क़सम खाकर, शपथ लेकर।

हलफ़-नामा—(अ०) (सं० पु०) लिखा हुआ हलफ़ी बयान।

हलब—(फ़ा०) (सं० पु०) एशियाई रूम में एक शहर का नाम।

हलबल—(हि०) (सं० स्त्री०) घबराहट, बेचैनी।

हलबी, हलब्बी—(फ़ा०) (वि०) हलब का आईना।

हलवा—(अ०) (सं० पु०) (१) घी शकर से बना हुआ एक व्यंजन; (२) तर चीज़, तर माल। हलवा समझना—नाचीज़ समझना, किसी काम को आसान समझना।

हलवाई—(अ०) (सं० पु०) मिठाई बनानेवाला, मिठाई बेचनेवाला। कहा० हलवाई की दुकान, दादा जी की फ़ातिहा—पराये माल को अपना समझकर ख़र्च करना।

हलवाए-बेदूद—(फ़ा०) (सं० पु०) शीरीं मेवे, मुलायम और स्वादिष्ट चीज़।

हलवाए-मग़ज़ी—(अ०) (सं० पु०) मग़ज़ बादाम, पिस्ता आदि पड़ा हुआ हलवा।

हलवाए-मर्ग—(अ०) (सं० पु०) भत्ती, वह भोजन जो किसी के मरने पर कराया जाता है।

हलवाए-मिक़राज़ी—(अ०) (सं० पु०) वह हलवा जिसमें मेवे को बहुत बारीक कतर के डालते हैं।

हलवान—(अ०) (सं० पु०) (१) बकरी या भेड़ का बच्चा जो दूध पीता हो; (२) नरम गोश्त जो जल्द गल जाय।

हलाक—(अ०) (वि०) (१) मरा हुआ, मृत; (२) थका हुआ, शिथिल; (३) इच्छुक, कामना-पूर्ण। हलाक करना—थकाना, मारना, बरबाद करना।

हलाकत, हलाकी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) विनाश, नेस्त होना, मरना; (२) मेहनत, मशक़्क़त; (३) थकावट।

हलाकू—(तु०) (सं० पु०) एक ज़ालिम बादशाह का ख़िताब। (वि०) (१) अत्याचारी, ज़ालिम; (२) हत्यारा।

हलापनी—(हि०) (सं० स्त्री०) हलचल, भागड़, गड़बड़।

हलाल—(अ०) (वि०) जायज़, विधि-विहित, शास्त्रानुकूल, ठीक, दुरुस्त; (सं० पु०) ज़िबह. वह मांस जिसके खाने की शास्त्र में आज्ञा हो। हलाल का—(१) औरस, वह बच्चा जो निकाह (विवाह) से पैदा हुआ हो; (२) ईमानदारी व मेहनत से मिला हुआ। हलाल करना—ज़िबह करना, खाने के लिए पशु मारना। हलाल करके खाना—मेहनत करके खाना।

हलाल-ख़ार—(सं० पु०) भंगी, मेहतर।

हलाल-ज़ादा—(औ०) शरीर।

हलाल-रकाब—(फ़ा०) (वि०) प्रतिष्ठित, उच्च-पद-आसीन (बादशाहों की तारीफ़)।

हलाहल—(फ़ा०) (सं० पु०) ज़हर, घातक विष। (वि०) बहुत कड़वा, तल्ख़।

हलीम—(अ०) (वि०) (१) सहनशील, बुर्दबार; (२) नम्र, कोमल-प्रकृति

(सं० पु०) एक प्रकार का खाना, खिचड़ी।

हलुआ—(अ०) (सं० पु०) देखो—'हलवा'।

हलूका—(सं० पु०) वमन या क़ै, जो एक बार मुँह से निकले।

हलेला—(फ़ा०) (सं० पु०) हड़, हरड़।

हल्क़—(अ०) (सं० पु०) (१) गर्दन, गला; (२) ज़बान; (३) मुँह।

हल्लाज—(अ०) (सं० पु०) धुनिया।

हल्वा—(अ०) (सं० पु०) हलवा।

हवन्नक़—(अ०) (वि०) सिड़ी, मूर्ख, पगला, जाँगलू।

हवल-दार—(फ़ा०) (सं० पु०) एक नीचे दरजे का सैनिक अफ़सर।

हवस—(अ०) (सं० स्त्री०) एक प्रकार का पागलपन, सनक। (फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) कामना, वासना; (२) लोभ, लालच; (३) हौसला, मनोकामना, अरमान।

हवस-नाक—(फ़ा०) (वि०) (१) लोभी, लालची; (२) कामुक।

हवा—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) वासना, कामना; (२) वायु जो चारों ओर फैली है और जिसके द्वारा मनुष्य जीवित है; (३) मित्रता, हित; (४) झड़प; (५) अल्प सम्बन्ध, ख़फ़ीफ़ ताल्लुक़, (६) सांस, दम; (७) भूत-प्रेत; (८) वबा, हैज़ा; (९) हलकी चीज़, सूक्ष्म वस्तु; (१०) रिहा, पाद; (११) नेस्त, विनाश; (१२) समय, ज़माना; (१३) रुख़, ढंग, अन्दाज़, गति; (१४) सनक, धुन। हवा ओ हविस—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) अय्याशी, लोभ-लालच, काम-पिपासा। हवा आना—असर हो जाना, हवा की पहुँच होना। हवा उड़ना—ख़बर फैलना, शोहरत होना। हवा उड़ जाना—भरम खुल जाना, साख जाती रहना। हवा उखड़ जाना—मान में अन्तर आना, इज़्ज़त में फ़र्क़ आना। हवा और कुछ हो जाना—अन्दाज़ बदल जाना। हवा के घोड़े पर सवार होना—बहुत जल्दी करना, घमंड करना। हवा पर उड़ना—इतराना, घमंडी होना। हवा पर चढ़ाना—घमंडी कर देना। हवा पर चढ़ना—घमंड करना। हवा पर रहना—घमंड में रहना। हवा पर सवार होना—जल्द-बाज़ होना, बात जल्दी करना। हवा पर गिरह लगाना—बहुत चालाकी करना। हवा पर होना—घमंडी होना। हवा पलटना—क़िसमत बदलना, परिवर्तन होना। हवा पहुँचना—रसोई होना, पहुँच होना। हवा फाँकना, हवा फाँक कर रहना—फ़ाक़े से रहना, भूखा रहना। हवा फिरना—हालत बदलना, अच्छे दिन आना। हवा बाँधना—झूठ-मूठ नाम या इज़्ज़त क़ायम करना, रौब जमाना, डींग हाँकना। हवा बताना—टाल देना। हवा बदलना—ढंग बदलना, दशा बदलना। हवा बिगड़ना—ज़माने का विरुद्ध हो जाना। हवा बँधना—रौब जमना, प्रसिद्धि होना। हवा भर जाना—(१) इतरा जाना; (२) मोटा हो जाना; (३) धुन समानी। हवा भी न देना—ख़बर तक न करना, ज़रा भी न दिखाना। हवा में आ जाना—इतरा जाना, डींग की लेना। हवा में होना—घमंडी होना। हवा सर में होना—धुन होना। हवा से आगे जाना—बहुत तेज़ जाना। हवा से बातें करना—बहुत फुर्तीला होना, घमंड करना। हवा से बच कर निकल जाना—दूर भागना, नफ़रत करना।

हवाइज—(अ०) (सं० पु०) 'हाजत' का बहुवचन।

हवाई—(फ़ा०) (वि०) (१) आसमानी,

हवा से सम्बन्ध रखनेवाला; (२) ढीठ, चपल (आँख); (३) परेशान; (४) कोरा कल्पित, असत्य; (५) हवा में उड़नेवाला। (सं० स्त्री०) (१) एक प्रकार की आतिश-बाज़ी; (२) पिस्ते और बादाम के पतले-पतले वरक़ जो मिठाई के ऊपर डालते हैं; (३) बेहूदा बात; (४) महसूल, जो निश्चित न हो। हवाई ख़बर—बाज़ारी गप, अफ़वाह। हवाई दीदा—ढीठ, गुस्ताख़ आँखें, बे-मुरव्वत दृष्टि। हवाई उड़ना, हवाइयाँ उड़ना—मुँह फ़क़ होना। हवाइयाँ छुटना, हवाई छूटना —बे-हवास होना, चेहरे का रंग उड़ना।

हवा-खोरी—(सं० स्त्री०) आबादी से बाहर तफ़रीह करना।

हवा ख़्वाह—(फ़ा०) (वि०) ख़ैर-ख़्वाह, शुभ-चिन्तक, दोस्त, तरफ़दार।

हवा ख़्वाही—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शुभ-चिन्तन, वफ़ादारी, हितैषिता।

हवा-ज़दगी—(अ०) (सं० स्त्री०) सरदी, ज़ुकाम।

हवादस—(अ०) (सं० पु०) मुसीबतें, तकलीफ़ें। 'हादसा' का बहुवचन।

हवा-दार—(अ०) (वि०) (१) जिसमें हवा आती हो; (२) चाहनेवाला, प्रेमी, आसक्त। (सं० पु०) तान-जान, एक प्रकार की अमीरों की सवारी जिसे कहार उठाकर चलते हैं।

हवा-दारी—(अ०) (सं० स्त्री०) इच्छा, ख़्वाहिश, शुभ-चिन्तन।

हवा-परस्त—(अ०) (वि०) (१) ख़ुद ग़र्ज़, स्वार्थी, मतलब का यार; (२) ऐयाश, बेहूदा, ज़ाहिर-परस्त, इंद्रिय-लोलुप।

हवा-परस्ती—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) स्वार्थ-साधन; (२) ऐय्याशी।

हवारी—(अ०) (सं० पु०) मदद देनेवाला, सहायक, दिली दोस्त।

हवाला—(अ०) (सं० पु०) (१) पता, निशान, प्रमाण; (२) मिसाल, उदाहरण; (३) सुपुर्दगी, तहवील, ज़िम्मेदारी। हीला-हवाला—टालम-टूल।

हवालात—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) हिरा-सत, नज़र-बंदी, क़ैद, निगरानी; (२) हाजत, मुक़दमे के पहले अभियुक्त को बंद रखना; (३) वह जगह जहाँ ऐसे अभि-युक्त रखे जाते हैं।

हवालाती—(अ०) (वि०) जो हवालात में रखा गया हो।

हवाला-दार—(अ०) (सं० पु०) हवल-दार, छोटा सैनिक अफसर।

हवाली—(अ०) (सं० स्त्री०) आस-पास के स्थान, नवाह, गिर्द।

हवाली-मवाली—साथी, दोस्त, हम-राही, संगी।

हवास—(अ०) (सं० पु०) अक़्ल, समझ, होश, ज्ञान। होश-हवास—होश और अक़्ल।

हवास-बाख़्ता—(अ०) (वि०) बे-औसान, घबराया हुआ, हक्का-बक्का।

हवासिल—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) एक प्रकार का सफ़ेद जल-पक्षी; (२) 'हौसला' का बहुवचन।

हविस—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) ख़ब्त, पागलपन; (२) कामना, ख़्वाहिश, आरज़ू (फ़ा०); (३) लालच, हिर्स; (४) अधूरा और झूठा प्रेम, ना-हक़ इश्क़; (५) काम-वासना; (६) उमंग, हौसला; (७) हर चीज़ को जी चाहना। हविस पकाना—किसी बात की दिल ही दिल में चाह करना। हविस बुझना —उमंग पूरी होना, हविस जाती रहना।

हविस-नाक—ख़्वाहिश-मन्द; इच्छुक।

हविस-परवर, हविस-पेशा—(वि०) बड़ी हविस रखनेवाला।

हवेली—(सं० स्त्री०) (१) बड़ा पक्का मकान; (२) स्त्री, पत्नी।

हव्वा—(अ०) (सं० स्त्री०) बाबा आदम की बीवी, सब आदमियों की मा (सं० पु०) हौआ, बच्चों के डराने को एक कल्पित व्यक्ति।

हशम—(अ०) (सं० पु०) नौकर-चाकर, नौकरों की भीड़।

हशमत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) नौकर-चाकर, नौकरों का समूह; (२) वैभव. प्रतिष्ठा; (३) दबदबा, शान-शौकत, रौब-दौब; (४) लड़ाई का सामान; (५) सवारी, जलूस।

हशर—(अ०) (सं० पु०) देखो—'हश्र'।

हशरात—(अ०) (सं० पु०) छोटे छोटे कीड़े जो अकसर ज़मीन में सुराख़ करके रहते हैं या बरसात में पैदा हो जाते हैं। (स्त्री०) (औ०) .गुल, शोर, आफ़त।

हशरी—(सं० स्त्री०) घोड़े का ऐब।

हश्त—(फ़ा०) (वि०) आठ।

हश्त-पहलू—(फ़ा०) (वि०) आठ कोने का; अठ कोना।

हश्त-बहिश्त—(फ़ा०) (सं० पु०) आठ स्वर्ग, आठों बहिश्त, जो मुसल्मान मानते हैं।

हश्तुम—(फ़ा०) (वि०) आठवाँ।

हशव—(अ०) (सं० पु०) (१) बेहूदा बात, अनावश्यक बात, ज़्यादती; (२) अधिक-पद।

हश्र—(अ०) (सं० पु०) (१) हिसाब का दिन, क़यामत जब सब मुर्दे उठ खड़े होंगे और उनके कर्मों का हिसाब होगा; (२) आफ़त, विपत्ति; (३) शोक, विलाप; (४) शोर-.गुल, ग़ोग़ा। हश्र टूटना—आफ़त टूटना, .ख़फ़गी होना। हश्र ढाना, हश्र तोड़ना, हश्र बरपा करना—(मौ०) आफ़त ढाना, बहुत ख़फ़ा होना, ऊधम मचाना। हश्र के वादे पर देना—ऐसा क़र्ज़ देना जिसके कभी वसूल होने की उम्मेद न हो।

हश्रा-घोड़ा—(पु०) दंगई घोड़ा, जो औरों के साथ मिल कर न रहे।

हश्री-बाग़ी—(सं० पु०) वह बाग़ी जो औरों की देखा देखी बग़ावत करने को खड़े हो जायँ।

हश्शाश—(अ०) (वि०) हँस-मुख, खुश, प्रसन्न-वदन। हश्शाश-बश्शाश—परम प्रसन्न, बहुत .खुश।

हसद—(अ०) (सं० पु०) ईर्ष्या, कीना, डाह, रश्क, बद ख़्वाही।

हसन—(अ०) (वि०) नेक, सुन्दर, अच्छा, भला (स० पु०) (१) हज़रत अली के बड़े बेटे का नाम; (२) सुन्दरता, .खुबसूरती, .खूबी, भलाई।

हसना—(अ०) (सं० पु०) नेकी, भलाई।

हसब—(अ०) (सं० पु०) (१) नस्ल, वंश, सिलसिला ख़ान-दान; (२) मा की तरफ़ का सिलसिला। हसब-नसब—मा बाप का ख़ानदानी सिलसिला।

हसर—(अ०) (सं० पु०) घेरना, चार-दीवारी खड़ी करना।

हसरत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) दुःख, परिताप, पशेमानी, किसी चीज़ के न मिलने का अफ़सोस; (२) लालसा, शौक़, हविस, कामना, तमन्ना। हसरत निकालना—अरमान पूरा करना। हसरत-भरा—लालसा-पूर्ण; अरमान से भरा, पुरशौक़।

हसीन—(अ०) (वि०) (१) सुन्दर, .खूबसूरत; (२) प्यारी, अच्छी।

हसीर—(अ०) (सं० पु०) चटाई, बोरिया।

हस्त—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) अस्तित्व, विद्यमान होने की अवस्था; (२) जीवन,

ज़िंदगी। हस्त नेस्त, हस्त ममात—होना, न होना; जीवन और मृत्यु। हस्त करना—पैदा करना। हस्त होना—पैदा होना, जन्म लेना।

हस्ती—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) अस्तित्व, मौजूदगी; (२) ज़िंदगी, जीवन; (३) सम्पति, दौलत; (४) हक़ीक़त, असलियत; (५) मजाल, ताब, ताक़त; (६) ख़ुद-पसंदी, आत्म-श्लाघा। हस्ब इत्तफ़ाक़—नागाह, संयोग से। हस्ब इरशाद—आज्ञानुसार। हस्ब-उल्-हुक्म—हुक्म के अनुसार। हस्ब-ज़ैल—नीचे लिखी तफ़सील के माफ़िक। हस्ब-फ़र्मायश—कहने के मुताबिक। हस्ब-मंशा—इच्छानुकूल। हस्ब-मक़दूर—यथा-शक्ति। हस्ब मामूल—दस्तूर के माफ़िक। हस्ब-हाल—समय के अनुसार, ठीक मौक़े से।

हा—(फ़ा०) (प्रत्यय) बहुवचन सूचक प्रत्यय। (अव्यय) दुःख-सूचक।

हाकिम—(अ०) (सं० पु०) (१) सरदार, शासक, अफ़सर; (२) मालिक, स्वामी। हाकिम के कुत्ते—नौकर जो बिना नज़र लिये हाकिम से नहीं मिलाते। कहा०—हाकिम चून का भी बुरा—छोटे से छोटे हाकिम से भी डरना चाहिए। हाकिम के तीन और शहना के नौ—हाकिम से ज़्यादा अहलकार लूटते हैं।

हाकिमाना—(वि०) हाकिम के अनुरूप।

हाकिमी—(अ०) (सं० स्त्री०) शासन, हुकूमत, हाकिम का काम।

हाकिमे-वक्त—इस वक्त का हाकिम, वर्तमान हाकिम।

हाजत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) मुराद, इच्छा, ख़्वाहिश, आरज़ू, उम्मेद, आशा; (२) आवश्यकता, ज़रूरत; (३) हवालात। हाजत बर आना—मुराद पूरी होना, कामना पूर्ण होना। हाजत रफ़ा करना—(१) किसी का कोई काम निकालना; (२) पाख़ाने जाना।

हाजत-ख़्वाह, हाजत-मन्द—(फ़ा०) (वि०) मोहताज, ग़रीब, माँगनेवाला, प्रार्थी, ज़रूरत-मंद।

हाजत-रवा—(फ़ा०) (वि०) हाजत पूरी करनेवाला, ज़रूरत पूरी करनेवाला।

हाजत-रवाई—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) किसी का काम निकालना।

हाजती—(अ०) (सं० स्त्री०) (दे०) वह बरतन जिसमें रोगी या अमीर चारपाई पर पड़ा-पड़ा मल-मूत्र त्याग करता है। (वि०) ज़रूरत-मंद, ग़रीब, मोहताज।

हाज़मा—(अ०) (सं० पु०) पाचन-शक्ति, पचाने की ताक़त।

हाजरा—(अ०) (सं० स्त्री०) ठीक दोपहरी।

हाज़रात—(अ०) (सं० स्त्री०) जिन, भूत-प्रेत और दुष्ट आत्माओं को जमा करना।

हाज़राती—(अ०) (सं० पु०) हाज़रात करनेवाला।

हाज़ा—(अ०) यह।

हाज़िक़—(अ०) (वि०) प्रवीण, दक्ष, उस्ताद, माहिर, कामिल।

हाज़िम—(अ०) (वि०) पाचक, हज़म करनेवाला, पचानेवाला।

हाज़िर—(अ०) (वि०) सामने, तैयार, सम्मुख, उपस्थित, मौजूद, आमादा।

हाजिर—(अ०) (वि०) (१) हिजरत करनेवाला, अपना देश छोड़ कर जानेवाला; (२) मक्का जाकर निवास करनेवाला।

हाज़िर-ओ-नाज़िर—मौजूद और देखनेवाला, ईश्वर।

हाज़िर-जवाब—(अ०) (वि०) फ़ौरन जवाब देनेवाला, प्रत्युत्पन्न-मति।

हाज़िर-जवाबी—(अ०) (सं० स्त्री०) फ़ौरन जवाब देने की योग्यता।

हाज़िर-ज़ामिन—किसी को हाज़िर करने की ज़िम्मेदारी लेनेवाला।

हाज़िर-ज़ामिनी—ज़मानत जो हाज़िर करने के लिए दी जाय।

हाज़िर-बाश—(अ०) (वि०) मौजूद रहनेवाला।

हाज़िर-बाशी—(अ०) (सं० स्त्री०) मौजूद रहना, उपस्थिति।

हाज़िरी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) उपस्थिति, मौजूदगी; (२) खाना जो दिन में पहली बार खाते हैं; (३) वह खाना जो मुरदे के वारिसों को बाद दफ़न-मैयत के भेजते हैं; (४) वह नक़्द रुपया जो मैयत-वाले को दिया जाय।

हाजी—(अ०) (सं० पु०) (१) निन्दा करनेवाला, हिजो करनेवाला, निन्दक; (२) नक़्क़ाल, भाँड, दूसरों की नक़ल बनाकर हँसी करानेवाला; (३) हज करनेवाला, जो हज कर आया हो।

हाता—(पु०) (औ०) अहाता, दीवार से घिरी हुई ज़मीन।

हातिफ़—(अ०) (सं० पु०) (१) फ़रिश्ता; (२) ऊपर से पुकारनेवाला, आकाशवाणी।

हाजिब—(अ०) (सं० पु०) (१) दरबान, चोबदार; (२) पर्दा।

हातिम—(अ०) (सं० पु०) (१) अरब का एक प्रसिद्ध दानी और परोपकारी, जिसे हातिमताई भी कहते हैं। (वि०) उदार, दानी, करीम, फ़ैयाज़। हातिम की क़ब्र (गोर) पर लात मारना—हातिम से बढ़कर दान करना (कंजूस से इत्तफ़ाक़िया उदारता हो जाने पर कहते हैं)।

हादसा—(अ०) (सं० पु०) (१) मुसीबत, दुर्घटना, ज़माने की गर्दिश; (२) घटना, नई बात।

हादिम—(अ०) (वि०) इमारत ढानेवाला, नष्ट करनेवाला।

हादिस—(अ०) (वि०) (१) नश्वर; (२) नया।

हादी—(अ०) (सं० पु०) (१) हिदायत करनेवाला, आदेश करनेवाला, मार्गदर्शक; (२) नेता, मुखिया।

हाद्दा—(अ०) (सं० पु०) (१) सुकड़ा हुआ; (२) छोटा कोण।

हानिस—(अ०) (वि०) क़सम तोड़नेवाला।

हाफ़िज़—(अ०) (सं० पु०) (१) निगहबान, हिफ़ाज़त करनेवाला, संरक्षक; (२) वह मुसल्मान जिसे क़ुरान कंठस्थ हो; (३) अंधा, नाबीना।

हाफ़िज़ा—(अ०) (सं० पु०) स्मरण-शक्ति, याद रखने की ताक़त।

हाबील—(अ०) (सं० पु०) हज़रत आदम के पुत्र का नाम।

हाबूड़ा—(हि०) (सं० पु०) एक लूट-मार करनेवाली जाति का नाम।

हामिज़—(अ०) (वि०) तुर्श, खट्टा।

हामिद—(अ०) (वि०) प्रशंसक, तारीफ़ करनेवाला।

हामिल—(अ०) (वि०) बोझ उठानेवाला, भार ढोनेवाला, कुली।

हामिला—(अ०) (वि०) (स्त्री०) गर्भवती।

हामी—(अ०) (वि०) हिमायती, मददगार, हिमायत करनेवाला, सहायक। (सं० स्त्री०) स्वीकारोक्ति, 'हाँ' करना। हामी भरना—मंज़ूर करना, राज़ी होना।

हामीकार—(अ०) (वि०) हिमायती, बड़े उत्साह-पूर्वक हिमायत करनेवाला।

हामूँ—(अ०) (सं० पु०) बयाबान, जंगल।

हामूँ-नवर्द—(अ०) (वि०) जंगलों में मारा मारा फिरनेवाला।

हायल—(अ०) (वि०) (१) बीच में आनेवाला, आड़, रोक करनेवाला; (२) बाधा डालनेवाला, बाधक; (३) भीषण, कठिन ।

हार—(अ०) (वि०) गरमी करनेवाला, गर्म ।

हारिज—(अ०) (वि०) बाधा डालनेवाला, बाधक, हर्ज करनेवाला ।

हारिब—(अ०) (वि०) भागनेवाला ।

हारूं—(अ०) (सं० पु०) (१) बग़दाद के प्रसिद्ध ख़लीफ़ा जिनका हारूं रशीद नाम था;(२) एक पैग़म्बर जो हज़रत मूसा के बड़े भाई थे; (३) दंगई घोड़ा; (४) नेता, सरदार; (५) दूत; (६) रक्षक, संतरी ।

हारूं-रशीद—(अ०) (सं० पु०) बग़दाद के प्रसिद्ध ख़लीफ़ा ।

हारूत—(अ०) (सं० पु०) ज़ोहरा के प्रेमी दो फ़रिश्तों में से एक, जो ईश्वरी कोप के वश कुएँ में उलटे लटका दिये गये थे और अभी तक उसी दशा में हैं। दूसरे का नाम 'मारूत' था ।

हारूत-फ़न—(अ०) (सं० पु०) जादूगर, इन्द्रजाल करनेवाला ।

हारूनी—(अ०) (सं० स्त्री०) संरक्षण, निगहबानी, पासबानी । (वि०) (१) दुष्ट, दंगई; (२) शरीर, सरकश औरत ।

हाल—(अ०) (सं० पु०) (१) वर्तमान समय; (२) दशा, अवस्था, स्थिति, (३) रंग-ढंग, हैसियत; (४) बेख़ुदी, तल्लीन हो जाना; (५) वृत्तान्त, समाचार, वृत्त; (६) शक्ति, दम, ताक़त; (७) अभी, हाल में । (वि०) वर्त्तमान, जो समय चल रहा है । (सं० स्त्री०) (१) कंप, हिलना; (२) पहिये के चारों तरफ़ चढ़ाने का लोहे का घेरा । हाल का—ताज़ा, नवीन । हाल में—कुछ ही दिन हुए, थोड़े दिन पहले । कहा०—हाल का न क़ाल का, रोटी चमचा दाल का—निकम्मा आदमी । हाल में क़ाल, दही में मूसल—(औ०) मौक़े बेमौक़े दख़ल देनेवाली औरत ।

हाल-क़ाल—(पु०) हालत और बयान ।

हालत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) दशा, कैफ़ियत, अवस्था, दर्जा; (२) दम, शक्ति, जान, ताक़त; (३) आर्थिक दशा; (४) परिस्थिति, संयोग ।

हालते-नज़ा (नज़ा)—(अ०) (सं० स्त्री०) जान निकलने का समय ।

हालाँ-कि—(अ०) (क्रि० वि०) यद्यपि, अगरचे ।

हाला—(फ़ा०) (सं० पु०) मंडल, चंद्रमा के चारों ओर दिखलाई देनेवाला मंडल । (क्रि० वि०) अभी, इसी वक्त । हाला करना—घेरना ।

हाला-डोला—(हि०) (सं० पु०) भू-कंप, ज़लज़ला, भोंचाल ।

हालात—(अ०) (सं० पु०) ('हाल' का बहुवचन) समाचार ।

हाली—(अ०) (वि०) मौजूदा । (सं० पु०) चलन-बाज़ार सिक्का; जो सिक्का रायज हो, चलता हो ।

हाली-मवाली—(पु०) संगी-साथी ।

हावन—(फ़ा०) (सं० पु०) ओखली की तरह का लोहे का पात्र जिसमें मसाला या दवा कूटते हैं, हमाम-दस्ता ।

हावन-दस्ता—(फ़ा०) (सं० पु०) हमाम-दस्ता ।

हाव-हाव—(हि०) (सं० स्त्री०) (१) जल्दी, घबराहट; (२) तलब, तक़ाज़ा, मांग; (३) कमी, तोड़ा । हाव हाव करना—जल्दी करना ।

हाविया—(अ०) (सं० पु०) दोज़ख़ का सब से नीचे का स्तर ।

हावी—(अ०) (वि०) (१) क़ाबू पानेवाला, वश में रखनेवाला; (२) दक्ष, प्रवीण (३) रहनुमा, नेता, अगुआ ।

हाशा—(अ०) (अव्यय) (१) कदापि नहीं, हरगिज़ नहीं; (२) मगर। हाश-लिल्लाह—(पाक है खुदा इस बात से) हरगिज़ नहीं। हाशा श्रो कल्ला—कदापि नहीं, हरगिज़ नहीं।

हाशिम—(अ०) (सं० पु०) पैग़म्बर साहब के दादा का नाम।

हाशिया—(अ०) (सं० पु०) (१) किनारा, कोर; (२) गोट, मग़ज़ी; (३) किनारे पर टीपे हुए नोट या याद-दाश्त; टिप्पणी। हाशिया चढ़ाना—(१) गोट लगाना, किसी पुस्तक पर टीका करना; (२) नमक-मिर्च लगाना। हाशिए का गवाह—वह गवाह जिसने असली दस्तावेज़ पर साक्षी की हो।

हाशिया-नशीं—(फ़ा०) (सं० पु०) पास बैठनेवाले, मुसाहब।

हासिद—(अ०) (सं० पु०) हसद या ईर्ष्या करनेवाला, जलनेवाला, किसी का सुख छिन जाने की कामना करनेवाला।

हासिल—(अ०) (सं० पु०) (१) किसी चीज़ का शेष; (२) आमदनी, उपज, पैदावार, मुनाफ़ा; (३) नतीजा, फल, मतलब, ख़ुलासा; (४) जमा, लगान।

हासिल-कलाम—(अ०) (क्रि० वि०) बात का नतीजा, ख़ुलासा मतलब, सारांश।

हासिल-ज़र्ब—(अ०) (सं० पु०) गुणन-फल।

हासिल-जमा—(अ०) (सं० पु०) जोड़, मीज़ान, टोटल।

हिकमत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) विज्ञान, विद्या, तत्व-ज्ञान; (२) चिकित्सा, इलाज-मालजा; (३) बुद्धि, दानाई, समझ; (४) चाल, युक्ति, तरकीब; (५) ग़ो, मतलब, ढंग; (६) वैद्यक, हकीमी। हिकमत चलना—चालाकी का सफल होना।

हिकमत-अमली—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) तदबीर, चालाकी; (२) पालिसी, मसलहत, कूट-नीति; (३) दूर-अंदेशी, तोड़-जोड़।

हिकमती—(अ०) (वि०) (१) चालाक, चतुर; (२) दार्शनिक, वैज्ञानिक।

हिकायत—(अ०) (सं० स्त्री०) कहानी, दास्तान, क़िस्सा, बात। हिकायतें करना—मुफ़्त की हुज्जतें करना, दलीलें छाँटना।

हिकायती—(औ०) हुज्जती, बात-बात पर बहस करनेवाला।

हिक़ारत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) घृणा; (२) ज़िल्लत अप्रतिष्ठा, बेइज़्ज़ती।

हिजरत—(अ०) (सं० स्त्री०) अपने देश को सदा के लिए छोड़ना, दूसरे देश में जा बसना।

हिज्राँ—(अ०) (सं० पु०) वियोग, जुदाई, विरह।

हिज्राँ-नसीब—(अ०) (वि०) जिसकी क़िसमत में अपने प्यारे से अलग रहना लिखा हो।

हिजरी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) मुसलमानों का सन् जो हज़रत मोहम्मद साहब के मक्का छोड़ने के दिन से आरंभ हुआ है; (२) मोहम्मद साहब का मक्का छोड़ कर मदीना जाना।

हिजाब—(अ०) (सं० पु०) (१) परदा, ओट; (२) लज्जा, हया, शर्म, लिहाज़।

हिज्जे—(अ०) (सं० पु०) अक्षर के बराबर अक्षर लिखकर शब्द बनाना।

हिज्र—(अ०) (सं० पु०) वियोग, विरह, जुदाई।

हिज्राँ—(अ०) (सं० पु०) वियोग, जुदाई।

हिज्राँ-नसीब—(वि०) वह शख़्स जिसकी क़िसमत में दोस्त से जुदा रहना लिखा है।

हिदायत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) मार्ग-प्रदर्शन, राह बतलाना; (२) आदेश,

आज्ञा, हुक्म, इरशाद। हिदायत करना —समझाना। हिदायत पाना—सीधे रास्ते पर आना।

हिदायत-नामा—(अ०) (सं० पु०) आदेश-पत्र, वह पत्र जिसमें किसी काम के करने के तरीक़े लिखे हों; दस्तूर-अमल, क़ानून।

हिद्दत—(अ०) (सं० स्त्री०) तेज़ी, तुंदी, गरमी।

हिना—(अ०) (सं० स्त्री०) मेंहदी। हिना का चोर—हाथ में वह सफ़ेद जगह जहाँ मेंहदी न लगी हो; मेंहदी से ख़ाली जगह।

हिनाई—(अ०) (वि०) (१) जिसमें मेंहदी लगी हो; (२) मेंहदी का-सा रंग, गेरुआ, पीलापन लिये हुए लाल रंग।

हिना-बन्द—(फ़ा०) (सं० पु०) वह काग़ज़ जिसमें मेंहदी की पुड़िया बाँधते हैं।

हिन्द—(फ़ा०) (सं० पु०) हिंदोस्तान, भारत वर्ष।

हिन्दसा—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) गणित; (२) रेखा-गणित।

हिन्दसा-दाँ—(फ़ा०) (वि०) गणितज्ञ, गणित जाननेवाला।

हिन्दी—(फ़ा०) (वि०) हिंदोस्तान का (सं० स्त्री०) हिन्दी भाषा, हिन्दोस्तान की भाषा। हिन्दी की चिन्दी करना—(१) ख़ूब समझाना; (२) ख़ूब छान-बीन करना, खोद-खोदकर पूछना। हिन्दी की चिन्दी निकालना—बाल की खाल निकालना।

हिफ़ाज़त—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) निगरानी, संरक्षण, पासबानी, देख-रेख; (२) बचाव, सलामती। हिफ़ाज़त-ख़ुद इख़्तियारी—(स्त्री०) हिफ़ाज़त जो नुक़सान से बचने के लिए की जाय।

हिफ़्ज़—(अ०) (क्रि० वि०) कंठस्थ; ज़बानी याद, मुखाग्र। (सं० पु०) (१) रक्षा, देख-रेख; (२) अदब, पास; लिहाज़।

हिफ़्ज़े-अमन—(अ०) (सं० पु०) अमन या शान्ति क़ायम रखना।

हिफ़्ज़े-मरातिब—(अ०) (सं० पु०) अदब का पास; पद की प्रतिष्ठा; मर्यादा का ध्यान।

हिफ़्ज़े-मातक़द्दुम—(अ०) (सं० पु०) पेश-बन्दी; पहले से किसी बात की पेश-बंदी करना; वह बचाव जो पहले से किया जाय।

हिफ़्ज़े-सेहत—(अ०) (सं० पु०) स्वास्थ्य-रक्षा।

हिबा—(अ०) (सं० पु०) बख़्शिश, तुहफ़ा, दान।

हिबा-नामा—(अ०) (सं० पु०) दान-पत्र, वह काग़ज़ जिसमें किसी चीज़ के बख़्शिश देने का इक़रार लिखा जाय।

हिमयानी—(अ०) (सं० स्त्री०) रुपया भर कर रखने की पतली थैली, जिसे कमर में बाँध लेते हैं।

हिमक़त—(अ०) (सं० स्त्री०) नादानी, बेवक़ूफ़ी, बे-अक़्ली, मूर्खता।

हिमायत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) तरफ़-दारी, मदद, सहायता; (२) निगहबानी, शरण, रक्षा।

हिमायती—(अ०) (सं० पु०) (१) तरफ़-दार, पक्ष लेनेवाला, सहायक, मददगार; (२) रक्षक, निगहबान। कहा०—हिमायती की घोड़ी ऐराक़ी को लात मारती है—हिमायत से हौसला बढ़ता है।

हिमार—(अ०) (सं० पु०) गधा, ख़रे-ख़र।

हिम्मत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) हौसला, साहस, इरादा, क़स्द; (२) जुरअत, ढारस, दिलेरी, बहादुरी, ताक़त, पराक्रम। हिम्मत करना—दिलेरी करना। हिम्मत बाँधना—हौसला करना। हिम्मत हारना—साहस खो देना। कहा०—हिम्मते मरदाँ मददे ख़ुदा—काम में कोशिश शर्त है।

हिरफ़त—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) हुनर, कारीगरी, कला-कौशल; (२) ऐय्यारी, मक्कारी, चालाकी, धूर्त्तता।

हिरफ़त-बाज़—(औ०) चालाक, ऐय्यारा, मक्कारा।

हिरफ़ा—(अ०) (सं० पु०) हुनर, कारीगरी, शिल्प।

हिर-फिर के—(हि०) (क्रि० वि०) फिर फिरा के, मजबूर होकर, बार-बार, अन्त में।

हिरास—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) निराशा, ना-उम्मेदी, मायूसी; (२) भय, डर।

हिरासत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) निगहबानी, सुपुर्दगी, पहरा, देख-भाल; (२) हवालात, क़ैद, नज़र-बन्दी।

हिरासाँ—(फ़ा०) (वि०) (१) निराश, ना-उम्मेद, मायूस; (२) भयभीत, डरा हुआ।

हिरीम—(अ०) (सं० पु०) (१) घर के चार तरफ़ की दीवार; (२) घर, मकान, काबे का घेरा।

हिज़्र—(अ०) (सं० पु०) (१) पनाह की जगह, शरण पाने का स्थान; (२) जंतर, तावीज़, कवच।

हिर्स—(अ०) (सं० स्त्री०) हविस, लालच, लोभ, तृष्णा, तीव्र इच्छा। हिर्सा-हिर्सी—देखा-देखी। हिर्स करना—देखा-देखी लालच करना।

हिर्सी—(वि०) लालची।

हिलाल—(अ०) (सं० पु०) नया चन्द्रमा, द्वितीया का चन्द्र।

हिलाली—(अ०) (वि०) नये चन्द्रमा से सम्बन्ध रखनेवाला। (सं० पु०) एक प्रकार का तीर।

हिल्म—(अ०) (सं० पु०) (१) सहनशीलता, बुर्दबारी, बरदाश्त; (२) स्वभाव की कोमलता, नम्रता।

हिल्लत—(अ०) (सं० स्त्री०) हलाल होना, रवा होना, जायज़ होना।

हिस—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) महसूस होना, अनुभव करना; (२) गति, हरकत।

हिसस—(अ०) (सं० पु०) 'हिस्सा' का बहुवचन।

हिसाब—(अ०) (सं० पु०) (१) गिनती, शुमार, मीज़ान, जोड़; (२) गणित; (३) भाव, दर, निर्ख़, क़ीमत; (४) क़ायदा, ढंग, रीति; (५) हाल, दशा, मामला; (६) लेन-देन; (७) राय, समझ, विचार; (८) चाल, व्यवहार। बे-हिसाब—अनगिनती, बे-शुमार। कहा०—हिसाब जौ जौ, बख़्शिश सौ सौ—हिसाब में ज़रा-सा भी फ़र्क़ न होना चाहिए।

हिसाबी—(अ०) (वि०) (१) हिसाब जाननेवाला; (२) ठीक, क़ायदे का, नियमानुसार।

हिसार—(अ०) (सं० पु०) (१) अहाता, घेरा, चार-दीवारी; (२) गढ़, कोट, शहरपनाह। हिसार बाँधना—घेरा करना, चार-दीवारी खड़ी करना।

हिस्न—(अ०) (सं० पु०) क़िला, बचाव की जगह।

हिस्सा—(अ०) (सं० पु०) (१) भाग, अंश; (२) बाँट, विभाग; (३) टुकड़ा, खंड; (४) साझा, शिरकत; (५) दर्जा, कमरा; (६) इलाक़ा, सीग़ा, विभाग; (७) विशेष गुण। हिस्सा-बख़रा—(पु०) (औ०) (१) खाने-पीने की चीज़ का हिस्सा; (२) मेल-मिलाप।

हिस्सा-रसद—(अ०) (क्रि० वि०) जितना जितना हिस्से में आवे।

हिस्सा-रसदी—(अ०) (सं० स्त्री०) हिस्से के अनुसार, जितना बाँट में आवे।

हिस्सेदार—(अ०) (वि०) शरीक, साझी, एक भाग का मालिक।

हिस्सेदारी—(अ०) (सं० स्त्री०) साझा, शिरकत।

हीन—(अ०) (सं० पु०) समय, काल।
हीन-हयात—जीवन भर, जीतेजी, आजन्म।

हीलतन्—(अ०) (क्रि० वि०) बहाने से, छल से, धोखे से।

हीला—(अ०) (सं० पु०) (१) बहाना, मिस; (२) मकर, फ़रेब, छल; (३) निमित्त, द्वार; (४) नौकरी, रोज़गार, काम।
हीला-हवाला—बहाना, टालमटूल।

हीला-गर, हीला-बाज़—(अ०) (वि०) बहाना-बाज़, मक्कार, फ़रेबी, धूर्त्त, दग़ाबाज़।

हीला-बाज़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) दमबाज़ी, मक्कारी।

हीला-साज़—(अ०) (वि०) बहाना बनानेवाला, मक्कार, दमबाज़।

हुक़न—(अ०) (सं० पु०) बस्ति-क्रिया, ऐनीमा, दस्त लाने के लिए गुदा मार्ग से पिचकारी द्वारा पानी या औषध चढ़ाना, शैफ़ा।

हुकमाऽ—(अ०) (सं० पु०) 'हकीम' का बहुवचन।

हुकुम—(अ०) (सं० पु०) आज्ञा—(देखो 'हुक्म')।

हुक़ूक़—(अ०) (सं० पु०) कर्तव्य, फ़रायज़। ('हक़' का बहुवचन)।

हुकूमत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) सल्तनत, राज्य; (२) सख़्ती, ज़ुल्म, अत्याचार, ज़बरदस्ती; (३) अधिकार, वश।
हुकूमत-जमहूरी—(स्त्री०) वह राज्य-व्यवस्था जिसमें सब शक्ति सर्व-साधारण के हाथ में हो। **हुकूमत-शख़्सी**—वह व्यवस्था जिसमें कोई एक मनुष्य या राजा सब सत्ता अपने हाथ में रखे।

हुक़्क़ा—(अ०) (सं० पु०) (१) डब्बा, जवाहरात रखने की डिबिया; (२) तम्बाकू पीने का यंत्र। **हुक़्क़ा-पानी बंद करना**—जाति से निकाल देना।

हुक़्क़ा-बरदार—(अ०) (वि०) हुक़्क़ा उठानेवाला।

हुक़्क़ा-बाज़—(फ़ा०) (सं० पु०) भानमती, बाज़ीगर, मदारी; बहुत हुक़्क़ा पीनेवाला।

हुक्काम—(अ०) (सं० पु०) 'हाकिम' का बहुवचन।

हुक्म—(अ०) (सं० पु०) (१) आज्ञा, आदेश; (२) अनुमति, इजाज़त; (३) अधिकार, शासन, प्रभुत्व; (४) नियम, क़ायदा; (५) सख़्ती, ज़बरदस्ती, अत्याचार; (६) न्याय, फ़ैसला; (७) ताश के एक रंग का नाम।

हुक्म-आख़ीर—(पु०) अन्तिम आज्ञा।

हुक्म-अन्दाज़—(अ०) (वि०) कह कर निशाना लगानेवाला, अचूक निशानेबाज़।

हुक्म-इम्तनाई—(अ०) (सं० स्त्री०) किसी काम से रोकने की आज्ञा, मुमानियत का हुक्म।

हुक्म-नामा—(अ०) (सं० पु०) आज्ञापत्र फ़रमान।

हुक्म-बरदार—(अ०) (वि०) नमकहलाल, आज्ञाकारी।

हुक्म-बरदारी—(अ०) (सं० स्त्री०) ताबेदारी, आज्ञा-पालन।

हुक्म-रॉ—(अ०) (वि०) हाकिम, बादशाह, शासक।

हुक्म-रानी—(अ०) (सं० स्त्री०) राज्य, बादशाही, सल्तनत, शासन।

हुक्मी—(अ०) (वि०) (१) अचूक, बेचूक, ठीक निशाने पर लगनेवाला; (२) आज्ञाकारी, हुक्म माननेवाला। (क्रि० वि०) हमेशा, सदा। **हुक्मी-दवा**—शर्तिया दवा, रामबाण।

हुक्मे-गश्ती—(पु०) वह हुक्म जो सब जगह फिराया जाय।

हुज़्न—(अ०) (सं० पु०) रंज, ग़म, दुःख, शोक, कष्ट।

हुजरा—(अ०) (सं० पु०) (१) कोठरी, छोटा कमरा; (२) ईश्वर-भजन के लिए एकान्त-स्थान।

हुज़ाल—(अ०) (सं० पु०) शरीर की दुर्बलता, कमज़ोरी।

हुज़ीं—(अ०) (वि०) ग़मगीन, दर्द-नाक, दुःख-पूर्ण।

हुजूम—(अ०) (सं० पु०) जन-समूह, जमाव, मजमा, भीड़।

हुज़ूर—(अ०) (सं० पु०) (१) हाज़िरी, मौजूदगी, उपस्थिति; (२) जनाब-आली, हज़रत, श्रीमान्; (३) बादशाह की मजलिस, इजलास, दरबार, कचहरी; (४) ख़िदमत, दरगाह; (५) रोबरू, सामने।

हुज़ूरी—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) हाज़िरी, सामीप्य, पास होना; (२) बादशाही दरबार, इजलास।

हुज़ूरे-वाला—(अ०) (सं० पु०) जनाब-आली, श्रीमान्।

हुज्जत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) दलील, बहस; (२) विवाद, झगड़ा, तकरार।

हुज्जती—(अ०) (वि०) तकरारी, झगड़ालू।

हुज्जाज—(अ०) (सं० पु०) हज करनेवाले। 'हाजी' का बहुवचन।

हुड़का—(हि०) (सं० पु०) बच्चों का किसी को याद करके रंज करना; किसी चीज़ के दूर होने से बच्चा दुखी होकर बीमार पड़ जाता है।

हुड़दंगी—(हि०) (सं० स्त्री०) आवारा, बेहूदा, फूहड़।

हुदहुद—(अ०) (पु० पु०) मुर्ग़-सुलेमान; एक प्रसिद्ध सुन्दर पक्षी का नाम जिसके सिर पर ताज होता है।

हुदा—(अ०) (सं० पु०) सीधा रास्ता।

हुदूद—(अ०) (सं० स्त्री०) सीमाएँ। 'हद' का बहुवचन।

हुदूद-अरबा—(अ०) (सं० स्त्री०) चारों तरफ़ की हदें।

हुदूस—(अ०) (सं० पु०) नया पैदा होना।

हुनर—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) कारीगरी, कला; (२) फ़न, जौहर, दस्तकारी, गुण।

हुनर-मंद, हुनर-वर—(फ़ा०) (वि०) दस्तकार, गुणी, कारीगर।

हुनूद—(अ०) (सं० पु०) 'हिन्दू' का बहुवचन।

हुप्पा—(हि०) (वि०) पोपली औरत, हड़प कर जाने वाली औरत।

हुफ़्फ़ाज़—(अ०) (सं० पु०) 'हाफ़िज़' का बहुवचन।

हुब—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) प्रेम, मुहब्बत, भक्ति; (२) दोस्ती, मित्रता; (३) इच्छा, चाह। हुब का अमल—वशीकरण तंत्र, जंत्र, मंत्र, जिनके द्वारा किसी के हृदय में अपने प्रति प्रेम पैदा किया जाय।

हुबल—(अ०) (सं० पु०) एक प्राचीन मूर्ति जो इस्लाम का प्रचार होने से पहले मक्का में रक्खी थी।

हुबाब—(अ०) (सं० पु०) (१) पानी का बुलबुला, बुदबुद; (२) हाथ में पहनने का एक प्रकार का गहना; (३) शीशे का गोला जो सजावट के लिए लटकाया जाता है।

हुबूत—(अ०) (सं० पु०) नीचे उतरना, किसी शहर में आना।

हुब्ब—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) प्रेम, मुहब्बत, उलफत; (२) दोस्ती; (३) शौक़, चाह।

हुब्बुल-वतन—(अ०) (सं० स्त्री०) स्वदेश-प्रेम, देश-भक्ति।

हुमक़—(अ०) (सं० पु०) नादानी, मूर्खता।

हुमरत—(अ०) (सं० स्त्री०) सुर्ख़ी।

हुमा—(फ़ा०) (सं० पु०) एक प्रसिद्ध पक्षी का नाम, जिसके बारे में यह कल्पना है कि जिसके सिर पर से उड़ जाय, उसे बादशाही मिलती है। यह पक्षी केवल

हड्डियाँ खाता है और किसी को नहीं सताता।

हुमायूं—(फ़ा०) (वि०) (१) शुभ, मुबारक, बा-बरकत; (२) सफल-मनोरथ। (सं० पु०) प्रसिद्ध मुग़ल बादशाह, अकबर का पिता।

हुमूज़त—(अ०) (सं० स्त्री०) खटाई, तुरशी।

हुर्र—(अ०) (सं० पु०) आज़ाद, स्वतंत्र, जो किसी का ग़ुलाम न हो।

हुरक़त—(अ०) (सं० स्त्री०) जलन, सोज़िश।

हुरमत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) बड़ाई, प्रतिष्ठा, इज़्ज़त, आबरू; (२) मज़हबी किताबों में हराम होना, निषिद्ध होना।

हुरमुज़—(फ़ा०) (सं० पु०) सौर मास का प्रथम दिन।

हुरूफ़—(अ०) (सं० पु०) अक्षर। ('हर्फ़' का बहुवचन)।

हुलकारना—(हि०) (क्रि०) (१) कुत्ते को शिकार पर दौड़ाना, लहकाना; (२) किसी को दंगा फ़िसाद पर आमादा करना।

हुलिया—(अ०) (सं० पु०) (१) चेहरे की बनावट, शरीर का गठन; (२) गहना, आभूषण; (३) ख़िलअत, सिरोपाव। हुलिया लिखाना—मफ़रूर या भागे हुए आसामी की पहचान लिखाना। हुलिया होना—फ़ौज में भर्ती होना।

हुलूल—(अ०) (सं० पु०) एक चीज़ का दूसरी चीज़ में इस तरह घुसना कि तमीज़ न हो सके, हल हो जाना।

हुल्ला—(अ०) (सं० पु०) जामा, चादर, बहिश्ती लिबास।

हुवैदा—(फ़ा०) (वि०) साफ़ साफ़, स्पष्ट।

हुशियार—(फ़ा०) (वि०) चतुर, चालाक, होशियारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) चालाकी, सावधानी, चतुरता।

हुसूद—(अ०) (सं० पु०) द्वेषी, बुरा चाहनेवाले। 'हासिद' का बहुवचन।

हुसूल—(अ०) (सं० पु०) हासिल, नफ़ा, लाभ, फ़ायदा, प्राप्ति।

हुसेन, हुसैन—(अ०) (सं० पु०) मुसल्मानों के तीसरे इमाम जो करबला में मारे गये थे। मुहर्रम में इन्हीं का मातम होता है।

हुसैन-बन्द—(अ०) (सं० पु०) चाँदी के दो छल्ले जिनके बीच में चाँदी की ज़ंजीर होती है। मुहर्रम में बच्चों के हाथों में पहनाते हैं।

हुस्न—(अ०) (सं० पु०) (१) उम्दगी, श्रेष्ठता, उत्तमता, ख़ूबी; (२) सौन्दर्य, ख़ूबसूरती, लुत्फ़, रंग, रौनक़, बहार।

हुस्न-इत्तिफ़ाक़—(पु०) बहतर मौक़ा, अच्छा अवसर।

हुस्न-इन्तज़ाम—प्रबंध की ख़ूबी, या उत्तमता।

हुस्न-ख़ुदा-दाद—असली ख़ूबसूरती, क़ुदरती शोभा।

हुस्न-ज़न—अच्छी राय, अच्छा गुमान, नेक ख़याल।

हुस्न-तदबीर—ख़ुश तदबीरी, अच्छी युक्ति।

हुस्न-तलब—(अ०) (सं० पु०) किसी चीज़ को इशारे से माँगना।

हुस्न-दान—(सं० पु०) एक प्रकार का छोटा बक्स।

हुस्न-परस्त—(अ०) (वि०) सौन्दर्योपासक, सौन्दर्य का परम प्रेमी।

हुस्न-परस्ती—(अ०) (सं० स्त्री०) सौन्दर्य की पूजा।

हुस्ने-मतला—(अ०) (सं० पु०) ग़ज़ल

हुस्ने-महफिल—(अ०) (सं० पु०) एक प्रकार का हुक्का।

हू—(अ०) (सं० पु०) (१) ईश्वर का एक नाम; (२) भय, डर; (३) ग़ुल, हंगामा। हू का आलम, हू का मकान, हू का मुक़ाम, हू का मैदान—ख़ौफ़नाक, भयानक, सुनसान जगह।

हूत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) बड़ी मछली, (२) मीन राशि।

हूदा—(फ़ा०) (वि०) ठीक, उचित, वाजिब, दुरुस्त। बेहूदा—अनुचित, वाहियात।

हूर—(अ०) (सं० स्त्री०) स्वर्ग की परी, बहिश्ती औरत, अप्सरा। (वि०) बहुत ही ख़ूबसूरत।

हूर-ऐन—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) सफ़ेद रंग वाले बाल और बड़ी आँखों वाली स्त्री।

हूश—(वि०) मनुष्यता-हीन, वह आदमी जो आदमियत से ख़ारिज हो।

हू-हक़—(अ०) (सं० पु०) (१) ईश्वर में तल्लीन हो जाना। (२) (स्त्री०) शोर, ग़ोग़ा। हू-हक़ हो जाना—मिट जाना, नेस्त-नाबूद हो जाना।

हेच—(फ़ा०) (वि०) (१) तुच्छ, नीच; (२) बहुत थोड़ा, अल्प; (३) नाकारा, निकम्मा; (४) घृणित। (अव्यय) कोई, कुछ। हेच ओ पोच—बेहूदा, फ़िज़ूल, व्यर्थ।

हेच-कस, हेच-कारा—(फ़ा०) (वि०) नाकारा, नाक़िस, निकम्मा, अयोग्य।

हेच-गारा—(फ़ा०) (वि०) नालायक़, अयोग्य, बेफ़ायदा, नाकारा।

हेच-मर्दा—(फ़ा०) (वि०) नादान, मूर्ख, बेइल्म, अज्ञान।

हेच-मदानी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) नादानी, अज्ञान, सिफ़्लगी।

हैकल—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) वह मूर्ति जो किसी ग्रह के नाम पर बनाई जाय; (२) बुत-ख़ाना, मन्दिर; (३) शोभा, रौनक़; (४) तावीज़, कवच, यंत्र; (५) हुमायल, हुमेल, गले में पहनने का रुपयों या अशर्फ़ियों का हार; (६) सूरत-शक्ल, नक़्शा, डील-डौल; (७) लक्षण, चिह्न।

हैज़—(अ०) (सं० पु०) (१) स्त्रियों का मासिक धर्म, माहवारी; (२) वह कपड़ा जिससे औरतें मासिक-धर्म का ख़ून साफ़ करके फेंक देती हैं; (३) वह शख़्स जो बहुत ही घृणित और नीच हो और कोई उसे पास न बैठावे।

हैजा—(अ०) (सं० स्त्री०) युद्ध, लड़ाई।

हैज़ा—(अ०) (सं० पु०) विसूचिका, दस्त और क़ै की बीमारी, कालेरा। हैज़ा करना—हैज़े से ग्रसित होना।

हैजान—(अ०) (सं० पु०) ज़ोर, जोश, उबाल, तेज़ी।

हैज़ी—(अ०) (वि०) (१) दोग़ला, हरामी, वर्ण संकर; (२) पाजी, दुष्ट।

हैज़ुम—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) ईंधन, सूखी लकड़ी।

हैज़ुम-फ़रोशी—लकड़ियाँ बेचनेवाला।

हैफ़—(अ०) (सं० पु०) (१) अफ़सोस, खेद, दुःख; (२) ज़ुल्म, अत्याचार, दरेग़।

हैबत—(अ०) (सं० स्त्री०) डर, भय, आतंक, रौब।

हैबत-ज़दा—(अ०) (वि०) डरा हुआ, सहमा हुआ।

हैबत-नाक—(अ०) (वि०) भयानक, भीषण, डरावना।

हैयत—(अ०) (सं० स्त्री०) वह विद्या जिसमें पृथ्वी आदि के चलने और आकर्षण आदि का अनुशीलन होता है, ज्योतिष;

हैरत—(अ०) (सं० स्त्री०) आश्चर्य, ताज्जुब, अचंभा।

हैरत-अफ़ज़ा—(अ०) (वि०) आश्चर्य बढ़ानेवाला।

हैरत-ज़दा—(अ०) (वि०) भौंचक्का, आश्चर्यान्वित।

हैरती—(फ़ा०) (वि०) तल्लीन, मस्त, सरशार।

हैरान—(अ०) (वि०) (१) भौंचक्का, चकित, हक्का-बक्का, दंग; (२) परेशान, भटकनेवाला, व्यग्र, ख़राब।

हैरानी—(अ०) (सं० स्त्री०) परेशानी, हैरत, ताज्जुब।

हैवान—(अ०) (सं० पु०) (१) प्राणी, जीव; (२) जानवर, पशु; (३) नादान, मूर्ख, वहशी।

हैवान-नातिक़—(अ०) (सं० पु०) मनुष्य, वह पशु जो बोल सके।

हैवान-मुतलक़—(अ०) (सं० पु०) (१) निरा जानवर, पूर्ण पशु; (२) बे-सलीक़ा, मूर्ख।

हैवानियत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) पशुता, जानवरपन; (२) वहशत, वहशीपन, जंगली-पन, बेशर्मी, मूर्खता।

हैवानी—(अ०) (वि०) पाशविक, पशुओं के समान, नफ़सानी।

हैस बैस—(अ०) (सं० स्त्री०) बहसा-बहसी, तकरार, रद-बदल, झगड़ा।

हैसियत—(अ०) (सं० स्त्री०) (१) आर्थिक अवस्था, माली हालत, वित्त; (२) शक्ति, सामर्थ्य, ताक़त, योग्यता; (३) श्रेणी, कक्षा, पद, दरजा; (४) तौर-तरीक़, ढंग; (५) हौसला, साहस; (६) बिसात, मक़दूर; (७) प्रतिष्ठा, आबरू। हैसियत से बढ़कर—बिसात से बाहर।

हैसियते-उरफ़ी—(अ०) (सं० स्त्री०) साख, ऐतबार, मानी हुई इज़्ज़त, ज़ाहरी

हैहात—(अ०) (अव्यय) हाय, अफ़सोस।

होत—(हि०) (सं० स्त्री०) मक़दूर, पूँजी, हैसियत।

होत-वाला—(हि०) (वि०) धनी, मालदार। होत-जोत वाला—(औ०) हैसियतवाला। कहा० —होत की जोत है —सारी रौनक़ रुपये से है, संपूर्ण वैभव धन के कारण है।

होश—(फ़ा०) (सं० पु०) (१) ज्ञान, चेतना, आगाही; (२) समझ, अक़्ल, बुद्धि; (३) याद, सुधि, स्मरण। होश की बनाओ, होश की ख़बर लो, होश की दवा करो, होश को लो, होश के नाख़ून लो—होश में आओ, समझो। होश ओ हवास—चेतना और बुद्धि। होश आना—होशयार होना, संभलना, आपे में आना। होश आए हुए जाना—बदहवासी सी छा जाना। होश उड़ाना, होश उड़ा देना—घबरा देना। होश काफ़ूर होना—होश जाते रहना। होश की लेना—समझ की बातें करना। होश गुम होना—होश उड़ना, होश ग़ायब होना। होश जमा होना, होश ठिकाने होना—होश-हवास दुरुस्त होना। होश जाते रहना, होश तशरीफ़ ले जाना —अक़्ल गुम होना। होश पकड़ना—होश में आना, सयाना होना। होश बजा रखना—होश क़ायम रहना। होश बख़्ता होना—घबरा जाना। होश बिखरना—होश परागंदा होना। होश सँभलना—सयाना होना, ज्ञान आना। होश हिरन होना—होश हवा होना, होश उड़ना।

होश-गोश—(पु०) होशयारी।

होश-मंद—(फ़ा०) (वि०) होशवाला, सावधान, अक़्ल-मंद।

होश-मंदी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) शऊर,

होश-रुबा—(फ़ा०) (वि०) होश ले जाने-वाला।

होश-वाला—(वि०) सयाना, तजुर्बेकार, होशयार।

होशियार—(फ़ा०) (वि०) (१) बुद्धिमान्, चतुर, समझदार; (२) दक्ष, प्रवीण, निपुण; (३) सावधान, ख़बरदार, सचेत; (४) सयाना, वयस्क; (५) चालाक, धूर्त।

होशियारी—(फ़ा०) (सं० स्त्री०) (१) बुद्धिमानी, समझदारी, चतुरता; (२) दक्षता, कौशल; (३) सावधानी, ख़बरदारी।

हौंस—(हि०) (सं० स्त्री०) बुरी नज़र, कुदृष्टि, ईर्ष्या, बदाबदी। हौंस का खा जाना—बुरी नज़र का असर हो जाना। हौंसना—टोकना, नज़र लगाना।

हौआ—(अ०) (सं० पु०) देखो—'हव्वा'।

हौज़—(अ०) (सं० पु०) (१) कुंड, पानी जमा करने का गढ़ा; (२) मतन, हाशिये के अन्दर का मैदान। कहा०—हौज़ भरे फ़व्वारा छूटे—आमदनी हो तो ख़र्च हो।

हौज़ा—(फ़ा०) (सं० पु०) हौदज, हाथी की अमारी।

हौदज—(अ०) (सं० पु०) (१) हाथी की अमारी, हौदा; (२) ऊँट की पीठ पर रखा जानेवाला कजावा।

हौल—(अ०) (सं० पु०) (१) धड़कन, डर, भय; (२) घबराहट, बेचैनी।

हौल-ज़दा—(अ०) (वि०) डरा हुआ, घबराया हुआ।

हौल-दिल—(अ०) (सं० पु०) दिल की धड़कन का रोग।

हौल-दिला—(अ०) (वि०) डरपोक।

हौल-दिली—(सं० स्त्री०) संग यशब की बनी हुई तावीज़ की तरह की चीज़, जिसके पहनने से दिल की धड़कन कम होती है।

हौल-नाक—(अ०) (वि०) भीषण, डरावना।

हौले—(हि०) (क्रि० वि०) सहज से, आहिस्ता। हौले से—हलके से, आहिस्ता से। हौले हौले—आहिस्ता आहिस्ता, धीरे धीरे।

हौसला—(अ०) (सं० पु०) (१) मक़दूर, साहस, हिम्मत; (२) पक्षी का पेट; (३) समाई, सामर्थ्य; (४) कामना, अरमान, आकांक्षा, तमन्ना।

———